

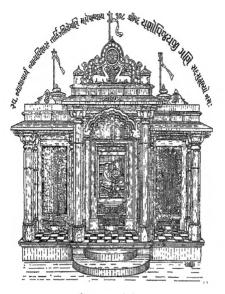
४ न्यायविशारद न्यायाचार्य महोवाच्याय श्रीयशोविजय स्मृतिप्रन्य



सगादकः । पू. मुनिपनर श्रीयशोविजयती







न्यायविशास्य न्यामासार्थं महोपाध्याय श्रीयशोविजय स्मृतिग्रन्थ





न्यायविशासः न्यायानार्यः महोपाच्यायः श्रीयशोविजयस्मृतिग्रन्यः

☆

সহায়ত :---

यशोसारती प्रकाशन समिति है एउपुर महाजनगरी,

> वडोदराः ४

> > १९५७

A

मूल्य इ. १२-८-०

7

iyaya Visharad Nyayacharya, Mahopadhyaya

Shn Yashovijay Smruti Granth, Published by

Yashobharati Prakashan Samitee, Add Raopura, Mahajana Gali, BARODA.

1957

Price

Rs 12-8/-

公

प्रिन्टींग नवन प्रिं प्रेस, नवप्रमात प्रेस तथा वसत प्रिं प्रेस, सुद्रस व्यक्ति इकाल, घीफाँटा, समदावाइ प्रकारक रचोजारती प्रकारन समिति तरक्षां बहोट सीनामकुमार नायामाई मझाती तथा साह जातमन्द्र महाला वृद्धे।





॥ क्यन्तु वीतरागाः ॥

आमुख

आये माननीय विद्यानोना करकमछमां ''न्यायविद्यास्ट न्यायाचीय महोषाज्याय प्रीवार्धीविद्याः स्त्रुतिप्रयः' क्षेत्रम करवामां जावे छे. एसां जनेक विद्यानोए विद्याव दिए आलेकेही सहोषाज्याय श्री यत्तीविजयकोना वीवनने रस्प्रीती विविध्य प्रकारनी सामग्रीनो संग्रह थयो छे. महोषाज्यावश्रीनुं लीवन सामग्र वेहुं मसीर जने प्रेरणाहायो जीवनसाधनाना यहा तरंगोयी कमराह जने छलकार्तुं हुत, एनो क्षंत्रक सामग्र वेहुं मसीर जने प्रेरणाहायो जीवनसाधनाना यहा तरंगोयी कमराह जने छलकार्तुं हुत, एनो क्षंत्रक सामग्र वेहुं मसीर जने प्रस्तुत रहित्यां अवन्यविका अवक्रीकरणी वह शक्ते अस्तुत श्रंप सिच्यानी रमायायश्रीना विद्यास वीवनविज्ञा केस्तुक मार्गदर्शक सह रहत्रों, का दृष्टिने कक्षमां राखी मारा प्रस्तुत आस्तुला हुं पण श्रीअपन्यायको महाराजना चीवनने सम्वयंत्र रस्त्रीती केटलीक महत्त्वनी वीगतीनो उमेरी करे हुं.

जन्म, दीक्षा अने अध्ययन

सहैसान्याय श्रीवक्रीविजवजीनी जन्म कथा वर्षमां वयो हतो । एनी उद्येख आपणां मद्धती । स्वा त्रीक्ष आपणां मद्धती । स्व त्रीक्ष आपणां मद्धती । स्व त्रीक्ष त्रीत्र त्रीक्ष त्रीत्र त्रीक्ष त्रीत्र त्रीक्ष त्रीत्र त्रीक्ष त्रीत्र त्रीत्र त्रीत्र त्रीत्र त्रीत्र

पांडिस्य

लपाध्यायकीने पाहित्य सात्र प्रेथीना अध्ययन के वाचन सुधी ज सर्गीदेत न हतुं. तेमनं पांतित्य घणुं देहं अने व्यापक हतुं, ए आपणे तेमणे रचेला ग्रंथसांश उपस्थी समजी कर्ना शकीए टीए संस्कृत—प्राकृत-गुनराती बादि अनेक माणाओ, छंद-अटंकार-कान्य आदि साहित्यप्रधी, चैन आरमो, इसेबाद अने जैन तत्त्वज्ञानना प्राणक्ष्य व्यनेकान्तवाद उपर तेओश्रीन् विश्वतोस्ति। आधिपत्य हतं, प्राचीन कने व्यर्शाचीन बन्नेय न्थायण्यास्त्रिकाओने तेमणे एक सरस्ती रीते पचानी हती पोताना जीवनमा तेओ सबेदेशीय विशाद्ध ग्रंबराञिनुं अवसाहन अने पान करी गया ह**ता**. तेश्रोधी समर्थ तत्विनतक अने प्रीट प्रथकार हता जैन सप्रदायमा रहेरी सामीशोनी तलत्पर्शी समीक्षा करकार पण हता. ए ज कारणसर तैयना यममा तेओ साथ यतिवरी अने गृहस्थ श्रीसंधने घणा कहना थड पहचा हता. अने तेथी तेमनी सभा तेमना अवग्रिमनी अक्षण उपेश्रा के अनुजा भई हती. तेम द्धता तेमना शहित्यने छाजे तेवी निर्भयना अने धंरता देमनामा सदाय एक धारी रीते दकी रह्या हतां कापणने सामीने आधर्य अने उ स श्राय देवी वावत हो के—तेओशीना अनेफानेफ प्रंथी छा।सर बीजी नवल थया सिवाय व रही गया है, जैन श्रीसंघना सीमाग्यनी ए खरेखर खामी छे के...तेने त्यां सिद्धरेन दिवाहर, बनोविजवीयाव्याय आदि जेवी जानस्वस्था विमृतिसी ट्रेप्य वनी है. श्रीसिद्धसेन दिवाकरे तो विंगिकहार्त्रिकिका प्रंथना संतमां पोता साटे "द्वेष्य खेतपट" एवं विशेषण पण आन्यु छे, ए एक विचाश्या जेवी वस्तु हो, इनाना भाडारकर इन्स्टीटकरना संप्रहरी विंशपि-दार्तिशिकानी प्राचीन ताडपश्रीय प्रतिमां "द्वेष्य श्वेतपट" ए आबीन विशेषण खाचे पण सचवाएलं हे. बाबी ज करियाद का चार्य श्रीहरिमहः, साचार्य शीहाकः, श्रीयकोविजयोगध्याय व्यहिए पण पोताना वशोवां करी के

प्रेथनिर्माण

उपायावश्रीय पोताया जीननमा विचाल श्रीयाशिस्तुं निर्माण बर्धुं हातु. अनेक विषयोने त्यरीती तेमनी ए प्रश्ताशि हो तेमोशी प्राचीन-कर्वाचीन बन्नेय न्यावश्रणाणीनोमा पारंपत होत्रा हता हता तेमणे पीताना प्रयोगी नक्यन्यायनी सरिमिन व लग्नालो हो. उस्में तेची चानो के मोटो, वार्रीनिक के लागमिन, इसीवार्वाचयक के अनेक्ष्मन्तवाद्वीयपत्र, चुति के स्तीत व्याद्य यसे ते विचयनो हेय होए. तेमां उपायायावींचुं नैयाधिकरण्युं खळन्या सिवाय क्यारेच रहुँ नथी. एक्ना एक विचयने तेलो तमे तेल्ली तम वर्चे तो पण तैयां नवीनता व जीवामा वाले, ए उपान्यावशीन चित्रन कर प्रविचादनानी महत्ता करें विशेषका हो. उपाय्यावशीय पीत्रन जीनो निव्रंत संस्था वर्धका हो उपाय्यावशीय पीत्रन जीत निव्रंत संस्था कराय गाँच हो के जे संधीना वासोनी उद्धेस कर्यों है, ते द्वारा ज्ञाला माने हे छे के — आवे आवणे तेमना संस्थावंच श्रीक्षा दर्शना वर्षका हो स्थान संस्थावंच श्रीका वर्षका हो स्थान वर्षका हो स्थान संस्थावंच श्रीका वर्षका हो स्थान हो स्थान वर्षका हो स्थान हो स्थान वर्षका हो स्थान हो स्थान

नहिं, नामश्रवणधी पण वंचित छीए, जेम जेम तेमना असम्य ग्रंथोनी प्राप्ति यती जाय छे तेम तेम रोमना नवा नवा अळम्ब ग्रंथोनां नामो मळतां च चाय हो. हेल्छां वर्षोमां अणधारी रीते तेमना अप्राप्य के ग्रंथो प्राप्त थया. ते द्वारा अकस्य ग्रंथोनां नामो जाणवामां पण आव्या हे. एरके आपणे निरंतर अप्रमत्त रही आपणा रथान-स्थानना चाना-मोटा ग्रंथसदोरोमां तेओश्रीना अरुम्य ग्रंथोने काळबीएर्वेक शोधवा—तपासवाना च रहे हो. चो श्रीणवट प्रवेषस्थापणा प्राचीन ज्ञानभंदारोने तपासीशं हो आशा हे के - इस पण आपणे तेमना खनेद अंथो मेळकी शकीखें, हेल्लां दर्वीमां ज्ञान-मंहारना खंतमर्या अवलोकनने प्रतापे आपणे नीचे मुजबना सत्तर प्रथो मेळवी शक्या छीए-१ अस्प्रशङ्गतिबाद अपूर्णनी पूर्णता २ आत्मख्याति ३ आर्थयीयचरितमहाकान्य अपूर्ण ७ कान्यप्रकाश टीका खंडित. ५ कपदृष्टान्तविश्वशीकरण अपूर्णनी पूर्णता ६ प्रमेयमाला अपूर्ण ७ वाहमाला ८ वादमाला अपर्ण ९ वित्तयप्रथमहि सामणक विज्ञानियत्र १० विषयतावाद ११ वेराम्बरति किंचिवपूर्ण १२ स्यादादरहस्य (अप) ११३ स्यादादरहस्य (मध्यम) अपूर्ण १९ स्याहादरहरय (बृहद्) अपूर्ण १५ सिद्दान्टमंत्ररी शब्दखंड टीका अपूर्ण. १६ योगबिन्दुअवचूरि १७ योगर्हाधसमुख्य अवचूरि अपूर्ण आ सच्छ ग्रंबी पैकी नद प्रेथो अधुरा ज सक्या छे. वे प्रेथो के जे पहेलां अपूर्ण सक्या इता ते पूर्ण अया छे धने बाकीना छ प्रंथो नवा संपूर्ण मकवा छे. जा प्रंथो सुरिसप्राट् श्रीविजयनेमिस्रीखरजी म०. श्रीविजयद्वद्यसरीयरजी म०. श्रीविजयममोहरसारिजी म०. पं० श्रीरमणीकविजयजी समे श्रीयशोदिलयकी म० बादिना परिश्रमपर्वकना जानमंदारोना अवछोकनथी प्राप्त थया छे. उपरोक्त प्रंथोना उपलक्ष अवलोकनथी श्रीपुरुयलेख, सप्तर्भगीतरंगिणी न्यायबादार्थ आदि अलन्य प्रश्लोनां नामो नवां पण जाणवा सळ्यां हे औपुञ्चलेख ए कोई सामान्य विद्वाश्वलेख नथी, परंत्र ए एक दार्शनिक पदार्थोंनी चर्चा करतो प्राकृत भाषानो पत्रहरूप ग्रंथ ज हतो सप्तभंगीतरंगिणी ए नामनी दिशंबरानार्यकृत श्रंथ होवानी जाण तो भाषणने हती क. परंतु औरपाध्यायजी सहाराजे पण ए नामनी ग्रंथ रथ्यो हतो ए काणवामां खाव्यं होई हवे दरेक विद्वानीए सप्तरंगीतरगिणी नामना प्रथमी प्रति कोई पण मेहारमां होय तो तेने चोकसाहथी तपासवी जोहए उपाच्यावश्रीए न्याय-विश्वापट थया पड़ी सो ग्रंथोनी रचना करी त्यारे तेमने न्यायाचार्य तरीके संबोधवामां आव्या हता. प सो पंची क्या ! तेने। क्ञो वत्तो नवी वरंत तिडन्वयोक्ति विषयताबाद काव्यवकाश्चरीका अलंकार-चढामधारीका वर्गेर साहित्यिक प्रथा न होड शके ह ए विचारवा जेवी प्रश्न हो, एक प्रमाणे रहस्य-पदांकित १०८ अंबो रचवानो तेमनो संकल्प हतो, ते पैकीना केटला प्रंथोतेमणे रच्या हता अने पोताना ए संकर्त्वने तेओ सर्वीके पार पार्टी शक्या हता के नहिं १-ए वात पण अञ्चात व छे. आज संघीमां सापणे तेमना रहस्यपदांत प्रमारहस्य, नयरहस्य, स्वाह्यदरहस्य, माषारहस्य व्यते उपटेशरहस्य ए पांच ग्रंथोनां नामोने जाणी शक्या छीए. सा सिवाय बीजा कोई रहस्यपदात ग्रंथना नामनो उल्लेख आपणने तेमना कोई ग्रंथमांथी हजी सुधी मुक्यो नथी. एउने या विषयमा केम बन्युं हुशे ए रांकास्पद

रपाध्यायजीनी स्वहस्त छिस्तित मतियो

उपान्यायजी महाराजे जे जे प्रेयो रच्या इता, ते वधायनी नहि, तो एण नोंघपात्र गणी ज्ञाहाय त्तरहो तेमणे रचेल। प्रधीनी निधितरूपे मानी शकाय तेवी स्वहस्तलिखन प्रथमानशैक्षण प्रतिओ वाजे आपणा ज्ञानमंडारोमा जोवा मळे छे. — १ अस्थुबद्धतिवादन् प्रथम एव २ आर्पसीय महाकाव्य अपूर्ण ३ तिङ्ग्ययोक्ति अवर्णे १ निजासक्तिप्रकरण ५ विजयवसस्तिकामणक विजित्तिपत्र ६ सिद्धान्तमंत्ररी जन्द्रसंद रीका अपूर्ण ७ जंद्रस्वामिगस, व्य सात प्रतिको सारा पोताना संप्रहर्मा छे १ आराधकः विरायक्रनत्मेर्गः स्नोपत्र टीकासह पाटण तपामच्चना भेहारमां हे. १ अध्यासमार २ प्रमेयमाला क्षपूर्ण ३ इत्युगुणपर्यावसम बालाचमीय, १ धर्मपरीक्षा स्तीपज टीकामां उमेरण, व्या चार प्रेयो जमराबार पार्थाआना-संवेगीरपाथयना ज्ञानमंडारमां हे १ ला.मख्याति २ गुरुतत्विनिध्य प्रथनी श्रीतमभाग ३ नयरहरूर ४ भागरहरूप ५ वादमाला ६ वादमाला सपूर्ण ७ स्वाहादरहरूप ८ मार्गपरिद्वादः, ९ वैराग्यर-पन्नता १० बोगविन्द्वावचरि ११ योगदृष्टिससुन्चयनदच्रि प्रदर्भ १२ स्थादाश्वरहरूप (बृहद्) अपूर्ण, आ बार प्रतिओ अमदाबाद देवशाना पाडाना रानभंदारमा है, र मत्वार्थउत्ति २ वैगम्बर्गत दिविद्यणी ३ स्तोशिक १ द्वापदातिसिदिप्रकाण-टीरा प्रटक व्यर्ग, का चार प्रेयो कमदाबाद देखाना जानभंदारका है. व्या स्पर्गत मारी धारणा प्रमाधे रेप,मा भेटारमा १ उपदेशस्टस्य २ व्यम्प्रकृतिकृति ३ वीरस्तुति न्यायखंडस्याध स्वीपज्ञ व^{ियार} आहि धर्या दम उपायावर्ता महागवना स्वहस्ततिविनव होता बोडण स्थायातीक्तीप्रति गुरु देनानंदर्क्तक स्थाम है. बोबॉर्सिस्माइतिनी प्रति माबनगर श्रीयात्मानंद जैन समामा रहेण मित्तियवयंनी मत्ना ज्ञानसंदारमां छे. १ विषयतावाद को २, स्तीत्राव्यं स्तोत्राव्छं स्तोत्राव्छं स्तोत्राव्छं स्तोत्राव्छं स्तोत्राव्छं स्तोत्राव्छं स्तोत्राव्छं सं प्रेसं संभात अविनयायामां आनीतिविष्यं मान्यात्राव्यं ज्ञानसंदारमां छे. व्ययस्त्राह्मी पूना मांदास्तर इस्टीट्युटमां छे. १ काव्यप्रकारटीता जूटक वर्ण २ वादसाला, आदि प्रेसो पून्य स्तिसाद् श्रीत्यवनिस्त्राह्मी संगोधित अने परिवृधित करेली प्रति प्रव्यपाद वाचार्व अविसद्तिस्थायां मत्ना विषाशास्त्रात्रा श्रात्माव्यास्य अपना विषाशास्त्रात्रा श्रात्माव्यास्य स्ति प्रति प्रव्यपाद वाचार्व अविसद्तिस्थायां मत्ना विषाशास्त्रात्रा श्रात्मावास्य स्ति प्रति प्रव्यपाद वाचार्व अविसद्तिस्थायां मत्ना विषाशास्त्रात्रा श्रात्मावास्य स्ति प्रति प्रव्यपाद वाचार्व अविस्तिस्थायां मत्ना विषाशास्त्रात्रा श्रात्मावास्य स्ति प्रति प्

उपर जणाज्या प्रमाण उशाज्यात्रमान स्काणिक अंगोनी स्वकृत्वाविक्षित सूळ प्रतिको-पहेळा सरहाओ, जे आजे आपणा सामे विवस्त है, ए बोतां जायणने प्रसीति बाय छे के—सेननी स्कल्पराणीं विचारपार्थोना प्रवाहों केटल अविचिक्त नेपायी वहेता हता है सामे तेमने प्रतिका-एणे पाढिया, भाषा, विषय अने विचारों उपराच प्रदूष्त पटळां आवर्षक्रक हता के तेमनी कळम अरहस्या दिना दोडो बाती भा सरहार्थोनां संसाव के अवेद सामये तेन्यो शाही कळम जायळ के लिएना बाता-पाठळाला आहिनो विचार करवा बराय योभारा नहीता तैमनी एक्तांनां आपारां विचारों में सेर-प्रत पण पणी ओळी बोबागां आवे छे. पर्वेद स्वाहारहरूयना स्वराह्यां विचयनो पासरहार्थोंनां में में ते कारणे वर्णोन चेर-पुत पर्व है छे आवा मूळ सरहार्थोंने "प्रतिका" "वीष् ग" ए नामोधी ओळखता हता भाषास्वराध्ये प्रधान प्रतिकां " आपारहृत्याचीष्ट्र" ए कखेळे छे वैरायकल्य-खातां " तैमणकल्य-खातां परिकोण परिकोण प्रयोग पर उसेर विच्या विचयां करित सहस्ता स्वराह्यों एक पर स्वाहरूत विचयन स्वराह्यों है स्वराह्या स्वराह्यां के प्रवासाय विद्यां स्वराह्यां विचयां करें स्वराह्यां विचयां करें स्वराह्यां विचयां करें हो स्वराह्यां के प्रवास विचयां करें हो स्वराह्यां करित सहस्ता स्वराह्यां करां स्वराह्यां स्वराह्यां करित सहस्ता स्वराह्यां स्वराह्यां स्वराह्यां स्वराह्यां स्वराह्यां करें स्वराह्यां स्वराह्य

अर उपांत उपाध्यायश्री पोठा गार्ट काव परे बन्यकृत श्रेवोनी तक्को पण करी केता हता. भंडरियेनो शांवी केटकीक प्रतिका बोलामां पण व्यावी के सावन्यपता झानमंदारामां हिरावहारिकत बहरूनी प्रति तेकीश्रीमा हरलाकरमां है. यायाविकाया उपायवना झानमंदारामां विश्वतिहारिकालो प्रति श्रीम्येक्तवक्षी - श्रीवक्षीक्षिवकारो गुरु - तिष्ये मठीले कही हो. देवकाला पाडाम्य झान-मंद्रारामां शहरूनाय वाचलाति स्वावार्षकृत वादपिष्टिकेटनी ग्रांति तेकोश्रीए खात्री व करेकी हार्डी स्था के. ए श्रीमेट्रमाविक्षकर्याणाना देवकाला पाडामा झानमंद्रारामांथी भठेकी हादशारायचक्ष उपरांगी श्रीसिह्दादि गणि खमाश्रमण दिश्चत टीकानी ग्रतिनी नक्क तेवना तेवस तेमना साथीकोला हाये कसाविकी हे च्या गति तो जैनकाशन कर्ने बाह्यस्थ्य गुंगाराहरूपत्र मण्यान. व्या ग्रीतिनी परिचय प्रस्तुत स्थानंत्रमा जुती काववामां बाज्यों है. या वशुं कोतां कर्ने विश्वति तेशिकीमा क्ष्मस्यसमास कर्ने सत्तरीजित्यका मान्य सम्बन्ध योगिकोन चणा वाचो रोजी वाडा है. व्यावास्त्रत वाग्नत सहपुरुयो पण पोताना वीवक्षनी समग्र मानवामोली क्यारेक्ण स्थानी विश्वति क्ष्मद्वी स्थानी विद्या है, प्रम् वर्गते व नवी. वने तेशी व क्षावे तेमना प्रमेगमाका, कर्मग्रहत क्ष्मद्वी, लागियी चरित महाकार व्यदि भंधो रचातां रचातां कृष्ट्या रही गयेळा च बोनामां व्यत्ते छे. संसारमां सुगद्यागन्तरे स्थारिक र स्थारेक च षात्री विशिष्ट्यानसंस्त्व संस्कारी विष्णृतिको चरातना प्राणोकोना पुष्पराधियो जाकर्षाहैन अद्यार छे छे, जैकना कनतारयो सिंक कृतकृष्ट बहु बाथ छे. कने ए विग्नृतिको विधने अपूर्व वारसो करण करोने विदास बहु बाथ छे.

हानमंडार

वयाव्यावार्त सहारावची एक ज्ञानमहार एटटे विशिष्ट पुरानकोची संग्रह हती ए कर्चे स्थळे हती होते साहिती आपकाने भठाठी नथी, पण ठे करूर विशिष्ट होती बोहए एएगा ग्रंक तथी, एम ठे करूर विशिष्ट होती बोहए एएगा ग्रंक तथी, एम ठे करूर विशिष्ट होती बोहए एएगा ग्रंक तथी, एम ठे करूर विशिष्ट होती बोहण एम ग्रंक तथी, एम जो एम ग्रंक होते हता है के ठेमना पोशाना ग्रंपीनी पोशाना होगानी माने प्रशासको माने सामस्यक्षीमी प्रशासका माटे टह क्याता धानाना हंगहताची योगविधिकाहाची आधि वेश ग्रंपी मठी आमा है आप केम बचुं हमें। एम एक ज्याजकाती समस्या व है, ज्याप ठाठा तेमनो पुस्तकर्पणह — झानभंतर हती, ए ज्यापणे देकगाना पाहाना नदस्यां अंककारमुद्दानींग, उत्पादिरणविवरण आदि ग्रंपीन संति भटाता ''संवत् १०४५' वर्षे चैन सुदि ५ श्रीयकोविक्यपाणिचिस्तोची हुपं प्रशिक्त एक श्रीयाचिवक्यपाणिना निकाहकां चिरकोची हुचं प्रशिक्त पुष्पार्थम् ॥ 11 इत्यादि उत्पेती हारा निविद्य रहेते वाणी शकीय छोए.

गुर-शिष्यतुं दात्सस्य अने भक्ति

 रनेह, बास्तस्य अने मिकानी ठार्मियोने अनुभवी केटडी मरुकाती होते ' ए तो तेजा जाते के ज्ञानी व जाणी शके.

उपाध्यायजीनी अनेकरूपता

मानवरवभाव सामान्य रीते हुमैजां संबोधवशवर्धी व हो, बने प्रसंग आवतां तेमां विविध माहो जागी उठे हे. एटछे उपाच्यायजीना ग्रंथो अने तेमना जीवनप्रसंगीनो वापणे विचार करीए तो तेमनामां अनेक भावो जोवामां आवे छे. तेओश्री एकांत शुरुमक हता. एव कारणसर तेमणे गुरुतप्यदिनिश्चयना प्रारंभगं " अम्हारिसा वि प्रकला पंतीय पंडियाण पविसंति । अर्था सरुभतीए कि बिल-सियमुरुक्षयं इसो ? ॥ " एम गायु हो. पोताना विचारो माटै तेओ अहम अने निर्मेश हता न्यायालोकमा अंतमा तेमणे "अस्यास्त्रां नयादग्रस्तानां चरणकरण्डीनानाम् । अध्यौ पीत् इवेह प्रवचनरागः भूभोपायः॥ ³⁷ एम छली पोतानी बास्तविक अपूर्णताने व्यक्त करी हे. क्रवारेक पोतानी प्रत्य रचनाना विषयमां विषम वातावरणनो अनुभव वर्ता देसना अंतरमांत्री "अनुप्रहत पव नः क्रतिरियं सतां श्रोभते, खळवरुपितैस्तु नो कमपि दोषमीक्षामहे । " तेमन "ग्रन्थेभ्यः सुकरो ग्रन्थो मृदा इत्यवनामते । " इत्यादि कटु वने इत्रयनो उकळाट दर्शनती उत्तिको पण नीकळी पढी हो. प्रतिमाशतकनी टीकामां "चतेन खम्याकानां अस्वे सवीक्तवेको इत्तः।" प प्रमाणे सांप्रदायिक कठोरताने रज्ञ करता पण तेओ जोवामां आवे छे. दार्शविक पदार्थनुं विवेचन करतां दार्शिनकोनी क्षारंता पण जोवा मळे हो. सीमंघरविनविनतिस्तवन आदिमां साधकीवन सने गृहस्थकीयननी सदोपता कोई ते उपर कटाश्च करता पण तेको देखाय छे अने जानसार, अध्यारमसार, द्राप्त्रिकादद्वाप्त्रिकिका सने सजसविकासमाना व्याध्यात्मक पदीमां तेव्ये यध्यस्थमान, व्यान्प्रदायिकता भने समरसमां श्रीलतः दृष्टिगोचर वायक्रे. हात्रिशदहार्तिजिन्हानी २० मी हार्तिशिकामां ⁴¹ ग्रहस्टि-भिशक्तम् ¹¹ एम छखीने तेकोशीए दिशंबराचार्यकृत अन्वनी साक्षी आप्या पछी का प्रमाणे जणान्युं छे-- " म च एतहाथाकर्त्तीर्देगस्वरत्वेन सहर्षित्वाभिषानं न निरवधम् ' इति मृहिषया शंकनीयम् , सत्वार्थकयनगुणेन न्यासादीनामपि हरिषद्राचाँयस्त्याभिधानादिति" क्षयांतु "का गाजाना कर्ता जानार्थ दिगंबर होवाथी तेमने महर्षि तरीके छल्खु योग्य नधी-एवी कोइए शंका न करनी. कारण के तात्विक वस्ताने कहेवाना गुणने ध्यानमां रुई श्रीहरिसहाचार्ये व्यास काहिने पण महर्षि तरीके नणान्या के ¹¹ या प्रमाणे तेओश्री विविधमावीश्री संस्पूर देखावा छतां समप्रमाने विचार करतां तेथो ताच्चिक ज्ञान अने शृद्धचीवनसायनाना पिपास सायक महापुरुष हता. **स**जसवेळी भास

श्रीयशोधनयना मण्या बीननपरित्रे रूपाति हुंच याहिती वाषणने युनि श्रीकांवितियस्य । (अनुभार महोपरपात्र श्रीनित्यवित्ययतीमा गुरुगाई)ए रचेची चार दाळ जने ५२ माद्या प्रसाण सुक्तसंबेहोमारसांवी मळी जाने छे. जेनो टूंक सार वा प्रयाणे छे.

हुपाप्यायबीमा समझाहीन (!) झुनिक्तं सुकत्तरेहोयासमां व्याटडी बिगांत रज् ऋरीं है. परंतु व्याचे व्यापमा सामें क्षीचा पुरावाची विषयान है ते जोतां यासमांच संवतो गने हे कारणे विश्ववित हो है.

- आसनां 'स्थान्वावश्री क्लोकामां बन्न्या हता.' ए अने मातापिताकां नाम आपवामां आच्या है, गण चन्नसंतत अने दीका सबये ज्यान्यावश्रीनी वय केटही हती! ते विषे मासकार मौन हे
- २. म्रासकोर ज्यान्यावयोगां झंकानुं वर्ष सं. १६८९ (१) क्यान्सुं छे. परंतु क्यां कायणा साने अंतरपत्रिक्यमां महागमें आंकानिक्यमां महागमें आंकानिक्यमां महागमें आंकानिक्यमां महागमें सं. १६६९ मां छलेछ हैयबातुपाठनी प्रति क्ये सं. १६६९ मां छलेछ हैयबातुपाठनी प्रति क्ये सं. १६६९ मां छलेछ ह्यबातुपाठनी प्रति क्यां सं. १६६९ मां छलेछ ह्यबातुपाठनी प्रति ह्यां सं. १६६९ मां छलेछ ह्यबातुपाठनी प्रति क्यां सं. १६६९ मां छलेछ ह्यबातुपाठनी प्रति क्यां सं. १६६९ मां छलेछ ह्यबातुपाठनी ह्यां सं. १६६९ मां छलेछ ह्यबातुपाठनी ह्यां सं. १६६९ मां छलेछ ह्यां सं. १६६९ मां स
 - ३. र्स. १६९९मां कानदाबादमां बाठ व्यवधान इर्जा पत्नी बन्नीववयनो द्रांतप्रत्योता, सास क्रोनक्ष्यण्याका व्यवधान साटे व्यवधी व्यवधी सम्बद्धी स्वावधी है. ज्यारे ल्यादाद्वाहर सेचा समये प्रत्योग क्या से १९०१मा क्रास्त्रका एक्ति व्यवधान क्या करी है व्यवधान तेने प्रदेश प्रमास्त्रका अर्थ्यक्षित, वादमाश आर्वे संव्यवंत समये वाद्यीनक व्यव्धित क्या तेने क्या है क्या प्रत्या है एटल ए प्रश्न व्यवधान क्या है क्या वाद्य संव्यवंत समये वाद्यीनक व्यव्धित क्या तेने क्या तेने क्या प्रत्ये वाद्य क्या तेने क्या तेने क्या तेने क्या तेने क्या त्या व्यवधान क्या व्यवधान क्या तेने क्या त्या व्यवधान क्या व्या व्यवधान क्या व्यव

न्यायाचार्यंषद मेळववा पहेलां जे सो प्रत्योनी रचना करी ते क्यारे करी है या बधो विचार करतां १६९९ मां कालीए जब असगत ज ठरे ले.

४ इवर्गवासने रुगतुं अंतिम चोमासुं उपाच्याक्वीए हमोइमां कर्युं, परंतु एतुं वर्ष मासकोर १७९२ आयुं छे ए विचारणीय छे. कारण के उपाच्यावश्रीए मतिकमणहेतुमर्भस्वाध्यायमां

" सुरित चोमासु रही रे, वाचक बस करि बोढी, वइ० ।

युग ग्रुम ग्रुनि विघ्नु वत्सरह रे, देवो संगठ कोटी वह० ॥६॥ "

ए प्रमाणे १०४० ने व्यक्षनीत सुरतमां कर्मानुं वणाव्हुं है. अभिचारसंगानी सम्बायोगे अंते पर "युत्त युत्त सुनि बिधु बच्छर्र हैं , श्री क्षाविक्य उद्यक्षत, टोट० ! सुरत चोगाहु रही है, होने ए सुरताल, टो०बरे॥ " जा रीते सं० १०४४ ने बाहुमांत सुरतमां रह्मानुं वणाव्हुं है. से ट्राम क्षानुं के से 'खुता ' क्रम्यूबी से संस्था कर्द्र ' १०२२ वर्ष ' मानतुं, एवा 'खुरा ' क्रम्यशी सुरूपरणे पार संस्था केवा है. ए दशानां कर्मा ने संस्था केवी ए एकाएक बटमान करतु क्षित्र है, ए सिर्गय एक्ट रीते शह क्षके से — जो जा ये स्वायायनी के वेमायो केवें एकती स १७४४ पहेलां क्षसे होता तथा स्वयायनी करता स्वायायनी करता स्वयायनी करता स्वया

का शेरि विचार कराने एकंदर बालकारनी स्वतने कराती बातनो कोई मेळ मळतो नही. युटके उपाध्यायकीमा जीवनचरित्र कीना का प्रको विद्यानेए पुनः गंपीर शेरी चर्चबाना व रहे छे. अंतिम निषेदन

, अंतर्म सौनावती निवेदन छे के-जानतेबोन्हिं नहींगाव्यादबीद वे घरा उपर पोशाना पुनीस बोदननी समाधित करी समाधि छीवी हुती, एवं परामां अवतार छेनार एवं नामपारी झुनिवर श्रीवरोविवयवी ' क्योबिकससारस्वतस्य '' उत्तववा पूर्वक आपणने एक अपूर्व स्वृतिश्रंभ कर्षण करें छे. तेनो बारणे सी क्याबाद प्रदानवर्वक वे हाथ समापीन स्वीकार क्रीवर झीर

तेको उपात्यावको महाप्राक्षणीया बीवनने त्यर्थेठो बीवी विभिन्द कृति व्याप्याने आपदा नाटे प्रकारपति छे. ए जाएणा ही नुषटे सन्दिष्ट बार्वदनी यात छे. सीने बार्जीन शानंद शहे हे— श्रीवरोधितवाबी कने तेमना गुरु-प्रगुरुश्रीमी बीवत शैरणायी व्याची एक कृति नाटे प्रो० माईश्री हिरास्त्रस्त सिक्स्तर कायदीया-बेको एक सुवोग्य विदाल लेसक छे-प्रकल करी रहा छे.

आ उपरांत उपाध्यायनी महाराजनी जपूर्व रचनाव्योन अकाशित करना माटे पण तेश्रो उध्यवशील छे, प ते करतां य विशेष आनंदनी नात छे आपणे हों। व्याग रास्तीप छोए के था बधी सामग्री व्यापणने सत्त्वर प्राप्त भाग 1

—मुनि पुण्यविजय





॥ श्रीवानकवरेम्यो नमः ॥ प्रकाशकीय निवेदन

विनयमेंना महान प्रमादक, सारतीय विवृत्ति, कूर्योक्कारदा, गुकरातना ग्रमेविकेर प्र रचाव्यामधी भागवाना पोवन कने कवनने रचकेता देखीयी समुद्ध 'न्यायविद्यारद न्यायाचार्य सहोपाच्याय श्रीयहोचित्राय स्मित्तास्य' प्रनट करतां बावे अवने अवस्त कांच्य वार्वर यात्र है बहु सानंद तो एथी बाव के के बावो प्रमान बन्युक्ष बयो के, वे बळी तेशोशीना नाम साथे संडळाएडी, नवी स्थामस्त्री 'श्रीवाद्योवारदी मकाञ्चन समिति' तरकवी बहार पड़े हो, ए रीते समिति प्रकाशनी दिलागां पहेलुं हम मही रही हो.

भगवान विनेन्द्रदेवना शासनना विश्वस्थापका सिद्धान्त्रों कने तेनी पवित्र संस्कृतिना संवाहकी, स्त्रकों बने प्रवासको व्यवसार्थों उपाव्याची को काव्य शासूची है, बेजी दिकता मानबीकीने सरय बने ह्याननी दिज्य सन्देशी संमद्धावें हैं मानवी तेने सांबद्धीने वीतांतुं वचायोग्य कत्याण सांवें हैं.

पू औपरोविजयां है, ट्याप्ताय परे विहानवान हता तेची तेचों हो उचाया भीवशोविजयां स्वाय है तेचों होता स्वय है है तेची है तेची है तेची है तेची है तेची है तेची होता है तेची है ते है ते

आ प्रत्यने मुख्यपये वे विवागमां विश्वक कावानां धान्यों हे. पहें हांगां प्रीज्यान्यावतींनुं तीकन द्या फ़रन कने वीवायां जुदा जुदा विषयों उपस्ता निवंदोनों समानेश साथ है जा उपसांत "श्रीयतीचिदयवीती मुर्तिनी प्रतिद्धा को श्रीक्ष्मीकेवर सारस्वतस्त्रकानों हेवाल" ए श्रीबृंक नोचे मुंदर्द-हमांद्र वैनसंस्था व्यवेदों काववायों तीनों क्रायक्रिम को 'वैन' पत्रमां प्रयट बयेदों अहेवाल उरङ्ग करीने साप्यायां व्यव्योठे सारस्वतस्त्र प्रस्ता व्यवेदायां व्यव्यायां व्यव्यायां व्यव्यायां व्यव्यायां व्यव्यायां व्यव्यायां व्यव्यायां व्यव्यायां व्यव्यायां काव्यावां हे करत्यां हो. श्रीयुत भौगोलाङ सहिसरा बने वज्जील श्रीनागकुमारे आवेखेलां संस्मरणो वन आप्यां हे. लाम कुछ ४६० पानांना छलाणवी प्रस्तुत अन्य समृद्ध बन्यो हे.

स्वती ऊतवणी पूर्वे विद्वानी उपर एक परिषत्र मोइलवामा आवेलो अने तेमां 'केस्तो वगेरे स्वपी प्रसिद्ध करवामां आवतो ' एवं क्वर आपवामां आवेल्, ते आवे पूर्ण क्यां आवेद साथ है,

एक ज स्वके उद्याध्यावयों कंगेनी बदुमां वृद्ध बीवनसामओं होय तो अविष्यां टेमना विषे सुष्ठ कम्यास करवानी के रुखवानी कामना करनारने ते सहावन्त्र वह पढ़े, ए टिंटने इरवारी राखी ' द्वस्वपेकीमास ' तथा जगाउ प्रयट ववेदा, कोई कोई देखी ने दुवारी वदारिने वास्त्र कर्या है, उपाध्याध्यवीं वाधारम्हा कोमन चित्र हुन् दुवा गळी मान्यु नयी. वे कांड योडी क्यों विरात मळे के ते दुवसर्वकीसामसीयी. बाड़ा नदी दंवस्वायों ज्याम पुरती साम्प्रीचा कमाने टोमना जीमन-कदम साहित्यानी व्यापक क्षणे केंडा कम्यास पूर्वक समीया करनार व्यक्तियों साम्याध्या वस्त्राह्म कराया हुन्या प्रगत्न विद्या करे तेवोजीना बहान व्यक्तियां अपने तेवना प्रत्योग साम्य वस्त्राह्म उपर पढ़े हे, तेनी गरिष्य विद्याल कर्म कान्ता क्रमे कम्य विद्यत्ये स्थाप तेवना प्रत्योग साम्य वस्त्राहम उपर वह हे, तेनी गरिष्य विद्याल क्ष्म्यास्त्री कम्यास्त्रमां प्रवेशमा प्रस्तावना इत्त्र वह वहते एवी व्यक्ता राससी बचु पदती नची.

छेसोने प्रभाश्य करानों निर्णय केवायों त्यारे कहीं य सुद्धी न हती वने देतीलों स स्वार इंकारवामां व्यारेक सहमार्थ पाठळशे इमोईना श्रीविजयदेवसुर वैच संबे, सारी एडी सदद इसी, तेम इसी तेनाथी ग्रांय छ गुणों सर्व थयों छे व्यार्थिक सकोचना इन्त्ये प्रभाने कने तेटछों सादों बनाव्या रियाय स्ट्रकों न हतो प्रशासनीय सेंदियें करता सादाईनी मनोत्मता १० किस्क रिक इकाबनारी होय छे व्याना सादा प्रभ्यानी व्यांतससप्रदेद बोको नयी, यूवी याचकोने साबी अर्पाय छोए.

प्रेस बगेरेती पाराचार अरुक्टांजीने छीव मुदल कामे जल जल प्रेस बोधा, छदां कोई वोईए के छेड़े वसंद फ़िट्टींग प्रेस कि ना स्थालक बाई ऑक्सविटनलक बलके जगार जा कार्य पोतानुं मानीन उत्साहपूर्वक कही जानु छे. जने प्रेसना शुरूप कार्यकर श्रीक्षान्तिस्थल बाह अने तेसना सहकार्यकरोप पण पूर्ण सहकार ज्ञान्यों छे.

श्रीपशिषिवय सारन्तसम्मी ऊष्यणी तथा प् उषाध्यस्योग पवित्र हस्ताक्षरे व्याता क्लोको तथा प्रश्नाक्षण क्षेरे काची वापवानु काम कमराबाद दौषक धि-रहेना मानिक श्रीन्हमहूए इसी भागूं हे, प्रन्तनुं बावरण द्योहेंचा उद्याही विश्वक्त औरमिनक्लाक चुनिवाल ज्याहे तैयार इस्तुं है, प्रति श्रीक्षंत्रकाव प्रेमकंद शाह पुक्त स्त्रानिक वर्षे भागूंची व्याणीर्षक सहाय करी है. बाहिंदिश श्रीक्रकोशाई वासुकाईप करी बाहिंदिश श्रीक्रकोशाई वासुकाईप करी बाजु है. बा सीमी वर्ष वंत-काणधुक्त वासार मानीए छीए.

आ प्रत्यका संगठनम् कार्य अवश्यी इति सुणी अवश्यनकार परम्पून्य विद्वान सुनिवर् प्री यवोचित्रपत्रीए संयान्युं छे. सथान्युं हे एटहं च नहिं, पण कसाह, खंठ अनं शोक्सावर्ष्केत तमाम ज्ञावतारी उमझी समय अने शक्तिनो सत्तत नोग आयो पार कसार्युं छे. देमना आ क्रणने अने बहुनान्युंक स्वीक्तर फरीए डींग् सायेखानं णा कार्य माटे देमने अनुवा आपनार तेलोशीना विद्वार गुरुदेवो परस्यून आवार्षका प्रवापस्तिकरची तथा परम्पून आवार्षका प्रमीवर्गन मादि मुनिवरीने समे सेम मुखी ज्ञाकीय र अन्यनी क्रणीक्तर मुन्दिस्त 'आनुस्त र कर्ता अपित, तम अनीत्र रिते पण सुनदासक वननार वाणीजा साक्ष्यक्ष ए, मुनिवर्षी पुण्यविक्तवयो महागान्युं क्रण तो हो मुख्य

सुनोमनरकोको तथा प् उपायाभ्यांना इत्तारमो तथा अन्य स्टोको भाषानुं शौदार्थ दाखस्या पर्वतं, श्रीमहावार केन विचालय कने तेना कार्यवाहकोना एक कमें कणी शीद को के सुनिवारी तथा श्री रिलिश्त वीपालय कने तेना कार्यवाहकोना एक क्षेत्र तीत जा कार्यमां महद करी है. ते सीना अमी आमारी शीप होन्छे आर्थिक महद हाग प्रन्थ प्रकारको शक्त वनावनार व्यक्तियो कर्ने संयोग कमें कनहर आमारी शीप को हमें पत्री पू. उपायायांच्या महसाबना थनारा प्रन्य सुद्रण-कार्यको कैन श्रीसंघ पोतानी सम्बन्ध आर्थिक सहकार व्यापो पू. उपायादांची सरावानना क्षतेकारिय महारुप्तारों कैन सीम स्वय वण्य के जाम है, ते कहा करहो तेवी विनन्न विजीत है.

अन्तमां व्या प्रत्यमा वाचनवी मुकुषु वाचको उधाच्यायचीना तत्त्रमस्यूर मृद्धप्रत्योग्। सम्यास माटे प्रराय वने तेनांको कन्याणकार्य कर्ष्यमुर्ता प्रेरणा सेटको पोताना वीवनने तत्रद बनावे एवा समिछार ।

देरापोळ हाशीकाना महा श्रद्धि ५, चै २०१३ श्रीनागकुमार नाधाभाई सकाती कारुचेंद्र सैदलाक शाह विचे- श्रीयोगस्तो क्लान समिति वहोदरा





संपादकीय निवेदन

स्रकतु चिनवराः । स्रो स्डज्यायाणं ।

प्रमाराध्य परमेपास्य, प्रावःसम्पत्तीय, पूज्याद साञुजाईक, वार्षिकविरोमिन, त्यायविवात्तर, त्यास्यायर्थं महोपाच्याव श्रीवरोमिकव्यं महापाच्या श्रीवरोमिकव्यं महोपाच्याव श्रीवरोमिकव्यं स्वत्यायं महोपाच्याय श्रीवरोमिकव्यं स्वत्यायं महोपाच्याय श्रीवरोमिकव्यं स्वत्यायं महोपाच्यायं श्रीवरोमिकव्यं स्वत्यायं प्रक्रायं स्वत्यायं स्वत्या

स्मतिग्रन्यमां ग्रं छे ?

आ रहिमायने वे विमानमां वहेंची गंतवामां आप्यो छैः पहेल विभागने 'महोपाध्याय श्रीमद् यश्रीविजयजी जीवन-कर्त्तवहीन' नाम आर्थु छे व्य विभागे २२॥ फोर्म एटछे २६० १९६८ रोक्यां छे. श्रीका विभागने 'अन्यविषयक निक्यों ' ए नामशे रज् कर्यो छे. या विभाग, स्मानमा १० फोर्म एटछे ७५ एटमां समात वाय छे, त्यार पछी वर्डीक श्रीञ्चत नामकुमार ना० मकाती तथा श्रीञ्चत सहमाई बैक्या संपादन गीचे पू. उ. श्रीयक्षेत्रिक्यसुर्व्यादेर-मित्रिया अने श्रीमद् यशोविजयक्षारस्वत सननो सुविस्तृत देशाल, वास-ट्याएना सर्देशानो तथा सन अंगे िद्रान मित्र हों, श्रेषुत मोनीन्यल सारेक्स तथा बन्दील श्रीषुन नागङ्गार महातीए लाउंबेस सेस्सरोतो होते, वने वन्त्रमा ज्याचारची सगवानना प्रत्योमो वशु श्रुद्ध कने विभिन्न ग्रन्यपादी≠ लापो हे, व्य रीते व्याता रुचमी पृष्ट सेस्या १९० व्हें हे.

आ फंडमां साम्बीती महानात तथा खानिखाना छेतने पण सास स्थान आर्यु हैं; हारण है सैन क्षेत्रमें का वे खेलो जानना क्षेत्रमा पणां हुनैन स्वां छे, तेथी था धंगोर्मा पण भा डिमाना क्षेत्र रासात वर्षन थाय.

एक बातनी वीरवर्षक उद्धेस करने कोई के संगीतर ऐक्टरोने टेकी टरलरा माटे टीटथी वे मास लेटडी करसमय प्रयोदा काफेडी: करंट, उपायावाओं क्षेत्र कंट्रक क्षात्र कोई के कर्की करस्त माटे होटथी वे मास लेटडी करसमय प्रयोदा काफेडी: करंट, उपायावाओं क्षेत्र कर उस के स्वीत काफी सामग्री विवास तहारी. कोटी को केमने वीवत-क्ष्मके क्षितिक हतो. का संजीवीनों मार्थसागरमी- गळावुड तुनेका विदर्शन पालेथी नेवित सामग्री नेटरबी, ए केटर्ड मुक्तिक परि हो तहाँ होती कामा कामग्री करात नयी. एटर्ड स समितिए वर्षों मार्थस्त क्षात्र मार्थी हता सामग्री हिंदुप्राधिक क्षात्र मंग्री, एट्ड स समितिए वर्षों मार्थ कंडरेक टेकोची काम प्रवेदी त्या यारायी हिंदुप्राधिक केसी सेटर्डी कर्मी, ते स्तेर्सन, इसावतम प्रवेदी कर्मी, ते स्तेर्सन, इसावतम प्रवेदी कर्मी, ते स्तेर्सन, इसावतम प्रवेदी कर्मी, क्षात्र कर्मी कर्मी, ते स्तेरसन, इसावतम प्रवेदी कर्मी, ते स्तेरसन, इसावतम प्रवेदी कर्मी, क्षात्र कर्मी कर्मी, ते स्तेरसन, इसावतम प्रवेदी कर्मी, क्षात्र क्षा

ग्रजसबेळीमास अंगे

एपारयायजीनो जन्मसमय क्यो ?

अर्थि एक गाउ विचारवांगी है. मुख्यचेठीकोर रूपमां साहर के तिथि बणाची नहीं. मात्र वीकावरीतीका ने टपान्याव्यवर्दी छोड़ों च बणाची है, पत्र चिचि बणाची नहीं, स्वर्गतगवती साह स्वर स्पादी नहीं, विधि पण चणाची नहीं. दीखाची सहह १६८८ स्पास्त्रा बाद १० वरसना

ગેર્જે સીના ઇજનવારિત પ્રત્યેરના લગામ ઋત્યોનું પ્રખ્યાનું, ભવા, નિવ્ય, રન્યાતંત્રત, દેતા શાસનમાં લખી, તેની લતાપ્રીન કર્યો છે, સુર્જન ફેનિયા પ્રાપ્તક કેલ્યું કે વચેરે અનેક લ્લ્યોક્સો સાથેની સુનિસ્તૃત ઋત્ય-ય દી સ્થાપતાર્થી ભાવગે.

ક્ષીમદાર્થંગ જૈનનિસાલયા શીનિસ્થવદાસ્ત્રારિ સ્થાન્ટ અંકર્ય પટના પશ્ચિવમાં દરિ કે પ્રેસ દ્રેતવી
 'જન્ય-સ્થર્યપ્રતની સહી રહ્ય છે, જેટું ઇપાલુ છે. તે જાતગ નથી સાટે સ્લાદી હેઠું

गाळा बाद १६९९ नी अवचान कर्मानी साछ नोचे छे वने त्यार पढी काशीममन सूनवे छे, एण ते भगोर १-ते विषे यौन छेवे छे आगळ चाळां काशी बने आशमां [१४२] साद वर्ष रहाानो उड़ेख भरे छे. पण ते मारे चोकक्षस साछनिर्देश नशी करता, गुचरावमां पुनराममन क्यारे यहं ! वनेरे हक्षीकृतो उपर पण संपूर्ण अन्यारण्ड छे.

१६८८ नी द्रीक्षा बजालीने शीको १६९९ नो, ने त्यांत्री सीवा उपाच्याययहार्यका १७१८ नो, ने छेनटमां उधोई चाहुप्रीय कर्यांना १७४३ नो, बाय चार संबताना ए उड्डेख करे छै. ह्या स्विषय बीजो कोई सवारोख के साळ नोची नवी.

द्वावत्वेचीकार, उपाऱ्यावजी श्रीवेनविकवयोगा गुरुभाता च होव तो, तेवो टेस्त् समयरा कृषि होवा छता, रेकोप श्रानुत कृत्याचां महत्त्वनी हकीकृतोशी केम कशी चौंच व छोवी १-ते घटना वरेकर । एक कोयहो वर्गा वाय छे.

अने उपाध्यावजी हो, स्त्रोस्तर ह त्यागमय जने निस्तृह बीवन बीवता लैन सहिषेत्रीमी पर्रमाने च अनुसर्या छे. एटळे ह्वजीवननी सोच खेंगे तेमणे हो केवळ उपेका च हेवी छे.

आधुष्य केटर्छ ?

मुन्तदर्वशीन संवतीनी स्थादिन उपरूप्य बन्यान्य उद्येखीद परकारी छे. सुन्तरवर्धाना शावारे दराष्ट्रायायजीनी मावरदा ६० थी ७० वर्ष बंदाजी शकाय, ज्योरे बन्य साधनी ९० वी १०० दरसर्तु भाषुण्य नक्षी करी ज्यारे छे. सुक्तवर्वरोकारे दीखा १६८० मां चणायी छे, तेकोशीने पाळतीचित गारीने, दीखानी बग व्यक्तिक वर्षनी वो कस्मीय तो जन्म संवत १६८० व्यवस्थास ब्याजी शकाय.

ह्वे वि सं. १६६३मां खुद उपाऱ्यावतीमा गुरुवी शीनयनिवयत्वीए उपाऱ्यायती माटे मीटोख मेहरपर्वतमी आङ्गिताळ पटमां उपाऱ्यावतीम, ए बस्ते 'पणि' तरिके उक्केव्या छे, खारे तेमधी दीखा क्यारे गणवी 'कण्य क्यारे कल्यतो 'सळते सक्केमाना, दसार्णमहरूकाय बगेरेनी प्रतिकोते क्यते तळेखा उक्केखो खोलां तेमोशीनो कन्यसम्बर लाह्यिक रीते पाछळ व्याय, एटटे के १६४० बी १६५० बहेनो क्ष्म्यी एकाय. स्वक्रियम तो १७७५ पहेटां च बर्यु छे ए हक्षीकृत निर्विवाद छे, एसो तेमोशीन रात्रसः मानवार्या कोई वाच बणातो तथी.

१६९९ मां राजनगरमां अवधान-भारणाशिकना प्रमोबों कर्जी पढ़ी व कांशी नथाती बात सुजसरेशीकार करे हे, एक तेशी ते तुरत व अवा है के वे-चार वस्सो थाद ! ते सूचवता मंत्री, आना अपक निर्मेष साटे अन्य सावनो गर्मपढ़ों चोईंब.

कालधर्मनी तिथि कई ?

उपाध्यायजीतुं बायुष्य अने स्वरोगमननी संवत कंगे विहानोगां पचासेक करसयी मतभेद

चांछ छे. एमां डाल्यपीनी साल वरित भोटो भाग १७४५मी टल्लेस करती थाजो हे, ज्यारे तरहिष्मित वेथी चुदो छे. तथां क्यम केम चारण्य इसे ! प्या कारणाया प्रधान कारण तो पाट्डानो शिल्लेस स हाये छे. प्या जमर "१७४५ मी साल अने मामसर मुद्रि ११" लख्तुं छे. प्रथम प्रथम जेन क्योक्ट्रसाईथी ल्हाम बांजुं इते तेणैन प्रस्तुत साल-विधिन काल्यमंती साल-विधि साक्षेर करो तीथी हसे ! अने पद्मे तो लीट लंदि कहु उल्लेस करता गया इसे ! धरेलामे बागणा मीतिया पंचांगोमां पण आ सोटी विधिनो उल्लेस मूं रही छे. चरंतु है साल नथी तो जन्मनो के नथी वर्षोग्यस्ता। माटे चाली आवर्ती का मूलने सालर सुधारी हेनी वर्षेष्ठ प्रस्तुत १७४५नी टल्लेस है से क्षमत्वावादनी पाटुक्सनी प्रतियानो छे.

आधी एक बात नि शंकपणे निश्चित यह बाय हे के तेनी १७४५ ना मागसर सुदि ११ पहेडा सर्वातासी अवा हता. पण ते स्वारं ह ते निर्णय करवानी रहे हे.

सुनसमेडीकारे गापला-

" सत्तरत्रवार्षि चोवासु रक्षा. पाटक नगर हमोई रे; तिहां सुरपदवी अणुसरी, अणसणिकरि पातिक घोई रे."

आ पर उपाध्यावधी हथोईमां भोजाह रक्षानुं स्थर चलावे छे. एवं स्वर्गतन चार्डु-सीसमां बर्डु के ते बछी बर्जु है ते विधे ते संपूर्ण मीन छे. बोके बा इहिती सालोर भारे पंका स्क्री इसी छे, देखी केने केटछे बचन व्याप्तुं ते झंत्रकाको विषय छे; एटछे ए बातने बाजू पर मुसीए, पण उपाध्यावधीए क सुरवान चाहुआंकां वे गुनवाशी श्वकृतिको क्वाची छे; ए कृतिमां रक्वामी साल वे बणावी छे, तेनुं कांग्सम वस का प्रमाणे छे—

> हरति चौमाह रही रे, बाचक क्षस करि जोडी, बहु० युग-युग-युनि-विधु बत्सरह रे, हिचो संगळ कोडी. [श्रीक- व्रेसपर्स स॰]

> युग-युग-सृति-विद्यु वस्तरह रे, श्रीवसविवय उवज्ञाय, टोह० स्रुरत चोमास रही रे, कीयो ए सुपसाय टो०॥६॥ विधेया लंग स्रुर

त्यसनी वने इडीजोमां ए इतिको रचानी साखे चणाती छे. वामां वनेमां 'युग युग' इत्त्व वररायो छे. हवे सवाड ए छे के, चा झब्द वे कने चार वने संख्याची याचक छे; तो बढी कई संख्या बेथी! वेके चार ! या माटे केटछान विद्यानी युगयी व्यस्ती व संख्या गणावानी व्यायह प्रापे छे, व्यारे हुं तेथी जुडो एडं खुं. जळवा प्रस्तुत निर्णय करना माटे व्यक्तट्य साधन तो होई ज नथी. परंतु व्यही युगनी बके चार करना करनो व हरनो वसु संगत छे, एटखं अन्तराशीकण हारा अनुसन्धान करीने निर्णयनी नवीकमां जरूर कई सकीए छीए. त्यारे थोडोक विचारविमर्श करीए: जो वने युग क्रस्टनो अर्थ चार चार करीए तो १७८९ नी सालमां सरतना चार्त्रमासमां बेने रबाच्यायोजी रचना करी ⁵⁷ एम निश्चित श्राय. एटले जैन साधना नियम <u>स्थिन कार्तिक सर्वि</u> चौदस संधी (चालगीस समाप्तिदिन) त्यां च रह्या हता ते सनिधित थ्यं, इवे पादका उपरना छेखमां १७४५नी साल भने भागसर सदि ११ नी अंजनशासका ने ते राजनगर-अमदावादमां कवानं सणाज्यं हे. तैमनो देह हमोईमां च पड्यो ते वात सनिधित छे. सरतनं १७२४ नं चातर्मस कार्तिक सदि चीरसे पूर्ण थाय, एटले बहेलामां बहेला बिहार कार्तिक सुद्दि पूनमें करी ऋके. पूनमे बिहार करी हभोई तरफ प्रयाण कर्ये होय एम मानीए तो पुनम जने पादकानी अंजन-प्रतिष्ठा (तेय समदा-बाहमां) बच्चेनो गाळो मात्र २७ डिक्सनो छे. कहीयां विचारवानं ए हे के. सारखा विवसोमां, तेओ एकाएक विहार करे, सरत्वश्री ८० माईछ दर ढमोर्ड आदी पहेंचि, तरतातरत धनशन करवाना संयोगो कमा बाय, कारूवर्ष पाने, धने पाट्य रेटगाढी के मोटरना साधन विनाना जनानामां अरुदाबाद समाचार पहोंची जाय, संगेमरमरनी कमरासनस्य पादका पण वनी साथ, अने क्षेत्रन थई जाय-था वर्ष संबंधित रागे हे सर्ह ! मारो अंगत खबाब तो ' ना ' हे. छतांब घडीमर मानो के संभवित छे, तो पछी द्वयोईमा चातुर्मास कर्यांनी कई साल नक्की करवी है आ वधी विषमापत्ति टाट्या दुगयुगनी कर्ष चार न करतां जो वे करीए तो बधी समापत्ति वर्ष जाव. जीके पुगयुगयी तो २२, २४, ४२, ४२ वाम चार विकल्पो कल्पी शकाय छे. इतांय बीवां पुरावा-साधनो तपासवा भने विचारविनिसब फरधा माटेनां द्वारो खळां व छे.

उपाध्यायमी कंगेनो केटलेक बाबतो शास्त्रकृति ने परामर्थे मागी रही छे, तेमांधी महत्त्वती बाबतो हु रजू फर छुं

बीजुं काशीयमनमां मुरु, शिष्य साथे वन्य क्या क्या सुनिवरो हता ह

भा वातनी साक्षी छपाध्यत्यकता अन्योनी अनेक अवस्तिओ आपे छे

२-ट्रक्पोत्रा चार छेडे तेजी पाविहरूमा गर्ने सुन्छः चार ववानी बीनमा हता; प्राणे सुर्काविहर सेळनी हत्ती हो, मास्त्रीच्य स्टर्सानी वाह, बीत सानेगा सम्बन्धनी वाही, हेमना जीवन साथे अपरामा सामती व्यक्तिमधीकिमहो अन्य क्रिकटसीओ सम्बन्ध व्यक्तिमा माधी रही हैं.

३-(१) न्यायिकास्त, (२) न्यायाचार्य, कते (३) उपायाग-व्य त्रण पर्राक्रोनो प्रीपरे स्वयं उद्घेल द्वरों हे, १-३ आ वे पदयी फोणे ने क्यां आपी तेनो तो, तेओधी तेन ज भामका उद्घेल करें हे, पण नंतर वे वाद्यो पदयी कया रखंड कने कोंने मद्यी र तेनी निर्देश नधी गडती; तेमल, तेनले से सो प्रन्यो रच्या, ते कथा र ते पण गीपीर विचारणा मागी हे हैं.

४-जन्मस्थान कनोडु ज इतुं के केम ²

६-योगीश्री भानन्द्यनजी साथेनुं मिलन कचोर ने कचां धर्युं ^ह

६-कहेबाय छे के उपाध्यायकी जिनोर गांछे नर्मदाना क्रिगोर आवेखा निकीस गामगां पणी समय रह्मा इंता. अने त्यां तेमनी प्र-असंग्रह हती, तो व्या वात हो साबी हे ई

७-लंभातनो बाद अने त्यां ज काशीची आवेख विधागुरुनुं करेरहं गीरवर्ष्णे बहुमान ए हजीकत बधातच्य छे लगी ह

८-तैक्षोश्रीमी प्राण हेवा माटेना थएंछा प्रयासो अंगे, तेमचे स्वयं श्रीशंक्षेत्ररजीता स्तवनयां ने इत्योदार फाटचा छे ते हाँ सम्बदि हैं !

९—करिग्री बनासीबास व्यक्तिंग कोई कोई पद श्वना साथ उशायायजीनी पदहतितुं अवस्याः साम्य आवे हे, तो तेनो को कर्ष ² अने तेम चनवानुं स्नारण <u>शं</u> ?

१०-जपाय्यायवीने बैन जगर बागळ हलका चौतरक क्रिसिक्षेश्चेए कोई कोई कृति तेमना मामे चडावी डीवी क्षे ते क्षेत्रे.

आदी आदी अनेक इंडीकतो चकासवानी हो.

खेदजनक घटना-

द्याकी गासनमा आवा एक प्रस्क्रमानक, अद्यावस्य विद्यान, सहान सर्वनकार, कृत्वोकशारद स्वित श्रामोगासना अने अख्युब्ध तर्जान्यकना परिचाक क्रूपे झार्नानिधीनो समुद्ध अने अपमीक मेट आपनार, सामने मोट सतत ब्रद्धमानार, क्रान्यिकारी संत, वैत संपनां प्रदेशो निर्धायता सामे बेहाद वागाननार, साम्यवृद्धन-यान-चारिन्नी व्यक्तिक स्वावकार, साम्यवृद्धन-यान-चारिन्नी व्यक्तिक स्वावकार, साम्यवृद्धन-यान-चारिन्नी व्यक्तिक स्वावकार, साम्यवृद्धन-यान-चारिन्नी व्यक्तिक स्वावकार, साम्यवृद्धनिया चित्रो स्वावकार, मीतिक व्यक्तिस्वात व्यक्तिमाराचीनियानक व्यक्तिस्वात अत्यक्तिमान क्रियान क्रियान क्रियान क्रान्यकारमानी व्यक्तिमानकार क्रियान आविवार्यकारमानी व्यक्तिमान क्रियान क्रयान क्रियान क्रि

विद्वासिया सम्बद्धिसम् सम्बद्धिसम् स्विपित्कानगशिक्षां ब्योजने प्रमाणित करनार, जैन सिद्धान्तो वाने तेनी परिशाना नागरक रखेवाल, निव्यत वाने व्यवस्तनी द्वाला सम्बारक, गूर्वि वाने मूर्तिग्वा प्रायोग विदेश वान्यक्रमार्था वान्यक्रमार्था वान्यक्रमार्था वान्यक्रमार्था वान्यक्रमार्था वान्यक्रमार्था वान्यक्रमार्था वान्यक्रमार्था स्वाप्तिक स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्य

छेखकोने धन्यबाद

छेलकोए जुदा इष्टिकोणवी, किय मिज बनावी बने घटनाजीवी, जने तेरोहोंनी सर्वोगी साहित्य-सावगानी विशेष्याजीयो तेजोशीनुं बाह्य जने आन्यन्तर बीक्सपित उपसाववानो जने तेजोडोने साध्यरी ब्रह्मांकांक आवानो स्लेखर, (टूंकी युवत ठर्का) स्कूप्त वर्षे कुन्दर प्रयान क्यों है, जने तेथी व प्रस्तुत प्रयान सह कोईना क्यायाद मानी के तेती है.

स्त्रेरस, मा मंदमाँ प्रमट बवैनी काची शासमी मिल्यमां तेनोशीतुं सुरांकृष्टित, व्यवस्थायद्व सने स्वतंत्र जीवनचरित्र आदेखवा माटेमी केट मुमिका पूरी पाइसे पूर्वा शक नथी.

अंकना छेखो अंगे

सूत्र—सिर्हाए बीवाग विविद्यनमां सास करीने उथान्यावची महाराच कंगे ज केसो करावा आग्रह कोलो, प्रश्ने प्रथम पीकना पणा विहानांगी समुद्र ने अन्यस्त कृष्य नो काम केवानुं अग्राग् माटे कहान्य च हही खुद उपान्याच्यी महाराच कंगे पण समिति अन्यसनीय केसी पूरती संख्यामां मेळसे शाही नकी नहीं ए पण पणा करें के बारा मित्रोनो मने पढ़ अन्यसनीय केस क्खा माटेनो आग्रह हतीं, सकारण करवानुं सुक्तवी राख्युं चट्टां के.

बीचुं प् के, व्याज्यायवी महाराजना वीक्त-साहित्व कीमी सामगी संपरा पूरतो च का प्रवास होई, नामा मोटा, सामान्य के विशेष तमान वेकोने स्थान व्याप्ता उपरांत स्पुमां वर्षु प्राप्य सामग्री जागी हे, जैयो केटव्येक पूरीपकावित सामग्रीचुं पुन्वीईमेंन एक करान्युं हो. शानंदमी वात पृ हो के, बा कंकमां जैन समना सालु-साम्बी, आंक्क-मानिकाक्षय नारेष वंगोपे भाग छोयो हो.

होसोमां व्यां व्यां एक ने एक वात नेवडाती हती, मनी दिष्काभ के कोई विभिन्नता रज् करतो न हती, तेम व तेकोश्रीमा बीक्नने फारती वाद्यांझांखरानी चेच वाती गयांश व्यस्त् दन्तक्रयांको कने वसु पहती अनुवित कने कारातुत हकीकतो हती, तेनी च गान बारबाको करी हो. ते यांटे रेसको छाना हते ।

साथे साथे ए पण त्यष्ट करू के आ अंकना केटलाक मुस्ति हेस्रोमां बरसोधी चाऱ्या

वाहता केटल्फ अतुनित प्रवाहों, विधानों करें हर्जांकरों पण जोवा मक्टो एक में जाणी नोईने व तेनुं गोरित्तव न सत्तां व्यवित्व राख्युं हो, ते एटहा व साटे के व्यवस्थित जीवनमा क्याने, फाटान्तों, महापुरमोना वीतनने फरती केती केती हर्जांकरों प्रवक्षिणा करती होय हो, तेनो वर्तमान प्रवाने स्वाह व्यवे.

बोडणी, से टेसफोबी ये हती बहुवा, तेज रामीछे. केटलाइ टेसो ट्वॉव्य होनाग कारणे, तेन व राहबीप के प्रेसटोपना पाराने, में पंड्री दिलिणे रही गई देखाय ते ववन टेसको कने वाचकी अमा की !

पू उपाजासनीए केटडी इतिको रची हती ? तेतो चोकस संख्यातिकीय कावातुं कोई साधन नथी परसु तेकोबीनी इतिकोमां जरना बीचा फुटफर हत्त्वप्रमां मळेली तोच सुन्नन हार तेनी जिन्न सख्या नकी करी जन्नेयू-

माज्ञव-संस्कृतभाषानी कृतिओ

प्राक्त-संस्कृत सापाना उपहज्य सने अनुष्कव्य प्रयोगी कुछ संस्था ८३ श्री छे; एमा उपहज्य ६१ को अनुषक्कव्य २२ छे.

१—उपलब्ध ६१ माँ १६ सुदित सने १५ असुदित हो.

२—उपलब्ध ६१ मां, ४६ मन्यो स्वकृत: मूळ वाने टीकावाळा छे. जेसांचा ३७ सुदित भने ९ जमुद्रित छे.

३-लने जेप १५ रूप बाचार्यकृत प्रत्यो उपरनी टीह्मणद्य छे. एसाँची ९ सुहित अने ६ बसुदित छे

चूनरावी, सिथ भाषानी इतिओ

खपळब्ध-अनुपरुष्ट

र्गुनर-मिश्रशापाणी जात, उपराध्य वाने श्रतुपारच्या. नानी-म्होटी धर्डने ५२ कृतियों छे; तेमांथी ५३ उपराध्य वाने एक वानुसारच्य छे. ५३, गाँची ३९, उठित वाने ८, स्मृतित छे,

रण टपरांत अन्य ग्रन्थोनुं संशोधन जने संपादनकार्य एवा तेओश्रीए कर्सुं हे, ते अरसमां आपेकी ग्रन्थस्थीमां दर्भनेतुं हे.

ठपर नं. २-२ मा चवाबेजी १६ संख्व र इतिच्ये, कते ८ मूलराती इस्तिकोमांथी केरडीफ इतिकोर्तु संगोबन भवं छे ने बेटडावर्ज्य बर्च खुळि नामै कैथीत, पहन बने विचाट छे, ज्यारे सावनीनो उत्पर छे. एम डातो ए डिकावां डम बाह्युं छे तो मंत्र 'इती पन्या अनी एन्या' करतां करतां प्रामना कर्न श्रीमानाम महकार बने जुनेन्छाबी बने गासनदेवनी कृपायी इस डरेशमी मंत्रिके पहाँचीई। सुत्रोसवनी उनवणी पछीनुँ सत्तिषुँ बमारा माटे व्यसाह बमाउवार बन्धुं हो, सत्रोसवनी उनववारी रचाप्यावश्री पहले जैत-जैतिहा वर्षेतु टीक टीक व्यान दोंहुँ हो, जने एना टीक टीक छामो पण सर्जाता ज्ञाय हो. वटी, एमजी इतिको जोवी काउवानी मावनाने वण वेग मत्यो हे; परिणामे सत्रोसव पछी ब नदीन वृषाहुँष १३ व्हतिको छन्य बहुँ हो, बने हुलु बमादादाना मंदारमांथी वसु इतिको एक्टानी संवातना हो.

आ तेर हारिको वने समोहाब पहेर्जानी नव हारिको मळी इन्ट २२ प्रतिको सुरण मानी रही छे. तेमांथी अर्था हारिकोर्नु संशोधन पूर्ण थवानी वणी उपर छे. व्य प्रन्यांनु प्रकाशन बडोडरानी यकोमारती प्रकाशन समिति तरफवी थनार छे.

- —ते उपरांत प्रशन्तमहिम उपाव्यायची महाराजना तबाम प्रन्तोना व्याप्त अमे अन्तना भागो तैयार वर्षे गया छे.
- प्रुवाणितोनो संग्रह, सम्मतितर्क संगेनी योत्रो धने तारवण, तथा धन्य पृथक्करण वगेरे सैंशर धनार छे.
 - ---तेओश्रीन् व्यवस्थित प्रमाणमृत ' बोदन-कवन ³ चरित्र पण तैवार करवानुं हे.
- —तेमन शासवात्तीसमुख्य टीका व्यक्तिये पुनसङ्ख्यि को को साथे साथे कायुपयोगी प्रत्योग सनुग्रो पण प्रगट करावया.

आटर्कुं कार्य पार पडहो त्योरे उपाध्यायजी भगवानना श्रीसंघ उपस्चा बागाप कने लनिर्वचनीय प्रकलो पर्वार्ध परी कर्यो गणाहो.

उपाध्यायजीतुं जीवन-कवन छलाई खुं छे

अहीं एक आनंप्दश्रद स्वाचार वाणांतुं के तथा वस्तवां हैनसमीकारों बेम यह समीका कहवानी मारी मानना इतो बने ए सानना बाचे वाब कमी व डे. दरस्थान वाणीता विद्वान में। श्रीवृत हीएछाछ र. कारदोवाने मळसनुं बढ़े तेमांगे मोतारी माने उपाच्याव्यां वर्गेनाी नेटछीक नीची छै पहुँ तेमंगे नामानुं . मने बढ़ों के उपाच्यायां वाँगे क्लावां सामध्ये प्रदक्ती विद्याद्य को तिवृद्ध छै के प्रभान की एक नहीं गण बनेक समीकार्य नोच को करमानो काम कहें केवी, पट्टे वा कार्यनो समोका की तीचुं-विचारी होंच जिम्मी वाँक, चिंतन बने करमानो काम कहें केवी, पट्टे वा कार्यनो समाक्षात्र श्री. क्षाव्यावाना गाज्यां पदिश्वां छे. तेचो कुमळ संस्कृत्वार को विद्याद राटे पराचरा समीक्षक पण छे पट्टे वाएणाने एक सारी मेट व्यंत्र करहें एसी बादा राखोर।

सौथी वधु स्वहस्तपतिओ

आव हुयोमां होई होई हिन्सः व्यक्तिय हुत्ताव्यवादो प्रतियो महना पामी है. व्यक्ति एक भाग मारतीय विमृतिना हृत्तावशी आपणने मने त्यारे आएगने वस्तावर, व्यानन्द ने गीरावनी वानु-भग थया नगर न रहे. तेकोश्रेमी वन्हत्तावशी प्रतियो व्यवधाने वस्तावरी सहवा पाणी है, तेतुं भगाग होना वाहणे बच्चे सहत्तावशी प्रतियो वैन संस्था याचा बच्च कोई पण महिनो हो के केन ! ते सावार थार है. अभी जैन सीवंप दो स्लेखर बड़कागी व हो. बाने तेकोश्रीयी व्यहत्तावशी गीए प्रतो सही है. ए का जैन संबंप माटे व नाई एण ज्यारत बने राष्ट्र महिनो एक गीरवर्षण वहना हो. एक त्यादो स्वामहिना इस्तावशो ए कोई एक व्यक्ति के समावनुं नहीं पण सबग्र प्रचानं राष्ट्रीय पण है. करे ए शीत न एनं व्यन्त यहं बोईए.

मुनिवरश्री प्रण्यविजयसीनो फाळो

ते उशांत ज्याप्यावधी रांचत अन्यांना संत्रोधन वने अझस्त्रमार्ग पृथ्यपाद प्रौहप्रतार्ग सृग्तिचाट् भावार्य थी विवयनिमिद्दिश्चरावी सहस्यव साहेद क्या तेमना परिवारनो फाट्टो सहुवी बडु प्रग्रंता ने पत्थवाद मागी के तेवी छे.

चपाध्यायनीना साहित्य अंने बंईक

फोई वण महापुरवर्गी साहित्यहातिको ए तेमतुं जीवन, तेमनी प्रतिया, तेमना जीवननां उदात्त तःयो, बहुप्रतमः अने तकार्यन परिस्वितितुं नाप छाडवानी आदर्शे अने सचोट पाराझोशीको गणाय छे.

वैसम्बद्धस्थला को वैसम्बद्धा जेवी वैसम्बद्धा रचनाओं द्वारा वेसना हैयामां शान्तरसने अने करुणानो गंगा-चयुना जेवो केवो चोत बहेतो हुने ते जाजी अकाय छे,

अहसद्दश्नी विकरण जुंजो, जने तमने उषाप्यायावीनी सोठे कछाए सोछी कठेछी विह्नत्प्रतिमानां तेजोमय दर्गन यहां ने मुसमांथी पन्य ! आदि पन्य ! ना उद्गारो सरी पहले. दार्शनिक शिरोमणि एक म्येताम्बर साधुप दिगम्परीय इति तोगव जैनेतर इति उपर चळावेळी औट कुछम, ए तेजोश्नीनी हार्दिक विद्यालता, उद्दांच विचारो, सामाना छक्ष हारा व सामाने बवाब आपवानी कने परकीय प्रयो-हारा स्वस्तिहानोतुं समर्थन करमानो तेमनी छाळागिक कुष्ठकळामु जयोड रहांत पूर्व पढे छे.

तेशोड़ी विरिधत के पहानित अच्यात कमें बोग विश्वक प्रन्थों बोईए छोए त्यारे, तेशो एक विद्व बोगी तरीक आपणी समस्र कहा बाव छे. बैनेतर प्रन्य राजकर्योगदर्शन उपर टीका रची तैन योगप्रक्रियाई समस्य बताब्या साथे तेमांनी अनुप्तालों दूर करवाई तेमई साहर बोईए छोए त्यारे तेनोझीनी हार्योगी प्रस्तुत्वम नेवाने नवनस्त्रके आयोवश्चि अपाई बाय छे।

वैदान्द प्रथ्यो उपर टीका करवानुं खेळेल साहेख, व एमणे दार्शनिक केने साम्रेळा ज्ञानसिक्षिनो एक सक्ळ प्राचो छे.

एमर्चु जीवन-क्वन बोडों ट्रंकामं एक बस्तु फिस्त बाब छे के आध्यासमक प्रवणता ए ज तेमनो अन्तखरप्राण हतो अने सद्धर्मतत्त्वप्रचार ए व तेमनो बहिन्दर प्राण हतो.

अरे, गुजराती कृतियोने समजवा गुजराती अनुवादो पण छखाया छे.

स्पान्यसभी ममवानची कृतियोगां पण केटलीक कृतियो विशिष्ट स्थान वरावे छे. एमाधां अर्हीयां सर्वोषयोगी कृति वरिके वे कृतियोगो उल्लेख करी कहाव: एक छे ज्ञानशार, कर बीजो छे व्ययानसार, बा कृतियो क्षेत्रकारिकार्य गूर्णन्य स्थान परावे तेवो छे. वा कृतिकारी जैन उरारांत वैनेतर अर्ह्यां प्रसंगोपान एक जांतरबंदना जणाहुं के ब्यावना विद्वानो कने शिक्षित वर्ष परदेशी विद्वानोना नाम को कामने बेटाई वाणे छे, तेटाई जा मुगीना महापुरुपोता वाब कने हामने जाणती नथी, था एक कमनसीव ने शरमककक घटना छे. को हैं खुद गुकरातना व विद्वानो पोताना क दासागणे प्रषटेशी आशे वित्र विश्वतिने कामकी हो पछी, पण बासबी एक क्यारे न जाणे, त्योरे कान्तरामतीय विद्वानेने हो आपने हुं कही सर्ह्य हैं

दीची नहातुःसमी वात ए छे के आपणा दिशानी श्रीका पश्ची समें पाई द्वान वाहायता होग है, ज्यो पोताना आगणे व रहेण, गुक्ताली प्रवास उर्क्षमा सर्वोत्तम सने अलीह साही अगनता देवर है, ज्यो पोताना आगणे व रहेण, गुक्ताली प्रवास उर्क्षमा सर्वोत्तम सने अलीह साही अगनता देवर में के के तेम्न सांसुकृत्यों अंगेनुं वान मेळकामां स्वृत्व प्रवास रक्षा है, और तेमीनु प्रणिवार तो अग्रेसमा पुत्र वेचे व वाल्य बोधान है ह्वारों वर्षयी वीवता वैनयमेंना प्रात्म कार्यों पुत्र प्रत्या प्रवास कार्यों प्रत्यात्म कार्यात्म विद्यात्म कार्यों के विद्यात्म कार्यों प्रत्यात्म कार्यात्म कार्यों है, ज्यों अग्रेस कार्यों है ज्या प्रयान कार्यों स्थानी सर्वायात्म व्याप्त कार्यों है हो कार्यों कार्यात्म कार्यों प्रत्यात्म कार्यों कार्यों है कार्यात्म वार्यों प्रत्यात्म कार्यों प्रत्यात्म कार्यों प्रत्यात्म कार्यों कार्यों है कार्यों कार्यात्म वार्यों प्रत्यात्म कार्यों कार्यों है कार्यात्म वार्यों कार्यों कार्यों होत्यात्म कार्यों कार्यों कार्यों कार्यात्म वार्यों कार्यात्म वार्यों वार्यों कार्यों कार्यात्म वार्यों कार्यात्म वार्यां वार्यां कार्यों कार्यात्म वार्यां वार्य

इपायामनी महाराज ए परनामा नहानीस्देवना एक साचा अने शिस्तपानक सैनिक हसा.

अनेक गच्छो, संग्रदायो अने मतमेदोनां मोजांओयी घूष्मवता जैनन्तासनसमारमां तोफाने चढेळी घर्म-नीकाना ए साचा मुकानी हता.

उपाध्यायमी महाराजे घोताना जीवनमां बर्चान वर्षों, जीवनमी समृद्धं सुस्, जीवनमी तमान कराहुं जैनामासने अर्पण करी दीवां हुतां. जीवनमा अन्तिय वर्षे सुची साहित्यसर्जन, शासनसेवा अने धर्मरहाना द्वास ठेनार ए बोर पुरुष आपणी समझ सेवा, स्वार्णण वर्ने पुरुषार्थमी आदर्श नमूनो मुक्ता याया छे. शासनमां बुदिमानो वणा पाके छे, परतु कर्यन्यसराणो क्लो अन्य सर्जको अप्यागांत्रमा ज पाके छे. उपाध्यायमी एक सर्जक को क्लान्यकारी पुरुष हता, तथी तैकोशीय मारे बिच्दानो-आजमोग कर्मे हुत्से स्वीर्थ सर्वेच कर्युं, ए साहित्यमुं अप्ययन-क्ष्यापन ने प्रचार याय ए मारे शीवंचे 'वशोविवार्यक्ष ' वेबी एकाद संस्था ठमी करवी चोईए.

आणीवन सर्वीनोषकारी यूज्यक्ष सुरुदेवोर्नु संस्मरण क्ष्मे भा कार्येवां सहायक धनार हाताक्षानी न्याय-स्वाकृतण साहित्वतीर्थ व्यापनद्षिवयथी तथा ग्रुनिक्री वाचारतिविवयर्थानी याद से सुरूप !

अन्तर्गा सुरस्त्रतीमा कृगायान, गुरुनसणकमकमा व्यक्तं उत्पासक, सम्बग्दरीन-झान-पारिश्ना अनुष्य आरामक, महान विचारक, महानत तत्त्वितक, वाचकबर महोषान्वाय न्यायवित्रारद न्यायाचार्यने कने तेमनी स्वयद कृत्याणाञ्चरक प्रजाने व्याणित कृत !

> वर्सतपंचगी २०१३, अमदावाद } -बश्चोविजय



थनक्रमणिका

इ. महोपा

१ पू. इ २ सम्ब ६ आम 8 T. 3 अज ५ अधि ७ दास ८ शीर वपा १० औ ११ प्रस मह १२ न्या १३ मह १४ वा १५ न्य

	-13.4.1.	••	
	वामुख	मुनिधी पुष्यविजनजी	
	प्रकाशकर्नुं निवेदन	संत्रीयो	
	संपादकीय निवेदन	मुक्तिशी वशोदिवयशी	
	श्रीयशोवित्रय जीवन-कवन दः	र्वन : विभाग परेली	
	गुणस्तुति अने जीवन		
-	विषय	नेसर	da
	वाः श्रीयशोचित्रवत्री गुगस्तुतिः	उपाच्याय व्यवस्थितव्यक्षी गणिवर	1
8	विद्याचित्रयोपाध्या वगुणस्तवनाष्टकम्	मुनिश्री स्यानन्दवितयुक्की शतादधानी	3
	होपाध्यायश्रीमचकोविजयजिङ्गविष्यर्थायां गुण-तुरसप्रकप्	युनिश्री हेमचन्द्रवितदर्शी	ş
. 8	रीसस् यद्योवितयमी गुजनीत	सुनिधी दश्मेविस्वरी	8
	डेस संग्रह		
	96000		4
۲ ۲	पू. थपाच्यावजा अववतनः वचनः पटल	आकर्वधः विजयोदयसूरिती आकर्षधः विजयनश्चिस्रोति	y
ğ	पू. डपाध्याकती मगबैतनां वसनो पटले सप्पीतिहें आमद् यभोवित्तवती महाराज अने	कार्यायका विजयप्रमापसूरिजी कार्यायकी विजयप्रमापसूरिजी	٩
•	शामसार - कीतन	ना पानमा सम्मक्षात्रामुद्धाः	
8	प, उपाध्यायकी महाराम आजे एव अजरसमर वे	आचार्वभी विस्तवर्मस्रीवी	ţ
ų	श्रीयशीविजयजीती जन्ममूमि कनोह	मुनिओ पुष्यविशयसी	ţţ
Ę	रपाध्यायमा श्रायशाविजयमा महाराज शन	प औ कतकविद्यार्थी गणि	į
	तेबोश्रीहं सद्भुत व्यक्तित्व वाचक पशोधिकय		
Ø		प श्री सदक्तित्वकी	3,
4	श्रीयशोविजयको महाराक्षमा श्रन्थोनुं सध्यस	ह पं <u>.</u> श्री पुर मर विक्सकी	8
ę	वपारवाय श्रीमद् वशोबिसयजी महाराज कर वेमनी शासनसेवा		ğ
₹o	श्रीयशोविजयजी महाराजनां वसमनां रहस्यो वने विशेषताओ	मुनिषी मजुनिबयकी	\$
₹ ₹	प्रसर स्याहादी उपाध्यायजी श्रीवशीविजयर्ज	े शुनिधी विकापितवरी	ч
१२	महाराज्ञ		•
13	न्यायदर्शनतुं स्वस्य महोपाध्यायजीप करेको उपकार	सान्त्रीयी म्लानदीप्रीको सान्त्रीयी मध्युकाष्रीची	٩
18	यमर यशावजयज्ञा	वाणाया मञ्जुकाशाचा भी दसहस्र मास्त्रमिया	e w
14	न्यायाचार्यने वदन	त्रो हीएकड र कापविया एम्.ए.	ę
33	तार्किक - इरियाळी	20	È
₹9	वाचकतशर्तुं वंशवृक्ष	~	US.

१८ श्रीयशोविजयजी महाराजनी जन्ममृप्ति क्वोद्या	ब्री इनैवाळळ सईसक्त दने	as
१९ श्रीमान् यशोविजयवी	हा. सम्बानदास म महेता एम् वी वी एस	ড ং
२० श्रीमद् यद्योविजयतीनुं क्षीवन अने प्राणप्रतिष्ठा याने वापणुं कर्तव्य	श्रीवृद्ध निर्मेख	८९
२१ यश्यकाश	श्री छनीछदास वेदारीनद संघवी	९३
१२ वे ज्योतिर्घरोनी मिछनज्योत	भी समिठाठ मी. पादराहर	98
१६ पूज्य श्री. यशोविजयक्षी उपाध्याय	बी त्रिमोदनदास स्रहेरचद	१०४
१४ अद्वारमी सदीना प्रसार ज्योतिर्घर	भी मोहनस्पठ दीपचद चोष्टी	१०६
२५ महाम ज्योतिर्धर य. उपा. श्रीयशोविजयशी	भी फ्लेह्यद स्रवेश्चद	११२
२६ उपाध्यायजी महाराज अने तत्कालीन पौरास्यात	क्षो राजपास मयनशान बहोरा	११८
२७ व्यायाचार्य, जैनज्योतिर्घर महोपाञ्याय श्रीयशीविजयती	में सक्तशास गोतिनर शाह	१२१
२८ श्रीसह् महोग्रन्थाय श्रीयकोविजयवी	हा, बझमदास नेवरीमाई	१३४
२९ जवा थी वहीरिकयजीर्थ भस्य विविध	वी नरोसमदास सम्बानदास	१२६
३० योगीश्वर श्रीमत् यशो चिजयश्रीमी शनदीयका - 'शानशार' शहक	भी अमरतव् गावनी काह	१२९
३१ महो. श्रीयशोषिक्षयतीय जैन संघ पर करेको उपकार	थी बहिस्स श्रोतका खंबी	१३२
३२ वाचक श्रीवधीविजयकी, वमनी सूर्तिनी सनावरणविधि	वी योरक्तदास वीर बद	१३५
३३ न्यायाचार्य श्रीयकावित्रयत्ती, प्रानी यूर्वेर इतिभोती सालवारी	न्नी बोरषदश्चा वीरणंद	१५४
कारभावा साठवाय १४ अहारमी सदीना अहान न्योतिर्घर महोपाश्याय श्रीयकोविजयजी	बाचार्वभी विवयसम्हिती	१८०
३५ वहारमी सदीना महान ज्योतिर्घर महोपाच्याय		
श्रीयशोविजयजीकृत अन्यो	gp gp 57	१८९
३६ जैनदर्शनमुं चितनकात्र्य 'शानसार'	भी पी. के बाह	२०५
१७ क्षेत्रसिद्धान्त अने संस्कृतिनो साबो प्रसार	सुनिधी सस्वनिजयमी	5\$8
६८ श्रीमद् यशोविजयकी महाराज	शुनिधी भएकाविजयवी	588
३९ श्रीमद् यशोविजयनी	भी गोहबसाठ दर्जनंद देसाई	२२०
No	थी नावकुनार मदाक्षे	554
भर श्रीयकोचित्रयज्ञीकी जीवन - कार्य रूपरेखा	प श्री मुख्यालयो सम्बो	२२९
४२ श्रीमद्यशोचिजयवाचकानां वैदुष्यप्राप्यात्मिकत्वं च	पं की नाग्रक्शाचर्य	રરૂર
४३ द्वप्रसवेली मास - सूळ	सुन्द्रथा कान्त्रवथयः।	२३५
प्रथ चलमंबेलीनो सार तथा टिप्पणो	सुनिषी यसोनिक्या	580
४५ उपाध्यायजीनां वे अप्रसिद्ध गीतो		રૂપૃધ
४६ नयज्ञ	मुनिथी पुग्यतिवस्ची	२५७

विभाग बीजो अन्य विषयस निक्रमो

•	नरनानद्वात्रा नद्वात्त्	= 413444164 ANATO			
ą	सम्पातमतत्त्ववेचा श्रीमद् वेवचन्द्रजी	श्री जगरवद नाह्य	-		
ŧ	भीयशोविबयउपाध्यायकृत तत्त्वार्थगीतके~	श्री बंदरकार नाहटा	3		
	विवेचक - श्रीमद् शानसारती				
8	भीतत्त्वार्थगीतम् – वाळाववोध	pt 39	3		
4	पू उपाध्याय श्रीमेघविञ्चयञ्ची गुरिफता-नर्दद्गीता	र्वं, धीरमणिच्दिसयमी गणि	8		
ğ	'पंचाययान ' यत - वक - नालिकेर क्या	हा मोमीबाठ व साहैसरा	8		
9	त्रिपष्टिग्रसाकाना प्रथम पर्वना प्रथम सर्गेर्ड -	प्रेंड क्यम्ह प्रे संस्ट	4		
	समानद्शीन	युम् ए कोविद			
4	अर्दिसाधमें मने तेनी संस्कृतिना विकासक्रममां	बी प्रहाद कट्यरोजर दीवानरी	Ę.		
	अपयोग	युष्, ए, एस, एस, एस	r		
	*				
	2° 2° 2°	. 0			
	प्. च. श्रीयशोविषयगुरुर्मदः	् मार्च ष्ठाः			
	बने				
	'श्रीमद् यस्रोविजय सारस्वत सत्र'नो हेवाळ				
,	मुंगीनी आध रजधवीनो कार्यक्रम	गुमास्यादसमिति सुम्बई	196		
	१ सुणातुषाद महोत्सव	2. dalama dad	•		
	२ श्रीयग्रोविजयकी सुवकीतो	*			
	६ जपाध्यायजीतं स्मारक	श्री पारशस्य देनस्त्र	-		
ર					
8	डमोई गुरुमंदिर प्रतिष्ठानी स्वागतपत्रिका	डमोई जैन श्रीसम	46		
일	श्रीयशोविजय सारस्क्तसत्र पत्रिका वे. १	श्रीपद्मोवितव सारस्वद सत्र समिति	९०		
ğ	श्रीयशोविजय मणिवरनी सूर्तिप्रतिष्ठामी कंकोत्री	डमोई केन थीसप	९५		
	चलो बमोई [पोस्टर]	29	९८		
8		सत्र स्वागत संशित इसीई	99		
	निमंत्रणपत्रिका				
9	प्रतिष्ठा अने सत्रसमितिनां नामो	n n	१०२		
۲	रपाध्यायजी महाराजनी सन्य मृतित्रतिष्ठा तथा	-	٠,		

şoş

116

११९ १२०

'बैच ' पत्रसाधी

श्रीयशोविजय सारस्वत सन्न-वृति ९ श्रीयशोविजयज्ञी शान-साहित्य प्रदर्शनतुं

उद्धाटन १० सने पसार करेंडा उतानी ११ इमोईनु सुखद समाधान

१२	स्वागत प्रमुखनुं वक्तव्य	मा बाह्यचंद्र नेस्रतार	१२२
१३	सञ्जर्घाटनप्रसंगतुं वक्कव	योषसञ्चमुख वदामी	१२६
१४	सत्रना प्रमुख - दार्शनिक पंडित श्रीईश्वरचन्द्रबौतुं प्रवचन	ष. थी इन्स्पद्वी	१२८
१५	आचार्य थीविजयधर्मसृरिजी महाराजनु प्रवचन	वैव ' एत्रसांगी	१३५
१६	धीयशोविजयजी महाराजनुं प्रक्वन	19 29	१३७
1 8	सत्र प्रसंगे आवेला लेख - निचन्घोनी यादी	13 7	१४५
25	सारस्थत सत्र गीतगुंजन	थी पदराकर	१४७
89	धन्यधार	वैन पश्रना तश्रीक्षी	805
२०	सत्र तथा मुनिजी रुपर सफळता इच्छता अने	,	१५४
	अभिनंदन आपता आवेला संदेशाओ		
Rŧ	श्रीयशोषित्रयसारस्वतसचनां संसमरणो	ड्यं भी शोबीक्षल व शादेशरा	१८१
88	श्रीयशोविजयसारस्वतस्थनां संस्मरपो	भी नामकुमार ना सफाती	₹63
28	श्रीयशोभारती प्रकाशन समिति पत्रिका	ब्रह्मशन समिति वडोदरा	१९०
२४	श्रीमद्यशोविश्ववसीस्त श्रम्थोनी यादी	युनिधी रक्षोतिस्यवी	१९३





ન્યાર્યાવશાસ્ટ, ન્યાયાચાર્યે. ગૂજરાતના મહાન જ્યોતિર્ધર, સરગ્વનીયબ્ધપ્રસાદ सिंद्धित, प्युटशंतिनिष्णात, न्याय, व्याक्ष्य, सादित्य, अवकार, छन्द તત્ત્વનાન, કથા, આચારાયદેશ, અખ્યાત્મ, યાગ આદિ વિભિન્નવિયા ઉપર મખ્યાયન્ધ મન્થા સ્થનાર, અદ્ભુત વ્યક્તિવશાલી, પૂલ્યપાદ પ્રાંત સ્મરામુંથ મહેો પાધ્યાય ૧૦૦૮ શ્રીમદ્ યશોવિજયજ મહારાજ



ન્યાવિશાસ્ત્ર ન્યાયામાં મહેવામાંમાં ૧૦ ૧૦૦૮ ત્રીમદ્ વરોર્વાવજ્યછ મહાગજના મમાલિમેક્ટિંગા પંધરાવેલી પૃત્રિત્ર ચેરણુક્રમળ પાદુકા



न्यायविकारदृत्यायाचार्यतार्कक्रियोमणि सहोपाध्यायश्रीसदुयशोविजयजीस्तुतिः

्विष्याच्या चर्चा चुन्दा चर्चा चर्चा च्या स्थान्य ।

सर्गक्रकेशियासिक्य देशे स्थानिक्य देशे ।

सर्गक्रकेशियासिक्य देशे स्थानिक्य स्थानि

त्तक्रमाणनयमुग्यायवचनन प्रोद्दोधिसारिममृनिवृत्नकेवस्तिः । चकुर्यनोधिकथयाचकराविमुख्या प्रत्येदन मञ्जूषकृति परिजोचनाचै ॥ २ ॥

(૧) એ મહાપુરૂપ સત્યતકેને કરવાવાળી સ્ટ્રમ જુદિવરે-અથવા ઉત્તમ તાર્કિક્સ શેના પરિશીલતવઢ પ્રખર બનેલી જુદિવી-સમગ્ર દર્શનોમાં શિરાપ્રણિવાવને પાસ્યા છે, તપાગ્ર-કૃત્રમાં અમેસર છે, કાશીનગરમાં અન્ય દર્શનીઓની સભાને છત્તીને શ્રેષ્ઠ-સર્શોત્તમ એવા જૈનમતના પ્રસાવને જેમને વિસ્તાર્યો છે,—

(૨) મને જેઓશ્રીએ તર્ક, પ્રસાધ અને નવ આ ત્રશે ય પહારોથી પ્રધાનપશે કરેલાં શાસ્ત્રીયતન્ત્રોનાં વિવેચનોથે કરીને પૂર્વકાળના ક્ષતકેવળીઓત સ્પષ્ટ સ્પરશ્રુ કરાવ્યુ કે, મને જેઓશ્રીએ આ બ્રાંગનું પરિદેશોધન કરવાવડે કરીને સારા પર ઉપકાર કર્યો છે, તે શ્રીયદ્યોતિઓપાધ્યાય વાચક્યમકાં ગ્રાપ્ય ગણાય છે.

> [કપાધ્યાય શ્રીમાતવિજવાણિવરે વિ. સં ૧૦૦૧ની સાલમાં સ્થેલા 'ધર્મામાંગલ' તામના ગાઉની મશસ્ત્રિમાંથી, શ્લેદ ૧૦-૧૧]



भीगौसमस्यामिने नमः।

श्रीमचङ्गोनिजयोपाच्यायग्रणस्तवनाष्टकम् ।

बहामनादिविद्ययो भूवि येन सम्भ , पार्वी नमन्ति विवुधा न विवादमुक्ताः । ध्यायन्ति नाम हरवे गुणिनो गुणमा, यस्यादभुतं सुचरितं मुनयो नुवन्ति ॥ १११। श्रीमत्ममो न मवने जिन्नाजभको, यदर्ममर्म निन्तिछं निर्दितं स्विचिते । श्रोणांशनेय विद्वतो समसान्यकारो, विद्यामवाप्य मनसा वयसा हि तेन ह !!२॥ जन्मोविं तरितमाञ् सदा क्रियाचान् यज्ञञ्चानसिन्युतरणे विरला इलायाम् । जीवाजिनागम् -रहस्यसः मनके सञ्जानदर्शनचरित्रनिवेर्हि तस्य ॥ ११३॥ रम्बं व्यथायि वह येन सतर्कशासन् । गर्वीशदीरकिनशासनरक्षणार्थं हेदान्तवीद-विषयादिविचाग्दक्षं सन्दन्ति वीस्य विषुणास्तमहं नमापि । । । । । मोदे करें ऽजलि 'करोडपेर' समन्त्र, सन्त्रा विशा विशिववान यशक्तनाम । यातो हि तेन वतसाय इह असिटि, नन्दन्ति तस्य जनवा जिनशासनानि ॥ ॥५॥ हत्वा शिव अमणसहस्रानाय सयोऽ—स्यन् शेमुपीवविशया चहिमान्यकारम् ! यस्य किया कब्रिमछौषविनाञ्चिक जा—ते सर्वदा हितकरिव्रदिवे स बीयात् ॥ ।१६॥ वस्य श्रियाः सक्रव्यावस्हस्यमध्या श्लोकोभिष्ठोः भविकसाधुबनारमकोषः । विज्ञानवैभववरं प्रवरं मुनीना जन्तोहिंतं अम्बुतं सततं तसीदे ॥ ॥७॥ यःज्ञानगौरत्रविमतिसरोऽवशास सेवस्ता वधवनाः सस्तिनो भवन्त । विपानिभानिहतमोहतमस्त्रपन्ति - नः संस्वनित सुवि नो व्यवनाय सुकाः ॥ ॥८॥

> व्यवस्थार पृत्य युनिश्री वर्गोविषयान्देशकी श्रतानघानी सुसिद्धी लयानन्द्रचिजयजी न्याव-न्याक्तल-बाहित्य पीर्य





॥ श्रीगीतगस्त्रसिनेनमः ॥ सतोपान्यायश्रीसद्यक्षां सिन्दर्यासा

गुणस्तुत्यष्टकम् ॥ [केन्नेकन्यः]

बल विज्ञतात्मने विनध्रमेंकविषद्वचेतसे विजयाय यहारेऽभिधास से सद्याध्यायकराय नौस्यहम् ॥ १ ॥ जिसवादिगकेन्द्रसंहति परितः त्रौदविमाविमासितम् । नगरेकविपश्चितं न को भवि जागाति सतकेपण्डितम् ॥ २ ॥ मृतिना निज्ञजन्मनाऽसना सहतीयेन 'कलोह्र' नामकम् । परमस्यधिकं पश्चित्रितं कुठते किस्नहि सत्समागमः॥ ३ ॥ स्परणीयराणं नयामिधं विजयान्त सुरुमाश्रितः सुधीः । तच्यासनवा प्रपेटिनान विमलपानविभावितस्थितम् ॥ ४ ॥ नगरी अतसिदिसाधिका-सथ काशीमधिधत्य सन्तरास । चिरमैकमनाः सरस्वती-सुपतस्ये तमसो निवृत्तये॥ ५॥ सबनेकान्तमताविधपारवाः । समञास्त्रविमर्शकोविवः हिसकारिक्रोपवेशकः किम् धन्यो व सुवीभ्वरोऽस्वौ ॥ ६ ॥ रनिता विविधा गुणोरस्वलाः अतयस्तर्फवितकंगविद्यताः । विद्रपा महता सूर्वप्रहाः विष्या शामिरहो समस्कताः ॥ ७ ॥ जिनवर्शनतस्वदीपकः प्रचामादीसम्बनीयसंवतः । मविकमजबोधदायको गणिराको नितरां विराधताम् ॥ ८॥

[श्रीमन्नेस्यपृत् देवनरणान्जनवस्यकायमाणो-हेयनस्त्रिनयो सुनि:]





ન્યાયવિશાસ, ન્યાયાથાર્ય સ્ત્ર. મહાપાધ્યાય ૧૦૦૮ શ્રીમદ્ યશાવિજયજી ગુણગીત

[ગઢ-સુપતિ ગધર ગજાગમ]

શ્રી યશાવિજવછ તાર નામ. કેલ્યાલુકારી મંગલ નામ. મંગલ નામ મંગલ નામ, વિદ્યાવર્ધક તારૂં નામ. શ્રીદ ૧ ન્યાયવિશાસ્દ મનવિશાસ, પાથા પદ તે કાશી હામ. શ્રીદ ૧ આભારામ. આપો સુખ શાંતિ આરામ. શ્રીદ ૨ જિનશાસનના છે! શાહુગાર, દ્રીધી રેવા અપરેપાર. શાઓ રચી કીધા ઉપકાર, કહેતાં નાવે ગુલુતા પાર. શ્રીદ ૩ સરસ્વતી વર દીધા સાર. કાલ્યા રચીયાં તે સ્માળ, સુતકેવલીના છે! અવતાર. સ્મરશ્-લજન છે મુખકાર, શ્રીદ ૪ અને ડે પ્રભાવક મહાસુનિશજ, અહાંજલિ અર્પે જૈનસમાજ, (સુતરા, વદન લાખલાખ આજ, આપો આશોષ સીઝે કાલ, ત્રીદ પ્ર

[સત્ર પ્રસંગ ગયાએલ ગોતા]

[६० श्रुनिश्री वंशीविकव्छ]





पू. उपाध्यायजी भगवाननां वचनो एटले---

[લે : પરમપૃત્ય આચાર⁶ ૧૦૦૮ શ્રીમદ્ વિજયનેમિસરીધર મહારાજન્તેવાસી પરમપૃત્ય આચાર્ય શ્રીમાન વિજયાત્રસરીધરછ મહારાજ]

૧. ૧રમાયાસ્યચરણ ભગવત ઉપાધ્યાયછનાં વચના એટલે--

પ્રમાણ, તમ, સપ્તલોની, સકલાદેશ, વિકલાદેશ, નિક્ષેય વગેરૈના નિક્કર્યટ્ટય સ્વરૂપ પ્રકામ સાથે પદાશેના સંસ્કૃત-પ્રાૃત અને પ્રવાલિત લેક્કમાવામા ગલ-મલગભિત ઐફ્કપ્પર વિવારપ્રકાઈ કીવાઓ.

ર. મગવ'ત ઉપાધ્યાયછનાં વચના એટલે—

શ્રીનિનેશ્વરવે પ્રાપ્તિને અનિક્રેડ લક્ષિતસ્ય પ્રકૃતનાર પીઝૂપના કરાવો. શાધિ-પીજના અકૂર પીજીવનાર મુખ્કરાવતિમાં મુખ્યું મુક્ષસુદ્રિત ટેક્સ્ટાસ્ટી યચનો. અધ્યાધિત સિદ્ધાન્ત વાક્યો

3. મગવ'ત ઉપાધ્યાયજનાં વચના એટલે—

સમ્રાગૃદ્યાંનની નિર્મળતા અને દેહતા કરાવવા સાથે પ્રભાવશાહી પ્રભુદાસન ઉપરતા સમીત્ર પ્રેમભાવ અને ળહુંમાનને ઉત્તેજિત કરનાર પરમસાધનો.

૪. મગવંત ઉપાધ્યાયજીનાં વચના એટલે—

परे परे न्यायहारिनी क्ष्यकेशातु विश्ववं, प्राव्यविक-वार्किंत, शार्थंत्रिक, तैकान्तिक शादि परमहत्वरूप यावत् वर्षेत्रीय समाचि परमत्यवस्य शाद कवे प्रश्नु साथे समापत्तिक्य विकासा प्राप्त अन्यानी सर्वज्ञः

પ. મગવ'ત ઉપાધ્યાયછનાં વચના એટલે—

યુતારેવહી લગવેલોના ગભાય યુતારાઝાંનું અવગાહન કરવાને મહાનાવ. આત્માને પ્રભુપમંત્રી રસ્વેષિત તારમના સુવર્ણભાવની જેમ, અગર ચેળ મછકાર ગથી રોજિત વસ્ત્રની જેમ રંગાવનાર નિર્મળ નિરૂપમ રસક્ષેપિકાના હશે.

દ, પ્રગવંત ઉપાધ્યાયછનાં વચના એટલે—

સિધ્યાત્વરૂપ દુર્ભભપવંતો લોકવામા વજ, પદાર્થ તત્ત્વવિષયક-સ-દેઠ, વિપરીત ફાન-અજ્ઞાનાદિ ગાત અન્યકાર, તોલ્યામાં ઝળકેળતા સૂર્ય

છ. મગવંત ઉપાધ્યાયછનાં વચના એટલે—

પૂર્વના દ્વતકેવળી ભગવંતીનું સ્મરણ કરાવનાર અધાત્ર પ્રતિભાશાહી વૈસવ.

આવી આવી અનેક ઉપમાંગા અને સુ⁹લાધ્ય પ્રશ્નાંમાં પાત્ર લગવાન મંદ્રેાપાધ્યાયછ શ્રીસંશાલિજયછ મહારાજશીની વિશાલ અને ગાદશે પ્રતિસા તો લહ્યો કે.

स्याद्वादार्थः कवि कस्यावि शास्त्रे यः स्यात् कश्चिद् रिष्टबावार्णकोत्यः। तस्याच्याने भारती सरपृहा मे अस्तित्यकेनीप्रहोऽयो वृथो दा ॥

ભાવાર્થ — રિષ્યાદ (અપ્સ પ્રાસ્થાય) સહુરથી પ્રકટ્યએલ સ્થાદ્વાદ પદાર્થપીયૂપ ફ્રોઈના પદ્મ શાસભા કાઈપણ વિભાગમાં, જે હેલ્ય તેનું આખ્યાન કરવામાં, સ્પાદુવાદ ઉપર પ્રક્રેટ ઉદલસવી ભારત હોલ્યથી આરી છુહિ—વાણી સ્પૃક્ષનાળી જ વર્લે છે લાહિતની સ્પષ્ટલાથી શ્રીક્ષા-વધારમાં ન્હોના-એક્કેટામાં, સ્ક્ષમ-ચ્છ્લમાં, અછુ-વિશાલમાં કોઈ ભાવના આમક્ષ-તફાયત નથી.

આ હતી તેઓશ્રીની વિકસિત ઉદાસ્કાવના

આવા અનેક ગુણગણસાગર લગવાન ઉપાધ્યાયછ મહારાજ અને તેમની વાણીને વારવાર વદન,



ENDER SOME SOME

અર્ધ્યાં જલિ

[क्षेणः : पर्भपूलय आयार्गः श्रीभद् विकयसण्यित्विक्ष्ण भद्धाराजः]

तस्वराणीप्रकाकेन वेन ज्याता सक्षुत्यरा । त यद्योजिकवं नित्यं शरुक्षन्त्रं नमान्यहर्ष् ॥ १ ॥ तक्ष्यंत्रवेचतारं नेतारं प्रुक्तिकर्मान । इर्णनव्यव्यत्तरं श्रीवरोणिकवं स्तुवे ॥ २ ॥ कार्च्या श्राप्तं पदं येन राजं न्यायविकारदश् । म्यायाचार्यं प्रदेण्यञ्ज त यशोविकार्यं अते ॥ ३ ॥

૧. ઉપાધ્યાય શ્રીયરાવિજયછ મહારાલ-

એટલે શ્રી જિનેશ્વરમહારાજના અનુપા જૈનશાસનના અનત્ય લક્ષ્ય

ર, જપાધ્યાય શ્રીયરાવિજયછ મહારાબ—

केरले सत्तरणी सदीना कैन शासनना विदेशियणा साथे उज्यूपनार कोह क्राहितीय विकर्णा सुक्षद्रवरः

૩. મદ્રાપાધ્યાય ભગવાન શ્રીયશાવિજયછ મહારાજા—

એટલે અકાટ્ય યુક્તિએના લોડાર, ચરલુસિત્તરી અને કરલુસિત્તરીમાં દત્તચિત એક અતુષમ શસુગાર અને શીજેનશાસનની ચમક વધારનાર શીજેનશાસનના શસુગાર.

४. बाधक्ष्मवर श्रीयशाविकयण महाराज-

એટલે શિજિનશાસનના સફાયતત્ત્વોને ખૂળખૂળ ખીલવટ ભાષનાર અને વિસ્તારથી વધુ'વનાર તાર્કિક ગાંકવીતે'. કાંદશાસ્ત્રવચાક અન્યામોદ્ધા શ્રીઅલ્લવાદી આચાર્યજાગળંતની સંખી કરાવનાર ભપૂર્વ' સાહિતના સર્જવહાર શ્રીજેનશાસનના સર્થવરૂપવાદી.

प. न्यायविशारह महापाध्याय श्रीयशाविकयण महाराज-

એટટે ૧૪૪૪ લંગતા કર્તા આચાર્ય લગલંત શ્રીહિસ્તિક્સિન્ટિયરણ મહારાવની જેમ આગમાતુસારી આગમમાં નહિ એવા ચદુશા વિચારીલ પ્રદર્શન કરાવનાર આચાર્ય સગવંત શ્રીહિસ્તિક્સિટ્રીયરણ મહારાવના હશુગાતા.

त्यायायार्थ पाठकशिरामाणि श्रीयशाविकयण महाराज-

એટલે રૂપકાલકારથી સંસારની અસારતાના લોવક દર્શતોને યોજવામાં સિદ્ધરિ'ની કરાળમાં આવનાર સત્તરમીસકોના એક અષ્ટ્વે કર્યાનિર્માતા. ૭. રૂપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજી મહારાળ-

એટલે સંચ્કૃત, પ્રાકૃત, સાગાંધી, સારવાડી, ગેવાડી, ગુજરાતી ગ્યાદિ ભાષાએમાં રામાંચક કવિલાકાર, વિયુલ સાહિત્ય સમર્પક, જેનકર્મના એક મહાન ધારીપુરુષ.

વૃત્વધ પદ વિલ્ધિત શ્રીયશાવિજયછ મહારાજ—

એટલે જેનકાસનના અનેક વિરાધીઓની વચ્ચે જેનકાસનની સત્યવાતોને કવિલામાં રમી તથા કુંકિન-પ્રકૃષ્ટિનવાળા અચા સ્થી. વ્યાખ્યાનની વ્યાસપીઠપરથી છુલ દ ધ્વનિએ આપ્યાના આપી, વિરાધીઓની જ ઉપેઠનાર, વિરાધીઓ તરફથી થતા આકરા ઉપયોગે સહેવામાં એક મહાન ધીરપૂર્ણ

ફ. ઉપાધ્યાય શ્રીયશેહવિજયજી મહારાલ્ય—
 એટલે જિનશાસનના રંગથી જ એકરદત.

९०. मह्नापाध्याय श्रीयशाविकथण्णभांडाशाल—એટલે મહારના વિષયાથી સદૈવ અનાસકત.

૧૧. દ્યાયકપ્રવર શ્રીયરોાવિજયછ મહારાવ્ય—

એડટે જિન્નભાગમનાં આરીક તત્યોને વિશાદ બનાવનારી વિચારણામાં અને પ્રથા-સ્થામાં પ્રસક્ત

૧૨. ૧૪૪ શેખર શ્રીયરોાવિજયછ મહારાલ-

એટરે કુનિયાના અન્ય ધર્મ'તત્ત્વોથી શ્રીવીતસગકચિત તત્ત્વો જ સારભૂત છે એવી સિદ્ધિમાં જ સંસદય

સ્વાયવિશાસ્ટ શ્રીયશોવિજયછ મહારાજા—
 એટલે ચરવસિત્તરી અને કરણ ક્ષિત્તરીના પરમ ઉપાસક ક્રાઈ એક મહાન વિશ્કતયોળી

૧૪. **વાચકપદ વિભ્**ષિત શ્રીયશે!વિજયછ મહાસન્ન— એટલે લવિક ઇદયોગ હાર.

१५. न्यायाधार्यः श्रीवशाविकयकः भढाराजः— એટલે વિશિષ્ટ સ્થનાકાર.

૧૧. ૧૧૪ માન કર્યા કરા કર્યા કરા કર્યા કર

૧७. ન્યાયવિશારદ ન્યાયાચાર્ય મહો.પાધ્યાય શ્રીયરોાવિજયછ મહારાન— એટલે પરમપ્રભાવક શ્રીહીસ્સ્ટ્રીધરછ મહાસનના સરાદારના પંડિતસાર. ક્રોએપ્રીછને અમારી કેડાહકોડિ વધ્નકોહિ



શસનપ્રભાવક ન્યાયાચાર્ય ન્યાર્યવશારદ મહાપાધ્યાય શ્રીમદ્ યશાવિજયજી મહારાજ અને ગ્રાનસાર-કીર્તાન

[रेजा-५२मपूब्य आयार्थ श्रीमह विषय प्रतापस्रीधरेश महाराज]



ગતમાં ગે જ રોગીપુર્યા વંદનીય ક્ષેત્ર છે કે જેઓએ જૈહિક, પાર-લોકિક-કર્યોથી હાસ્થા (પણે રહી આત્મકલ્યાણ વાદને આત્માધિસૃતિને (તર્મત બનાવી છે, ઊલવાલોકથી પર-બેપ્રેયામાં અપનાવ્યો છે. એમના પ્રશ્નીયું કિલાર વર્ષ્યણ કરવું એ પણ મહાસોકાયમાં ચિત્ત છે ધન્ય છે તેઓને કે જેઓ સહા યતપ્લદેષ્ટિ એવા એ પુલ્યપુરુષની સાક્ષત છાવામાં

આવ્યા હશે જેત આત્મરમરણ આદ્મ-અશ્વ તર, કેવલ અધ્યાત્મમાં જ અવિવાળ છે. એમના ચરિત્રની ભાવનાની (અશ) ગણનામાં આપણે પામર મનુષ્ય આવીએ તો એ સદભાગ્ય છે. के भहायाति पुरुषाना के बहुवार के क आगम हो. हेमडे केमने। आत्मा અધ્યાત્મસ્વરૂપ એાલપ્રાત છે તેની જે કંઈ વચનાવલી નીકળે તેમ્લપરક્રદયાશકારક જ હેત્ય છે. એમત એ આગરણ એ જ ચરભાતું ત્રામાં તથા એ શબ્દોવડે સુધી (સાકળી) એમની प्रवृत्तिने क्षणाय हे के सरुधातुंथीज क्षेत्रने विकार बेने। क दीथ शण्ड तरीहे व्यवकार હાઈ શકે છે જેમ,-" બીલું તીસ્થ સેવના સખી તીસ્થ તારે એકરે, તેક ગીતાસ્થ સનિવશ સખી તેઢ કાં કીએ નેહરે "-તથા સસારના કારલકૃપ ચાહપર જેલે વિજય પ્રાપ્ત કર્યો છે જ પરમાત્મપદના અધિકારી છે. એ શાસ ઉક્તિ, તાત્વિક દર્શિએ પાદ શ્રી ઉપાધ્યાયછ મહારાજના આશ્ચર્યા તો એ છે કે "પરમાત્માની કેવળ ઉપાસના અને જપ (ધ્યાન)થી પરમા-ત્મપદ નથી મળતાં, પશ પરમાત્મા-પ્રતિપાદિત (કહેલ) માર્ગ ઉપર ચાલવાથી પ્રમાતમા શર્ધ શકાય છે. આવા અનેક ગુણપ્રભાન્વિત મુજ્ય ઉપાધ્યાયભના ગ્રાથ ગાન કે પ્રશંસા માટે આ ક્રેપિપિનેમાં એ શક્તિ નથી કે એ મુખ્યશ્રીનાં ગરિત્રના ગાલ વધ્યા શકે કે તા પણ એમના ઉપર અતરંગ જે ઉપાસના-ભાવ અને સદ્દશરના ગરણક્રમળ રજના પ્રભાવથી મતે શ્રદ્ધા કે કે એમના ચરણરજનાે સેવક એની કૃપાથી જરૂર કતકત્ય બની શાંકે છે. પરમયુવા શ્રીમાન ઉપાધ્યાયભ મહારાજનું અગાધ પાંડિત્ય, એ ગ્રાનના મહા-સાગર, તેમના વિશુદ્ધ શારિત્રાદિ ગુણા આજે આપણી સામે તેમના સ્થલ દેહ ન છતાં એન પ્રત્યક્ષ શિ'તામણિ રત્નતુલ્ય વાહેમય, અનેક વિવયાથી ભરપૂર અનેક શાસ્ત્ર ગયા કહી અતાવે છે એ પ્રભાતી છાયાના મને આંશિક સ્પર્શન છતા એમના વિષે કર્ક કહેવું એ કેમ ખને ? કુકત મારા લાભ ખાવર એ ગુરુપદના આરાધન માટે કોઈક આ પ્રયાસ છે એએ)શ્રીના સંધ્યાત્મવિષયક શ્રુંથા પૈકી સાનસાર મુખ્ય છે એમના અનેક શ્રુંથા પૈકી પૂજ્ય ઉપાધ્યાયછ भक्षाराजनी। श्रीज्ञानसारनी अर्थ को भरेणर ज्ञानसार क छे. वस्तुत: स्वयनुलवनी क ખુતાનો લયે છે. તેમા લગ્નીસ અષ્ટક-પ્રકરણ છે જેમાં એક એક પ્રકરશ રહસ્ય પૂર્ણ વિષયનાં છે.

તે વિપયે: એ કે જાનજીકામાં હોવા છતાં એડું સંકેલન સરક અને રેગક રાહીયો કરવામા જાલ્યું કે એક્કેટ જાધ્યાત્મિક્કિપ્એ પ્રતિપાદન કર્યું છે એ જ તેઓની પ્રતિશા અને અતુસવ જેનેતર સિજાબિન્વ અનેક મત કર્યું હતો. શાસ્ત્રીય અનુસવ એ એમની સફરમ દુષ્ટિ જાણુઇ આવે છે. આ ગુમસાર ગ્રંથે કેટલા આધ્યાત્મિક ઉચ્ચક્રેતિના છે. એ ઉપાધ્યાયછ શ્રી પોતેજ ઉપસંક્ષભય પોતાના જ આત્મિન્યાસે રહ્યુલર થતા અવાને જણાવે છે કે-

स्पष्टं निष्टाङ्कतं तस्त्रमष्टकैः शतिपननान् । ग्रानिमहोदयं ज्ञान-सारं समन्त्रमञ्जलि ॥

[उपलंहार खो, ५]

લત્રોસ અપ્ટેકા વેડ પ્રગટ નિધારેલા લત્ત્વને પ્રાપ્ત થયેલા સુનિ, જેનાથી મહાન ઉદય છે એવા શુદ્ધ ગારિત્ર તથા પગ સુક્તિકૃપ સાનસરને પામે છે

शामण कोतुं व शामाधार पाते प्रभाव व्या रीते व्यापे छे। "सामाहभमाइने समनाणे जान निहसाराणी ।

ે સામાફ સમાદન શુધનામાં વાગ પર્વુલાપાગ : સમા હિ सासે વાસો વાર્યો, સારો વાગસ્ત નિવાર્થ ''!! સામાપિકની માહી લીકામાં લોકબિંદુસાર પૂર્વ સુધી ક્ષુવસાન છે, તેનો સાર ચારિત્ર કે અંત્રે ચારિત્રોને નિવાર્ષ કે સુધીઓ એ જ પ્રે'લ્ડો આ એક વધારે પુરાવો.

निर्विकारं निराबार्थ, झानसारमुपेयुपाप् । विनिष्टचपराञ्चानां मोसोऽजैय सहात्मनाम् ॥

[उप० स्तो० ६]

વિકારરહિત અને આધારહિત એવા ગ્રાનસારને પ્રાપ્ત રાયેલા અને પરની આશા જેની નિવૃત્ત થઈ કે એવા મહાત્યાઓને આ જ લવમાં અન્યતી નિવૃત્તિકળ શ્રીક્ષ છે:--

તથા અ મંધ છસ્ટ એએકોશી એ ગુજરાતી ભાષામાં આભાવોથ રુપ મતુવાદમાં કશું છે કે " ભાલિકાનિ લાળ ચાઠવા જેવા આ ભાલાવઓધ નીસ્સ નથી, પરંતુ તે ન્યારમાતાર અમૃતના પ્રથક સરચો છે જેનેતરમાં ભાષવસ્થિતાનો આધ્યાતિકારાન તરીકે આર છે. જેનેતરમાં ભાષવસ્થિતાનો આધ્યાતિકારાન તરીકે આર છે. હિન્દુ એ પાંત્રમાં પાર્વાતો છે ત્યારે આ મંધ તો તેની સ્થના પ્રીત હતા મુક્તેષ્ય, હેદય મંખ અને સ્થાચાય માટે આશ ભાવવાકી પ્રસાદ્ધ ત્યાનના ઉપનિ-પાર્વય છે. જેમ જેમ ભાવત, મનન કરાય; તેમ તેમ એનો આધ્યાતિક અનુસવ અને સ્લ્યવ્યવસ્થત અને સ્લ્યવ્યવસ્થત અને સ્લ્યવ્યવસ્થત અને સ્લ્યવ્યવસ્થત અને સ્લ્યવ્યવસ્થત અને સ્લ્યવ્યવસ્થત અને સ્લ્યવસ્થત અને સ્લાય સ્લાય અને સ્લ્યવસ્થત અને સ્લાય સ્લાય સ્લાય સ્લાય સ્લાય સ્લાય સ્થાય સ્થાય સ્લાય સ્લાય સ્થાય સ્થાય સ્લાય સ્થાય સ્થાય સ્લાય સ્લાય સ્લાય સ્લાય સ્લાય સ્થાય સ્લાય સ્લાય સ્થાય સ્થાય સ્થાય સ્થાય સ્લાય સ્થાય સ્યાય સ્થાય સ્ય

क्रियंचिद्धिमयन्त्रगुरुसहा विश्वं वरेषां विषा-वेगोर्ट्स्ट्रार्ट्स्स्ट्रियस्थान्त्रगं क्रुवेराम्यतः । रुग्गार्ट्स्स्यवेषक्रपपतितं चास्त्रं वरेषसपि, स्त्रोद्धानां स्तृ विकारमासर्राहेतं बन्त्रानससरात्रितत् ॥ [ssat

[प्रशस्ति ऋो. २]

અહેં! કેટલાએકનું તમ વિશ્વવૃત્ય વાવધી મીડિવ થયેલ છે, બીલાએનું મત વિશ્વન આવેશ સરખા અને વત્કાલ છે ફેળ જેતું એવા કુવર્ક-કુવિચારવર્ડ મૂર્કિંત થયેલું છે, સમ્પનુ મત કુવૈયારવ-દુઃખગબિંત અને ગોહગબિંત વૈસાઅથી કરટેલા છે હઠકાયા ફેવરા જેને એવું, એટલે કહાત્વતર જેના કડ્ડક વિપાક ચાય વેલું છે. બીલાઓનું ચિત્ત ખત્રાત્વરૂપ દેવામાં પરેલુ છે. પરંતુ ચાહાઓનું મત વિકાર સારથી રહિત જ્ઞાનસાર વડે આપ્રિત છે —

ઉપરના ઉપાધ્યાયશ્રીજના અનુભૂત ઉદ્ગાર મુજબ—

" विरहास्तद्रसास्वाद्विदोऽनुमवजिश्चया "

[अनुभवाष्टक स्त्री० ५]

એટલે કે અનુભવરૂપ જીલ વર્ઠ શાસ્ત્ર કૃપ ક્ષીરના રસારવાદને બાલુનાસ થોડા છે એટલે શાસ્ત્રાન તે આક્ષ છે, અને અનુભવ તે અંતરંગ ળાળત છે.

તા પછી હું આ લેવતુ માહાત્મ્ય શુ કહી શકુ 🧗 ઢ

ગા થય રગતા—સમાજિત, ગુજરાત સિન્દપુરમાં શ્રી મહત્વીતનિવોલ કિવાળીને કિવસે પૂર્ણ કરતા ભાજ ભ્રંથાની પૂજ્ય ઉપાધ્યાયજીએ પોતે જ એકેલું માહાત્મ્ય રજ્ય કરી રાયુ-સ્તવના પૂર્ણ કરે છે.

" આ શ્રે'ય પૂર્ણીન-દયન આત્માના ચારિત્રહફરીની સાથે પાલિક્રયહના મહોત્સવ રૂપ છે. વળી આ શાસમાં ભાવનાસમુહરૂપ પવિત્ર ગ્રેમશ્વડે લ્રિમ લીપી છે. શાનરફ સમતારૂપ જલ્લેના છે દેશન કર્યો છે, રસ્તામાં સ્થળે સ્થળે વિવેકકૃપ પુષ્પની માલાએ લડાવી છે અને આગળ અધ્યત્મદ્દપ અમૃતવી શરેશે. પ્રમુખ્ય મુશ્લે છે. આ બધુ પૂર્ણતન્થન આત્માને આપ્યાદનગરમાં પ્રવેશ કરવામાં માં પ્રાવરૂપ છે." (પ્રશસ્તિ શ્લીદ. ૩)

ષ્યા જ્ઞાનસારના અભ્યાસી અની અનેક સ્થાત્મહિતેચ્છ યુન્યવતો મ્યા જ્ઞાનસારરૂપ શ્રારિત્રગુણ પ્રાપ્ત કરી સ્વેશ્રેય સાધે એ શુલેચ્છા

> यत्र रोघ कपायाणां, ब्रह्मध्यानं जिलस्य च । शातक्यं तत्त् क्यः शुरुं, अवशिष्टं तु लंधनम् ॥ अवश्----ने तपमा अगामीनो रोध, कल्पर्यंतुं भावन करे गीतरमहेनन ध्यान यद्व होय, ते ल गृह तप लख्यं करे गार्सनं

વીતરાગદેવતું 'ચાન થેલું હોય, તે જ ગૃંદ તપ ભણવું અ તે৷ સર્વ લંધન માત્ર સમજવ

अकळकिसंपद्माय श्रीमते बातमगणभराय नमोतमः ॥ पाथर्शशिक्षभिष् न्यायायार्थ न्यायिनशारह

પૂ ઉપાધ્યાયજ મહારાજ આજે પણ અજર-અમર છે [લે-મમપૂન્ય માવાર્ય શ્રીયદ વિજયદર્યન્ટર્શયુરજ મહારજ]

8 નારી કેશર કિલ કપુષ્ઠ લાસ વગેરે ભોતિક સૂત્રોથી પહોંચીની સુવાસ મર્ચાલિ છે. પરંતુ સત-સાધુંગ્રેઓના ભાંતરતભામાં પ્રગારે જન્માં સેવમાંદ સાધુંગ્રેણીની સુવાસ ભાગાંદિત છે. કરતારી કેશર વારે પકાંશ્રે કે પેતામી હાબ્યીમાં તો સુવાસ ભાષે છે, પરંતુ પાતાની ગેરહાબ્યીમાં સુવાસ ભાષાની તે પદાંચીમાં શક્તિ નથી. અને કડાય સુવાસ ભાષાની તે પદાંચીમાં શક્તિ નથી. અને કડાય સુવાસ ભાષાની તે પદાંચીમાં શક્તિ નથી. અને કડાય સુવાસ લેખા તે પદાંચીમાં શક્તિ નથી. અને કડાય સુવાસ લેખા તે પદાંચીમાં શક્તિ નથી. છે.

કુવાવથી મામલા બગીવા સામાં હોય છે. પરંતુ તેઓના સ્વર્ય માનન લાસ કેંડ્રેસ-ક્રાર્થી વર્ષો પરં'ત તે સાંત પ્રખેશના સાસ્ટ્રોફેની સુવાય વિષયો પ્રવસ્થે કરે છે ભીતિક પાર્શિની કુવાય કરતાં આત્માની સુવાય હન્ય-કેંગ્ર-સાંત અને સાનની ચર્ચેશાએ અનંતરૂહ અધિક કુ પોતાના જીવનમાં તે કેંદાં માનવે આવી આત્મરૂફેની મુવાય મગરાવેલ છે. તે મહા-પ્રસ્તુ છે પોતાના જીવનમાં તે કેંદાં માનવે આવી આત્મરૂફેની મુવાય મગરાવેલ છે. તે મહા-

હોગલમ જામથી જાહીરો વર્ષો ગતાઇ વિષયમાં મહા-માં પત્રની દ્વાવસ પારત્યાર, ગ્રાંગી દરેવી ત્રાનાન્યોતિને વધુ સંતેજ કરતાર અને કડોક્કરિતા સમયે ધર્મ શાસનતી દ્વાંલ ભાવસ્થાને દ્વાંલિય રાગભર નામાળામાં નામાવિશાયલ વાયકસિટોરાવિ મહોદ્યાન્યાય કંધોમાત મહોદ્યાં વારત્યા આહારાજ નામી એક તમારું મહોદુગ્યની જેત શાસનતે ગર્યો પૂર્વે વર્ષિત વર્ષસ્ત્રી લેટ પ્રાપ્ત માટે હતી પડ્યુ પત્રે કેન્દ્રોર્યું ગ્રાપ એ સાધ્યુગ્યની જન્મ-વૃષ્ટિ હતી. માતા સોક્યાંગાંક એને વિતા નાસ્ટાયક્યુંના એ કલાંયક ગુલ હતો. જન્મ-વન્યત્રીને મારાયતાના પ્રાપ્ત છે ભાવચારમાં જ સંસ્ત્રા અને સમ્યાગ્યન્તી પ્રતિભા એ કલાંયક્રના પ્રમાં હતા હતા રાષ્ટ્ર કેમ્પાર્થ સ્થવી હતી છે ત્યાર વખત શ્રાપ્તુ કરવા પ્રાપ્ત મામ્યું ક ભારતાયર સ્ત્રીલ ભર રાષ્ટ્ર કેમ્પાર્થ સ્થવી હતી છે ત્યાર વખત શ્રાપ્તુ કરવા પ્રાપ્ત મામ્યું ક

સંદ્ર્યુરનો સમાગત, મ તરનો સાંચી વેરાલ, મારિવાનિ મુલ્લિય સાથે સં સંખત પુનિત માર્ગના સ્વીલર, સે લખતા સ્વીલર પાત્રી સાંચારના સાથે સાંચારના માટે સં સંખતા માટે કાર્તી—પાત્રા જેવા દ્વારવીઈ રચ્યોલા પૂત્ર-વેલ્લુદેવ સાથે માખ મન્તે વર્ષો પૂર્વ ત ત્યાર વર્ષે કે સર્જી કેની અમાગવાનો અલ્લાલ તેમ જ તે અલ્લાલ હાસ પ્રમુટ થયેલ સાચી પરીક્ષાશક્તિ મને ત્યા-વચ્ચકિત વર્ષે મેં સંતંતા છળન પ્રત્યોલ જેટલ વર્ષે કાંગ્રે તેટલું જાવ છે. મે પરિત્ર સાંધુ પુત્રેને પ્રાતાલ અંતરમાં હતા મને સંપદ્મની મનુપાત્ર મારાધમાં તેમ જ શુત્રકાનના સ્વત્ર પરિશ્રીલન હાંગ્ર હિલ્લાકાલ પ્રાપ્તાનો સ્વત્રાર્થ પ્રાપ્તાનો સાલાવન્યોલિ પ્રમુદાર્થ મે યુન્યન્સિફિલિસ સંદરમાં મે માફ્યુલ સાલાન્યનીલિ પ્રગાસનોને જ સંતાય ન માન્યો, પરંતુ જાનેક વિષયો સંભીયી સહિત્ય સર્જન તેમ જ સંદુપદેશકારા સંખ્યાળ ધ માનવ દૈયામાં જો કિન્યુપ્રકાશમય જાત્મબ્યોતિના ઝળમગાટ પ્રગટ કરી અનંતકાલનાં જાયકાર પટલોને દૂર કર્યા

અનં તકાની તીર્થ કર દેવોલ્યે જ્લાવેલા અનં તકાતિના માર્ગને સમજવો, એ માર્ગ ઉપર યથાર્થ શ્રદ્ધા થવી, તેમજ અનં તકાતિના યુનિતપાર્ચ પ્રથાણ કરવું. એ ઉત્તરીતાર યઘાપિ વધુને વધુ દુષ્કર છે પરંતુ એ બલા ય કરતાં અન તકાતિના પવિત્ર રાજમાર્થમાં કરાલી પગલે કંટક વેરનારાઓનો સામનો કરવા, સાથે વેરાયેલા કટકા દુર કરી અનેકાનેક સુપ્રકુ અપરમાએ માટે એ પવિત્ર સજવાર્થને સાફ અને સુરક્ષિત રાખવાનું કાર્ય પૂર્ણ જ વિદર છે.

બીજ બધાય તીર્વે કર દેવાના ધર્મદાસનની અપેક્ષાએ વરસતીર્વે કર પ્રસભ્ય ભાગન મહાવીર પ્રકૃતાં ધર્મદાસનની પૈતિયતિ પૂળ જ બ્રિન્ન પ્રકારની છે કાળતું પરિગઢ સાને કે આત્માંઓના પુન્નબહાની ખાગી માનો, પરંતું સમણ લચ્ચાન સહાવેરપ્રકૃતાં ધર્મા શાસનમાં શેઠા શેઠા સમયને બાવરે કડક પ્રશ્વનાની વ્યક્તિઓના વધુ પ્રદુક્ષાંય થયો છે. પ્રમાણ લખવાન અહાવેરનાં નિવોદ્યાં આજ સુધીનાં લગ્નલન બ્રહ્મેક્કર વર્ષોમાં ઇતિકાસનું નિર્ફાય કરવામાં આવે તો બોન્દ વચેર અન્યકાર્યનિકાનાં આક્રમણ ઉપરાંત સ્વત્રકાર્યનાં પ્રસ્ત્ર કરે છે. અચ્છ-મત્ર-ચંત્રકારનાં બ્રહ્મનાં પ્રસ્ત્ર કરે છે. અચ્છ-મત્ર-ચંત્રકારનાં ભાગ લિન્ન લેઠાની હારમાળા પ્રાપણને નાલુધામાં આવશે સર્વેત્તિ કે જનપ્રાહ્મનાની અફ્લૂલ શક્તિનો ફ્રેન્સ કાઇ પણ કરાયું પ્રદુશે હોય તો પાતાના ભાગ પ્રાપણને નાલુધામાં આવશે સર્વેત્તિ પ્રદુશ લિન્ન લિન્ન ચચ્ચમતોની પરંપરા અને તે પોર્ટના ધર્મ પ્રત્યો દ્વાચકાર જ છે

ઉપાંધ્યાયછ મહારાજનો સમય એટલે જૈનધર્મશાસનની પેઠી ઉપર ડાંચ થાવવા જેવા વિકટ સમય હતો. એક આજુલી ઇતિર સંગ્રહ્મલોમાં ધર્મના એઠા નીચે ભાગ વિલાસનું સાસાત્મ્ય વૃદ્ધિ થામનું હતું હતારે જૈન દર્શનના પોતાના આલિશાન મહેલમાં કોઇએ (શુપ્ક) જ્રષ્યાત્મવાદના નાપે, તો કોઈએ (સ્વરૂપ) હિંસાના નાપે, કોઈએ નિર્ચય સાહિત સર્જનમાં " શ્રહ્માં અને સંવચની આરાધનાં એ જ સુક્તિનાં મંગલદ્વાર છે " ગેલાં લાવાર્લો પ્લોની રચનાદાલ તેમ જ પોલાનાં છવનમાં 'હોરનોર' ન્યાયે એક ધારી પરિભુમેલ શ્રહ્મ તેમ જ સમતની સાધના પર નિયનો પ્રતા માને સાદયે ત્રહ્મ કર્યો દે " ગમે તેટલું છુદ્ધિ "પાયેલું પરંતું શ્રદ્ધા અને સંચય સંપ્યા સાન-ત્રિસાન સંસારનો વૃદ્ધિતું કારણું છે. હત્યારે શ્રદ્ધા અને સંચય સંપ્યા એપણું પણું સાન સુક્તિનનું અસાધારણું નિમિત્ત છે. શ્રદ્ધા અને સંચયની ભાવના ાવનાનું જ્ઞાન-વિજ્ઞાન ઉપરથી શાક્ષાનાં પણ સુવાસ વિનાનાં આવળનાં ફુલ અથવા ઉપરથી ચળકાટ મારતા નકેલી દાગીના જેવું છે. જ્યારે શ્રદ્ધ તથા સંચમયુક્ત આેલું પણ ગ્રાન સુવાસથી મદ્યમદાતા સુલાબનાં પુષ્પ સરખું અથવા નાના પણ સાચા હીરા સરખું છે."

વંદનીય વાચકસિરાગિવિનો સ્પાલકેંદ આજે આપણી પાસે વિલમાન નથી. પરંદુ પોતાના છવનમાં આરોધેલ સત્તંત્રથનો અનુપત્ત આદર્શ-તેમજ શાસ્ત્રીય સાહિત્યની સુધા સરિતા આપણી પાસે આજે હાજરે છે આપણે સાફું કાંદ એ અનુપત્ત આદર્શમાં આપણું નિર્મળ પ્રતિબિ ભ સ્થાપન કરવા શકિતલાન બનીએ, તે માટે તેઓની સાહિત્યસુધા સરિતામાં સ્તાન કરીએ અને એ શાસત્ત્ર સાફ મહિલિના આદેશ ઉપદેશીને આભ્વસુધાં મૃદ્ધી " અમસર ઉપાધ્યાસભ્ય અપાસર લાયક જરા વિશ્વમાં આજર અમાર છે." એવી મંબલ ઉદ્યોપણા કરવાનાં અધિકારી બનીએ. એ જ શુલ કાનના.

똙

विमेषि यदि संसारात् मोक्षणसि च काहुसि। तदेन्द्रियजयं कर्त्तुं, स्फोरव स्कारपीववम्॥

અર્થ:—ને તું સસારથી લગ માગ્યે: હોય અને મેક્કાપ્રસિને ઇશ્કારો હોય તો ઇન્દિયોનો જય કરવાને ગાઢે પ્રચણક પરાક્રમ કેરવ

¥.

महं ममेति मन्त्रोऽयः, मोहस्य जयदान्त्यकृत्। अयमेष हि नम्पूर्यः, प्रतिमन्त्रोऽपि मोहजित्।

અર્થ':--' દુ અને મારું' એ માેહ રાજાના જખ્યર મન્ત્ર છે અને તે મન્ત્ર સમગ્ર જગાદને અધ કરતારા છે.

આ મન્ત્રની આગળ નકાર મૂક્તામાં આવે [અર્થોવં ' દુ કઇ નથી તે માર કઇ નથી '] તોએ જ મન્ત્ર મેક્કરાબને જિતવા માટેના પ્રતિમન્ત્ર ભતી બાય છે

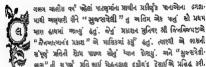
सानसार]

[श्रीभइ सरेप्रिविजयक

वायक्ष्वर श्रीयशाविकयश्चनी कन्मक्षि -

ક નાે ડ્ર

િલેખક - **પરમ**પૂત્રય શ્રીમદ્ યુવ્યવિજય**૭** મહારાજ--આગમ પ્રભાકર**ી**



માર્થી અભ્રધારી રીને "સજસવેલી " તુ અતિમ એક પાતું સો પ્રથમ મારા દાધમાં આવ્યું હતું. જેનું પ્રકાશન મૃતિવર શ્રી જિતવિજયજીએ "જૈતઆત્માનંદ પ્રકાશ "એ માસિકમાં કર્યું હતાં. ત્યારથી એ ભાસની સંપૂર્ણ પ્રતિની શોધ પાછળ સૌનું ધ્યાન દેશસ્યું. અને "મુજસનેલી ભાસ" તી સ પૂર્વ પ્રતિ ભાઇ મેહન લાલ દ્વીય દ દેસાઇએ પ્રસિદ્ધ કરી. મા ભાસની સંપૂર્ણ પ્રતિની પ્રાપ્તિથી ઉપાધ્યાયછ શ્રીયશોલિ જ્યલ્ક મહારાજ વિપેતી કેટલીક અનાત વાતા આપણાને લાસવા મળી તે સાથે ઉપર્યક્ત ભાસે ઉપાધ્યાયછ મહા મજના જન્મવર્ષ આદિ અને સ્વર્ગવાસવર્ષ વિષે ભારે વિષમતા પણ ઊભી કરી છે . ઉપાધ્યાયછ મહારાજશ્રીનાં જન્મવર્ષ ગાદિ વિષેના ગંભીર પ્રશ્નને તેા ગાપણે આપણ સામે વિદ્યમાન સાથેના હારા ભુદા લેખમાં જ વિચારીશ. પ્રસ્તુત, લક્ષ લેખમાં તા માત્ર ઉપાધ્યાયશ્રીજની જન્મભ્રમિ વિષે જ ટક નાંધ લખવાની છે.

પુજ્યપાદ વિશ્વવિજ્ઞાનમૂર્તિ વાચકપ્રવર શ્રીયશાવિજ્યાછ મહારાજની જન્મભૂમિ "કનોડ ' છેવા વિવેતી જે માન્યતા ગાલ થઈ કે તે મને લાગે કે ત્યાં સુધી, ખઠ્ઠ સંગત દ્વાય તેવી નથી કારણ કે "સુજલવેલીશાસ" મા તેના કર્તા સનિવર શ્રી કોંતિ વિજયાભાગ ઉપાધ્યાયભ મહારાજના જન્મ કર્યા અને કથા વર્ષમા થયા એ હંકીરત આપી જ નથી. તેએ! તો માત્ર "પક્તિ શ્રી નથવિજયજી મહારાજ વિ સં ૧૬૮૮માં કુથુગેર ચામાસું કરી કનોહે લાય છે^{ં એ} હંકીકતથી જ ભાસરચનાતું પ્રયાણ **આર**ંલે છે થ્યા સ્થિતિમાં ઉપાધ્યાયછીના જન્મ ક્યા વર્ષમા અને કર્યે સ્થળે શ્રેયો–એ હીકક્ત તો શ્રરપણ જ રહે છે સજસવેલીકારે ઉપાધ્યાયછનાં જન્મ વિષે કશી હંકીકત નથી નાેપી એટલે એ પણ સંભવિત હોઈ શકે કે ઉપાધ્યાયછના પિતાર્શ્રી બ્યાપાસિક નિચિત્તે કનોડામાં આવી વસ્યાં હોયાં આ વસ્તુ વિદ્વાનોએ વિચારવા જેવી છે. અસ્તુ, આ બધુ ગમે તે હો, તે છતાં ઉપાધ્યાય શ્રી યશોવિજવાછ મળ ના, તેમના ગુરવર શ્રી નયવિજયજી મળ સાથે સૌ પહેલાં સમાગમ કનોહામાં થયે৷ હતો એ હંકીકત અનાળાધ હોવાર્થી તેમ જ ઉપાધ્યાયછ મહારાજની ભાલલોલાના નિશ્ચિત પુષ્યધામ તરીકે કેનોડાની પાવન ભૂમિતું આપણે દર્શન ક્ષીએ તો અહિ મુસગલ જ વસ્તુ અને છે એમાં લેશ પણ શંક્રને અવક્કશ નથી

' સુન્યત્વેલીલાસ' દ્વારા ઉપાધ્યાયછ મહાસજ અને કનોઢોના સંગંધ જ્યારથી તાણવામાં આવ્યો ત્યાવથી એ પવિત્ર-પાવન પુષ્યભૂમિનાં દર્શન માટે અંતરમાં તાલાવેલી લગી હતી. પરંતુ આવા પુરુષધાનતું હર્દાત ગ્રુકુતોહવના અલાવમાં શ્રેદાએક શવુ શક્ય નથી હિતું; તેમાં પણ સાધુભ્યીઓ માટે વિક્રેશનામાં નહિ આવતા વ્યાપ્રક પ્રદેશનુ કર્દાત અશ્રક્ષમાયા હેત્ય છે. આમા અનો આ વર્ષે પાટલુથી અમહાવાદ પાછા ફરતાં પ્રથમિશે નિર્ણય કર્યો સુજબ અને પૃત્યપાદ શ્રી ઉપાધ્યાયભ્ય મન્ની ભાળલીલાના પુષ્યધામ કેનોઠાનું કર્દાત કરી આવ્યા ક્રીએ

કેનાેઢા

પારહ્યાં મેસાણા તરફ જતી રેલ્વેશાર્કીનમાં અને લગલગ ળ-નેવાના અધવયમાં ઘેશું કરેશન ભાવેલું છે ત્યાંથી ઘેશું આમ પાણા માર્કીલના અતરે આવેલું છે. ત્યાંથી ઘેશું કર્યા કરા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કરા કર્યા ક

અત્યર તો કનોહામાં લગભગ બસા ૧૦૦ એક વરાતી ગાળાઠી અને ઉપર જણાવેલ મોં દેશ વિસ્તાન છે. કનોહામાં કનોહીમાં પ્રાથમણે અને કનોહીમાં પટેલોતી વસતિ ધ્યાન એ લે તેવી છે. એક મહિરમાં પાળીએ તેના લખ્દ લેખ છે, પણ પાળીઆ ઉપરાન સંખાતી લિપિ વાંચવાની ક્યાં એ એક ભૂકો વિલા હોઈ હું એ લેખને લેકેલી શક્યો. નથી પદ્મત્ત લિપિયુ ૧૦૦૫ તેનાં એ લેખ મને વધે. પ્રાથીન નથી લાગ્યો

ઘેદ્ધું જના એક લાગ્યવાન સાવક લાઈ છે. તિલકચંદને લઈ અમે ત્રણુ સાંકુંગો— હું, સુંતિ શ્રી રમિફિકાંવિગ્યષ્ટ અને સુનિર્ધો જવલદિવગ્યષ્ટ ઘેદ્ધું જ્યાં દેશેક વર્ગની નીકડવા અમે સારા અગિયાર લગલગ કનારા પહેંચા અને ત્યાંના એક પદિરમાં મેઠક જમારી. અમને તેને નામના લોકા એકઠા થઈ ગયા તેમને એક ગામમા પ્રાચીન સ્વેશે, જૈન-માં કરે તેમ જ કાઈ પ્રાચીન પાદ્ધક આદિ અને પૃષ્ઠ—પર્છ કરી ગામલેકાંકલે ત્યાન પ્રાચીન માં કરે લગતો વાતો કરી અને તેમની સાથે અમે ત્યાના સ્વેશે તેના ગયા. ઉપર જણાવેલ શિવાલય, સ્મરવાદેવીનું મહિર અને કેટલીક વાતો વિવાય બીબુ કાંઈ ત્યા રેખાશું નશ્રી રેલાક કરવાઇ નામના કેમહીંઆ પ્રાહ્મણના વસ્તી પાસેના સ્વા ઉપર જના જન્માનામાં એક મારિક હતું અને અત્યારે ત્યાં બહાર દેવાના એ પચ્ચેરા ઘણા છે. છે વર્ષીર જણાવ્યું. પરંતું આપણને વાન્તસ્ય થાય તેવો કાંઇ જેન અવરોલ કે શ્રીયગ્રોવિશ્યષ્ટ મહારાજને લગતી કોઇ કોકેલ કે બીબુ ક્યુંએ જવાલું વર્ષી

ભાઇ રેવાઇ કરવાઇ પાસે પ્રાચીન પત્રો તરા કેટલીક પ્રાચીન સામલી છે એમ ગામ-લોકોએ જ્યારપું પરંતુ એ લાઈ બહારગામ મરીલ હેવાલી ગામે તેમના પાસેની ફાઇ વસ્તુ તોઈ શક્યા નથી એ કે ગા સામલીમાં પહોલિજ્યણ મહારાજને લગતી સામલી મળવાના ફાઈ જ સંભવ નથી. તેમ છતા ગા લાઈ પાસેની સામલી તપાસવી તો સ્ટેઇએ જ એક વૃદ્ધ શાક્ષણ ભાઈ મત્યા તેમણે જણાવ્યું કે વિ. સં. ૧૨૦૧માં સમારા શાક્ષણાતા ત્રેવીસ પદા ઉત્તરમાંથી સિદ્ધપુરમાં આવ્યાં હતાં. જેમાં અમે કેનોડીઆ શાક્ષણા ત્રીતે પદ છોએ એક જમાનામાં કેનોડામાં અપારાં છે હતાર વધે હતાં અને એ પ્રમાણમાં બીછ પણ વત્તરી અહીં હતી વસે અહીંસા તો અહીં કેસારાનાં ઘર હતાં આ રીતે અહીં તો ભૂતકાલીન બહેંક્ષળસાથી ઘણી હતી અભાગા અહીં ના કેનોડાં આ શ્રાહણો કાઠીયા-વાડમાં ત્રથા, ત્યા પણ અમારા નામથી ગામનું નામ કેનોડા જ પદ્ધાર્ય.

ચ્યા રોતે કનોડામાં પ્રકોર્ણ'ક કંકીકતો અને પ્રાચીન ચર્ચાચીન રહ્યો તેના મતમાં છે. પરંતુ પુન્ય શ્રી ઉપધ્યાવઝ મે અ એ એનો કોઈ ઇતિહાસ કે સામકી મતમાં નથી આપ કર્તા એ ધ્યાનમાં રાખવા એવી હંકીકત છે કે કેનોડામાં એ શિવાહવ અને 'રમરણાં જેવીતું મંદિર છે એ ચોલુકપદ્યુચીન શિરણક્ષાઈ વિભૂતિ છે.

આ પછી ગયે વિચાર કર્યો કે લાટ તેમજ વકીવ વાલ્યાના વ્યુના ચાપકાંઆમાંથી ઉપાધ્યાયપ્ટામન ને લગતી કોઇ હંકીકત મહી આવે-એમ ધાર્મી થયે, ત્યાંના લોકોને પૂછ્યું કે તમારે ત્યાંના લાકોને પૂછ્યું કે તમારે ત્યાંના લાકોને પૂછ્યું કે તમારે ત્યાંના લાકોને તમારે કહ્યું કે કે એના બ્લાલ એક ત્યાંના લાકોને તમારે કરવાતું કામ તથા લાકોને તમારે મારે લાકોને તમારે તમારે કરવાતું કામ પાસ્ત્ર તમારે તમારે કરવાતું કામ પાસ્ત્ર તમારે કરવાતું કામ પાસ્ત્રના લાકોનોને લાકોને તમારે સ્થાનો તમારે મારે તમારે કરવાતું કામ પાસ્ત્રના લાકોનોને લાકોને તમારે કરવાતું કામ પાસ્ત્રના તમારે લાકોનોને લાકોને તમારે કરવાતું કામ પાસ્ત્રના તમારે લાકોનોને લાકોને તમારે ત

હેવું પરી ગમે મોડવ ગયા હતા. ત્યા સાંતલપુરના એક જેન મહારમાં, જેમની મારે પ્રાચીન તાનમંદ્રદ છે અને ભૂતા બોળીઓમાં વગેરેને સંગ્રેક પણ છે તે ઉપરાંત તેઓ ભૂતી વ શાપતીએ મંભાળપણું કામ કરે છે તેમને પણ ગા વિચે સચતા કરી છે. તેઓ તો કંકે છે કે—અમારા પહે તો ભધા ઇતિહાસ છે અને અમારે ત્યાં ગા હકીકત મળશે, પરંતુ ઘણીવાર ગાપદ્રી ભારતીય પ્રદત્તા સાધુ સંન્યાસી ભાષાએ, ચતિયા, વૃદ્ધ પ્રાચણેયું વૃદ્ધ પુરુષે વગેરે મોટે ભાગે લાતમાં સાધ સંન્યાસી ભાષાએ. ચતિયાન સંદ્ર સંસ્થે જ તેગમાં ગાપે છે આમકાર્યા આવા સાધ્યામાં ચાકસાઈલારી ચીતે તપાસ કરવાથી સંભ્ય છે કે કોઇ હઠીકન દસાંકર્યો આવી પદ્મ આવે.

અંતમાં અમારા નિરીક્ષણમાં કેમોડાયાથી ઉષ્યાધાયલ્છ મહારાજના થાંગે ફ્રાઈ એવી સ્ત્રીક્ત નથી મળી, તે આપણને ચમતલર પેશ કરે તેમ કતા ચામારા સાક્ષાત ત્યા જયાચી એટ વસ્તુ વ્યક્ત થતી છે કે કેટલોક બ્રામ ભાગી ગયો છે અને ચહુક નર્તાની મત્રીની મત્રી છે.

ઉપાધ્યક્ષ રહેશ પ્રચેતી રે જે વાતો કરવમાં આવી તે ત્યાંન લોકોએ રસ પૂર્વક સાંબ્યું છે અને એક્ટના પણ લાગ્ય કે આવા મહાત્યાનું સ્મારક અહીં કરવામાં કરવે તે જગદે પણ ઉદય શાય

અન વલિક્રિકિશાન-ગ્રાહકેન્દ્ર શ્રીગૌતમસ્વામિત નમાં જેન શાસનના સમર્થ પ્રભાવક, મહાન જ્યાતિર્ધર ન્યાયવિશારદ ન્યાયાચાર્ય.

ઉપાધ્યાયજી શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ

તેઓશ્રીને અદલત વ્યક્તિત્વ.

િલેખક - પૂ. પે. ચાદારાજ શ્રીસાન કનકવિજયજી ગણિવર,



લેમ નથી જ.

ન શાસનનાં વિશાદ આકાશપટપર અનેકાનેક શાસન પ્રભાવક મહાતમા પુરુષો, સહસારિય સર્ચની જેમ પ્રકાશમાન ખની, મમર નામના મકી ગયેલા છે કે જેમના અગરય ઉપકારાને યાદ કરીને થ્યાએ પાત્ર થયા દેશે શ્રદ્ધાપ્રવેકનથી પડે છે થયા મહાસમા ચાકિનીધર્મસનં સમર્થ વિદાન આચાર્ય શ્રીહરિબટસરીશ્વર પ્રતિ-કાલસર્વાત્ર આ૦ શ્રી૦ દેમચદસરી ધર તથા ન્યાયાયાર્થ તાર્ધિક શિરામહિ ઉપાધ્યાયભ થશાવિજયભ, આ ત્રહેય પ્રભાવક મહાપત્રનોના આપણા પર જૈત સાહિત્યપર, તેમજ પરંપરાએ સમસ્ત સંસારપર અસંખ્ય ઉપકાર છે. એ કહિ સહી શકાય

શ્રી હરિલદ્રસરિ તથા શ્રીદેમચંદ્રસરિ–ગા અન્ને મહાપુરુષાએ, સ્વયં સચમી જીવનમાં રહી, જૈન સિહાંદા પ્રત્યેની અન-ય નિષ્ઠાપૂર્વક જે અહુવિધ સાહિત્યની સેવા કરી છે, એ ખરેખર પૂજ જ મહત્ત્વની તેમ જ યશરની છે છતાં આ અન્ને સરિદેવાના સમયની પરિસ્થિતિ એક રીતે સવિધાલરી તથા અનક્ક હતી એક હતા જન્મે બ્રાહ્મણ. રાજપુરાહિતના ઉચ્ચ સ્થાનપર વર્ષો સુધી સ્કેલા, અનેક દર્શનશાસ્ત્રોના પારંગત ખનીને સર્વધર્મના સિદ્ધાંતામાં નિષ્ણાત થયેલા, એમાં નિમિત્ત મળતાં હૃદયની સરકતાના યાગે થાકિની નામના જૈન સાધ્યીજના મખથી ' दो चक्क 'વાળી ગાયા સાયાળે છે. નવં જાય-વાની જિન્નાસાના કારણે તેઓ જૈનાસાર્થના પ્રશ્યસમાત્રમને પ્રાપ્ત કરે છે. અને પશ્કામ હરિયાદ પરાહિત જૈન સાધ મને છે હરિયાદ પ્રરાહિતમાં રહેલી પ્રકાડવિકત્તા. સમર્થ તાર્કિક શક્તિ અને સ્વ-પર દર્શન શાસ્ત્રોની નિયુદ્ધતા, આ બધાયને સાચા માર્ગ મળતા તેઓ સાહિત્ય-સંસારમાં પાતાની અમહિત સ્વનાએહારા વશરની ળતી, અમર થઈ ગયા

કેલિકાલ સર્વત્ર શ્રી હેમચંદ્રસરીશ્વરના સમય, શાસન પ્રભાવના માટે અનેકવિધ ગતકલનાગુકત હતા ગુર્જસ્થમિના પાટનગર અથુહીલ્લપુર પાટલમાં ધર્મશ્રહાવાસિત धनमं पत्त है प्रिवरवेर्ध ते अहे अनेक देवा सत्त्व सत्तापर वेग्रोनी प्रशाद परता. सत्तानी સંત્રો કેટલીક વેળા તેંગાનાં હાથપર રહેતાં જે કે જેન શ્રેપ્ડિવર્યાંગે એનો દુરુપયાંગ કદિ કર્યો ભરવેલ નથી. ધર્મના ખેદા ત્રનુતથી, સત્તાને તેમણે કોઈ ક્લકિત કરી નથી. ગાય સમયમાં ૧૦૦ શ્રી દેવચદ્રસૂરિના શુભ હસ્તે ધંધુકાના મોઢ ગ્રાતિય ચાર્ચીંગની ધર્મપત્ની સ્રીરન્ત શ્રી પાહિતીદેવીનો પ્રભાવશાળી ગુત્ર ચચ્દેજની દીશા થાય છે.

એ સંબંધવ તે વેળા સામહેવ શુનિ અને છે પણ ગુનિ સામહેવની તેજન્વિતા, અસાધાવસુ મેમા, અહેરાકિક પ્રતિભા, તથા સુનિયંત અલ્વારિગ્ય-તાહાતીન સર્વ દાર્મના માનલપર લોકેપ્પર પ્રભાવ પાઠે છે સાધુ સામહેવ ચારુ હ્રાસ્ત્રે પ્રદેશ અને પ્રત્ય કરે છે. ત્યાર બાદ પરમાહેત્વ ગુજેવર પહોલાલા કુમારપાળનાં માન્યશાસનમાં આગાર્યસ્ત્રે અને તેઓ પોતાની સર્જન-પ્રભાવ પરસાહેદ સ્થિતિના અને છે. સાહિત્યના એટલેક અંગને તેઓ પોતાની સર્જન-શક્તિહારા નવપસ્તિના કરે છે વ્યાકસ્ત્રુ સાહિત્ય છક, ન્યાય, ક્રાસ્તુ, નાટક ઇત્યાદિ વિશ્લોમાં મોલિક સાહિત્ય કૃતિઓને તેઓથી સાહિત્ય લગતને શેટ ધરે છે.

જૈત સાહિત્યમાં પણ ત્રિવિષ્ટ શલાકા પુરૂષ ચરિત્ર-પર્વ ૧૦. વીતરાગરનોત્ર, ચાત્રશાસ્ત્ર ઇત્યાદિ સાહિત્યસર્જના તેઓશ્રીતી અર્લુગ્રુખી વિદ્વત્તાના આપણને ગ્રુપરિચય આપી બંધ છે

(₹)

(૧૬મના ૧૭ માં દેશના ઉત્તરાર્ષના કાલની ચા વાત છે જૈન શાસનના પરમ પ્રભાવક જગદ્દારું આગળે શ્રી હોસ્સર્વિયરજના સ્વચીરાહેલું લાદ, હૈન સંઘમાં અનેક-વિષ વિક્રપ્રતિસ્થિતિ જન્મના પામી હેવી, ભલભલા સમર્થ સાધુપુરુંના આ સ્થિતિમાં કિસ્તિઅપુંદ જેની દશામાં સુકાઈ ગયા હેવા આવશિ લાદા—અને પ્રકારના આ વ્યનિ-જન્મીય વાતાવરણની અગદ્ધ જૈન ધર્મના પ્રતેષ્ઠ અહેપણ એપ્લી—વત્તી જરૂર પડી રહી હેવી વિદાન સાધુપુરુંનો, શક્તિય પન શાવકાર્યો, આ લાધામાં સુખર્દ કૃષ્ણ મરિહ્યામ આણી શક્તાને માટે અસમર્થ જન્માં હતા વચ્ચો, ત્યાંગી નિર્મ-ચ સાધુ મહાત્માંઓના સપ્દુંકમાં શિધિહતાએ પ્રવેશ રોળની હીધી હતા

વિદ્વતા અને સંવેશ અન્નેની સુધેમા ઘટના વચે હતા જ્યદ્ધારુ શ્રી હીરમૂર્યાધ્વરના પુષ્ય પ્રભાવ, તેઝ તેમજ તેમણે સ્થાપેશું ચૈક્ય દાટેલા ગયા હતા

સ્થાવ સંઘર્ષણ કાકમાં જૈનશાસનને, જૈનસાહીત્વની સેવાદારા સયસ્ત સંસારને અજવાળનાર એક દિલ્વવિભૂતિના સુવોગ પ્રાપ્ત થાય છે.

ગુર્જ-પ્રશ્નીય રત્યાની પાણ છે ગુજરાન-મહાજીત્વાનની શ્વિમ પૂર્વ કાશથી ગલાવધિ ધર્મ, કહ્યા, નિકાન, ગ્રાહિત્ય અને સન્કાર, પરેપાકાર તેના, વગેરે પ્રાકૃતિક ગુણોથી સુમ્મ સિંહ છે, ગુજરાતની ભૂતિપાર અનેક મહાન નિક્ષૃતિઓએ જન્મ ધારણ, પરેપાકારમાં આધ્યાતિકાતા તથા સંસ્ત્રારિક ગ્રાહિત્ય સર્જન હંવા 6નત છત્ત છત્તી, સંસાસભરમાં અનુપમ પ્રપ્યાતિ ત્રેકાનીને વકારની તામના પ્રાપ્ત કરી છત્તને ધન્ય અનાન્યું છે.

યૂ, ઉપાધ્યાયછ મહરાજ ગુજે રધરિત્રીનાં અઘુમાલ નરરત્ન હતાં, ગુજર લુમિનાં મહાન સંતાન હતાં,

અમકાવાદ તથા પાટેલુ-ગુજરાતના તાળે પ્રાચીન ગૈતિહાસિક મહાન શહેરોની વચ્ચે હાલના કહોલ ગામની નછક 'કેનોડું ગામમાં વિક્રમના સત્તરમાં સૈકાના ઉત્તરાર્ધમાં તેઓશ્રીના જન્મ થયા.

જૈનશાસનના સંઘર્ષણ કાઢમા આવા પુરુષ્યુરુષના જન્મ, શાસનના ભાવિ માટે ઘાવત્ સંસાર સમસ્તના ભાંતિ માટે ઉજવળ આશારુષ ગણાય.

પ્યાળક યરાય તેને માતાના શં દકારોના પ્રભાવે ન્હાની વવાયી જ ધર્મપ્રત્યે રૂચિ છે. પૂર્વ પ્રતીન સ્વેપપ્રથમના કારણે તેની ભુદિ, પ્રતિભા તથા સદ્યક્તિના કાંઈ અદ્રકૃત છે, પિતા નારણ અને માતા સૌધાનગઢીના અને ખુતે સ્વાર તથા પદ્મપ્રી, રામ-સુનો તેની તેએ પર પ્રવાત તથા સંક્રભાવેશ હતા. જ્યદ્રકૃત શ્રી વિશ્વ હી સરફાર્ય રૂચ્છા ત્રાપ્ત પ્રતિ શ્રી નાર્યાજ્ય અદ્દરભ્યની સુધાન જ્ઞા અને આદર્કોને સાય છે સાધુઓનાં જીવનની નિર્મળતા, ઉત્તપતા તથા ગ્રાત્મકલ્યાલ પરાયલના તેઇ-દક્ષ્મજી અને આદ્રીનો સાપ પ્રતા શ્રીરમાં આત્ર શ્રીર પ્રત્યે ગ્રાહ્માં સુધાના પ્રતા પ્રતા પ્રતા સાધાનો સ્વાર શ્રીરમાં આત્ર શ્રીર પ્રત્યે આક્રમાં સુધાના લગ્દ હસ્તે હિ. સં ૧૬૮૮માં ભ્રાગ્યતી દીક્ષા ક્રહ્મા કરે છે.

ભાળક જરાવતની વય આ અવસરે લગભગ ૧૩ વર્ષની હોવી સંસવિત છે. લધુ ખંધુ પદમશી-પદ્મારિકંકની વય કહાગ ૧૦-૧૧ની ગણી શકાય એ કે તેઓની હીક્ષા અવસ્થાની વયનો ગોકકસ ઉલ્લેખ હજૂ સુધી સલતો નથી પણ એટલું તો કહેવું શક્ય છે કે, તેઓએ આલ્યકાલમાં દીક્ષા કહેલુ કરેલી છે

જગારૂરુ મા શ્રી વિજયકીરસારિષ્ટના પદ્ધાનાવક ચા શ્રી વિજયકીરસારિષ્ટ હતા. તેમાનાં રવાગીરોહ્યુ બાદ આ શ્રી વિજય દેવસારિષ્ટ શ્રીકીરસારિમહારાજની પાત્રપર ભાગ્યા હતા. સુનિશ્રી યોગોવિન્યાથીના દીશા કાલે સમગ્ર તપાત્રપરમાં શે પોતા લાગલા પડી ગયેલા હતા. તે કાલે આ શ્રી દેવસારિષ્ટનાં નેતૃત્ત્વમાં એક શ્રમાયુવર્ગ હતો. ભ-બશ્રમાયુવર્ગ સ્થા શ્રી વિજયસાન દસ્ત્રસ્થિતા નેતૃત્ત્વમાં હતો આ શ્રી વિજયસેનસ્સિરિષ્ટના વિદ્યમાનકાલમાં આ સતારેક પ્રેયવાતો હતો

સાધુ પ્રોમિલ્ન થછ સમર્ચ જાહિતાથી તથા તેન્દ્રની ભુદિનિયાન હતા. પોતાના ગુરુ-વર્ધ્ય ક્રી તચવિત્ર્વાછની સાથે કાર્યીદેશમાં દર્શનશાસોના ભરવાસ માટે તેઓ પ્લારે છે ન્યાય, વેદાંત, પીમાંસક તેમન સાંભ્લાદર્શનના સિહાતોનો તેઓ પૂલ જ પશ્ચિમ પૂર્વક અલસા કરે છે. પ્રાચીતન્યાય તથા નવ્યન્યાયના ગ્રીમનું પરિવાલન, ખનન, નિર્દેષ્યાસન કરતાં કરતાં શ્રી ચોમિલન્યલ, નાયકર્જીનનાં સ્ક્રસ્પને પ્રાપ્ત કરે છે. કાશી-ત્રનારસની - સ્થિતના દરમ્યાન તેઓ પ્રખર વિદ્યા ગ્રેલવે છે. એ ગવસર નવલીય-મંગાલ પતુ નવ્ય-ચાયશાઓનાં મધ્યમન-થપ્યાપન માટે મુમસિંહ કેઝ હતું દક્ષિણમાં દેવચિરિનગર પતુ વિદ્વાનોની ત્રાનશૂચિ મહાતુ છતાં આ બધા કરતાં કાશીમાં ફેલો સાસ્ત્વતીના ત્રાણાત નિવાસ મનાતો હતો વિદ્વાનો, પ્રકાંપપિતી કિમ્મજ દર્શનશાઓનાની એ કર્મજૂચિ હતી. શ્રીયોશિનજીએને આવા સંકાંતિકાલમાં પતુ દર્શનશાઓનાનો એ કર્મજૂચિ હતી. શ્રીયોશિનજીએ અને એમાની નૃષ્ય ઉદયો, તેમણે સારી ખેતથી ત્રાનામૃત્વનું લોજબ હતું તેઓ પ્રાચીન તથા નવ્ય-ચાય શાસના ત્રાતા સમર્સ પત્રિત બન્યા ત્યાંના વિદ્વાન શ્રાહ્મણ પશ્ચિતોએ, ન્યાયવિદ્યારુદ 'નું' માન તેઓ-શ્રીની અસાધારણ વિદ્વાનાથી ટ્રેજિલ શર્શને હૃદયના મહત્યાન પૂર્વ દેવનોને સમર્પિત ફર્ય

(3)

શ્રીધેશોલિન્યજીમહારાજીનાં સંઘમીજીવનમાં ગ્રાનગુણે, સુવર્ણ-સુગ ધના સુધેગ સાધ્યા ક્ષેતદર્શન પ્રત્યેની નિર્મલક્ષદા, સચ્ચારિચ, અનુષમ વિદ્વતા આ ખધાય ગુણે ઉપરાંત, હુશ્યની સરલતા, વિતસ્રશાંતપ્રકૃતિ, ગુણાનુષ્ય ઇત્યાદિ તેચાનાં જીવનનો અંદિ-તીય વિશિશતા હતી

તે અવસર્થે સર્વ કોઈ શમ્યાવમના તેઓના પ્રત્યે પરિપૂર્ણ આકરણાવ હેતા. સાધુ-સાંખી સફાકાય ઉપરાંત, શાયક-શાવિકાસંઘના પણ અત્યવિક પૂન્યભાવ તેઓ પ્રત્યે વર્તતો રહીદે આ શધું તેઓના પ્રગઢ પુરુપપ્રકૃતિનાં પવિદ્યામરૂપ કહી શકાય, નજીકના કાલમાં નગાકુર શિલ્લા હોરસ્ટ્રીયેશના સાધુ સમુદાયમાં ને ગલીર હોઠ કેસા થયા હતો, તે આ અપકારે સોલાઈ જતાં પૂ. આવાર્થ શ્રી વિભ્યારેસ્ફ્રીયેશના પ્રત્યર તે કાઢે પૂન આન શ્રી વિજય પ્રલાસ્ટ્રીયણ વિક્રમાન હતા તેઓશ્રીનાં વરક હત્તે પૂન્ય શ્રીયદાન વિજયજીને વાસકપાદ-જ્યાંઆય પદથી શ્રીસર્થ વિક્રમિયા કર્યા

ગાંડ ગાંડેલા મંત્રોલેક, સંવર્ષેથું તેમજ વિદ્યોગ હોવા હતા શ્રી સંવર્ષ, શ્રમણ સમુ દાયતું ખંધારણ તે ગવસરે ગ્રાંતિશય અવસ્થિત હતું. સેંકડા સાધુંગાના નાયક પ્રચ્છપતિ તરીકે ક્ષમણ સંધમાં આચાર્ષ એક્ઝ હતા એક્ઝ આવાર્યની આતાતુસાર તેમાંશ્રીતી સમ્મતિ ગ્રેજન ગચ્છની સલાગીએ અપરસ્થાંગા તે કાળમાં નિયમિતપણે ચાલતી હતી. અચમાં અનેક સમર્થ વિદ્યાના, પ્રભાવદા, સંચમયત ત્યાંગી, ચારિત્રાર્યોલ સાધુ મહા-ત્યાંગો, ગ્રા પ્રધાય એક જ આવાર્યજીની ગર્યોદામાં શિસ્તપૂર્વક રહી તેઓશીની ગાફાને શિસ્તાવંદ કરતા

આ જ એક મહત્વનું કારણ, પૃત્ ઉષાધ્વાયછ શ્રી ચરોાવિજયછ, કેઠે મુધી આચાર્યપક પર પ્રતિપક્તિ ન શર્ધ શક્યા, એસા હોય એમ અનુમાન શર્ધ શકે છે

પૂર્ શાંશનપ્રભાવક ગાંઠ શ્રી હરિયક સ્વીધર, યું કલિકાલ સર્વન્ન આંગ શ્રી હૈમચંદ્ર સુર્વિધર આ બન્ને જેન શાસને પરમંપ્રભાવક મહાયુરુષોના યગલે પગલે ઉપા ધ્યાયછ થશે!વિજયછ મહોરાજે નિજની તેજવની પ્રતિજ્ઞાના વ્યસાધારથુ સામર્ચ્યર્થી સાહિ-ત્યના પ્રત્યેક ક્ષેત્રમાં વ્યવસ્થિત વખતાર સજ્વેર્ધ છે.

પ્રાચીન તથા નવ્ય-ચાય, વ્યાકરક્ષ, સાહિત્ય, ગ્લલ્કંકર, છંદ, કાવ્ય, તર્ક, વ્યાપ્ત, તથ, પ્રમાલ, યોગ, વ્યધ્યાત્મ, તત્ત્વનાન, ગ્યાચાર, ઉપદેશ, કથા, લહિત તથા સિંહાંત કિતાદિ અનેકાનેક વિયોપર સંપ્લેત, પાકૃત, તેમબ ગુરું રહ્યાયામાં વિશાલ પ્રમાલુમાં સાહિતાકૃતિ એમાનું સર્બન કરીને તેઓશીએ જૈનશાશનના છેલ્લા લગ્લાગ ૧૦૦ વર્ષમાં ખરેપર શક્તની કિતાલસ સબ્બે છે

ત્તેઓશીની સાહિત્યકૃતિઓમાં અભાય પાહિત્ય જેમ જલાઈ ગાંવે છે તેજ રીતે ન્હાનું ભાગક સ્ક્રેમ્પ્ટ શકે તેવી સરલ લેક્સ્લોગ્ય શૈક્ષી પણ સ્પષ્ટ દેખી શકાય છે, ફાનસાર, અધ્યાત્મસાર, અધ્યાત્મિપિવા જેવા ગ્રાસત્તે ફાયા તેઓગ્રાંગી હિંદ ફાસ્માન્ત્રમાં ભાઢુંજ પ્રચલિત વીતાનું તત્ત્વનાન, વ્યલિક દરિયે સાભગે શાસત્ર શૈકાનો ફોક્સનું પ્રમુશે એ એકજ 'ફાનસાર' તું એ ગ્રાચ્યન, મનન, પરિશીલન ગામે એકાગ્રચિતે કરવામાં આવે, આંજના સસ્ય માનવસ સામને એ ગ્રાચની લહે વરવામાં ગાવે, તેન વર્ત માનનો વિષમ વાતાવરસુમાં અનેકવિધ બિસ વાહિતાઓ, સમસ્યાઓ કે મૂં અચ્ચેનોને વાસ્તવકર્શી સચાડ ઉપાય આ 'ફાનસાર'ના પ્રઆપેલા તત્ત્વફાનમાં જ્વતને મહી શકે તેમ છે

જૈનકર્શનના સ્થાદમાકભાગિ, જૈનકિકંડોની તત્વવ્યવસ્થાને, તેનાં સર્જ સુધ વાકી શાષ્ત્રકાતને તેમારીએ પોતાની નવા-ચાયાની ભાષામાં જે રીતે સાહિત્યમાં ઉતાર્યું છે. તે પ્રવેષભ અમૃત છે તેઓશ્રીના એક એક ન્યાસગ્રંથતું હ્યારે ભ્યારે મનન, પરિશીલન કરમામાં આવે છે ત્યારે તેના સત્ત અભ્યાસી પ્રદાશીલભુહિયાન માનવને પણ વહિ-ઘઢિમાં તેમાના શ્રમની એક એક પરિતમાં નવું જ તંત્ર હાલવા મહે છે

શાળો અલ્પ, લાવગંભીર એ તેઓશીના ન્યાયમ થાની સ્વતંત્રશૈલી છે આ શૈલી આ શ્રી હિલ્લક્ષ્મુર્વિયલના મેચાના સતત પરિશીલનના ફ્લરૂપ તેઓશ્રીને સહજ ખતી હૈાય એમ કહી શકાય પૂ ઉપાધ્યાયણ અહારાજની હાર્યોનેક વિષયોના પ્રકાંઠ નિહાન હતા. તરાહીત જે જે કેમ-કેમતર કર્યોનામાં પ્રભર વિહાનો વિદ્યાના હતા, તે ખધાયમાં તેઓશ્રી સ્વાન અદિતીય વેખાઇ હતે.

તેઓશીની પ્રત્યેક કૃતિ, તે તે વિષયની Bearui Beal હતુષ્ટ કહીંએ તોયે સાથે તેવા 8 સામવાનાં સમુખ્યાય-એક્ષિતિયાસ[સંજાકુતની 'સ્થાફળક કરપવતા' નામની, ઉપાદ્ધાયછ મહારાએ રચેલી ટીકા, એક્સાઈનના પદાર્થીને નાગનાપાની શૈલીયે પ્રતિપાદન કરનાની જાદ-વૃત્તમ સાહિત્યકૃતિ છે. આ કૃતિમાં તેચોનું રન-પર દર્શનશાઓ વિષેતું અગાધ પંડિત્ય પંડિત્યે-પંડિતમાં વ્યક્ત થાય છે.

દર્શનશાસ્ત્રોના સમર્થ વિદાન તેઓશ્રી, હ્યારે આચાર, ઉપદેશ, લક્ષિત કે કોઇપણ વિષયપર સર્જન કરવા બેસે છે, ત્યારે તે તો વિષયના સર્વક્ષેત્રોને–સર્વજાગ-પ્રત્યોનો પરિપૂર્ણરીતે સ્પર્શીને તેન સર્જન કરે છે. ખરેખર તેઓશ્રીની આ સર્વતામુખી પ્રતિભા માટે આપણે તેઓશ્રીને કયા શબ્દામાં અંજલિ આપી શદીએ?

તેઓશ્રીના છવન તથા કવનવિષે આ ન્દ્રાના લેખમાં અન્ય કેટ-કેટલ વિવેચન કરી કાકાય !

આજે સેંક્ડા વર્ષો થવા છતાં, તેઓશ્રીના જેવુ અદ્ભુત વ્યક્તિત્વ, અસાધારણ વિદ્વત્તા, જૈનદર્શન પ્રત્યેની અનન્ય નિષ્દા, નેમજ જીવન પર્યાલ સાહિત્ય સેવા માટેના સગીરથ પુરુષાથ": તેઓશ્રીના નિવીણ માદ હુલ સુધી કાર્ક પણ વ્યક્તિમાં જવદદે જ आपवाने लेवा-आभावता भावते

આવા અગણિત ઉપકારાની અમીવર્ષા આપણા પર વરસાવી, સંસાર સમસ્તના સાંસ્કારિક સાહિત્યક્ષેત્રે મહાનકાળા નાંધાવી. ૫૫ વર્ષના સંયમીન બવતમાં આડ-આડલાે અવિરત પરિશ્રમ કરી, સાંભારભરમાં યશસ્વી નામના મકી. અમર થઈ જનાર સંયમી ધર મહાયના સમર્થ સાહિત્ય સ્વામી ઉપા-ધાયછ શ્રી થશાવિજ્યછ મહારાજને આપણાં અનંત વ'દન હા

परेवां गुष्पदीयेषु, द्वशिस्ते विवदाविनी । स्वगुणानुमवलोकाद्-दृष्टिः पीयुपवर्षिणी ॥

—પારકાના ગુજ-દેાય જોવા તે વિષદિષ્ટ છે. અને આત્મગ્રસાનભાવના प्रवासमाणी द्विय ते असत परसायनारी से

[परमात्मपंच ा

शिभद्व यशाविक यशा

शामी तपस्वी कियाचान्, सम्ययस्यानध्यपक्षांतिहीसः॥ प्राप्नोति तं नैव गुणं कदापि. समाहितातमा समते शमी ये ॥ —- મમાધિવાના, પ્રશાન્ત ચ્યક્ષમાં જે સુધોને ગ્રાપ્ત કરે છે તે ગ્રજેક સાતિ વિનાતા માણસ કલિય પ્રાપ્ત કરતા નથી; પછી તે માણસ ભલે ત્રાની, તપરની, કિયાયન કે સમ્યગ્રદસ્ટિનાના ઢાન : [वैराग्यकस्य०]

[श्रीमह यशाविकथशा

વાચક યશાવિજય

'વાણી વાચક જસ તણી, કાઈ નવે ન અધરી રે.' [લેખક:-પરમપુન્થ પં. મહારાજ શ્રીમાન લઇકરવિજયછ ગણિ]



પદા શ્રીપાળના સસ વર્ષમાં છે વાર નિયમિત શ્રવણ પ્રશ્નાર તથા વર્ષમાં છે. વાર નિવસિત શ્રીસિહ્યસ્ત્રકની એાળીના વિધિયત્ન તપ કરતાર ભાગ્યવાન શ્રદ્ધાળ આત્માના કર્યા કોટરમાં એવી રીતે ગંજરન કરી લાય છે કે. તેની અલગ્રણાટી અને સ્મૃતિ વર્ષના ૩૬૦ દિવસ-સાંથી એક પણ દિવસ ખસતી નથી. વાચક જસની વાણીમાં છોવે શ છે ? તેના ખલાસા વાસો વદે કરવા અશક્ય છે. તેના સાચા ખલાસા તો તેની વાળીના સતત સમાગમમાં રહેનાર માત્યાને અતરાત્માવઢે જ માપાસાય ધાય છે.

વાચક ચશાવિજય સમર્થ તાર્કિક છે. ગસાધારણ કવિ છે, પ્રખર પંદિત છે તેથી તેમની વાસીના સમાગમ સામાન્ય માસસ કેવી રીતે સાધી શકે ? એ પ્રક્ષના ઉત્તરમાંજ ઉપાધ્યાય ચરાવિજયજી મહારાજન ગઢિતીય વ્યક્તિત છપાયેલ છે શ્રી જૈનશાસન - અથવા શ્રીવીરશાસનરૂપી ગગનાંગલમાં અહિતીય તેજસ્વી તારલાણા ભાજ સુધી અનેકાનેક થયેલા છે, અને તેમના અફિલીય ત્રાત પ્રકાશ આજ પર્યંત અનેકાનેક ભુગાતમાંઓનાં અજ્ઞાનતિમિરને લેડી રહ્યો છે, એ વાલ અતિસુપ્રસિદ્ધ છે છતાં તેમાં પણ કેકલા એ અહિલીય તેજસ્વી લારદા '**ઓહરિસહ**' અને 'શ્રી**હેમચંદ્ર'** ના ઉપકાર મની પણ ત બલાય તેવા છે. તે અન્તે મહર્ષિ ચાત તેવ ઝીલ્યા વિના જ કાઈ ઝાની છત્યા દેશવાના દાવા તેમના સમય પછી કરી શકે. એવા એક પણ પહિત જૈતશાસનમા કાર્યા કારત તેમ નથી વાસક ક્ષ્માસ્વાતિના 'તત્ત્વાર્થાધિગમ ' કે સિન્દસેન દિવા કરુરારિના 'ત્યાયાવતાર' ભરવા વિના પૌડેલ થયાના દાખલા હત્વ મળી શકે પરન્ત શ્રીહરિલટસરિન 'શાસ્ત્રવાર્તા' કે શ્રીહેમચંદ્રસરિન 'ચાેગશાસ ' લગ્યાવિના कैनशासनन पांडित्य प्राप्त वयाना दाणवा तेयनी प्रणीना समयमा सार्थेक मणे विशाण અને વ્યાપક ગન્ચરચનાઓનાં કારણે ભગવાન શ્રી હરિભદ્રસ્તિ કે કલિકાલસર્વજ્ઞ શ્રી હેમસંડસરિત સ્થાન જૈનશાનનમાં અદિવીય છે. હરિભદ્રસરિજીની ગંધરગનાએ: પ્રોદ છતાં માતાની જેમ ફૂદયદાવક છે. હેમચંદ્રસૃરિજીની રચના સરળ છતા સુમુક્ષઓને પિતાની જેમ માર્ગેક્ટર્લ'ક છે. વાચક ચ**રોાવિજયા** છતી કૃતિઓ પ્રોટ છે, સરળ છે, માર્ગ-કર્યાંક છે અને હ્રુંક્સાવક પણ છે

યાગક યશે.(વિજયમાં હરિક્ષદાચાર્યા જેવી મધ્યસ્ય છુદિ અને પરીક્ષક શક્તિ તથા હેમ્પાં કેમ્પાં જેવી સ-માર્ગદેશક અને સ-માર્ગદેશક કૃતિ તથી આવે છે. તદ્વપાંત પૂર્વના મહોન આવાર્યોનો જેમ શુરુલકિત તીર્યજ્ઞકિત, સંસ્થાદિત, શાસનપ્રેમ, ધર્મપ્રેમ સંસાસ્ત્રુકપાસ, સંદેશનક, નસતા, લઘુલા, સરસતા, કહ્યા હાદરતા, ધીરતા, ગંભીશતા, પરાપાસરસિંદના નિયાહિ અપણિત શુધુન જણાઈ આવે છે. અને એ બધા અપૂર્ય શુદ્ધાના કારણે તેમની કૃતિએશ. એક નાનું બાળક પણ સમજ શકે એટલી હઠ કુપીની સરજ અને એક પ્રોદના પણ ન સમજ શકે. એટલી હઠ કુપીની મહીર મળી શકે છે.

હિસ્વિદ્ધિરિ મહારાને પ્રોક્ષમાં પ્રોક લાવામાં વચા હેમચંદ્રેસ્ટ્રિટ મહારાને સરળમાં સરળ લાયામાં વહું યે લખ્યું છે. પરંતુ તે માત્ર બે જ લાયામાં હોક સંસ્કૃત, અને બીજી પ્રાકૃત. અને બીજી પ્રાકૃત. અમે બીજી પ્રાકૃત. અમે બીજી પ્રાકૃત. અમે હો હોની તે વાત પણ જાયું રીતીએ, તવીન રીકીચી, વિદ્વસ્થાદ્ધ અને ભાદકાશદ બહે પ્રકારે એની સંચોદ દિનિએ આદેખી છે એટલ જ નહિ ૧૦૦૧ વીપાતાના સમ્પતની સ્રાકૃક્ષોએએ પ્રભામાં, સંપ્કૃત, પાધૃન, આગપી, જાલ્લા, ત્રુપે કે સ્થયું એક પણ લાવા તેમણે એનાર્સ સાંદેખત, પાધૃન, આગપી, જાલ્લા, ત્રુપે કે સ્થયું એક પણ લાવા તેમણે એનાર્સ સાંદેખતા માટે જતી દરને તથી, એ એક લાવા પ્રદેશિવજયની વિદેશના છે.

બીઇ વિશેષતા એ છે કે તેમની ફૃતિમાં શ્રી હરિયદ, આવે છે, શ્રી હેમચાં કે પણ આવે છે. શ્રી તેમહાં કે પણ આવે છે. શ્રીતાંભર વાચાક ઉમાસ્વાતાના પણ આવે છે અને દિવાં જર આવાર્ય કેન્દ્ર કેન્દ્ર પણ આવે છે. આગમ પણ આવે છે અને દિવાં જર આવાર્ય કેન્દ્ર કેન્દ્ર પણ આવે છે. આગમ પણ આવે છે અને પ્રકરણ પણ આવે છે, તકેમાં કેદ્રિત "સ્વરુખીત તાર્ક" અને પ્રકારમાં કેદિતાં મારે કેમ્મુખપદ્યત્તિ તો ઉપાયાયજીમહોશના પ્રયમ્નો પ્રિય વિષયો છે. આ વીતે ભાને નાય અપી શરે એની જસાધારણ શ્રીકત ઉપાયાયજીમાં શ્રી વીતે આવી? તેની હતાર પેવાના અનો હતા 'ગુરુતત્ત્વવિનિશ્ચર' નામના એક અન્ધરત્તમાં તેઓ શ્રી કંપાયો છે

તેએાશ્રી કહે છે કે.-

'अम्हासिता वि हुस्सा, पैतीए पंडिआण पविसंति अर्ण गुरुमतीए किं. विकसित्रमञ्जूजं इसो ॥ [उरुस्कोधिनकार १-५]

'અમારા જેવા મુર્ખ પણ આજે ગ્રન્થકારની પંક્રિયમાં પ્રવેશ કરે છે, એનાથી આધિક ગુરુબાદિનો પ્રભાવ બીજો કરી હોઈ શકે!'

સદસ્વતીના પ્રભાદ પણ તમને પ્રાપ્ત ધ્યો છે અને એ પ્રસાદ વડે તેમની કૃતિઓમાં કાવ્ય

ચાતુર્ય અને તર્કનેપુગ્ય આવ્યુ છે, એમ તેઓ પોતે પણ ક્યુલ કાપે છે છતાં સસ્સ્વતી તેમને જ આટલી હંદ શુધી પ્રસન્ન ચવામાં ક્રાંડિ કારણ હોવું જ એકએ અને તે તેમની અદિતીય સુરુલિત અને અદિતીય નામકૃત્તિ સિચાય ગીસુ શુ છે? નાનામાં નાની ત્રણ કંકીની કૃતિમાં પણ પોતાના સુરુને એએ સુલતા નશી, અને ઉદ્ધાર્મ ઉદ્દર ચારિત્ર પ્રાળવ છતાં એએ! પોતાને 'શન્દ્રિયાશિક'થી અધિક ગાતતા નથી, તેવા સર્વોત્રુષ્ટ પાત્રને જ તેવી સસ્સ્વતી વર આપણા તૈયાર શાલ તેવા કરીજી ત્યાર નથી નથી.

> सस्मादशां प्रमादशस्तानां चरण-सरण हीनानाम् । सम्बो पोन इथ-प्रवचनरागः तरणोपायाः। प्रमाहमस्त जने अस्तु-अस्त्रीर्थं शुन्द, जेवा सामारा केवा भारे शिक्तिकारमन्त्री स्वतुत्र से क काक्ष्या वादती केन्न

तरवाने। छपात्र छे, स्यायाखोकी

[શીમદ્દ વંશાવિજયછ

किं बहुणा इह जह राग-दोसा छद्वं विक्रिजीति। सह तह पर्याद्विजन्ते एसा आणा जिलितायं॥

વધારે અમે શું કહીએ, આ જન્યમાં રામ-દ્રેષ જેમ જેમ પતળા પહે તેવી તેવી પ્રવૃત્તિ કરવી એવી આતા જિતેયરાની છે.

उपदेश रहस्य]

[શ્રીમદ્ યશાવિજયજ

भ्येतानी बधुता शतानतां जेड भऱ्याजे देखेशी हरवारे छे ५— सस्तारकां प्रमादग्रस्तामां चरणकरणहीयानास्, अन्त्री पोत इव अवचनराय पन तरणोपाय ॥ १॥

પ્રમાદગ્રસ્ત અને ગરણ-કરણ શેત્મ, એવા અગારા જેવા માટે ગા કરિકાલયા શેજિનપ્રવચનો જાહામ એજ સપુદમાં નાવની જેમ હરવાના ઉપાય છે.

પૂજ્ય ઉપાધ્યાયજમહારાજ–

શ્રીયશાવિજયજ મહારાજના ગ્રન્થોનું અધ્યયન

[તે, પરમપૂત્રય ૫°, શ્રી કુર'ક્ષ્યવિજવજી મહારાજ] (એક દુર્ધિખન્દ)

(એક દર્શિબન્દ્ર) વિચિત્રન પ્રભાવશા

િનિધ્યન્ત પ્રશાવશાહિ-તિકાશાળાધિત શ્રી હૈન શાસનમા શાઓના ખાનનો મેટલા વિષ્ઠુલ અને બદુસૂલ્ય છે કે વર્લમાતમાં ઉપલબ્ધ સર્વ શન્યોલું સાચોપાંગ અધ્યયત તો દૂર રહે પણ તેનું વર્લ્ફિંગ્રહશ્યન-ચર્ચાલ દરેક શન્યની વાનગીમાત્ર ગાળવા માટે એક સિંદગી-સંપૂર્લ આયુષ્યવાળી શ્રોણી પઠે

कैन हर्शनतां सर्व सादित्यतु कतेत्र प्रश्नारे वर्गीहरण् इसी शहाय छे. तैमां तीये प्रभाखे तेत्र वर्गीहरण् हरीने विचारीको तो क्ष्ययनती व्यपेक्षाको ते सञ्चायित क्ष्यां।

- ૧ આગમ સાહિત્ય
- ર. આગમાનસારિ સાહિત્ય
 - 3 તકે સાહિત્ય ૪ કેશ સાહિત્ય
 - પ પ્રક્રીવર્ષ સાહિત્ય

ઉપર પાંચ વિભાગમાં વહેંચાએલ જેન સાહિત્યના દરેક વિભાગ એટલા વિશાળ છે છે કે તેના પારુ પાસી ક્રમ્કાથ તહિ.

ઉપાધ્યાયજના મન્યમાંથી મળતા નવા જ સાનપ્રકાશ

એ જૈન સાહિત્યમાં યું ઉપા શ્રી ચરોપવિજયાછ મહોરાજ વિરચિત ત્રન્યા અમન્ ત્યનું સ્થાન ધરાવે છે તેમના કેટલાક અન્યામાં એવું સામર્ચ્ય છે કે એ વાંચવાથી ઘણી જટતા કૂર થયા સાથે કાર્કનવા ગ્રાનાગકાશ મળતો હોય એવું પ્રતિયદ ભાન શાય છે.

પૂત્ર ઉપાધ્યાયછ મહારાજનું સાહિત્ય અનેક ગ્રુખ પ્રસર્વું છે જે જે વિષયમાં તેએશ્રીએ કલમ ચલાવી છે તે દરેક વિષય એવા તો તલસ્પર્શી રીને અચેર્ય છે કે વાચકને તેથી પૂર્વ સતીય પ્રાપ્ત શાધ

વર્તમાનમાં એ ઉપરાંત તેમની કૃતિએા ઉપલબ્ધ છે.—તેમાથી કેટલીક કૃતિએા

અતેડ અને અક્ષૂતપૂર્વસમાન છે. ન્યાયશાસ અને તે શાસ્ત્રે અપનાવેહી શૈલીમાં આકેખેલ તેમહું લખાશુ ખૂબ જ મહત્વનું છે.

ન્યાય દર્શનમાં ગંગેશ ઉપાધ્યાય પછી નવ્ય-ચાયતી પ્રશ્નાલિકોનો આરંભ થયો મને તેનો વિકાસ પુન્ન હયાં ધ્યાયાલળ સહારાજના સગલમાં પૂર્ણ ટેમ્લે પહોંચો હતો એમ કહી શક્ય, રસુનાથ ચિરામણિ, ગદાયર, જગ્નદીશ વગેરના નવ્યન્યાલના અન્યો સફમ તંદ્ર પર પત્ય હવા હતા તેન દર્શનમાં એ દેલીથી વિચોતું પ્રતિપાદન પૂત્ય ઉપાધાલળ અંહોગાં એ કું ને કું એટલ જ નહિ પણ એવું કહું કે કર્યોપણ આપણ કે કચાલ રાખી નહિં 'અક્ષ્યસંત્રી' શાસવાવાં પ્રયુ વ્યવનો કન્યાલા દીકા' 'અનેકાન્ત અવલ્યા' 'ત્યોપારેશ-ન્યાયાલન વર્ષ પ્રિણી' 'વાકમાલા' ન્યાયપર્પ પ્રાપાલ' 'સોમાલું વર્ષ સંત્રી કર્યો હતા નવ્યત્યાપથી ઉપયું તેમાં પ્રયુ તેમાં પ્રત્યો પાક સંત્રી કર્યાલા કપાય વર્ષ સ્ત્રી કર્યાલા કપાય કે એને એવા ઉપયોગ કર્યાલા કર્ય

શ્ર્મધ્યાત્મમત પરીક્ષા, સ્થાધ્યાત્મિક-ગતકાત, પ્રતિમાશતક, શ્રેમપરીક્ષા, સુરુ તત્ત્વ વિતિશ્રેષ, ૧૨૫ ભાશ સ્થાદિ સ્તવનો, તેમની પરધત ખેરન કરવાની શક્તિનો પૂર્ણ પશ્ચિપ કરાવે છે તે સાથે ગ્રાંત્રબિન્દુ, વગેરેમાં તેમની સમન્વયશક્તિનો પરિચય પ્રશે છે

સમન્વય શક્તિ

સ્યાહાદ કદયલતામાં એ સખન્યય શક્તિ કમનીય રીવે પીલી છે અપ્ટસક્રેસી એ કિંગ-ખર મન્ય ઉપર આઠ હતાર બ્લોક પ્રમાણ અપ્ટસક્રેસી રચીને સમસિહાન્વમાં ક્યારે રેપ કેપલાની વિત્ત તેમની હતિ એરલ લન્યાર્થ છે. અને તે પણ સમન્ય્ય શક્તિને એક પ્રકારને આદર્શ પૂરા પાઠ છે લક્ષ્યાં કર્કેશ સતિ ચલાવવા છતાં તેમાં સાહિત્યની સુક મારતા રમાણીય હતી વૈદ્દાચ્ય સાથે સાહિત્યનો સરુઅન્ય એક હવાની તેમની શક્તિ વૈદ્દાચ્ય સાથે સર્પલતા, અધ્યાત્મસાર વચેરમાં સુન્દર એવાય છે સ્થાનસાર અહિ સન્યાસ્યાં પ્રધ્યાત્મ રસ્ત્ર સ્ટમ્પો તીવરે છે

સર્વિપૂતની સિદિ સાટે તો તેમનાં હામાણામાં વાયતઘર કર્યો છે. એમનાં એ લખાણા વાંચવા સાત્ર પણ વાંચી જનારના હૃદયમાં નો સૂર્વિપૂતાની સત્યતા ન જન્મે તો જાણાં કે તે ચેતન નથી સ્તવનો, સ્તુતિઓ, સ્તોત્રો વચેરે એકએકથી ચડીવાતા રચીને તેમણે લાક્તિયોગનું સાહિત્ય પણ ભરપૂર પૂર્વે પાઠશું છે.

તેઓ જેવું લવ લખી શકતા હતા તેવું જ કે તેથી પણ વિશેષ મુન્દર રીતે પઘ લખી શકતા હતા ગુજરાતી, પ્રાકૃત, સંરકૃત એ ત્રણ લાયા ઉપરોગ તેમના કાળ્ પૂરા હતા. બનારસીદાસને ઉત્તર આપતાં તેમણે ત્રજભાવામાં પણ કલમ ચલાવી છે. પદામાં ધ્યણે ધ્યણે સબસ્થાની જાળાની ગલક આવે છે તે તેમના સમયને અને ને પ્રદેશના વિહાયને આભારી છે, તેમનાં વચ્ચો ટેકશાળી છે. તેઓણીના પ્રત્યોહ, અધ્યવન થેલું હદે

વેરતા શ્ર-માનું ત્યારિયલ શ્રાંચાયન થવુ આવરપાક છે. તેરાના પ્રત્યેની બદિન અને તેપને આપેલા આ ત્રાન ખાનાનાનું ત્રણ તેમના ગ્રાનુત્યુલાદ કરવા માત્રમાં ઇનિઝી. થતું તથી. ક્યારુનાલ તો થયા ભાગાનાનું ત્રણ તેરારે પણ તેરાના પછી અંદો અહીંના વર્ષોને ત્રાણો શ્રેત પણ કે તેમાં ત્યારે તે ત્યારે પણ તેરા પણ તે ત્યારે પણ તેરા પણ તે ત્યારે તે શ્રન્યો પણ તેરા ત્યારે તે શ્રન્યો પણ તેરા ત્યારે તે શ્રન્યો પણ તેરા ત્યારે તે પણ બ્રાયુલ્લ શ્રામ તે પણ બ્રાયુલ્લ પણ પણ તેર તે પણ બ્રાયુલ્લ પણ પણ તેરા તેરા તે પણ બ્રાયુલ્લ પણ પણ પણ પણ ત્યારે તે તે વિષયના શ્રન્યને નાશ-વિશાફ કેશ્ય કે અને તે ગીતે તેરાના પ્રત્યેની બ્રાફન અપ્રદા કરે.

鳞

warman was it

इंडिका श्रमी ध्यानात्, श्रमीत्यं यधाश्तुते ! सथा ध्यायन् गरमाध्यानं, गरमाध्यत्यान्त्रपात् ॥

ભાર્થ—પંચાગ લગારીનું ધ્યાન કરતાં કરતાં લાગરી રવદય જાની જાય છે તે પ્રમાણે પરમારામાનું સતન ધ્યાન કરતો ગાતમા પરગારુષ સ્વદય ભની હતા હૈ.

परमाध्यपम्पः

[શ્રીમદ્ ચરાવિજયજ

ઉપાધ્યાયજ શ્રીમદ્ યશાવિજયજી મહારાજ અને તેમની શાસનસેવા

Lympings and a semicenson of the continuous of t

[क्षेपकः-परमपूक्त भुनिवर श्री करवृविकथ्छ महासक]

ઉપાધ્યાયછ એટલે કૃત્રિકાપથુ

Transmit A

તશાસનરૂપી મહાસામરમાં જે અત્વત તેજરની નરસતો પ્રમટ થયાં છે તેમાં પુન્યપાદ વાચકવર્ષ અભવાત શ્રી ઘર્શાવિજયછ મહારાજનું સ્થાન ઘણા ઉચા કરન્યલમાં ભાવે છે તે કે જ્યાંતે આજ સુધી ઘણા સમાજે વિકાનો ત્વા છે, પર તુ ઉપાધ્યાવછ જેવા મહાપુરુપો તો તેમાંથી વિરસ જ મળી આપ્યો કોઇ વિકાનોનાં સાહિત્ય વિકાનોને જ અધિકારો ઉપયોગી હોય છે, જ્યારે કોઇક સાહિત્ય

સામાન્ય જનતાને જ જાણિકારી જયોગી દ્વેષ છે. પરંતુ જા મહાપુરુવની વિશિક્ષ એ કે દેમનું સાહિત્ય સર્વાવિષ્યભ્યાપક જાને સર્વજનોષ્પીથી છે તેમનું ફાન સર્વ- વિષયોમાં અગાધ હતું જાને તેમણે એટકા લખા વિષયો ઉપય સાહિત્ય સર્વાવિષ્યભ્યાપક જાને સર્વજનોષ્પીથી છે તેમનું ફાન સર્વ- વિષયોમાં અગાધ હતું જાને તેમણે એટકા લખા વિષયો ઉપય સાધા હતા તેમ જ તેમને દુવાલા જાણા જેટકે દારી—મુખ્યાળી સરસ્વાદિવીર્ય વર્ષવાલા હતા તેમ જ કહેલું વધારે હવિત માણાય તેમને ભૂતકાલાના મુન્દિકોપાસુની ઉપમા જાવી દામાંય. જેમ કહેલું વધારે હવિત માણાય તેમને ભૂતકાલાના મુન્દિકોપાસુની ઉપમા જાવી દામાંય. જેમ કેલાબિટિલ કૃતિકપણમાં જે વસ્તુ માગાયાઓ આવે તે લખી વસ્તુ મળી શકે તેમ આ મહાપુરુવના સર્વ- તેમાંથી પણ આપણને કરેક પ્રાકારનું સાહિત્ય મળી શકે છે. જેમાં મેકાપુરુવના સર્વ- તેમાંથી પણ આપણને કરેક પ્રકારનું સાહિત્ય મળી શકે છે. જેમાં મેકાપુરુવના સાચામાં પ્રતાની ન શ્રી ઉપર દીસ્તા, જાલક વચેર સ્વતંત્ર પ્રકાશ, અને કાંત અને તમ વિશ્વના અને કન્યાયત્રી, સુવતાતી તથા હિંદી જ્ઞાયામાં સ્તાનને, સસ્તારી, રામાંઓ વચેરે વચેરે વધુ સાહિત્ય તમેણે રુપ્યું છે, કે જે ખામ વિશિક પ્રકાશ પાલાનું અને વાંતા દ્વાના સામાં સ્તાનને વિકાશના સ્તારક નવ્યા રિવાય સ્તાર્ય કરવા રિવાય વસે વચેર હતી.

દાર્શનિક વિષયોના પાસ્કટા

દાર્શનિક વિષયના તા તેઓ પાસ્ક્રમ્ટા જ હતા. તેથી તે વિષય ઉપર જ્યારે તેઓ

હખવા ગેસે છે ત્યારે તેમની તે વિષયમાં મારંગતતા અને સર્વેતન્ત્ર-સ્વતન્ત્રતા અપૂર્વ રીતે આદી ઉઠે છે તેમણે કરેશાં રાદ્દસતામ દર્શનિક નિલ્પેણામા ન્યાયતા પ્રકાંઠ વિદ્વાનોના પણ ઘણીવાર ચંગુપ્રવેશ પણ રૂપ્ત પામતો તથી આશ્ચર્યની વાત તો એ છે ટે કાશી જેવી સરસ્વતીની નવરીમાં પણ તેમણે માત્ર ત્રણ જ વર્ષ સુધી અલ્પાસ કરીને પણ પરવાદિઓની પર્વદામાં વિજય શેષ્યાઓ અને ત્રણ જ વર્ષ સુધી અલ્પાસ કરીને પદેશે તેમના જ્ઞાનથી અત્યંત સુખ્ય અકેને તેમને ન્યાયવિદ્યાદ્વર્ત્યું બિલ્સ્ટ આપ્યું એ ક ઈ ઓપડું શાહ્યું ગણાય નહીં નબ્ય-પાયને જૈત-પાયમાં ઉત્તારમાં લખભા અશક્ય કાર્ય તે તેમણે જ શક્ય બનાવ્યું અને એ કાર્ય એક્સે હોયે પાર પાઠીને જૈતકર્યનશાસના ઇતિહાસમાં તેમણે અમર સ્થાન પ્રાપ્ત કરી હીયું છે

નવીન પદ્ધતિથી પ્રકાશન-અધ્યયનની જરૂર

ત્તવાત્માયના અને ઉપાધ્યાયછ મહારાજે રહેલા ન્યાયના શ્રાંથેના અભ્યાસીઓને માં સ્થળે મારી એક સુચના છે કે હેમણાં નવ્યન્યાયના બ્લાપ્તિપગ્રક, સિંહેલ્યાવ્રલક્ષણ, સિદ્ધાન્તલક્ષણ વગેરે લગેરે જે પ્રકરણોનું વ્યધ્યયન કરવામાં આવે છે તે ખાસ કરીને ગંગેશ-ઉપાધ્યાપ્રવિસ્થિત તત્ત્વચિંતાસણિ શ્રયના ગનુમાન ખંડના જ ભાગા છે. કારી થતે ક્લકતા આદિની વિદ્યાર્થીઠાએ આ જ ભાગોને પસેક્ષામાં નિર્ધારિત કરેલા <u>કે</u>લાથી प्राक्षण विद्यार्थीकी कोनुं क कांक्यन हुई के कन पही कांचापन पश कोनुं क हरावे છે આ લાગોમાં બરેલી ગયચ્છેરકાવચ્છિકામય જડિલ ચર્ચાઓ લલે બુહિને સુદ્દમ અનાવતી હોય પણ તેમાં પદાધ⁹નિરૂપણ નહીં વત છે એટલે તેના ઉપાધ્યાયછ મહારાજના ગ્રંથામાં સીધા ઉપયોગ ભાગ્યે જ સાથ છે ઉપાધ્યાય**છ મહારાજના ન્યાય**વિષયક ગ્ર**યાનું** વિશાદ જ્ઞાન સરલતાથી પ્રાપ્ત કરવું ક્રિય તો તેમણે જે જે સાહિત્યને નજરમાં રાખીને પાતાનું ન્યાયવિષયક સાહિત્ય સવ્લું છે તે સાહિત્યને આપણે શાધી કાઢીને સન્સુખ રાખલ તેઈએ, તત્ત્વચિતાપ્રશિના અલુસાનખડ સિવાય બીજા અંદામાં પદાર્થનિરૂપથ્ અધિક છે. રાયલ એસિઆટીક સેરસાયટી, લંગાળ (કલકત્તા) તરફથી એ ખંડા ઘણા સમય પૂર્વ પ્રકાશિત વધેલા છે. પરિશ્રય કરીને પણ એ ખંડા મેળવવા ઓર્ડ એ, વળી અત્યારે ને ભાદારી, ભાગદીશી, ગાદાધરી વ્યાદ ટીકાગ્રન્થા પ્રચલિત છે તેના ઉપાધ્યાયછ મહારાજે ખાસ ઉપયોગ કર્યો હાય તેમ જણાત નથી પરંત દીધિતિકાર રક્ષનાથશિરોમણિ તથા પદ્મનાક્ષમિત્ર વગેરેના ગંધાના ઉપયોગ કરેલા જોવામાં આવે છે. એ બધા મુદ્દિત-અમુદ્રિત ગંધા મિશિલા ગને જનારસ ચાલના પ્રદેશમાં મળવાના ખાસ જ સંભવ 🛭 એ જર્મા સામગ્રો મેળવીને ઉપાંચાયજી મહાસબવા ગંધાનું નવીન પદ્ધતિથી પ્રકાશન અને અધ્યયન કરવામાં આવશે તો તે વિશદ અને દિલ્ય અનશે. તેમ જ એ મહાયુરુય નવ્યન્યાયની શૈલીને જૈનન્યાયમાં ઉતારવા કેવી સેતે સમર્થ થયા તેની પણ સારી રીતે કલ્પના આવશે. અને ગ્રાપણે પણ એ પ્રવૃત્તિને સૌલિક સ્વરૂપમાં કેવી રીતે વિકસાવી શકીએ એની પણ સ્પષ્ટ દિશા હાથમાં આવશે

જરિલ પ્રમોના કરેલા ઉકેલા

તર્ધ પ્રાપ્તના અધ્યયનથી સફમતમ થયેલી છુહિના ઉપયોભ તેમણે માત્ર હાર્શનિક વિષયમાં તહિ પણ લગલત્ર હરેક વિષયમાં કરેલો છે. તેથી ભ્લારે તેઓ આગમિક વિષય ઉપર લખના એસે છે ત્યારે પણ તેમની પ્રતિભા અહીં કેટ સ્વરૂપમાં અબકી છે. છે એસ પહિલું સે સ્ટેડ વર્ષોથી નહીં ઉદેહાયેલા અનેક બરિલ પ્રશ્નોના ઉદેલ અને સામાયત તેમણે સે કરે છે છું આગમિક સાહિત્ય તેમને બ્લિકો જ રમતું હતું તેમણે કરેલી સ્થાઓ એટલી લખી તલસ્પર્શી અને સુધિત તથા ઉપયત્તિથી પરિપૂર્ણ છે કે વાંચનાત્રનાં વર્ષો ભૂતા પ્રસ્તે અને સ્ટેડોએ સફ્યાયાયાં ફર થઇ તથા છે સમ્મવ્યવ્યક્રી ઉપર સીધી સાઢી હોફા સ્થીતે તે વિષયમાં પણ પીમાની પારપામિતા તેમણે હિલ્લ કરી આપી છે

लेवा ज्ञानी तेवा क क्रियावाडी

થમાં મહાપુરુવની બીજી પણ એક વિશિક્ષ્ટતા એ છે કે જગતમાં વિદ્યાન ત્રણાતા કેટલાક, શુષ્કપાંતિત્વના કેપાસક પ્રહા તથા આવરણથી શાન્ય હોય છે. પરંતુ આ મહાપુરુપ સમારે વિદ્યાન હોતા હતા પણ પહાન વાત્યનાની હતા દર્શન, દ્વાન તથા વ્યક્તિ આપોત્તે તેઓ શશું મહત્વ આપતા હતા સમ્મગ્દર્શન સુવિતનો પાયે હેવાથી તેને કૈપર તેઓ શર્ણ જ લાર મુક્તા હતા આશી જ તેમના સુખ્યત્વે આદિ સ્થામાં વેશેલો સ્તવનો-ન્યુતિ—લજાય—નાસાઓ વગેરેમા લહિત:સત્તવા વેશ-મરસ બહીલક લશેશ દેખાય છે.

यागभागीना आध विवेषह

ઋષ્યાત્મકશામાં તેઓ કેટલા લધા નિમળ હતા, રહ્યાં તેમણે તે વિષયના અતેક મેરા રચ્યા છે, તે ઉપરથી સ્પષ્ટ જ્ણાઈ આવે છે યું હરિલાક્ષ્યરિ સહાયએ વર્ણપેક્ષા માત્ર માર્ગના તેઓ આદ વિનેચકે છે.

મૂર્તિપૂજા ઉપરના રંગ

ઉપરાંત, મૃતિમાશતક તથા સીમ'શસ્ત્વામાંને વિતિરૂપ સ્તવનોથી મૂર્તિપૂજ ઉપર તેમના કેવા દઢ રંગ હતા, ગે પણ જણાઇ આવે છે.

નયચક જેવા મહાત્ર-થતા કરેલ ઉદ્ઘાર

હૈં પાંધાયછ મહારાજની ત્રાનસહિત કેટલી અપૂર્વ હતી તેવા ઉદાહરણ રેપે सવવજ્ઞની તેમણે કેવી ંીતે રણા કરી એ હકીકત અલુના થેવી છે તે પહેલાં નચચકેનો ચોઠા પરિચય કરી લઈએ કલિકાલસર્જન શી ફેમ્પલ કરીર પહેરાવરે 'ન્યુનાસ્ટ્રનારિંત તાર્જિકા' કહી જેમને કેપ્ક તાર્કિક વર્ણ બ્લા છે જેમે એ સલવા વિક્રમની પાંચમી પાંચમાં બેલા છે તે આચાર્ય સાચાન શી સદલવાદિ સમાસ્રમણે સવલજ્ઞ નામના મહોત તરે ક્રયમી રચના કરી હતી રચના ચાકમાં જેમ લાર આત હેય છે અને તે આરાઓ ચાકની તાલિમાં રહેલા હેલ છે તે પ્રમાણે આ ગ્રંથમાં પણ હત્ય સત્રાલાલાં ૧૨ પ્રકરણે છે આ આર અરામાં હમલમ લધા જ તકાલીન પ્રશિદ્ધ દર્શનોની સપીક્ષા કરવામાં અની છે અને એકાંતવાડી બધા જ દર્શનો ખાટાં છે એમ સિદ્ધ કરીને તેરમા સ્વાદાવતુન્ય નામના પ્રક્રવ્યુમાં સ્વાદાવર્યુમી નાલિનો ચાકલ લેવામા આવે તો બધાં દર્શનો અપેક્ષાએ જ શતઃ સાર્યા બની શકે એમ બતાબ્યું છે આ આખાંચ ધતુ મૂળ, પ્રાચીન એક ગાંધા જ છે કે જે નીચે સુજબ છે

> विधिनियमसङ्गृत्रचित्र्यतिरिक्तत्वाद्दर्ग्यकनचीत्रत् । जैनादन्यच्छसनगर्नुतं सक्तीति वैधर्म्यम् ॥ [तथयक्ष ५.६ व्याः सः]

ગ્રા એક જ ગાલા ઉપર અદિવાદીજીએ વિસ્તૃત લાખ્ય સ્થેલું છે અને તે નવલકાનો નામથી એાળખાય છે આ નવચકના પ્રારક્ષમાં તેમણે સ્થેલા મંચલશ્લાક નીચે સુજબ છે.

> च्याचेषस्थयनन्तमन्त्रदिषि न्यस्ते विद्यां पाटवे । व्याबोहे न, जनज्ञतानिकृतिकवत्यावद्यिरास्थदम् ॥ बाषां वागमग्रीत्य वाश्वितिवर्षः सम्यं न गम्यं वनिष-ज्जैनं ज्ञाकनमृत्रितं जयति तट् इल्यावैदर्यायतः ॥

श्या नम्प्रके श्रेष छण्ड (स्थवन चिक्रमता सातमा ग्रातमा श्रवेसा) व्यावार्यश्री सिक्ष्म्लिम्बिवाहिक्ष्माक्षमञ्जल अक्षणके व्यावात्वासुस्तात्वेता तामनी व्यतिविस्तृत क्षाच्या हमेत्री छे है लेलुं अंधान हमका १८००० नैतान्त्रमास्त्र वाय छे मृत्यवक्रवात तरीहे पक्ष संस्थताः व्या वृत्तिना क देखेल श्रो होते.

હું પૈંત્ર ભળવાન મહતવાડી ક્ષમાક્ષ્મણે રચેશા નાયવાક્ષ્મણનો આવે ક્યાંય પત્તો નથી ક્ષેતિક્ષિત્રિક દલે એ તેતાં એમ લાગે છે કે છેલ્લાં સાતસા વર્ષમાં આ મુલાયંય ક્ષેપ્રીએ કેત્રીસ ક્ષેત્ર એમ લાગે તે કે છેલ્લાં સાતસા વર્ષમાં આ મુલાયંય ક્ષેપ્રીએ કેશે અને પ્રાપ્ત એમ લાગે તે પણ લેખોને હોય ઉત્તરોત્તર સમાસા કર્યાલ અપ્રાંતિ અપ્રાંત્રિક સાત્રા કર્યાલ કર્યાત કર્યાલ ક

ઉપાધ્યાયજએ ઋત્યાન્તે મુકેલી યુષ્યિકા

महारकश्री होरिविजयस्रीसरिक्षपमहोषाध्यायश्रीकल्याणविजयगणिशिष्पपश्लितश्री-स्नानविजयगणिक्षिपपण्डितश्रोजीतविजयगणिसतीर्थ्यपण्डितश्रीनयविजयगणिशुक्रम्यो नगः ।

मणिधाय परं रूपं राज्ये श्री विजयदेवधरीणाम् । नयचकस्यादश्ची त्रायो विरत्यस्य वितनोषि ॥ ऐ तयः ११ भने भन्य भागभा नीच भूभावे हत्योग रूपे देते ...

पूर्व पं, यञ्जीविजयमाणिना जीवचने वाचिवस् । आद्योंज्यं एचितो राज्ये शीचिजयबेनस्त्रीणाम् । सम्भूयं परमीवामिन्यानानि वक्तरवाणि ॥ १ ॥ विवृद्धाः श्रीनयविज्ञया कृरत्यो ज्ञयसीनवृद्धिता गुणिनः । विवृद्धाः श्रीनयविज्ञया कृरत्यो ज्ञयसीनवृद्धिता गुणिनः । विवृद्धाः लग्गविज्ञया स्वाचीजित् च क्षीतिंत्तास्त्याः ॥ १ ॥ न्यावस्त्रयस्त्रप्यक्ष्यो विज्ञवे । सह रविविज्ञवेर्तिस्तृत्वेतिस्त्रत्यन्त्रयः ॥ १ ॥ कृष्यक्ष्यास्त्रमेनं स्त्र्या तृत्वेतिस्त्रत्यन्त्रियः ॥ १ ॥ कृष्यक्ष्यास्त्रमेनं स्त्र्या तृत्वेतिस्त्रत्यन्ति स्त्रत्या वाख्य । स्वण्यस्त्रस्त्र्यविज्ञवेत् वृत्वेत्त्रत्य त्रीवत् नैनत्य ॥ ४ ॥ तृत्यमास्त्रस्त्रत्यात् स्त्रत्यां वृत्वेत् वृत्वेत्त्रत्यात् स्त्रत्यां स्त्राः ॥ ३ ॥ स्त्राः । अत्रव्यत्वात्त्रस्त्रत्यात् स्त्रत्यात्रस्त्रत्यात्रस्त्रत्यात् स्त्रत्यात् स्त्रत्यत्व स्त्रत्यात् स्त्रत्यत्व स्त्रत्यत्व स्त्रत्यत्व स्त्रिष्टा स्त्रत्यत्व स्त्रत्यत्व स्त्रत्यात् स्त्रत्यत्व स्त्रत्यात्व स्त्रत्यत्व स्त्रत्यत्व स्त्रत्यत्व स्त्रत्यत्व स्त्रत्व स्त्रत्यत्व स्त्रत्यत्व स्त्रस्त्रस्ति स्त्रत्यत्व स्त्रत्यत्व स्त्रत्यत्व स्त्रत्यत्व स्त्रस्ति स्तरस्ति स्त्रस्ति स्ति स्त्यस्ति स्त्रस्ति स्त्रस्ति स्ति स्त्रस्ति स्त्रस्ति स्ति स्त्रस्ति स्त्रस्ति स्त्रस्ति स्ति स्त्रस्ति स्ति स्ति स्ति स्ति स्ति स्त

!! श्रेयोऽस्तु ॥ सुमहानप्ययक्वन्वैः पश्चेणेकेन प्रस्तो ग्रन्थः । कर्णामतं पद्धियां अयति चरित्रं पवित्रमिदस् ॥ ६ ॥

ઉપરના ઉલ્લેખથી યૂ. વિજયકેલસ્ટ્રીસ્ટના સમયમાં વેમણે આ શ્રંથના આદર્શ (નથી કેપી) તૈયાર કરી હતો એ સ્પષ્ટ સમજી શકાય છે એ કે અત્યારે તો ઉ ચરોશિવજ્યજી મહારાજે તૈયાર કરેશા એ આદર્શ તથા એના ઉપરથી તેમણે એ આદર્શ તૈયાર કરેશે હેના તે પ્રતિ એમાલી કર્ક પણ મળતું નથી પર તુ તેમણે તૈયાર કરેશા આદર્શ ઉપરથી જ સાક્ષાત્ યા પરંપનાએ લખાયેલી અનેક પ્રતિઓ એન લગ્ન લાદીયમાં આવે ઢામ કામ

ત્રેવામાં આવે છે. તેમાં ઉપર જ્ણાવેલા ઉપાંધ્યાયછ મહારાજે કરેલા ઉદલૈયો સચવાઇ રહેલા છે. પ્રારંભના ઉદલેખ તો ઘણી પ્રતિઓમાં મળે છે અંતિમ ઉદલેખ તો. ૧૭૨૨માં લખાવેલી વિત્રપુરની શ્રીરંગવિમળાછ ફાનલં હારની પ્રતિમાં વધા તેના ઉપરથી જ સંભવત: લખાવેલી કારીયા ચતિ શ્રીદ્વિયાં સંભવિ કાર્યો કાર્યો માત્ર જે કરે પ્રતિ અમારા તેનામાં આવી છે કે જે ઉપાધ્યાયણ મહારાજના આદર્શ જેવે સં ૧૧૫૦ આત્રામાસ લખાવેલી છે આકીની અધી નયગ્રહની પ્રતિએ ઉપાધ્યાયણ સહારાજ સહારાજે તેમાર કરેલા આદર્શની કાર્યોનો જ અમારા બાળામાં આવી છે.

सन्भतितः यन्धना । देशे विशाण ६५ये। य

"ચાર છે ચેતનાની દશા અવિતથા, ખહુ શયન શયન લાગરણ ચાંથી તથા; બિચ્છ અવિરત મુયત તેરમેં તેહની, આદિ ગુણુડાણે નયચક્રમાંહે મુખી," ર

આ કડી રહે સંબંધ ધરાવનો લાગ વધવાકનુત્તિમાં બીજા અરમાં પુરુષવાદમાં આવે છે. અહીં તીચે નથચકનુત્તિનો તે લાગ વધા તેના ઉપરથી ગ્રે તૈયાર કરેશું પૂળ ભાષવામાં અવે હે—

નયચક્રમુળ--

तम्य व चतमोऽत्रस्या जाप्रत्-सुप्र-सुपुप्त-तुरीयान्वर्यारस्याः । साथ बहुषा न्यवतिः

[ો] અ મિતાય બંતરે કેલ્કે સ્થારે કપ આવશ મહારાજે નવલકેનો ઉપયોગ કર્યો હેલ્થ તો તે જણા વર્તા વિલ્લેન્ડિક વિનાનિ ફે,

छते-सुत्व-दुःस-मोद्द-शुद्ध्यः सन्त-त्वस्-त्वमे-विश्वत्याच्या कर्चितिर्वमयोठोकाऽविमा-गाः संद्यवंद्रययेतनभावा वा । तियता एवैता विश्वतिकश्यात् । सर्वेद्रता वा सुरीयं निराव-रणमोडविक्तं निर्दावियोग आत्यन्तिकः ॥

નથચક્રવૃત્તિ--

तस्पेनेदानीं स्वस्पर्वज्ञानिश्वज्ञत् – तस्य च चलकोऽवस्याः । तस्य अनन्तरप्रतिपादित् चैतन्यतंत्रस्येमाश्रतसोऽवस्या जामस्यम्रप्रप्रतिपानवर्षाच्याः, बाग्रद्वस्या सुप्रावस्या सुप्र सावस्या दुरीयावस्या, एताथान्वर्याः । ताश्च वहुःचा व्यवतिष्ठन्ते, चतुर्यीमनस्यां सुनस्य तिसुनामेकैकस्याः प्रतिमक्रियं संश्लादिगेदाञ्जोकव्यवहास्येदाचानेकमेदत्वात् । चतुर्यी पुनरेक-सन्त्येव विद्युद्धतात् । अथवा साथि स्वरूरसामध्यात् सर्वास्यवैदानेकच्या विगरिनतेते, तवया-

र्ज जे जे जे भावे परिणमति पयोगवीससादर्जं ।

तं तह जाणानि जिणो अवस्त्रवं जाणणा णन्ति ॥ [आवश्यक्रितेषुक्ति ७९१] कालााः उच्यत्ते, सुरव-दुःख-मोह-इहुन्दयः सत्त्व-रुक्स्-तमो-विह्यस्याध्याः। कार्याणि वालां ययासङ्ख्यं तिसृणां वयया-महान्दर्जपवश्यक्षामिणक्षोद्देशीत्यो दुःख-पोष्वापमेदाभस्त्रान्ते । वहुण्याद्याः। कार्याणि वालां ययासङ्ख्ये तिसृणां वयया-महान्दर्जपवश्यक्षामिणक्षोद्देशीत्यो दुःख-पोष्वापमेदाभस्त्रकृष्टे । कार्यक्रित्वस्यापायः । वहुण्याद्या । व्यवस्य कर्ष्यक्षेत्रकृष्ट्यस्य । कर्णकार्वस्या, त्रिक्षाच्याः। वद्यस्य कर्ष्यक्षेत्रकृष्टा । व्यवस्य कर्ष्यक्षेत्रकृष्टा । व्यवस्य कर्ष्यक्षेत्रकृष्टा । विद्यस्य विद्यस्य व्यवस्य व्यवस्य व्यवस्य विद्यस्य विद्यस्य विद्यस्य । विद्यस्य विद्यस्य विद्यस्य विद्यस्य । विद्यस्य वि

—તેવચક (ગાત્માન દસભાતુ સરકરણ) ૫ ૧૮૧

અમર યશસ્વી ઉપાધ્યાયછ

વસ્તુત: વિચાર કરીએ તો જૈતકર્શન એ ડેકાર્ય સગ્રદાય નથી પણ એક કિલ્ય તત્ત્વણન છે કે જે તરવામાનમાં સર્વજીવોના એકાંત્રી કલ્યાણની અને શ્રેયની જ ભાવના ભરેલી છે. છે. આજના વૈજ્ઞાનિક યુગમા પછું હિંસાના દાવાનાથી સંત'ના રચેલું જગત દીન અને અશરણ બની એ " નાહિ ત્રાહિ"ને પોકારી રહ્યું છે તેને હોઈને કચેલ સહ્યું સહ્યું સર્વજીવન્યાપક અહિસા, મેત્રી અને કરુણાની ઉદ્યોષણા કરતા જેનદર્શનના તારવાન ઉપર મુશ્ય ન ચર્છ બચ ! આવા જેનદ્રાસનમાં જન્મેલા યું ઉપાંધ્યાયજી મહારાજ માત્ર જૈન-શાસનના જ ગ્રહ કાર રૂપ છે એમ નહી, પણ સમગ્ર લાસ્ત અને વિધના નર્લા કારણ છે. આ મહાલિસ્તિનો જન્મ અને સ્તર્યાયા અંતુ ગુજરસ્ત્રીઓમાં થયેલાં છે તેથી ગુજરસ્ત્રી છે. આ પ્રહાલિસ્તિનો જન્મ અને સ્તર્યાયા અંતુ ગુજરસ્ત્રીનિમિત્રે ગુરુમાં દર્શનો સીતા અનિસંધ્યારને સ્થાને વેચારીમાં ઉપાયલનો ગુજરસ્ત્રીનિમિત્રે ગુરુમાં કર્યા તેઓ સીતા વિજયજી સારસ્ત્ર સ્તર ' યોજનાને કાર્યક્રમ અંતિમાય સાત્ર ગુલ્યુક્તા કાર્ય કરીને તેમાં વિજયજી સારસ્ત્ર સ્ત્રત ' યોજનાને કાર્યક્રમ અંતિમાય સાત્ર ગુલ્યુક્તા સ્ત્ર કર્યાને છે. પ્રતિક્રા શારે સત્રની યોજના સુવર્ણમાં સુષ્ય હતી ચોજના સમાન છે

> જે મહાપુરુષે યુપુક્ષુ છવા હવર અગ્રીમ ઉપકાર કરેશો છે તે અમરમગ્રસ્ત્રી ઉપાધ્યાયછ લગવાન શ્રીયરોપિકલ્પછ મહારાજ્યા પૃત્રિય શર્માકુમલીમાં કોર્ટિકોર્ટિવાર

વંદ નહેા!

राग-हेयी हती बेन, असत्त्रय मयंकरी ! स शांग परमात्मा से, स्वप्ते वा जागरेऽपि वा ॥१॥

અર્થ — જેવે ત્રણ જગાને ભા કરતારા રાય-દેય હણી નાખ્યા છે, તે પરમાત્યા શ્વપ્તમાં તેમ જ જાજૃતિમાં પણ, સાર્થ શરણ હો

परमञ्चोति पञ्चविद्यतिका]

[श्रीमह बशापिक बछ

પ્. ઉપાધ્યાયછ શ્રીયસોવિજયછ મહારાજનાં-વચનનાં રહસ્ચા અને વિશેષતાએા

[લેખક: પરમપુન્ય માચાર્ય શ્રીવિજવપ્રેમસ્રીવિશ્છ મહારાજના શિધ્ય પરમપૂન્ય ગ્રુનિશ્રીભાવવિજયછ મહારાજ]

अज्ञानतिमिरान्धानां, ज्ञानाजनश्रकाकया । नेत्रमुन्मीलिवं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः।

નંત ઉપકારી ત્રિલીકનાચ તીર્થ કર શ્રીમહાવીરફેવના વિરદ્ધાળમાં વિલયાન એપના સુલ્દ શાસનની બલિહારી છે કે જેમાં અનેકાનેક મહાપુરુપોએ એવા એવા ઉત્તમ શાસ્ત્રત્નોની ભાષ્યવુને હોટ કરી છે, કે જેના વડે આ કબિકાળમાં પણ આપવૃત્તે હાથે શ્રી સર્પદ્મપ્રસુની સાફ્ષાત્ વાણીથી શિષ્કૃત સ્થા છીએ

પ ચપરીપ્ડીના ચતુર્થપે હે ભિરાજમાન યુ મહામહાયા પ્રોધારોહિયા મહા-રાજ આવા મહાપુરૂચો પેકીના એક હતા તે પણ અસાધારણ અવેતાકુપી વિદ્વતાને પત્તામાં તેવી જ એમના સમકાલીન યુ ઉપાધ્યાય શ્રીમાતવિજયછ મહામારું એમને ફ્રેલકેલી—ચીદપૂર્વીજું સ્મરણ કરાવનારા કહ્યા છે યુ હ. શ્રીમાતવિજયછ મહામારુની પથુ મહાન વિદ્વત્તા એમના 'ધર્મમાં કહે" ત્રન્યમાંથી બાલ્ફી શકાય છે એવા કહાનોને પશુ એમ પતું કે આજના એક યુવના પણ દ્વાનવિદ્યા કાળમાં કંઇકેને વિચાર આવે કે ચીધપૂર્વના ફ્રાલા મહીવે કે સાફત અને કેલા વ્યાપ્યાના સેલા હશે, તેતે તેના પ્યાહ અસ્યા પાસ્તુ સ્વપર સમયવેત્તા—આપ્લાતા એવા આ યુ ઉ શ્રીયાંશીવજયછ મહાસજયી આવી શકે.

ત્રુક્ષાચેતાદવે, સદ્યુ, કુવશે, રિપ્પ ક વૃ—

પૂ મહાનો હાપાંચાય શ્રી પશેલિજ લાઇ મહાન જની સુલ્સ્તૃતિ ગાવાનું કાર્ય ઘઢું સેર્રેકલ છે, એમનામાં રહેલી વિસ્તૃત અને ગલીર વિક્તા, સુલ્મભેષશકિત વગેર તેન કર્યાન અને કર્યાના માત્રુ અપાય ત્યાં કર્યાન અને કર્યાન અને કર્યાના માત્રુ અપાય કર્યા જનાતો સુધી એમના સુલ્લ અને કેમ કે પ્રાપ્તુ સુધી એમના સુલ્લ આવા એમને અન્યાય શર્ધ જવાતો સુધે સંભ છે કેમ કે પ્રાપ્તુ સુધે તેને કર્યા સુલ્લ સુલ્લ અને કર્યા સુધ્ય અને અને કર્યા સુધ્ય કેમ આપણ પ્રદા માલુલો શર્ધ ત્યાં માત્ર તેવા જ લોક અગળ પડતા માલુલો શર્ધ ત્યાં માત્ર તેવા જ લોક અગળ પડતા માલુલો શર્ધ ત્યાં સુધ્ય અપાય સ્થાપ્ત્ર સુધ્ય અપાય સ્થાપ્ત્ર સુધ્ય અને ત્યાં સુધ્ય સુધ્ય

ફાંશીના પહિલો લાફુથી એ બિરુક આપવામાં આવ્યું હતું. આ ઉપરથી એમ ભાસ ધાય કે જેમ બીજા પણ ફાંઇ વિદ્વાન ક્રોઈ વાદ કરી જિલ્લ મેળવે તેમ યું ઉપાધ્યાવછ મહાનજ પણ છત્યાં હતા. અને આજે પણ કેટલાંક પહિલોને દક્ષિણા વગેરે આપી ખુંઇ કર્યાં હોય તો તે ય પત્થી આપે; તેમ શું એમને તેની પદથી મળી હતી કે

ક્ષાણા શ્લાહાના સ્થયિતા ઉપાધ્યાયજી અને તેમની મહાનતા—

વળી એમ પણ ભાગે કે એએાશી માત્ર વિદ્વાન હશે. અથવા સાધ હશે તો સારા સાધ કહેવાથી બીજા અનેક સાધુની જેમ એ પણ સાધુતાવાળા હશે આવા ખ્યાલ આવવા સહજ છે. પરત તેથી અન્યાય એ થવા, કે ક્યાં યુ ઉપાધ્યાયછ મહારાજની અસાધારણ વિક્રમાં, ગપ્રતીમ સાધતા, અનુષમ વિક્રજનાકદયવાસિતા વગેરે અલોકિક શરી ? અને ક્યા સર્ય આગળ તારા જેવી કીકી લાગે તેવી અત્યાની વિકત્તા રે આ કહેવાન તા પર્ય એ છે કે પૂ ઉપાધ્યાયજી મહારાજની વિકત્તા. ચારિત્ર જ્ઞાનશક્તિ, જેતજ્ઞાસનપ્રીતિ વગેરે અંગા અવદીનીય હતા તે ત્રણોને વથાઈ શબ્દ દેહ નહિ આવી શકવાને કારણ શબ્દોની મહપતા અને અન્તરુપતા, તેમ જ એમના ગયાના યશસ્થિત અનુસવતી ખામી છે. भा साथे के पत्र केंद्र क्षेत्र के हैं केंग्रना 'वाहाँहित' अने 'रुद्रम्सांहित' अंधा, तेमक 'सिद्धांतसत्यशिष्डार' वगेरे णास अधरती आके उपराप्य नधी है। दशाप (१) ન્યાય લખવાના ઉટદેખ મળે છે તે સુજના પણ એટલા ગ્રંગ ઉપવબ્ધ નથી એક માત્રાવિશિકાની જેમ બીજા એક આપીવીશી ઉપરત એમતું વિવેચન મળતું નથી આ બધી વસ્તાઓ એમની વિક્રત્તાને આપણા માટે અક્લ-અમેવ ાખી હત્ય છે. એક સિદ્ધાન્ત મતપરિષ્કાર ગ્રેથત નામ જ એવ છે કે જેમાં લાગે છે કે જૈન આગમ શાસ્ત્રીમાં આવતા વિવિધમતાન્તરો મળે છે. તેના પરસ્પરના અવિસંવાદી સમન્વય તે પણ જૈન-શાસનના ખાસ વિશિષ્ટ નવવાદના લાળ ઉપર કેવા મદર કરેલા હશે. જે આજે ને મળત તા અંદા ! આપછે એક એવં અલ્લત આલંબન ધરાવત: જે સમ્યયુદર્શનની અપૂર્વ નિર્મળતા, તત્ત્વોનું સફય અન્વેષણ. સિદ્ધાન્તના અપૂર્વ અર્ધ-સ્ક્રેયોના પ્રકાશ કરત ! શ્રીમદતા મહાત ઉપલય—

આમ છતા અને ગુનુગાન ગાવા માટે તૈયાર થયા છીએ તે પ્રસંગે એ મહાપુરુષ્યું અધ્યાન્યી સાધુદ્ધન, નિર્દાલ શ્રુવતાનાદિ ગુણે અને અપૂર્ય મંવસમૂહતું નિર્માણ કરવાના મહાન ઉપકાર કરવાના માતા ઉપકાર કરવાના મહાન ઉપકાર કરવાના મહાન હિલ્લાવનો આંતરગરી શ્રીપાદના ગુણુ ગાવા માટે આવા સમાર્યભર્ય કે સ્તુવિગ્રેય અધ્યાન્ય આવ્યા નિન સ્હી શકતો નથી (ઉપાધ્યાયછ છે સ્ત્રુવિગ્રેય અધ્યાન્ય નિન સ્હી શકતો નથી (ઉપાધ્યાયછ સ્ત્રુવા માલે અધ્યાની જ પ્રસિદ્ધિ —

ન્યાયવિશાસ ન્યાયાર્ગાર્વ યુ મહામહોપાધ્વાય શ્રીયશોવિજયજી મહાસજ શ્રીજૈત-સંવમાં ઉપાધ્યાયજી મહારાજના નામથી પ્રસિદ્ધ છે. યહાપિ જૈતક્ષાસનમાં ઉપાધ્યાયજી પદથી અલેકુત અનેકાનેક મહાપુરુષા શઈ ગયા, પરંતુ કાં તો તેઓ પાછળથી પરમેપ્તીના ત્રીળ સુરિપદથી અલેકુત થયા તેથી, અથવા દેટલાક વિશિષ્ટ શાઅસ્થિવિતા ન બન્યા તેથી ઉપાધ્યાપછના નામથી પ્રસિદ્ધ તથી પામ્યા. દા. લ જેમણે સુંદર શ્રન્સો નિર્મોણ કર્રેને છે તે ઉપાધ્યાપછ શ્રી મેઘલિન્યણ મહારાજ દે દેવાંધ્યાયછ શ્રી. વિનયવિજયણ મ કે ઉપાધ્યાય શ્રી. માનવિજયણ મહારાજ સ્વતામથી પ્રસિદ્ધ છે પરંતુ આથાર્થી કે સુનિએ કરતા ઉપાધ્યાયો પ્રતિ નાની સંખ્યામાં પ્રસિદ્ધ છે. તદન્તગાંત ચૌદ પૂર્વીના પણ અસાયારણ વિદ્ધાન કરી. ઉપાધ્યાયણ મહારાજ અહેરાજ પણ લેવી અશાયારણ ન્યાપક વિદ્ધાત ધરાવતા કે લગલા કોઈ પણ વિષયમાં એમને પ્રશ્ન પૂર્ણ તો એમ થઇ આવે કે ઉપાધ્યાયણ મહારાજ શ્રુ નિયા જાણ ત્રાપક સ્વારાજ શ્રુ નિયા પણ વિશ્વમાં એમને પ્રશ્ન પૂર્ણ તો એમ થઇ આવે કે ઉપાધ્યાયછ મહારાજ શ્રુ નિયા જાણતા એ શ્રેપ્રધાનું કામ અશાક્ય બની લાય.

ખાક્ષ્યમળ તે મત્યરચતા--

स्पतीहिक विक्रताना मूण जीव तरीहे पूर्वसवमां जेमछे जहसूत धर्मआशधना કરીને સસંસ્કારા અને પ્રક્ષ્યબળ કમાઇ ચાલ્યાનું અનુમાન થાય છે. આ જવનમાં ગુરુસેવા, पिनम, संश्रम परोहे अविभावश्यक अही। येडी श्रेमनी। स्रोक महान अहा स्रोक्षश्रानी। હતા. વિશેષના અભાવના હતા. તે આપજીને એમની લાલ્યવવમાં એવા મળે છે. માત્ર માતાછની સાથે છપાશ્રયે જતા ત્યાં સંભળાવાતાં નવ સ્મરલ (સ્તાેગ્રો)નું એમણે એનું અવિક્ષેપ અવધારક કરી હીધે કે. એકવાર વર્ષોના કારણે એમનાં માતાજી નવ સમરદા સાંભળવા ન જઈ શકવાથી લાજન-પાસી હેતાં નહોતાં તેથી તે જ વખતે આ અદયવયસ્ક આળકે પાતે નવે સ્મરજ દાંએ સંભાળાની કીમાં હતાં. એવી જ્યાતિથી પ્રસિદ્ધ શ્રીમાન ઉપાધ્યાયછ મહારાજ સ્વશાઓના સમક્ષ શાસકાર હતા. પૂર્વચારીના શાસ્ત્રો પર ટીકારાંથા લખવા ઉપરાંત અધ્યાત્મ, ચેરુગ, નથવાદ, પ્રમાણરૂપ પંચ શ્રાન, કુમતોલુ ખંડન વગેરે પર પૂખ જ લખ્યુ છે, એ એકેક લાલની વિશેષતા ગાવા લેસીએ તો લાગે કે અહીં કેવા આ અપવ સુંગપુરુષ, અપ્રતિમ વિદ્વાન અને અદ્ભુત શાસનપ્રભાવક આપણા નિકટના કાળમાં શકે ગયા એ પણ આપશું કેલું મહાસૌભાગ્ય! સંસ્કૃત-પ્રાકૃત તા ખરે જ પણ રાજરાતી ભાષામાંય અનેક ૧૨૫-૧૫૦-૩૫૦ ગાશાના સ્તવના, સન્ઝાયા, દ્રભ્યસભ્યમાંય રાસ. ષદ્દશાન ચાપાઇ, ટબા, જૈનાગમના પદાર્થી કાલરૂપે સુદર રીતે ઉતાર્યો છે કે જેમાંન વેહસ્ય ગુરુગમથી કે સ્વાનભવથી બાલતાં એમ ખ્યાલ આવે કે સુજરાતી સર્જન પણ શ આડલી હત્યા કેમ્પ્રિન ? આજના પ્રસંત્રે એમાંના એકાદ છે. નમના એઈ લઈ એ.

તેઓશ્રીનાં સ્તવગાની ખૂબીઓ-

٤

એ યુગલાસ્કર મહીર્ષોએ સ્વર્સેચ્સ વર્તમાન ચોવીસ દીર્યેકેરદેવેની સ્તવનાવશીમાં પ્રથમ તીર્યકર શ્રી. જાયલાદેવ પ્રથમના સત્વનના પ્રારંભમાં લખ્ય છે કે—

> " જગજીવન જગ વાલકો, મરદેવાના નંદ લાલ રે. મુખ દીઠે મુખ ઉપજે, દર્શન અતિક્રિ આનદ લાલ રે...

આના ગર્શ ગામ તા સામાન્ય લાગશે કે, હે જવતના જીવન, જગતને વહાલા, મરૂડેવાના ન'દન, તમારું મુખ બેતાં મુખ ઉપજે છે, અને દર્શન કરતાં અતિઆનંદ થાય છે. પરંત અહીં પ્રશ્ન એ શાય છે કે પ્રલ્યુ સુખ જેલાં અને દર્શન કરતાં-એ સાથાસાથે એક જ ક્રિયાની એ ઉક્રિલ અર્થાત્ પુનરુક્તિ તે માત્ર એક જ ગાંચામાં, ગૌરવ-લાઘવના મહાન વિચારક ન્યાયવિશાસ્દ કવિએ કેમ કરી ? થસ, એ જિજ્ઞાસા પર વિચારતાં જણાઈ આવે છે કે આનો કાઇ ગૃઢ અર્થ છે. તે એ કે, અહીં 'દર્શન અતિહિ આન દ'માં 'દર્શન ' શબ્દથી સામાન્યપણે જોવાની ક્રિયા નથી લેવાની, પણ સમ્મગૃદર્શન નામના પ્રથમ મામ્રાપાય સમજવાના છે. સાવ એ છે કે, " હે પૂલ! તારા ઉપદેશેલા સમ્પગૃદર્શનની જે આત્મા હદયસ્પર્શના કરે છે, તેને એ દર્શનમાં અલિશય આનંદ શાય છે." તેમ "મુખ ફીઠે 'માં ' દીઠે' શબ્દથી માત્ર 'દેખતું' એમ નહિ, કિન્દ્ર સ્વરૂપકર્શન અર્થ લેવાના છે. ત્યાં 'મુખ 'એ પ્રધાન અંગ છે, એના ગ્રહણથી સમસ્ત અંગીતું ગ્રહણ થઇ શકે છે. તેથી એમ કહી શકીએ કે પરમાત્માના સખન અર્થાત પરમાત્માન અથવા પરમા-તમાના મુખ્ય સ્વરૂપતું દર્શન કરતાં સુખ ઉપજે છે. આ દર્શન પણ યહેલાં તાે ક્ષતજ્ઞાન રૂપ, પછી ચિન્તા અર્થાત મનનરૂપ, પછી સાવના–સંવેદનરૂપ સમજવાત છે. યીજા શળ્દામાં કહીએ તો પરમાત્મરવરૂપના ગાધ, ગીમાંસા, પ્રતિપત્તિ અને સાત્મીકૃત પ્રવૃત્તિ રૂપ સુખદર્શન લેવાતુ છે. હવે સભ્યગૃદર્શન અને પરસાત્મસ્વરૂપ-ગ્રાનના મહિમા ભતાવ્યા તેથી અનમાન અય કે કે, ચારિત્રના મહિયા એમાં ગાયા જ હશે. તે વસ્તુ ' જગજવન ' એ એ પદમાંથી સળી રહે છે. જગતને છવનકપ કાલ અની શકે ⁹ જે આત્મા મહાઅહિ સક હોય અને સારિત્રધારી ક્રોય તે. આરંબ-સમારંબની હિંસામાં પહેલા તેા જગતના ત્રસ-રથાવર છવાનાં છવન લંડી રહ્યો છે. ત્યારે પ્રભ્ર ધોલે જગલના સર્વ છવા પ્રત્યે સ્વયં મવેશા અહિંસક ખાની. જગતનેય અજર-અસર શવાના અહિસામાર ભતાવી રહ્યા છે. તે માટે સાર્સ ભાવજીવન આપી રહ્યા છે. અર્થાત જવતને જિવાડી રહ્યા છે, માટે 'જગજીવન' પદથી કહેવાય કે, ત્રશ સ્વય' સારિત્રિજ્યનથી જગતના જીવનામત છે. તેમ ' જગવાલકો ' પદ સૂચવે છે કે જગતને વહાલા તે જ અની શકે જે સંચમી દ્વાય, ત્યાગી હાય, અને નિ:સ્વાર્થ પછે પારમાર્થિક ઉપકાર કરનારા હોય એક કુંદ્ર અને વહેરા જે ખકુ ભાગી. સ્વાર્થી, અસંચમી અને કુદુંળ મત્યે બેપરવાઢી રાખતા હોય તો કુદું બને તે એડલા વડાદ્રા તહિ લાગે જે સ્વયં માનપાનના લાલગુ છે અને જેને વાલો-વર્દાવ પર સંયમ નથી તે ળીતાઓને ગમશે નહિ. પ્રશ્રુ તા મહાનિવ્યૃહી, મહાસંયમી, તપરના અને વિધીન પરારી છે. માટે વચતને વહાલા છે. ગામ 'જગજીવન' અને 'જગવાલદ્યાં ' એ છે. પદથી એમળે ચારિત્ર-સંવમ અને તથના મહિમા પણ ગાયા છે.

પુ. ઉપાધ્યાયછ મહારાજની રહસ્યાવાદી લેખિનીના એક લીંગ્રે કુંદર દાખદો છુંએ. એમના રચેલા શ્રો. નેમનાચપ્રયુતા સ્તવનામાં સાજિયાવીની પ્રશ્ન સાથે ફરિયાદ વર્ણવી છે, એમાં રાજિયનીએ ત્રીછ કરીમાં એમ કહ્યું છે કે— " ઉતારી હું ચિત્તથી રે હાં, સુક્તિ કતારી હેત, મેરે વાલમા !

સિંહ અન તે ભાગવી રે હાં. તે શંકવલ સંકેત, બેરે વાલમા...તારાબથી • " અહીં કહેવું એ છે કે, " હે સ્વામી ! તમે તવ લવતા સ્ત્રેહ વીસારી એક કલ કરપ કરંગના નિમિત્તને પામી મને છોડી લાંચા છે, તેતું કારણ હું સમલાં હું કે, તમે કતારી

એવી મહિત-સીતા પ્રેમથી મને ચિત્તમાંથી ચળગી કરી છે. પરંત પ્રભા વસને શંપાળર તથી કે છે તે। ગણિકા છે ે એના ભાજા અનંદ સિદ્ધો છે. આવી ગણિકા જેવી તમતે કસાવી રહી છે! ક્રોની સારો તમે કાર સંકેત કર્યા છે ? લોકો કહીમાં આની પછી અલાવ જે ક્રોપ -£ 6 5e

" પ્રીત કર'તાં સાહલી રે હાં. નિરવહતાં જ જાળ, મેરે વાલમા ¹¹

તેના માર્ય એમ શાય કે. " અમારા નવ નવ લવના સ્તેહ ગથવા નહિ કે ટામાંગ્યા તહિ. એ કેટલું ગલ્લમાં છે? જગતમાં પ્રીતિ માંડવો સહેલી છે. પથ ટકાવવી કહિત છે. તમે મારા પર પ્રીત કરતા આવ્યા તાે ખરા, પદ યાછી પેલી સકિત સળી તેથી તેના પર ભાકષોઈ મારા પરની પ્રીત ટકાવી શકવા નહીં. એટલે વાત ખરી છે કે, પ્રીત કરવી સહેલી છે. પછ ડકાવવી સુરકેલ છે. ઉપર ઉપરથી આ અર્થ સારો છે. પછ તેના રહસ્યમય અર્થ લો છે.

તે એ રીતે કે. ' રાજિયતીને સામીએલ્લે જ્યારે ગીએ વર શાધવાન કહાં ત્યારે તેમને ધતારી કાડી: એ વસ્ત રાજિમતીના નેમનાથસ્વામી ઉપર વફાડારીલયો પ્રેમ સચવે છે. આવા પ્રેમ ધરનારી જાર્ય ડેક્કની સન્નારીએ એક પતિ નક્ક્ષી કર્યા પછી બીજા પતિની વાત સાંખી શકેલી નથી. ગશિલી અવસ્થામાં સીલાઇને રાધે જંગલમાં મહાતેનાં-ત્યાલવેલા. ત્યાં સીતાએ પણ રામને કહેવશબ્ય હતું કે, "મને છેલી તો લહે છેલી તમને भारा हरतांप थीछ सारी पत्नी भणशे अने तेथी मारा विना तमारे। मेाक्ष निर्ध कार्य પર'ત હોહવચનથી જેમ મને છેલી, તેમ જૈવધમાંને ન છેલ્લા. કેમ કે એને છેલ્લા પછી બીતો એથી વધ સારા તા શું પણ એવાય સારા ધર્મ નહિ મળે, તેથી જૈનધર્મ વિના માહ જરૂર અડકી જશે." શ્રી મહધારી હેમચન્દ્રસૃષ્ટિ મહારાજ વિરસિત 'પૃષ્ણમાલા' નામના લ'શમાં આ અધિકાર છે. તેમ અહીં સભિમતી જ્યારે ભૂએ છે કે. શ્રી, નેમનાશ સ્વામી મારા પરના નવ નવ લવના સ્નેહને પણ છોહીને સુક્રિત પર નિશ્ચિત પછે રાગવાળા પત્યા છે. તેા મારે એમને ચેતાવી દેવા દે, મુક્લિના સત્ર અર્થાત્ સાક્ષરુચિ એ સામાન્ય વસ્ત નથી. પ્રશ્ન થશે કે, તે શું નેમનાથ નહિ સમજતા હોય ? યરંત વકાદાર અને પ્રેમાળ સ્ત્રેહીઓન દિલ જ એવું ક્ષેત્ર છે કે સામાને શલે જાણમાં છેય છતાં વધુ સાવધાન કરવા વ્યવસરે એત ધ્યાન ખેંચે એ હિસાલે રાભુલ કહે છે કે, " હે સ્વાસી! તમે જાઓ કે અનંતા સિદ્ધ એવા પતિવાળી સક્તિ પ્રત્યે પ્રેમ કર્યો તો લાલે કર્યો, પણ ધ્યાન રાખને કે મક્તિ પ્રત્યે પ્રીતિ કરવી સહેલી છે, પણ ઠેઠે સુધીટકાવવી પણ મહાસરકેલ છે હ્રજી અસારા પરની પ્રીતિ ટકાવવો સહેલી; ગમારા જેવી કુળળાલિકા સાથે પ્રીતિ માઠવા પછી કદાચ તમારી

બ્રુલ્શાપ શાય, તમે જ્ઞાદગા-Bતાવળા શાંચો, વિશાસલંગ કરો તોવ અગ્ને તમને તમકાહીએ નહિ, તમે રાસાચા કર્યા અને રીસાઈ એ તહિ, તમે રાસાચા કર્યા અને રીસાઈ એ તહિ, તમે રાસાચા કર્યા અને રાસાચા તહિ, તમે રાસાચા કર્યા એને છે કે, તે તમે લ્યાક લવના ચાલિલાંકમાં—આકંકમાં તલ્લુલા યો તત્તર તમને તરાકાહી દે જવાક તે તમે તામ તે એ સુક્રિત પણ રાસાચા સાથે દાયાવા લવ- તિવેંક, વિશ્ય-વિરાગ અને ધર્મ-સર્વિગ લાગતો અને ધીક્ષતી રામાવા પડે છે, માટે મહિલીઓ પણ પાર્શ્વનારાત્ત્રા પહેલું 'સર્વાલિચોનો' માગે છે, રાલિવ્યતી કહે છે કે, જેમ કરી સાથે મે પરે તે આદંશ કે છે છે. તેમ સુક્તિનો રામ દાયાવા સુક્રેક્ટ છે. એ માટે તો દજનલલ સમસ્ત સંસાચને અળખામણે સામચે પડે છે, આદંશું કહ્યા પછી પણ વાલિવાદીઓ ત્યારે તો સું તે તેમનાલ પાક્રા નથી ફરેલા, ત્યારે એમના સુક્તિ પ્રત્યેના હતે કે, જેમને અને સુક્તિ તરાસ્ત્રા સાઘણને લાશી પોતાના ત્રિયા સુક્તિ કરે છે કે, ભારે વિલાફના અલ્લારે હાર પર હાય ન આપ્યો પણ હું દીક્ષા હતાં તારા હતા સુક્તા હતા ન આપ્યો પણ હું દીક્ષા હતાં ત્રારે હતા પર હતા ન આપ્યો પણ હું દીક્ષા હતાં ત્રારે હતા સુક્તા સુક્તા પર હતા ન આપ્યો પણ હું દીક્ષા હતાં ત્રારો હતા સુક્તા સુક્તા પર હતા મારા શરૂ પર હતા ન આપ્યો પણ હું દીક્ષા હતાં ત્રારો હતા સુક્તા સુક્તા પર હતા મારા શરૂ પર હતા ન આપ્યો પણ હું દીક્ષા હતાં ત્રારો હતાં સુક્તા સુક્તા પર હતા મારા શરૂ પર હતા ન આપ્યો પણ હું દીક્ષા હતાં ત્રારો હતાં સુક્તા સુક્તા મારા સ્ત્રા હતા મારા શરૂ હું દીક્ષા હતાં ત્રારો હતા સુક્તા સુક્તા મારા સામ સ્ત્રા હતાં મારા શરૂ કર્યા હતાં મારા શરૂ કર્યા મારા સ્ત્રા હતાં સામ સ્ત્રા હતાં સુક્તા સુક્તા સ્ત્રા હતાં મારા શરૂ હતાં મારા શરૂ કર્યા મારા સ્ત્રા સ્ત

અપૂર્વ રહસ્યાથી ભરેલા મન્યા—

ધીતે એક દાખલા-'શાસવાતોચ્યુચ્ચય ' પર એમણે રચેલ 'સ્વાહાદ-કરપલતા' ડીકામાંથી હુંચો. આપણે ત્યાં પુલ્યાહળ'થી પુલ્ય કે પાય, અને પાયહાળંથી પુલ્ય કે પાયની એ સમજણ ગાલે છે કે એ પુલ્ય કે પાયના સોડાયવામાં સારિષ્ય માટે તવા પુલ્યની દિશ્વતિ સભી શાય તે પુલ્યાહળેથી, અને પાયની દિશ્વતિ લસ્થી સાય તે પાયહં અંધી; પરંતુ ઉક્ત ગંથમાં પૂત્ય ઉપાધ્યાયછ મહારાજે એ સ્વયન્યું છે કે, જે પુશ્ય-પાપ ઉદયમાં લાવવા માટે પણ હૃદયને મહામહિન કરનારાં પાપકાર્યી કરવાં પઠતાં હોય તે પણ પાપતુર્વાપી કર્મ ળને છે. તેથી ઊલડું જે હૃદયની પવિત્રતા અને કેમબતા બળવી રખાતી હોય તો ઉદયમાં આવતાં પુશ્ય-પાપના યોગે પાપાતું પીકર્યથી બચી જ્વાય છે.

' શાસવાતો'ની દીકામાં તથા ' નવેલપદેશ,' 'ગ્રાનિલ' દે' વગેર ગ્રન્ટીમાં નવ્ય ન્યાય રોકીના તારંથી જેન સિદ્ધાંત અને તત્ત્વાની પિટોયલા કર્શાવનારાં અદ્ભુત રહસ્યો અને પહાર'-નિરૂપણ વિપુત પ્રમાણમાં આ કર્શન-દિવાકર મહત્યાએ આપેલું છે. જે સદય, પુદ્ધિત્તપત્ર અને નવ્યન્યાય સહિત દર્શ'નોની પરિસ્તાયાના વિશાળ બેધાર્ય શાહ છે. 'ગ્રાનિલ' કું જે પાત્ર શે. સિદ્ધાને કિલાકર, શો. જિન્લાદના વિશાળ એક ક્ષેત્ર સમન્વય શાહ્યો છે. એ જ બ્રેયમાં મહુસ્દુતન ગ્રાસ્ત્ર વેતિ કું જે ગ્રામાં પરિષ્દુત અસ્ત્ર ત્રાનિ કું જે સમાન પરિષ્દુત સરક્ષ્ત્રીકૃત 'સિદ્ધાંતિલ' કું ગ્રામાંના પરિષ્દુત સરક્ષ્ત્ર માન્યય શાહ્યો છે. એ જ બ્રેયમાં મહુસ્દુતને ગ્રાસ્ત્ર ત્રાને પરિદ્ધાંત શિકામાં પ્રમુદ્ધ સર્મન્ય શાહ્યો કર્યાના પરિષ્દુત દીકામાં પ્રાપ્ટ છે ત્રન્યન્યાયાની ચેલીમાં આઠ કર્યા છે. વર્ષી બહુલી બહુલી પ્રકૃતિઓની વસ્ત્ર વર્ષા પાત્ર કર્યો છે. ત્રાપ્ત કરી છે. જોવા શેલો અને લગ્ન પરિષ્દા શોધો છે. તેમજ જેવના અંતે સ્વેષદ્ધ કર્યા પ્રદૃત્તિઓની પરસ્થા માં પર્યા છે. તેમજ જેવના અંતે સ્વેષદ્ધ કર્યા પર્ણ અપ્ત માં પર્યા અને લગ્ન પર્યા અને લગ્ન પ્રકૃતિ કર્યા પ્રકૃત્તિ શોધા પ્રકૃત્ત સાંત્ર માં અન્ય પ્રકૃત્તિઓની પરસ્થા માં પર્યા અને સ્ત્ર માં અન્ય પ્રમાં અને લગ્ન પ્રકૃત્તિ કર્યા પ્રદૃત્તિ શોધા પ્રકૃત્તિ સર્યા અને સ્ત્ર પ્રકૃત્તિ સર્ધા પ્રકૃત્તિ સર્ધા અને લગ્ન પ્રકૃત્તિ કર્યા પ્રકૃત્તિ સર્ધા પ્રકૃત્તિ કર્યા પ્રકૃત્તિ સર્ધા પ્રકૃત્તિ સર્ધા અને સર્ધા અને સર્ભય પ્રકૃત્તિ કર્યા અર્ધા સર્ધા સર્ધા સર્ધા અને સર્ધા અને સર્ભય પ્રકૃત્તિ સર્ધા અર્ધા સર્ધા ચામાં પ્રકૃત્તિ સર્ધા અને સર્ભય પ્રકૃત્તિ સર્ધા સ

મૃતકેવલીની ઉપમાત પામનાર મહર્ષિ—

પૂ 6 દ્યાંધ્યાયછ અહારાજ શ્વ-પર શાઓના એટલા લધા વિવયેમાં પારંપત હતા કે સેમને આપણે બહુંલત તરીકે એના વિવસ્તિ અર્થમાં આપણ હુદવ સાચે તેનું દાદીએ છીએ. એ ઉપરાંત એમની વર્ષતો પૂર્ણ તેના સામલે પુસ્તકામાં નહિ, પણ એવી તો ઓને લાંતરા હતી કે, પૂર્વે કહ્યું તેમ એમના સમક્ષલીન સમારે વિદ્વાત દયાન શ્રી. સામવિજયણ અહારાજે એમના માટે 'સ્માસ્તિ શ્રુતકેલલી 'હું વિશેષણ લગાહશું. કુતકેવલી મોટલે ટ્રાફ્રાંગીમાર તેને પ્રયત્નનના સાતા.

્યારે એ એમના ' ક્રાર્ત્વિશત ક્રાંત્રિકિકા' નામના મન્યમાં એમણે પુંત વ્યાચાર્યવાં શ્રી. હિસ્તિક્સ્સ્તિ'યરાજીત ' લેાબદીક,' ' ચાંત્રમિન્દ', ' પેડાક્ષક' વખેરમાંનાં અસ્કુડ સ્ક્રન્સો પોલ્યાં છે. હા. ત. સેમની સાથી દિદયાં વ્યાવસ માટે પ્રાલુપાય નામના ધોગના માંત્રની પ્રિક્તિ કરવાની વાત ' ચોગદરિક સવ્યવ્યા' શાસમાં કરી છે. પૂ. ઉપાધ્યાજી મહારાએ એતું સ્ક્રેસ્પ વર્ષ્યું વર્ષો કહ્યું કે, આ પ્રાલુપાય તે બાવ-પ્રાલુપાય સમન્યના અને સ્ક્રિય જ તેમાં ' વાસો-પ્રેલ્વા સુપી કૃત્યમાણુ રેચક, પૂરક, કું લક નહિ પણ બાદ ભાવસ્થી પ્રાયણાનું રેચન અને વર્ષના સ્વાર્ય ભાવપાયણ પ્રક્રાય પુષ્ટ હૈવાનું છે. આવાં આવાં તો દેટફારી પ્રાલુનું રેચન અને વર્ષના સ્વાર્ય ભાવપાયણ મહારાને હૈન શાસનની વિશિક્ષતા તો શું પણ પ્રવેન્સ્સે પોલીને પૂત્ર હમામાળી પ્રક્રાય પ્રાલુને સ્વન પ્રાયનની વિશિક્ષતા તો શું પણ પ્રવેન્સ્સે પોલીને પૂત્ર હમામાળી

પરિતા સાચિત કરી ભાગો છે. 'ઢાંત્રિંશત–ઢાંત્રિશિકા' નામના ગ્રન્થ એ 'ચાળકાર્ટ' વગેર અનેક ગ્રન્થાના ઢાઢનના સંગઠગ્રન્થ છે.

તેઓશ્રીની પાતજસ યાત્ર ઉપરની ઢીકા—

પૂર ઉપાધ્યાયજી મહારાએ ' વાર્ત બહા શેયહાર્શન' પર જે સમીક્ષા કરી છે તે પણ જૈન કાર્યનનો વિશિક્તા પુસ્ત્વાર કરે છે. ચોત્રકાર્શ નહાર વેદાગની વ્યાપ્યમાં ' વિત્તવકૃતિનિરોધ' એવો કરી છે, પૂર ઉપાધ્યાયજી અહારાએ એવા સુધારી કરી છતું કે, ' ચોરા-' ' क्रिक्टर'- ' ' क્રિક્સફિસિરોધ' ' યાત પણ સાવી છે. આત્માનથી કહેતા તો વધાવતુના માત્રનો મોત્રકાર કહેતા શાય અને એ તો અંતિય ચીત્રની કાર્યમાં શકે; પણ પૂર્વની કહ્યાનો ચોત્રની કાર્યમાં શકે; પણ પૂર્વની કહ્યાનો ચોત્રની કાર્યમાં શકે; પણ પૂર્વની કહ્યાનો ચોત્રની કાર્ય હતે, કેમ કે ત્યાં સુધા વિત્તવકૃતિ લાલુ છેય છે. એ પણ પ્રાપ્ત કે માત્ર- છે. નિયમ વગેરે ચોત્રના અગો તેટલી કહ્યાના ચોત્રને સાધી આપે છે, ત્યાં કાંઈ ચિત્રકૃતિ તત્તન મહાલ કે વિત્રકૃતિ તત્તન મહાલ કે વિત્રકૃતિ પણ મહિલ્દ નહી. એવાં ' ચોત્રનિરુદ્ધ કર્યા કરે કે, એ ચિત્રકૃતિ સાહ છે તે શુધા પણ પણ કર્યા કર્યા

આમ ઉપાંખાય અહારાયે ' કલ્યાગુવુપર્યાના રાત્ત 'માં ફિલ'ગર માન્યદાની મમીકા કરતાં ના નવ અને ગણ ઉપનય લાશ કરેક ઉપનયના અપાંતર પ્રકાશે અલાવી વધારાના છે તેના બુંદર પ્યાંનાય હતું ગમેનાં એમણે કહ્યું કે, તાત વધમાં પ્રયાં ગતું તેને પ્રકાશ છે તેનું ચુંદર પ્યાંનાય હતું એમાં એમણે કહ્યું કે, તાત વધમાં પ્રયાં ગતું તેને પુષ્ઠ કલ્યાન છે અને પછીના ચાર જીદ પર્યાવત છે. તો હતે ચારમાં અને તરમાં એ એ લીકા કલ્યાના કે આ હતા કે સોલું જ, ત્યાં કરતાં લાક સ્વતંત્ર ઉપ-નયોની કલ્યાન પણ વાગાડંબર છે, કેમ કે સાલ નવના એ આપાંતર ક્રમારે જ છે અથવા કહ્યું કે સાલ ત્યાં ઉપીતા તમાના નિવિષ્ઠ કહાતો છે

गृद सहस्यातं इसान-

પૂ. ઉપાધ્યાયછ ગઢારાયળા મત્યોની વિશાશતાનું વર્ણન કરતાં કરતાં તો મત્યોના મત્યો સમય ત્રેમ છે. 'જો હત્યાં હત્યાં ' લાત ' જાઢાવોરતવ' ' તામના મત્યમાં બોહતી મત્યો સમય ત્રેમ છે. 'જો હત્યાં હત્યાં સ્વિક સાન્યતાઓને લોગો ચત્યાં વર્ષો કરતાં હત્યાં હત્યાં કરતાં કરતાં હત્યાં કરતાં હત્યાં કરતાં કરતાં કરતાં કરતાં હત્યાં કરતાં કર

ઉપકારી સાદું જીવન ! કેવી શાસનસેવા ! એમની કૃતિઓનો વચાસ્થિત પાર પામી શકવા કોલુ સમય' છે ? એ તો કેટલેક સ્થળે એમલે પોત જ ટીકા-ટબારૂપે પોતાના લગ્લોનાં સ્દુર્યો ખોલી બતાવાં છે તે પરથી જ લાગે છે કે, બીલ તો અલુપોલાં કેટલાંય સ્દુર્યો ખોલી બતાવાં છે તે પરથી જ લાગે છે કે, બીલ તો અલુપોલાં કેટલાંય સ્દુર્યો હશે, જે સ્દુર્યો લાગે એમ સંવર્ગ એમના જેવા અદિતીય વિદાને કરેલાં વિવેચનના સભાવે અલુપોલાં પ્રત્યાં છે. 'ફાનસાર' અપ્યુક્ત પહેલાં અપ્યુક્ત કહ્યું હૃત સ્વિવાનના સભાવે અલુપોલાં પ્રત્યાં છે. 'ફાનસાર' અપ્યુક્ત પ્રત્યે હૃતાના કરેલાં વિવેચનના સભાવે છે જે સહિતાત્મા, તે જબતને પૂર્વું કેવી કેપે છે આના પર સહેલે પ્રસ્ત શાય કે, 'જગત તો અન્ના છે, કુંબી છે, એવી સ્થિતિઓ એ અત્યાત પર સહેલે પ્રસ્ત શાય કે, 'જગત તો અન્નાન છે, કુંબી છે, એવી સ્થિતિઓ એ ચિત પૂર્વું કે આતં કપૂર્વું ક્યાં રહ્યું કું અને સિંહ સમાધાન પૂર્વું કર્યો અને પૂર્વું કે આ ક્યાં સ્ત્રું કર્યો કર્યો કર્યા સ્ત્રું સમાધાન પૂર્વું કર્યો પ્રસ્તું સમાધાન પૂર્વું કર્યો પણ મહારાને સ્ત્રીપાર આપ્યું છે કે, 'તિસ્ત્રય નવની દિપ્રસ્ત્રે આ ગણને પાયું નિયાન વધારે સ્ત્રુપ્યું પૂર્વું વિત્ર અને પૂર્વું આનં કવાળા છે. આ વધાર્યું કર્યું પણ સ્ત્રુપોલ છે કે, જનાતના છત્યું સ્ત્રુપે કર્યું હ્યાં સ્ત્રુપો માન કરવાળા છે. આ સ્ત્રુપોલ કર્યો કર્યું કર્યું તે અને સ્ત્રુપોલ સ્ત્રુપોલ સ્ત્રુપોલ સ્ત્રુપોલ કર્યું કર્યું કર્યું કર્યું કર્યા સ્ત્રુપોલ સ્ત્રુપોલ

શ્કીમદ્ર ઉપાંધ્યાયછ મહારાજના કચ્ચેયાં લવેલાં રહસ્ય કે જેના પર શ્રીમદે પીતે વિશ્લીકરણ નથી કર્યું, તેને સમ્બવા માટે જિનાગમ અને ન્યાયાદિ શાક્ષોથી પૂળ જ પશ્ચિત રહેલું ત્રેઇએ અને સુરમ છુદ્ધિશ્ચ વિચાર કરવો જોઈએ. નહિતર તો સેમની પક્તિઓના અમદેખમદે અર્થ કરવાનું શાય દા. ત. ' અધ્યાત્મસાર' માં એક એફ પક્તિ છે—

> " वो चेद् मावापरिक्रामात् , सिच्यसिदिपराहत ॥ दीक्षाऽदामेन भव्यामां. तीर्योञ्डेदः मसञ्चते ॥ "

થાહી' એ પ્રકરણ **ગા**લે છે કે દીક્ષા આપવા માટે—

" वो कुमा भवनैर्तुष्यं चीरः स्याद् ज्ञतपासने । स्र योग्यो भावसेदस्य वोपस्टस्यते ॥ "

અદ્યાંત-એને સંસાર નિલુંષ્ણ લાગ્યો હોય અને અહાલત પાળવામાં એ અડમ હોય, તે કીક્ષા માટે યોગ્ય ગલાય પરંતુ એના આત્મામાં છતું ગ્રુપુરાનકરને લાવ આત્મો છે કે નહિ, તે તેનાતું નથી. દેમ નહિ ! એના ઉત્તરમાં-'નો ચેદ્દ સાવાવરિક્ષાનાત...' એ શ્લોક કહ્યો છે. આમાં 'તિહ્રવ્યવિદ્ધિવાદ્ધાન' એ સાત્રાહિક પદનો અર્થ પહેલા સાધ્યસ્તાના અતુવાર વિના વસ્ત સાત્રબની મુશ્કેલ છે અને એવું પણ વાંચવા માંગેલ છે ફે, તેમાં ફેક્કિએ એનો લખતો જ આદે કર્યો હોય. કહેવું એ છે કે, 'નહિત તો અપતના પરિણાનની પ્રસ્ત નહિ પ્રત્યાંથી સિદ્ધ અને અસ્તિહર્ધ પરાહત પ્રાયામાં તેશને તીર્થના કચ્છેકનો પ્રત્યેગ આવે ' આમાં સિદ્ધ અને અસ્તિહર્ધ પરાહત પ્રાયાને તામને તીર્થના કચ્છેકનો પ્રત્યેગ આવે ' આમાં સિદ્ધ અને અસ્તિહર્ધ પરાહત

હોવાથી ' એટલે: ભાગ ' હીશા નહિ જાપાવામાં ' હેતું છે. તાત્મ્ય' એ છે કે, ' અંતરમાં ગુલ-ઠાણાના ભાવ હોય તો જ દીશા આપવી એવો સામાનો મત હોય તો પછી દીશા અપારી જ નહિ. દેમ દે દીશાનું દાન સિંદિ અસ્તિ દેશી પરાહત છે. અચીત્ તો છક્ષુ ગુલ્લાણાના ભાવની એ આત્મામા સિંદિ છે જ (પ્રાપ્તિ છે જ), તો હવે હીશા આપવાથી કાંઈ વિશેષ નદી. તેમ તો ભાવની અસિંદિ છે, અચોત્ ભાવ પ્રાપ્ત નચી થયા તો તમારા મત ગુજબ દીશા આપી શકાય નહિ, તેથી દીશા આપવી વ્યાર્થ શાય. એમ અંતરમાં છક્ષુ ગુલ્લાણાના પરિણામરૂપ ભાવની નિંદિ હો દે અસિંદિ-ઉલલ્ય દશામાં દીશા આપવી નિર્શય છે. તેથી તો જગતમાં દેશિતની પરંપરા જ નહિ રહે, એટલે જગતમાં સાસન કે તીશે જેવું કાઈ નહિ રહે અને એમ થતાં તીથે'નો ઉચ્છેદ આવીને ઊલો રહેશે. ' આવાં અનેક સ્થળા શહેત્યકાર્યો છે.

ત્યારે 'નવેશપદેશ' અને 'નવરહસ્ય' માં સપ્તલંગીનું સ્વરૂપ વર્ષુવતાં ત્રીજ માવકતાન્ય બંગ પર મુંદર જિલ્લાસા છેલી કરીને એનું વિદેશનાલનું સમાધાન આપ્યું છે. જિલ્લાસા છે કરી છે કે, વસ્તુ પરસ્યર વિરુદ્ધ એવા ઉલલ્લ પ્રમાં રૂપે એકીસાથે કહી શકાય કે નહિં દા. તા. ઘટને એકવાર 'સ્થાત સત્ય' કહી અને બીજી વાર 'સ્યાત અત્યું કહી ત્યારે એકીસાથે કહી, ઘટ કેવો છે 'એના ઉત્તરમાં 'લાટ અવકતાન્ય છે,' ત્યારે પ્રસ્ત એ લેશી કરવામાં આપ્યા કે શા માટે અવકતાર ' જેમ 'ગુખદત્ત ' શાહ્યાં પ્રસ્ત એ લેશી કરવામાં આપ્યા કે શા માટે અવકતાર શે જેમ 'ગુખદત્ત ' શાહ્યાં પ્રસ્ત એકી કર્યા કર્યા પ્રસ્ત એ બન્નેનો એકીસાથે નિયોગક અને સાકેતિક શબ્દ કહીએ તો તથી લદ વક્તવ્ય અને તે ' માતા ઉત્તરમાં તેમણે કહ્યું છે કે, એ સર્કત શબ્દ રેવો કહેશો ' શેકેત એ સત્—અસત્નેનો કમમર વાયક શબ્દ છે, તો તો પ્રસત્ત અંબને તે ઉપયોગી નથી એ એકીસાથે સત્ય—અસત્નેનો કમમર વાયક શબ્દ છે, તો તો પ્રસત્ત લંબને તે ઉપયોગી નથી એ એકીસાથે સત્ય—અસત્તેને લાયક છે, તો તે વસ્તુ તો પ્રસાત તારો છે કે, લદ્ય સત્ય—અસત્યે વાયક છે અમીત સાધા સ્વાર્ય કર્યા હોતા સાધા સાધા શ્રે શ્રે લાયક શહે કરેશો ' કે, હા, સ્ટેનથી શર્ધ શરે, ત્યારે સાંકેતિક શબ્દ માટે શર્ક લાક કરેશા પર શરે કરેશો કે, હા, સ્ટેનથી શર્ધ શરે, ત્યારે સાંકેતિક શબ્દ માટે શર્ક શર્ક કરેશો ' સ્ટેન્સ' સ્ટેન્સ શર્ધ શર્ક શર્ધ સાધા સાધા સાધા શરે કરેશો કે, હા, સ્ટેનથી શર્ધ શરે, ત્યારે સાંકેતિક શબ્દ માટે શર્ક શર્ક કરેશો ' સ્ટેન સ્ટેન સ્ટેન સ્ટેન સ્ટેન સ્ટેન સ્ટેન સ્ટેન સાંકેતિક શબ્દ માટે શર્ક શરેલા કરેશો ' સ્ટેન સ્ટેન સ્ટેન સ્ટેન સ્ટેન સ્ટેન સ્ટેન સાંકેતિક શબ્દ માટે શર્ક શર્ધાન સ્ટેન સ્ટ

અર્ધાત્ એકોસાયે સત્—અસત્ ઉલ્લયમાં સાફેતિક શબ્દની શક્તિ સખવી પકશે. તેનો શમ્યતાવ્યેટક કેલ્કુ કે સત્ત્વ, અસત્ત્વ ને કહેક તો પાછે ત્યાં પ્રશ્ન વહેવાનો કે એ સાફેતિક પક્ષી સત્ત્વ એ અસત્ત્વનું નિવંચન એકોસાયે થવાનું કે કમિક કે એકીઆયે પવાનું એમ તો નિધ કહી શક્તા કેમ દે જે વખતે સત્ત્વ ઉચ્ચાસય છે ત્યારે અસત્ત્વનું નિવંચન નથી અને અસત્ત્વ ઉચ્ચાસય છે ત્યારે સત્ત્વનું નિવંચન નથી. ત્યારે લાંભ, ત્યાં મત્ત્વ-અસત્વ અન્તેનું એકોસાયે નિવંચન કરનાર ટેક્ક લ્યુલે સારેસિક શબ્દ ક્રીસે કરશે તો પાંઇ એ જ પ્રમાણે એના શક્યતાયવ્યેક્ટક અગ્ને પ્રશ્ન શરો. આમ અનવસ્થાનો ત્યા આપી પડો પૂ૦ ઉપાંચાયછ મહાસભ્યાં શાસ્ત્રસ્તામાં હાયકતાં સ્દર્ય અને વિશિષ્ટ પદાર્થીનું શું વર્લુન કરી શકાય! આ તો સામાન્ય છવો સમસે એવા છુટક નમૃતા છે. આપ્રી તો દર્શનના અને સફમ તત્ત્વના અસ્વાસવાહાને સમલ્ય તેવાં તો કેટલાંચે સ્દર્યનો છે પણ એટલું ખું કે એ રહસ્યો અને વિશેષનાઓ સાથેની એમની શાસ્ત્રુલિઓમાં કહેલાં તત્ત્વો અને પદાર્થી છે પણ એક તે સહાર્યો અને વર્લાણી દરેતાં અને પદાર્થી છે પણ અને આત્રાર્થી કારણ અન્યાર્થી દરેતાં પણ જ અલ્યાર એઇએ. વારંવાર લવાલું, લાગન, અને અન્ન માત્રે સવાલું તેમ જ વારંવાર પરિશીલન અને અનુલાવન-આત્રસભાવન એઇએ, અર્થીત એનાથી આત્રમાં સફલ પ્રતિને ભાવત કરી દેવી જરૂરી છે. છવત કરે છે, અને એકલા ઉપા- આપણ અને પ્રતિને ભાવત કરી દેવી જરૂરી છે. છવત કરે છે, અને એકલા ઉપા- ધ્યાયછ મહારાવના જ અન્યોનો અભ્યાય હોવા અને એવે છે. તેમ જ ન્યાયક છોય અને પ્રેશ્યા અને રિશોનાઓ સફલ કરે એમ છે. એ વખતે તે સફસ્ત્રો અને વિશેષનાઓ સાથેના એ પકાર્થીનું આત્મભાવન મૂકી કેવળ સાહિત્યક દરિ, ભાવતા તે સમન્ય પરિક્રાનાઓ સાથેના એ પકાર્થીનું આત્મભાવન મૂકી કેવળ સાહિત્યક દરિ, જાનિહાસિક દરિ, સમન્ય દરિ, દ્વિતાતમક દરિ ઇત્તારિના વિચલ પ્રતિભાગાલ્ય સાન્યાં જ પઢી જવાય તો માનવ- છત્તતાં અનુમાં કર્યા હતાં તે એમ જ અલ્યાયો ક્યાં ક્રાન્ય તે સાન્ય કર્યા હતાં કર્યા હતાં તે એમ જ અલ્યાયો કર્યા કર્યા હતાં તે તે એમ જ અલ્યાયો કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા હતાં તે સાન્ય કર્યા હતાં કર્યા કરવા કર્યા કર્

શ્રદ્ધાવાદને વિકસિત કરવાની જરૂર--

तत्त्वतं प्रतिशासन्नान अभे तेवं क्षाय. यद्य को पश्चितिज्ञान कने तत्त्वसंवेदन ज्ञान ન થાય તા તેની કશી જ કિંમત નથી. પરિવારિયાન લાવવા માટે ક્રક્ષ્યનું વસદ તે તે તત્ત્વના સ્પરમને અનુરૂપ અનાવનું આવશ્યક રહે છે. શા. તે. આક્ષય તત્ત્વનું જ્ઞાન શર્યા. આસવત સ્વરૂપ હેય છે. તો હૃદયત વહલ હેયતાને જાતરૂપ લોઇએ. ગર્શત આસવ પ્રત્યે અનાસ્થા-અરુચિ અને તિરસ્કારલર્શ્ય વક્ષલ લોઈએ, આસવથી આત્માને શય લાગવા તોઇએ, ત્યાં અસવની વાત ભાવે ત્યાં અકતંભ્યતા લાસે, તિરસાર આવે. ભાવા વહજ્ઞ वार्क मासवत ज्ञान के पश्चितिहान है. यही तत्त्वस वेहनना ज्ञाननी अवन्तिमां शितश्वानी વાત આવે. અથીત આસવ પ્રત્યે લય, તિરસારન વક્ષણ શયુ ખરં, પરંત આસવના ત્યાગ નહોતા શર્ધ શક્યો, આત્મા એનાથી તદ્દન અનાસકત અને અલિપ્ત નહોતા ભની શક્યો. જ્યારે તત્ત્વસંવેદનમાં તેં! આસવ પ્રત્યે સહજ અનાસક્ત બન્યો. જોનાથી અલિપ્ત થયા. મથાત હવે અતરથી પણ આસવમાં પ્રવૃત્તિ નહિ, પરંત સર્વથા વિસ્તિભાવ થાય. આ વસ્ત જાવતમાં પણ જ જરી છે. તે માનવજીવનમાં જ શક્ય છે. તેના વિના ફેરરા પ્રતિભાસ ત્રાનથી તે કાંઈ આત્મહિત સીઝર્ત નથી. એમ તો વ્યક્ષવ્ય પથ નવ પૂર્વ સુધીના પ્રતિભાસ -જ્ઞાન સધી પહેરસી જાય છે. દયા, એકો સાહિત્ય કેટલ અર્ધ ખેડવાં પણ તેવા પ્રતિભાસ-ત્રાતમાત્રથી શ ? પરિભ્રતિ અને સવેક્તના લક્ષ વિનાની ઐતિહાલિક દષ્ટિની ભાજગડ તે ते क्षणना रीतरिवाक अने भाषाना संशोधन, धंदरे। साथै केटबीक वस्तना समन्वय-એ મધી દૃષ્ટિએક હત્યમાં નક્કર સવેગજનક બેલ્લ નથી આપતી. પછી સંસારથી અલગ

અને અંતિષ્ત ચેવાની વાત જ કર્યા ? જાજના શુદ્ધિવાદનો હોય પંચે પ્રસંતતા સામ્યવાદને ચાલતા કરવા શેધ તો ત્રવિ-મહર્ષિ એના તકે-સુક્તિપુષ્ટ ગંભીર વચના પર શ્રદ્ધાવાદને વધુ વિકસિત કરવા પાશ્રી, જેના બહલે નર્યું શુદ્ધિવાદનું તાંઠવ તો છત્તી વસ્તુએ કેમ કે અર્થપાતને સંસ્કૃતિના વિનાશ તરફ ઘસલી જશે.

પ્રોતે—એ ગુલ અધિલાયા છે કે, યૂંગ ઉપાધ્યાયછ અહારાજ જેવા અહીં એનાં શાસ્ત્ર સ્ત્માંમાંથી આપણે છળવામાં તકાર તત્ત્વકાંપ, કેવળ પરિસ્તૃતિ—સંવેલન જ્ઞાન તથા શ્રે વેગ વિગામાંદિયા પરિપૃષ્ઠ આધ્યાતિમકતાની ઉચ્ચ કક્ષાએ પહેંચી, આંતરાત્મકશાના ઉદરક્ષિત સ્ત્યાસ પર પરમાત્મકશાને વર્ગેએ અજ્ઞાન કે પ્રમાલના કોયે કાંધે ઘથુ અસુકત લખાયુ હેલ્ય તે ખદલ મિચ્છામિ દુક્ષકં.

> कप्टेन छव्यं विश्वस्थार्थं, ददाति योऽसन्प्रह्मपृत्ताय। स किदारे यत्त्रश्लोपनीतं, वीतं नपस्यरम्मिदेशे ॥५५॥ —२२वे भूग ६.भ नेप्रते २५४ अने अस्थलो अर्थ

- પ્રત્યું જૂર ફુ-૧ આપ્ય રાજ અપ માનવાના અધ્ પ્રાપ્ત કર્યો છે તે જો અસફપ્રદેયી દૃષિત-ક્લસદીને આપે તો તે સેંક્રોડ પ્રયત્નથી ગેળવેલા બીજને ઉત્તર સૃષ્ઠિમાં વાવતો ખેદ માત્રે છે.

अध्यक्षिशार

[શ્રીમદ્ યશાવિજયછ

પ્રખર સ્યાદ્વાદી ઉપાધ્યાયછ શ્રી. યશાવિજયજી મહારાજ

[લેખક:--પૂ૦ મુનિવર શ્રીમાન વિક્રમવિજયજ]

> " મિથ્યા મત હૈ અહું જન જગમેં, પકન ધરત ધરણી; ઉનકા હમ તુજ સહિત પ્રભાવે, ક્ષય નહી એક કહ્યું! "

અપામ કહીને એમણે પોલાના હૈયામાં ત્રણ પ્રત્યે રહેલો લાહિત બ્લહત કરી; એટહું જ નહિં પણ સાથે સાથે પ્રણુની આણા પોલાની નસેનસમાં આપ્ત હતી તેના પણ પ્રણુ પાસે

એક્સર કરેશે. એસના હૈયામાં પ્રભગાળા પ્રત્યે જે અનહદ પ્રેમ અને રસ હતો તે તેઓ શ્રીની એક એક સ્થના ઉપરથી માલમ પહે છે. તેઓ શ્રીને પાતાની પુજાની પડી નકોતી પણ પ્રશ્નના સિન્દાંતા સાચા છે તેને સાબિત કરવાની અને તેના નિષ્કર્ય જનતા भम्म भारताची देवामां क्षेत्रंग दती. तेखेएशीके आभहावाहमा द्यारे आहे अवधान हेर्या ત્યારે તેમના અવધાના તેર્ફોને પ્રસન્ન શરોદા 'સાંહ ઇતાળ સરા ' એ અરુદેવને વિનંદી भी है ' का अने विकास तो सील है अने टानार्ट आय तेवा ने आरे तेमते शारी विधास्यास भारे भेमके। ने क्यने न्यावविद्याना हो। माश्रीमां वर वहेता हता अने ते बहेता वांभागमां क्रोते। भवाद बहेती दती, तक्यन्यायती विशय उन्तास वन्नदीय, भहाधर व्याहि ક્રિયમજ વિદ્વાના અંગાળમાં જ શઇ ગયા હતા: અને એ લધા નૈવાવિકાએ નવ્યન્યાયને પણ પણ વિકસિત કર્યો હતો. ત્યાર લાહ એ તન્યત્યાયના પ્રવાદ સંબાળમાંથી કાશીમાં વહેવા શાસ્ત્રો હતો તેથી તે વખતમાં સાર્શી નવ્યત્યાયન ધામ બન્યું હતં. તેથી શ્રી કાશીમા નહાન્યાયનું અધ્યયન કરતા હતા પણ અંતરમાં તેં પ્રભુતા સિહાંતાને કાઈ પણ વાદી અપસિદ્ધાત કહી શકે નહિ એ માટેન' મનામાં થન પણ સાલ જ હતં. એ નવ્ય-ત્યાયતે કાશીમાં જ રહી ગલ્યાસ કરવા છતાં પ્રભગાદાને સિંહ કરવાના મનારેશ પ્રખ પુષ્પ પ્રાપ્યત્તર અનતા જતા હતા. અને તેથી જ એ શાસોના કાયડાએ અને ગુચા એમના પ્રભ્રષ્ટાસાંકિત હૈયાને હંમમળાવી શક્યાં નહિ. એ જ કાશીમાં ઘણા અલ્પ સમયમાં તેમણે નવ્યત્યાયના લગલગ પૂર્ણ અભ્યાસ કરી લીધા. સાથે સાથે ત્યાં આવેલા એક મહાવાદી કે જેની મારી વાદવિવાદમાં છતસ્વાને કાઝીના કાઈ પણ પહિત તૈયાર નહોતી. ते प्रभते स्थाध्यादना जा अन्तन्य अवासके वादविवाद करवानी दिसत करी अने तेने महाकित होते. तेक्केक्कित का अक्षात विकासकी क्षांत्य कर्यने त्यांता प्रांतिनेको तेसते , न्त्राबर्दशारर , यं, जिडर जान्त

સવ[િ]શાસ પારંગત ઉપાધ્યાયલ્ડ—

નખન્યામની રૌલીમાં સ્થાર્શકાલ છિહાંતોને તેઓ કાશીમાં કરેલા અધ્યયનને લીધે જ યુંધી મકામા ગામ તો તેઓલીમાં શ્રંથ સ્થાની લીધિત હતી જ, મને તેથી જ તેઓ સ્મારાક ક્લિલેતને નાન્યામની રીતે લાળી કાકમા ગામ કે એ સ્થારાક દર લી તેઓ સ્મારાક ક્લિલેતને નાન્યામની રીતે લાળી કાકમા ગામને એ સ્થારાક દર શ્રી તેનાતા, સરકારકારની લાલતાએ લાજુ અને ખાકાર શ્રી કિલ્સુમી તર મેત્રેસી અન્ય લ મને માને કે અને ગામ કે સ્મારા કરી તેઓ કરે તમારા કરી કર્યા હતા. કે માને સમારા કર્યા હતા સ્માર્ગ મન્યારા કરી છે હતા એપ સ્મારા માના કરી હતા એપ સ્મારા સમારા મન્યારા હતા સ્મારા સમારા કરી હતા એપ સ્મારા સમારા કરી હતા એપ સમારા મામા કરી હતા એપ સમારા સમારા કરી હતા એપ સમારા સમાર

માલેમ પડે છે, જ્યારે એમનાં કર્મવિષ્યક વિવેચના વાંચીએ છીએ ત્યારે કર્મ-સાહિત્યના પ્રખર ત્રાના તરીકેના ભાસ થાય છે, જ્યારે વ્યાકસ્ત્રુવિષ્યક 'તિહત્વોધાકત' જેવા શ્રે શે લોઇએ છીએ ત્યારે પ્રખર વેયાકરણની દીપ્ટ તેમને લાધી હોય એમ હેખાય છે. અતીત કાળમાં થઈ ગયેલા મહાન આવાચીના સુધ્યું તેમણે પોતાનામાં ચમાવી લીધા હોય એમ આપણને એમના કન્યાયશ્રીકનથી જણાઇ આવ્યા વગર રહેતું નથી, અને તેથી જ મિહસને એમના કન્યાયશ્રીકનથી જણાઇ આવ્યા વગર રહેતું નથી, અને તેથી જ મિહસને હિવાકરજી મહારાજ, મહારાજ, અદારાજ, અદારાજ, અદારાજ, અદારાજ, અદારાજ એકારાજનો એક એક સુલ લઈને યાને થયાના સુધ્યાના સ્થાન સમ્યન્ય સાધીને યશેનિજયજી મહારાજનો સુદ્ધિત હતી એમ કહ્યા વગર રહેતાં, નથી.

ષડ્દર[ા]નની સાક્ષાત્ સૂર્નિ^c—

જયારે તેઓ છી બીહોતું ખંડન કરે છે અને એના પૂર્વ પક્ષ એવી રીતે પ્રતિપાદિત કરે છે ત્યારે સ્વયં વસુખંયું, દિહનાગ અને ધાર્ય કીર્તિની વાદ આપે છે; મીમાસફાની જ્યારે મીમાસા કરે છે ત્યારે લાફ અને પાથામત્વી થાદ દેવહારે છે, વેદાન્તિને જ્યારે એ હોયમાં શે છે, ત્યારે એક અહાન વેદાન્તિકાચાર્ય લાગે છે, અને ચાગતુ રહદય સમજાવે છે ત્યારે યોગાયાર્થ લાગે છે સાચે જ, એએકાર્મી સાક્ષાત વહાર્ચનની મૃતિ સમા હતા ધન્ય છે સર્વવાદ પર્ફાને પ્રદેશના એ અસાધ્યાયલ્ય પૂછ્યરીને !

તેઓકોએ 'તચવકશાસમ' 'ક જેની રચના તાકિરફારાં ક્લિ સહવાદિસ્કૃરિયરછ મહારાભાએ કરી હતી અને બેનો કપયોગ વ્યાપણા લેનાવાયીએ પૂચ એકોક કર્યો કમને બેનો પ્રાપ્ત નામાલીજ મહારાશી હેમવંદ્રતારાથ' મહારાભાએ કરી છે તથા વાદિવતાદ સાંતિસ્કૃરિયરછ મહારાભાએ એ મહાન નવ્યક્રકારખા લ્લ્લેષ્મ લપ્પત્ર તેમાં ભાવતી શ્રેક કલીલ પણ પાતાની 'પાઇલ' ટીકામાં લીધી છે, તે લ્લ' પૂ. ઉપાધ્યાયછ મહારાજે એક કલીલ પણ પાતાની 'પાઇલ' ટીકામાં લીધી છે, તે લ્લ' પૂ. ઉપાધ્યાયછ મહારાજે એક પપ્યક્રિયામાં જ તાંચી હીધે હતો. વ્યારી તે 'તાંચક' 'પ્રયક્રિયામાં જ તાંચી હીધે હતો. વ્યારી તે 'નિસ્તર 'ની માં માં પ્રતિસ્કૃર્ય કરાની હતી. વ્યારી તે 'તાંચક' 'તાં ભાવ છે. તથા હોલમાં આવી છે, તથા હોલમાં આવી છે, તથા હોલમાં આવી છે, તથા હોલમાં આવી છે હોય છે કરાનો 'ત્રાપ્ત 'ની જેમ પણ દ્રષ્ટથી શા માટે ઉપયોગ નહીં કરી હોય તે તે 'શેપાય કર્યું હતુરી છે, આખે તે શ્રેષ્ટ લેપાલ અમાર પરમ્પુલ્ય પરમ- જીવેલ આવા પ્રત્મ ફિલ્મલિલ્સિયરિયરછ મહોરાભા કરી સ્ક્રા છે અને તેના છે લાગ પ્રત્ય લાળતું 'પાક્લમાં વ્યાક છે.

પૂત્રને ઘટી વિજય ઉપાધ્યાયછ મહારાવાનો શાંભાવગાય ઘણા જ ઊંડા હતો. સુત્રના ઠેવળ શહાશી પર એમનો બાંધ નિર્વાર ન હતો પણ એમનો સાધ એક પરાર્થે હતો અને તેથી જ તેઓગ્રીએ કેકાલું કેકાલું હતાં ત્યા સ્વાયાઓપની વાત સંધે છે ત્યાં ત્યાં ચાર પ્રકારના અર્થની વાત કરી છે. એમણે એ ચાર પ્રકારના અર્થની વાત જેટલી વિશ્વક સીતે કરી છે તેટલી કેલું પણ શ્રેષ્કાર સર્ધી હોય એલું લાલુવામાં નથી. તેઓશ્રી ચાર પ્રકારના ગાર્થની પદાર્થ, લાકવારે, મહાવાકવાર્થ અને એદંપયોર્થની વાત કરે છે ત્યારે તેમાં પણ સ્વાધીકાલ્યનોનો દોષ ન આવે તે માટે વાહિસુધણ મેહલ વાહિસુરિ મહારાભએ 'ઢાંહ્યાસ્ત્યચલ 'ના પ્રત્યેક ' અર'ના અપે જેમ 'આપેં' કહી પ્રમાસ ઢાંકયાં છે તેમ તેઓઓએ પણ શાઓનાં પ્રમાણ ઢાંકયાં છે.

એ લખ્ય પ્રતિભાગી પ્રવિમા સમા એ મહાપુરુષે કાઇ પણ દેકાણે સ્વતંત્ર કલ્પના કરી નથી પણ સિહસેન દિવાકર તથા સત્લવાહિસ્ત્રિયિક્ટ સહારાજ તથા જિનબદ્ર લિ સમાપ્રસ્થાના સિહ લિલ વાતખોની સમન્વવ સાથી પોતાના પૂન્યો પ્રત્યેના આદર બદ્દત કેરો કે, એમની એ સમન્વવપ્રદિતની ભાજે આપણે ક્ષત્રણ તે કોડ્ય ઉપયોગ કરતાં શીળી તથ તો આવે પરસ્પત્રી વિચારધારાઓની અપહાંત્રણ તથા સમાજમાં બપોરી કૃષ્ય મહેરે ટાળી શકાય.

એ પુરત્વ પુરુષ પોતાના ગચ્છનાં ચાલતા મતલેદોમાં જરા પણ પડવા નથી એમ તેમના 'શુમ'ત શહે 'તા સંશોધન તથા તેમા કરેશા દિખ્યણે હાલ બાલવા મળે છે. તેઓકોના વિહાંત હતો. કે દેશનાની ચોકતાથી શાસનની પશાયના થાય છે. એઓક્રીના 'ગ્રુસ્તન્યવિન્હેય' માં છતાવેદો. એ સુંદર માર્ગ હહું અપનાવે તો શાસનની સુંદરતામાં જરા પણ ઊલ્લપ રહે તહીં. આઠલી મારી શ્રમણસ લ પાસે મુકેલી સાગણી અવસ્ય સફત વશે એવી શાશા છે.

એ મહાપુરુષ નથી શાનના જ ઉપાસક હતા કોર્યુ કેવન કરનારા એમણી ફાન અને કિયાની છે. પાંપામાથી માત્ર એક જ પાંખને ત્યાગળ કરનારા છે અને કિયાની પાંખ પ્રત્યે ફ્લજેક કરનારા છે તેઓશ્રી 'શાન-કિયાન્યો 'સાદ્ય' એ સ્વતા સુરત ઉપાસક હતા.

એ પ્રભાવક પુરવ પુરુષતું સંગોપાય વ્યક્તિ આપણને સળી શકતું નથી પણ તેઓક્રી એમ સાનના પ્રભાવક કરા તેમ કિયાના પણ પ્રભાવક હતા તેથી જ તેઓક્રીએ એમ શાસનપ્રભાવક આઠ કશા છે અને સ્વાધ્યાલમાં ગાયા છે તેમ યાત્રા, પૂન સ્વાદિ કાર્ય કરનારાઓને પણ

'જળ નહિં હોવે પ્રભાવક અહવા, તવ વિધિ પૂર્વ અનેક; બતા પૂર્ભાદેક કરણી કરે, તેહ પ્રભાવક છેક.' કહીને એ જાતુધાનોને પણ શાસનની પ્રભાવતા તરીકે સ્વીકાર્યો છે.

ત્તેઓશીએ ૧૦૦ લન્તી કેવળ ન્યાવના લખ્યા હતા કે એવું પ્રસાણ બે લાખ રહ્યાં ક શાપ છે આથી લક્ષ્યાર્થે એમના ઉપર પ્રસાશ શકે તેમતે 'ન્યાયાચાર્ય'લું (ગરૂક આપ્યુ છે. હું ત્યારે ત્યારે એ પ્રહાપુરુવના લન્ત્યા વાસુ હું ત્યારે ત્યારે મને એમ જ શાય

શુ કવાર કવાર અ સહાયુર્વના કરવા વાસુ છું ત્યાર ત્વાર મન અમ જ શ્રીય છે કે એ પાવન સાધુપુરુવની સમાધિની સત્રીવધા જઇને અલ્લાસ કર્યું જેવી એમના બન્યાતું રહસ્ય સરળ રીતે પાસી શકું.

આવા સમન્વવ સાધક, વિલહ્યવાદના મહાન્ ઉદ્દેશાયક, ગ્રાનકિયાના અર્કેગ પુજારી, મહાર્ચાતમાન્ પરમપુરુષાર્થી, એક્કા હાથે નવ્યન્યાયની રૈલીએ સત પ્રત્યાની રચના કરનાર, વીરધર્મના એ અવિહક સગીને ટોડિ કોર્ડ વંદન કો !!!

ન્યાયદર્શનનું સ્વરૂપ

[લેખિકા — પૂ મ્યાર્ચાંશી મુગાવવી લોજ]

ભારતીય કરાંનામાં છ કરાંના વેદમૂલક છે. જેમ કે વેદાન્ત, સાંખ્ય, યાગ, ન્યાય, વૈશેષિક અને મીમાંસા. આ છ દર્શનામાંથી ત્રણ દર્શનાની મૂલ લિત્તિ પરમાણવાદ છે ન્યાય. વૈશેષિક ભને મીમાંસા કર્શનમાં પરમાણએ થી જગતની સૃષ્ટિ બતાવી છે. પૃથ્વી, જલ, તેજ ર્ભને વાસના પરમાશ દ્વાય છે એટલા માટે પૃખ્યી, જલ, તેજ અને વાસ નિત્ય અને અનિત્ય એમ એ વિભાગામાં વિભાગ છે. નિત્ય પૃથ્વી, નિત્ય જદા, નિત્ય તેજ અને નિતા વાય પરમાદારૂપ છે. કાર્યપૃથ્વી, કાર્યજલ, કાર્યતેજ, સર્ચવાસુ અનિત્ય કહેવાય છે. પરમાદા નિત્ય અને સક્રિયપકાર્થ છે. તેનું સ્વેટ્રય અત્યંત સુક્ષ્મ છે આથી પરસાદાના પરિપ્રાદ્યને. પોરિમાંડક્ય કહે છે. પરબાદાજોમાં કવિરની ઈચ્છા, પ્રયત્ન અને ત્રાનથી ક્રિયા ઉત્પત્ન થાય છે, એમાં છવાતં કાઈ કર્તૃત્વ નથી, પ્રક્ષવકાલમાં પરમાણ વિખરાઇ જતાં સંપૂર્ણ માં મારમાં વ્યાપ્ત અને છે, તેઓમાં ડ્રિયા હોવાથી એક પાર્વિય પરમાશ બીજા પાર્ટિય પરમાલની સાથે મળે છે જેને હચાઇક કહે છે ત્રલ હચાઇક મળવાથી ત્રસત્તા શાય છે. થાર ત્રસરેશ મળવાથી એક ચતુરશક બને છે, તે ચતુરશકથી સક્ષ્મમૃત્તિય બને છે. તેશી સુત્રિપેડ શાય છે. તેશી કપાલ અને છે. તેથી ઘટ અને છે. એ જ કમશો જલીય પરમાણના પરસ્પર સ રોગાઈ જળતી અચ્દિ શાય છે. આ રીતે તેજ અને વાસની સચ્દિ શાય છે. મ્યાકાશ, કાલ, દિશા, ભારમા અને મના આ પાંચ પદાર્થ નિત્ય છે. આમાં આકાશ કાલ. દિશા અને આત્મા વ્યાપક છે પરંતુ મન ગતાંત પરમાણસ્વરૂપ લઘુ છે. મૃષ્ટિની આ પ્રક્રિયા ન્યાયદર્શન, વૈશેષિકદર્શન અને મીમાંસાદર્શનમાં સમાન છે. આથી જા ત્રરો દર્શનામાં પરમાલવાદ મુખ્ય છે. કેવળ એટલ જ અંતર છે કે ચીમાંસાદર્શનમા કમેને પ્રધાસના આપી છે. કર્મ અર્થાત ચન્નાહિક કિયા સાનવાને સ્વર્ગ અપાવે છે. આ ત્રણ દર્શના સિવાય સાંપ્ર્ય અને પાંતજલ વેડ્યક્શનમાં પ્રકૃતિવાદ પ્રધાન વસ્તુવિષય છે. પ્રકૃતિથી જ સંસારની રચના શાય છે. પ્રકૃતિથી મહત્તતત્ત્વ, મહત્તતત્ત્વથી અહંકાર અને અહંકારથી પચતન્માત્રા, પંચતન્માત્રાથી પંચમહાભૂત પંચમહાભૂતથી સ્થલ જગતમાં ઉત્પન્ન થયેલા પદાશોની સચ્છિ થાય છે. આથી આ દર્શનામાં પ્રકૃતિવાદન વિવેચન કરેલું છે. વેદાન્ત-દર્શ'નમાં માયાવાદ પ્રધાન વસ્તુ છે. માયાથી જગતની સૃષ્ટિ થાય છે. સત્ત્વગુણ, રજેગુણ, તમાગુલ જેવી રીતે સાંખ્ય-યાગદર્શનમાં કહેલાં છે એવી જ રીતે વેદાન્તદર્શનમાં પણ એને સુબિનાં સઢાયક ઢઢાં છે પરંત માગતે જ પ્રધાન સ્થાન આપ્યુ છે. માયાતં સ્વરૂપ

વચનથી ખલાવી શકાતું નથી તે સત્ છે યા વ્યસ્ત છે તે કહેવું કહિન છે પરંદ્ર શુદ્ધ સત્ત્રપ્રધાન માચાની ઉપર ચેતન્ય પ્રદ્રાશું પ્રતિર્ભિય પડે છે. પ્રતિબિચ્ચિત ચેતન્ય ઈચર યા હિરવ્યપર્ભ રૂપથી કહેવાય છે. તે જ ઈચર લગ્લનો સ્થયા ને નિયન્તા કહેવાય છે. ત્યારે માચા પાતાના કાર્યચહિત શુદ્ધ લગ્લાનહોરા હીન થઈ લગ્ન છે ત્યારે મતુષ્ય મુક્ત શર્ધ લાય છે.

ત્યાય અને વેશેષિક દર્શનમાં કંચર આ રીતે મનાય છે. આત્માના છે લેંદ છે. ભવાતમાં અનેલ છે તે સખી, દ્રાખી શક શકે છે પરંતુ હંજાર પરમાતમાં એક છે તેમાં નિત્ય ત્રાન, નિત્ય યત્ન, નિત્ય ઇચ્છા રહે છે. તેનું અસ્તિત્વ ત્રણ કાલમાં અને ચીક લવનમાં સર્વંત્ર સમાન છે. તે ધર્મ ને અધર્મના અભાવથી સખી અથવા દઃખી નથી થઇ શકતાં. સખ ને દાખમાં, ધર્મ અને અધર્મને નિમિત્ત કારણ કહે છે. જીવ જે સુખો અઘવા દુ:ખી શર્ધ શકે છે તેમાં ધર્મ ને જાધર્મ રહે છે. યેરગદર્શનમાં ઈયરની સત્તા માન્ય છે. कलेशकर्म-विपाकान्नार्यरपरासन्द्रः पुरुपविस्रेष केंग्रवर । अर्थात क्वेश्व, क्रमं, विपाक ने आश्रम आ ચાર પહાંચીથી રહિત દોય એવા પ્રસ્થવિશેયને ઈશ્વર કહેવાય છે. સાંખ્યદર્શન નિશેશ્વરવાની છે. કારણ કે તેઓ સર્વે પ્રસ્ય નિર્સંજ ને નિર્શિપ્ત છે. જલમાં કમલપત્રના સરખા તે પરધા સંસારમાં રહેવા છતાં નિર્લિપ્ત કહેવાય છે એટલા માટે સંખ્યકશેનના ણહેપુરુષવાદ પ્રશસ્ત છે. ન્યાયદર્શનના કર્તા ગૌતમ ઋષિ છે. જેને અસપાદ ઋષિ એવા પીજા નામે પણ આપણે ઓળખીએ છીએ, ન્યાયલાધ્યના કર્તા વાત્સ્યાયન છે. વાત્સ્યાયન ભાષ્યના ઉપર વાર્તિક રચનારા ભાષદાજ ઉઠ્ઠાતકર આચાર્ય છે. ઉઠ્ઠાોતકરે રચેલા વાર્તિ'ક ઉપર તેની ટીકા 'ન્યાયવાર્તિ'ક તાત્પર્ય ' છે. તેની ટીકા ઉદયનાચાર્યાં વરચિત 'પરિશહિ' તામે છે પરિશહિતી ટીકા વર્ષમાનાપાલ્યાય સચિત 'પ્રકાશ' નામક છે. આવી રીતે સૂત્ર, વાર્તિક, ભાષ્યને અનુસરલ કરીને અનેક પ્રદ્રીક લંકો બનેલા છે. જેનાથી ન્યાયની શાખા. પ્રશાખા વધતી ગઈ છે. આવી રીતે પાંચસા વર્ષ પહેલાં કેવળ પ્રાચીન ન્યાયના પ્રચાર હતા. પછીથી ગંગેશાપાંચાય નામે માટા નેયાયક વિદાને ' તત્ત્વચિતામણિ ' નામક નવ્યત્યાવના શ્રંથ બનાવ્યા: જે પાચસા વર્ષથી સંપૂર્વ ભાગ્તમાં પ્રચલિત શર્છ ગયેલ છે. ગાંગેશાયાથાય નિશ્વિલાનિવાસી હતા તેઓશ્રીના પ્રત્ર વધે માનાયાયાય ' ભત્ત-થિ તામરવાલેક ' નામની ટીકા લનાવી પહિત પક્ષક્રસિશ પોતાના સમક્ષ્મીન વિદાનોમાં અપ્રતિકંદી નૈયાવિક હતા. તેઓ એ સમયમા કુલપતિ કહેવાતા હતા વાંગદેશથી રઘનાથ શિરામણિ નામના વિદ્વાન મિશિલાદેશમાં તેમની ધારો નવ્યત્યાય ભગવા માટે ગયા. નવ્યન્યાયતું અધ્યયન કરીને ગંગદેશમા ગાવી 'તત્વચિંતામક્ષિ-દીધિતિ' નામક દીકા તેમને બનાવી તે અવલ બીને જ અદીશ ભદાસાર્ય ' જા ગદીશી ટોકા ' તું નિર્માલ કર્યું. પદીથી મધુનનાથ-તર્કવાગીશે 'તત્ત્વર્ચિતામહિસ્વસ્વ' નામક ઢીકા લનાવો, પત્ની માઢા માટા વિદ્વાનાએ આના ઉપર મવેષણાત્મક અનેક પ્રકારના કોઠવત્રા લખ્યાં આ રીતે ખંગદેશ. મિધિલા, દક્ષિણ, કાશી, મહારાષ્ટ્ર અને સુજરાતમાં નવ્યત્યાય પ્રચલિત થયે!

ત્યાય અને વૈરાયકદર્શનમાં બેદ—

તેરીપિક દર્શનમાં ત્રણ પ્રમાણ માન્યાં છે. ગ્રહ્મણ, અનુમાન અને શબ્દ, ઉપમાન-પ્રમાણ એમાં ન માન્ય, કારણ કે તેના સમાવેશ અનુમાનની અંતર્ગત થાય છે. ન્યાય દર્શનમાં ચાર પ્રમાણ કહ્યાં છે પ્રત્યક્ષ, અનુસાન, ઉપમાન અને શબ્દ. ચક્ષરાદિ ઈદિયોથી જે ત્રાત શાય છે તે જ્ઞાનના સાધનપ્રમાણને 'પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ ' કહે છે. વ્યાપ્તિ જ્ઞાનને अनुभान प्रभाव क्षेत्रे हे. यत्र यत्र वसः तत्र तत्र अस्ति । आ साद्ध्यरं नियभने 'व्यापि' કહે છે. જેમાં પરામાર્ગતાન વ્યાપાર સ્થાનીય છે. સાકરય ત્રાનને ઉપમાન પ્રમાણ કહે છે. गोसवद्यो गवय । आ ઉપभान प्रभावन् हिहास्ट्रस हे. आप्तोपदेशः शब्दः। आप्तप्रदेशेथी ઉપદિશ્યમાન શબ્દ પ્રમાણ કહેવાય છે. આપ્તપરય તેને કહેવાય છે જે सर्वहा यथार्थ વકતા હોય. પ્રાચીન ત્યાયમાં પદાર્થીન વિવસ્થ કર્યું છે. આમાં સત્ર, વાર્તિક, અને સાધ્યત महत्त्व अधिक के. प्राचीतकावकां के देवात्मवादी हार्शनिक्षेत्र वेता तेना सवनं भाउन કરત એ ભાષ્ય ને વાર્લિકનું પ્રધાન લક્ષ્ય હતું, પરંતુ પ્રચેચ પદાર્થીનું નિરૂપણ સખ્ય હતું. નભાન્યાયમાં પ્રમાણના વિચાર જ પ્રધાન રહ્યો છે. ગાથી ' તત્વચિંતામાં છે' ઘંચમાં થાર ખંડ છે. પ્રત્યક્ષખંડ, જાતુમાનખંડ, ઉપમાનખંડ જાતે શુષ્કખંડ, પ્રત્યક્ષખંડમાં ચલારાદિ ઇંદ્રિયોદારા જ્ઞાન થાય છે તેનુ દિગૃદર્શન કરાવ્યું છે. પ્રમાણથી પ્રચેયના શે મંબ'લ છે એ બતાવ્યું છે. ઇંદિયાના વિષયની સાથે સંબંધ હોવાથી ત્રાન થાય છે તે માં ખંધને ન્યાયમાં અન્નિકર્ય કહે છે. તે સંનિકર્યના છે જોઇ છે. લોકિક સન્નિકર્ય થયતે ગરોકિક રન્તિકર્ય, અ<u>લોકિક સન્નિકર્ય</u> કે પ્રકારના છે. સામાન્ય **લક્ષણ** અને જ્ઞાન**લક્ષ**ણ. લીકિક સન્નિકર્ષ 🖶 પ્રકારે છે. સંચાય, સંગ્રુક્તસમવાય, સંગ્રુક્તસમવેદસમવાય, સમવાય, સમલેદસમવાય, વિશેષભ્રવિશેષ્યભાવ. એક લેગથી ઉત્પન્ન થયેલ સન્નિકર્ય કહેવાય છે: જેને ત્રેગજ કહે છે. ત્રેગજ અન્નિકર્ય હારા ત્રેગીલાક દેશભ્યવધાન અને કાલ વ્યવધાન શકેવા છતાં વસ્તને પ્રત્યક્ષ દેખે છે. આથી ચાંગીઓની સામે દર દેશની વસ્ત પણ હસ્તામલકવત દેખાય છે. ચાેગી બે પ્રકારના છે. સંક્ત અને ચંજાન, ચંજાન સાધક યાંગી હોય છે. તે ચિંતા કરવાથી જેગજ સન્નિકર્યથી વસ્તુઓને દેખે છે. પરત ક્ષેક્રાયાંગી સિદ્ધયાત્રી કહેવાય છે. તે સર્વદા વસ્તુઓને હસ્તામકઠવત દેખે છે. આ જ પ્રત્યક્ષમાં ડમાં આત્મદર્શન પદ્મ દેખાડ્યું છે. ચીલાના આત્માનો સાથે અનમાનથી શાય છે. બીજાઓની પ્રવૃત્તિ જોઇ ને ગાતમાં છે તેમ બાંધ થાય છે. જેવી રીતે ગતિશી સાર્શ્યિક ચતુમાન થાય છે. સ્વાત્માના પ્રત્યક્ષ ચતુલવ થાય છે. રૂપ, રસ, ગંધ, સ્પર્શ, શબ્દ ઇત્યાદિ નહીં રહેવાથી અહિરિન્દ્રિયથી સ્વાત્સાના બાધ થતા. નથી પરંતુ મનઘી જ તેના બાધ શાય છે: આશ્રી મનને ઇંદિય માને છે, કારણ કે તે ગ્રાનનું સાધન છે. આટલં સમજ લું ખાસ જરૂરી છે કે શહે સ્વારમાના બાધ થઈ શકતો નથી, જ્યારે તે આત્માં જણાય છે ત્યારે કાઈ ને કાઈ ગુજુના સાથી ગાત્માના બાય થાય છે. જેવી રીતે હું સુખી છું, હું દુ:ખી છું, હું ઇચ્છાવાલા છું, હું વત્તવાળા છું ઇત્યાદિ લાધમાં આત્મા જેવા

વિશેષ્ય છે તેવી જ રીતે સૂખ, દ્વઃખ, ઈચ્છા, પ્રયત્ન વિશેષણરૂપથી લાસિત થાય છે. ળીજ આત્માને જાણવા માટે ગતુમાન પ્રમાણની ગાવશ્યકતા છે. ગા ગતુમાન પ્રમાસ મતુમાનખંડમાં કહેલ છે. ત્યાપ્તિમાન જ ગતુમાન છે. પરમર્શ જ ભ્યાપાર છે, વ્યાપારથી યુક્ત હોવાથી જ ભ્યાપ્તિસાન કરણ કહેવાશે. પ્રસિતિકરણને પ્રસાણ કહે છે. ભ્યાપાર યમત ઋસાધારણ પ્રારક્ષને કરકા કહે છે. અનમિતિ ગ્રાનના માટે હેત આવશ્યક છે. હેત છે પ્રકારના છે. સફલેત અને હેત્વાલાસ. સફલેત લાણવા માટે હેત્વાલાસને જ્ઞાન આવશ્યક છે. આવી રીતે ઉપમાન ખેડમાં ઉપમાન પ્રમાણનું વર્ણન કર્યું છે. સાદરય જ્ઞાનને ઉપમાન क्षे हे गोसरको गक्यः। या जात् विदादस्य हे. शब्दणं हमां शब्दमभावतं पर्वत કર્યું છે. તેથી શાબ્કબાય થાય છે. શાબ્કબાય માટે પહરાન તે કરજ છે અને પકાર્યજ્ઞાન વ્યાપાર ખતે છે. અર્થ બાયક શબ્દમાં રહેવાવાળી શક્તિ સહકારી કારણ છે. આ સામગ્રીથી શાબ્દ બાય કલ શાય છે. શાબ્દ બાયના માટે સંપૂર્ણ શાસ, પ્રસાહ અને ઇતિહાસ રચાર્યા છે. વૈશેષિક્તશ'નમાં સાત પદાર્થો માન્યા છે. દ્રવ્ય, ગુશ્ચ, કર્મ, સામાન્ય, વિશેય, સમવાય, અભાવ. ન્યાયકર્શનમાં સાળ પદાર્થી સાન્યા છે. પ્રમાણ, પ્રમેય, સંશય, પ્રયોજન, દર્શત, સિહોત, अवयद, तह , निश्च प, पाह, कहप, पित'ता, हेत, छक्ष, कार्ति, निश्वहस्थान, वैशेषिक કરા નના નિમાંશકતો કહ્યાદ જાય છે. તેઓશ્રીન બીન નામ ક્યાબક્ષી છે. વેરોવિકદરા નની ઉપર 'પ્રશાસ્ત્રપાક ' સુનિરચિત લાખ્ય છે, જે 'પ્રશસ્ત્રપાદભાષ્ય ' નામે પ્રસિદ્ધ છે. તે ભાષ્યના ઉપર સથિલી પહિલ ઉદયનાસાર્વે જે 'કિસ્લાવતી ' દેશ લાનાની છે. તેના ઉપર ભગીરથ ઠાકરની 'ડીકા' છે. બ્યામશિવાચાર્યની પણ 'ડીકા' છે. પ્રસિદ્ધ પંદિત શ'કરમિશ્રે ' ઉપરકારક ' નામક સત્રની ઉત્તર વ્યાપ્યાન અનાવ્યુ છે. તેઓનો જ ' કથાઇ-રહેલ્ય ' નામક પ્રક્રવાલાં છ લેકેન્દ્રિક હર્લન તાપ્ર કવાને કારલ છે છે કે વ્યામાં એક विशेष पहार्थ भानेत है. विशेष पहार्थ न तथाय आ हे-तिरादश्यवन्तित्वे सति स्वती न्यापृतस्यं विशेषत्वम् । अर्थात् के वस्त नित्यद्रव्यमां रहेवावाणी के अने स्वतो व्याष्ट्र**ण** હાય જેના વ્યાવવા કથા પશ્ચિક્ટક નથી. આના આશ્રવ આ છે કે જવ અને ગાયમમાં हां क्षेत्र के ? क्याने। हत्तार क्या प्रकार के के

આ ગતને હું મૂળ કરવા પરમાણિકન્ત છે. પુત: આ પ્રશ્ન ME છે પરમાણું બ પરસ્પર લિન્ન કેમ છે ? તેનો હવર એ છે કે બળના પરમાણુમાં સોક વિશેષ નામાં પદારે છે જતે ગોધુમના પરતાલુમાં વિશેષ નામક પદાર્થ છે, જે પરમાણુમાં સ્થર પરસ્પ સોક કરી કે છે પરંતુ લાગે સ્વોત્યાવત છે, તેનો કોઈ જ્વન લેક્ક નથી. આ વિદેષ પદારે મેં સતવાલી એ દર્શ નહું નામ વેશેષિક દર્શન વર્ષ ન્યાયદાર્થન એનું નામ એટલા સાટે ચર્ચ કે જાતુમિત્યાત્મક સાનના સાટે જાતુમાનનો ઉપયોગ કરવો પઢે છે. પ્રેતાને જાતુમિતિ સાન કરાવલ માટે પંચાળવા વાકનો પ્રયોગ કરવો પઢે છે. આ પંચાયવાલ વાકથમે 'ત્યાર' કરી છે. આના આપાર પર નાયદાર્થન શરૂ છે. પંચાયવાલ વાકથ આ પ્રમાણે છે-વર્ષાલ્ય કર્યું છે. विद्वमान आ पाक्ष्यने अतिहा केहे है. घमात आ देत थेथे। यत्र यत्र धमः तत्र तत्रं चिद्धः, यथा महानसम् व्या पार्थय विद्यादेशः रहेवातुं, यसमात् व्ययम् धूमवान् व्या विपानयः भदेवाये। तस्मात रहिमान आ निज्ञभन भदेवाय, आ प्रधावथव जातते न्याय भदे हे. ન્યાયદર્શનને તર્મભાસ પણ કહે છે. તર્ધ શખ્દનો એ અર્થ શાય છે કે સામાનાનોડોન व्यापकारोप: तक: अर्थात व्याप्यने। आरोध अरवाशी व्यापक्रते। के आरोध ते तह होवाय छे लेवी शेते धुमो यदि विहिन्याच्यो न स्यात् तदा विहिनन्यो न स्याद् धुम ले विहिन ભ્યાપ્યાન હોત તે તે ઉત્પન્ન જ ન ચાઈ શકે. જે સાટે વહિંચી ઉત્પન્ન થાય છે જોડલા માટે વહિના એ બ્યાપ્ય છે. આ તક પ્રમાણ દ્વારા ધૂમની સાથે વહિનની બ્યાપ્તિના નિશ્ચય શાય છે. આ પ્રમાણે વ્યાપિતગાન હોવાથી ધમથો પહાડમાં ઝટરથ અગ્નિત અનુમાન करी शक्त्य है कोटवा भाटे तर्डनी व्यवस्थकता है न्यायदर्शनमा इस है व्यक्तिकारि-हाडानियर्तक अनुकूलस्तकं अर्थात् व्यक्तिज्ञानमां ४ व्यक्तिश्वारीनी के शंक्ष थाय है, તેએ નિવર્તાદ તકે છે. આશો ભ્યાધિતત્રાન સ્થિર થઇ લાય છે. બ્યાપ્તિજ્ઞાનને અતમાન प्रभाश हुड़े हे, तेही अनुमितिहान बाद है. व्या प्रभाश अनुभिति ज्ञानन सह क्षरण તારે ક્રાલાથી આ શાસને તારે શાસ કહે છે. નવ્યન્યાયને વિશેષરપથી તારે શાસ એટલા માટે કહે છે કે તેમાં પ્રમાણત જ વિવરણ કરેલ છે. પ્રસેવ પદાર્થોત વિવરણ પ્રાચીન ન્યાય-શાસમાં અને વેરોપિકદર્શન શાસમાં જે કર્શ છે તે જ માન્ય છે!

> यवास्त्रानं शुकोरप्तेः, सुवैषेतेष सेपद्धम् । वास्त्रावपेक्षसा देवा देवाना हेवानाशिक्षा ॥१॥ अञ्जेली हर्रपत कर्ता सेग्य धन भूषण रूप सारेः देव तत्रांश ह्या आपे छै तेग माणाः माहि पानियो अपेक्षाने द्वागते ताव अस्तारी देवता आपत्ती कीर्यने हाजिंगकर] [श्रीशह परिवारिक्यक्ष

મહાપાધ્યાયજએ કરેલા ઉપકાર

[સેખિકા: પૂ૦ સાધ્વી ક્રો. મંજીલાગ્રીછ]

શી. પૈરોવિજયાછ મહારાજ જૈન ગાહમમાં શ્રી ઉપાધ્યાયછની રાંતાથી ક્યતિ-પ્રસિદ છે. આ મહાપુરુપની બાહપાણથી જ કોઈ અલ્લ શુદિ હતી કે, તે ત્રાણતાં સ્તલ્ય અની જવાય. પૈતાના છવ્યકાળમાં ત્રાસ્તુત, પ્રાકૃત, હિંદી અને કુલ્યતી આદિ ભાષામાં હતારી શ્લાકપ્રમાણ ગ્રેશીની રચના કરી, અનેક આત્માઓને પ્રતિક્રેલ પમાહી, સેક્ટ્રેલ પશ્ચાનીઓને છતી, આ મહાપુરુપે શ્રી તૈન શાસનોને ગૌરવાળી વિજયધ્વજ ફસાઓ છે, જે આજ મુધી સાહિત્યવ્યત્તમાં જાલ્યમ સહેવા પામ્યો છે.

તાકિ⁸ક શિરામણિ .—

રહી તૈને શાયનના પરસ મભાવક મહાપુરુપોમાં (વર્તમાનમાં) છેટ્ટામાં છેટ્ટા રપ-વર્ષ ઉપર આ એકલ્પ મહાન પરસ મસાવક પુરુષ થયા છે. આ મહાપુરુપ એવા થયા છે કે, જેવે પાતાના છનનની બિલફ્રેક પરવા રાખ્યા વિના સાચા લિલ્લો જેટ્ટા ઉપકાર કર્યો છે, તેટેદા અત્યારે આપણે વહેંદ્ર વધા લાક્ષાયક નીવડ્યો છે. આગે પણ તેઓકોનાં અનેક મુન્દરેક ઉપાયબ છે. તે આપણે તેને રેળવવા તત્ત-મત, અને ધનશો ઉદ્યસ કરીએ, ને તેમના ગ્રેશ વાંચી, લખી, આપણા છવતની અંદર તેઓકોનાં વચનો ઇક્ષ્ટરસની પેંદ ઉદારીએ, ને તેમનાં વચન પર વિચાર રાખી અદ્યત્વીઓ, તો લ આપણે અરેખર તેઓક્રીના શિખ્યો છીએ. આદી તો ખાસી દુનિયા પર જેમ લાણા માણાં આપણો આગળાં તે પરલેશ ગયા તેવી જ રીતે આપણે પણ દુનિયા પર જેમ લાણા માણો આપણો છાં સ્વાર્થની આપણી સાથે આપણે સે મહાપુરુપ્ય છત્તન વાંચી, આપણે છવત તેલે બને તેમ કરવા મચનાદીલ બનવું તર્કાએ

સ્થા મહાપુરુષની પૂર્વાવશ્ચાત નામ જયાર્વ કુમાર હતું. જરારવંત કુમારના જન્મ કન્હેાઢા નામના ગામમાં થયા હતા. એ કન્હેાઢા નામના ગામમાં થયા હતા. એ કન્હેાઢા નામ ગુજર દેશના અલકાર તુલ્ય સ્થિહિલપુર પાટેરકૃષી નદષ્ટક કુલ્યુરેર નામ પાસે આવેલું છે. જરાર્વત કુમારના પિતાનું નામ નારાયણભાઈ હતું, અને ગાતાનું નામ સોશાયાર હતું. હતો તેઓ તેન સાસ્ત્ર હતા. શ્રી તેન શાસ્ત્ર સ્તાર શ્રી તેન ક્ષાર પ્રસ્તા આવેલાના સુધોગે શ્રી, જરાર્વત કુમારને ભાલ્ય વસ્ત્રો જ તેરાયની પ્રાપ્તિ થઈ હતી. આ બાળકની માતાને પણ તેનેલમાં પર સેથે સહસ સત્ત્ર હતો. કે, તેની કરવના પણ ન કર્યા શક્ય હતી સાતાને એવા નિયમ હતો કે, 'ભાગમર તેના " સંભળના વિના અન્વપાદી પણ સંદેશ ત કરતું.

એક વખત શ્રાવણ મામના દિવસ હતા. આકાશમાં કાળાં લમ્મર વાદળાં સપાડાળ ધ કાહી રહ્યાં હતાં. ઉકળાડ પણ ઘણા જ હતા. વરસાદ જરૂર આવવા જ .બેઈ એ. એવી આગાડી શર્મ રહી હતી. એવામાં જ લવંકર મર્જનાએ થવા લાગી. કાન કાડી નાખે તેવા ગરહ ગઢહ અવાને થવા લાગ્યા જાણે હમશાં જ ગાકાશ તટી પહેશે. દેહા પવનના સસવાડા થવા કારવા અને વીજળી ચમક ચમકવા લાગી. આકાશમાં દનદોર વાદર્ભ છવાઈ જતાં અધે ડેકાલે ધોળે દિવસે અધકાર વ્યાપી ગયા અને લહી છે ઘડીમાં તા એક કારમાં કહાકાની સાથે ધાષમાર વરસાદ વૃદી પહેલો. ચારે બાબુએ જળ બાબાર શર્ધ રહ્યું. હતાં ભુગા ત્યાં પાણી જ પાણી, ત્રણ દિવસ થયા, પણ વરસાદ બંધ રહ્યો નહિ. થ'ક કેટ તેવાં ચિટ્ઠો પણ જણાવાં નહિ, તે વખતે જશાવંતકુમાર અમદાવાદમા રહેતા હતા. તેમની ઉંમર કેક્લ સાત વર્ષની હતી. વરસાદ ત્રણ દિવસ સધી લાગશાગઢ એકધારા શાહ રહેવાથી તેમની માતા પરમ પવિત્ર સ્તોત્ર સાંલક્ષ્યા વિના ભૂખ્યા, તરસ્યાં ધરની અ દર ગિસી રહ્યાં. ચાલા દિવસે જશાવત કુમારે વિનચપૂર્વંક પાતાનાં માતુલીને નમસ્કાર કરીને પુષ્ટ્યું કે, ' હે માતા ! ત્રણ દિવસ થયા શા માટે લોજન હેતાં નથી ! શા માટે લખ્યાં સાર્કરહ્યા છે ! તમને શંદ અ છે તે તે કહે. ' પત્રનાં આવાં વહાલ લાયો વચના સાલાળી માતાને એક્કમ ઉપલક્ષા આવ્યા. તેમણે એ હાઠકવાયા પુત્રને હવંદ્વેર છાતી સરસા ચાંપ્યા. ને કહેવા લાગ્યાં કે, 'હે યુવ! મારે એક એવા ગંભીર અભિગ્રહ છે કે 'સક્ષ્તામર રતાત્ર 'તુ શ્રવસ્ ન કર્ટ્સ' ત્યા સુધી શોલન કરતું નહીં. ત્રલ હિવસથી વરસાદ ગંધ રહ્યો નહિ જાને મારી તબિયત પણ નરમ દેશવાથી હું ગુરુછ પાસે જઇ શકી નથી, અને એ જ કારતો सोक्स हेती नहीं, ²

પુત્રે કહ્યું: 'ઓહો, એમાં શું! તમે મને ત્રહ્યું દિવસથી દેમ કહેતાં નઘી! તે

આ વચન સાંભળી, જ્યાં એક્ટ આવી ઊડવો કે, ' ગાતાછ એક દિવસે તમે મને તમારી સાથે ઉપાશ્ચે સુરુ પાસે કશેન કરવા લઈ ગયાં હતાં, તે જ વખતે મેં આ સ્તોત્ર સાંમળ્યું હતું, ત્યારતુ મને લાક રહી ગયું હતું.'

પોતાના અળકનાં જાવાં જાણુત વચનો ને સ્વરણકાદિત ત્રેઇ માતાને પૂળ જ્ઞાનંક થયે. ' ભારતામર' જેવું સંસ્તૃત કાવ્ય એક વખત સાલવાને વાદ રાખનાર, પેતાનો પૂત્ર લવિત્યમાં મહાન થયે, એવા વિચાર થવા લાગ્યો વિવારો આવતાની સાથે તેની કહતી ગળ ગળ જીકળવા લાગ્યો, મતાઓ જાત્વંત જ્ઞાનંક થયા લાગ્યો; મતાઓ પેતાના આતાના પૃથે કર્યા કર્યા સાલવાની જ્યુમ તપણ કરતી પારસું કર્યું. એ પછી પણ પાછનાથી સાર ક્લિસ સુધી વરસાદ ચાલ રહ્યો; જેવું જેતી સાતાંગે દિવસે વરસાદ અંધ વહેતાં ' જો!" અને તેની માતા જિયક્ષ સુધી કરાદ ચાલ કર્યા કરતી સાલાં એટલે ગુરુ અદલાં જાય કરતાં જે તેના સાતાં કિલ્સન ઉપયાસ કરાય કરે ' કે સુકાર્યાદ વારત તેની તરાતા સાલાં હોય તેને લાગુ!' તે સાલાં માતા વર્ષ સાલ હાય હેતી વિનયપૂર્વ' દેશાસ્ત્ર કર્યા હોય, તહિ વાગુ!' તે સાલાં અલ્લાની માતા હોય હાય તેને લિનયપૂર્વ' દેશાસ્ત્ર કરતાં કર્યા હોય, તહિ વાગુ!' તે સાલાં અલ્લાની માતા હોય સાથ ત્રાન ચાનાનકાર સાત વર્ષના ભાગતાના પોથી શ્રેલ જા કરતાં તે મારા વ્યક્તિક પૂર્વ કરતાં. ' મતા ચાનાનકાર સાત વર્ષના ભાગતાના મોથી શ્રેલ કરતાં તે મારા વ્યક્તિક પૂર્વ કરતાં.' મતા ચાનાનકાર સાત વર્ષના ભાગતાના મોથી શ્રેલ કરતાં તે મારા વ્યક્તિક પૂર્વ કરતાં.

માા સાંસળતાની સાથે જ ગુરુરેલની અગીશરી ફર્ક "જશા" ઉપર પડી. ગુરુષ્ટ તેને તેને વિરુપ્ય પામી બેલવા કે, "શું આહશા કુવાલ વાળકે તમતે એ સ્તીત્ર સંધર તાલ્યું!" સુશ્રિપિકાએ કહ્યું, 'હા, ગુરુરાત્ર, આપના પસાચાંથી તેણે એક હિનમ આપની પાસેથી તે સાલત્યું હતું, 'પાસવી જ આ દતોત તે કેન્દ્રય થઈ ત્યાં 'પાતાન પ્રત્યા તેના ભાવા" તે આ ભાવા તે કેન્દ્રય થઈ તથા 'પાતાન પ્રત્યા સામે ભાવા" તે અર્થા "તે સ્તેત્ર એક લાવ્યું હતું. ગુરુરુકા સાંત્ર સાથે ત્યાં પાતાન પ્રત્યા સાથે ભાવા" તે અર્થા ત્યાં પાતાન પ્રત્યા તેના પાતા કરે આશા ત્યાં પાતા પાતા તે ત્યાં જ ગુરુરુકા લાવ્યું ભાવા પાતા સાથે ત્યાં તેના પાતા તે ત્યાં ત્યાં ત્યાં પાતા તે ત્યાં તે તે પાતા તે તેના સાથે ક્ષ્માં સાથે તે તે તેના સાથે કે સ્ત્રો તેના સાથે કે સ્ત્રો સાથે તે તેના સાથે કે સ્ત્રો તેના સાથે તે તેના સાથે તે તેના સાથી તે આવ્યાં અર્થી ગુરુમાં કરાય લાગ્ય કે, તે લાળક ભવિષ્ય સ્ત્રો કરી તે તેના ત્યાં તે તેના સાથે કરી તે તેના સાથાની કરતા હ ઉપયો જ જ્યાં વ કે કે, તે લાળક ભવિષ્ય સંધી કે તેના તે તેના માના કરતી.

ગૃહિ નવવિજવછી અમલવાદના કેટલાક આવેવાનો નાગળ કહ્યું કે, 'તે "જરો!" ભારપણમાં ચારિત જ્ઞહ્યું કરે તો, તે ખરેષર શાસનો નેતા ખર્તે. જ્ઞાવદાએ છીરે દિવસે તેની માતુંકોને છોલાવેનિ જ્યાં ઉપદેશ આપી, "જલા"ના ઉદ્ધાર માટે સારા પ્રમાણમાં તેવી માતાએ નીચે પ્રમાણે ક્રાંકું— 'હે શુદ્ધ શ્રાવિકા, ને તારા પુત્રને ખાલ્યાવરણાથી જ ધર્મચારોહોતું જ્ઞાન આપવામાં આવે તો, તે ભવિષ્યમાં એક મહાન્ય ધર્મોહારક પ્રભાવક પુરુષ થશે, કરણ કે તે બહુ છુડિશાળી છે અને તે પુત્ર તમારી કુલોને દીષાયશે માટે શ્રંથની વિનિંદ સ્વી કરી તે બહુ છુડિશાળી છે અને તો પુત્ર તમારી કુલોને દીષાયશે માટે શ્રંથની વિનિંદ સ્વી કરી હતે અને સદ તરત જ વિચાર આવ્યો કે, એને તીર્લા કેવા પણ નમક્કર કરે છે, તે જ સંધ આવે તેના શાસત્ તે ઉત્તમ્યુ ભાગવા માટે મારા પુત્રનના આવ્યો કરે છે, તો જ પરંપર મારા પુત્રને મારે શુરુમહારાજને અપંદ્ય કરવો હોઈએ, એમ વિચારી માતાએ ધર્મ પુદ્ધી પુત્રને અપંદ્ય કરી એટહે, સર્થ તેને ખૂબ પત્યવાદ આપ્યો. પાયબી તો પંત્રત શ્રી. નથવિજયજ મહારાજકીએ તે જ્યાને સં. ૧૬૮૮ મા અલ્લિક્સપુર પારણમાં જઇને દીશા આપી. યુરુમહારાએ તેનુ નામ જ શ્રાવજયજી નથીલિંગ થઈ લાધુ લાધે હોશા શ્રદ્ધ કરી, અને તેમનું નામ પદ્ધવિજયજી રાખવામાં આવ્યો.

ફ્રી. ઉપાધ્યાયછ મહારાબાએ ધર્માપાદેશ અને વ્યાખ્યાનોહાશ સમાજમાં ત્રાપુતિ હાવવાને પ્રયત્ન કર્યો. તેઓક્ષીની બ્લાખ્યાન આપવાની રેહી એડલી ઉત્તમ હતી કે, તે સાંલળતાં જ કાઇ પછુ માલુસ તલ્લીન શઇ લાચ લાચાની સમલવડ, મધ્ય ગાલિત કાખલા-કાલીલા, તત્ત્વતાનનો ઉપાદેશ, અને સાન્ત રસના અદ્ભુત કાળુથી સ્રોતાઓ ડાલવા લાગતા હતા. તેઓક્રીનુ હ્યાખ્યાન સાંલળવા માટે લોકો ઘણે દ્વરથી આવતા હતા ચાને વાહ લાંહ ક્ષાત્રા.

એક ક્લિસ તેઓ ત્યાં સ્થંભત પાર્ચનાથ લાગવાનનું તી પંતાર પ લખ્ય દેશસાય કે, મેં ખંભાત નાંચે કુંદર નગરમાં આવ્યા. એક ક્લિય બ્લાખ્યાનના સમયે એક કુલ જેવા હેાસો સભ્રામા આવ્યો. તે હાસાને ક્લ્લો એતા જ સો યોગિલ્વ્યાજ મહારાજાએ તેમને નમસ્કાર કર્યો, એ એતાં જ સભાતી અંદર એકેલા સર્વ જેવાને અવનવા તર ગો આવવા તેમને નમસ્કાર કર્યો, એ એતાં જ સભાતી આંદર એકેલા સર્વ જેવાને અવનવા તર ગો આવવા લાગ્યા કે આ ભૂખડી બારસ જેવાને કોસ્સાને, અને અરસ્કાર સ્થાન આપ્યા અને અરસ્કાર કર્યો હશે કે પણ કરી. ઉપાધ્યાયજીએ તો તે હાસાને, સખ્યાતપૂર્વ કે એસલા માટે નમસ્કાર કર્યો હશે કે પણ કરી. ઉપાધ્યાયજીએ તો તો હાસાને સમ્યાતપૂર્વ કે એસલા માટે આસલ જાત્યું, પછી તેઓ ઓલોએ ઓતાઓને જણાવ્યું કે, 'આ લસ્કાર કર્યો કોસલા માત્ર વિવાસ્ત્ર એક પ્રાપ્ત વિવાસ્ત્ર અને સ્વાસ્ત્ર કરો!.'

ગુરુની આડલી સૂચના શતાં, અંબાતના શ્રાવકોએ તસ્ત જ ફાંધો કરોં અને તે ફાંધો સિત્તેર હતાર રૂપિયાનો થયો. તે રૂપિયા એ જ્રાહાલ પંડિતને દશિયા તરીકે અપેલ કર્યો. વિશાસુર પોતાના શિપ્યું જા સામર્ચ્ય એક ઘણા જ જીશી શઇ ગયા અને શિપ્યને શુભ્ર આશીર્વાદ આપી વિદાચ શયા.

ખરેખર, આવા મહાત્મા અત્યારે કોઈ સ્થળે આપણા કચનસીએ મળતા નથી પરંતુ 🗎 આપણે આવા મહાત્માનાં હળનવ્યસ્ત્રિ વાંચી, લખી, તેઓશ્રીના એક સામાન્ય શુષ્ પથ શક્યું કરીએ, તો ખરેખર આપણે સફળાની બની લઈએ; બાડી આપણે તેએ. શ્રીના નામે અત્યાર ક્રીતિ મેળવીએ છીએ, અને તે બહી જ સારી વાત છે પરંતુ તે આપણે આપણે સાચી લાનત રાખી તેમના સુધ્યેમાંથી એકાદ સુધતું પાલન કરીએ તો જ આપણે આવા પ્રકાન પુએપની નામના કાખી કરેનાય. ખરેખર, બે આપણે તેમના સાચા જ હિમ્મો હોર્મએ, અને આપણુને આપણું દેવ, શુરુ અને ધર્મ ઉપર હપૂર્ણ ક્રસ્તાં હોય તો આપણે તેઓશ્રીન લગ્નનો અનુસારી માયા, લાંક, પ્રપંચ, હ્વ-ચાર્ઇ તેમજ દરેક પ્રશાબ બ્લરનીની ત્યાંગ કરવો જ બોર્કેએ.

શાસાધાર સિવાયના બીને એક વધુ અક્ષર હન્યાયો સિવાય તેઓકોએ પોતાહું લવલીયુપશ્ચ સાળિત કરી આપ્યું છે. તેમના રસેલાં કરાવના આદિ એટલાં બધા સરળ, પૈક્ષક અને ગોધ્યક છે કે, આજે પણ આવશ્યક ચેત્યરં દ્વારામાં તે હપંપૂર્વક શાઈએ કોએ. તેઓકોનો નાનામા નાની કૃતિમાં પણ તાર્ક અને કાલ્યના પ્રસાદ તરી આવે છે. આવા એક પ્રસાદિક કેવિ, યુક્તિમાર્ગથા અન્તર ઉપાયક, અખંદ વેદની, શુધ્યત્તરનાર્ધ, નિર્ભક મિલ્યાત્ય અંતર્દાદનમહિ, પ્રખર જિનાસાપ્રતિવાલક અને પ્રચારક સહાપુરુષ્ટ ૧ સરસ્તુ તેનોમાં કામમ રહે તે સાટે આવશે જેટલા પ્રયત્ના શાય તેટલા પ્રયત્ને ૧ સ્ત્ર આવશ્યક છે. આ પ્રસંત્ર પાયક્ષ આવ્યા જેવી છે કે, આ સહાપુરુષની કૃતિએ ૧ સ્ત્ર આવશ્યક છે. આ પ્રસંત્ર એક એક વાદ ધ્યાનમા રાખવા જેવી છે કે, આ સહાપુરુષની કૃતિએ ૧ સુંત્ર પાય પાયના યાટે આગમ શાસ્ત્રના પ્રસ્તામાં ચીતાર્થ પુરુષાના ચરશ્રોની સ્ત્રે તેના તસ્ત્રમાં ૧ પાય પાય આ માટે આગમ શાસ્ત્રના પ્રસ્તામાં ચીતાર્થ પુરુષાના ચરશ્યોની સ્ત્રી ગાસ પાય અને એ કોયલ વર્ષનમાં લત્ય તા સમ્યસ્ત્રાત, સમ્યસ્ત્રસ્ત્ર અને સમ્યસ્ત્ર સમસ્ત્રારમાં નિશામાં આતંત્ર પ્રપ્ત શ્રાય

ખરેખર, આ મહાન પુરુષાં છત્વનચરિત્ર જેટર્ટ લખીએ તેટલું સાણે છે, પરંતુ ખત્યારે મારી જરજીહિયા વધારે લખી શકાય તેમ નથી. માસે, હે માસે વાર વાર આવા મહાન્ પુરુષના તથા જૈનધર્મને લગ્ના નિવધા કાઠી, ઇનામી ચાંજનાઓ કરી તત, મન અને ધનશો શાસનની જેટલી ઉત્તરિ શાય તેટલી કરવા પ્રયત્નશીલ નદેવે તેઈ છે.

अभर यशाविजयक

[લેખા પ. શ્રી. દલસુખ માલવણિયા]

ભારતીય કરાંનાની વિભિક્ષ પરંપશંચોના નિર્માણમાં ખાસ છોક વ્યક્તિના નહિં પંચ્ સરખા વિચારો ધરાવનાર એક વર્ગની બુદ્ધિ કાર્ય કરે છે. તે તે વર્ગમાંની ટ્રાંઇ એક વિદેશ વ્યક્તિ જ્યારે તે વર્ગના વિચારાને વ્યવસ્થિતરૂપ થ્યાપે છે. ત્યારે તે તે પરંપશ તે તે વ્યક્તિ વિદેશને નાંચે પ્રસિદ્ધિને પાંચે છે. પણ તેને થાર્ય એ વર્ચી દે તે વ્યક્તિએ તે તે પરંપણને અવસ્થિત કરી એટલે પછી બીલાઓએ કહેં જ કરવાલ વસ્તિ નથી.

ભારતીય ત્યાયકશંનને ગોલને વ્યવસ્થિત કર્યું એટલે તેલું કર્શન ત્યાં જ સમાન્ત થાય એમ નથી, બીજું એાતમમાં જે સૂળ વિચારા વ્યવસ્થિત થયા છે તેતું સમયં કરનામ ભાજ પણ વિચાના છે અને એ જ કેઠીકત ભારતીય બર્યા કર્શના વિચે કહી શકાય.

ભગવાન મહાનોર ક્રેન ધર્મ કે દર્શનને જે વ્યવસ્થિતરૂપ આપ્યું તેના વિષે પશુ ક્ષત ન્યાયે કહ્યું શકાય કે તેમાંતું અર્ધુ તેમનું પાતાનું હતું જ નહિ પણ સપ્યો વિચાર-ધારા ભદ્ધકાર એક વર્ષના વિચારાનું પ્રતિભિન્ન તેમની વ્યવસ્થામાં હતું. જે વસ્તુ એક બહિતની ક્ષેય છે, તે તેના રુત્યું પછી હલાં કેમાં તેના સંભવ છે પણ જે વસ્તું ક્ષેયું પરંપરા લંભાય છે અને તેને અતુસરનાર એંક વર્ષ જિય છે. પરિસ્થમમાં એધી જીલદું અને છે. ત્યાં જે દાર્શનેકો શ્રથ છે તે તેમેટ લાંગે વેચાઉલ્લ કર્શનને મહત્ત્વ વ્યાપે છે. પરિસ્થાર તેને દાર્શન્દેકોની પરંપણ બહું લંભાતી નથી. બેને કર્યક કરેનું હેલ્ય છે તેમ્યું કાર્યનાને સમર્થનમાં નહીં પણ તેના જન્મમાં જ મોટે લાંગે કહે છે. પરિસ્થાર્ય પેટેટ કે કન્પની પરંપા ઘરતારી કે તોમારી નથી વધુ તેઓ એકદા અહેલા જેવા સ્ત્રી લ્વય છે.

સ્માર્ય પરિસ્થિતિમાં ભારતીય કર્શેનામાં કોઇ પણ દાર્શનિકને સ્વતંત્ર કાર્શનિકનું પદ મળતું સંભવિત નથી, પણ ઐતા વ્યર્થ એ પણ નથી કે આસ્તના દાર્શનિકોને પોતાતું કોઈ જ દેવાને પણ હોતા નથી.

દિહ્તાન, ફેમ્પ્રેકીર્ત, વાતસ્પાલન, જેલ્લોતકર, શંકરાલારે, રાંક્સનું ન વાંધરપતિ, કુમારિંદ્દે, પ્રશસ્તપાલ જેવા મહેલ લાસ્ત્રીય દાર્શનિકાલો ક્રેપ્ક વર્લ હતા કર્યાપ્યું ક્ષેષ, પરંતુ પોતાનાં દર્શના ગાટે જે કંઈ તેમણે કર્યું છે, તે લેક સ્વતંત્ર દાર્શનિકના દાર્ષ કરતાં જવા પણ જીતરતું નથી. તે જ પ્રસાણે હૈલ દર્શન વિષે પણ કહી શકાય કે સિડ્સન, સમત્વલ, જિલલડ, અક્લંક, હરિલડ, વિદાનંદ કે ચરેાવિજ્યછ જેવાએએ હૈત દર્શનના નિરૂપણમાં જે ફાયા વ્યાપ્યા 🖩 તે તેમને રવતંત્ર દાર્શનિકા તરીકે લક્ષે યસ ત્રાપાયે પરંતુ તેમનાં કાર્યોનું મહત્ત્વ તેથી કર્ષ્ઠ ચાલું ચતું નથી. તેનાં કારણેનો વિચાર પણ અહીં ચોઠો કરી લેવો એકએ.

ન્યાયદર્શન કે વેરોધિકદર્શન વેદમલક દર્શન છે અને તેને મતે અતમા જેવા પદાર્થી તિત્ય છે. તેથી વિષરીત વેદાંતમાં અલેદને પ્રાથાન્ય છે. જ્યારે બીલ દર્શનમાં બધી જ વસ્તએ! કાશક-અનિત્ય છે ગૌતમ કે ક્લાદે શેદની સ્થાપનામાં જે દ્વીલાે આપી દેવ तेतं तिवास्त्र देशन्ते अर्वं व बोर्डले अने नित्यनी स्थापनानं धत्थापन भौदीके अर्वं व ત્તારાંએ, આ પરિસ્થિતિમાં ભારતીય દર્શનામાં પારસ્પરિક ખંડનની પરંપરા ચાલે એ રવાલાવિક છે. એટી જ આપણે તેઇએ છીએ કે ન્યાયસત્રમાં પાતાના સમય સધીમાં ન્યાય परंपरा सामे अन्य परंपरामां ले आहेपा हवा हता ते अधाना उत्तर आपवाना प्रवत શરી છે અને પાતાની માન્યતાને નવી કહીલાશી ટેઢ કરવામાં આવી છે. ત્યાયસન્નમાર પછી જે ગૌહ વિદ્વાના થયા તેમણે ન્યાયસવર્ના સ્થાપનાને ઉત્થાપી હતી. તેના ઉત્તર વાત્સ્યાયને માર્પીને ન્યાયદર્શનને દઢ કરવાના પ્રયત્ન કર્યા પણ તેતું ખંઠન કિંદનાળે કર્યું અને મીડપમને સ્થિર કરો. આ રીતે ત્યાય અને બીડીતાં જેમ વાગ્યત ઘર્ષ છે તેમ બીજા દર્શનાનું પદ્મ પરસ્પર ગ્રહ થયું છે. પ્રત્યેક દર્શનના પ્રસુખ વિદ્યાનનું એ કર્તાં અ મનાશું છે કે તેવી પાતાના સમય સધીમાં તે તે દર્શન વિષે જે આક્ષેપા કર્યા ક્ષેત્ર તેને નિવારસ કરીને નવી દહીશે આપી પાતાના પક્ષને દઢ કરવા એઈ એ. આશે પાતાના પક્ષને દેઉ કરવાનું કાર્ય કોઈ પણ નવી સ્થાપનાથી જશ પણ એકાલ સહત્વનં તકી એ આપણને સહજમા સમલાઈ લાય છે. આ વસ્તસ્થિતિના પ્રકાશમાં વાચક સંશોવિજયાળના તૈન દર્શન અને તે દ્વારા ભારતીય દર્શનામાં જે કાળા છે તેના જ્યારે વિચાર કરીએ છીએ ત્યારે તેમત' મહત્વ આપણી આગળ ભયસી આવે છે.

સ્માચાર્ય અગિરો ભારતીય દર્શ નમાં નવ્ય ન્યાયની સ્થાપના કરી અને વિચારને વ્યક્ત કરવાની એક ચોકસાઈ લવેલી પ્રશાલીના આવિલીવ કર્યો. ત્યાર પછી બધાં દર્શ નોને એ નવી રીદીના આશ્રમ લવેલી પ્રશાસ છે. કોઇ પણ વિચારને પ્રશાસ એક પછે કે કોઇ પણ વિચારને પ્રશાસ અને છે કે કોઇ પણ વિચારને પ્રશાસ અને છે કે તેની સહારતા પ્રાચીન પ્રશાસનો સમસ્ત્રીના સતી. આશ્રમ લેવી અંદાના વિચારને સે હીતોના સમસ્ત્રી વ્યક્ત કર્યા સિવાય સાલે તેમ ન હતું. આજ કરવા છે કે વ્યાકભ્યું અને અદ્યક્તર જેવા વિચીમાં પણ તેનો આશ્રમ લેવામાં આવ્યો છે એ પછી તો બધાંય દર્શ નેને આશ્રમ લેવામાં આવ્યો છે એ પછી તો બધાંય દર્શ નેને તેના આશ્રમ લેવામાં આવ્યો માં છે એ શાસ વર્ષના પ્રચારના હીતા સાલે કર્યા નથેના એ કેલીની પ્રયોગ સ્થારના પરંતુ એ હોતાના સાલે કર્યા માં અને કેલાની પ્રયોગ સ્થાર લેવો ન હોતા. સાલેના આશ્રમસ્ત્રી વર્ષના એ લેવામાં આદિના સાલે કર્યા વર્ષના એ લેવામાં આદિના સાલિ કર્યા વર્ષના એ લેવામાં આદિના સાલિ કર્યા વર્ષના એ સ્થારના અધિના બધા રીતે એને માર્ચ કર્યા તેના સાલિ કર્યા માર્ચ કર્યા બધા રીતે એને માર્ચ કર્યા હતા સાલિ કર્યા માર્ચ કર્યા તેના સાલિ કર્યા સાલિ કર્યા કર્યા કર્યા માર્ચ કર્યા બધા રીતે એને માર્ચ કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા હતા સાલિ કર્યા માર્ચ કર્યા કર્ય

ચાર્યોની શિધિલતાને જ કરણ માનકુ એઈએ. કરણ, એ યોતાના શાસને નિત્યનૂતને રાખતું હેય તો જે જે અતુકૂલ કે પ્રતિકૃત વિચારો યોતાના સમય મુધી વિસ્તારો હોય તેને યશાર્યોન્ય સેવે યોતાના શાસનો તમાને કરવી આવશ્યક છે. અન્યથા તે શાસ ખીલ શાસોની હરેગમાં ઊદ્યું રહ્યું શકે જ નહીં. એ ચારસો શાસવારનો વર્ષના વિકાસનો સમાવેશ શકે હોય વાચક ચરેમાન્યિય છેએ તૈનશાસમાં કર્યો છે. તેમના આ મહાન કાર્યનો તમારે શે વિચાર કરીએ છોએ ત્યારે તેમની પ્રતિભાને નમન કર્યો વિના છૂટને નથી ચંતો. તેમણે એનેક વિચાર કરીએ છોએ ત્યારે તેમની પ્રતિભાને નમન કર્યો વિના છૂટને નથી ચંતો. તેમણે એ તેમ કર્યો વિના છૂટને નથી ચંતો. તેમણે એ તેમ કર્યો લખ્ય છે પણ તેને જ લખ્યા હોત તેમ પણ તેમણે એ તેમ કર્યો તેમ ત્યારે હતી. તેમણે એ તેમ કર્યો કર્યો હતી તેમણે એ તેમ કર્યો તેમને સ્વાર્યનો શેલીમાં મૂક્ષિને અપૂર્ય કાર્ય કર્યું છે તેને લઇને તેણે અપર શર્ધ બધા છે.

> न्तं मुसुस्तः सर्वे. परमेश्वरसंबकाः । वृरास्त्रादिनेदस्तु, तद्भूत्वत्वं विद्वत्ति न ।। स्वरूप अञ्च मात्यास्त्रो तिषये अरीते परमेश्वरता सेताः से. हः, विस्ट मार्टिना सेट तेमतः सेवस्प्याने स्था भात बरस्त अरते नयी. व्यास्त्रवर्वव्यव्यव्य

ન્યાયાચાર્યને વંદન

[લે પ્રા. હીરાલાલ ર કાપહિયા એમ એ]

કુન્કોઇ (કુમ્કોઇ) ગામને જન્મદારા ગૌરવાંક્તિ કરવારા, વેયારી તારાયદાની પત્ની સીલા-પદેવીની કહિને દિયાવનારા, પકસિંહને સહોહરપદે સ્થાપનારા, પ્રાપ્ત નયવિજયને હાથે પ્રતિએક પામી પાટલમા વિ. સં. ૧૬૮૮ માં <u>સ</u>વાનીના પ્રવેશ પહેલા જ પ્રવજ્યા શહુલ કરીને જરાવ'ત મહીને 'ચરોાવિજય' બનનારા, વિજયદેવસરિ યાસે વડી દીક્ષા હેતારા, વિ. સં. ૧૬૯૯ માં ' આપાયધાની ' તરીકેની નામના મેળવતારા, સાતેક વર્ષ પછી ઓરિંગઝેખના મુખા અદ્યોગત ખાનની સમક્ષ અઢાર અવધાન કરી એને આનંદિત કરી મને આશ્વર્યચકિત કરનાશ, પેલાના સુર તવવિજવની સાથે કાશી જતારા, ત્યાં ત્રણ વર્ષ રહી શાહ ધનજી શરાના સદદભ્યની સહાવતાથી એક લહારક પાસે ન્યાયાદિ વિવિધ अक्षेत दश्रांनीने। सतत अने सम्रण अञ्चास क्षताश अने जो जातते। क्षेताश्रमा साथै સક્ષણ સમન્વય સાધનારા, છેક સાન્યાસીને વાદમા પશસ્ત કરી " ન્વાયવિશાસ " પદવી પ્રાપ્ત કરતારા, આગામાં ચાર વર્ષ વસી તકેશાસતા વિશિષ્ટદેશય મેળવતારા, ' વીસસ્થાનક ' त्य क्री समाने श्रीसायनास. विक्यमसम्बन्धा वस्त बस्ते वि. सं. १७१८मा वाध्य (ઉપાધ્યાય) પ્રત્યીથી અલંકૃત અનનાશ, તૈન જગતમાં નવ્ય ન્યાયના શ્રી ગદોશ માંઠનાશ. સંસકત વ્યને પ્રાકૃત ભાષામાં તેમજ મુજરાદિ લોકત્રિરામા મહામદયશાળી વ્યનેકવિધ માશરે મહીસા કૃતિઓ રચનારા, ન્યાયાચાર્યનું પત્ર પ્રાપ્ત કરતારા, " હ્રધ્ર હૃશ્લિદ્ર" હં માનવ'ત બિરુદ ધરાવનાર, "ક્રિલીય ક્રેમચન્દ્ર " તરીકે સમ્માનિત ચનારા, ત્રિવિધ સ્થવિ-स्तान वरनास, अधाध्याय विनयविक्यअक्षिना विश्वास-पात्र वननास, तत्त्वविक्य आहि શિષ્યોથી શાલનારા, વિ સં ૧૭૪૩ મા હલેક્કમાં માક્ટ વર્ષે સ્વલે સ્વારનારા, અને એ જ નગરીમાં વિ. સં. ૧૭૪૫ તી ગાદુકા સ્થાપનાદ્વારા ચિર છવ અતનારા ગુજંરહીરક, શાસનદીપક, સત્યગવેષક, નિર્ભય જાતે સમાદે સમાહોલક, સમયવિચારક, 🛮 🖁 " પક્રના પ્રશ્યાપક, યાગવિશાસદ, પ્રતિભાગાલી, ગુલાતુરાગી, સ્થાદવાદી, સહિત્યસ્વામી અને તાર્કિક-શિશેમણિ પ્રશાવિજયગણિને સાદર અને સાનન્દ કાેટિશ વ'દ્રત.

> सम शासामाथ धर्मो, यन्त्रानिय प्रकेशिदे । च्यारक्योऽप्रशुपारकोऽप्ते, परमास्मा निरात्तम ॥ शास्त्र धर्मा धर्मा प्रशिच क्रमु आन क्या गाडक प्रकारी कर्ने हे ते क्रेड क्रिक्न परमास्मा क्र भान अस्य धर्मक नम्म छपास्त्र क्या वास्त्र हे परमास्क्रमानिकारिक] [शी. क्रेशोविक्वक

તાકિ⁶ક–હરિયાળી

[સ્વાપત વિવસ્થા સહિત] [લે. ગા. હીરાલાલ ૨ કરપહિયા ગેમ. ગે.]

> કીવિ' મધ્યસ્થ િતારી અનેરી કરે કહેકિત શાને રે ' રક્ષ રક્ષ મુજ અતજ ળધુને

વિનલું શું શું કંઢી રે.-૧ વિનતિ સ્વીકારી અંતત્સ્થે થ્યા ધાર્યો એને શીપે રે;

અબ્રિમ વર્ષે કર્યું સમર્થન પ્રસરે શ્લાશ વિશ્વે રે.–ર

વર્ગી એને સચ્ચે પૂરો માથે મૂકી ટાપી રે, દેશ અહીં ભૂલથી ઊધા

સત્વર આવી મળતો રે.~૩ વિજ્વપતાલ ક્સ્ક્ર ક્સ્કે

તાકિક્કેશ નાચે રે; એની નીલા ગુજરી સ્થાકે

સંસ્કૃત સ્વાંગ સછતે રે.–૪ તવ્ય ત્યાયની દીધી પ્રતિપા જૈન જગતમા જેથે રે;

એ વાચકની આ હસ્યાળી સ્થી સચિકના વૃદ્ધ રે.-પ

विवरध

હે મધ્યસ્થ તારી જાણાત કોનિંતે તું શા માટે કહોઈન કરે છે ' મારા પછી જન્મૈલા મારા જાંધલને તું વચાવ, વચાવ. આ પ્રસાણેની વિકૃષ્તિ કંઠી એટલે ફંફ્સ્થાની જાંબન-મસ્તાતમાં ' કે' કરે છે. ઋા હોરિયાળીના ઉકેલનું સુચત 'કીર્લિ' શબ્દથી કરાયુ છે. 'ફ'ના અનુજ તરીકે ખુ શ્રી ડ સુધીના અંબનો વર્ષુથી શકાય. આ પૈકી એકને મધ્યરચ અથીત્ અંતઃગ્ય ગળી જવા માગે છે. એ એઇ 'કંઢી' કહે છે કે તને અધ્યરચને આ શોધો નહિ. ૧

પ્રથમ પહારા 'મધ્યરથ' 'અંતારથ 'તમળવાનો છે એ વાત લીજા પહોનો પ્રારંભ વિચારનારને ઝટ સ્કુરે તેમ છે. અંતારથ તાર્નીકે યુ, રૃ, હ્યુ અને વ્ એ ચાર અદ્ધરો યુપ્રસિદ્ધ છે. આ પૈકી એકને ',' તદફથી વિજ્ઞપ્તિ કસાઇ છે કે ચારા એક બંધુને દું પ્રળી ન જતો-તારા પૈરામાં પ્રમાની ન કોડો. આ સાલાળી એ અંતરજ એ અર્થજનને પોતાને સાથે શ્લાપે છે આ ઉપરથી એ અંતરશ તે 'ચ્' છે અને એણે પ્રળી બચા પરિક્ષા, પરંતુ આપારે પ્રતાતે કરાયોથી અજ્ઞદ તે 'ચ'ના અંશ છે એ વાત ફરિતા શાય છે અને એપ્રતા દ્વિતા શાય છે અને એપ્રતા પ્રતા હિંગ્યાળીનો ઉદેશ થાય છે.

સર્પ વહેં]માં આ અત્રિય ગ્રહ્યુય છે. એ આ 'પ્'ના સત્તુત્વનું સમર્થન કરે છે પ્રમાન 'પ્' સાચે લાલો ત્વલ છે. આમાં 'ય' ગોનું રૂપ ળતે છે. વિષ્કર્યા કેનિંગ પ્રથે છે એ કારા હરિયાલીમાં જુંલાયેલા નામની શરૂઆત 'ય'થી શાય છે એની પ્રતીતિ કરાવાર્છ છે. ક્રેપ્ય કે પાપ્ય' એ 'શાયાનો પર્યાય છે. ર

'વ્' તાલભ્ય છે. જાવો એક તાલભ્ય તે 'શ' છે એ રાજી થવાથી 'શ'ની પાસે ક્ષેત્રતો કોંત્રતો આવે છે. આથતી વેળા એ, ભાગે જેમ કેટલાક હ્યુવાનિયાઓ મને કોર્ય ક્ષેપ્ર વાર કહી પણ માશું ઉઘાડું સખો ફરે છે તેમ ન કરતાં આવે ટોપી ધારણ કરે છે. અહીં 'મેં' માત્રા 'ને 'ટોપી' કહ્કી છે. એવી રીતે કરતાં 'લેપી સખેલી કઢો' કહ્યો છે આ એ આપતીને 'શું' સાથે ચેળ સાધતાં 'શે' કૃષ નિયન્ત શાય છે. 3

ગ્રેશા પદાના પ્રાયંત્ર 'વિજય'થી શાય છે ગ્રેની પતાલ નારે બાલુ તાર્કિકના નારે ફરેકે છે. આર્થી 'ચર્ચી' સાથે વિજયનું તેહાલું અહિગ્રેત છે ચેંગ સથવાયું છે અને ગ્રેત ફરેકે છે. આર્થી બેંગ્લે એમ કહી એ સાર્ચું છે કે કેસ તેના નિર્દેષ કરવાઇ સાધ્ય પૂર્વે 'પાર્ચું છે.

તાર્કિક સંદાેવિજયવાદિએ દ્રવ્યાયુષ્યાંથતો રાહ રહ્યો એને સંવેષણ બાલા-વધાવારી વિશ્રૃપિત કર્યો છે, ચાના જ્યાંઆ દ્રશ્યાહોગતાર્ક્ષણની સ્થતામાં કરાયે! છે એ ભાગત મેં ચાંચા પ્રાથની એ અતિમ પહિનમાં સ્થાહેમદિક રીતે રહ્યુ કરી છે. સંદાલિજયભાગી કૃતિ 'વીણ' કહ્યું છે, અને એને આધારે ભોજનામર હાર પોલાવેલી કૃતિ સંસ્કુતમાં ક્ષેતાયાં એને-એ લીણાને સંસ્કૃત વર્ષાત્ર સહેલી વર્ષાયે કે. પ્ર

કુમ પાક તો ગાટકોથી જ હરિયાળીના પૂરેપૂરી ઈકેલ કરવા સમય અને છે. તેમ છતાં એ તામ જેન જગતમાં નવ્ય ન્યાયના શ્રી મહેશ માંઠનાશ એક ઉત્તમ વાચાનું છે એ વાત પાંચમા પવમાં સ્પષ્ટપણે કહી રહેશ છે શાંકાનું ઉત્મહન કરાયું છે. અંતિમ પછિત આ હરિયાળીના યોગસ્તો-મારો સ્વલ્ય પરિસ્થય પૂરી પાઠે છે, સાણ સહ્યત પિતાના નામતું. હીતત કરે છે. પ

વાચક જશનું વંશવૃક્ષ

[લે. ત્રાે. હોરાલાલ ૨. કાપહિવા એમ એ]

જેન શાસનના વિજયવાદાંક ફરકાવનારાગ્રામાંના એક અગ્રગ્રહ્ય પ્રાતઃસ્તરફોય મુનિવર્ષ તરીકે 'ન્યાયવિદ્યારક' 'ન્યાયાવાર્થ' ઉપયોગ્યા ઘરોાવિજવમહિંદુ નામ પૂળ લાણીતું છે. એમણે પોતાની કેટલીક રગુજરાતી કૃતિગ્રામાં પોતાના 'જદા' એવા તામે ઉલ્લેખ કરી છે, ઉપયોગ્યા વિનંતિજવમહિંગે વિ. સં. ૧૭૩૮ માં 'શ્રીપાલ રાગતા રામ' સ્થવા માંડ્યો હેતો, એનો વિઝટના લાગ ચા ન્યાયાચાર્થે એ ગ્રહ્યું ક્ષળકાર્ય પ્રાપ્તા પૂર્વું કર્યો છે. એમાં એમણે પોતાની અંગે નીચે મુજબના ઉલ્લેખ ચાયા ખંડની ભારમી સાળતા ક્રાંતમાં સ્થી દે:—

"વાણી વાચક જસતણી, ક્રોકંનથે ન અધૂરી રે"

માં " લાચક જજ્ઞ" તે 'ન્યાયાચાર્ય' જ છે. એ વાત ગા રાસની અંતિમ ઠાલમાં શ્રેપ્તશ્રુ પોતાનો જે પરિચય આપ્યો છે તે ઉપરથી દલિત થાય છે. શ્રદ્ધાં એમણે કહ્યું છે કે— " શ્રી નવવિજયવિશ્વયયસંઘક, સુજસવિજય ઉવજસ્થાઇ"

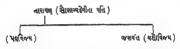
યાત્ર એંગે: પોતાને 'જ્યાવિજય' પણ કહે છે. 'જ્યાવિજય' તાસની એક બીછ પણ વ્યક્તિ શકે છે અને એમફે ધર્મગીયસ્થિતિ સ્ત્ર અધ્યાસ્ય સ્પેત્રી દેશાનાતિશ્વાનો બાલાવોષ્ઠા વિ. સં. ૧૬૬૫ માં રચ્યો છે. આ વ્યાભાષ્યોપતા કર્તીના જ 'ન્યાયાયાય' તર્વીકે ' પ્રતિમાશતક'ની પ્રસ્તાવ્યાનો કેનેનાચાર્ય' શે. વિજયપતાપસ્થિત્ય વેરી સ્પેત્ર ૨૪૬માં કહેલે ખ ક્રેપો કર્તો અને ત્યારબાદ એવી કહેલે ખ ક્રેપો કર્તો અને ત્યારબાદ એવી કહેલે ખ ક્રેપો કર્તો અને ત્યારબાદ એવી કહેલે ખ ક્રેપો કર્તો અ

પ્રસ્તાલના (ફુ. હુન્) માં પહું કરાવા છે, વરા દુ અ મારા વિચાલના વધાર છે તત્ત્વાર્દ્ધસૂત્ર ઉપર ટુટલા રચનારતું નામ પણ શકાવિલના છે, પણ 'રાં.' સુપદાદ વચેરેએ એમને ન્યાચાલાર્થ્ય લિન્ન વસ્ત્યા છે, તેમ છતાં એ ટુન્યનને હાથપેથીઓ તપાસથી એઇએ જેવી આ પ્રકારના નિર્ણયને અંતિમ ગણવામાં કર્યો હરકત છે કે કેમ તે વિષે કર્યાંથી વિચાર કરવાના રહે નહિ

ગેમની દેવીંદ પાઈવ કૃતિઓની રૂપરેખા 'પાઇવ (પાકૃત) સાયાંગ્રેસ અને સાહિત્ય 'મં ગાલેખી છે, ત્યારે સરફત કૃતિઓ નિષે ગે ' હૈંખ સાહિત્યનો સરફત ક્વિહાસ' ગે નામના પુસ્ત-દર્મા વિચાર કર્યો છે

ર, હીરપ્રસની એક હાથપોથી વિ સ, ૧૬ પર મા લખાયેલી ગળે છે આ હીરપ્રજામાં એક પ્રય-કારત નામ 'ચરાૈવિજવસ્તિક' એમ અપયેલ છે.

ન્યાયાઓ પૈતાની વિવિધ કૃતિએતમાં પેતાને તમિલબ્યના શિષ્ય અને પદ્મવિભ્યના સહાકર તરીકે એલખાવ્યા છે ¹ ' સુજસવેલી' પ્રસાણે ન્યાયાચાર્યના પિતાતું નામ નાસપણ અને તેમની માતાતું નામ સીક્ષાગ્રહેવી છે. એ હિસાણે સાંસાસ્કિ પણ એમતું વંશવૃક્ષ નીચે સુજળ દર્શાની શ્રક્ષાચઃ—



ત્યાયાથાર્યે 'પ્રતિभાશતક 'ઉપર સ્વેપણ વૃત્તિ રથી છે અને એતા અંતમાં પોતાના ગુરુ, પ્રકુરુ વગેરેને પરિચય આપ્યો છે અહીં એમણે હીવવિજયસ્થિશી શરૂઆત કરી છે. એમના પાર્કો એમણે હિલાયાં વિજયના વિષ્યુ ત્યાં કરી છે. એમના પાર્કો એમણે હોલાયાં વજાર તેમ અને ત્યા વિજયના તામનો નિર્દેશ કરો છે. એમના એ દિવસ્થતા તામનો નિર્દેશ કરો છે. એમના એમના અલ્લાયા તામ આપ્યા છે અને એમના વસ્ત્યુક્તાનો સાક્ષ્ય હોતાર તરીકે પોતાનો નિર્દેશ કર્યો છે. આ પર પેતાની સાથે સાથે ''શ્રીપાલ શબ્બા સાથે '' આપતા તેમને પ્રક્રિયા એમણે વિનયવિજયમાં માને પ્રવિચય આપ્યો છે તેનો વિચાર કરતાં એમતું વંશવાસ મીથે છુજ્ય રહ્યું કરી શકાયઃ—



આની તોંધ મેં "નાયાચારને વદન" એ શીર્ષક ચારા લેખમાં શીધી છે. એમા મેં એમની સ્ત્રાત્મક જીવનીયા આવેખાં છે. લુઓ : આ ગંચત કૃષ્ધ - દૃદ

ર. એમના પરિચય માટે લુગેથ જે. સુ. ક. (લા. ૨. પૃ. ૨૦–૨૧)

ર એમણે 'વૈસાટ' નગરમાં 'ઇન્દ્રનિકાર' નામે રચાયેલા પ્રાસ્તારે પૈકી પાર્ચનાય-મ દિરની પ્રશસ્તિ સ્થી છે.

આ તે! એમની યુરુષર પરાની હંકીકત મહાય. એમના શિષ્ય પ્રશિષ્ય વગેરેતાં નામ માટે તો 'પ્રતિમારાતક'ની ઉપર્યું કા મસ્તાવનામાં ' આકે ફૃષ્ટિની સહ્વાય ' અને એના ટક્કાને હિપિયત કરનાર દેવવિજયે યુખિકામાં કરેલા હત્વે થત્ની જે નેશિ લેશાઈ છે તેને ઉપયોગ કરવા હટે. એ હત્વે ખ ઉપરથી થાણી શક્ય છે કે ઘટોવિજયમાંલુના એક શિષ્યદ્ર નામ પ્રાયુવિજયમાંલુ છે. એમના શિષ્ય દિવનિતવિજય-પાલુ છે. એમના શિષ્ય દેવવિજયમાંલુ છે, આ દેવવિજયમાંલું બે તે સં. ૧૯૬૬ માં ઉપર્યું કર હહ્યા હતા છે છે. એમના શિષ્ય દેવવિજયમાંલું છે, આ દેવવિજયમાંલું બે તે સં. ૧૯૬૬ માં ઉપર્યું કર હહ્યા હતા પ્રતિ હતા હતા છે છે.

' જૈત ગુર્જર કવિચા' (લા. ર. યુ. ૨૨૪--૨૨૭) મા તત્ત્વવિજયના ઉલ્લેખ છે. અહીં એમણે વિ. સં. ૧૭૨૪ માં રચેલ " અમસ્વત્ત મિત્રાનં કના શસ" અને " ચોલીશી (લાહિંગ્યાંતિ જિનલાસ) " એ ગે કૃતિની તોમે લીધી છે. આ તત્ત્વવિજયે અહીં 'રીતાને નાવિજયાના શિષ્ય થા ચ ક જાર્યાચ્યના શિષ્ય તરીકે એલભાવ્યા છે. આ ઉપરથી ત્યાવિજયાના શિષ્ય સ્ત્રાન્ય અને પ્રત્યાચ્યન્ય કહીં એ લાણી શકાય છે. વળી, અહીં (યુ. ૨૨૭ માં) તત્ત્વવિજયના લાઈ વરીકે લાગીબિયગાંધીનો ઉલ્લેખ છે.

, ગ્રાંચાચાર્યે ' સીઝ પલસ્વામીનું સ્તવન ' (૧૨૫ ગાશનું) જે રમ્યુ છે તેની છોક તક્ક હોમના સંતાનીય પ્રતામવિજયે કરી છે. આ પ્રતામવિજયે લેના અંતમાં પીતાની પરિચય આપ્ત્રો છે.' એ ઉજરથી સાંઇ શક્ય છે કે એંગ્રો સુમાંવવિજયના દિશ્ય અને ગુસ્રવિજયમાલિના પ્રદિશ્ય કૃષ્ય છે. આ ગ્રાંચવિજય તે ત્યાંચાચાર્યના દિશ્ય છે.

સ્મા ઉપરક્ષી ન્યાયાગાર્યના શિષ્યર–પ્રશિષ્યાદિના નિર્દેશ નીચે સુજબ શઇ શકે:--



લુગો જે. ગૃ. ક. (લા. ર. પૃ. ૩૯).

ર, શ્રી ક્રાપ્રસ્થિત્રને ઉપાધ્યાલભૂતા એ શિધ્યાનાં નામા જલ્લાનાં 🖩 તે ભાજતમા વધુ વિચારણા કરવી જરૂરી છે, એ થયાલાની કરાશે. સ્ટોપા.

શ્રી. યશાવિજયજી મહારાજની જન્મભૂમિ કેનાેડા

[લેખક . શ્રીયુત કનૈયાલાલ સાર્ધશંકર દવે]

ઉત્તર ગુજરાવના સારોવે પ્રદેશ ઐતિહાસિક દહિએ કેટલીયે વિશિષ્ટવાઓ ધરાવતો હોઇ, તેનાં શહેરો, ગામહાંએ, તોથી અને ચક્લિયા ઇતિહાસથી અપ્રવાતના ધાંધ્યુતિક ઇતિહાસમાં અપૃષ્ટ માંભા નોધાવ્યો હોવાનું માલવ્ય પડ્યું છે. વીર વનરાજે પાટલુવી દયાપના કર્યો પછી રાજધાની વિકટના આ સમગ્ર પ્રદેશમાં, સજકીય અને સાંસ્થારિક દિલ્સે ચૈતનાનાં પૂર આવતાં, ત્યાંના સચાળ મહાનગરની અત્રક્ષમાં ત્યાં અલ્લાના સાંસ્થાર્થ કર્યો માન હતાં ગર્ય અલ્લાના સાંસ્થાર્થ સાંસ્થાર્થ અને ગુપ્તરાયા ત્યાર્થ દિલ્સે અપ્રતા, આ પ્રદેશના પ્રાથાર્થ પ્રતાન સાંચાર્યો, હતાર ગુજરાતા ત્યારે સાયાર્થી કપાટલુવાહિયા તરીકે સાયાર્થી માનવા લાગ્યો. ટ્રેટમાં અલ્લાહિલગુરની સ્થાયના ચરાવી, હતાર ગુજરાતા સાયાર્થ પ્રતાન સાયાર્થ, હતાર ગુજરાતા સાથાર્થ સાર્ધાર્થ, કર્યા, અને સાર્ધાર્થ પાતાર્થ કર્યા સાથાર્થ સાથાર્થ પ્રતાન સાથાર્થ પુત્રાયા માન સાથાર્થ સાથાર્ય સાથાર્થ સાથાર્થ સાથાર્થ સાથાર્થ સાથાર્ય સાથાર્થ સાથાર્ય સાથાર્થ સાથાર્થ સાથાર્થ સાથાર્થ સાથાર્થ સાથાર્થ સાથાર્થ સાથાર્ય સાથાર્થ સાથાર્ય સાથાર્થ સાથાર્થ સાથાર્ય સાથાર્થ સાથાર્થ સાથાર્ય સાથા

કેનોહા ત્રામ કથારે વસ્તું અને કોણે વસાવ્યું, તેની ઐતિહાસિક તવારીખ કોઇ સ્થળેથી મળી નથી પરંતુ તે દશમા-અતિધારમાં શ્રેકાથી પણ પ્રાચીન હોવાના પુરાવાએ! ઉપલબ્ધ થાય છે. ચીહાંધ્યોના રાત-પકાલમાં પ્રાંતો, વિલ્હાઓ અને તાલુકાઓને મંત્રેલ, વિપર અને પશક તરીકે ઓલાબવામાં આવતાં. વ્યાવેત તો કોઈ તેનાં આવાં નાંચો શાખ વામાં આવેલાં હતાં એમ પ્રાચીન તાલુપાયો અને શિલાહેઓના આધારે અલ્દી શકાય છે 'પરમ પૂ ઘટો!વિબચ્છ મહાલબ્ધ જે બન્મસ્થાન કેનોહા ગામ પ્રધાન પર્યાસ પરકાનો આવેલું હતું, એમ ચીહાય કે હવું દેવના વિ. સં. ૧૫૪૦ ના એક તાલપાત્ર ઉપરથી માલમ પડે છે '

ગંભુતા એ હાલના ત્રાફ્યુ સામત સંશ્કૃત રૂપ છે. તે ઘણું જ પ્રાચીન હેાઇ પૂર્વ

१ "अभ्यानमा अनिदासिक जिलामेणो " ब्हा. २, भा. ११३, १४६, १५३ वगेरे

 [&]quot;સુંદિ પ્રકાશ " પુ ૯૮, ફેશામારી ૧૯૫૧ 'સોલ'કો મુગના બે અપ્રકટ તાકપત્રો '.

આ ગામ સુવારાજે બ્રાહાણોને હાનમાં જાપ્યું' હતું એમ ' શ્રીરથળપ્રકાશ' કહે છે. પરંતુ હતપત્રના આધારે ત્યાં વાલિયાઓની પણ સારી વસ્તી હતી એમ લાલુયા મળે છે. આગળ ઉલ્લોખ આપ્યા છે તે સાહા ક્ષે કહું કેવના હતપત્રમાં, જે કેનોહા ગ્રાપની ભૂનિ-નબીનતું કાત આપેલું છે, તેની વાલું સીમા જ્જાલતાં આવ્યુઆવાનાં ખેતને ધરાવતા તેના માહિટોનાં નામા આપ્યાં હોઈ, વિશ્વક હરસુષ્યા, વિલ્લુક હરીયા, વલ્લુક સાન્યિય, વલ્લુક

३. " स्वभुस्यमानगंभताप्रतिवद्वचत्रह्मतारिशद्धिकप्रामशतान्तःगतिन "., .. शेक्ष्त

પાસ, વિશ્વરૂપ વગેરે વૈરયોનાં નાગા તેમાં લખેલાં છે. આથી ત્યાં વાણિયાઓની સારી વસ્તી હતી એમ તા જરૂર લાગે છે.

આજ કેનોકાની શૃત્તિમાં પરમ પૂજ્ય ચંચાવિજયછ મહારાજ નારાયણુ નામના કેત્રાંનિ ત્યાં સૌક્ષાગ્યદેવી માતાથી પ્રાદુશ્લીવ પાત્ર્યા હતા. પૂર્વના સંસ્કારબળે અને નચ-વિજયછ જેવા મુસ્તા સદ્ધાદેવથી વરાગ્ય પ્રાપ્ત થતો, પ્રાતામાં જેને આવોક-જશાવત, અને પ્રદુષ્ટિવથી વરાગ્ય પ્રાપ્ત થતો, મોતામાં જેને આવોક-જશાવત, અને મહારાં કે સ્વીવિજય તથા પક્ષવિજય આત્રોને પાર્વા કોશ આપવામાં આવી, અને જંનેનાં અતુક્રે ચંચોવિજય તથા પક્ષવિજય તથા પક્ષવિજય તથા પક્ષવિજય સામે સ્વીવિજય તથા પક્ષવિજય તથા પક્ષવિજય તથા પક્ષવિજય અને કરોની અને કરોની સ્વીવિજય સામે ત્યાપ્ત્રિકાલ ત્યાપ્ત્ર આવ્યાયાર્થિક વિજય તથા પક્ષવિજય સામે આવેલ સ્વાપ્ત્ર અને કર્યા સેક્સ સ્વીવ્યા અને પ્રકાર પાર્ટિકાનો પ્રાપ્ત આપત્રાં, તેમની જ્યાપ્ત્ર કરીને તમને આવાર કરાવે સેક્સ પ્રાપ્તિને પ્રાપ્ત અને પ્રકાર અને કર્યા સેક્સ સ્વીવ્યા સ્વીવ્યા અને પ્રકાર પાર્ટિકાનો પ્રયાદ અપ્તરા આપત્રાં, તેમની જ્યાપ્ત સામેને અપ્તરા સ્વીપ્ત સ્વીપ્ત પ્રાપ્ત સામે સામેને સ્વીપ્ત સ્વીપ્ત

કેનાડા અને તેની આબુબાબુના પ્રદેશ ચાજે તા શબ્ક દેખાય છે. પરંત ત્યાંતાં પ્રાચીન વ્યવશેષા એતાં. પૂર્વકાળમાં તે પૂળ સંસ્કારી હશે એમ તો જરૂર હાળે છે. આ ગામમાં શિલ્પ સ્થાપત્યના નિયમ પ્રસાણે તૈયાર થયેલ અત્રિયારમા-ખારમા સેકાત એક પ્રાચીન મંદિર આજે પથ તળાવના કિનાસ ઉપર વિલગાન છે તેના સ્તંભા, તારહા, ⊯'ઘાએ, યુમટો, અને કક્ષાયના વગેરેમાં કલાકારાએ અપૂર્વ કલાસીજન રજ કહ્યું" હાઈ, કલારસિંદ વિદ્વાનાને મુખ્ય બનાવે તેવું તેવું સ્થાપત્ય તેમજ સ્થનાવિધાન અનાવેલ છે. ઉત્તર શજરાતમાં આવાં કેટલાંચે પ્રાચીન મોદિરા છે પણ આ મોદિરત સ્થાપત્ય અનાણ અને કલાવિધાનની દેખ્ટિએ અનન્ય છે. આ મંદિર કચારે અંધાયુ અને કાંછે લંધાબ્રાં તેની માહિતી આપનાર એક પણ શિલાદીખ કે પ્રશસ્તિ મળી નથી. પરંતુ તેનું ભારકર્યા, શ્યાપત્ય. અને કલાવિધાન જેતાં તે ચારસા-તેરમા સેકાથી અર્વાચીન તે৷ નથી જ, અર્થાત તે ભારમા-તેરમાં સેકામાં ગધામું હશે એમ ચાક્કસ લાગે છે. આ પ્રાચીન કલાપાસાદના ગર્ભગઢની દ્વારશાભાગો, અને મંદેવરમાં કેતવેલાં શિલ્પેન ઉપરથી તે દેવીના પ્રાસાદ દ્વાવાન જણાય છે. આ પ્રાસાદના ગર્લાદ્વારની શાખાએમાં વધે બાલ્લએ દેવીઓનાં રૂપે કાતરેલાં છે. શિલ્પમાં એવા નિયમ છે કે, જે દેવના ગલાદ્વાર બનાવવા દાય તેનાં રૂપા તેની શાખામાં કાતરવાં. આથી આ દેવીના પ્રાસાદ છે તેમાં શકા નથી, 'સ્કંદ'ના 'ધર્મારવય પુરાલુ' માં બહુરમરહ્યા દેવીના લલ્લેખ માહેરાની ગાસપાસનાં દેવીપીઠામાં

४ , हिस्तेउपाइंड, उपा के न्युक्त ११४

આવેલ હોઇ, મેહેરાથી સાત કેલ ફ્રવ ઉત્તરમાં તેતું સ્થાન જણાવું છે.^પ તેમાં જણાવેલ અફ્સુપથ્ફો તે જ ગા બહુરમતણા કેવીતું સ્થાન છે. કેનોડિયા જાળી કુટું બની બહુરમતણા કેવી કુલાંબા ગણાતી હોઈ, તેના જ ગા પ્રાચીન પ્રાસાદ શિલ્યરથાયત્વના એક ગપ્રતિમ દેવીપ્રસાદ છે.

આ મંદિર પશ્ચરભાષ વાંધેલ કોઇ શિલ્યસ્થાપત્યના નિવચે તેતું કલાવિધાન, યેલ્ય માન અને પહિલિપુરાસર અનાવેલું છે. મંદિરની શરૂ-આલમાં કરતી જગતી (શેઠડેલે) બનાવેલ કોઇ, તેના ઉપર છે, નવ્યુ પત્રસ્થિયા અર્થ મંદપમાં લાખલ શઇ શકાય છે. શિલ્યના નિવચે તેની પીક્રમાં લીડ, લઠલ, કહ્યુકા, ક્યારિકા, ગ્યાસપ્ટર્દ, ગજવર, નરવર વચેરે યોલ્ય માન પ્રમાણે અનાવતાં મંદપને કરતી વૈદિકા, ગ્યાસપર્દ અને કક્ષાયને અનાવેલાં છે. વૈદિકા અને કક્ષાયનેમાં કેટલીક કેકાવું રૂપો કોલવાં છે, ત્યારે મોડે શારો તેમાં ઊપા પદ્દા કોતરવામાં વ્યાવેલ છે.

મ્મા મંદિરતા મંદ્રપમાં ફુલ ૧૮ કરાં શો. મૂક્યા હોઈ, ત્રણ બાલુએ લહી અતાવ્યાં છે આવા ત્રણ લાદ અને ભાર પત્રવાળા મંદ્રપને 'પ્રાસાદ દિલય'માં "મુનત' દત્ત નામ આપવામાં આવ્યું છે, અધારે સ્તંત્રોલ લાદ્રતા મંત્રામાં આવ્યું છે, અધારે સ્તંત્રોલ લાદ્રતા મંત્રામાં આવ્યું છે, અધારે સ્તંત્રોને કેલ આ ભાષામાં પણ વર્ષને દિલ્યો ઉત્તમરીતે કેલવો છે, તેની તીચે લાં લાં પક્ષો પક્ષો આ પાંચ્યાં છે, તેની તીચે લાં લાં લાં પક્ષો અને પ્રેશન તાનાં તાનાં સાલ કેમિલા દિલ્યાં છે, તેને તે કરેક ઉપર ફાંસતાઓ મુકવામાં આવ્યા હશે એમ જરૂર લાગે છે, પરંતું આ મંદ્રિત છળાં વાવાથી તે પદ્મી બધાં હશે એમ જાણા છે. ડે. અજેને કરેલી ઉત્તર ગુજરાલના પ્રાચીત પરિદેશની હવે આ પાંચરો દરેક સ્તંત્રો ઉપર મદીનાં કાંસ કે સ્તંત્રો હવે કરે સ્તંત્રો હવે કરે મુકેલા હતા, જેમાં લાક લાં લાં વારા વારા પાંચતાં માર્કાનો ચિરોન સ્તંત્રો હવે સ્તંત્રો એ હઠીકત સ્પ્યાર્થને લાં લાં લાં વારા વારા તો અંદર્શન હતા, જેમાં લાં લાં લાં વારા વારા વારા તો માર્કાને હોતા સ્ત્રો હાર્ય છે.

મેંડેય અને મંદિર વચ્ચે તાતુ લક્ષાનક (બહાલુ) લતાવેલું છે, જે અનેને સંલય કરે છે. ગર્મલાર ત્રિશાખાસુકત લતાવેલ હોઈ તેમાં વચ્ચે રૂપરતંલ અને લેને બાલુ પત્રશાખા તથા પક્ષવશાખા લતાવેલી છે. રૂપરતંલમાં લેને લાલુએ કેલીઓનાં રૂપા કોતરેલાં છે. મંદિરની બંધામાં મેહેરા તથા સુલ્યુકનાં પ્રાચીન મંદિરોથી લાક્ષક રૂપકામ ખીશેખીની તેને હેત તેમાં કે તેમાં કરેક સ્થિમના હિક્યાલા ઉપરાંત જ્ઞાણીકે કેવોનાં અને કેવીઓનાં સ્વરૂપા મુકેલાં છે.

પ્રાચીત શિલ્પસ્થાપત્થની હષ્ટિએ ગા મંદિર ગુજરાતનાં કલાસ્થાપત્યોમાં સારું એતું સ્થાન ધરાવે છે. ગુજરાતના બીજા પ્રાસાદોની પેઠે કેનોહતુ ગા મંદિર પણ સુસ-

પ 'સ્કક પુરાલું '—' ધર્મારણ ખાંક' શ્લો. પર ક. 'અક્તિ'મોસોજિક્શ સર્વે એક તોર્યંત ગુજરાત ' યા ૧૧૨

લમાનાના પ્રદાસથી થયી શક્યું નથી અને તેથી ગા મંદિરનાં કેટલાંક શિલ્પા, પ્રતિ-માંગા વચેરે થેડેવણે ગયે ખંહિત થયેલાં હોવાનું જલાય છે. ઇ. સ. ૧૩૯૨-સં. ૧૯૪૮ માં કેનોડા અને ગાંલું વચ્ચે, ગુજરાતને પચાવી પહેલ સુષા શસ્તીખાન અને કિલ્હીથી તવા નિમાયેલા સુષા હારેપખાન વચ્ચે લાવો સુંદ્ધ થયું, જેમાં હારપખાને રાસ્તીખાનને અહીં હોત્યાને તમારાયો હોતા. ત્યારખાદ શુજરાતોના વહીવડ અફેરખાને હાલમાં લીધા, અને પહોં હાત શર્ધ એટલા માટે યોઠે દૂર લાનપુર નામનું ગામ તેના સમારકમાં વસાવ્યું, જે આજે પણ વિશ્લાન છે. આ વખતે શુશ્લસ્થાનોએ આ મહિરનાં શિલ્પોને ખંડિત કર્યાં હોય એમ માનવાને કારણ છે.

આ ગામમાં બીલ્યું પણ વ્યાતું એક કલાધાર રોપેયેલ મહાદેવતું સંદિર હતું. જેમ બહુસ્પણણું ક્રેમોરિયા વ્યતિની કુલાંભા છે, તેમ તેમના થબ્દેકલ ટીપેયલ મહાદેવ તાલુપા છે. આ સોમેયલ મહાદેવતું એક પ્રાચીન સંદિત રોત અજેના ત્યારે સં. ૧૯૩૧ માં કેનોહા આવેલા ત્યારે તેનો મંત્ર પર વિલયાન હતો, એનુ કુંદલ વિલ્લ તેમના રિપોર્ટમાં આપેલું છે. આજે તો તેતું નાંચનિશાન બચવા પામમુ નથી.

આ સિવાય અહીં ચારપ, પીરતા, ગોયાદ, ગાંલુ વચેરે તછકનાં ગામામાં આવાં કુંદર પ્રાચીન મંદિરીનાં અથશેલે, કલાના રસિક વિહાનોને આમંત્રી રહ્યાં છે. કનોહા મામ પ. પૂ. યુપપુરુષ ચરીશી વારપુર અહારાજનું જન્યસ્થાન છે, જેના પુનિત પારવરથી તે પવિત અને પ્રચારકીની વખ્યું છે. તેવો જ તેતે તે અતિહાસિક અને શિલ્પુકલાની કૃષ્ટિએ પણ વધુ મહત્વ પેશવનું હોઇ, ત્યાં અને ત્યાંની આત્મુચલાનાં પાયામાં કેટલાયે દ્વારપ્ત સ્થાપત્યો પ્રાચીન હાલાકિક્સ પ્રકાર્ય ન સ્થાપત્યો પ્રાચીન હાલાકિક્સ અને પ્રવાસ તેવની અન્યપ્રવાસ પ્રાપ્ત સ્થાપત્યો પ્રાચીન કર્યા, તેમાંથી ઇતિહાસ અને પ્રચાસ ઉપાય કર્યા કર્યા કર્યા, તેમાંથી ઇતિહાસ અને પ્રચાસ કરવા, ઇતિહાસ અને પ્રચાસ કરવા, ઇતિહાસ અને પ્રચાસ કરવા, ઇતિહાસ અને પાયામાં સ્થાપત્યો પ્રાપ્ત કરવા, ઇતિહાસ અને પાયામાં સ્થાપતા કરવા, ઇતિહાસ અને પાયાના કરવાના કરવા, ઇતિહાસ અને પાયાના કરવાના કરવા, ઇતિહાસ અને પાયાના કરવાના કરાયાના કરવાના કરવાના કરવાના કરવાના કરવાના કરવાન

म रायं नाथि च हेर्ष, विषयेषु यहा क्रजेत्। व्यादासीन्यन्तिमन्नास्मा, तदाप्नाति परं महः। श्रद्धातेत शावणां निमन्न कात्मा क्यारे विरयोगां प्रभावते वर्षी त्यारे परंग क्योतिन ते प्रभाव करें

सम्बोति.मवर्विस्तिक्त**ो (श्री यश्चा**विश्वयक्ष

છ, 'સુખરાતના સાંસ્કૃતિક કૃતિહાસ' ખેડ ૧, પા. ૧૬૩

શ્રીમાન્ યશાવિજયજી

[લેખા : હૉ. શીયુત કાગવાનદાસ મનત્સુખક્યાર્ધ મહેતા, ગ્રેગ, બી બી. ગેશ. મું'લઇ]

 વિશ્લ વિભૃતિરૂપ મહાજ્યોતિષ્ટ જિલ્લાસનના ગળનાંગણમાં ચમકી લયા છે, તેમાં શ્રી યશોવિજયજીતું સ્થાન સદાને સાટે જયર રહેશે. ક્લિકાલસવજા શ્રી હેમવન્દ્રાથાઈ પછી અત્યાર સંધીમાં શ્રી આનંદવનછ અદિના અપવાદ સિવાય તેવી પ્રખર ક્રત-શક્તિવાળા ખીજો તત્વસાની મહાત્મા થયા હોય એહં જણા<u>તે</u> તથી. ભેમની પ્રતિકા કેટલી અસાધારણ હતી અને એમની ગૃહિયત્તા કેવી કરાય હતી. એ તા એમની સફમ વિવેકમથ તીક્સ પશેલાસના પરથી સ્વયં જવાઇ આવે છે, અને માપશુને તાકિકેશિયામણ કવિક્રલગ્રુર સિક્સેન દિવાક્યસંસ્તિ રમરશ કરાવે છે. એમની દે દિવિશાલના ને હૃદયની સરલના કેટલી અધી અદ્ધાન હતી અને સર્વ દર્શના પ્રત્યેની એમની નિસગ્રહી માધ્યસ્થ્ય હત્તિ કેવી ચપૂર્વ હતી, તે તો એમની સર્વ દર્શનાની તલશ્પર્કી નિષ્કક્ષપાત ત્રીમાંસા પરથી પ્રતીત શ્રાય છે, અને ગ્રાયભ્રને યઠકા નેવેત્તા મહર્ષિ હરિસદ્રભૂરિની ચાદ તાછ કરે છે. વાદ્રમથના સમસ્ત ક્ષેત્રને વ્યાપ્ત કરતે એમત મીરિક સાહિત્યસજેન કેટલું બધું વિશાળ છે અને કેવી ઉત્તમ પાંકિવતું છે, તે તે એમના થકારી સિક્કા જેવા ટેડાંતીર્થ પ્રમાણકાત વચનામૃત પરથી સહેજે લાશ્યમાન થાય છે, અને આપણાને કહિકાહસવંત્ર શ્રી હેમચંદ્રાચાર્યજીને પ્રત્યક્ષ કર્યન કરાવે છે. અધ્યાત્મ-રેપુત્ર વિષયના એમના અભ્યાસ કેટલા અધા હઉં. છે અને આત્મજ્ઞાન-ધ્યાન પ્રત્યેની એમની અભિરુચિ કેવી અદ્ભુત છે, તે તેા એમના અધ્યાત્મ-યોગ વિષયક શ્રધ-રત્ના પરથી સ્વયંશિદ શાય છે. અને આપણને ચાંગિરાજ ચ્થાનંદઘનછતું સ્મરણ કરાવે છે. આત્ર આ મહાત્મા પ્રતિભામાં વ્યવે સિન્દરોન દિવાકરના યુનરવતાર દોય. શાર્રાનિક ચલ્યાસમાં લાંલે લાલ હસ્લિક હોય, હાતમાનમાં લાંલે ગીજા હેમાચાર્ય હોય, મધ્યત્મવિદામાં જાશે આતંદલનજુના અનુષામી દોય એમ આપણને સંકેજે પ્રતિલાસે છે.

સ્ત્રા પેતાના મુંછાળા અવતારને-' ફેચોલી શાસ્ત્ર' ને કેમી સરસ્વતોને લન્નવના માર્ચ સંતાઇ જહું 'પ્રશું' આ સાવેસાચા નાષ્યાનવાસ્ત્રપતિ (જવાશુ») વાચકરમને વાચા સાંભળો વાચાલ વાચસ્યતિ (જિલ્લાશુ») ભાગાર શર્ધ ગયે! વાક્યપની રંગ-ભૂમિમાં કેવિતાકું ક્ષીને વર્ષેચ્છ નચારનારા આ સંદર્શની ચાલકીવિયો પ્રતિષ્ક્રીઓનાં મત્તાર ધોળાં ને મુખ ક્ષળાં થયાં! ફાલીઓના શુલ્યાકાશમાં વકૃતી અધ્યાત્મ ફ્રાંતપાંગાને આ લગીરથે અવનિને પાવન કરવા પૃથ્વી પર અવતારતાં પ્રાણીઓનો વિલાવરૂપ પાપમલ કર્યાય ધાવાઈ અંચા !

આમાં લેશમાત્ર અતિશ્વેશિત નથી. હા, ન્યૂનોક્રિતના સંભવ છે પ્રશે! એમના સમકાલીન ક્રી ફોર્તિવિજય સુનિએ 'સુજસનેલી' માં એમને લહ્ય ભાવાંજિત અર્ધો છે કે—

> "કુમાંલી શાસ્ત્ર તથે!છ, બિરુલ ધરે સુવિકિત; ભારપણે અલવે બિજે્છ, લીધા ત્રિસ્થ ગ્રુરુ છત. લધુ માંચેશ હરિલાદ્રા રે, કેલેક્યુમાં એ વધા બીતો રે, હતા વધારપ ગુજ કુણી, કેલેચ્છ હાલ કે મત ખીતો રે, મેચી સિસ્કેશ્લેમ, ગુરુ પ્રાનસ્પણના દરિયા રે, કુમત તિચિર ઉચ્કેલ્યા, એ તો લાલારુણ ક્લિકરિયા રે,"

અવીચીનોની જેમ તેમના નામ યાકળ જયાધિઓની લાંબી લંગાર નહિ લાંચેલી છતાં, આ સીધા સાદા ' ઉપાધ્યાચછ' પશુ વ્યાવાચીના વ્યાચાર્યને સુરુઓના સુરુ થયાને પરમ ચેલ્ય છે. પરાપ્રધીના પરકાલા પાકળ દેહનારા વ્યાધુને કેની પેટે તેઓ તેની પરવાહ તહિ કરતા છતાં 'પશામી' હતું તેમનો પોલેક છેરતી નથી! આ આપતાસ્સ પરિસૃતિ વિના શામોને ભાર માત્ર વહેનારાને નિર્માલ્ય તત્ત્વિદ્ધિત વર્ચાઓમાં શામોને રાસ્ત તરીકે ઉપ-યોગ કનનારા આગમધેરો તો લણાવ છે, પણ વ્યાધ્યાન્ય પરિસૃતિપૂર્વ શામોને! રસાસ્તા હેનારા ને શામોને સિત્ત હત્યા કનારા તેમના જેવા નિરાય તે શામોને પરિસ્તા જે આ પરિસૃત્ત સાથા વ્યાગમસ્કલ્યવેદી સુતપરા તો વિરહા જ છે પ્રસૃત શો કેનિલિજયાળએ કહ્યું છે તેમ 'બીલા શાલશ-કોઇ સાસુયીઓ પણ વ્યાને ન પહેલે."

" જશ શિર્યાપ શાસનેછ, સ્વસભય પરમત દક્ષ; પોંદુચ તહિ દોઈ જોદનેછ, સુયુષ અનેરા શવલલ. પ્રસ્તાવાદ જ્ઞાનેવલીછ, આશે હુંઆ પર જેમ; દક્ષિમોદ્ધ જોતાં પદાછ, ને પણ જ્ઞાવર તેમ. વાદ વચત-સ્મીદ્ધ પૈદાછ, હજ જ્ઞાત-મુરમેહિ ખાસ; આપી જ્ઞાંત કરેઇ. જુપ્લળ તમ અસાસ." —સ્ત્યાનેથી

આ પુરુષરતને પામી ન્યાય ન્યાયપણું ધાર્ગ્યો, કાબ્ય કાબ્ય ળન્યું, અલંકારને અલંકાર સાંપડયો, રકમાં સરક્ષતા આવી, કરમાયેલી સુતવલ્લની નવપલ્લવિત શર્ક, યેાગ કરવાર કેલલારથી નમ્ર ભવ્યો, સુદિત આલંકબંધનથી સુદ્ધા શર્ક, સુદિત છત્ર-પ્રકારપણે પત્પલ શર્ક, લ્કિટમાં શર્કિત આવી, શક્તિમાં ન્યક્તિ આવી, ધર્મમાં શ્રાણ આપ્યો, મ્રવેપમાં વેગ આપ્યો, વેશસ્ત્રમાં રંગ લાગ્યે, ક્યાયુનાને ત્રિદ્ધ ચાંપણી, શાસનાનું શાસન આલ્યા લાગ્યું, કેલિકાલનું આલન હેલવા લાગ્યું, દર્શ્યનને સ્વરૂપદર્શન શર્કુ, રપ્યાંતાને ગતુકુંળ સ્થાન મત્યું, ગારિત્ર ગારતાથે જન્યુ, વચનને ક્લોટી ચાટે શુતિવંતામહિ મત્યો, ગતુલવને મુખ બેવા દર્ષે મત્યું. તત્વગીમાંચા માંગલ થતી, દર્શ'તવિવાદો દુર્શંત થયા, વાતાનાં ખંધન ત્રત્યાં, ખખં ગોહમાત્ર્ય વિધામાં વ્યાપી રહ્યો, ગાયકહાતી આંધી દૂર થઈ, દંશના પઠદા વિસ્ત્રામા, કુસુરુસાના દેશ તાપ તંખુ લિપદ્યા, વેલવિડં બંદોને વિડં બના થઈ, શુષ્ઠ સાના સ્ત્રામાં તેના શુધ્ર સાના સામ સાથ્ય શુધ્ર સ્ત્રામાં વસ્ત્ર માં માત્ર શ્રેષ્ઠ સ્થાપ સાથ્ય શુધ્ર સ્ત્રામાં કેમ સાથ્ય શુધ્ર શ્રેષ્ઠ સ્થાપ કેમ શ્રેષ્ય શુધ્ર સ્ત્રામાં કરનો પત્રામાં દ્યાપા શ્રેષ્ઠ સ્ત્રીને સ્થાપ શ્રેષ્ઠ સ્ત્રીને સ્ત્રામાં કેમ શ્રેષ્ય શ્રેષ્ઠ સ્ત્રીને સ્ત્રામાં કરોનિવિજવ્ય સ્થાપ કર્ષ્ક છે કે—

" ક્ષી યશાવિજય વાચક તથા, હું તો ન હહું ગુયુ વિસ્તારો રે; ગંબાજસ કવિકા શક્કે એક્ટના, વ્યવિક અછે ઉપયારે રે. વચત રચન સ્પાદવાલ્તાં, નય નિગય આગમ ગંબીરો રે; ઉપનિષક જિમ વેદનાં, જેમ કવિ ન લહે કાઇ ક્ષીરે રે ક્ષીતલ પરમાનદિતા, શૃચિ વિચલ સ્વરૂપ સાચી રે; જેમની ચ્ચના-ચક્રિકા, રચિયા જય સેવે રાચી રે;

ઇત્યાદિ પ્રકાર કવિજનોએ જેમના સુવાતાલ કાલક કે ગાયા છે, એવા આ શકુતી ચશાવિજયછ પોતાની અપર શુકુતિઓથી સદા જવવંત ને છવંત જ છે. 'શુકુતિ એવા તે રક્ષસિત કરીયરા જવવંત છે, કે જેની યશાકલમાં જ્યા-મરવુકન્ય સાથ નથી'— આ શ્રી સત્તું હિન્તી હિંદા શ્રી ચોલિજવાલના સંબંધમાં અફસ્તા ચરિતારે વતી કેમાંય છે, કારણ કે પોતાની એક એકથી સરસ ઉત્તમ કાલ્યમને શુકુતિથી જવતંત એવા આ ક્ષ કરીવર પોતાની પશાકાયથી સહા છવેત છે, યશાંત્રીના વિજયી શર્ધ ખરેખમાં 'ચશાવિજય' શ્રી ત્રિલ્ય' પ્રાથા છે. શબ્દમને ચરા કે સ્થાનિજય' શ્રી પરેખર 'ચશાં કે

આવે મહાપ્રતિભાષેષન સંસ્કારતાથી સેંકો વર્ષો કોઈ વરેલો જ પાકે છે. પ્રમાર કર્યો-ચલ્યાસી પં. સુખલાલા કહે છે તેમ ' જેન સંપ્રદાયમાં ઉપાધ્યાયભૂત સ્થાન વૈદિક સંપ્રદાયમાં શકરાચાર્ય જેવું છે. 'પણ આવા સમર્થ તત્વદ્ધા કોઈ એકલા જેને સંપ્રદાયના જ નહિ, પણ સમસ્ત લાસ્તના લુવલુર છે. આ લાસ્તલાઈન પર છે કે જેમાં આવા તત્વદ્ધા પુરુષદ્તો પાકે છે. અને આવા સંપ્રદાયથી પર, વિચ્રાહી વિશાલ દેવાના મહાત્માં કોઈ એકલા જેનીના જ નથી, મહા લાસ્તના જ નથી, પણ સમસ્ત વિચ્રાના છે.

એમતુ ખરૂં જીવન તો આધ્યાત્મિક—વ્યાત્મપરિવૃત્તિમય વ્યાદર્શ ' ગુનિજીવન ' છે. પોતાનો જીવનસમય તેમણે વ્યાત્માદખેણે વેશોલા ગુનિયમ'ના પાલવમાં, શાસનની પ્રભા-વનામાં, સત્તિકેપોલાંકમાં, વ્યત્તે પ્રમાણબુદા ગેવા વિપુદ્ધ સાહિતચરને પાં ગુવવાતિ દેશો છે. શુવવાતી, સંસ્કૃત, પ્રાકૃત વર્ષને માનવાહી-એ ત્રારે ભાષામાં તેમણે આખાલકુદ સર્મકે ઉપરોાબી એફ વિવિધવિષયી દેકાંકોવું શાહિત્ય સ્ત્રકું છે. તેમના ગ્રુપ્ય વિષયો ન્યાય, સમાજસુધારણ, જાધ્યાત, શ્રાંગ, લિકા ગાંદિ છે. ગોકા ન્યાય વિષયના જ તેમણે ગોકો પ્ર સ્થાયી 'નાયાગાય' પદ મળ્યાનો તેમણે પોતે જ હત્લે પ્ર કરેલી છે. તેમજ 'રહ્તસ્ય' પહોંદિત ગોકો ગ્રંથ સ્થવાની પ્રતિહાનો હત્લે પ્રાપ્યુ તેમણે પોતે જ કરી છે. તેમજ 'રહ્તસ્ય' પહોંદિત ગોકો ગ્રંથ સ્થવાની પ્રતિહાનો હત્લે પ્રાપ્યુ તેમણે પોતે જ કરી છે. ગામ હાલના ક્રિકેટના ઉત્તર પિલાસીએ (Century Baismon) જેમ ગ્રા સાહિત્યના પોલાસીએ વર્ત્ય પ્રસાધના પહોંનીએ વાર્ત્ય અને ક્રિકેટના ઉત્તર તેમ ગ્રાપ્યુ કરી છે! ત્રને સાથે પ્રસાધના પોલાસીના બોલે બોલે રહ્તિએ શ્રીકે હતે હોં હતાને પ્રાપ્યુ ગ્રાપ્યુ અન્ય 'પાર કર્યાં હોં કર્યાં હતાને પ્રસાધના બોલે બોલે ત્રાપ્ય કર્યાં હતાને વિદ્યાન્યનો 'પાર પાર પાર પાર કર્યાં હતાને કરી છે! પરમ તત્ત્રચિલ કર્યાં કરે છે! પરમ તત્ત્રચિલ કર્યાં સ્પર્ય સાથે હતા."

આમ અક્ષરદેહમાં જેના જાણ આત્મા પ્રતિક્ષિ ભિત શાય છે, પ્રત્યક્ષ ગ્રૈતન્ય ઘમ-દ્ધાર જણાય છે, એવા આ મહાત્યાનું અધ્યાત્મ છાવત તેમની કૃતિઓતા આવ્યંતર કદાંને પરથી વિશ્વસ્થ વિરોકોઓ અનુપ્રાની શકે છે. તેમની એક એક કૃતિ એવી અમૃત્ય અને અપૂર્વ તત્વસંક્ષારથી શરેલો છે કે, તે પ્રત્યેકનું વિદ્વાવદ્યાંકન કરવા માટે પશુ અનેક હૈપમામા મેઈએ; પશુ અને તેટલા અવકાશ નથી, એટલે અહીં તો વનતન ઊઠતો દિપ્યાંત કરીને જ સંત્યાય માનશું.

તેમના સમકાલીનામાં જ્યાંધ્યાયછ વિન્યવિભ્યાછ, આનંદવનછ, સત્યવિભ્ય ગણી, માનવિભ્ય ઉપાધ્યાય આદિ વિશિષ્ટ વિદેદમંત્રની હતી. તેમાંય ખાસ કરીને શાંત પ્રધારસદ્ધ જાદ્દાપ્ત સંગીત કરનારા શાંતમૃતિ મહા મુચ્યુ શ્રી વિનયવિભ્યાછ તો સ્થેમના સહાધ્યાયી પરમાર્થ મુક્દ હતા. આ વિન્યવિભ્ય એ વહેરાવિભ્યાની કેતી મુપ્તસદ્ધ છે. બન્ને બાહ પરમાર્થ મિત્ર અને ઉત્તમ દિતિના શાંત મુચ્યુ હતા શે શે કર સ્થૂપ્ત કંચવાતો સુધદિ કં શ્રીયાદ રાસ ' તો આ બન્ને મહાત્માઓની સંયુદ્ધ દૃતિ છે. શ્રી વિનયવિભ્યાએ એનો પૂર્વ લાય રચીય, ત્યાં તેમનો સંદેશના દેશન્ય પૈયો, ત્યાં તેમના સંદેશના દેશના પ્રયાભ પરમાર્થ મિત્ર શ્રી શ્રે શ્રી વિનય પરમાર્થ મિત્ર શ્રી શ્રી શ્રીવિભયા આ તેમના હતા મામ રચી ઉત્તમ પરમાર્થ મિત્ર શ્રી કે સ્થિપ પ્રાથમિત્ર શ્રી નિત્ર મામ સ્થી ઉત્તમ પરમાર્થ મિત્ર શ્રી શ્રીવિભય છે પરમ આત્માહલા શર્ચી અન્યી છે કે—

" માહુરે તો ગુરુચરલું પસાચે, અનુભવ ક્લિમાંહિ પેડા; ઋહિ કૃહિ પ્રગઢી ઘટમાંહે, આતમરતિ હુઇ બેડા રે... ...ગ્રજ સાહિબ જગના તૃઢા =

શ્રીમાન્ આનંદવન્છના દર્શન-સમાગમ એ શ્રી ચરોવિજયછના છવનની એક ક્રોતિકારી વિશિષ્ટ વડતા છે. તે વખતના રૃદિગુસ્તપથુદોને વળચી રહેતાર સમાજ એવી પરમ ઝવપૂત સાનદશાયાળા, આત્માનંદમાં માત્ર રહેતારા, આત્માયામી સંત્રુઝનને એાળખી નં શક્યો, ને આ 'દ્રાહ્માન' દાષ્ટ ને (આનંદલનાઇનો) વર્ષેચ્છ હાલ ન ઉઠાવી શક્યો, ઘર આંગણે લગેલા કલ્પદુક્ષને ન આવાધી વાંછિત ફ્રદ્યથી વચિત રહ્યો. એ સમાજનું મહાદુર્શોષ્ય વ્યવગ કરાહ કલિકાલનો-દુશ્યમ કાલના મહાપ્રભાવ ! પણ તેલું તેવાતે ખેચે, Like altrects like, દેશકું બંક લોહને એંચે એ ન્યાયે શ્રી ઘટેશવિશ્યછ શ્રી આનંદલનછને તેમના યથાયે સ્વરૂપમાં આવખી શક્યા, ન્યેય શ્રી દેપચંદ્રછ કહે છે તેમ-

'તેહ જ એહના વ્યાપુગ, સોકતા જે તુમ સમ ગુણરાયછ '

તેવા જ તેવાને આળખે સાચા અવેરી જ હવેરાત પારખી શકે તેમ તે સમયે પણ શ્રી સ્ટોલિજયજી જેવા વિરક્ષ સ્ત્વપરીક્ષક જ શ્રી આન દલનજી જેવા મહાપુરુપ સ્તને તેનના પ્રશાર્થ સ્વરૂપે આળખી શક્યાં. આ પરમ અવધ્વ-નાવનિર્મેષ્ઠ આનં કે વન્જના દર્શન-સમામમાંથી શ્રી યોલિજયજીને વહેરા વધા વધા શર્યા તેનન સમામમાંથી શ્રી યોલિજયજીને વહેરા શ્રી શ્રી વર્જી પારમ આ દેશના આ પરમ ઉપાર્થની રે રહી છે. તેમાં તેમણે વસ્ત આ તે હોતાના સ્વાલના સાલતાં આન દલનજી અતિ કે પાર્થ સા કરી છે. તેમાં તેમણે પ્રસ્ત અત્યાં લક્ષ સાલતાં આન દલનજી આ તો હતા અને આનં દ્વારુપું રહેતા હતા. એવી મસ્ત દશામાં તેઓ વિકસ્તા હતા, આત્માના ક્લમાં સાલતાં આન પ્રસ્ત સામાના ક્લમ સાલતાં અન સાલ સાલ કતા. આવા પરમ આત્માન ક્લમ યોનીયરના દર્શન અમાનં દલન સાલે જ્યારે પારસમાં લિસ્સતા હતા. આવા પરમ આત્માન કે એને હોતી શ્રાફ તેમ સોનું શ્રાફ તેમ આનં દલન સાલે ત્યારે ' મુજશ' મારે સોને સાથે, તેમ આનં દલન સાલે ત્યારે ' મુજશ' આતે કરી સોને સાથે, ત્યારે હું ' મુજશ' આનં કરી સોને સામાં દ્વી હત્યા લાવોલિ !

ં મારેગ થલત થલત ગાત આન દવન ધ્યારે, રહેત આનંદ ભરપૂર, " "કોઇ આનંદવન છિંદ હી પેખત, જસ રાય સંગ ચઢી આયા:

આનં કંપન આનંદરસ હીલત, દેખત હી જસ સુધ્ ગાયા

" આત દલતકે સંગ મુજસ હી મિલે જળ, તબ આતંદ સચ ભરો મુજસ; પારસ સંગ લાહા જો કરસત, કચત હોત હી તાકે કસ."

" એરી આજ આતદ **લ**યા ચેરે !

તેરા મુખ નિરખ નિરખ, રાખ રાખ શીતલ ભાષા અગાઅગ;

"શુદ્ધ સમતારસ ઝીલત, આનંદઘન ભયા અનત રગ એરીં"

આ ઉપરથો અહીં એક વિચારહીય સ્ત્રપ્રદ પ્રયંગ ઉપસ્થિત થાય છે કે, આવે - નાયત્રો એક ધુરંપર ગાયાર્થ, પહૃત્યંનો ત્રામથે તૈયા, સક્ક ગામમસ્દ્રસ્થનો જાણ, વિદ્દૃશ્ચિરેપાલું ઘરોવિજય એવો સુરુષ, ગા ગ્યત્રવાચીઓ આતંદવાન્છના પ્રથમ દર્શન-સમાગાર્ધે લાંદુ મંત્રપુત્રય થયો હોય એમ ગામતંદવરિંગાણીમાં લીદી છે, અને તે ચેપ્પી-પૈસ્તી ચદ્દકાલ ગાતમાનંદમય વીતરાગ દશા દેખીને સાત્કાસ્થયે ગાલુલયે છે! અને યાતાની સમસ્ત વિદ્વતાનું અભિમાન એકીસપાટે ફગાવી દર્ધ, ગાળક જેવી નિર્દોષ પરમ . સરળતાથી કહે છે કે, 'લોહા જેવા હું આ પારસમણિના સ્પર્શથી સાતું ખન્યા!' અહાં! ફ્રેવી નિર્માનિતા | ફ્રેવી સરળતા | ફ્રેવી નિર્દેશના | ફેવી સુણગ્રાહિતા ! આને ખદલે ખીતે કાઈ હોત તા ? તેને અભિમાન આહું આવી ઊલું રહેત કે, 'હું' આવડા માટા ધુરંધર સ્માચાર્ય, સ્માઢલા બધા શિષ્ય-પરિવારના અલુણી ગચ્છાધિપતિ, સમસ્ત વિદ્વતસમાજમા સુપ્રતિષ્ઠિત-માવા જે 'હું ' તે શું જાવાને તસું ? ' પણ ઘશાવિત્રવજી ચાર પુરુષ હતા, એડલે આનંદવન્છના કિલ્લ ક્વિન તેમના આત્માએ સાલાથો ને તે સંતના ચરણે હળી પડયા. શ્રી મદોવિજયજીને અહીં પ્રત્યક્ષ અનસતિ સર્ક દ્વાર એમ જસાય છે કે આ અનુસવદ્યાની પરમ ચાંગી યુક્યની પાસે માર્કુ શાસરાત (Theoretical knowledge) શત્યકપ છે. માટે મીડે છે: કારણ કે અધ્યાત્મ વિનાનું-આત્માતુભવ વિનાનું શાસ એક્ક્સ વિનાના મીડા જેવું છે હું આટલા વર્ષ ન્યાય, દર્શન આદિ સર્વ આગમ-શાસ ભરવા. પદ હોઇ જ રહ્યો. યક આ આત્મત્રાનના નિધાનકથ, પારસમહિ આતંદવનના જાદુઇ રપશુંથી લોહા જેવા હું સોનામાં ફેરવાઇ ગયા ! એવા સવેદનથી એમના આત્મા પરમ લાવાવેશમાં આવી જઇ શ્રી આનંદલનજને સર્વ પ્રદેશશી તમી પડે એમ પ્રતીત શાય છે. આપ સંદેશિવજાના પરસાદે ગરુ આ સ્થાનંદલનભના પ્રસંગ ઉપરથી વર્ષ-માનમાં પણ જે કાેઇ અદપક્ષત અનાની જન યત્રતવથી કંઈક શીખી લઇ પાતાને નાની માની વેસવાના કોંકા રાખતા હોય તેને વધા ધઢા હેવા જેનું છે, અને આ સુદ્દી ખાસ क्षामां हेवा शेष्य हे.

આવા જાનં દવાન છ જેવા પર માર્ચ ગુરુના વર્ષ્યું હેવું જાધ્યારમ, રોળ, લહિતની પ્રેમ્યુપ્ત પીધૂપ્યમાન કર્યું હતું, જેવા શ્રીમાન્ ચર્ચા વિજન્મ છ જેક માદ કર્યા સ્વાર સ્વાર પ્રાપ્ત કર્યું હતું. જેવા શ્રીમાન્ ચર્ચા વિજન્મ છ જેક માદ કર્યા કર્યા કર્યા સ્વાર પ્રાપ્ત કર્યા હતું હતું કે દે તેમતા કુપારે માધ્ય પ્રાપ્ત માના કર્યા હતું હતું કર્યા હતા તા વચ્ચાન પ્રવૃત્તિ મુખ માદ પ્રાપ્ત માના માર્ય પ્રાપ્ત કર્યા હતું કર્યા હતું કર્યા હતું કર્યાન સ્વાર માર્ચ માત્ર માર્ચ હતું હતું કર્યા લગ્યન સામે પ્રયુપ્ત સામાન માર્ચ માર્ચ માર્ચ માર્ચ માર્ચ માર્ચ માર્ચ સામે માર્ચ સામે કર્યા સામે સામાન કર્યા કર્યા હતું કર્યા કર્યા હતું કર્યા કર્યા કર્યા સામાર્ચ માર્ચ કરી, સામાર્ચ માર્ચ માર્ય સાચ્યા માર્ચ માર્ચ

તે એક્કી ક્ષી સીમ ધરવાયીજીને સ્તવતાં વિગતિ કરે છે કે, 'હે લગવન્! કૃપા કરીને મને શુદ્ધ માર્ગ બતાવો! આ લસ્તફેશના લોકોએ લગવાન જિનના અનુપમ શાસનના જે હાલહુવાલ કર્યો છે, તે હોઈને માર્ગુ હૃદય વિશાઈ લાય છે, એટલે આપની પાસે પાડાં છે. આ વત્તં માન દુત્યમ કોલના અધ્યશ્રદ્ધાલુ, ગાહરિયા પ્રવાહ જેવા, મતાગ્રદ્ધ, વક-અડ લોકો કેઇ સાચી વાત કહે તો તે સાંલળવાને પણ તૈયાર નથી! તેને કંઈ કહેતું તે અસ્વયમાં પીક મૂકવા જેતું છે! એટલે મારી શાસનદાલની વસળ હું આપની પાસે કાલત છે.

' ભૂતોમાં! કાર્ય લોકા સ્ત્રવિરુદ આચાર ચાલી રહ્યા છે, તે સ્ત્રવિરુદ કાલી રહ્યા છે. આવા કાર્ય જેના એમ કહે છે કે, 'અમે લગવાનના માર્ગ રાખીએ છીએ-અમે છીએ તો માર્ગ ચાલે છે!' આ તે હું કેમ શુદ્ધ માર્હી ચા લોકો ખોડા ફ્રેન્ક્યરવાળા આલંખન કેખાડી મુખ્ય-સાળા લોકને પતિત કરે છે, ને આગ્રાલગરૂપ કાર્જુ (તેલક પોતાના ક્યાંગે ચોઠ છે!'

> "ચારે સુત્ર વિરુક્ષાચારે, ભાષે સત્ર વિરુક્ષ; એક કહે અપ્રે મારુ રાષ્ટ્ર, તે કેમ માત્ર શક્ય કે. જિલ્છ! વિનાતી અરાધે: મ્યાલ બન કૂર્ય કેમાહી, સુત્રમ લીકને પારે; આધાલ બ તિકેક તે કાલુ, શાંધે બાપ નિલારે કે..જિનાજી "

વળી, ભીતે કેમાં એમ કહે છે કે, " જેમ ઘણાં લોક કરતા હોય તેમ કર્યે" જતું, એમાં શ્રી ચર્ચા કરવી !" 'તહાજન વાલે તે માર્ચ" કહ્યાં કે તે તેમાં જ આપણેને સ્થાને મુત્ર માત્ત શાય છે. " ત્યારે ક્ષા ચેશી અને તે તેમાં જ આપણેને સ્થાને ખુત્ર તે તેમાં પછે પરિકાલ અને તે તેમાં પણ પરિકાલ અને ત્યારે વાલો આપણે છે. આપ્યાં પણ જૈન શ્રાહ્ય કે, તે તેમમાં પણ પરિકાલ અને ત્યારે વાલા વાલા એમાં એમાં પણ મેન્દ્ર તે તેમમાં પણ પરિકાલ અને ત્યારે ત્યારા સાધુ સુલ્લા લેખન એવા સંત્ર જનો શ્રાહ્ય છે, અને તેમાં પણ ક્ષાય છે, એમાં સ્થાય તે તેમાં પણ ક્ષાય છે, અને તેમાં અલ્લાલ તેમાં સાધુ સ્થાય સાધુ સુલ્લા તે તેમાં ક્ષાય તે તેમાં અલ્લાલ તેમાં તે તેમાં તેમાં

"આર્ય થાડા અનારજ જનથી, તેન આપેમાં થાડા; તેમાં પણ પરિણત જન થાડા, ત્રાચણ આદમ-અહું થાડા રે જિનજી! અગ્રાની નાંદ ફોલે મહાજન, તે પણ વલવે ટાળું; ધર્મદાસ મહી વચન વિચારી, મન નવિ કોંગ્રે શોળું. રે જિનજ:" સપ્રવાન આફાએ વધાનચ્યાએ ચાલતો એવો એક જ સાધુ હોવ, એક જ સાધ્યો હોય, એક જ સાયક હોવ, એક જ ગ્રાવિકા હોય, તો પણ તે આફાસુકતને 'સંઘ' નામ ઘટે છે, બાકી તો અસ્ત્રિસંઘાત છે, એમ શ્રી શ્વદ્રભાહું-વાચીજીએ 'આવશ્યક સત્ર' માં કહ્યું છે, માટે નિજ જે-ન્યજે દે ચાલતો હોય તે અદ્યાની છે, ને તેની નિશ્ચએ ચાલતારા પણ આવાની છે, આવો ગ્રામાની એ ગચ્છનાં ધર્ણાં લાઈ પક કંઈ બાલ્યુવાયોળો હોય' તે આવંત સંચારી છે. જે ખંડખંડ પહિલ હાય-' ઇધર ઉપર કંઈ બાલ્યુવાયોળો હોય' તે કંઈ હાના તથી. સાની તો જે નિશ્ચિત સમય બાલ્યું તે છે, એમ 'સંખ્રાંતિસ્ત્ર' મા સ્પષ્ટ કહ્યું છે. બાહી એ સમયને-સ્લિતાર્વય અખ હ સ્ત્રુતો, વિનિશ્ચ વ હોય, તો જેમ જેમ બાહુંગ્રુતને, બદ્રબંતને સંખ્રત-નાનોતી હોય, અને જેમ જેમ લાલા શિષ્યપરિવાયથી પરિ-વરેશ હોય, તેમ તેમ તે તો જિન્દશાસનનો વૈરી છે-દૂરમન છે.

"અજ્ઞાની નિજ ૭૬ ચાલે, તસ નિશાય વિદ્વારી; અજ્ઞાની લે અચ્છેત ચરેવે, તે તો અનત સંસારી રે જિનછ! ખંડ ખંડ પંતિ જે દ્વારે, તે નાંધ -દિશે નાલ્યું; નિશ્ચિત સમય લદે તે નાલ્યું, સમતિની સહિનાલ્યું રે જિનછ! જિમ જિમ અદ્ભું કૃત ખદું જન્સ મત, ખદું નિજય પરવરિયા; તિમ તિમ જિનસાસનનો વધરી, તો નવિ નિશ્ચય દરિયા. રે જિન્છ!"

ઇત્પાદિ વચનાથી તેઓશ્રીએ હોંકોની ગંધકાલા પર સખત કુઠાર-પ્રહાર કરેયે છે, અને પોતાની પાછળ ચોઠું ટેશું ચલાવનારા વ્યક્ષાથી સચ્છાવિષતિઓને મહારત માત તારાઓની બ્રાંતિ લાંગી નાખો છે, તેમજ નિર્લય માનથી પંદુત-અપંદ વસ્તુ તત્ત્વના સાનથી રફિત એવા ખુકુશત-પણ વિહાન તથા ઘણ લેઠાંધવ તથા મેંડેટ દાખોના પરિસારથી પરિવેશ કહેવાલા સુરુઆના ખાલ દાઠમાઠાથી ને વાસાર્જનરી અંજાઇ જનારા મુડ્ય જનોને તેવા વ્યક્ષનીઓથી સોળવાઇ ન જનાની રખ્ય ચેતવણી આપી છે.

ટ્રેાર્ક લેકો એમ કહે છે કે, 'લોચાદિક કપ્ટે કરી અપે લિક્ષાવૃત્તિ કરીએ છીએ તે મૃતિમાર્ગ છે, 'તેને શ્રી મોમેવિજયાછ બવાલ આપે છે કે, તે માનતું સિલ્યા છે, કારલ કે સાચા સુરુપુષ્ણા વિના-આત્માર્થી પણા વિના જનામની અતુવૃત્ત્વએ ચાલતું, જનામતર જને કરતું, લોકને રુક દેખાઠવા પ્રવર્તતું, તે માર્ગ હોય નહિ. નગી તે માત્ર કપ્ટે કરીને જ સૃત્તિમાર્ગ પ્રાત્ય થઇ જતો હોય, તો અગઢ પણ સારો ગણાવો હોયએ, કારણ કે તે ભાગતે બાર વહે છે, તહારામાં લાયે છે ને ગાદ પ્રહાત ખાયે છે! માટે માટ બાલ કાયક્લેશાદિકર્યો કાંઇ શુનિપત્રું આવતું નથી, અને તેવા મુગ્યની જે લિક્શ કે તે બલકરહ્યું પીઝયની લિક્શ છે

"તો કઈ મુનિ સારા પાયે, અગદ થાયે તો સારો; ભાર વહે, કે તારારે લમતો, ખપતો ગાઠ પ્રદર્શિ રૂ જિનજી! લગ્ન પાય અનુભવી પાયે, ભારાદસ્ત્રી જિન શિક્ષા, પુરવ ભાવ ત્રત ખાત કેટ એ, મચ વસ્તુની બિક્ષા, રે જિનજી!" વળી કાઇ એમ કહે છે કે, 'અચે લિંગથી તરીશું, શુનિનો-સાધુનો વેષ, કલ્પલિંગ મને ધારણુ કર્યું છે તેથી તરીશું, અને તૈન લિંગ એ શું દર છે. 'તો તે વાત મિલ્યા છે-પેપારી છે, કારણું કે શુલું બિના તરાય નહિં, ત્યારૂપ શુનિપણાના-સાધુપણાના-નિર્દાય-પણાના-પ્રમાણપણાના શુલું બિના તરાય નહિં, ત્યેય બુલ્લ બિના તારો ન તરી શકે તૈમ. તેમ જ કોઇ નાડિક્યો-વેપવિકંગક એટો સાધુનો વેષ પહેરીને આવે, તો તેને નમતાં એમ કોય છે, તેમ સાધુશ્રુલું રહિત એવા વેલવિકંગકને-સાધુવેશની વિકંગના કરનાર લાણીને નમીએ તો સેપનો પેમ જ છે.

"કોઇ કહે અમે લિંગ તરશું, તેન લિંગ છે વારુ; તે મિશ્યા-નિવ સુલ વિશ્વ તરિશે, ક્ષુજ વિશ્વ ના શરે તારું રે જિન્નછ! ફુંદ લિંગ જિંગ પ્રગ્નાટ વિશ્વસ્થ, જાળી નમતાં કોય; નિધક્ષ (?) બાણીને તમતાં, તિમ જ કહી તસ યાય. રે જિન્નછ!"

હેલ્યારિ અનેક પ્રકાર તેઓશ્રોએ સમાજનો સરા સાથ કરી છે, લોકોની અંધકાદા ઉદાર્ત છે અને તેઓને સત્ય કરતાં પ્રત્યે રાયો છે. સાથે સાથે તેઓએ સુસાધુઓના-નિર્માં પીતરાળી સુનીયરાનાં હક્ષણે. સ્પષ્ટપણે બતાવી શ્રાહ્મ સુનિયણાની-નિર્માયયણાની લાશે-ભાર પ્રદાસ કરી છે, જેમ કે—

> " ધન્ય તે મુનિવરા કે, જે ચાલે સમલાવેડું લાવસાયર લીલાએ જ્ઞેતરે સંચય દિરિયા નાંચે ધન્ય≎ ક્ષાગ ૫ક તછ ઉપર વેશ, ૫ કેજ પર જે ત્યારા; સિંહ પે નિજ વિકુશ રાસ, કિલ્લન જન આધારા ધન્ય≎ સાનવાંત સાની શુ મળતા, તન મન વચને સાચા; ક્લ્ય ભાવ મુધા જે ભાળે, સાચી જિનની વાચા ધન્ય∘"

તે મુનિવશે ધ-ય છે કે, જે સમલાવે-સગ્રહેય રહિતપણે વાલી રહ્યા છે! જે આતમ-પરિયુતિમાય મુદ્ધ ક્રિયાર્વય નીકાયટે આ લવસસુદને હીલામાં-સ્મત માત્રમાં પાર ઉતરી લય છે! સાત્ર-પંક છોઠી દર્છ, જે તે ઉપર ઉદાસીન થઈને પંક્લ-સ્મલની જેમ ન્યારા ધર્મને કેંદ્રા છે, સિંહની જેમ જે આત્મપરાકાંથી સૃષ્વીર છે-પોતાના આંતર શરૂઓને હેંધુવામાં વીર છે, તે જે ત્રિયુનન બનેના આધારસ્ત્ર છે, જે પેતે ત્યાન્યંત-આત્માંનો છે તે સાની પુરુષો સાથે હળીમળીને સંદ છે, જે તેન, મન, વચને સાથા છે, અને જે દ્રશ્ય-ભાષથી શુદ્ધ એવી સાની બિનની વાલા વડે છે, સાના વીવદાગપણીત આગેનો ઉપદેશ આપે છે, જેવા તે નિર્ફાય સુનિવરોને-સપ્રણોને ધન્ય છે!

તારાક્ષ્ય સુનિગ્રુલ ધારવા જે અસમર્થ ક્રેય, પણ જે શુદ્ધ પ્રરૂપક હોય, તે સંવિષ્યાણિક પણ જિનશાસને શોલાવે છે, કારણ કે સરળ પરિલાયી, નિર્દેશી હોઈ પોતાના સાધુપણના દાવા કે ઢાળ કરતો નથી, પણ સચિત્ર પાસિક છીએ, એમ સરળતાથી કહે છે. ઇનવાદિ વાત પણ ત્યાં વિસ્તારીને ચર્ચા છે. ગૂર્જરભૂષણ ન્યાયવિશારદ ન્યાયાચાર્ય ઉપાધ્યાયછ શ્રી મદ્ યશોવિજયજીનું જીવન અને પ્રાણુપ્રતિષ્ઠા યાને આપણું કર્તાવ્ય વિષ્કા: શ્રાયન નિર્મલ !

ઉપાધ્યાયછ, ત્વુહિવાદ કે હિતીય હૈમચંદ્ર તરીકેની ખ્યાતિ પ્રાપ્ત કરનાર મુજેર દેશની મહાન વિબૂતિરૂપ શ્રીજિનશાસન પ્રસાવક ચશાવિજયછ મહોરાજશ્રીના છવત ઉપર અનેકાનેક લેખો આજે આવવાના સંભવ છે. કારણ કે ઉપાધ્યાયછ પ્રત્યેની ઢાંદિક સર્કિત સર્ફ્કુ કેઈ વિદ્વર્ક્ત કે આપગનતાના કિલમા એક યા બીછ રીતે પણ છ્લાેક્લ સર્ક્ત સ્કું કોઈ વિદ્વર્ક્ત કે આપગનતાના કિલમા એક યા બીછ રીતે પણ છ્લાેક્લ સર્વેલી છે.

જો કે તે મહાપુર્ય પ્રાચીન કાળની પહલિએ આત્મપ્રશંસા નહિ કરવાના ક્રાસ્થે યા બીજ કોઈ પણ કારણે, પેાતે તો કેઈ પણ સ્થળે પેલાના જીવનનો ઉલ્લેખ સરખો. પલ કર્યો નથી. પણ તેઓક્ષોના સમકાલીન પૂ કાન્તિવિજય કહ્યું " સુજસવેલીલાસ " નામતા શ્રેશ ઉપરથી જે કોઈ સ્પષ્ટાસ્થ્ય ખીના મળે છે તે પ્રસિદ્ધ થયેલ છે. છતાં જન્મ કિશ્મની ને∣ષ્ટ કોઈ પણ જ્યાંએ એવામાં આવતી નથી.

ઉપાધાયછ મહારાજને વિદાના મળતાર કહીએ તો પણ તે અતિશયોક્તિ શરેંદું તથી કારણ કે તેમના કાળમાં તેમણે એટલા બધા વિવાના ફેલાવો કર્યો હતો. કે સામાન્ય જનતા પણ શ્લાકબદ કે ન્યાયસાયમાં વાતચીત કરી શકવી હતી.

ન્યાય, વ્યાકસ્થુ, કાવ્ય, કેશક, ધર્મસારુ, ચેલ્લ વચેરે કેશકે પણ વિષય એવા ત હતો કે જેમાં ઉષ્પાધ્યાયછ મહારાજે કંઈ તે કંઈ લખ્યુ ન હેલા ભીજ શ્રેયકારોના સંસ્કૃત-પ્રાકૃતનાં ભાષાંતરા ગુજરાતી કે હિંદીમાં શ્રાય ત્યારે ઉષ્પાધ્યાયછ મહારાજના યુજરાતી ભાષાત્મક 'દ્રવ્ય-સુભુ-પૃથીય'ના શસ્તુ સંસ્કૃતમાં ભાષાંતર શ્ર્યુ હતું, એ તેમની અપૂર્વ શ્ર-૧૬૧૬ તરીકે સામખ્ય જ્યાનતી નિશિષ્ટના છે.

ઉપાધ્યાયછ મહારાજે સાહિત્ય હાંચ તૈન શાસનો ન જહોવા ફેલાવા અને કુમત પારીઓના હંકાગ્રહનું સુંદર શૈલીમાં નિરસન કર્યું છે. આજવી લગલમ અહીસા વર્ષ પેવેંનો એટલે તે મહાયુજના કાળ એવા હતો કે એ તેમના જેવા વિદ્વત્તાપૂર્ણ પુષ્પન ને પાડ્યા હેતા તો તેન સમાજની શી પરિચિતિ હોત તેની કલ્પના સરથી પણ ન ત્રાણી શરે. તેઓગ્રીએ તેન સમાજને સલસ અને હનત રાખવામાં મહાન હોય આપ્યો છે. તેમજ ગ્રવસ્તો રૂપી ચોટો વારો આપ્યો છે.

ઉપાધાયજી મહારાજે તકે, આવમ, અધ્યાત્મ અને વેગમાં વિષયમાં સેક્કે વિઠ્ઠા લેખ્ય ગ્રંથાની સ્થતા કરી છે, એઠલું જ નહિ પણ પદે, સન્દ્રવર્ધો, સ્તાવનો, સસાસ્ત્રો વચેરે માલેપસોડ્ય ગ્રુજરાતી શાહિત્યની અદિતીય સ્થતા કરવી પણ તેઓ વૃક્ષ્યા ન હતા. શ્રેતામ્બર, દિગંભર કે સ્થાનકવાસી ત્રણેય ફિરકારૂપ ગીન દર્શનમાં નવીન ન્યાયની શૈલીમાં લગ્ન સર્જન કરનાર તરીકે આદિકે અંતરૂપ અદ્યાપિ પર્યાંત તેઓ જછે.

રેલિકાલસ્ત્રેજ્ઞ શ્રી હેમચંદ્રસૃષ્ટિ પછી મહાસામય્યેયાલી વિદાનોની ગણનામાં ઉપાધ્યાયદ્રની તુલના કરી શકે તેવા મહાવિદ્વાન્ ત્રલ્યામા કે સાંભગવામાં આવ્યા નથી જેથી દ્વિતીય હેમચંદ્ર કહેવામા અહિરાયોકિતને વ્યાવ સ્થાન નથી.

યો(પ્રવિષયના પ્રથમ વિવેચનકાર વિરક્ષાઉત ૧૮૮૪ કાંચના પ્રશેવા હરિકાદ્રસરિ શ્યા છે. તેમના વચનોના લાવને ઉદાહપુત્ર'ક સમજી તેમના કાંચોની ટીકા તેમજ સ્વતંત્ર પ્રકાશે: રચનાર આપણા નાચક ઉપાધ્યાયજી મહારાજ જ છે, જેવી તેમતું હધુ હરિકાદ્ર નામ સપૂર્ણ સ્વરૂપે અન્વર્શંક છે.

વિદ્યાધામ કાશીમાં મહી વિદ્યાવચાય કરતી વખતે એક અરુપ પંતિવિદિશ્યિલિ વાદ માટે આવી ચારવા અંગે છતવાયમાં કાશીમાં સમાર્થ વિદ્યાનીનું સામધ્ય સર્દી પડ્યું ત્યારે સુધી મું હવાને અને છતાયમાં આશીના સ્વાર્થ સર્વાદ્યાને વિદ્યાવસ્થાને સ્વાર્થ વિદ્યાવસ્થાને વિદ્યાવસ્થાને સ્વાર્થ વિદ્યાવસ્થાને સ્વાર્થ વિદ્યાવસ્થાને સ્વાર્થ વિદ્યાવસ્થાને સ્વાર્થ કરી હતા કરવાથી તેઓકારીને "ન્યાયાચાર્ય" બિર્ફુટ મત્યું વિદ્યાના મહત્યા વિદ્યાવસ્થાને બીઠાકિ દર્શનાની એકત્વ્યાદ્ય ક્રિક્ટિએનું ખંડન કરતા કે લાખ શ્લોક પ્રમાણ ન્યાયગ્ર માર્ચ કર્યા કરી હતા પણ દર્શન તે "બિર્ફુટ" પ્રશાસિક ક્ષા ક્રાર્થ સ્વાર્થ કર્યા કરી હતા પણ દુ-ખની વાત એ છે કે આ બધા કર્યો હતા કર્યા કર્યા હતા સ્વર્થ કર્યા કર્ય કર્યા કર્ય કર્યા કર

ઉપાંધ્યાયછ અહારાજશીએ ' તત્ત્વાર્થ'-લાત્ય' ઉપર દીકા રચી છે. તેમાના સાત્ર પ્રથમ અધ્યાય જેટલા જ લાત્ર અથે છે. રેના ઉપર વર્લ આનાસાર્થ શ્રીમહિલ્મદર્શન્સારિષ્ટ અહારાજશીએ ટીકા રચેલ છે. તેની ટેસક્રેમી કરતો હતો ત્યારે ત્રને પદે પદે વિચાર કરતાં તેઓશીએ એક એક ટેકેકિફોનું વચન આવાલ પાર્દિતપૃત્ધું લાગવા સાથે નવીલાં જ્યુંત હતું, તેન દરીય અધ્યાયની ટીકા મળી છેતા તો આજે અભની બીછ તત્ત્વાર્થની ટીકાએપાં કોઈ એરી લાત પાડત, અને લાલું લાલુલા વિચારવાનું મળત. છતા આજે જે શર્થા મળે છે, તે પણ આપણે માટે તો એટલા ભાગ છે કે તેને સારી રીતે વાચન વિચારવા માટે સારું થ જીવન પૂર્વત નહી.

. આપણે લશે ઉપાધ્યાયાંટની પ્રતિમાની પ્રવિક્ષમાં મન્ત ક્ષેત્રિએ પણ તેમની વાસ્તિધ પ્રાથુપ્રવિષ્ઠા તો ત્યારે જ ત્રણી શકાય કે અને, વચન અને ક્ષયાને નીચાવી શાવિની પ્રશ્નેને ઉપકૃત થવા માટે અથાત્ર પ્રવાસ લઈ તેમના અનાવેશા ચર્ચાનું વાચન, સતત અને પરિશીલન કરીએ, અનુપલબ્ધ લેવાની શાધખોળ કરીએ, તેમજ તેમનાં વચનો પ્રમાણે ચશાશક્ય માર્ગના પાલનરૂપ ઓછામાં એછી જરૂરિયાતોથી આપણા જીવનને નિભાવવા જેટદો સ્વાર્થ,ત્યાપ કેળવીએ, કે જેમાં અંશહા પણ ભૂતમાત્રની સેવાનો ફાળા વ્યારે. તે રીતે તેમના પાલે અતુષરોએ તો જ આપણે તેમના સાચા ઉપાસક અને સેવક છોએ અને તેમણે આપેલા વારસાને બાળવી રાખ્યો ચણાય. નહિતર વારસામાં મહેલી વસ્તુનો દુરુપયોગ કરનાર અફલીન યુત્રની જેમ આપણે પણ એવા મહંપુઓને અત્યાય આપી વસા હોયુઓ એમ શું નથી લાગતું ? તો અને તેટલા તન, મન, ધન પારચી તેમના અપ્રકાશિત શ્રેસી એમ શું નથી લાગતું ? તો અને તેટલા તન, મન, ધન પારચી તેમના અપ્રકાશિત શ્રેસી પ્રકાશમાં લાવવા અને પદન-પાકના સેદા, વર્બી ઇનામી અને ઉપાયિઓની યોજનાપૂર્વક પણ ઊલાં કરવાં હોલના તબાકે અતિઆવસ્થક છે.

ઉપાધ્ધાયછ સમર્ગ લાકિક વિદ્વાન હતા, એટલું જ નહીં પણ તેઓ શાશામાર આધ્યાતિમ ફ્રાની પણ હતા, એ તેઓશીના અનાવેલા 'અધ્યાત્મસાર, અધ્યાત્માપતિયા, દ્વાનસાર' વગેરે લંશોથી સ્થપ્ય સાલમ પડે છે.

પૂર્વ મહાપુર્યા જિનલદંગણ ક્ષમાશ્રમણ તથા સિહસેન દિવાકરનાં પરસ્પર વિરુદ્ધ કેખાતાં છતા નથાપેક્ષ વચનોને ભાગહે રાખ્યા સિવાય ભરાભર સંગત કરી ભાપવામાં ઉપાધ્યાસછ મહારાજશ્રીની તુલનાત્મક હિંદએ અલ્લ કામ કર્યું છે તે આલ્ના ભાગાલપુર્પાયોએ થઠો લેવા એક છે.

તેમના છવનને લગતી કેટલીક કિંવક તીએ ચાલી આવે છે, જાને તેમાં તથ્ય કાવાની સંભાવના ઘણી જણાય છે. તેમાંની કેટલીક ટુંકાયુમાં અહીં આપવામાં આવે છે:–

- (૧) આલગ્યમાં આતાની સાથે ઉપાશ્રયે પ્રતિક્રમણ કરવા જતાં એક વખત ઉપાશ્રયમાં પ્રતિક્રમણ કરાવનાર કાઈ ન હતું, ત્યારે આતાને અહુ ખેદ થયો. બાલ કે ખેદતુ કારણ પુક્રનાં આતાએ જ્યાન્યું કે, પુત્ર ! આન્દ્રે આપું પ્રતિક્રમણ રહી જશે. કારણ કે આન્દ્રે ઉપાશ્રયમાં કાઈ પ્રતિક્રમણ કરાવનાર નથી. ત્યારે પુત્રે આતાને કહ્યું: 'તમે જરાય 'દુ-ખ ન લાવો, હું પ્રતિક્રમણ કરાવું, અને આતાને આર્ટ્સલ્ય પસારતા વાલ કે આપું ય પ્રતિક્રમણ અરાગર કરા-હ્યું. ઉપાશ્રયે સાતાની સાથે જતાં સાંભવા સાત્રથી ચાદ રહી ચાતું હતું. આ કેકીકત સુરુષ્ક્રાસને અહ્યુતાં લાવિ સહાયુરુખની પ્રયુત્વરીએ પ્રતા પારે યુત્રની સાળવૃત્તિ કરી, અને સાતાએ પણ તે આપ્રદ્યો પણ હવે પ્રત્યું ક વ્યાવકારી હતી. *
- (ર) ઉપાધ્યાયછ મહારાજ કાશીથી જાભ્યાસ કરી તાલ જ આવેલા અને સાંજે શુરૂપ્રહારાજ સાથે પ્રતિક્રમણ કરતાં સહ્લાય એલવાનો સમય થતાં ગુરૂપ્યહારાજ એલવી શરૂ કરી ત્યારે શાવકોએ ગુરૂપ્યહારાજને સ્થવન કર્યું કે, 'સાહેલ ! આપના વિદ્વાન શિષ્ય કાશીમાં અભ્યાસ કરી આવ્યા છે તો તેમને સહ્લાય એલ. તો કંધક નવું સંલળવા અને લાયુના મારે.' ગુરૂષ્ટએ કર્યું કે, 'સાહ ત્યારે ' ઉપાધ્યાયછ મહારાજે કહ્યું કે,

^{*} આ પશું એક દતકથા છે. સંપ્રા

'સાહેલા! સહ્ત્વાય તે! આવડતી નથી.' ત્યારે શાવકામાંથી કોઇક ગાંથી જ્ઞાપ્યું : " ધાર વર્ષ કાશીમાં રહી છું લાસ વારહ્યું !" ઉષ્યાખાયછા સહારાજ તો વ્યાર સાંધા મોરું દિવસે સહ્ત્વાયની અવસર માની આદેશ માગી સહ્ત્વાય કહેલા માંદી. વખત લક્ષુ વીતવા આસ્ત્રો, મધા વ્યાગભાય પણ ઉપાધ્યાયછા અહારાત્રે તો સહ્ત્વાય ધોદાવી ચાહુ જ રાખી. ૮કેશ કરવાર ૮કેશ કરવામાં પણ ઉતાવળા હોય છે, તેમ અહલાઇ જવામાં પણ સહુંથી આપળ દોય છે. એટલે ૮કેશ કરનાર શાવકે જ કહ્યું: 'હવે કથા સુધી ચાહશે !' જવામમાં ઉપાધ્યાયછા અહારાત્ર કર્યા હોય છે, " કાચીમાં ઘાર વર્ષ વાઢેશ ઘાસતા આ સુધિ કરવા લાગ્યા.

આપણે પણ વેમના જ શિષ્યો અને શ્રાવકા છોએ. તેઓશીના સાહિત્ય માટે જેવંદું કરીએ તેટલું એશું જ છે. એટલે વેમના સાહિત્યના પ્રચાર, પહેનપાઠન, અપ્રયુટ ગયેલ પ્રકાશન, અને અરહપ્ય શરીની પૂર્વે કરીએ એ જ વેમની સાચી અને મહાવાની પ્રવિધ છે અને પ્રવિદ્યાદિનની સાન્યક જિલ્લાણી છે, એટલુ જ જાણાવી તે આપના પ્રાપ્યુદ્ધ સામ્યુદ્ધ અપ્યુદ્ધ તે સામ્યુદ્ધ એ પ્રવૃદ્ધ સામ્યુદ્ધ પ્રત્યે પ્રાપ્યુદ્ધ કરીને સામ્યુદ્ધ અપ્યુદ્ધ તે સામ્યુદ્ધ તે સ

યશાયામાં

ં લેખક : શ્રીયત છળીલદાસ કેશરીચંદ્ર સંવવી ો

(રાગ-સના સના લેક્સર હમલાત્ર)

તુરે શાસનકા શિરતાજ, દુનિયા ક્રિયા તે ઉદ્ઘાર: આવા આવા મેરે કાર, થાઉ મે હૃદિ ઉજિયાલક--ત્રમે૦ ન્યાયવિદ ન્યાયકા ગ્યાચાર્ય હૈ, હેમ હરિભદ્રસમ પ્રાતિભ હૈ: ક્રિયા શાસનકા ઉદ્ધાર, કરું તુમસે યુકાર, સત્ર સારસ્વત આજ, શાઉ મેં હૃદિ ઉજિયાલકે--ત્રમે૦ મેરે શાસનમ ત્રદકિ અપાર હૈ. થેરે શાસનથે' વૈકાવ અપાર હૈ. મેરે શાસનસે કીર્તિ' અખંડ હૈ. મેરે શાસનમે દાનકા પ્રવાહ હૈ. દ:ખ હતના હી ચાર, જ્ઞાન દીપક પ્રગટાય. કરુ તમસે પ્રકાર, થાઉ મેં હૃદિ ઉજિયાલકે--તમેન્ ગ્રાનગ'ગાક' ખાદેલાઈ હૈ. ગ્રાન ઝરજાેંકા કૈલાસ હૈ. કરુ વિનૃતિ ગ્યા વાર, સના નિર્મલ દિલહાર. આવા આવા સેરે કાર, સાઉ સે હિંદ ઉજિયાલકે--ત્રેમ∙

अवातवाग्विवेकामां, पण्डितत्वाभिमानिनास् l विषं यह वर्तते वाचि, मुखे नाद्यीविषस्य तत् । अ। વાશીના વિવેકને નહિ જાણનારા અને પાંડિયર્ડ અક્ષિમાન કરનારાની વાણી અને મુખમાં જેવું કેર ક્ષેત્ર छे अर्थु तो शर्मनु त्रेर भय् केतुं नयी. इतिकिका] [औ थ [શ્રી યશાવિજયછ

એ જરાતિક રોની મિલનજરાત ઉપાધ્યાયછ શ્રી યશોવિજયછ અને અવધૃત આનં દધનછ [અલેખક-શ્રીકૃત મહિલાલ ગ્રા પાદરાકર]

" વાણી વાચક જસતણી-કોઇ નયે ન અંધૂરી રે. "

" कान्ताभसुधास्वादाद्युनो यञ्जायते सुखम् ॥ विन्दुः गार्चे तद्दचातमग्रासस्वादसुखोदघेः॥ "

કાન્તાના અધરાસતના ચારવાદથી યુવકોને જે સુખ થાય છે, તે સુખ તો અધ્યાત્મ શાસના આરવાદથી થનાર સુખરૂપ સસુદ્રની પાસે એક બિન્દુ સમાન છે.—અધ્યાત્મસાર

[राग-दुनौ]

જપ સરસાત સરસ ગવેચા!

તાર્ય અજબ મુખ્ય સ્વાય રસવેયા.²
અજબ તું 'સાર્યસ્પાર લાકિંગ, કાલર લન વરસેયા,
અત્રલત ગાંની મુરમણિ લહેરે, લયુદરિલાદ લહેરિયાં.
હેમચંદ્ર, સુખરાવત હરપળ, શ્રંચ ળહુલ રચેયા.
સદ લક્ષણ સદ્યુણ નિજાણ, રનાતાલવ નિત્ય રચેયા.
સદ લક્ષણ સદ્યુણ નિજાણ, રનાતાલવ નિત્ય રચેયા.
અજેત પ્રેમાાદ્યાના રસ્યુણ, રસ રાસ રમણ રસચેયા.⁵
સલા લિક આનગલન પેપાત આત ક પણ સહેયા.
સાસન સસ્યુ સ્વાયક સ્વાયક સ્વાયન સ્

" सर्वदर्शनविष्यातो, विश्वबन्द्यो मुनीश्वरः । ज्ञानी व्यानी मसोर्थको, विरामाणां ज्ञिरोजणिः ॥ १ ॥

૧, શ્રીપાળ રાસ, ખાઢ ૪, તાલ ૧૨.

૨. નય-જોમદુના ગુરૂગી ત્યવિજવછ, સપ્તનય ન્યાય.

a. रखवैया–वानाभतरस भीनार-रसभवि.

૪ "સુષદ આનંદમન મિલને, મહાત્મીત જ્વાવી છે, ત્રિલુધ લગ અનારે પ્રષ્ટો, સદ્ય એ બલતી રહે; હત્તાર્ધ સારસ્ત્રત સ્ત્રે, નિયાધાસર એ લહે, અને વિદ્વારાનો હૈમે, નિયાર્વદ સદ્ય હારે "—હેમ્પા

शुद्धभारिदेश्य च, बैतशासन्वोतकः ॥ ध्यानिनामग्रणीर्धान्यो, मान्नारिन्साधकः ॥ २ ॥ अध्यारमोद्धारकः पून्य , समराजन्दमाक् च यः ॥ आनन्दयनपोगीशः, जीयाद् मारतमण्डले ॥ ३ ॥ (श्रीवद्धिसागरजी)

મહામૈયા લગવતી શારદાના ઉત્સંગે અતિ લાડથી ખેલી ખેલી મસ્ત બનેલા. ક્યોલી શારદન પ વિરલ બિરદ પામેલા. વારાલસીના ગંગા કિનારે દેવી શારદાને ભારાથી પ્રકાર દર્શન અને વરદાન પામેલા, ગિર્વાણ ગિરામાં ત્યાયતકે આદિ ગઢ વિષયે। પર ૧૦૮ મહારાંથા વ્યારેખી કાશીના પ્રકાંઠ વિક્રત્તાવાળા પહિતા હાસ જેમને ન્યાયાચાર્ય. ન્યાયવિશાસ્ત મદ અર્પણ કરાયું છે એવા, ગુજર લાવામા અનેક ગઢન વિષયો પર સંખ્યાળધ પ્રહાર્પ્રદેશના સ્થવિતા. જન્મથી સંસ્કારસંપન્ત, પ્રથમ થઈ શરીકા પ્રભવાદિ છ શ્રતકેવળી જેવા શ્રત્યાપત પત્ન ગ્રતધર, શતકાર સક્સણી, શ્રતજ્ઞાનસરમણિ, સકમહારા, પ્રહિનિધાન, જ્ઞાનવારિધિ, સકલ શાસપારંગત, અન્વીક્ષિષ્ઠી વિદ્યાધારી, મહાન સમન્વયકાર, પ્રખર નૈયાયક, લગવાન શ્રી હસ્લિદ્રસારે પછી જેમ શ્રી હિમચંદ્રસરિજી તેમ તેમની યાછળ શાસનસરલક ધર્મ સેનાયતિ, દ્રત્ય અને સાવશી શુદ્ધાચાર ક્રિયાયલક, વાહિમદભ'જક, સકલ સુનિશેખર, દ્રવ્યાત્યોગના દરિયા ઉદલ'ઘી જનાર. શાસન માટે ,, હનાર, મહાન્ અધ્યાતમગ્રાની, પરમગુષ્યાતભાગી, આલપ્રહાચારી. સ્વનામધન્ય ઉપાધ્યાયછે શ્રીમદ્ યશાવિજયછ મહારાજ અને મહાન અવધૃત, અધ્યાત્મ જ્ઞાનમસ્તીમાં સદાદિત મરત, ત્રિરિ-સુફા કાતરામાં અંતરાત્મદશામાં ખેલનાર યોળ. અધ્યાત્મ જ્ઞાન, ત્યાગ, તપ, તિતિક્ષાદિ વિષયા કેસાકસ લહી આત્મ-પ્રભને દાનાર, અલખ, અનાહતના ગાન ગવેયા એવા શ્રીસક આનન્કથનજી-એવા છે લાસ્તવર્થના શેલાધ્યાત્રન જ્ઞાન-જ્યોતિપંદા પરસ્પર અપરિચિત એવા, જ્યારે પરમ જિજ્ઞાસ હધ્યએ મહ્યા હશે. ત્યારે ઉક્ષયે કેવા નિજાત્યાનંદ લૂંટથો હશે ? ગ્રાનસરાવરની પાસે કેવી આત્માનંદ સરસ લહાજ લીધી-દીધી હશે ! વ્યવસા તેવા જ પ્રસારયા હશે ત્યારે કેવી અને કેઠલી હેવીન્મત્ત દશામાં પરસ્પર લેટી પહેલા હશે ? કેટલા ચાદર, આનંદ, ઉલ્લાસ પ્રક્ટથો હશે. વૃદ્ધિ પામ્યા હશે ! પરસ્પરનાં સુખદર્શન બાદ, અંતરાત્મદશાના દર્શને કેવા પ્રમાહ ઊછત્યા હશે ! કેવા સ્થળ, સમય, સંત્રોએ એ અલ્લત પ્રસંત્ર જમ્યા હશે ! છો હેકીકત પ્રત્યેક ગુણાનુરાગી, આત્મહિલાથી, ફ્રાનિયાસ, આધારક, વિચારક અને તત્ત્વ-ચિત્તકને જરૂર પ્રમુદિત કરનાર વનશે એમ માની આ જ્યાત પ્રકટાવલ પ્રયત્ને કરે છે.

થ્યા બન્ને મહાસાનવોની સાથેત છવનગાથા ઉપલબ્ધ છે તેટલી શેષ્યવાના વ્યસસ પ્રયત્ના વર્ષોથી ચાલુ છે. અલ્થાર સુધીમાં ગ્ર્યા ફિશામાં શેષ્યપોળવા ઘણુ પ્રયાસો સેવાના છે:—

૫. કુર્યાલી શારદ-મૂજળી શારદા-

૧, 'શ્રી. આનન્લાન પદલંગઢ,' લાવાર્થ, સં. ૧૯૬૨માં લખાવાે; જેમાં શ્રીમફર્ના ૧૦૮ પદો પર વિસ્તૃત વિવેચન માટે બાલળશ્રાચારી, પંચમહાનતધારી સ્વ૦ શ્રુહિસાગર-સુરીબર આ બે મહાપુર્યાને ચાલેખ્યા છે.

(આ ગ્રધનાં ડેનો સાર્કલના ૬૦૦ મૃષ્ઠ નક્કર હાકોલ રહ્યું કરે છે. શ્રી આન-દયન છાનારિતની ફપરેખા ૧૦૧ મૃષ્ઠ રેકે છે-લ્હુંઓ શ્રી અધ્યાત્મદાન પ્રસ્તાક મંત્રને પ્રસ્ટ કરેલ શ્રી છુ, સં. ગ્રથમાળ ગ્રન્માં ૨૧ આ ગ્રમ પ્રસ્ટ થયા બાદ તેની ત્રીષ્ટ આશીને પ્રસ્ટ કરવાની તૈયારી છે.)

ર શ્રીમફ છુદ્ધિસાગરસુરિછાંગ શ્રી ચરીકવિલ્વાછ છવન વિદ્યુ વહેલ્લાના શ્રી સંપતાય ગામકવાઠની વિનંતીથી પાલરા હતા ત્યારે વહેલ્લા સુલરાતી સાહિત્ય પરિષક માટે લખેલા, પરિષકમાં વંચાયેલા વિસ્તૃત નિર્ભય સં. ૧૯૬૮ માં લખાવલા છે.

3 આ સિવાય આ વિષય પશ્તને, તૈન સાહિત્ય પ્રકાશના વિકાસ માટે પથ્મ પુરુષાથે રેવનાર સ્વ૦ સેક્તિલાલ કલીચંક કેસાઇએ પૂળ પ્રકાશ પાત્ર્યો છે. ' જૈન સાહિત્યનો સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસ.' સં. ૧૯૮૯ તથા અન્ય અનેક લેખો હારા આ બાબત તેમણે પૂળ સર્ચી-પ્રકાશી છે.

૪. ૧૧૦ મોલીચાં કલાઈ કાપહિંચાના શ્રી. ચાનનઘરનાઇ માટેના સંદેશધનાત્મક પ્રથત પ્રધાના કેટ ના ક્યારે સાથતા પ્રકારના સાથતા કોઇ ના કાર્યાના કોઇ ના કોઇ ન

પ, ૧૧. ગાચાર્યંત્રી, યુદ્ધિકાગરસસ્ટિએ આ લે ક્યોલિકંપાનું મિલનચિત્ર મુંકર રીતે સ્ત્તુ કર્યું છે.

સમારા આશય આ છે જ્યાતિષંત્રાતી મિલનજોાત કેવી ને કેટલી જાજ્યમાન હશે? કેટલા ગુણાનુભગ ભાગ્યો હશે ? તેમાંથી જગતને નવીન શું મત્યું અગર મળે તેમ છે ? વાલીના અમૃતસોત કેવા વક્કો હશે એતું ક્શેન કરાવવાના છે,

જૈન શાસભીશી, ભાગમાના ત્રાજ્ય સાવા ઉપાધ્યાયછ શ્રીપ્રદ્ યંશીવિજયછ પ્રકાશિજ કરતા કેવલ બિલિજ ગાળુ લસ્ક લવા છે, તે સમયે તેવા સાધુ બોના બહુ-શ્રુત ગાણતા. તેવણે સાંભાનું કે, ગ્રેષ્ઠ લવાવત જેવા ત્રેન સાધુ શ્રી આનન્દવનછ ભાગાના સાધ્યાના કોલ્પા લતારી ગયા છે, તેમની ઉપદેશશેલી-દ્વાનુપોય આદિમાં અલ્લુત છે, રોપ્રાનુલાય ગામતાની છે, ત્રેમાં કોલ્પા કે કુ ગ્રાફસોમાં મેટા સાધે કે કવિત જ જનસંપર્ધ શાધે છે અને ગાલુક્કની ગાસપાસ કુંબરસોમાં અલખની ધૃત પ્રવાતી રહ્યા છે. શાધી છે અને ગાલુક્કની ગાસપાસ કુંબરસોમાં અલખની ધૃત પ્રવાતી રહ્યા છે. શાધી લેખને પત્રો મળે તો તેઓ પ્રળવાની સાધના રેવતા હતા, અને પોતે પણ અંભાવનાનોના ઉપદેશ ગ્યાપલ લક્ષ્યા હતા. ગા બાલુ અવધૃત પ્રત્યાની, કુશળ એવા ઉપાધનાશ્રકની વખ્યું વિદ્યાની પ્રશ્રા સાલાળી હતી. સિંહાંત-પારનાની, કુશળ એવા ઉપાધનાશ્રક પોતાની નશ્કના પ્રશ્રા સાલાળી હતી. સિંહાંત-

. 77.

પ્રી. આત-દઘન્છ [‡] ઉપાધ્યાયભને મળવા એકાકી ગાલી નીકત્યા. એક ગામમાં ઉપાશ્રયમાં શ્રી, યક્ષાવિજયજી વ્યાખ્યાન વાંચે છે. સાધુઓ, ચતિએા, શાવક, શ્રાવિકાઓ એકાંચતે શ્વસ કરે છે. શ્રી. આન-હાનજ જાલ -વસધારી સાધુ, યવિએા સેત્રા એક ખાન બેસી ગયા ને વ્યાપ્યાન થવળ કરવા લાગ્યા. ઉપાધ્યાયજ ગધ્યાત્મત્રાન પર અસરકારક શૈલીમાં व्याच्यात २२वा वाच्या व्यक्ते व्यक्तेर तर्देशी व्यव्यात्मव्यक्त परत्वे विवेशत रुखा वाच्या આપ્યાનની ઝડી વરસવા લાગી, શ્રોતાવર્ગ એકચિત્તે વ્યાખ્યાનરસમાં તલ્લીન લની માથાં ધુશાવવા લાગ્યો. સૌના મુખ પર આવંદ છવાઈ ગયા ને એડીઅવાજે ગાલવા લાગ્યઃ---"વાહ! આપના જેવા અધ્યાતમના ઉપદેશ દેનાર આ કાળને વિષે કાઈ નથી ઉપાધ્યાયભાગે આપી મલામાં પાતાના વ્યાખ્યાનની અમર શોતાએ ક્ષપર કેવી અને કેરલી પડી છે તે ત્રેઈ લીધ. ત્રી રસતરબોળ બન્યા હતા—માત્ર એક **ઝર્ણ વસ**ધારી વૃદ્ધ સામાન્ય સાધ તરફ તેમની દર્શિ જતાં તેને આ વ્યાખ્યાનથી વિશેષ પ્રેમાદ થયા જણાયે: નહિ, તેથી તેમણે પૃષ્ઠયું: ' દે વૃદ્ધ સાધુ! તેં વ્યાખ્યાન અરાભર સોલાત્યું ! અધ્યાત્મનાના વ્યાખ્યાન નમાં તતે સમજદા પડી કે?' શ્રી. આન-દથનછ ગાલ્યા કે. "આપશ્રી અધ્યાત્મનાનના વ્યાપ્યાનમાં શાસ્ત્રોથી ઉત્તમ દક્ષતા દાખવા છે." આ સાંભળીને ઉપાધ્યાયછ તેમના સામે એક રહ્યા. ખુખ વિચારને અંતે તેમનું નામ પૂછતાં તેઓશ્રી ધાતે જ શ્રી. આનન્દઘનછ છે એમ જશાતાં તેમણે વિનયથી જણાવ્યું કે, "મેં વિવેચન કરેલા શ્લાક પર આપ વિવેચન કરા." આથી શ્રી, આનુન્દ્રદાનભૂએ ઉપાધ્યાયભના અતિઆગઢવશ પાટ પર બેસી તે જ શ્લાક પર વિવેચન કરવા માંડવં. ત્રણ કલાક વીદી ગયા તે જણાયા નહિ. શોદાવગીમાં આનતની લહેરીએ લહેરવા લાગી. આનત્વવનજીની નાશિયાંથી તત્મયપછે પરિદ્યામ પામીને જે શાન્દો નીકળતા હતા, જે રસ રૈલાતા હતા, જે સ્પષ્ટીકરણ થત હતે તેન ઉપાધ્યાયજી ભરાબર ધ્યાન રાખતા હતા. અધ્યાત્મ જ્ઞાનરસમાં જેમનું ચિત્ત પરિદ્યામી ગય છે, રામરામ રંગાઇ ગયાં છે એવા શ્રી. આનન્દઘનજીના શબ્દામાં જ્ઞાન અને વિરાગની એવી ઉત્તમ કાયા કવાવી હવી કે જે અકવિમયક્રે—સ્વાલાવિક જ્યાવી હવી, તેની ઉપાધ્યાયભ પર ખૂબ ગસર થઈ. તેઓ પાતે પશુ એ આનંદવેતમાં ઘેરાઈ ગયા અને તે સમયે શ્રી. સ્માન-લદનજીના સાચા આત્મદર્શનની ઝાંખી તેમને થઈ. અંતરમાં તેમના પ્રતિ પુજ્યભાવ પ્રક્રદયો, નયતામાં હર્યાવિરેક જીવરાયા અને પ્રેમપૂર્વંક સ્તુર્તિ કરી અનેએ પરસ્પર શુદ્ધાતુરાગગરી ગ્રાનગાકી કરી અધ્યાત્મગ્રાનની અસલિયત, તેનું પરિષ્ટ્રમન અને પરિષાક અને પાત્રતા શ્રી, ઉપાચાયછને સમનાયાં અને પાતાને આ પ્રસંત્ર ધન્ય ઘડી જેવા લાગ્યા. અધ્યાતમત્રાનનું સાર્ગ રહેસ્ય તાે તેના સ્વાતુશ્વવ અને પચન છે, ને તાે જ તે છવન પહારા-વનાર અને પ્રાંતે આત્મપલટથ સ્વભાવ પાર્ચીને સ્વર્મા ઝીલી શકે અને કામ કાહી જાય યાંને મિત્રા જેવા ખબ આત્મત્રાનાનક ફોટી છુટા પડ્યા, પણ ઉપાધ્યાયજીની નસેનસમાં,

ઉપાંધાયછના છતાં ગાસપાસ સારી નસતી વ્યતિ કલક્ષ્યાંએ એકાઇ ગઇ છે તે રીતે આ પસ એક દતકયા છે આની વાસ્તવિકતા માટે ચકાસણી કરતી રહી. સંધાo

રામરામમાં અભાજ રસરંગ છવાઈ ગયો. મિલન પછીના તેમના તમામ ગંભામાં એ સ્પષ્ટ થાય છે. છૂટા પરમા પત્રી પણ પુન. ક્યારે મળાદી રે ગે લાલના લાગુત રહે ાઈ, અને શ્રી આનન્દશન્ટલનું સ્પરણ હુંલામાં ગાં કાઈ ગયું. લાહા તથાત બાદ તેમને શ્રી. આનન્દ નાન્ટલના મિલનની તીત્ર જંમના લાદી. પૂર્વે અનુભવેલ અધ્યાનમસ્સાનના પુત્ત માણુવા તાર્યન્ય અન્ય અને આયુ પહાલ તારે શાલી નીક્રન્યા અંપ પહોંચી પ્રથમ તીર્માપિયાએ દર્શન, સ્પર્શને જઈ પછી ત્યાં ફરતા બાલાઓ વગેરેને પૂછપરા કરવા માંદી કે, શ્રી. આનન્દશનછ ક્યાં મળાદી અને તે સાધ કરવા માંદી આ અવલત તો નિરૂપાધિક, સુદર પરમાણુવાઈ, બિત કરે તેનું સ્થળ અળતાં જ ભાસન જનાનું પછી સુધું હોય કે કેતાર કે દિલા તપાસ કરતાં સમાલાર માન્યા કે મોક માત્ર સાધુ ચયુક સુધાયાં છે. ઉપાધાયાય્છ તારત જ લો પહોંચી ગ્રામ અને સ્થિત આનન્કશનજી સુધામાંથી બહાર નીક્યે તેની શક્ક તેના ઊભા.

અષ્ટપદી

(राय-धनदेश)

મારુગ ચલેત ચલેત ચાત, આતંદળ ધ્યારે, રહેત આતંદ ભરપૂર, મારુગ તાકા સરૂપ ભૂપ ત્રિકું લેક શે ત્યારે, ભરસત મુખ પર જૂર, આસ્પ્રેગ દ્ સુમતિ સખીકે સંગ, નિત નિત દ્વારત, કળકું ન હોત હી દૃર. માસ્પ૦ જયવિજય કહે સુને ચાનંદ્રન, હય તુમ મિલે હેમ્પ્ર. માસ્પ૦ ર

આનંદવનો આનંદ સુજશ હી ગાવત, સુત આનંદ સુપ્રતા સંગ આનંદું સુપ્રતિ સુધી ગ્રેર ન બલ આનંદ્રવત, મિલ સુદ ગંગતરંગ. આનંદું ૧ મનમંજન કરે નિર્માળ ક્લિ હે ચિત્ત, તા પર લગાયા હે અવિહ્ન રખાં, જસવિજય કહે સુનત હી દેખા, સુખ પાયા ચોત અક્ષાં ય આનંદ્ર ૧

રૂ (રાત્ર-નાયકો, તાલ-ચ પક)

આતં'ક કેઉ નહિ યાવે, લોઇ પાંચે સાંઇ આતં'કદાન ધ્યાવે. આવ આતં'ક કેતગૃષ, કેાત આતંદદાવે, આતંદલુણું કેશ્યું લખાવે. આદ સહજ સંવોધ આતંદલુણું પ્રસ્તત, સત્ર દુવિધા ચીઠ જાવે. આદ જસ કહેં સાં હી આતંદલત પાવત, અંતરન્ત્રોત જ્યાવે. આદ

(રાગ-તાલ-ચ પક)

આર્ગાદ કેર કેર તરિક પાયા, આતન્દ આતન્દમે સમાયા, આ રતિ અતિ દાઉ સગલીય વર્ષભત, અરચને હાથ તપાયા. સ્માટ કોઈ આતંદવન કિંદ હી પેખત, જસરાય સગ ચઢી આયા આઠ આતંદવન આતંદરસ હીસત્ત દેખત હી જસ સુષ્યુ ગાયા સ્માટ

(રામ-નાયક્રી)

શ્રાન'દ કોઉ હમ દિખલાવો, આઠ કહ્યું હુંઠન હું મુરખ પછી, શ્રાનન્દ્ર હાટ ન બેકાવા. આદ ૧ એસી ક્ષ્યા શ્રાનન્દ્ર સગ પ્રદેશત, તા સુખ અલખ લખાવો. એઇ પ્રાવે સોઇ કહ્યું ન કહાવત, સુજબ શ્રાવન તાકે બધાવો. આઠ ૧

(સમ–કાનડેા, તાલ–ફપક)

મ્માનન્દરી ગત આનન્દ્રથન લાધે, આઠ વાર્ક સુખ સહજ અરલ અલખ પદ, વા સુખ મુજસ બખાને. આઠ ૧ સુજસ વિલાસ અળ પ્રકેટે આનન્દરસ, આનંદ અક્ષય ખજાને. આગ એસી દેશા જળ પ્રકેટે ચિત્ત અંતર, સાે હી આનન્દલન પિઝાને. આંગ ર

એવી આજ આનન્દ્ર લાયો એકે, તેવો મુખ નીરખ નીરખ. એનેટ ફેરફ્રેસ થીતલ લાયો અંગ અંગ. એનેટ શુદ્ધ સમજવ સમાત્તર ઝીલત, આનંદ્રભાન લાયો અંગ અંગ. એનેગ ર એની આનંદ્ર દેશ પ્રકેટ ચિત્ત અંતર, તાંદ્ર પ્રભાવ(પ્રવાદ્ર)યલત નિર્મલ અંગ વાહી અંગ સમત્તા દેઉં મિલ સંદે, જન્નવિષ્ય સીતલકે સંગ એવીન ર

માનનથનકે રોગ મુજસ હી ચિંદો જળ, તળ માનન્સરળ લખ્ને સુજય. પારસ રૉગ લોહા જો રેસ્સત. કેચન હોત હી તારે કર્સ મ્યાગ દ પીર નીર નીપિત રહે ગ્યાનન જસ સુગતિ સખીકે સંગ લખે હે એક રસ ભાવ ભષાઇ સુજસ વિશાસ લખે, હિલ સ્વરૂપ લીધે ચસમસ. મ્યાગ ૧

ર્શી. ઉપાંધાયાછાનું અતિ જાતુર ત્રિકાન, બાકુલ-તુરૂપે ગ્રુક પાંદે શ્રાવનું અને ક્ષી. સમાનવાબછાનું આતબાલન વાર્લા લાલાં વારત વ્યાનસાર્થમાં શુક્ષ બહાર વિકાશ, ખેતાં પરસ્પર દર્શાંન-જાતિ પ્રેમણાં કે ખેતા રહેલું કામ અને લેકી પહેલું ત્યાંને સફક્ષ વ્યાન કરેલું કામ કર્યા છે. તે કામ ત્યાંનિપ રાત્તે વિકાતનો તે કે કામ કર્યા કરા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કરા કર્યા કર્ય

 ઉપદેશક છે, તેમનામાં વણી લલુતા છે, ગુણાનુરઅમાં રંગલેલા ફ્રેલ્શનાળા છે, જેનદાસનના રસક-પ્રવર્ભક અને પૃષ્કુંપ્રેગી છે. જેનદાસનના હૃદય કરવા માટે પરિપૃષ્ટું આત્મભેગ આપનાર છે. વ્યવહાર અને નિશ્ચય નવથી જેનધર્યા પ્રવર્ભક છે. જેનદાસનની દ્રદ્ધમાં ઉદ્ધી દાંગ્ર ધારણ કરનાર અને વિશાળ દરિયાળા છે. વૈશાચ અને ત્યાંગ્રમા લખ્યર આત્માના ગ્રહ્મો પ્રક્રેટ કરવાની પરિપૃર્ણ ઈચ્છાવાળા છે. એ પ્રકારે ઉપાધ્યાયછના ગ્રાહ્મોની એમા સ્તુલિ કરી છે.

શ્રીમદ્ આન-લક્તછને તથા શ્રીમદ્ ઉપાધ્યાયભને અત્યંત ગાઢ પ્રેમ હોવાનુ નીચલ પત ^અસારી પૂર્વ છે. કારણ કે પોતાના હૃંદયના ઊલારા સત્યમિતની આગળ પ્રકટ કરી શકાય છે. આ લંગમાં પ્રકટ વચેલાં પહે ઉપરાત આ પદ છે.

" નિરંજન યાર સાથે કેસે મિલેગ, નિરંજના દૂર દેખું મેં દરિયા કંખર, 6 માં ભાદલ નીચે જનીયું તલે. નિંદ ધરતીમ શક્તા ન પિકાહું, આગ્નિ સહું તો મેરી દહ્યો જવે નિંદ આનનદાન કહે 'જસા' સુના બાતાં, ચેહી મિલે તો મેરી દેશે ડાંગે નિંદ !! હવે આપાક ઉપાધ્યાલાઓ કરેલી અદ્યાહીનો સંક્રેપમાં લાવાર્થ એઈ એ:—

યુદ્ધાતુશયની મૃતિર્ગ્ય કપાધ્યાયછએ આનનકલનછની જે સ્તૃતિ કરી છે અને તેમા આનનકલનો આત્મા, કે જે આનનકલન અર્થાત આનેક્સમૃકમાં રમતો હતો, તેની સાથે મુમતિનો સંબંધ સરસ રીતે વધુ એ! છે પ્રિલ્ય આનનકલનછ ચાલ્યા આવતા હતા, સુખ પર કાસ્ય વિશ્વસું નહેતું, આત્મયાનનુ છેન આંખમાં રસતું હતું, રેગગરાછ વિશ્વસ ખની રહી હતી, યેમામૃતુલનો રસ પ્રકરપણ રેલાતો હતો તે વખતે પ્રબળ મિલનોતસુક શુધાતુસગી ઉપાધ્યા-યાછ મહારાજ આતુરવાથી તેમના સામે એઇ જ્યાં છે તે વખતે—

' જરાવિજય કહે સુના વ્યાનનઘન, હુમ તુમ મિટી હુઝૂર.'

શ્રી, આન-કથનછ કહે છે:--

'સુષશાસ મેઘનકે હમ મારે ¹

પ્રશાસ ધર્મ-ત્રાન-રાગથી અને-પર-પરને લાંહુે અંવરમા ઉતારી-સમાયી રહ્યા છે. આ પ્રસંગે અનેની કેવી દયા થઈ હહે! દે સંશિવિલ્લા કહે છે કે આનતરમા મદત આતનકતા છે એમ તે દે સાંભળ્યું હતું અને રૃગ્યું ધે તે જ પ્રભાશે લોગું અને તેથી હું અલગ કુંગારો કહીને તેઓ ક્રી સાંભળ્યું આને તેથી કું અલગ કુંગારો કહીને તેઓ ક્રી સાંભળ્યું તેથા આનદપુષ્પારીમાં-પરિતામી જન્મતો ખ્યાલ આપે છે. આનન્હ હોત નથી, આનન્હ કોર્ન હોત્ય-વાર કે ઘોડમાં તથી જે આતન્દના દ્રનીણત્વ આત્માને ધ્યાવે છે તે જ આતન્દ પાયે છે—

[&]quot; જસ કહે સાહી આનન્દઘન યાવત, અન્તર જ્યાત જગાવે "

⁺ સારાજાઈ ત્વાંગે પોતાના તરફથી ઝંગ રગાગ્યા ગદાર પાડેલ 'આનન્દરન પદ ત્યાંવરી 'ને પ્રતાનનામા કઈ પણ આધાર આપ્યા નિના ધર્માદિભાજી એ જ પાળદી અવસ્થામાં 'આનન્દરાન પદ' તામધારી ભગા દંતા આતું જે સાહસિક વિધાન કર્યું 3 તે એમેના ચર્ચા-જ્વાંબ ઉપાધાપછ લસ્પાનના તૈયાર આદા જીઅન્સિન્દિમાં અપાઠે. સંપાઠ

ઉપાધ્યાયછ કહે છે કે જાત્યાના આનન તો ગાતમાનું ધ્યાન ધરીને આનન્દધનછ ધામે છે અને આત્માની અનુભવ ત્યોતિ પ્રકાર છે. કેટલાક આનન્દધનદરનાં છિઠી દેખતા હતા અને નિન્દા કરતા હતા, તે વાતને પ્રકાર કરના છતા અને આનન્દધનછની સ્તૃતિ કરતા છતા ઉપાધ્યાયછાએ—

> " મેર્ક વ્યાનન્દરન છિંદ હી યેખત, જનારાય સગ ચલી આધા: આનન્દરન વ્યાનન્દરન ઝીલત, દેખત હી જસગ્રહ રાધા."

આ ઉકુમારો ઘણા ગંભીર અને ઉચ્ચ ભાવપૂર્વ છે. આથી ઉપાધ્યાયજના ફૂંદયમાંથી શ્રાંતા રાબ્તતરમાની લહેરીઓ વહે, તેમના આત્માની ગ્રુણાનુત્રમશીલતા કેટલી અધી વધી કુશે તેના ખ્યાસ આવે છે. આન-હ્યાન સમાન પોતાની દશાને, ઉપાધ્યાયજી—

" એસી દશા અનત્દાન પ્રસ્ત, ના સુખ અલખ લખાયા "

કંબાડિ સ્તુતિશબ્દો વડે કંપણી છે. આનન્દરમાને આનન્દવરળ લાધી શકે અન્ય મતુષ્યા તો તેમતુ ફૂંદવ કપાંચી અવગાયી શકે ? એમ વદળ છતાં ઉપાધ્યાયછ— " આનન્દર્શ મત આનન્દરત લાધે."

" એસી દેશા જંગ પ્રેક્ટે ચિત્ત અન્તર, સાહી આતન્દ્રશન પિછતે, "

ગા પ્રમાણે ફંલ્પોદ્વાર પ્રકટ કરે છે અધ્યાતમાનના ઉ.લ પ્રદેશમાં વિચાનિ મેથું આત્માનું ધ્યાન ધર્યું છે અને આનંદનો ખુસારી લીધી છે એવા પુતુષ ખરેષણ આતન્દલન્દાને વસ્તુન: ઓળખી શકે છે ઉપાધ્યાયદાઓ આનન્દલન્દાની દશાને નાણી હતી, કારણ કે આત-માનના આતન્દ હોલ્પોનોલાળા હૃદયની દેક પાસે નેવાં ત્રામ હતા. આતન્દાનત્રદાનું પ્રાપ્ત પ્રસ્તા આનંદી સુખ કેમનાં શ્રીમાનું ઉપાધ્યાયદાના હૃદયમાં આતન્દ્ર પ્રક્રામો અને પીતાના આત્મામાં ચીતાલા પ્રકાશે એ જ લાખને તેવે!!—

" દારી આજ આનંદ લયા ગેરે, તેરા મુખ નીરખનીરખ રાે ખરાે મ શીતલ લયા અંગઅંગ." એ પ્રમાણે હંદયોદુગારાના શબ્દો હારા અહાર કાઠે છે. શ્રીયક શ્રાનન્દ્રધનેષ્ટની

" આતન્દાન કે સાથ મુજસાહી મિલે જળ, તળ આતન્દાસ વર્ષા **મુજસ**ં પારસ સંગ લેહા જો ક્સ્સળ, કંચન હોળ હી તાકે કસ."

દુંદરીદુઃગર કાંહીને આત્મનવખની સંગતિથી પેતાના વિચારે પણ અધ્યાત્મરૂપે શર્છ ગયા એમ દર્શાવે છે આત્મન્દવન્યજની સંગતિથી શ્રીમદ્ર યશેમવિજ્યજી ઉપાધ્યાયનું અધ્યાત્મ ગ્રાન તરફ વલલુ થેશું અને અધ્યાત્મ રંગ લાગ્યો એ પ્રસિદ્ધ ક્ષય છે આ પછી ઉપાધ્યાયજીએ અધ્યાત્મગ્રાનના ગ્રેશો સ્વગનું કાંધે આરબર્યું અધ્યાત્મગ્રાનના અદ્યાત્મ પત્મિદ્ધ ગ્રાનસાર અને પદ્યો વગેરેમાં શ્રી ઉપાધ્યાયજીએ અધ્યાત્મગ્રાનના આદ્યાત રસ સર્થો છે કે જે ગ્રંથા વાંચતાં લબ્ય જીવા. આત્માનન્દમાં લીન અની જાય છે. વિસ્તારસર્થે અજુપદ્ધીના અતિસંક્ષિણ લહવાર્થ આપ્યા છે.

શ્રી. આતન્હાનાઝએ ઉપાધ્યાયાઝ મહારાવળી રહ્યુંવિ કરી છે તે સપ્ટપક્ષે તે અનુમ-લખ્ય છે, પણ તે કલાંચ અસ્તિતનમાં તો હશે જ વિદ્યાનો, તત્ત્વચિત્તાઢોને તેની શાધ મિત હસ આપવા વિગંવી કર્યું છું.

સ્માધ્યા(તેક તાનરસ એ જ સાથે અફતરસ છે. તેવું યાન કરતું તે વિબુધાના જ ભાગ્યમાં લખાસું છે. ગ્રાની ગા જ અધ્યાતસાનર્ય અમૃતરસ યાન કરે છે. ગ્રાની પુરુષોના હુલ્યમાં સર્જ સમાઈ જય છે તેમનું ગ્રાન કાઈ રીતે માથી શકતું નથી.

ઉપાધ્યાયછ ચંશાવિજ્યાછના ગ્રામુનો વિસ્તાર પમાંય તેમ નથી. તેમતા ઉપક્રાશે અનંદ્ર છે. વેદની બંધીર રચના જેમ ઉપનિષદો છે તેમ જ સ્થાદ્વાદના નથનિયમ માંગમથી ગંભીર તેમની દ્વતિએ છે કે જેનું સ્ક્રસ્થ ધીર જેનો પણ પામી ન શકે. એમની રસનાએ ગંભિક જેવી શીતક પરમાનંદદાયક, શુધિ, વિમાદસ્વરૂપ અને સત્યપૂર્ધ છે. હિસ્તિસ્તિનિને લદ્યાપાંય એટલે કવિસુત્રમાં એ એક બીલ્ય હિસ્સિક સ્થ્ય છે.

ઉપાધ્યાયછ મહારાજ વિગરતા વિગરતા તેઓર્ડ પળવેલા ત્યાં ૧૯૪૩માં અનશનપૂર્વ'ક સમાધિસહિત દેહવિલય પાત્ર્યા. ત્યાં સમાધિસત્ય કરવામાં આવ્યો છે જે વામતારી પ્રકાશ છે આમ સંવેગીશિશમહિ વાનસત્તાસહ્ય અને કુમતિતિચિર ઉચ્છેલા માટે બાલાટુલુ દિનંકર સુટુ અલ્લય થયો.

મિલનાઓત-૧૨ ઘણું લખી શંકાય તેમ છે, પણ વિસ્તાસ્થાય પણ કરોશ જ છે. જિલામુઓએ તે તે વિષયના ગયા અવલોકવાતું દ્વાન અહીં થયા ત્રણારો.

> મુચશ—આનન્દના મિલને, મહાજ્યાતિ જગાળી જે; વિલુધ જન અંતર પ્રકેટા, અલિલાયા હમારી 9 11

> > Ż

निममस्यैव वैरात्यं, स्थिरत्वमवयाद्वने । परित्यज्ञेत् तां प्राज्ञो, समतामत्यनर्थदाम् ॥१॥

(ચિતની) સ્થિતા લાવવામાં નિર્ધલ ચાનવીના વૈસાગની જેચ જ વિદ્વાન પુરુષે ગળત અનર્થ કરનારી એવી મમતાનો ત્યાગ કરવા ઓઈએ

वध्यात्म**वह**र स्टीक तृतीय **प्रस**न्ध] [શ્રીમદ્ યરોવિજયછ

પૂજ્ય શ્રી. યશોવિજયજી **ઉપાધ્યાય** છિટાંબાર્યો

[લેખઃ શ્રીકૃત ત્રિક્ષવન્ત્રાસ લહેરચંદ શાહ]

શ્રી. સ્ટ્રોલિબ્યરૂબા ગ્રાન અને કૃતિએ બ્રિટેફ લક્ષ્યુવામાં આચ્છુ છે તેનાથી ધણા મારી ત્યુન તેમના જીવનસ્ટર બિરી બહાસું છે, બારેકે જે બહાસું છે તે પણ અનિક્ષિત હોવાથી નક્ષિત ક્રિક્રોએ તો પણ ચારે જેમ કે—

તેમની જન્મઅમિ કાઈ ઉત્તર સુજવાતના કાલાલ પાસેના કન્હાેડ ગામે જ્લાવે છે તેા

કાઈ આખની તળેટીમાં કહે છે. તો વળી કાઈ કાઠિયાવાડમાં ('જૈનધમ' પ્રકાશ' સં. ૧૯૮૩ના बैत्र अंड) डबेनारा पण के. जन्मसाहतां पण तेम ज के. डेर्स तेमतां आसूच्य १५-१७ વર્ષતાં કહે છે તેર કાઈ ૯૦-૯૫ પણ કહે છે પરાંત આ અધા તેમના દેહાંત સં. ૧૭૪૩ - ૪૫ના મહા સહ ૫ = વસંતપંચનીના કહે છે જ. (સં. ૧૭૪૩ વાળા કહે છે કે આને લગતી એ વખતી અમદાવાદમાં કાતરાઈ હવી તેની સાલ સં. ૧૭૪૫ કે ને પછી ડક્ષાઈ સમારે તે લગાવાઈ છે. ખાદી દેશાસર્ગ તો સં. ૧૭૪૩ માં થયા છે. સં. ૧૭૪૫ તે તા માત્ર બ્રમણા છે) ને મુભુતિથિ સાથે વાર કે નક્ષત્ર લખાય હોત તો યાકા નિર્દાય જરૂર શર્ક શકત. ૧૫-૧૭ વર્ષતાં આયુષ્ય કહેતાસભાના મત ભેમ છે કે, સં. ૧૧૮૦ માં ૧૮ वर्षनी डेंभरे हीहा अपार्ध ढेती. ब्यारे ६५ वर्षवाण (ज्ञानविकवश ३८ हैमाचार्य पू. ૧૦૮ થી ૧૧૬) કહે છે કે, તેમાંથે સં. ૧૬૫૫ માં ગંધ લખ્યા છે. (તાે તાે લગસગ १०० विषस्तं आञ्चा गण्डां रहे.) क्षेत्र कन्सस्थान अने साथ अनिश्चित छे तेम जाति વિશે પણ વેરસમજ છે. કાઈ તેમને બ્રાહ્મણકળમાં જન્મ સ્થાન માને છે (જેમ ગ્રાંતમ-સ્વાસી ઇ૦ લાકાલ ખાેળાંએ જન્મી. જૈનધર્મમાં હૈક્ષા હીંધી છે તેમ) તેા ટાેઈ વૈશ્વકામના યિતા નાશયજી અને માતા સાલામ્યદેવીના પેટે જન્મ માતે છે તેમન નામ જરાવંત મને લાઈન નામ પત્રસિંહ જણાવે છે. આ પાછળની હંદીકલ વિશ્વસનીય એ ઉપસ્થી જણાય છે કે પોતો સાત વર્ષના હોતા ત્યારે 'લક્તામર સ્તોત્ર' એક વખત સાંભળવાથી કંક્સ્ય કરી શકવા હતા, તેમ જ તેમની માલાની સાથે ઉપાશ્રયમાં પ્રતિક્રમણ વખતે જલા ફતા અને હ્યાં જે સૂત્રો લાહ્યુવાતા તે સાંભળી યાદ કરી લીધાં હતા. જેથી એકદા ખૂબ વરસાદને લીધે માતાને ઉપાપ્રથ જવાનું ન બનતાં, ઉદાસી થઈ ગયા હતાં ત્યારે આ પુત્ર જશાવંતલાલે દેર પ્રતિક્રમણ ક્સાન્યું હતું અને માતાક્ષ્ટાએ પ્રક્ષ પૃષ્ઠેલ ત્યારે આ ખર્ધી હેઠીકતના સ્વસૂખે ઘટસ્ક્રાટ કર્યો હતા.

સુનિશ્રી પેલાની વિદ્વાર્થી પ્રત્યાં શકુ માનનીય થઈ પહેલા. ત્યાં જય શાં લોક લેગા શઈ પાછળ પાછળ તથા. આ દરવ દેખી તે વખતના અધ્યાલયોના શ્રી. આનન્દ વનજીએ આંગમાં જણાવેલ કે, "જુશા! દુકાન અચ્છી જુશાઈ હેય."

કહે છે કે, તેમણે ૧૦૮ ગ્રેથા સ્થ્યા છે, જેમાંના કેટલાક સુલલ છે, તેમાંના ૧૮ શુજરાવી ભાષામાં હતા ત્યારે એક હિંહી જૈન સાહિત્યકારના ક્લેન પ્રમાણે તેમનું છવન ચરિત્ર જે અંગ્રેલ્ઝમાં પ્રસિદ્ધ શયુ છે ને સુલલ છે, તેમાં નાનાપીડા લઈને ૫૦૦ સંસ્કૃત કર્યો સ્થાર સ્થાય જણાવેલ છે તેમને સંસ્કૃત, માગધી, હિંહી ને શુજરાવી એમ ચાર લાયા ઉપર કાય્યુ હતો. નળી, જેમ હરિસાલ્યુરિએ વિવાદ અંક પીતાની કૃતિના અંતે નાપી છે તેમ આપણે વર્ષાયું છે. આવા કેટલા ગ્રેથી હતી તે જણાયું નથી, પરંતુ શુજરાવીમાં અનેક ત્તરો સ્થાય છે જે ઉપરથી કેટલાક પંતિનોએ મમકરીમાં કહેલું કે, "રાસમે તે ફાસક," છતાં કોઈ નાનો તેમનો સાથે શ્રુપ્ત લીમાં જ સ્માર્ય અનેક વિદ્યાનોને સમાસેશાનાનો મામ કરતી ક્લાયું સ્થાય કેટલા ગ્રેપ્ત તેમાં જ સ્માર્ય સ્થાય તેની સમસે કેટલા કે પરિકૃત સ્માર્ય સ્થાય હતા કરતી કે સાથે 'રીતે તે સમસે કે' અને લસ્તર્સ તેના ઉપર વિદેશન કરી-દીકાર્ય લક્તર પાત્રયું ત્યારે જ આ વિદેશને શાંતિ અમી પ્રસ્થ થયા.

સ્વાપી તેમળી ખ્યાતિ, જમકાયાદમાં ત્યારે લાંધારી સવાઈયાં લાવ લાં લાવ ગુખ્યાતના સ્ત્રા મહોવાતામના કાને પહોંચી ત્યારે તેમને ધોલાવી સન્યાન કહ્યું. ત્યાં સભા સમક્ષ ૧૮ અવધાને કર્યા લાભે કરે સલાને રહિત કરી. વાળતેવાળવે તેમને સ્થાને પહોંચાક્યા. (જેમ સ્વક્રમણ લાહદાદાં દુર્ધિત્વરાસુષ્ટિના પ્રાથમી વકિત વર્ષ જ્યાર કર્યો હતો તેમ) આ હંદીદત 'સુજસ-તેલી લાસ'માં છે. આ પ્રાથમી વકિત વર્ષ જ્યાર કર્યો હતો તેમ શ્રીવીસ્ત્રવાની સીધી પારપર પરાચે ન લોવાય હતાં, એમાં પ્રવેશી ક્રિયારિયલિયાની, સત્યવિત્રય પંત્યાસને સહ્યાલ હતું જેમાં એક. નિતિ ૧૫૩૮, વેશાખ સ્ત્ર લગ્ન કર્યો હતો અને શાસપાય પણ વ્યક્તિ કહ્યું લી, જેમાં એક, નિતિ ૧૫૩૮, વેશાખ સ્રલ હતું જેમાં આ સામાન કર્યા હતા કર્યા હતા અર્ચનો અર્ધ સ્ત્ર કર્યો હતો અને શાસપાય પ્રાથમ સ્ત્ર વ્યક્તિ કર્યું છે (જુઓ: 'આત્માન' પ્રાથમ કર્યા હતા કર્યા હતા પ્રાથમ હતો.

તેમની માતુષાકિત, સુરુષાદિત, વિનાચીલિતા, નિરંભિયાનપાતું વગેરે સદ્દ શહેાને ઉપરમાં ચંધાવિત પ્યાલ ગાયાઈ ગયેં છે જેથી વિદેષ તુકતેચીની કરવાની વર્ટર નથી. કોંદ્રો તેમને "શાનિવિધ "ના ઉપનામથી સંભેષતા. હરિશ્વસ્ત્ર્યિક કે કિક્સલસર્વંક હેમગં દ્રસ્ત્રિક જેમ પાક્રવા છે, તેમ સંશોતિવિધ્યાછ ઉપાંચાયે પશુ નામ રાખ્યું છે. તેમના સમકાલીન તરીકે અમસાવાદના નગરહે શાહિતાસ શેઠ, વિજ્યતિલક્ષ્યુંકિ, સંસ્ત્રેમાંચર ઉપાન, સત્યવિષ્ય પંત્યાસ, શ્રી આનક્ત્રભાભ વચેરે કહી શકાય તેમણે ત્યેલ ગંચાની દ્રીપ તાલુ કેમાંદ્ર છે તે આવી હતા છે. તેમ અફ સ્ત્રેસ અને તે આ સ્ત્ર લિજ્યતી સંપીત્રિએ અહાર પાઢી છે તે આવી બેના જેટલા અવાદા સ્ત્રી ન હોતાથી મીત રેલું હું. ઉપાંચાયાછાના કેસ્ટ્રીક અધિકાર શ્રી " જેન" પરના પ્ર-૧-'કપના પૂ. ૧૫ ઉપર પ્રયત્ર થશે છે એટલા અલાધી ગતે તેનું હું.

અહારમી સદીના પ્રખર જ્યાતિર્ધર

[લેખક :-- શ્રીષ્ટ્રત માહનલાલ દીપચંક ચેહસી]

૧. સંસારી છવનની ઝોખી :—

મહાન જ્યાતિષ્ટ જન્મ્યા ત્યારે કેવા ગ્રહા હતા અને કર્ય ચાલડિય કે કર્ય નક્ષત્ર હતું એ લાલવાત સાધન હુજી ઉપલબ્ધ થયું નથી, છતાં ભાવિ કારકિર્દીના માપે માપતાં એટલ તે*!* વિના શંકાએ કહી શકાય કે આ કળદીપકના વ્યત્મકાળે શકા મુક્ત અને શકા ચાેગ વર્તાતા હતા પિતાશી 'નાસથશ' અને માતુશી 'સાલાગઢે' એ પ્રતને 'જસવંત' નામ રાખી આનહિત અન્યા હતા. ધાહો જ વર્ષોમાં અંધવબેટાડીરૂપે જસવંતને 'પદ્મસિંહ' માત્યા. ત્યવકારી જીવન જીવતાં આ નાનકાર કહુંગમાં ઉછરનાર ખાલકાંચોને દેવદર્શન અને શરુત્રંદનના સંસ્કાર ઝળયુથીમાંથી મુખ્ય હતા. એમા પણ સાલા-પિતાના સંસ્કાર ઉપરાંત પ્ર'લવના પુરુષથી જસવેલની સ્મરસૂશકિલ ભારવકાળથી જ વધલી ચાલી હતી, 'સુજસવેલી ભાસ 'માં જેની નોંધ નથી છતાં જે લેાકવાયકા મૃ_જયશ્રી અહિસાગસ્ત્ર્રિજી અને સાક્ષસ્થય' શ્રીયુત માહેનકાલ કલીચંક દેસાઈ પાતાના નિબધામાં આલેએ છે– 'વરસાદના કારણે મા**તા** ઉપાશ્રમે ત જઈ શક્યાં અને 'ભાતામર સ્તાત્ર' ન સાંભળી શક્યાં. પાત્ર આળક એવા જસવતે એ સંભળવાં વેં એમાં તથ્ય છે. કિંવા ન પણ છે. છતાં વધેના વહેવા સાથે શશાવિજય મનિ બન્યા પછી જે સાધના જસવંતના આત્માએ કરી છે અને એમાં પ્રજ્ઞાના જે ચમકારા દરિયાયર શાય છે, એ લેતાં કહેલ જ પડે કે, ' પુત્રનાં હફાઇ પારણાં-માંથી જવાય' એ ગુજરાતી કહેવત અક્ષરશ સત્ય હાગે છે. જસવંત જેવા સંસ્કારી આળક માટે લાતામસ્ત રટજ અસંભવિત ન ગણાય વિહાર કરતા શ્રી તથવિજયછ મહારાજ કુગ્રુગેર (પાટ્યુ સમીયના) ગામથી 'કનાડું' પક્ષાર્યાં. તેઓની વેસગ્ર્યભીની વાસી શ્રવણ કરવાના ચાત્ર ઉપરાક્ષ્ય અધ્યવેહીને ભાષા ચો ઉત્રયના હૃદયમાં સંસાર છે.હી દઈ સંયમના માર્ગે' સંચરવાનાં ઝરણ કૃષ્ટવા માંડયાં એની જઠ દહપદ્દે ઊંદી ઊતરવા માંડી. સંતાકુકડીના આશ્રય લીધા વિના ખુદલા અતરે મનની વાત વહીલા સમગ્ર વહીલ ભાતા જસવેતે મુધી પદ્મસિંહે એમાં સાથ પૂર્વો. ગુરુઉપદેશથી ધર્મન્હસ્થની પ્રાપ્તિ જેમને થયેલી છે એવા માતપિતાએ કર્લું કે, 'તમાર,' કલ્યાણ શાએા, ગુરુ મહારાજ સાથે વિહારમાં શાંઠા સમય કરા, તલવારની ધાર સમા ચારિતપાલનના ચફ્ચાસ પાઢા અને અંતરના અવાજ પારળા. સાચા સાધુ બના."

ગુજરાત પ્રાંતના કરીશા તાલકા નજીકના 'કનાડું' નામના ગામમાં આપણા આ

ર. શુરુ અને શિષ્યા રાજનગરમાં :--

3. સૂર થૂપે નહિ ખાદલ કાયા :—

સુનિશ્રી રહ્યોનિજય્લ્ટએ જાહ્યુ વિદ્યાસુર પાસે પૂર્વ 'વિનય સાયવી ત્યારશાસામાં પૂર્વપું અવગાહન કર્યું. પહેરાં વેનો અલ્યાસ પણ લાગાવર કર્યો. પ્રાચીન ત્યાર તેમજ તબ ત્યાર અને એ ઉપસંત હિન એવા 'તત્ત્વચિત્તામહિ ' નામના શંધનો પણ તાગ કાઢી હીંગે. આ સંબંધમાં 'સુષ્ટવારેલી લાસ' હેસ્તાત્રત થયા ન હતો ત્યારે એમના વિદ્યે કર્યે કિલસુ વાંતો પ્રચલિત હતી અને એની નીધો અલાઈ એ નિગ મોની વાંતો કરી છે એમાં ત્રાંધાયેલી પણ છે. એ ઉપસ આજના સુપ્રમાં વધુ લારોસો ન મૂધિએ તો પણ એડલું તો બિના સંકાર્ય કહ્યું શક્ય કર્યું હતા સર્વાર્ય સાથા સાથા સાથા સ્થાપના અલ્લાના પાર્થિય ત્યાર સ્થાપના પાર્થિય સાથા સાથા સાથા કર્યો હતા સર્વાર્ય સાથા સાથા સાથા કર્યો હતા કર્યો હતા તરફ દિવસે પણ સુરુ- મહારાત્રા બીઇ સ્થાપના કર્યા સાથા સાથા સાથા કર્યો હતા કર્યો હતા તરફ દિવસે પર પાર્થના સ્થાપના હતા તરફ હતા હતા તરફ હતા હતા તરફ હતા તરફ હતા તરફ હતા સ્થાપના હતા તરફ હતા તરફ હતા હતા તરફ હતા હતા હતા સ્થાપના પાર્થ હતા સાથા સ્થાપના પાર્થના સ્થાપના પાર્થના સ્થાપના હતા સ્થાપના પાર્થના સ્થાપના સ્થાપના પાર્થના સ્થાપના સ્

તકીં એ સાવી વચન જાંજ સામે સહેવ વસતું ત્રાથી, છાદ્રાણ વિલાસુરુતેન પૂરેપુરેન વિતય સાચપી, તેમની પાસે હતું તે તો મેળની લીધું પણ જો સાથે તેમના અનાશીવાંદ પણ પ્રાપ્ત કર્યાં. કાશીમાં ભરાપેલી વિહાનાની સલામાં વિજય પ્રાપ્ત કરી 'ત્યાયાચાર્ય' અને 'ત્યાય વિદ્યાસ્ત 'તેની ભઠ્ઠ-માનસ્ત્રક પદલીએને મેળની, પોતાના ફાનનેના પદ્યો કાશેની, બિહાસુર મોટે પ્રશ્નામાં પ્રત્યો પાસનનો સાથે સામાત્ર લાગ વર્ષ પણ સાથે પર્યાસના સાથે સામાત્ર તિર્કા પાસનનો સાથે સામાત્ર તિર્કા પણ પાસનનો સાથે સામાત્ર તે કરે છે, એ પોતાના સાયુષ્ટ્યનાને વ્યવ પણ સાથે પહેલાકાર પા વિના, એના પર શરૂ પ્રસાપ્ત કર્યું કરે છે, એ પોતાના દારાના દારાના પ્રાપ્ત કર્યું સાથે કરે, એ પોતાના દારાના પ્રયાસ કર્યું કરે છે, એ પોતાના દારાના પ્રયાસ કર્યું કરે છે, એ પોતાના દારાના પ્રયાસ પ્રયાસ કર્યું કરે છે, એ પોતાના દાયાના પ્રયાસ પ્રયાસ કર્યું કરે છે, એ પોતાના દાયાના પ્રયાસ પ્રયાસ કર્યું કરે છે, એ પોતાના દાયાના પ્રયાસ પ્રયાસ પ્રયાસ પાયાના પ્રયાસ પ્રાપ્ત પ્રયાસ પ્રયાસ પ્રયાસ પ્રયાસ પ્રયાસ પ્રયાસ પ્રયાસ પ્રયાસ પ્રાપ્ત પ્રયાસ પ્યાસ પ્રયાસ પ

૪. 'ઉપાધ્યાય' પકની પ્રાપ્તિ :--

સુનિસન્ ચરોષિભ્યજીનો સિતારે ચળકતો હતો. વિહાર કરતાં તેંગા આમ પધાર્યો. ત્યાં રિયરતા કરી પાતાના ગાનમાં ઉપરેત કરેશે. અનકાવાદમાં ત્યારે પગલાં માંદયાં ત્યારે તો તેમની વિદ્વાનો—કાશી જેવા પરિતોષી લારપૂર શહેરમાં વિત્યવ્યત્વ રહ્યત્વાની—કોદિ— ગામા પ્રસરી ચૂકેલી હેવાથી સમાટ એપરંગઝેલના સમા મહેલાતાએ લહુંમાનપૂર્ય કે પાતાના દરશારમાં દેશાઓ અને સુનિકીની અવધાનદાદીત નજરે નિહાળી, એ વેળા શ્રી સતુર્વિધ સ્થેતા હુંવામાં સુનિસન્ત્રને 'ઉદ્યાધ્યાય ' પહતી આપવાની લાવનાલહરીઓ કરતાં ઉત્યર્ધ કરેતા કેરો, એરો પાંચી એ વેળાના પરંધર શ્રી વિત્યવ્યવ્યાસ્ત્રને શ્રીપ્ય શ્રી વિત્યપ્રસર્પિત સ્થાપ શ્રી વિત્યપ્રસર્પિત સામા અર્થ સામા સ્થાન સ્થિત શ્રી સ્થિત સ્થાન સ્થાન સામા સ્થાન સ્થાન સ્થાન સ્થાન સ્થાન સ્થાન સ્થાન સ્થાન સામા સ્થાન સામાન સ્થાન સામા સ્થાન સ્થાન સ્થાન સામાન સ્થાન સ્થાન સ્થાન સામાન સામાન સ્થાન સ્થાન સામાન સ્થાન સામાન સ્થાન સામાન સ્થાન સામાન સામાન સામાન સ્થાન સામાન સામાન સામાન સામાન સ્થાન સામાન સામ

ત્યાગી શ્રમણના છવનમાં ચોમાસા સિવાયના કાળમાં હતા હતા સ્થાનના પાત્રિકાર ધર્મોપરેટા અને દેશકાળને અહલાથી સાહિત્યનું સ્થત્વે સામાનત: અગ્રસ્થાને સંભવે એ કાંગે ધર્મપ્રાયતના, પ્રતિ હતાંને સાથે તત્ત્વવાર્ત અને પોતાના સમગ્ર ત્રસ્થની સારચંભાળ કાળતાં, પ્રદેશ હતાં સાથે તાલું તાં ત્રસ્તાન કાળની માટ્ટ આવ્યાપ્યત્રી તર્વસ્થપ્રસ્થાન સંપ્યાપ્યત્રન સાથે ત્રસ્થન માંકિ નહેતી. એકલે એવા સહત્વ વિદ્યાન, પ્રમળ પ્રતિસાદાળી ઉપાયાપણ આવાર્યપ્રસ્થાન સૌથી વહેલા માં આવ્યાપણ સાથે પ્રતિસાદાળી ઉપાયાપણ આવાર્યપ્રસ્થાન સૌથી પહેલાયા, આવાર્યપ્રસ્થાન કારણ તર્યો.

પં. સુખારાહછ જણાવે છે તેમ વાચક શ્રી યશેવિજયાળએ પેતાના અસરકારક ઉપદેશ પછીને સમય હેળિનીને કેશકાળમાં એ ધાલુ પારખી, કુતામુંત્રિએ ચલાવવામા મતાતાતા મૌલિક ગ્રંથા રવલામાં બાલીદ કર્યો છે. એમા લાક વિલાક અને ખંબન-પંતના વિશ્વો છે, તેમ તત્ત્વનાં અને લાકિકાનાં વિશ્વોનો પણ છે જ વિદ્યાનોને સમસ્તુદિ ભાગને તેવા માત્રપુષ્ઠું વ્યાર્થિઓ તેમ જ પૂર્વ જિલ્લો પ્રતિભાવ પણ આ માત્રપ્રેલ માત્ર છે. હઈ એ ઉપર કરેલ સમન્વય અને કહિત ગ્રંથા પરનાં ટીકા-દિપાણો પણ ઉપલબ્ધ થાય છે ૫ આનંદઘનછ અને વશાવિજવજી

અધ્યારમ માર્ગમાં આ અને વેદ્યાંઓ સંખંધી શેકવાચકાઓ તો ભારતાની પ્રવર્તે છે. અહીં એના લેદાલુમાં લેદારમાંદ્ર પ્રવેશન નથી. એટલું તો નિશ્ચિત છે કે, પ્રખર વેદ્યાં આતાનકામન મકાસખના સમાગમાં પક્ષી જ ઉપાધ્યાયછ મહાસખ શ્રી પશ્ચીમિંચ્છામાં અધ્યાનકારિ ઘણાં સીડા પ્રમાણુમાં ખીલી લહી છે અને એ પછીના ગ્રંથામાં એનાં નિવસ હર્યામાં થયે છે. શ્રીમદ્ આતાનકારમાં આતા કર્યામાં આતાનકાર્યા છે કેટ—

" आनन्त्यनके संग चुजस ही मिले जब, तब आनन्दसम भयो चुजस । पारस संग छोड़ा जो फरसत, संबद होत ही ताके कस ।आनन्दश! "

એમાં ચોળોવરની મહત્તા અને પોતાની હતુતા લતાવતાર ઉપાધ્યાયછ ઉપર તેમના પ્રશાનની આત્મા કેવી પથરાઈ હતે એનો ખ્યાલ શહે અને 'क्वासमुक्त परमः स योगी' 'কેવા કેવા હતા. શોહ છે અને 'क्वासमुक्त परमः स योगी' 'એમ દેશાળી વચનો કહામાંથી અવે છે. આ સિવાય તેઓશીના સમકાલીન જેન-જેનેતર વિહાનો પદ્મ પ્રણય માત્રા પણ પણ એ અવે તેને તિવાસથી ઉહલેખ કરવો એ આ નાતકા પણ પણ પણ હતા એ એ કરવાની અધિકાયા રોક્ય નથી. હતાં નામનિર્દેશ કરવાની અધિકાયા રોક્ય શક્ય તેમ ન ફોલાથી રોકાક અર્દી જલાબ્ય છે. એ ઉપયોગ પ્રમાણ અર્દેશના અર્ધી અર્ધા અને વિશિષ્ટ સર્જનની અર્ધા આવી. અર્દાલની અદિવાન, અને પાર્ચ માત્રા સ્વાર્થ શક્યાનની અદ્યાનની અદ્યાનના અદ્યાનની અદ્યાનના અદ્યાનન અદ્યાનના અદ્યાન અદ્યાનના અદ્યાનના અદ્યાનના અદ્યાનના અદ્યાનના અદ્

ચ્ચાન જ્ઞાનવિત્રાભરપૂરિ - જ્યાંચાલ સરોાવિત્વાએને 'વાચકરાન' તરીકે સંગોધન ક્ષ્તાર આ સૂરિએએ, ઉપાધ્યાયએ અનાવેલાં ઘણાં સ્તવના પર ડીક્રઓ રચી છે. તેઓ ઉપરના ભેતે અધ્યાતચોત્રીએો પ્રત્યે અહ્યાન ધરાવતા હતા.

ઉપાગ વિનસવિજયછ—પરંપસતી નંતરે આ ઉપાધ્યાસછ શ્રી સંશોવિજયછના કાંકાસુર થાય, કેમકે તેઓ વિજયહિતસ્કૃતિ, હવાં કોતિવિજયછના શિલ્ય હતા. એટલે ત્રીછ પાટે હતા હવારે શ્રી સંશોવિજયછ પાંચાયી પાટે થયેલા છે. 'સારપ્રકાર' 'શ્રીપાલ રાસ' અને 'પુલયપ્રકાર્યાના સ્તાવત્વી સ્વાતાથી આ વાચક મશાકર છે.

ઉપાદ માનવિજયછ—' ધર્માં ગંહ ' ગંધના કર્તા ઉપાદ માનવિજયછ ઉપાધ્યાયછ માટે સુંદર વ્લાકમાં જણાવે છે, જેના અગ્રેજીમાં મા, દ દેસાઈ તિમ્ન પ્રકારે ઉલ્લેખ કરે છે:—

"He has got promment knowledge in all schools of philosophy by his intellect sharpened by true logic; and is the formost among the Tapagachha."

૫૦ સત્યવિજય ગણિ—આ પવિત્ર સંતના સંબંધમા માે. દ દેસાઈનાં તિઅન વસતો પૂર્વ પ્રકાશ પાથરે છે અને એમાં ઉપાધ્યાયછ વિષે પણ વાત આવી જાય છે. "A great deciple of Shri Vijaysinh Suri went to heaven in S.Y. 1756 eleven years after Shri Yashovijayi. He taking permission of his Ciuru made ii great reformation in the decipline of the monks who had become corrupt and degraded hit the time. It is said Yashovijayi helped him very much in this noble and uphill work by writing on, preaching about and severly criticizing corruption and religious degeneration."

જેનેતર વિદ્યાનામાં ગોહાવર્ષી કાંક્રના લાવવ ગામમાં જન્મેલ જ્ઞાલણ નારાયકુ, પાછળથી રામલસ તરીકે પ્રસિદ્ધિ યામ્યા અને જેઓ દિવાછ મહારાજના સુરૂ મનાય છે તે. તુકારાન કે જે ગાલેલ નામા મરહાદી દીવિનીના વ્યવિતા છે તે, સુરુવાતના ભાર્ણતા કરિ પ્રેમાનક શીખોના સુરૂ તેમળહાદુદ, સુરૂ ગોહિલસિંહ અને હિંદીના સુપ્રસિદ કાંધ સમાયદુના કર્યો તુલસીકાર સમકાલીને હતા. ગા પ્રમાણે ભારતવર્ષના સારે પૃશ્રામાં વિલિય પ્રત્યોના ફ્રેમપ્રદેશ પર તે મુલતારોક કાળદી ત્રયા મેમાં ઉપાધ્યાયજી ચોશાવિત્યજી પક્ષ છે, જે ગીરસક પત્ન પડે ભિરાજે છે.

સાક્ષરભા^{*} શ્રીયુવ સાહનતાલ દ્વીય દ દેશાઇના શહેરાય ઉપધ્યાયછ સહારાજના છત્તને અંજલિ આપતાં નિગ્ન વાડ્યો હરેકાઇ સાધુ સહારાજ યા તો. વિદ્વાન, પ્રાવધને પાતાના છત્તનને ઉત્નવ વાનાવગ સાર્જાદર્શક નીવદે તેમ છે. એમાં સાચી શક્તિનાં નિવર્ણ દર્શન છે, કેવલ આલાસ નથી.

"He was one of the few parent minds which India has produced And both metaphysics and logic owed filter obligations to tits unbounded genus. He by composing more than one hundred and eight (108) Sanskrit works has added a monumental share to the literature of the world.

Some of his works are valuable as revealing many of the darker symptons of our religious and social disease."

કીપક સુઝાયા :--

=->

વિક્રમ સંવત ૧૫૪૩ની સાલમાં ગા પ્રખર જેમોતિપર, ઉપદેશ અને સર્જનમાં, વિવેચન અને કવનમાં, પોતાની પ્રભા વિસ્તારતો વહેકદા સંસ્થાનની પ્રાથીન એવી ક્લોવતી નગરીમાં આજના હતો-ડે ગામમાં સહાને માટે ગા ભારતવર્ષની ભૂમિ ઉપરથી વિદય લઈ સ્ત્રો સર્ચોર્મ, સં. ૧૫૪૫મા અબ્દિહાની વળ્યાએ શ્રીસ ત્રે તેઓશીની પ્રાદુક્ત સ્થાપન કરી-

એ જ ભૂમિના એક ઊપ્રવા સાધુછને-ઉપાંચાયછના નામની સરખાઇ હેતાથી, છેરલી સનીના આ મહાન લાડિક ને માત્ર જૈન સમાજમાં જ નહીં પણ જૈનેતર વિદાન વર્ગમાં સર્વિશેષ લાધીના કરવાની તમાના ઉદ્દવાની એ અનુપપ્ત સહેશો, મોહપણીની ધરતી પર સુંદર પ્રમાણમાં દ્વિશોય અને એના પ્રત્યક્ષ ફળસ્ત્વર્ષે પાદુકાની પવિત્ર ભૂમિ પર રમાણેય દેવકુલિકાનાં દર્શન થાય છે. એમાં એ પ્રતિભાગાળી ઉપાધ્યાયછ જૈન સમાનને આમાહી કરી રહેલા ઇષ્ટિંગાંગર થાય છે. એ આગાહીતું હોદ આન્નો તૈન સમાન્ય સમાન્ય તેને લગવાન શ્રી મહાવીરદેવના સંદેશ વિષયમાં ગુંનતો થાય. એથી અહિંવાતું સામ્રાન્ય સન્તર્ય અને ચાતરફ સાચી શાતિના કુવાર હિંદી રહે. " તૈને નવાતિ શાસનમ્"ના ધ્વનિ શાજ રહે. હ. અંતર્યપત્તિ સંભાગાય છે કે !—

ચુરુપૂર્તિની પ્રતિશ એ તો ઉપાંચાયછના અંતરને એલખવાની પ્રયમ ભૂમિક છે. આ દીર્દે આવી તો કોઈ એમનાં કદાંનથી પવિત શ્રાય, ગ્રાહુરપૂર્તિ કરે અને સ્વાદિતા મળે જે સાહિત્યનો વારસો તેઓક્રી આપજીને જેન સમાજને વહે ધરી મથા છે, એનો પ્રાપ્ય રીતે - દેશકાનો ગંધ છેલે તેલા સ્વરૂપે આત્ર પોતાના સંપ્રદાય કે લર્ફરતા નહીં, પદ્મ સારીયે દુનિયાની બનસંખ્યાને લખ્યોની નીવડે એવી પહારતએ પ્રચાર કરે. અપૃત વાર્ષ્યા સમાં એ વસ્તોનથી હતાર્થ ને લાખોનાં ફ્રેલકપ્રભ વિકસ્વર શાય એ કરતાં સાચી સ્પૃતિ આજના ગ્રામાં અન્ય કર્ક સંસ્ત્રવે ?

Si,

विषयैः कि परित्यके-वांगींत समता गति ।

त्यागात् बञ्चुकमात्रस्य,

मुजनो नहि निर्विषः ॥२॥

જે મમતા જાગી કોર્ડ તો વિશ્લો ક્રેશ્વાથી શુ ! જેમ સાપ કચ્છીને છેડાવા માત્રથી કરે વિનાતો બનતો નથી

अध्यात्मसार-स्टीर

િશ્રીમદ યશોવિજયછ

િ શેખક · શ્રીસત કતેર્યાદ ઝવેરવાંદ]

"વાણી વાચક યશ તણી કેર્યનયે ન અધૂરીજ"

સ્થા વાયક સરા તે કેમ્છુ ? વાચક યશ એટલે મહાનું જ્વાેતિય'ર ઉપાધ્યાય શ્રીમદ્ સરોાનિજયજી; જેમણે સ્વસ્થિત ' શ્રીપાળ સપ્ત 'ની લાળ ભારપીર્યા, અને તેને અનુસરીને રચેલી નવપદજીનો પૂનામાં ઉતત ઉલ્લેખ કર્યો છે.

આ મહાપરયના જન્મ અલહિલપુર પાટલની અતપાસ કન્હોડા ગામમાં સત્તરમા રીકામાં થયેલ હતેલ તેમ અનમાન કરી શકાય છે. તેએ લાતે એક્સવાળ હતાં. ખાલ્યાન વસ્ધામાં તેમના પિતાશ્રીનુ મૃત્યુ થયુ હતું તેમની સ્મરદાશક્તિ બાલપછથી તીલ હેવી. તેમનાં માતગ્રીને કરરાજ ગુરુની પાસે જઈને ઉપાગ્રયમાં 'ભક્તામર સ્તાત્ર ' સાંભળવાના નિયમ હતા. ચામાસામાં એક વખતે વસ્સાદની મોટી હેલી ધવાથી. તેમજ પાતાન શરીર તરમ હાવાથી, સાતાછ રારુ પાસે જઈ 'લક્લામર સ્તાત્ર' સાંલળી શક્યાં તહીં. એમના નિયમ એવા હતા કે. 'ભાગામર સ્તાર ' સાંભાગા સિવાય બિલકલ અન્ત કોવે નહીં ઉપરના કારસંધી ત્રણ દિવસના ઉપવાસ થયા. ભાઈ "જેટો! "ની ઉંગર તે વખતે પાંચ છ વર્ષની હશે. ગેરગ દિવસે જશોએ પેતાની માતાને પૃષ્ઠયું કે, 'હે માતથી! તમા અન કેમ લેતાં નથી ?' ત્યારે માતાએ કલ કે, 'હે પત્ર ! હં 'ભક્રવામર સ્તાત્ર ' સાંભળ્યા સિવાય બિલકુલ સોઝન લેવી નથી. જશાએ વિનયથી કહ્યું કે, 'વસારી ઇચ્છા હોય તેા કું વધાને 'ભક્તામર સ્તેણ ' સલળાવું. માલા આશ્રેષ' યામી બ્રાહ્યાં કે તે તતે. કથાંથી આવડે ? પત્રે ક'ા: 'હે માતાગ્રી! તમે મને તમારી સાથે ઉપાશ્રયમાં ગુરુ માસે દર્શન કરવા તેડી જતાં હતાં, તે વખતે હું પણ 'લક્લામર સ્તોત્ર' સાંભળતા હતા, તે મને યાદ રહી ગયુ છે. માતાએ સંભગવવાન કગ્રાથી મુત્રે એક પણ લક સિવાય ' ભક્તામર સ્તાત્ર' સંભળાવ્ય તે વખતે સુરુ શ્રી નયવિત્રયછ ત્યાં પદ્મારેલા હતા; આ ગાલ અવસ્થામાં તેમની યાદ્યક્રિતના તમૃત્રા છે; ત્યાર પડી તેમણે સં. ૧૬૮૮માં દીણા લીધી. સં ૧૭૧૮માં ઉપાધ્યાય પદવી એમતે મળી, સં. ૧૭૪૩માં ડ્યોર્ટ (દર્શાવી) નગરીમા તેએાશ્રી સમાધિષ્વ'ક કાળધર્મ પામ્યા.

' તત્ત્વાર્ય'કારિકા 'માં શ્રીમદ્ ઉમારવાતિ વાચકે પ્રમુ શ્રી વર્ષમાનસ્વામી સંબંધમા કધ્ છે કે, '' માનિતમાનો મહેપ્યનેકેયું " નર્યાત્ જન્મજન્માંતરના સંસ્કારા પછી તીર્ધ'કરપ્ર્યું મળેલુ છે; તેમજ 'ભાગવદ્વીતા 'માં પણ કહેવામાં આવ્યુ છે કે, ''શુપ્તીનાં પ્રીપ્તતાં વેદે યોગપાણે પ્રजાવતે" અર્થાત્ પૂર્વ જન્મમાંથી વેગાયણ થયેલા આત્માને જન્મ પવિત્ર દુધ્યમાં શય છે અને એ જન્મમાં વેશાયાળીની શરૂઆત કરે છે; તેમ ઉષાધ્યાયણ શ્રીયણોનિજયણ માટે પણ કહી શકાય.

એકવીશ દિવસ પર્યાંત 'વૃં'ના ળીજવી સત્તરતી દેવીનું એમણે આરાધન સ્કું" હતું. એકવીયામાં દિવસની રાત્રિએ સસ્તરતી દેવી સાણાત્ હોબ્દ થયાં અને તેમને વરદાન માગળ કહ્યું. શ્રીયદેશિબ્યજીએ એન શાસનના ઉદ્ધાર્થો' શાસ્ત્રો સ્વાયામાં સહીય માગી. સરસ્વતી દેવીએ કહ્યું: " તે પ્રમાણે યાંચ્યા!" એમ કહી દેવી અંતર્ધાન થયાં.

એમને ઉપાધ્યાય પહેલી શ્રીવિજયપ્રવાસુરિજીએ આપી હતી. તે વખતે પતિએમાં આક્ષતા શિથિકાચારને ફૂર કરવા શ્રીસત્યવિજયજી પંત્યાસની સાથે મળી કિયોન્હાર કર્યો હતો.

જેમ શ્રીમાન્ હરિશક્ત્રસ્થિએ સ્વરંચિત શ્રીમને છેડે " વિજ " શબ્દ રાપેકા હતા, તેમ શ્રીમદ્ ઉપાધ્યાયભ્રેએ સ્વરંચિત શ્રેષની શરૂચાતમાં 'વેંદ્ર' શબ્દ સંકેતરૂપે રાપેકા છે.

ઉપાધ્યાયછના શ્રીદ્યાનંદ્રકાનછ સાથે સગાગમ થયા હતા. ગ્રાસુની ધાતા કરી તેટલામાં શ્રીઆનંદ્રકાનછની શોધ કરતાં તેથા મળી ગયા. આનંદ્રકાનછ કે જેવા અધ્યાતમીથી શ્રેષ્ઠી પાછળથી એકાંભવાસમાં રહેતા હતા; તેમના તરફના પૂન્યસાવથી ઉપાધ્યાયછએ 'અપ્રધારી' રથી છે તેના નમૂનારૂપે આ પક ધ્યાનમાં લેવા જેવું છે:

> " આગંદથનેકે સંગ સુજસ હી મિલે જળ, તાળ આગંદ સમ ભયા સુજસ," પાસ્સસંગ લોહા જો ક્સ્સત, કંચન હોત હી તાર્કે કસ. ¹⁸

શ્રા રીતે તેઓથી પ્રખર વિકાન હોવા હતા કેવી ગુલ્લાહી વિલૃતિ હતા ! મેમના સમકાલીન વિકાન ત્યોતિષજા—80 શ્રીમાનવિજ્યભ, પં૦ શ્રીસભવિજ્યભ, ઉપાળ શ્રીવિનયવિજ્યભ, વિત્યદેવસૂત્રિ, વિત્યાસિંહસૂર્ણ, જાને વિજયપ્રસફરિવગેર હતા.

તેઓ પ્રીએ કાશીમાં વિદ્યાલયા કરેશા અને વાદમાં વિજય મેળવતાં ન્યાયિશાસતી પદવી આપવામાં આવી હતી તેઓપ્રીના વસ્ત હસ્તે નિક્ષ લશે સ્થાયેલા છે દેઠલાક લલ્પ છે અને કેટલાક અલલ્પ છે. સંસ્કૃત અને પ્રાકૃત ભાષામાં અવાવેલા 'અપ્યાત્મમત-પરીકા, અધ્યાત્મસાર, અનેકાતઅવસ્થા, તકંપસ્લિયા' વચેરે છેતાલીસ ગયા લસ્ય છે.

તેમના હાથ્યુ શાસનજા સંવત ૧૭૩૮ માં લખેશ તે લાવવગરથી પ્રગટ થતા 'આત્માન'ક પ્રકાશ ' માસિક યુ૦ ૧૩, અંક : દમાં પ્રસિદ્ધ થયેલું છે. ઘોવામાં આવ્યા હારે તેમશ્રું 'સરકૂદ અને વહાલુના સંવાદ'લું કાવ્ય રચ્યુ અને તેમાં મતુલ્ય છવનની કુર્દાંબતા ખતાવી બવિચની પ્રત્યને કેમધ આપ્યા. 'અધ્યાતમતપરીક્ષા, દિક્ષટ ચારાશી કેમલે 'વગેરે ગ્રંથા તેમણે દિગ્રાંગર સંપદાયનાં મંતવ્યા સામે રચ્યા છે.

તેમણે ગૃષ્ટ'ર ભાષામા ત્રવેલા 'દ્રશ્યણભાષ રાસ' ઉપરથી ડિગંબર કવિ શ્રીભાજનજીએ, 'દ્રશ્યાનુધાગલક'લા ' નામે નિહદ્ભોત્ય ગ્રંથ સસ્કૃતમાં બનાવ્યા છે.

સવારો, દોક્સો અને સાહ્ય ત્રણ્યો અથાવાં સ્વવનોમાં રચાનકવાસી મંતન્યો સામે તેમ જ યહુદાંનના વાહીઓ, કે સેઓ એકાંત મતાવાહીએ ત્રણા છે, તેમની સામે જૈન કર્યાંનને સ્પાફવાલ મતા પ્રખરપણે રજૂ કરેશે છે, તદુષ્યાંને 'ક્ષાણાનીતા, સમાધિશતક, સમલા- શતક, વીશ વિક્રેરમાનનો સ્તંતર્ય, અમૃત્યવેલી સત્ત્રાય, પ્રાર અહારની સત્ત્રાય, પ્રાંચ પરમીસીતા, સીમ પ્રેરસ્વામીનું નિચ્ચ-અલાકાગાર્લિંગ તે તાલીસ આપાનું સ્ત્રવન, આઠ કૃષ્ટિની સત્ત્રાય, ત્રેમને એકાક્સીમાં કોક્સો ક્લ્યાયુકાનું સ્વવન, અપ્રિયાર અંગની સત્ત્રાય, સમાહત્ય પ્રસામાન વેત્યાનકાની સાથ્યાય અને વર્ષાયાન ચાલીશીમાં સ્ત્રાય પ્રયોગ સ્ત્રાય સ્ત્રાયન વર્ષાયાન ચાલીશીમાં સ્ત્રાય સ્ત્રાય

જેમ તેમણે શિક્ષોગ્ય સાર્દા સ્તવનો, જેય કૈ-'જગજીવન જગ વાલકો,' 'વિમહાચલ નિતુ વંદોએ'-વગેર સાહિત્ય સ્થ્યું છે, તે રીતે 'જ્ઞાનસાર' અને 'અમ્યાનસાર' જેવા વિહદ્શોગ્ય મહેન કચ્ચ કોટિના ચ ચાની સ્થના પશ્ચ કરી છે. ઉપાધ્યાયછએ ક્યા વિષયામાં ક્રદમ નથી ચક્ષાની એ કહેતું સુશ્કેલ છે. તેમણે ત્યાયના અનેક ચચા જેવા કૈ-'શાસ્ત્રાતાંત્રમુચ્યય-ટીકા, નચેપપેટા, નચાયખંગ્યાલ, ન્યાયલીક, નચસ્ક્રમાં' વગેરે સ્થા છે અન્ય કર્શનની માન્યતાને જૈન દર્શનમાં ઉતારવાતું તેમણે અદ્ધુલત સામ્યત્ર્ય હતું. એમની કૃતિએ પ્રતિપાદક શૈલીની અને પ્રદાંગાપાત્ર ખંડનાત્મક રીલીની, સમત્યવાલી, વિદ્યાદ હિળાલી, તર્ક અને ત્યાયથી લરપૂર અને આત્રમાનાં ચંધીર સહસ્ય અને ચિતનાલી પુસ્તાર શર્ક છે.

દર્શ'ન, ગ્રાન, ગ્રાસ્ત્રિ સાથે વાયમાં પછુ તેઓ સંથયી જીવનવાળા હતા નીશસ્થાતકનું વાય તેમણે કર્યું હતાં.

જે 'તવષદાઇ' પૂતા' ગોળીના કિલ્સોમાં શાક હોય છે તે તેમણે અનાવી છે. પ્રીવિત્તપવિત્ત્યાનોલું ગે 'પ્રીપીપાળ સર્શ સંગ ૧૭૩૮માં બનાવ્યો, તેમાં સાહ સાતસા માચા સુધી ગ્રાપ્ત સદેરમાં સસ રુવા પછી તેઓ કાળધર્માં પાસ્યા, શાકીના સસતો વિભાગ કે જેમાં તરપદાઇની પૂત્ત ગાળી લગ્ન છે, તે વિભાગ ઉપાળ શ્રીપસીવિત્યાલ્યુએ પૂર્ણ કરી. આ રીતે સહાધ્યામીનું ત્રાણ ગાળ કહ્યું, અને જેન જવાનના ઉપાકારી અન્યા.

જેવી રીતે શ્રીકેમગંદ્રાચાર્યજીના જીવનાદવચાની વિશ્વિમાં ભરાબર મળી શકે છે, તેની રીતે ઉપાધ્યાયજીના જીવનાદવચેની વિશ્વિમાં અને સાલ ચોક્ક્સરીતે ઉપલબ્ધ થઈ શક્તી નથી, છવાં 'સુત્રવારેલી લાસ' લંધ કે એ તે સમયના સુનિ શ્રીકાન્તિવિલ્પજએ લખેલ છે, તેમાં માં. ૧૭૪૩ માં શ્રીજિયાધ્યાયાલ્યુએ અંધાર્ધમાં ચતુર્માંસ કરેલ છે, અને ચતુર્માંસ પછી કાળધર્મ (સ્વર્ગવાસ) પાયેલ છે, એવી હેકીકત જણાવે છે. તેઓશાંની પાદુકા માં. ૧૭૪૫ માં એકોર્કમાં પ્રતિક્રિત થયેલી છે. વસ્તુતા ચાદુકાના લ્યુકોના અધુર્ધિત્ય—પૃષ્ મહારાજ શ્રીવિજ્યધર્મમાં સભ્ય ઉપાયાવાલ્ય પદ્યાપ્તિ માટેની આવાહી મારી દરિએ લાગે છે! ત્યારે મુંબઈ-સાયબલામાં—સં. ૨૦૦૭ માં વરુ પૃષ્ઠ ઉપાય્યાયલની કેરીના સ્લિફોલાર અને લ્યુવન્યસ્ત્રિત પ્રકાશિત કરવાના સચિતિહાલ નિલ્યું લાહેર કર્યો હતો. તેઓશાંની જ હાજવીમાં તેઓશાંના સુરુષો હત્યાક માં. ૨૦૦૮માં ત્રણ વિવાસના મહોતસવૃષ્ઠ એકાર્યોના આસ્ત્રના લાલ્ય તૃત્તન સુરુમ કિરમાં સૂર્વિયી પ્રતિશ્ર તથા શ્રીયશાંવિજય સાસ્ત્યત્વસ્ત્ર મહાત્યન લાલ્ય તૃત્તન સુરુમ કિરમાં સૂર્વિયી મહિલા તથા શ્રીયશાંવિજય સાસ્ત્યત્વસ્ત્ર

ચૌદરો ગું માલીસ (૧૪૪૪) ગંગાના કર્યો ગુગ્યમન શ્રીમાન હરિસ્ટરિફ પછી લગભ્રમ એક હતાર વર્ષે અદ્યોવિજયજી ઉપાંચાય થયા છે, અને તે "હયુ હરિસ્ટર" નામ સંશિધાય છે સાહા ત્રણ કોઠ ત્યાં કેતા ત્રવિતા, મહાદ દેશામાં માહિસાના પ્રચારક અને કુંમારમાળ રાતના પ્રતિક્રિયક શ્રીક્ષેત્રચંદ્રચાર્ચજી તથા અકલ્યર લાદશાહના પ્રતિક્રિયક અને સારતપંમાં અહિસાનો ઠંકા લગાહનાર શ્રીફ્રીસરિજયદરિ પછી શાસનપ્રસાલક તરીકે ઉ શ્રીશીવિજયદનો અવતાર થયા; માલા જેલિવિંગ મહાત્યાઓ ત્રેન શાસન ગ્રવિચિક્રયાએ ટેક શ્રું છે અગ્રહ ચુંગો પછી આવા સહાત્યાએ પ્રયાટ થયા ત્રેઈએ, તેમ દર્શમહાંબોએ કહેલ છે, તે સુલ્યલ જ જૈન શાસન એકનીશ હત્યર વર્ષો પરંત સાહ જેક પ્રશેશ પ્રશેશ

શ્રીઉપાંચાયછાએ એકસો લંગ ઉપસંત હમલાય છે લાખ ચ્લાકોની સ્થાન કરેલી છે. ઘણા મંચા તેમના અલબ્ય છે. 'લાખાસસ્ય' નામના સ્વરચિત સંઘમાં તેમણે જ કહેલ છે કે, "'દહસ્ય" પકાંકિત ૧૦૮ ગ્રંથા કરવા નિલ્યુંથ કરેલ છે, તેમાંથી માત્ર 'સાયારહેસ્ય' 'ઉપદેશસહસ્ય' અને 'નાયરહસ્ય' મળે છે.

રવ૦ ઉપાધ્યાયલ્ય અહારાજનું સાહિતાલ્યન અહી રાખ્યું દર્શન, ફાન, ચારિતમય માત્ર પાંહિત, ભાલ ભ્રહ્મવર્ય, સંયત્ર, તાતુ, અર્જન ભાષારાષ્ટ્રીને, અવનાર મને નિસંધારિતી સમનિતતા, લાકિંકપાઇ, નાથ ગરીલાં ઉત્પાદન, નથીન ત્યાયમાં સર્જન, સરાખાં સરા પુરુપે સામાનાં રતનો, કાંબી અને પદોવાલું, તેમ જ 'આધ્યાત્મારા' અને ' અધ્યાત્માનાના પનિતક' જેમાં લખ્યાત્માન પનિતક' જેમાં લખ્યાત્માન પનિતક' જેમાં અમેરા પ્રાપ્તિક જેમાં પ્રાપ્તિ કર્યાલાલું વચેર વિવિધતાના સમિત્રલસૂપ દેશાલી વચનમલ લ્યનન

પ્રસંગાપાત કહેવાનુ પાસ થાય છે કે, ગત વર્ષના દિંગ વૈદ્યાપ માસના શ્રી કાનછ સ્વામી તરફથી સેનબઢથી લહાર પહતા 'આત્મધર્મ' માસિકમાં તેમને માટે "વ્યવહાર વિમૃદ્ધ'' શબ્દ વાષ્ટ્રીને તેમને હેલકટ રીતે ચિતરવામાં આવ્યા છે પશુ તે કેવળ લેખકતું તેઓશ્રી વિસંવેત સાહિયતા લાફા બિનજાલવાતું પરિલાય છે, અથવા ઇતારણ્યાં હેંગ્જન્ય કૃત્ય છે. તેમણે તો વ્યવહારની મુખ્યતા સખી નિક્ષય દરિખી ગૌલુતા, આપણા રેવા ભરતફરતા માતવીએ! માટે સારાય ગ્રુલુરથાતક મુખી મર્યાલકૃષે બલાવી છે. કેવલી લગવ તેને પણ તેવમ ગ્રુલુરમાત્મમાં વ્યવહાર સાથવી પહે છે, તેથી જ તીવાં કરે પરસારતાઓ ગ્રુલિય સંઘંધની સ્થાપના કરે છે, એ મુખિલે છે તવકારનાં પહોમાં પ્રથમ અવિદેશ પહ તે વ્યવહાર અને બીજું સિલ્હ પહ તે નિશ્ચય છે. અવિદેશ પરસારતા પણ ચરૂપી સિલ્લપની ઓળખાદ્ય કેશ્ય આપી શકે કિંગ વિશે ઉપયોગાજી મહારાજે રહ્યાં કર્ણ છે કે—

> " નિશ્ચય કૃષ્ટિ ફક્ષ્ય ધરીજી, પાર્ટી જે વ્યવહાર; પુશ્ચવ'ત તે પામરોજી, ભાવસમુદ્રના પાર. "

સ્મા સહાન ત્યોતિયંર કે જેંગા પૂર્વ લગ્નમાં ચાદલુત સંયોપદાય લઈને સ્મળમાં હતા, તેંગા વહુર્ય નવેતા, તે હેલ ગેંગાના રવિલા, ત્યાવ, વ્યાકવલ, છંદ, સાહિત્ય, બહાં કાર, કાલ્ય, તર્ક, સિહ્યત, ગામમ, નવ, પ્રમાલ, સાલાં ગી, અધ્યારમ, શ્રેલ, સ્યાદવાદ, આચાર, તત્ત્વતાન ઇત્યાદિ વિવેશ ઉપર વિદેદસોલ્ય, તથા સામાન્ય ગતના માટે ગુજરાતી વચેર સિક્સાયામાં વિપુલ સાહિલના રસાયાળ પરી ગયા. નવ્ય ત્યાપના આવા જૈન વિદાન, ત્યાપાયામાં ન્યાપવિશાસ સાહિ બિક્કોને પ્રાપ્ત કરવાદ સુખ-ત્યોતિયંત્રને આપણા અનેકશા વંદન હો.

'ઉપનિતિભવગપંગાકથા' કે જે સાહ હવાર વ્લાકમય સંસ્કૃત ગ્રંથ છે, તેમાંથી સાર ખેંચી ગુજર ભાષામાં શ્રીવિમળનાથના સ્તવનમાં એમણે—

> " તત્ત્વ પ્રીતિકર પાણી પાએ, વિમળા લાકે આંછછ; લાયલ ગુરૂ પરમાલ દીવે તવ, ક્ષમ નાખે સવિ ભાંછછ, "

ધમધ્યામાં પાકચાસી (ફ્રુઝ)થી પ્રાપ્ત કરેલું સમ્પ્યક્ર્યાન્ટ્રપ હત્વ પ્રીતિકર પાણી. સફરાન દ્રષ્ટિર્ય નિર્યાળ જંજન અને સચ્ચાસ્ટિટ્ય પરમાદ્રા (શ્રીરોનુ સ્વરૂપ ક્ષેતિક્રમાયમાં પાર્દ્ધ કર્યું કે, તેમજ શ્રીસુવિધિનાસના સ્લવનમાં—

> મૂળ ઉપ્વ⁴ તર્વઅર અધ શાખા રે, ક્રષ્ટ પરંચુ એવી છે ભાષા રે: અચસ્થિતાએ અચસ્થિ કીધું રે, ભારતે સેવક કારજ સીધુ રે.

આ હંદીકત 'શ્રી ભાગવદ્ગીતા 'માં કહેર શ્લાક સાથે કેટલીક મેળ ખાય મિ

" कर्ष्ममूज्यवः शाखं, व्यवस्यं प्राहुरव्यवं ॥ छन्दांसि वस्य पत्राणि, यस्तं वेव् स वेद्वित् ॥ '

મ્યા ^વલાકના સહેરથને ગાહેલાં હારીકે લડાવી પ્રસ્તુલાકિત માટે લોકસાલામાં સમન્ય કર્યો છે. દેકસ્ત્રી અને સાહ્ય ત્રસુરો ગાલાનાં સાવનામાં નિશ્ચળ ત્યા અને અવહાર તપમે સરણ ઉપદેશા છે. એમાં અપૂર્વ યુક્તિઓથી સૂર્વિપુત સિદ્ધ કરી છે. છેમટે કહ્યું છે કેન્- " મુજ ક્ષેજો ચિત્ત મુશ્ક ભાવથી, ક્ષવ ક્ષવ તાફરી સેવ રે; યાચીએ કેહી ચને કરી, એક તુજ વ્યાગળે દેવ રે. તુજ વચન રાગ મુખ આપળે, નવિ ગર્લુ મુરનર શર્જ રે; કેહી કે કપ્પ કેહેં દાખવે, નવિ તહ્યું તોએ તુજ ધર્ય રે."

આ છે તેમના ચદ્દભૂત શાસનરામ અને અલોકિક પ્રભુષકિત!

સ્માનં કર્યું રે જચ્છના શ્રીવિજ્યાનં ક્ષ્મિરું એ સ્વારપા સૈકામાં રચેશા ' ધર્મામંગઢ' શ્રંથ કે જેની દીકા સહાપાધ્યાય શ્રીસાનજિજ્યાિ કરી છે, તે ગંધતું સશાધત ઉપાધ્યાયછ મહારાજે કરેલ છે, તેના તાજેતરમાં જ સાયાંતર સાથેના પ્રથમ લિભાગ પ્રકાશિત થયા છે. સં. ૧૫૭૬ માં 'શ્રીજ જ્યાંગી સસ' તેમશ્રી પંલાતમાં રચેલ તે તૈમના પાતાના હાલના ગ્રહ્મરાવાળા પાતાંઓ સાથેના મળે છે.

રમા રીતે તેઓશી લક્તિપરાયલ, રાનપરાયલ, સંવયી અને તપપરાયલ સાહિલ-જીવન હવી ઘયા છે, અને લાપણા માટે વિવિધ સાહિત્યની વાનધીઓથી લરપુર લસ્સો મૂકે મથા છે, એથી શાસનની પ્રભાવનાનું નિમિત્ત લવી પાતાના લામના ઉપર તેમ જ લિભ્યની પ્રતા ઉપર મહાન ઉપકાર કરી ગયા છે. આવા મહાત્નાઓ પાતાની હબતહીલા સંકેલીને સ્વર્ગ સંવાળી, શ્રીલતુંલેલ્ટિંગના શબ્દોમાં કહીએ તો આવી મહાન વિભૂતિઓ "અલંક્સ્ત્રાના સુધ્યા—પ્રબીના અલંકારણય" છે તેમ જ કવિ લવલ્લુનિના શબ્દોમાં "જ્ઞાયક્તિ કેડપિત્તં જ્ઞાયના સ્વરાન્— છે મહાત્મના વાનાશ બન્યાયી આ વચ્ચ વપ્યારંત વર્ત છે." એટલું કહી ઉપરાંકારમાં તેમણે જ નહેલા 'ગ્રાનસાર' લંપનો અંતિમ-સર' નવેમના સામસ્યારીય એફાને-વેશક, લક્ષા આપામાન્ય સ્વર્ત વ્યવનો સ્વર્ત પ્રતાનો સ્વર્ત કરોને સ્વર્ત કરોનો સ્વર્ત કરોને સ્વર્ત કરોન સ્વર્ત કરોને સ્વર્ત કરોને સ્વર્ત કરોને સ્વર્ત કરોને સ્વર્ત કરોનો સ્વર્ત કરોને સ્વર્ત કરોનો સ્વર્ત કરોન સ્વર્ત કરોન સ્વરત્ત કરોન સ્વર્ત કરોન સ્વર્ત કરોન સ્વર્ત કરોને સ્વર્ત કરોન સ્વરત્ત કરોન સ્વર્ત કરોન સ્વર્ત કરો સ્વર્ત કરોન સ્વર્ત કરોન સ્વરત સ્વર્ત કરોન સ્વર્ત કરોન

> " अमृद्रस्थाः सर्वेत्र, यक्षपातविवर्किताः । क्रयन्ति परमातन्द्रम्याः सर्वेनयाक्षयाः ॥ "

" નિશ્ચર તથ અને વ્યવહાર તથમાં ગ્રાનપણ અને ક્રિયાપણમાં, એક પશ્ચાત-બ્રાંતિ તછતે સવ નવેદના આશ્ચર કરનારા પરમચાનંદથી લવપુર (અકાપુરુષા) જયવંત વર્તે છે."

> " ચૈતન ગ્રાન અલુવાળીએ, તળીએ ચાહે સંતાપ રે; ચિત્ત હમડાલતું વાળીએ, પાળીએ સહજ ગુણ આપ રે. છ

ઉપાધ્યાયજી મહારાજ

અને

તત્કાલીન પરિસ્થિતિ

[ક્ષેખા : શ્રીયુત રાજપાલ મગનલાલ વહેારા, ખાખરેત્રી]

8पाध्यायळना सभवना व्यविक्तस्युत्र—

જેન સાંપ્રમાં જેમ વ્યવસ્ત્રવાર ત્રીવિધારા થતા રહ્યા છે, તેમ જયકારના સામના પહુ સંપ્રને ભવાસ્ત્રવાર કરવા પડ્યો છે. ઉપાધ્યાય શ્રીમાન ચર્શાવિભ્યલ્ટ મહારાજના સમય એવા જોય કાર કરવા હતા. એમ કહેવામાં હરસ્ત જેવુ હતી શ્રીન્સોના સાસ્ત્રિમમાં લારે શિવિલા મંગી શુંકી હતી. શ્રીપૃત્રીમાં અને ચતિવીલું પ્રથળ પૂર હતું. સ્લયમંત્રિ ભાર દિશિલા મંગી શુંકી હતી. શ્રીપૃત્રીના અને આવાસ્ત્રવા તો કોઈ તૈયાર ન હતું પશુ સાંભળવાં ઢે દર્દાની તૈયારી ન હતો વશું લાહાલીન પરિપ્રિયતિ પપક્ષી દેવાલ છે. કહુડું મેણું ત્રેસ, ધામધૂનની ધમાધ્યમ, કહુડું સ્થાના કે દર્પો કૃષ્કર્યોલું પહલું, પૈસા હઈને ધર્મ ખાવતા પહલું પ્રક્રા પ્રયાસ પ્રયાસ ક્ષેત્ર પાત્ર કર્યા કર્યા પૂર્વ પાત્ર કર્યા કર્યા પરમ સ્થામ પ્રયાસ અહારાજ એક પરમ સ્થામ કર્યા સ્થામ સ્યામ સ્થામ સ

ફિયામેલિય ફૂર કરવાળી પરગાવશ્યકતા જણાતા પંત્યાસ શીસત્યવિજયછ મહારાજે તે સમયે ફિયોન્હાર માટે ક્યર કર્યો હતી ઉષ્યાધ્યાલછ મહારાજના તે વાતને સંપૂર્ણ હિંદિ કે ટેકે હતો. પરંતુ પરિસ્થિતિ એવી વિગ્રમ હતી કે તેંચા. શ્રીપંત્યાસ્ટરને કરી સહિંદ મહક કરી શક્યા ન હતા. આ બાબત વિશે લેખકને સફાગત શ્રીનેતાલાં કલાઈ માહિય મહક કરી શક્યા ન હતા. આ બાબત વિશે લેખકને સફાગત શ્રીનેતાલાં કલાઈ મહિયા માહિય ત્યા હતા કર્યો હતા પરંતી ત્યા ત્યા હતા તે તેમણે કહેલું કે એમ થવામાં ઉપાધ્યાયછ મહારાજના તમન્યનિવન પરિસ્થિતિ તો કારણસૂત હતી જ પરંતુ કંઈક અરા તેમનુ ફ્રેલ્યકોર્યુલ્ય પણ હશે. ગ્રમે તેમ હે, પણ ત્યારની પરિસ્થિતિ સત્યાદ્યાર્થના સાધકને અત્રહ્યુળ નહી એ વાત શ્રાક્રમ

શ્રીમાન ગ્યાનંકલનજી મહાનાજને પણ સ્તવન સાવીશીમાં, ગળાના સતલેડો ત્યારે કેવા હતા ગળે મુશ્રદુત્તા કેવા વિસ્ત્ર પ્રવર્તીય હતો ગ્રાને પણ મુકવાનું પણ દેશસું ન હતું તે વાત ઉત્ર શખોમા બ્યાત કરવી પડી છે. ગ્રેટલું જ નહિ, પૂ. ઉપાધાયજીને, પોતે ફાર્ની અને શુદ્ધ સંપત્તી છતાં હ્યારના ગાંતિવિયમ સંત્રેગોને વશવર્તીને ગોકથી વધુ વખત માફી-પત્રેમ લખી ગાપવાની ક્રુસ્ત પક્ષી હતી ! કેટલી હંદે કાળળળ તેમનાથી વિરુદ્ધ હશે તેને! ખ્યાલ ગા ઉપરથી ગાંધી શકેશે.

આચાર્યપદ મેળવી કેમ ન શક્યા !-

સ્મારાય'પરની પરિપૃષ્ટું વેક્સ્પતા તેમનામાં હતી. તેમની નાણી ઢાઈ પણ નથશી સ્માર્થ પરાતણી સ્માર્થ થયાતણી સ્માર્થ થયાતણી કેમાં તેથે તેમ અપૂરી રે) ભાગમાં અને સંસ્તૃતામાં, તાનના સર્પ કેમાંને તેમણે ખેડળાં છે આવી પરમાવિન્દ્રિત આપામાં અને સંસ્તૃતામાં, તાનના સર્પ કેમાંને જેમલાં છે આવી પરમાવિન્દ્રિત આપામાં પડ્યાં કેમ સહ્યુંદ્રત થઈ ન શકી ? ત્યારની જનતાએ કેમ સૌદ્રાસ્ત્રિત્ય રાખ્યું હેમે ? ત્યારે પ્રસ્તું સાહાર્થી લીધો સ્માર્થ પરિસ્ત્રિત્યિને તેમણે સહાર્થી સાહાર્થી લીધો પણ તેમની કૃતિઓમાં ત્યારમાં પ્રસ્તાથાની અપાના તેમણે ઉપલય લીધા છે. બીલું, તેમણે જનના પાછલા કાળમાં આવાં સમાચારા અપાના તેમણે ઉપલય લીધા છે. બીલું, તેમણે જનના પાછલા કાળમાં આવાં હામ સારા સાલાયાની પ્રસ્તુ તેમની કૃતિઓમાં ત્યારમાં કહ્યા આ શાસાયાના સાહાર્થ તેમ સંસ્ત્ર છે. શ્રીલ્યું હામણે તમારે પાણ સાથાયાના સાહાર્થ સ્માર પ્રસ્તુ મામણ પ્રસ્તુ હામ ન કેતા. વર્તમાનમાં સાયાન્ય શાનવામાં સાધુને કે લાઈ કાલા શિલિતને માટે આયામાં કહ્યા કહ્યા હામ અને શ્રા છે, ત્યારે આવી મહાન્દ્રિતિઓને શાસના સંદિતને માટે આયામાં કહ્યા કાલામાં સ્ત્રુ છે, ત્યારે આવી મહાન્દ્રિતિઓને શાસના સંદિતને માટે આયામાં કહ્યાલ અની ત્રા છે, ત્યારે અર્થ તેમ સત્યાની એ કાળભાની વિવિત્રતા જ સ્ત્રુલ છે.

સીહાઈ-સંપ, એકતા ને ઉદાર હૃદયના પ્રેસ્ક્રેયસ'મ—

પ્પારા સરકુરમાં મીઠી વીરહી જેવે! એક અનાવ પૂળ સાહિત્યમાં સ્મરહ્યાંય અની મેપી છે તેની ત્રીધ લેવી આવશ્યક માતુ છું.

ઉપાધ્યાયછ મહારાજના નિર્વાય પછી, ગાચાર્ય રીજ્ઞાનવિમળસ્વિષ્ટિએ તેમજ પર-તરમચ્છના આભ્યસૂર્ય આત્માની સુનિ શૈદિવન્દ્રસ્ટ એ ઉપાધ્યાયછ મહારાજના નામથી તલપદ પૂતાની રચતા કરી છે એ પૂતાની આદિયાં સુજ એપ્રયાતકારામાં યૂ. ગ્રાનવિમત્ત સરિજીએ દરેષ્ઠ પડતી દૂકી સ્તલના કરી છે. એ પછી સાળમાં, દરેષ્ઠ જાની સ્તલના યૂ. દેવ-સંદ્રષ્ટ મહારાજે કરી છે અને ત્યાર માદ 'શ્રીપાલસ્તા'ના ચેમ્યાં માં એની અચિયાત્રી અને ભારમી હાંગો-જેના રચવિતા યૂ. ઉપાધ્યાયછ મહારાજ કે ચર્ચાય, પ્રત્યેષ્ઠ પરને ચેમ્ય થાન અસગ મલસ દરેક ખૂબામાં મુદેલ છે. આંતમાં સાલિનીકાર્યમાં યૂ ગ્રાનવિમત્રાર્યર મહારાજે અને ક્લારામાં યૂ દેવન્દ્રસ્ત્ર અક્ષ્રાસ્ત્ર મેદાતાનો નામ બધાર કર્યા છે. બ્રિજ્ઞ ચચ્ચના વિદ્રાનો વચ્ચેની આ હાર્દિક એકતા અને ઉપાધ્યાયછ મહારાજ પ્રત્યેના આ લાર્ને મહારાઓના અહેલાન, સીહાર્યન્ન ફ્રેક્ટ સ્ટલંત યુદ્ધ પાટે છે, જે સાંભળતાં આપણા દુશ્યને અસર કરે છે. તે કાળમાં આવા પૃત્યોનું પછુ ચરિતચિત્રણ બિલકુલ તહિ શતું હેલ એમ જણાય છે. તહિતર, પૂ ઉપાધ્યાયછ મહારાજ કે આતાંદાનાછ મહારાજના વ્યવસ્થિત છતનચરિત માટેની આપણી ઉત્કંશ-કચારનીયે તૃક થઈ હોત. પૂ ઉપાધ્યાયછ ગહારાજ માટે ''સુંજસ-વેલીલાસ'' તામક નાની કૃતિ મળે છે પશુ તે પુરિતકા, તેમની વિશાળ વિદ્વત્તાના બહું વિધ પાસાવાળા છત્રનેને પૂર્વું તથા ત્યાર નથી જ આપી સકવી.

3પાધાયણ મહારાજ અને તેમના કાળની અન્ય વ્યક્તિએ તેમજ ત્યારના સંગ્રેમેન સહાયક ખળા, અવરાયક ખળા વગેરે વિશે અવેપણ પૂર્વ મહિલી અન્ય વિદ્યાનોના ક્યતમાંથી મળી સ્કેટો એ અપેશા સખીને આ વસ આલેખન પૂર્વ કર્ક છે.

*

कष्टेन हि गुणवामं, प्रयुणीकुरते मुनिः। ममताराक्षसी सर्वे, सक्षयत्येकहेळवा ॥ ३ ॥

સુનિ સંદર વેડીતે સુક્ષતો સમૃદ હૈયાર કરે છે અને ચમહા-રૂપી સક્ષસી હૈદ એકત્રમાટે નધું લક્ષણ કરી જય છે.

અધ્યાતમાર : સ્કીક] [શ્રીમદ્ **વદ્યોવિજવછ**

5

न्यायायार्थं कैन क्योतिर्धर

મહેા પાધ્યાય શ્રી. યશાવિજયજ

[લેમક : શ્રીયુત મગનલાલ માતીચંદ શાહ, સંસ્દરગર]

नमोऽस्तु तस्मै देवाय, समुणाय तपस्विने। हानध्यानवरिवाय, नमोऽस्तु में नमोऽस्तु में ॥ 17

સંસારમાં વિલયાન મહાત્માં ગામ પૂબલાઉત અનેકરીતે ચર્ચ શકે છે પરંતુ વ્યક્તિ લસાન મહાત્માં ગોળી પૂબલાઉત તો વ્યક્તમાનથી, પ્રહાંથી અને શુંલવથી તેમના શુદ્ધાતુંવાદ શાવાથી જ થઈ શકે છે. જ્યાન્તીઓ ઉત્વવની, સભારતા કરવા કે વીજી લક્ષ્મી રીતે તેમના શુદ્ધાતુંવાદા શાદ શક્ષ્મ છે આબના મહાત્ર પણ એવા જ છે જેન દર્શના સુનિષ્ધાત સંત, પ્રપુષ્ઠ તત્ત્વન, ઉત્તર શાહિલાગોમી અને સર્વધર્યના ભાવને સમત્વવનાર અકંગ પ્રદેશ-પાધ્યાય શ્રી મહાત્ર વર્ષના અહેલાએને અંબલિ આપવાના છે તેમજ તેમના કરમણ કાયમ રહે, લાહિતાલ વૃદ્ધિ પાયે અને સત્માજ તેમના ગ્રાંતનો વિરક્ષલ સુધી લાલ લે એવાં નિવિધિયાન સ્થાનો છે.

જેથું સંસારમાં જન્મ ધરીને ચાડીતિમાં સંપૂર્ણ વિલ્વ કરી પોતાના છવનમાગને સત્યમાગ' કે રાતનમાવ' અનાત્યો છે કે જે માર્ગ' આપણા ચાટે પરસ હિતાવહ છે, એવા પરમ પ્રતિસાવ'ત, રાતનાંત, રાશુવંત ઉપાધ્યાયછ અંકારનજું નામ લેતાં જ દેઈ અનેરો આતંક અનુસવાય છે. જેઓ ફ્લેપદામ ઉત્તમ હતો, જેમની દર્શ'વ્યુહિનો ગણના ઘઈ ચ્છે છે, જેમનાં સંવપાયીલનો આપ કાઠવાં કહ્યુ છે જોવા એક જેન સાક્ષ્રિશિયારિક, આપ્યાનનાચરપતિ સાધુ મહોત્મા વિશે કોઈ લખ્યુ એ સાધારણ યુલિવં કામ નથી, વિક્રાતિ જ તેમાં લંગપાલ કરી શકે.

તેમનાં અનાવેલાં સંસ્કૃત-માફત સુન્તકોર તો એટલાં અર્ધા છે કે તેનું પૂરુ અવલોકન સર્મ શકે નહીં. કહારા કાર્ય સાગ્રહની સતું નિરીક્ષણ કરવા વાલે તો કરી શકે, પરંતુ તેમણે પ્રથરેલા ગુઢ તત્ત્વારાં એટલા વિશાગ સ્ટેપ છે કે તે સરાવવાને વિશિષ્ટ સાનની વરૂર પટે.

તેમનાં ઘણાં પુસ્તકા સસ્તુતમાં છે કાશીમાં સ્કૃતિ તેમણે કેટલાંક વર્ષ સંસ્કૃતના અન્યાસ કર્યો હતા. સંસ્કૃતભાષા તો તેમને વસેલી હતી એમ ક્ષ્યુએ તો ચાલે. આ પ્રાન્તને માટે તેમને અભ્ય માન પણ હતું, ફેલનો દિવસાલ હતો અને વ્યવલ હતા. હતી. આભે આવી કદતા પારાસુ કન્યાસ રતી. ગોલાલ જ હતી. તેમનું હત મંતરન 'ન્યાયખંડ ખાલ ' કે 'હાંદ્રાવીસ્તાલ 'ના પહેલા જ્યાંદ્રમાં જ પ્રક્ષણ શાય છે. " ઐંકાર" લાય જથી ગંગતરે વસીને, કંચ્છા કરી કૃષ્ટળ કાવ્ય અભાગ રીતે; માળા સ્થી મુર્સભ પુષ્ય સમાન જેની, પૂજા કરે, પ્રભુષ્ય વિધિથી જ તેની [—વસતિવધ દત]

" ઐકાર" રૂ વિતાયજિ પદ આદિયાં તેને જયું. ગ માતટે વસી સાત્ય વિષયે હાળવી ઈચ્છા કરું, વિક્રમિત સુગંધી પુખ સરખા રાજ્યે ત્યા ગેઠવું, હે વીર! તારા પદ્ધસાળની એ વડે પૂળ કર્યું. [-હરિયા છઠ]

'ત્યાયખંડખાલ'ની વ્યતનાના પ્રારંશમાં જ ઉપાધ્યાયછ મહારાજ પંગલાચરણ તરીકે કલ્પલલ 'જોકાર" જે સરસ્વતીનું પંત્રવીક છે તેનું રસવલુ કરીને પોતે ત્રાં પ્રાને કોર્ટ સકૂત વિશાન ધ્રાપણ ખાનસ્ત્રમાં રહી 'ત્યાયચારાર્થ' ખાને 'ત્યાયનિયાર્કાની માનવતી પત્ત્રની મેત્રની, સંસ્તૃત કાન્સ્ત્રની બીખુલતા પ્રાપ્ત કરી છે તે બતાવતા વિશાનોને રંજન કરવાનેન હલ્લાસ પ્રમાતાને પ્રાપ્તુ અહાંચીરના સુધ્યે પુષ્પ સરખા તત્ત્વતાનરૂપી શબ્દોની માળારૂપી શુધ્યો કર્યા હતા. પ્રાપ્તા તત્રવાનરૂપી શબ્દોની માળારૂપી શધ્યો કરતા પ્રાપ્તા તત્ત્વતાનની સત્ત્રનાસ્ત્રમાં આપ્ત્ર પ્રાપ્તા તત્ત્વતાનની સત્ત્રનાસ્ત્રપ છે એમ કહે છે. ⁸

'ત્યાયખ'ડખાદા' કાચની મહત્તા—

ઉપાધ્યાયછ અહારાજનાં ભયાં ખુલ્તીકા જ્ઞાનની પરિપક્ષવાથી લખાયાં છે. તેમાં 'ત્યાવખડખાલ' અત્ર લાગ લખ્યે છે સારે 'ત્યાવખડખાલ' તેને ત્રલપલાત્મક અહવાદ કરવાનો હતો તેથી મારે તેનો કેટલીક અલ્યાસ કરવો પત્યો. આ પુસ્તકની મૂળ કૃતિ અને તેના ઉપર થયેલી અત્યત્ત વિક્રતાલણી સંસ્કૃત ટીકા વાંચતા જ માણસ ચંબી જ્ય તેનું છે. તેને કે તેમના મૂળ ^તેશીકા અત્યત અવસ નથી. કંદરય કરવા જેવા છે

ઉપાધ્યાયછ મહારાજે 'ન્યાયખં દળાવ'માં પ્રશુની સ્તૃતિના ઉદ્દેશથી શ્યાકૃતાહ્યું જે તિરૂપક્ષ કર્યું' છે તે બિન્તનીય છે. તેમણે પ્રશ્નમ પ્રશુના અંતિક્ષ્યોનું વધું'ન કરી, વાણે અંતિરૂપક્ષ પ્રાથામ મલાવી મોહીના શિક્ષાઓની નિવસ કર્યો છે. ગોહી દ્રત્યનું લક્ષણ જે 'વર્યદિવાસ્તિ' ' કરે છે તેમાં થતો દ્રેપ તેમાં ખલાવે છે, તેમજ બૌહીની અન્યય અને વ્યતિરૂપ બાન્તિનો હોય સખ્યત્વે છે. ગૌહો બીજનાં સ્દેશા ભાજનને અંત્રુર ઉત્પેક્ષ થતાનું કારણ ગણિત્ય સાથે સહકારી કારણ ગણિ પૂર્વ તે ત્યાપિ પોતા છે. ગીજ ઉત્પેક્ષ સ્વાનુ કારણ બીજન સાથે સહકારી કારણ ગણિત્ય માર્ચ એને જ એ નિવસ સમ્મળની સૌવાતિના, વેશાપિક, શ્યુત્યન ક્લોપિક, ત્યાપે છે, અને માર્ચ સ્ત્રુપ ત્યાને સ્ત્રુપ બીજન માર્ચ કે એકાં ત્રાણની કે ત્યારે કર્યો કે અનાનાના સ્ત્રુપ કે અને માર્ચ કર્યો કે કર્યો કારણ કે સ્ત્રુપ કર્યો કે કર્યો કરાયો કે કર્યો કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યો કર્યો કર્યો કર્યો કર્યો કર્યા કર્યા

૧ 'ત્યાયખડખાલ'ના ચાગ ગદાવદારમ_ા અનુવાદસાયી,

કાળ અને દેશનું સ્વરૂપ સમ્માને છે. 'ન્યાયખંડખાલ'ના પહેલા લાગ તો ગૌહતા શાિલુક-વાકના પરિકાર કરવામાં જ પૂરા થાય છે. ત્યાય કર્શયની કૃટસ્થ નીતિ પણ ખલાવવામાં આવી છે. દ્રવ્યને એકાંલ નિત્ય કે ગ્યાનિય માનવામાં થતા કોષા ળવાવી તેને નિત્યાનિય કે કર્યાંગ્રેત્ નિત્ય માનવાની વ્યવસારવિજીહ નથની એકાંલા સમ્માની છે. ત્યાર પછી દ્રવ્યની ઉત્પત્તિ અને નાશના હતુ સમ્માની, વસ્તુમાં રહેલા લેશાલેક ખલાવી પ્રત્યક્ષ અને પ્રત્યસિકાનનુ સ્વરૂપ બલાવે છે.

ગ્રમારી રીતે 'ન્યાયખંડખાલ 'બહુ જ ગુહિયુર્વ'ક લખાયુ છે. મારે મારા અર્થે' અતુવાદ કરવાને કારણે તેના થોડા અભ્યાસ કરવો પઠયો છે તે ઉપરથી હું આઠલ લખી શકયો છું.

સંસ્તૃત કાવ્યોના અનુલાદ કરવાતુ કામ તો હું મારી રાક્તિ ગુરુળ કટ્ટું હું. 'શક્તામર સ્ત્રોત, કરમાલુમાં કરે સ્ત્રોત, પ્રાથમાં વગીરી, સંવેગ્દુમકંદલી, પરમાનંદ પચીશી, રુતાકર પચીશી, સ્મ્રાદ્વાદમંત્રવી, અધામભ્યત્રિકાં 'વગેરે કાલ્યેના અનુવાદો થઈ ગયા છે અને તે પુસ્તકાર્ય પાંધકું, જેની પ્રેરણા તો મને 'જેન ધર્મા પ્રકાશ 'માંથી મળી, દુંકમાં એ જ કે લાપાંચાલ્ય મહારાખના છનાનો પવિચય વધ્યો અને હું મારા કાર્યમાં સફળ રહ્યો. તેમન આતના આ પ્રચંચે અંતરાહ્વ આપવા લાવ્યાલાથી થયા એ અનેહદ આનંદની વિચય છે. તે કે હું ત્યાં હાલ્ય સહી સથયો નથી તેને મને પોંદ થાય છે.

ઉપાધ્યાયછ મહારાજ વિશે તો લાગવાનું વધુ મહે લવ છે. તેઓ સાચા લાવશ્રમણ હતા, ધર્મપીર હતા, પરમ વિચારક અને પરમણતા હતા. તે સર્ગ લાવો તેમનાં સુજરાતી કાંબોમાંથી પહું નીકળી શકે છે. સુજરાતી કાંબો જૂની સુજરાતીમાં લખાયાં છે, તે વખતે જેવી સુજરાતી ભાષા ગોહાતી હતી તેવી જ લખાણી છે. એટલે આજની મુધરેલ સુજરાતી આગળ નવાઈ લાગે તેવી છે. એમ છતાં આધ્યાત્મિક લાવથી જરૂર કાર્યુર છે.

" ભાવસાયર લીક્ષાએ ઊતરે, સંવય કિરિયા તાવે. ધન્ય તે૦ "

સાયર, કિરિયા અને એવા થીના શક્યો બૂની શુજરાવીમાં વપસાવા હતા આ દુક્કસાવથી લરપુર હોવાથી ગુજરે કાન્યમાં પણ શ્રદે આધ્યાતિક સાવ દ્રશાવિ છે. 'સુન્દ્રમાનેલી'માં તેમને આચાવ' શ્રીકિસ્ત્રિક્સ્ટ્રસ્ટિંગના તાના બહાપુરુપાં ધર્મમાં ઉત્તર કોંગે-યુનના શુત્રવર વાણી ગંજલિ આપવામાં આવી છે. આ સા મહાપુરુપાં ધર્મમાં ઉત્તર માટે જ અવતીપર અવતર છે, તેમ તેમ કો આ મહે આ પહે તેમના ગુલ્લાનુવાદ સાવા તૈયાર થયા ત્યે એક ઓફસાવ્યમાં ઉત્તર છે. મોદી કિંચીએ કે એપદા' શ્રદ્ધ વિભયને પાયો

શ્રીમદ્ મહાયાધ્યાય શ્રી યશાવિજયજી

[क्षेणः : ३१० अधित पक्षेत्रहास नेष्ट्रसीसार्ध]

" महारमनां कीर्तनं हि क्षेत्रो विक्रियसास्पदम । "

અહંકારના આવેશથી ચાકુત થયેલું છવન પરમ કુપાસાગર સફસુરુકેવની કૃષારૂપી તલવારની તીકસુ ધારાથી ત્યારે કેકાઇને ઉત્તવ્યલ અને કે સારે તે છવનનો કશા ટોર્ઇ અનેરી જસાય છે. આ કાંત્રન ઉપાયાયાછ મહારાજના છવન ગાંગે ચાકુરે ગણર મળતું આવે છે.

સાધુઝરત રનીકાર્યો પડી પણ અંતરતાન-અનુભવતાન પ્રાપ્ત થયા વિના શબ્દ વિસાલ વિસાલતા, ણહિની પ્રભાવતા, તાર્ક શિલની પ્રભાવતા, બાદાવેપ, બાદાકિયા અને બાદ્દાચારને આપંભર, વિદ્વાનાની વિશાલતા અને વસ્તુત્વકલાની વાચાલતા વચેરે અનેક બાદ્દાશાંદિઓના પ્રભાવશાં નાર્વેષ્ઠ અનીતે અક્ષેત્રસ્ત્ર અને લિંદી ખીવામાં આવદી ચર્ચલા એક વખાતના જે પ્રદેશ વિજયજી હતા તેને સમુદ્ધના અભાધ જલ્લમાંથી વા પૃથ્વીતલના પાતાલ પ્રદેશમાંથી કે પ્રધારાતિની લાંદી ભાવીમાંથી ઉત્સરીને અનેત કૃષ્ણાનું, કરુશાંસાર, પરત્યોગી માકારન સામ્યાદ્ધાન અને સ્વાનુસ્ત્રય કૃષ્ણોને અમૃત્ય સમ્યાદ્ધી અને કારના તિવાર પહોંચો, પ્રદય સ્ત્રીને, સમ્યાદ્ધાન અને સ્વાનુસ્ત્રય કૃષ્ણોને અમૃત્યસ વાળાદીને પરસ્ત્રાર્થે સામાં સાંચા પ્રેમી અનાવીને પીતાના આત્માના, સમાજના, ધર્મના અને શાકારના સાચા ઉદ્ધારક આનાવ્યા.

માં ધકારમાંથી અઠગાયેલા માતવીતે જેમ તેજન્વી સ્થાંનાં દેશિખામાન કિસ્સા માફક તાથી મુક્ત કરે છે, તેમ અઠકારમાં અંધકારના અનેત કરોથી દુઃખી થતા આત્માતે સત્યુઝવર્યી સર્થ સમ્મગ્રામન્કથી ત્વાર્લ તિસ્સાહ કિંગ્ય તેજ આપી અનેત દુઃખાં, અનેત આવરોદ્દાર્થી, અનેત બંધનાથી અને અનેત લાલકારાહુના મસ્ક્રક્ષ સંક્રેટોથી સુક્ત કરે છે.

ઘટેલાં જિલ્લા અહાં લાજ શ્રીના જન્મ સં. ૧૬૬ પાલં ગુરુવાતના ધીણાં જ પારોના કન્લો હું ગામ થયે હતો. માતા સંસ્તરી, સહાચાની, ઉદાર, ધર્મ પ્રેમી તથા જહાવાન હતાં. પિતાશ્રી તેમની નાની વચમાં જ ગુજની ગયા હતા. આવ્યાસમાનું તેમનું માત્ર જન્મ સ્વાર્યત હતું, પાલક્ષ નામ સીક્ષાચ્યેલે હતું. ગાલુમાં કહેલા ગુંતિ શ્રીનાથિ વચ્ચ પાસે આતાએ 'લક્ષ્તામાં' સ્ત્રીત સાંભ્રન્ય વિના ગ્રહ્માં વ્યવે લેવાની પ્રતિકા કહેલી ત્યારે સાત વર્ષના ઘટેલી જ્વયે સ્વાર્યના તે તેમને યાદ રહી માતાની સાથે ઉપાયથે જન્મા ગર્ને ગ્રુક 'લક્ષ્તામાં રેવાલ ઉપાયસ થતાં ખૂરી હંધીના કાલુવામાં ગાવતાં ચેલે દિવસે 'લક્ષ્તામાં' સંભ્રતામાં' સાંભ્રાની સાતાને પારનું કરાવેલું, આવી તો ગ્રફ્લુઇ તેમની રમસંસ્વાર્ધીત નાની વરામાં હતી. ધુંત્રુలએ છુકની માત્રાણી કરતાં સ્ત્રાેશાવ્યકેનીએ સહેવ' વારાના બાળક શુરુછને સમર્પોયુ કર્યો અને તે દશ વર્ષની લાલ્યાવરથામાં દીક્ષિત થયા. પછીનાં દશ વર્ષમાં વ્યાક્તયુ, સાહિત્ય અને ન્યાયમાં નિષ્ણાત બન્યા.

આ સકાતત્વસાનીની ને જેમના વિશાળ સાહિલની મુક્યરમૂર્તિ લાગની રાખની હોય તો આપણે તેમનાં વચતાસતીની સ્વાધ્યાય રૂપે ઉપાસના કરવી ઘટે છે. તેમન તે સાહિત્યનું પ્રકાશન કરી તેમે. બહોળા પ્રચાર કરી સત્તતે સૂલ્યે જેવી ગ્રાનચંત્રા વહેવરાવવી એઈએ, જેથી આપાલ યુદ્ધ અરીળ યા તવંત્રર તેના સરળો લાક્ષ લઈ શકે.

શ્રીમક્ જમાગાયજ સંદોશિજવાજ મહારાજશ્રીની વિક્રતા ગયેલા પંતિનાઇ માટે જેટલું કહીએ તેટલુ ગ્રેપહું છે તેમનું પાંતિલ, તેમની કેવિતરાદિન, વાક્યુટુન, પકલાલિય, માર્ચમીરન અને સ્ત્ર તથા ગલકોર તેમ જ પરપક્ષખંઠન અને નિજપક્ષમંડન તેમના મનાવેલા શ્રીમાં ગ્રનાગામને દિશ્વાચર થાય છે. તેમના રવેલા ગનેક ગ્રેથા તેમના પ્રાનની માતું જ સારી રીતે સાક્ષી ગાપે છે શાસ્ત્રોના વચનની ચપેલા શ્રુહરીતે તેમા સમજતા હતા અને તેથી કરીને તેમનુ વચન શ્રપ્રમાણ ગ્રહ્માં છે.

સંવત ૧૭૪૩ના મહા સુદિ પના રાજ ક્લોઈ સુકાયે ૮૦ વર્ષનું આસુષ્ય શેમાથી તેઓ સ્વર્ગવાસી થયા.

ડૂંકમાં, તેઓ ઉત્તમ લાંક સંભેષી લીક ભુક્તિએ કરીને સર્વ કરાંગિને વિશે શિશેમિકું. પણાને પામેલા છે, તેઓ લખ્ળભ્યને વિશે અમેલર છે, તેઓએ કાશીપુરીમાં પરદાર્થાઓની સુખ્ય સભાઓને છતીને તૈનામાંથી ઉત્તમ પ્રભાવ વિસ્તારો છે, તેઓએ લક્ષ્યાસ, પ્રમાણચાસ અને નવશાસ વચેરેતુ વિવેસન કરી ઉત્તમ કદાંનગ્રાસ્ત્રી તરીકે, ઉત્તમ પ્રકારના ભાતાવિ તરીકે, ત્યાન નિલ્હાલ તરીકે, પ્રકૃષ્ટ બાળચાલા તરીકે અને સાધુસમાવના સુધારક તરીકે એ નાગતા ચેલવી છે તે સુવધુરિય સ્પિક્ત હરીકે ત્યારે વિસેશન સ્પેક્ત હરીકે તેના અના ચેલવી છે તે સુવધુરિય સ્પિક્ત હરીકે તરીકે તરીકે તરીક સ્પેક્ત હરીકે તરીક સ્પેક્ત હરીકે તરીક સ્પેક્ત હરીકે તરીક સ્પેક્ત હરીક સ્પેક્ત સ્પેક્ત હરીક સ્પેક્ત સ્પેક્ત સ્પેક સ્પેક્ત હરીક સ્પેક્ત સ્પેક્ત સ્પેક સ્પેક સ્પેક સ્પેક્ત સ્પેક્ત સ્પેક સ્પેક્ત સ્પેક્ત સ્પેક સ્પેક સ્પેક સ્પેક સ્પેક સ્પેક

સ્થાના મહાત સુનિની પુસ્તમનુતિ લખંડપણે સાચની રાખના માટે શ્રીસાસ્વત સત્ર ક્ષણ જે સમારંકા ચોહત્યા છે તે પૃષ્દું ચરાવની નીવડે જેવી ઢાંપદિંક પ્રાર્થના સાથે યોજકોને વ્યક્તિનંદન વર્ષો આ લેખ પૃષ્દું કેઠું છુ.

ઉપા બથી યશોવિજયજનું ભવ્ય જીવન

[લેખક . શ્રીયુત નરાત્તમદાસ ભાગવાનદાસ]

[સુંબઈમાં સં. ૨૦૦૧ના માત્રરાર મુક ૧૧ એટલે કે મૌત અભિયારશે આચાપં શ્રીવિજયપ્રતામસૃષ્ટિઝ મહારાજના પશુપપાદે શ્રીવદેશવિજયજી મહારાજની જયંતી ઉજવાઈ હતી તે ગેડકિઝતા ઉપક્રાયમાં ચિકાર ચેકળી વચ્ચે સારી રીતે કેતંદ્ર પાંત્રી હતી.

સં, ૨૦૦૭નો માયારા સુદ ૧૧ ગાયારા શિવિજયધાતાપસ્થિત્ય તથા ગાયારા શ્રીવિજયધમાં સ્થિતિ હોયતા હાજનાં હતી પરંતુ ગામલા વર્ષ કરતાં તે વર્ષે ઘણા સારી હાજરી વચ્ચે તે જ જવા દી ઉજવાદં હતી પરંતુ ગામલા વર્ષ કરતાં તે વર્ષે ઘણા મોઠા પ્રમા રૂમાં ઉત્સાહ દેખાયા હતો અને કાર્ય પણ લશું વસુ હતું તે વખતે રહોાદર્માના યશાનિજયજી મહારાજના સમાધિમંદિરનો રુપોહિતા દસવવાના અને ઉપાધ્યાસજી મહારાજ હં જીવનવારિત હમાવવુ—આ ખને કાર્યો પાર પાઠના માટે એક ફંડ શરૂ કરવામાં આવ્યું અને કિ દિવસના સમારં લામાં પૂ ખને ગામાર્થો તથા સુદિ શ્રીશાંશિજનાજીના ઉપદેશ ને પ્રયા-સથી અહું સાદું ફંડ એકતિંત થયું હતું ને સમારં લાસ્ય રીતે યાર પડ્યો હતો. ત્યારે પ્રેલાર્ટને ઉપાધ્યાયજીના જીવન અને લક્ષ્ય નહું લાવવાને પ્રત્યું હતે.

આ બધાતું સારૂ પરિવૃદ્ધ એ ગાન્યું કે હતેશાર્ધા શ્રીગફના સમાધિમાં દિસ્તુ કામ શરૂ થયુ અને ત્યાંના રચાનિક મુક્તચોની સંસાળ તથા ગહેનતથી સમાધિમાં કિસ્તો છો હોય શર્ધ ગયા ખૂબી તેઃ એ બની છે કે ઉપરતા અને ગાગાર્યોના સુદ્ર શ્રી વિજયમાહનસૃષ્ટિએનો દેહાંત પદ્મ હતાર્થમાં વચેલા હોવાથી તેમની સમાધિ પદ્મ તેની પાસે જ !!!]

શ્રીપ્રદુ ઉપાધ્માત્ર શ્રી યશે. વિભ્વાબનું છવત પ્રખટ વચેલી વાહીની પીસતાલીસ ભાવતો. ઉપરથી તારની શક્ય તેમ છે. સાથે તેમના ગ્રંથોની વ્યાપ્તી સાથે ઉપરથી પણ જણાય છે કે તેએ ૧૯૦૦ ગ્રંથના પ્રદેશોના હતા તેમણે અનિવાર ગ્રંથ ઉપર ડીકરોના હવી છે, તેત્રીસ ગ્રંથો ગુજે સાયામાં વચેલા છે, આર સ્વાધ્યાબર શ્રે પણ લખ્યા છે. ચેમના ડૂંકા છવનમાં એમણે એટલ બધુ કામ કર્યું 🖟 કે, તેમણે એક પળ પણ હવાના લેના સમયનો સારામાં સારે! ઉપયોગ કરી અવિદિત્યભે સાહિતની સેવામાં જિલ્લી અપેણ કરી છે.

ઉપાધ્યાયજના ગયા સંબંધી સ્લીમાં 'સમકિતના સડસક નાલની સન્સાય, અહાર પાપસ્થાનકની સબ્લય, ડ્રેચ-ગ્રહ્મ-પર્યાયના રાસ, દિક્ષ્ય વારસીનાલ, શ્રીપાલસસ (ઉત્તર ભાગ). સમાધિરાતક, સમતાશતક, સસુદ્રત્યક્રાણ્યું વાક, નવપક પૂચ, કુમાંતપાં કેન સ્તવન, નય સ્કૃત્યું મહિલા કેન સ્તવન, નય સ્કૃત્યું કહ્યાં હતા કર્યા કર

' શ્રીયાલ રાહ્યના રાસ 'ના પૂર્વાર્ધ' લાગ વિનવવિત્ર્યછ જ્યાંચારે અનાઓ કે અને ઉત્તરાર્ધ' લાગ મદોાવિત્રયછ જ્યાંચારે બનાઓ કે પરંતુ તે બન્નેની દિશા હતી જ કે. મદોાવિત્રયછ ટેતું સરસ કામ કરી શકે છે તેના ગા રાસ ગ્યુક પુરાવે કે.

' અહાર પાપસ્થાનકની સન્તાય' તો કું ન્યારે નાના નવ વર્ષના હતા સારે સમારે સાવનગરમાં શેઠ કુંવરછ આવ્યું કછ, ગિરસર ચાલું કછ વધા એવેર સાર્ધ્યાંડ પ્રતિક્રેમશ્રમાં શેલતા, તેના ગુંબરવ હતા સુધી કું સૂલી નથી ચેલી ચે સુંદર ફૃતિ છે.

' ભાર સાવના ' પણ યશાવિત્ર્યાભ મહારાજે અનાવેલી ઉત્તમ કૃતિયામાંની એક છે, જે ભવતને અજવાળનારી એક ઉત્તમ કૃતિ છે.

' ગ્રાનસાર અષ્ટક ' રપદ 'ચીકના લંધ છે સંગ ૧૯૫૦માં લાવનગરમાં શા. દીપવાંદ કમાનદાસ ત્રિકા સહિત કમાન્યો હતો, તેની પંત્યાસભ ગ લીસવિજય અહારાજે ગુક્તાક ઠે પ્રશંમા કરી હતી અને કપૂરવિજયભ મહારાજે તેની પર વિવસ્તુ લખ્યુ હતું અધ્યાતમના એ ઉત્તમ શ્રંધ છે

'સમુદ્ર-વહાણના સંવાદ' એ ઉપાધ્યાયણએ શેશા અંદરમાં રચ્યો હતો અને તે સમુદ્ર કાંઠે વહાણોના સાટા કાક્શા એઈને વાદશ વિવાર ઉપરથી અવાબ્યે હતો, તે આવે છે કે શેણાબંદરની હાહેબવાલી તે વખતે કેવી હતી!

'સીરાંધર સ્વાસીતું' ૧૨૫ ગાળાનું સ્તવન ' તથા ' ૩૫૦ ગાળાનું નધગાલિ'ત સ્તવન ' એ બંને સ્તવનોત્માં તે સમયે આપણાં જૈનધમાં કેવી પરિસ્થિતિમાંથી પસાર થતો હતો. તેતું આખેકુબ હિત્ર પહું કરે છે.

' કુમતિખંડન' એ આત્મારામજી મહારાજે બનાવેલા "સમકિત શહેરોહાર" જેવું જ તે સમયના આપણા અને પક્ષાનું કેવું સવંકર માનસ ગવર્લતું હતું તેનું ચિત્ર ખતું કરે છે. " સાઢ દ્રશ્નિ સહ્લાય" એ ઉપાધ્યાયભી અધ્યાત્મ વિષે સરળ અને સુપ્રમ લાયામાં અસાધારલુ શક્તિ બલાવનારી અને ઉપકાસ કૃતિ છે, જે જવ, એ સમજવાને યન કરે તે તેના જીવનમાં પલ્ટો હાવી કે એવી છે.

યાંગી આનંકલના તથા ઉપાધ્યાય વિનયવિત્રવાછ તથા ક્રિયાકહાર કરનાર શ્રીસત્યવિત્રપાછ પંત્યાસ એ ત્રક્ષે સંશોવિત્રવાછના સમકાલીન હતા. યોગી આનંકલના તે સમયના એક ચહિતીય યુરૂપ હતા. પૈસાહાર કે કેમ્પ્રી પરવા કરતા નહિ અને મંગલમાં જઈને અવધૃત છવન ગાળતા હતા.

ઉપાધ્યાય શિનિયાવિજ્વાછ તથા શ્રીયશોધિજ્વાછ અને વચ્ચે બહુ જ પ્રીતિ અને સમભાવ હોદ. તેઓ બન્નેએ વિચાર કર્યો કે જૈનલપ્રાંમાં ત્યાય સંબંધી સ્થા જે છે તેમાં કાશી જઈને ગણ્યાસ કરીને ઉપેશ કરવાની ગહું જ જરૂર છે પરંતુ તે વખતનું કાશી ગહું જ રફીશુક્ત હતું. કેઇ પણ જૈન સાંહુને તે વખતના પંડિત જ્ઞાણણા ત્યાય બહુાવે એ શક્ય ન હતું. તે વખતે વ્યવહારના માર્ગ પણ બહું જ સુરકેલ હતા.

એ અને શુનિસમોને સાધુવેશ છાડીને ગૃહસ્વના વેશમાં પંતિવા પાસે ત્યાય લાવવાની જવર પતિ, તે પણ સમય પસ્ત્વે તેમણે સ્વીકારી હતી ત્યાંથી પાછા આવ્યા પછી તેમણે શુજરાતમાં અને કાશિયાલાડમાં ઘણે પ્રવાસ કર્યો હતો. તેમનું જન્મસ્થળ પાડણ પાસે કનોતું કરીને ગામનું હેલાનું જણાય છે.

એ વખતના ગુજરાતમાં મહિરવાસી ચવિજાતું વહું જ એર હતું, તે એટલે સુધી કે સવિગી સાધુઓને ઉપાત્રવમાં કાવરવા પછુ કેવા નહીં. તે વખતે ઉપા. શ્રીવિનયવિજયછ, શ્રીયરોાવિજયછ તથા શ્રીસત્યવિજયછ પંત્યાસે હિંમત કરીને ક્રિયાકંકાર કર્યો.

લળી, ઉપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજી મહારાજે અવધાના પણ કર્યાં હતાં.

પાલીતાલુંમાં ચોલિબ્યાએ જેન સુરુક્ષ, લાવનારમાં ચોલિબ્યાએ જૈન પ્રંથમાળ, પાલીતાલુંમાં ચોલિબ્યાએ એન પાંચાળા તથા એક વખત કાશીમાં શ્રી વિજયધર્મમૂરિએ તરફથી દ્વારાયોલી ચોલિબ્યાએ જૈન સંસ્કૃત પાંચાળા એ એમના નામ સાથે સંક્ર્યાયેલી સંસ્થાએ કે. હેલાઈમાં ઉપા. શ્રીયશોનિબ્યાએના નામથી ચાલતી કેટલીક સંસ્થાએ။ પશ્ આમાં ઉપસર્વ એમે

ઉપાધ્યાયછના ગ્રુટુર્તું નામ નચવિજવાછ હતું અને ઉપાધ્યાયછ કેટલા અધા વિનધી હતા તે 'સમક્રિતના સડસ્ટું ગેલ 'ની સહહાયના અંતમા તેમણે જ્યાન્યું છે કે-

" શ્રીત્યવિજય વિભુધ પયસેવક, વાચક વશ એમ બાલે રે. !!

એ ઉક્તિથી ઉપસ્થી જ્યારો. ગરાદના વખતમાં ગ્રુરુ-શિષ્યના જેવા પ્રેમભાવ અને સક્તિસાવ હતો તેવા હાદ ગહું થાડા છાંતામાં હોવા મળે છે

" ૩૫૦ ગાયાના સ્તવન માં એગાણે જે કહ્યું છે તે ગઢું વિચારવા જેવું કહ્યું છે અને તેમાંથી જેટલા સાર તારવી શકીએ તેટલા સાર તારવી શકાય તેા ઘણું સાર્ફ

યાગીશ્વર શ્રીમદ્ યશાવિજયછની

શાનદીપિકા – જ્ઞાનસાર અષ્ટક

[લેખક : શ્રીયુત અમસ્યંક માવછ]

શ્રીમતુ યંદ્રોતિવત્યજી ઉપાધ્યાય આપણા સમાજયાં મહાન લાર્કિક વિકાન અને યાસ્ત્રોના રચચિલા તરીકે અરવી ગુજરાવને આંગણે પ્રકાશિત થઈ થયા. તેમની પ્રતિભાનો દીવે પ્રકાશ અલાપિ સીને પ્રકાશિત કરી સહી છે. તેઓશીના માયના અનેક ગંધા તેમજ અધ્યાતમાં અને મેંદ્રો પૈક્ષે તેમણે 'હાનસાર અલ્લક' ગંધાને, સાધક આત્માએ માટે ખરેખર એક દીવાદાંકીકૃપ રચના કરેલી છે. આ ગંધ તેઓ શ્રીમદ્દની વ્યવસાયમાં પરિપાસ યોગાળા વદે સર્વ શાસ્ત્રોનો પરિવય કરી, પચાવી તેને તેની અવત સરધા સર કરી, આત્માર્થીઓને પીરસી આ છે, જેનુ પાન કરી આત્માર્થી શાધકે સર્હ્વ આનંક અને રચ્ચ શાંતિ પ્રપ્ત કરી શકના લાવ્યાશાળી થઈ શકે તેનો એ ગંધ છે.

અત પ્રંથમાં કમળ્યુષ્યની ૩૨ યાંષ્યહીની જેમ ૩૨ જાઇકે છે, જાને એકએક મ્યક્રમાં આક્રમાંક મત્યુપ્યમંત્રી ત્રીકો છે તે ગ્રંથ સંસ્કૃતમાં છે છતાં તેની જાય એટલી અમી સરળ અને ફુંદ્રયંગમ જાને શાવવાહી છે કે તે વાંચતાં જ્ઞાનંદ ચાવ છે. આ અપ્રકૃતુ આપણી માતૃશાયામાં ગુજરાતી જ્ઞાવતરણ પીતે જ કરેલું છે જાને 'ગ્રાવસાર'ના ભાવને ખૂબ જ ૧૫૪ દર્યો છે, આપણે જૈના પણ 'ગીતા'ના જેવા પુસ્તકની માત્રણી કાવપથી કરી રહ્યા છીએ પણ આપણી માત્રે આ સત્કારિયકા 'પ્રીતા' જેવી જ છે તેના ઉપયોગ પણ કરતા નથી.

' ગ્રાંનસર'માં નિશ્વરદિષ્ટ સુખ્ય રાષ્યીને તે પ્રાપ્ત કરવા હતાં હતાં મહત્વનાં ચર્ટત કમછહ લખી, પૂર્વાછ ગેઠકે પૂર્વું વાગવાન ગાત્માને સાધ્ય તરીકે મૂકી, બાકીનાં ગર્ટકા સાધનરૂપે વધુંઆં છે છેવટે સર્વનવાછકમાં ગાત્માને સમલાવમાં સ્થિર કર્યો છે. ગાત્માને પોતાનું સ્તરૂપ પ્રાપ્ત કરવા માટે એ એ સાધનો પારમાવિંક દર્શિએ જરૂરનાં છે તે તે સાધના સંપૂર્વપણે ગા ગાર્ટકામાં સમાવેશ પાયે છે.

આ 'સાનસાર' ગાંય ઉપર મહાન તારવારંગી આધાત્મિક કવિ શીદેવચંક્રછ મહા-રાજે 'સાનમંજરી' નામક મુંદર દીક લખી 'શાનસાર'ના લાવને ગઢુ સ્પષ્ટ કરે! છે ચતે સાધકને ચંતાનુંખ રાવા માટે, રામહેનમાં હત્વામાંથી છૂઠવા માટે વિસ્તારથી તેમાં દર્શાવ્યુ છે. આ ગ્રંગની છે ત્રહ્યુ હતાની ગ્રાફ્તિનો મારા તેવામા આવી છે. તેમા છેક્લી દર, પંચિત-વર્ષ' શ્રીસમગાનકાસ હંજાયાંદ કોસીવાળી આદ્યુંતિ બહું જ મુંદર શુદ્ધ અને વ્યવસ્થિત છે આ ગ્રંગની આપણા સમાનજમ પ્રતિક્ષ શાય અને તેના ખૂબ ફેલાવો શાય એ જર્રશ છે. કરાયું કે અત્યારના ગ્રુપામાં આધ્યાત્મિક વિકાસ જરૂરને છે. જંગલકના મહાન તાંકુર સાથે પ્રાપ્યુંથી આધ્યાત્મિક સમૃદ્ધિ ને લાળવી નહિં સંખીએ તો એ જગલાકના પૂરમાં સાથે ત્રહ્યું છે જ્યારના પૂરમાં સાથે ત્રહ્યું

અમ ' ફ્રાંનસાર'ના ઉપર વિશંદ જાશ", જેમ ગીતાના ગાંધી જીલા જીલા ફાલાં ગ્રાંની એન્સે જીવી જીવી રીતે કરી, છવન માટે તેની ઉપયોગિતા દર્શાંવી છે 'તેમ આધ્યાત્મિક શાંતિ મારે કરવા માટે ' ફાનસાર' જેના મંચ્યાંની અનું જ આવચાકતા છે તેના ઉપર વિવેચની:—આપ્યાતે થાય અને અધુનિક સુમાના નવનુષ્કાંતને પણ એમાં રસ પ્રાપ્ત શાય તે રીતે આધ્યાતિકતાઈ સાચું સ્વરૂપ દર્શાંવવા અને એ મહાપુરુપથી દીપાવલીને હિત્તરે પૂર્વ કરેશી ક્રિપિકાદુલ્ય ગ્રાન્સ સાર્ચની ત્યાંત સમાજમાં પ્રભાવના તેમાં હીલેલ પૂરી, તેના પ્રહાશ સમાજને આપ્યાની આવસ્પકતા છે. શ્રીમદ્દું ત્રા જુ ચૂકવવા માટે તેમની ગ્રાનકત્યાંત પ્રાપ્ત સાચામાં આવે એ શ્રીમદૃતું સાગું સ્મારક છે.

સ્વન્ સનિવા શ્રીકપૂર્વિવવ્યાછ મહાસભગીએ 'ગ્રાનસાર'ને અપનાઓ હોતો અને તેના લખ્ય કુંકર વિવેચન લખ્યું હતું એ તેમના લિખ્ય કહ્યું હતાન તર્નાક પ્રદિલ ઘયેલ છે. શ્રી બોલીનિબ્યાછ મહાસભ્ય નોંધા લાગ્યું લાગ્ય કે અભારે આ ગાંધ વિગે વધુ પ્રકાશ પાઠતાં વિવેચના લાગ્યું માં ત્યાં સ્વન્ શ્રીકુ સ્વષ્ટભાઇને ત્યારે દું પ્રધા લાવનારમાં માન્યો અને વાધ્યાતિક શ્રેષ માટે માત્રણી ક્રી ત્યારે તેમાં મું 'ગ્રાનસાર' આપ્યો અને બન્યાન્યું કે, 'આ અપન છે ' મને એ મહાપુરુષનાં વચન સત્ય હાત્યાં છે એ 'ગ્રાનસાર'થી પ્રસુતિત ચર્ચ- તેમી લાવવાહી 'ગ્રાનસાર' માન્ય એક પ્રદાર્થની પ્રનાસાર' એક પ્રતાન સ્વાર્થ કે એ 'ગ્રાનસાર' થી પ્રતાન સ્વાર્થ કે પ્રાપ્ય કે એ 'ગ્રાનસાર' શરી તેમાં સ્વાર્થ કે પ્રાપ્ય કે એ 'ગ્રાનસાર' શરી લી આપ્યો છે. શાધાની વિકેશ માટે સાધાનો સાધાનું 'ગ્રાનસાર' એક પ્રતાન ' છે એ કે દું પૂર્વ' પ્રેમરી વાચ્યો વચ્ચો શરો હતો કર્યો કર્યા કહ્યા હતા સાધાનો સાધાનું વચ્ચો સુત્ર વિકેશ આપ્યોનો સાધાનું પ્રાપ્યાનોને પ્રણ તે વિકેશ આપ્યોનો સાધાનું પ્રાપ્યાનોને પ્રણ તે વિકેશ આપ્યોનો સાધાનું પ્રમાન સાધાનું પ્રાપ્યાનોને પ્રણ તે વિકેશ આપ્યોનો સાધાનું પ્રમાન સાધાનું પ્રાપ્યાનોને ત્રાય તે તે વિકેશ આપ્યાનો ત્રાય તે તે વિકેશ આપ્યાનોને પ્રણ તે વિકેશ ત્યારે સાધાને સાધાનું પ્રમાન સાધાનું તે વિકેશ આપ્યાનો ત્રાય તે તે તે તે આપ્યાનો ત્રાયાનો ત્રાય તુ તે વિકેશ આપ્યાનો સાધાનું પ્રમાન સાધાનોને ત્રાય તુ તે વિકેશ આપ્યાનો ત્યાયને ત્રાય ત્રાય ત્રાયાનો ત્રાય ત્રાયાનો ત્રાય ત્રાય ત્રાયાનો ત્રાયાનો ત્રાયાનો ત્રાયાના ત્રાયાનો ત્રાયાનો ત્રાયાનો ત્રાયાનો ત્રાયાનો ત્રાયાનો ત્રાયાનો ત્રાયાનો ત્રાયાનો ત્રાયાના ત્રાયાનો ત્રાયાના ત્રાયાનો ત્રાયાનો ત્રાયાનો ત્રાયાનો ત્રાયાનો ત્ર

આપવા, પ્રચાર કરવા, તેના નાના નાના સુટકાઓ, માટા વિવેચનગ્રંથા છપાવી સમાજમાં છટથી વહેંચવા અને વાંચવા માટે જણાવું છું.

ત્યારે શ્રીમદ્નો ક્લોઇન્ટાર્ત 'સારતના સત્ર' ઉજવાય છે ત્યારે મારી આ ઘણું વરોશ હિલમાં વહેતી 'તાનસાર'ની સન્તિનો સર્વ' સમાજની આધ્યાત્મિક તુમા તુમ કરવા સમાજને આંગણે વહેતી શાય, સર્વ પરંગારૂપી પાઠશાળાઓઓ તે પાઠયક્રમ અને તેવી ભાવના સાથે વિસ્તું છું.

> આત્મસિહિને પામવા, ગ્રહવા જ્ઞાનના સાર, સ્વાધ્યાય કરજો સદા, 'અમર' પ્ર'ચ ગ્રાનસાર."

> > 蝠

शर्देभित्यक्षरं यस्य, चित्ते स्फुरति सर्वेदा । परं क्राप्त ततः राज्यवद्याणः सोऽधिगच्छति ॥२७॥

'અનુદુ'મ' એવે! અસુર જેના ચિત્તભા હંમેશા સ્કુરાય-માન થતો ગહે છે તે આ શખ્દશસ્ત્રાથી પરમળસની પ્રાપ્તિ ત્યો હતે છે

દાત્રિશિય

[શ્રીમદ્ વેશાવિજવછ

મહા બ શ્રી યશાવિજયજીના જૈન સંઘ પર કરેલાે ઉપકાર

[લેખિકા · કુ૦ શ્રી ચંદ્રિકા સામચંદ્ર ગાર્ધી]

શ્રીમહાંમાર પ્રક્ષુ પછી શ્રીસુધમાં આપીની ૧૦ મી પાટે શ્રીવિજયહી તરફરિ ૫૦ ના શિષ્ય ઉપાધ્યાય શ્રીસ્થા ભૂવિજયભ, તેમના શિષ્ય શ્રીહા ભવિજયભ ગહેનું, તેમના શિષ્ય ઉપાધ્યાય શ્રીત્યેષભ્યભ મહેતાન હતા, તેઓશ્રીના શિષ્ય શ્રીમશ્રી વિજયભ મહેતાન હતા. તેઓ મહેતા શ્રુતપણ, પરંદુશાં નશાસવેતા, ત્યાયવિશાત્ત બિટુલધારણ ત્યાયાયાર્ય, તાર્કિક શિરોમાનિ, કુલતના પ્રાપર હત્યાયક, અનેક શ્રાયસ્તોના સ્થમિત તરીકે સર્વય પ્રસિદ્ધ પ્રાપ્તા છે.

તેઓશ્રીતે જન્મ કન્કોડુ ગામમાં થયા હતો. તેમતુ પૂર્વવસ્થાનુ નામ જસવં વહુમાર હતું. બાલ્યવયમાં જ વૈત્તવ્યસ્થાથી રંગાઈ પંહિત શ્રીનચવિત્યજી મહારાજ પાસે પાડવામાં હીક્ષ અંગીકાર કરી હતી. અને બાળવી તેઓશ્રી યશોપવિત્યલ્લના શ્રક્ષ નામથી ખ્યાત થયા.

સ્વક્રાર્યનું સારી રીતે ત્રાન જેવન્યા પછી સંસ્કૃત ભાષા, ત્યાયકારણ અને અન્ય કર્યાંનેને વ્યત્માસ કરવા માટે તેઓગ્રી સરસ્વતી કેવીના નિવાસસ્થાન સરખા ક્ષરીતગરમાં પ્રધારો. આ તોકે ક્ષર તેમાં પ્રધારો પક્ષ તાતિ ક્ષરોત્રી શિખોને મીમાસા આદિ શાસોનો અન્યાસ કરવતા એક લદાવાળે પાસે કરિયો વિશ્વસ્થ અંદારાને અન્યાસ કરવતા એક લદાવાળે પાસે કરિયો કેવિક ગ્રાહિત સિંહોતો તથા રીત્રો સાથે કરી તેમાં સાથે મામાં મામાં તેમાં તેમાં કરિયો કર્યા માને સ્વાર્ય ત્યાં તેમાં સાથે મામાં મામાં મામાં તેમાં સાંખ્ય પ્રભાવસ્થતનાં મહાદુર્યા પર કાર્યાનીક પર પંચાન મહાત્રી ત્યા લીધા.

દરમ્યાન એક સંત્યાસી અઠલરપૂર્વક ક્ષ્મશીમા આવ્યો. કાઈ તેને છવી ન શક્યું ત્યારે આ મકાનુભાવે શુરૂની આના જેમલીને સર્વક્રન સમગ્ર વાદ કરી છત પેળવી. આથી ત્યાંના પંડિતોએ શવિવ્યતા સમર્વ કારત-પ્રભાવક શ્રીયશોલિંગ્લાઇનો ભારે સતકાર કરી ત્યાંપિશાસ્ત્રની માનસરી પેાટી પદલી વાર્પણ કરી.

ત્યાંથી વધુ અસ્યાસ માટે તેઓ ચાંચા આવ્યા અને ત્યાં એક પહિત પાસે તાર્ક-કર્કપ્ર સિંહાત અને મમાણસાસોનો અસ્યાસ કર્યો તથા દુઈમ્ય વાદી અની તાર્કિકોરોસાધી શ્રીયદેશવિત્યસ્ત્રએ સ્થળે સ્થળે છત રોળવી વ્યવસ્થાકા પ્રાપ્ત કરી, શ્રી જેનેશાસતની અંદુભુત પ્રભાવના કરી. ત્યાયના સે પ્ર'થ રચવાથી અત્યમતના પહિતો તરફથી ત્યાયાચાર્યનું બિરુદ પછુ તેઓદ્યોને મહ્યું હતું.

સુંત્ર, નિયુંકિત, ભાવ્ય, ક્રિકા, ગુર્લિંગ એ યાંચાંગીયુક્ત શીકિત્વવચનના એક પણ અક્ષર ઉત્યાપનાર કુમતાવાદીઓની, મુનિઓમાં શેષ્કર અને કુમતોત્થાપક શ્રીયશાવિજયછએ બરાબર પ્રભર લઈ નાંપી હતી.

દૂંકડોના ખડન માટે તથા યતિઓમાં પ્રવેશેલી શિક્ષિલતા દૂર કરવા માટે તેઓ લીં મનક્ક પ્રયાસ કર્યો હતો. કુમતોનુ સખત શબ્દોમાં ખંડન કરવાથી અનેક દ્રશ્યના હતા ક્ષ્મા હતા પરંતુ વાચકરોખર સુનિવરે શત્રુઓની લેશમાત્ર પણ પરવા કરી ન હતી. દૂંહેદા, યતિસફાશ અને શિક્ષિલાચારી સાથે નિહરપણે હતા રહીં તેઓશીએ શાસનની અદિતીય સેવા ખતાલે છે.

તેઓશ્રીના વખતમા લુંપકમતનું પ્રાથમ્ય વધતું અનું હતું. આથી મહેધુકંધર વિદાન શ્રીયરોાિલિપ્યટરુએ સટીક 'પ્રતિમાશનક' ગંંચ બનાવી, સ્થાપનાનિકીપનુ સ્વરૂપ સરક્ષાવી, ઘણા લખ્ય રુવેદમાં પ્રતિમાસ્થાપના, પ્રશુપુત્રન વગેરેની દેઢ શહી ઉપક્ષ કરી હતી.

પાતાના જીવનકાળમાં સંસ્કૃત, પ્રાકૃત, ગુજરાતી, હિની વચેરે લાધામાં લાખો ધ્યાક-પ્રમાશ શ્રીમાની રચના કરી અનેક આત્માઓને શ્રીજિનશાસનન રાગી અનાવ્યા હતા.

તેઓશ્રી સિહાંતના રહસ્યને ખહુ શારી રીતે સમત્યા હતા અને તેથી જ રાત કે કિયા અથવા તિસ્થ કે વ્યવહારમાંથી કોઈ એકની યુપ્ટિ કરવા જતાં લીજ માર્ગમી ત્યુતતા, કશુતા કે અવબર્યના તેમનાથી કહી થઈ નથી; માટે જ તેઓશ્રીલ વચન સપમાણ ગણાય છે એ તફન વાસ્તવિક છે.

અતુષમ મંત્રવાના, આગમતું નિશેષ ત્રાન, શાસનની ગત્યંત સેવા, અતિ તિપુર્વા, ઋરે! એવા તો સેંકડા અને લાખો શુધોને લીધે પૃત્ર શ્રીકસ્થિક્સ્ટિફર મત્યા લશુખાયન, ખીજા શ્રીક્રેમરાં પ્રાથમ અને કૃત્રિયુપમાં પણ શ્રુતક્રેયળીનું સ્મરણ ક્રશ્યનાર તરીકેની અનેકવિધ ઉત્તમ જીપ્તાઓ તે પુત્રપુપુર્વે ધામ કરી હતી.

સત્યમાર્ગ પરાત્ર પ્રકાશક, મહાન શાસનામાળક શ્રીયરીપવિશ્વજીની શાસરવાના સાંત્રર તેની ગંભીર, ગંબાના તરેવા તેની ઉત્યત્વમ અને વાહિકા તેની શીલા, નિર્માપ અને પતિર હોવાથી કરવાતાઓને પરાત્ર આવે હ આપનારી કે, તેમજ વેનેમાંદ્રીની કૃતિયોઓ અનેક આત્માંગીને કોપિયાની માપિત કરતી છે. પંચાયાં વ આત્માંગોના સમ્માદ્રશ્રોન નિર્મા કરાવ્યાં કે, તથા અનેકાનેક અંતકરાવ્યાં કે, બિજાસાસના અનિકાર રંગથી રગી દીધો છે. તેમજ શ્રીપક્ષ આત્માયમાછ મહાસભ્યા સુરૂલે, શ્રીપક્ષ શૃત્રેસથ્ય અનેક સ્ત્રાપ્ત વગેરે અનેક મહાસભ્યાને સિપામામાંગોની સ્ત્રાપ્ત પત્ર સ્ત્રાપ્ત સ્ત્રાપત સ્ત્રાપત સ્ત્રાપ્ત સ્ત્રાપત સ્ત્ર સ્ત્રાપત સ્રાપત સ્ત્રાપત સ્ત્રાપત

તેઓશ્રીનાં સ્થેલાં સ્તવના આદિ એટલાં સરળ, રસિક અને શાધગઢ છે કે, આજે પણ આવરથક-ચૈત્યાં કનાદિમાં સાનારેર અલાય છે.

તેએ શ્રીની નાનામાં નાની કૃતિમાં પણ તર્ક અને કાબ્યના પ્રસાદ તરી આવે છે. આવા એક પ્રાસાદિક કવિ, મુક્તિમાર્ગના અનત્ય ઉપાસક, ગ્રહસ્ત્વસ્તાકર, પ્રખર જિનાઝા-પાલક, અને પ્રચારક મકાપર પત સ્મરણ કાયમ રહે માટે તેને લગતા જેટલા પ્રયત્ના થાય. તેટલા પ્રયત્ના કરવા જરૂરી છે.

આ મહાપુરૂષની કૃતિઓ મન, વચન અને કાયાની એકાગ્રહાથી અલ્યાસ કરનારને સમ્મગ દર્શન, સમ્યમ્ જ્ઞાન અને સમ્યગ્ આસ્ત્રિકર્યાં ત્રાક્ષમાર્ગની ઉત્તમ ભારાધનામાં ઉત્તરાત્તર પ્રગતિ કરાવી આદિમક અનેત સખસાગરમાં નિશ્ચિતપછે સ્નાન કરાવવાની ह कार्य म्याह

દંગે દિશાઓની અંદર વાદીઓમાં વિજય મેળવવારૂપ, શરદ ઝતુના ચંદ્ર જેવા યવળ મુધરાને દૃશ્વી પર ફેલાવી નામ પ્રમાણે જ ગુરાવાન મહામહોપાધાય શ્રીયશો-વિન્મ્યજના દિવ્ય આત્માને ત્રિવિધે ત્રિવિધે વંદન હો.



परः सहस्राः शरदां, परे योगमुपासताम् । इन्ताईन्तमनासेब्य, गन्तारो न परं पर्म ॥२८॥

લખ્યાં વર્ષથી કોરની ઉપાસના હવાના બીમ જેનેડા, ખરેખર ! અરિકાની શ્રેયા હતા કિના પત્મપદની प्रति की बन्ना नथी. धरिदेश }

િંગીમદ યરેશવિજયજ

વાચકશ્રી યશાવિજયજી

એમની મૂર્તિના અનાવરણ વિધિ

[લેખક : શ્રીયુત શા. ગ્રાસ્થનદાસ દીરચંદ, મુળઈ]

[શ્રી. સૂલચંદળ મહારાજની પરંપરાના વિજ્ઞમાન સુનિ શ્રીયરોાવિજયણ મહારાજના પ્રયત્નથી મુંબર્ડમાં હંમણું છે. વર્ષથી મહાપાધ્યાય ત્યાયાચાર શ્રીયરોાવિજયણના ગુણાનુવાદના સમારંભ શ્રાય છે. ગઈ સાલે (સં. ૨૦૦૭ માં) એમના ત્રસુલય વરસૂથી ભાયપાલામાં ઉપાતાસિયાની પ્રમૃત્તિ શરૂ હતી, એટલે સામગ્રંભ પણ ત્યાં જ વેદાસ્થયો હતો. એક તૈલિવિજ લેશોઈ ગામે ઘણા વખવાથી કરાવેલું હતું તે વર્ષથી મંત્રાની તે વજ્ઞા એમના કેટલાક શ્રેશ ઉચ્ચ આસન ઉપર આદર્થક રીતે સ્થાપવામાં આવ્યા હતા. સિવાય એમની કૃતિએલા હત્ય, અલસ્ય એટલી બાણવામાં આવેલી તેની ગાદી એ લાકહાના પાર્ટિયા ઉપર આદર્થક વર્ષયા અલસ્ય સ્થિપેત્તર વધાર્યું હતું તે ત્યાર્થક કર્યાલિજ હતું સ્થિપેત્તર શ્રાપ્ટ કર્યાલિજ હતું હતા સ્થિપાલ શ્રાપ્ટ શ્રીયર વધાર્યું હતું.

પાક ક્ષાં. વિશાયપાટળા પાકા જાળાવા-વાલાના અવવાયના કરવાના અકાર-વર્ષ સ્પાયાનાણિ કે જેને લાગીને એન સુનિએના સુવર્દેહને વ્યક્તિ કાર કવામાં આવેલા, તેમના સ્ત્તૃપે છે તે લેખી એક દેરીમાં પાધસવેલી છે. ઉપર શ્રં (૧૭૪૫ ના માગાશર સુક ૧૧નો સમય આપેલા છે. આ ઉપરથી એ નાકી કરવામાં આવે છે કે, "અહારાજનો દેશેનાસ્ત્રો માર્કી શ્રેષ્ઠો છે જાને ને સાહ દિત આ નાંદિ તો તે પહેલાંના એક્સ છે વર્ષમાં હેઠી."

શ્રીવિજયધ્ધમંત્ર્વિછ મ.ના શિષ્ય સુનિ શ્રીધશોવિજયછ મૂર્વ યેથોઇના છે. શાહ નાંધાલાઈ વીરવંદના આગળ પડતા કુટુંમના તે પુત્ર છે; તેમના કુટુંમના વેશ્વેક સુવકા પ્રનિગલસ્થામાં તેમની લેલા છે.

કેટલાક શિએા પોતાના ગુરૂની મહત્તા જ વધારવામાં મધ્યમૂલ હોય છે; તે દરિ તછને ત્રીયદ્યોનિજયછાએ જે યુલ્યુન્સયની લાવનાને સૂર્તિમાંત કરી છે તે વ્યભિનંદનીય છે. વાચક શ્રીયદ્યોનિજયછા તરફ એમને કેટલા લોડા લાકિતલાવ છે તે ચોમણે અત્યારે ઉપાર્ટલી પ્રયુત્તિન ગતીક છે.

ર 'સુજસ્વેલી લાસ' પ્રસિદ્ધિમાં આત્મા પછી આ સાલ સ ૧૭૪૩ની નિધ્વિક કે તે પહેલા તેં! અનેક તર્મ કરવામાં આવતા

ર તેમણે ઉદ્યાધ્યાયભાગી મૂળ કરીને સ્થાને ચારશાતું -અલ્કીન મરિર ગ્રેશ્યુ કરવાનું આરંબી દોધું છે (તે પરિપૂર્ણ થઈ ત્રશુ છે) અને હેતા ઉદ્યાદન નિધિ પ્રોદન સગારભાષ્ટ્રમાં થતાર છે.

આ સાથે પણ એમના પ્રવત્થી એમના અધ્યક્ષપણામાં મૌત એકાદશીની સવારમાં પ્રોહીજના ઉપાદ્રમના બ્યાપ્યાન ખંડમાં રામારંશ ચેક્કાયો હતો. હશે!ઇના ઉગતા જૈન તરુણ ચિત્રમર પાસે તૈયાર કરાવેલું ઉપાધ્યાય શ્રીયારોવિજયજી મહાસજશીનું તૈલચિત્ર જે એ સુવાત હઈને આવ્યા હતા તેની અનાવરણ વિધિ થઈ હતી.]

મુન્યર શ્રી ચોરોવિજવજી ઉપાંચાયના છવતની ચેક્કસ યું ખલાળદ નોંધ તહાલીને કોઈ વિદાને કરી નથી એ દુઃખની વાત છે અને કરી હશે તો ' મુજ્યારેલી લાસ' સિવાય કોઈ હતું હાંચ આવી નથી જવાદ્દસુદ્ધ શ્રી. હીરવિજયસ્તિના ' હીરસોક્ષા:ચકાન્ય' અને એવાં શીનાં કાંચીનો વાત બાહ્નુએ સૂર્કિએ તો પણ ઉપાંચાય શ્રીદિચાં સ્ટાર્નના ધરાનારા અને તેમના કાળને લાખીને અનાઓ પૈક્રોમાં ઉપાંચાય શ્રીદિચાં સ્ટાર્નને ' દેવતિલાસ' માળે છે. શ્રી. સત્યવિજય પંત્યાસની પરંપવાના શ્રી. હિંતનીક્ષ્યાં અને ઉત્તાનિવશ્ચા તેમના વિદાન શિષ્ય શ્રી. પરાવિજયાદાને લાખી કૃષ્ય કૃષ્ય પંત્રા છવન પ્રભાર ચકુ છું, જે પશ્ચ તિમના ઉત્તાન વિદાન શિષ્ય શ્રી. પરાવિજયાદાને લાખી કૃષ્ય સ્ટાર્મ શ્રી. સ્ટાર્થ સફ છું છે પશ્ચ કૃષ્ય સાથ્ય પરાવા કૃષ્ય સાથે પરાવા કૃષ્ય ક

આપણને મહીં માગળ મે જ પ્રસ્ત થાય છે કે રોતાવિશ્વિત શીમાન કંઘનછ અને મહાપાદ (મુતાનાગર) મરોાવિજયછ એવી કાઈ વરિતાવવીમાં ઉપેક્ષણીય ટેમ સ્થા ! શી. માનવિજયછ ઉપયોગી માના ! ધાર્માં કાર્ય ! બ્રેશ સોનિજયછ પાસે મુધાનાબાદ હત્યું. છે અને તેએ કુલદેવલી તરીકે ગ્રેલાબાલ્યા છે, એમ મે શી. ત્યા. વિ. ત્યા. વી. ફ્રવિ સીતાયવિજય પત્સેથી વાવલતમાં સાંભાત્યું છે શી. દેવમંત્રછ ભાષ્યાર્થ 'સાનવાર' અલ્લક ઉપર સાબાર્થ ને સીતા વાવલતમાં વાલાનું એ શી. દેવમંત્રછ સામાર્થ 'સાનવાર' અલ્લક ઉપર સાબાર્થ્ય વિદેષણી વાપથી છે.

શ્રી. જ્ઞાન વેગલસ્તુરેએ હવા. યાદ્રેશનિવગ્લાઝની વ્યોગલસ્તિ સન્ત્રમાં હપર આળાવળાંય લખ્યો કે. તેમણે અને દેવગંદ્રાઝને 'શ્રીપાલ શરા 'માંથી સિહ્યાદ અંધેની દે લાંધોને ધાવોમાં વીતે બેઠાની 'નવપલ ખૂબ 'હું નિર્માણ કર્યું કે, પણ દેશએ એમના છવતનો અથાય દિત કુર્યોના બનાવોનો વધાવત્ લંભકે કરવાનો પ્રવાસ કર્યો તથી જ્યાં 'પિકાયત્ અંધો કર્ય તથી જ્યાં તેમ ત્રાપત વંપત્ર કે ત્યાનો છે. આવના સ્ત્રેય સંધા એ અન્યાને નહેતો. સુખક્ષ એ તે બનાનાનું ગ્રુખ્ય લક્ષ્યું હતું. કર્યાન્ટ્રેએ પોતાની રીતિએ દરેક વસ્તુને બંધબેરાતી કરી દેશી. સમાજ પ્રાફ્ત હતી, ગ્રાનલં પત્રિ વસ્ત્રમાને ત્રાપત્ર પત્રિ જે વસ્તુને બંધબેરાતી કરી દેશી. સમાજ પ્રાફત હતી, ગ્રાનલં પત્રિ સ્ત્રમાં પત્રિ સ્ત્રમાને પ્રાફત હતી, ગ્રાનલં પત્રિ સ્ત્રમાને ત્રાપત્ર સ્ત્રમાને સ્ત્રમાને આપણે રહ્યા પશ્ચિમની વિદ્યા મધ્યાકારો આપીને સર્વંત્ર પેતાનો

શ્રી જિનવિજ્યભાગને પાદનમાં સાળ કરેલો ત્યાં તેમતો સ્તૂપ છે ત્યાં આવળ પહેલાં તેમતી અવસાત નિધિએ તેમતું છત્રન વચાલું.

ર ગ્યા ૧૧૧ રસાગ્યા થી સાક્ષ-તવાલ દેસાઇંગ્રે 'જૈન ગૈતિકાસિક ગસમાળા 'મા સગાધન કરી ડીકા સાથે આપ્તા છે 'જૈન લુપ 'મા ગે તેને આવારે તેમનુ ક્લ્લનવૃદ્ધાત દેકમાં લખ્ય છે

પકાશ પાયરી હીયા છે છતાંથે આપણી સ્થિતિ તો હતા પૂર્વવત્ છે. તો તે કાળ માટે તો શું કહેલું? અસ્તુ

પહેલું એ કહેવામાં ગાયે છે કે, શ્રી. ઘરેશાનિજય અને શ્રી. વિન્યવિજય એ બને સુસાઇએ અથવા કેટલાકના કહેવા પ્રસાદે વિન્યવિજય કાઠાસુદ્ર હતા. બનેએ જગાલાલ અને વિન્યવાલ નામ ધારણ કરી જાણાનું વિભાગોં તરીકે પોતાને એકાળમાની કાર્યીમાં ત્યાંના જાણાવું પહિંત પાંચે અભ્યાસ શરૂ કર્યોં. તેમના ત્યાંમાંના સંપૂર્ણ અભ્યાસ આર વર્ષે પૂર્વ થયા આવતા તેમને અભ્યાસ શરૂ કર્યોં. તેમના ત્યાંમાં સાથે છે, જે એ ઘણી કાળાજી પૂર્વ કરે પાંચે છે, જે એ ઘણી કાળાજી પૂર્વ કરે પાંચે છે, જે એ ઘણી કાળાજી પૂર્વ કરે આ મારે તે શ્રેય ધારી આ છે. પેચાની દિલ્યોને એ લેલ ધારી લેવાની મહેપામ થઈ. આથી તે શ્રેય ધારી આ છે પેચાની દિલ્યોને એ લેલ ધારી સાથે સ્થાય સાથે પ્રત્યો તે તેમને હાલ હોતા એમણે નિર્ણય કર્યો સુદ્રપાની પાયેલી એ અલલખ શ્રેય સુદ્રિતથી માર્ચ લઈ લહેલા વાતો એમણે નિર્ણય કર્યો સુદ્રપાની પાયેલી એ અલલખ શ્રેય સુદ્રિતથી માર્ચ લઈ સુદ્રપાનીને પાયેલ અને નાશના તે સુદ્રપાનીને પાયેલ આ આ મારે સાથે મારે તે સુદ્રપાનીને પાયેલ આ આપ્યો.

અમ હંકીકતમાંથી આપણને કેટલાક વિચારસૂદ શૈલા શાય છે.

(૧) વિનયવિજય અને જયાવિજય એ ગ્રુરુ લાઈ હતા ⁸ કરી નહિ. એ ઉપાધ્યાય શ્રીજયાવિજયજીના એકલા ગ્રુજરાતી ગયાંથી જ સ્પષ્ટ શાય છે.

" તાસ પાટે વિજયસેન સુરીસર, તાસ પાટે વિજ્યારેવસરીસર:

તાસ યાદે વિજયસિ હસ્ત્રીસર, તે ગુરૂના ઉત્તમ ઉદ્યમથી સીતારથ ગુહ વાધ્યા;

તસ દ્વિતસીખનથુઇ અનુસારઇ, ગ્રાનવાત્ર એ સાધ્યા રે (૨૯૬-૪)

શ્રીક્યાણવિજય વડવાચક, હીરવિજયગુર સીનો;

ઉલ્યા જય ગુજુરાંતિ ચાવછે, સુર ક્લિર નિસહીસો રે (૧૭૮-૬)

શુરૂ શ્રીલાભવિજય વહાયહિત, તાસ સીસ સોભાગી;

શત વ્યાક્ત્યાંકિક બહુથથિ, નિત્ય જસ મતિ લાગી રે. (૧૦૯-૭)

થી ગુરૂ જતવિજય તસ સીસો, મહિમાવ'લ મહેતા;

શ્રીનયવિનયવિભુધ ગુરૂજ્ઞાતા, તાસ મહાગુજુર તેા રે.

જે ગરૂ સ્વપરસભય વ્યવસાર્ધ, બહુ ઉપાય કરી કાસો; સમ્યગદર્શન સુત્રચિ સુરક્ષિતા, મુજ માંત શુભ ગ્રહવાસી રે, (૨૮૧–૯)

જસ સેવા સુપસાયઇ સહળિ, ચિંતામણિ મેં લહિઈ. "

[रोगे. क्य सेवा-दोईनी सेवाङ्ग के प्रसाद दोष्ट्रे इसीने सहक्रभाष्ट्रे जिलामणि शिरोमणि नामे सहात्र्यासमास्त्र ते बहत-पाञ्चेत.]—इन्यास्थुवर्णम्-यस-दाव १७ स्वेपसा ट्वे

ગ્યા રાસની–સં. ૧૭૨૯ લાહવા વદિ ર દિને લિખી સાહા હંયુરસુળ સાહા સુરગ દે વિખાવિતમ્ ॥ છા –અંતે જણાવ્યું છે. " સારદ સાર દયા કરા, આયા વચન સરંગ: ત તહી મુજ ઉપરે, જાય કરત ઉપરાંગ. તાર્ક કાવ્યના તે તદા. દીધા વર અભિરામ: લાષા પણ કરી ક્લપત3-શાખા સમ પરિભામ, ³⁷

[૫૬ ' કરતાં--પૂર્વ વતુ પદ્મવલી તથા સૂર પર પરા આપી છે.]

" તકુ^દ તત્ત્વ³ મુનિં^છ દેકુપતિ" સ'ખ્યા (ફલ્ટક), વરસ તથી એ ધારે છે; ખંભનયસ્માહી સહીય ચાસાસં. રાસ ર^{ુચા} છે સારાજ " (— શી' જ'ળસ્વામી ગસ '–મ મકાયરહા)

*

(પૂર્વવત્–આચાર્ય તથા ગુરુપરંપરા આપ્યા પછી—)

" શીશ તત છતવિજયા વિછાયનર નયવિજય વિછાય તસ ગુરૂ સાયા; સ્ક્રીય તારીઓ જેહથી મેં ભલે, ન્યાયદર્શન વિપક્ષ ભાવ પાયા જેહવી શહ લહિયે સકલ નય. નિપુષ્ટ સિહસેનાદિ કૃત શાસભાવા: તેંદુ એ મુગર કરેણા પ્રભા હજ, મુરુષ્ય વર્ષણ સ્પણાવરી સુઝ નાવા. "

(—૩૫૦ માચતું સ્તવત, કાળ ૧૭ માંથી)

" સરિહીર ગુરૂની અહું કીરતા, કીર્તાવેજય ઉવલ્હાયાછા શિષ્ય તાસ શ્રીવિનયવિજય વર, વાચક સગ્રહ્મ સોહાયાછ विधा विनय विवेश विश्वक्षक, सक्षक सक्षित देखारा સોલાગી ગીતારથ સારથ, સગત સખર¹ સનેદ્વાછ સ વત સતર અડત્રોસા વર્ષે, રહીય શંદર ચાસાસેછ;

મલતલા આયહેથી ખાડ્યો, રાસ અધિક ઉલ્લાસેછ સાર્ધ સપ્ત સત ગાયા વિસ્થી, પહેલા તે સુરક્ષેણે છ;

તેના ગુણ ગાવે છે ગારી, મિલિ મિલિ થોકે શાકેલ્છ. તાસ વિધાસ ભાજન તસ પૂત્ર્યું, ક્રેમ પવિત્ર કહાયાછા શ્રીનયવિજય વિશુધ પયસેવક, મુજસવિજય ઉવજ્ઞાયાછ ૧૧ ભાગ થાકતા પૂરણ કીધા, તાસ વચન સંકેતે છ

~ શ્રીપાલ રાસ-(કળશમાંથી)

આ ઉપરથી આપણે જોઈ શકીએ કીએ કે ઉપાધ્યાયભ શ્રીયશોવિજયભ પાતાના સહાધ્યાર્થી તરીકે ઉપાધ્યાય શ્રીવિનયવિશ્યભને જસાવતા નથી. એ હેરત તેા કાંઈ નહિ ते। अ। 'श्रीपाद रास भा अवस्य ते विशे तेसहे इहां होत.

[ા] સત્રજનોની સગન બનાવી છે. જો પોતાની સાથે હોત તેમ લખન ગીવિજયવિજયછને વિધાસ હતા કે શ્રીયગોવિજન આ અનુરા ગસ પૂરા કરને એટલે લગામણ કરેલી જે ઉપરથી આ રસ શ્રીયગો-विश्वक्रमें पूरे त्यों विशेष देश साम वसी: जो स्थप छे

' સુખ્યવેલી લાસ ' કેટલાંક વર્ષો પૂરે' હાય લાગાથી પ્રગટ થઈ છે. એ મુજબ: શ્રીશેગ્રોલિબ્યજીએ અમહાલાદમાં તાંય સમગ્ર અવધાન કર્યો. તેમની આ બુહિયા ચમતરાર પામી ત્યાંના એક આવેલાના શાયકે તેમને વધુ અભ્યાસ માટે કાશી જવાની સગવડ કરી આપવા લક્કંડા બલાવી અને તે મુજબ પોલાના ચુરુ સાથે તેઓ કાશીમાં અલા. ' 'મુખ્યવેલી લાસ 'ના કહેવા પ્રમાણે તેઓ ચારેક વર' કાશીમાં અને ત્રણેક વર્ષ આગ્રામાં સા.. આગ્રામાં એમમે મીસ્સ વિદેશન (દિખં લેવ) કરી બનારાક્ષીલાનો પરિચય થયે! હોવો ત્રેષ્ટેએ, નીચેની પાહિલીથી આપણને તેનો ખ્યાહ આવે છે.

"શેતન ચોહકા સંગ નિવારા, ત્રાન સુધારસ ધારો." એ પંકિતથી શરૂ થતું અને " તેને જસ સત્તા સંધી રે, એક લાવકા કોશ." એ ગોલથી પૃત્રુ થતું પદ, ગાયા ૧૫લું આશાવરી સગમાં દેશાં, ઉપરાક્ત એ પંકિત સિવાય લાકોની વધી પંકિતઓ ' સમય-સાર 'માં ચથાવત્ છે." 'અમ્ધાનમાતપરીક્ષાં,' 'કિલ્પુય ચાલમાં કોશ ' વગેરે ક્રિયંબર મતને લાતાં પુસ્તાકા કયાં અને કચારે બનાવ્યાં તે વિકાનોએ સ્ક્રમાલીકાન પૃત્યું કે વધારલા છેલું છે પંકિત શ્રી સુખાલાલાજીએ 'તત્ત્વાર્થપર' ઉપર વિવેચન લખ્યુ છે, તેમાં એમણે અનેક ચિતાનીલ વિચીતો પરિસ્ટિક કરતો 'પરિસ્થ' નામના નિયાય ક્રિયાં છે 'તત્ત્વાર્થપી ઢિકાસમૃદ્ધિનું અનેવલુ કરતાં—તેના શુજ્યત્તી બાલાયલોધ વિશે તેઓ કહે છે:

"(ह) गणी युक्तीव्यस्य, उपरक्ष वाचक युक्तीव्यस्य विश्व है—वे कव हुए ! यह माध्य नहीं . टिप्पमक्ष माथा और क्रैशंका देखते हुए ये तथावी—प्रस्तवी अवस्थिमें हुए बान पहते हैं | इनकी स्केत योज्य को निक्षावतार हैं।"

- (१) दिर्गशीम 'सर्वार्थीकिट ' मान्य स्वच्यक्तो केन्द्र क्य पर मात्र स्वचंद्र कार्यप्रक क्रियुक्त द्विपण क्रिक्त हुए उन्होंने कहा बहा म्वेतांन्तर जीर विश्वन्तांका मतमेद या मतिहां मान्य स्वच्यक्ति क्या है वहाँ सर्वत्र म्वेतान्वरसम्पर्गका अनुक्षण करके ही नवी किया है।
- (२) मणी यशिविवयणी श्वेताभर है टियामके संतर्भ कैसा उच्छेस हैं (स्टुटतीट-" दृष्टि श्वेताभर मिन्द्र से उस्कारिक स्थानिक स्थानि

 ^{&#}x27;સુજસર્વનો ભાસ' પ્રસિદ થઈ ત્યારે થી ગેમ. દ દેસાઈંગ પ્રેમકેલી તેમાંથો રમરણને આવારે લેખું શું -આ તેમ.જ બીડ્ય પુસ્તોક ચારી પાસે-ચારા લખવાના રમળે-નથી, જેવી તેવા તેમી ખાતરો કરવાનું બન્યું નથી

ર, શ્રી, મી. દ. દેશાઈએ 'જેન્સુલ'મા આપ્યુ પદ ઉતારી ગા હળીકત લખી હતી મેં 'સમયસાર' નાની વચે વાચેદો. ફરી ભોઈ જવાતું જન્સ નથી 'સમયસાર' ઉપલક ભેવા મરતાં તેમાં આ હળીકત છે.

ર 'તત્ત્વાર્થ વિવેચન ' હિંદી ૧૭ : ૫૬.

અમાનાં કેટલાંક અનેણા પાંડિવલ્ટએ આપ્યાં છે. સિવાય કેટલુક કહેલું અહીં ગાપ્ત શાય છે, તે આ પ્રભાણે છે:

વાચક શ્રીયરોાબિજ્યરાના સમયની લખાવળ શ્રીસત્યનિવ્ય પં-મારાના, શ્રીકપૂર્વિવયના કિંગ્ય સમાવિવ્યન, તેમના શિમ્ય વ્યવસ્થિત રહ્યા છે. જેમણે કેટલીક સંક્રમાંથી તથા મચુલા સાહિત વખ્યુ છે. જેમની જોક કૃતિની સાલવારીના જ્યાંથારે યા તે સમયના મીન્ય પરિવૃત્તિ સાહિત વખ્યુ છે. જેમની જોક કૃતિની સાલવારીના જ્યાંથારે થઈ તે, 'લ તો પારાંગ શ્રીયર શિવાના ક્રીયર શ્રીવિવ્યાના લખાવું ઉપરથી સારતા શ્રીયર સાલવાની થા કૃતિ તેમની મળે છે.' પદ્યું જે 'હાણી' કેલાનું જેમની શિવાપર પરાના શ્રીયન્ય સિવાન ક્રિયા કે જેમના શ્રુપણાઇ શ્રીલિવ્યાના ક્રિયા કેલાનું જેમની શિવાપર પરાના શ્રીય જેમાં કરી કે તે ક્રિયું કૃતિ શ્રીલિપાયા શ્રીલવ્યની પરંપરાતા ક્રેશિ લખાવું વર્ચી એટલે એ પાર્થું હેના, કૃત્ય કૃતિ કૃતિ શ્રીલિપાયા શ્રીલવ્યાના સાથ્ય લખાવું કરના સાથ્યું કૃત્યા કૃત્યા કૃત્ય કૃતિ કૃતિ શ્રીલિપાયા શ્રીલ્યું કૃત્ય કૃ

"मैं किस्तों छे, ने नेताओं क्ष्मणहार कार श्री-निवारी युगरित रिटं नथी निवारी (१) ते फिलतों प्रंपांतर गाई, हवी ते युगति आस्पारी इच्चा डह हा यदाचर बहागड इस्ते ' अध्यानमस्तररीका' रो सामास्त्रोग किसाबी कार्यवर नेत्री सर्व श्रीक्रमी !

"पींग 'एकाइस विजे" (९-११) इन्हें सुन वह बीण-एकह्स्वविजेत इन्हें सूत्र न छह ... हैगावर इत 'सर्वामीहिदि-टीक़' माहि न संति इन्हें वाहरूवो केंद्र कहीट यह ... बीचुं वे इत्तर विचारी रहें। ! बातर संपत्तरे २२ हरूकहम्पताने १३ इन्यादि अनुक्त "प्कादस निवेण द स्व चान्धुं तो विभि अण्करह निवेष व्यावसान परित होई ते दिन करें! बळी तत बासनाई दिवन्बर 'प्रमेवकसकार्तिक 'नम्पे इस्ट्र व्यावसान करित यह वे' एकेन्सिका न दश एकादर्ग एतमवा' एक नहि-दस नक्षी ते ११ है परिसह नहीं ते हुन्यो समास व्यावस्थानक कह्य हुं ते ' आंस्यादास्त्याकर' मध्ये कहिंड छे! केनकीने क्वादाहर मान्या निना ए सुन्न दिवानको मध्य न यहं। 19

આ ઉપરથી આપણને સહેર સમજવ છે કે, 'સર્વાર્થસિક ના પાકના ખરે અર્થ શું નીકળે છે, તે આવાલા તેના લાલાવધીય લખ્યો છે. 'તત્ત્વાર'ના અધ્યાય સાશાના ૧૨ મા સફતે સંખ્યાલેકના કારણે અપવાડે શ્વેતાબારીય સુત્ર સખ્યું હોય તો તે બનવાના છે. (યુક: ૫૬–૫૮)

સ્મા પત્રમાં વૈતાવર વિરુદ્ધ દિગમ્મરીય માન્યતા, સાધુધર્માપકરલુ, સીમુક્તિ,

કાલદ્રવ્ય, કેવલિ-ક્વલાહાર-પૈકી કેવલિ-કવલાહેરની ઘણી ઊંડી તત્વાતુઓથી ચર્ચા કરી છે, જેમાં શેમણે ઘણા ગ્રંથાના જ્ઞાધારા ટાંકી 'વેતાંભર-દિશમ્ભર વિષયો સ્કૃટ કર્યો છે પ્રથમાર વર્ગ તત્ત્રની જિજ્ઞાસાવાળા હોઈ, તજબગ્ય સાનથી પરિત્રિત હોવો હોઈએ, પણ સંસ્કૃત ભાષાના અનશિસપદ્યાના કારણે તેમને તે લાયામાં લખેલા ગ્રંથા ન રામ્બય તે તેમની સમજમાં ઉતારવા માટે તેના બાલવબોધ જાને મુલ ગ્રંથા કરવાની તેમને જરૂર પદી હતી.

"अन्यादमस परिश्त-माजाववीन " ए जोगाडि प्रथा जोताने वाणी स न गहुइ ते प्रध्नो भाव सरकासस्य ग्रंथो इन्हें ते गण-मोकान्युं, हहां-शिष्यकानग दिनने वार्ष्युं व्यवस्थक र जिनवार्षभाषा" असूतारे तिक्षेय-माय योक्तिमका क्ष्मीं क्य्-"कार्ड "कैनतर्कमाणा" गाँदि विव्यं क्षस् ते प्राकृतगाशा केस् सम्य द्वापते किल्ला व्यवस्था कर्ष व्यवस्था करी वाणां युक्त व वहं " ए कतित्यस्य वर्ष्य कर्ष द्वापते विक्ला व्यवस्था अह ए केसन्य महाशाणा करी वाणां युक्त व वहं " ए कतित्यस्य वर्ष्य वहं । इत्यापरवर्षण रात भागों असे वस्ताच्यों वहं।

" आ पूना दशहरे हे-एटटे कंट क्लिक्ट मुखे करवें के व्यस्त, आर कायक समागण पाया वारी बहु इस धवा। अन अननोणिट गणिट इसी समा के, वे देशा वा सरसा आनिश्व काकने राष्ट्र पुर करवें ते प्रोड़तों. तथा न्याय माने क्कें के ते महित्री प्रती पाँच सात बर्डिनी कहू जाई, इस्यु सा महापन महापन कहनी। बात वार्डिनी अंद रासको। बात वार्डिनी अंद रासको। बात वार्डिनी अंद समाज करने का कामक किसानी होने ते किसानी। वार्डिनी अंदिन केट गाय के ते कसना। वार्डिनी अंदिन केट गाय के ते कसना।

એમની સભાના સહયોના આપણને જાા રીતે પશ્ચિય મળે છે. હવે આપણે એમના કામળની ખીછ વિત્રતામાં ઊતારીએ:

अस्त्यशासिद्धान्वत्रवृधैनिर्विद्धारकम् । अतन्यशासिद्धान्वत्वन्धाद्यावि कार्यप् ' प् स्रक्षण लोकन्ध्यस्य समया ता स्वभाववाद युक्ति श्रन्य स्वदं ए चिन्तान्धिनक्ति मार्थ ।

"काग्छ रको । है" स्वरित जीवा-चींबन प्रणय-जीतस्मातीर्थनवाती न्यायापार्येपायाव-जीवस-विचयवाया एपरिका। सुज्ञकपुत्रप्रमावक-जीदेशपुरुविकाश्यः . वैचयुस्य नाह हराज, साह देशात्र शोर्य वर्वकानपुर्वक्रीनि किसन्ति । कारम् ...तथा स्वस्यत वर्ष्य व्यवस सुत्र साव्य वर्ष तै-हैदिया काश्चा दिशेषी कमित्र प्रय वर्ष ।

" सहा केरल व्हिलादी मोक्क्बो छह् । सा गदाबर बार्न्ड ठाउडो बोकल्यो छड् । दिणमां-नय िस्हेव॰ प्रमाणरी भणा न रही छह

"तथा-न्यायाचार्य विरुद् तो महाचार्यह् न्यायमध रचना फरी देखी प्रसन्त हुइ दिखे छह। प्रथ समक्षि लिख्या वर्ड--

૧ એરતા કાળળમાંથી આ ખેલા બાલવબોધતા નાચ એએ! આપે છે 'ગુજર સાહિત સમદ' ભાગ રમાધી દ્રશ્યસુષ્યાનિ રાસ', 'જળાત્વામી રાસ' કાળવો વગેરે ઉતારા લીધા છે

" पूव न्याय-विशारद्रत्विक्वं, काश्वां प्रदेशं वुषै-स्वीयाचार्यपदं ततः इतशत-प्रन्यस्य यस्यापितम् । शिच्यप्रपेनया न्यादिविजय-प्राक्षोत्तमानां शिशु-, तस्त्र किञ्चिदिदं यशोविज्ञय स्थाप्या तदास्थातवान् ॥ "

"स्यागरेष २ रुख क्षीवो जह तो बौदादि क्गे एकांत बुक्ति खंदी स्वादाद पदित मोही नई ए यक्ति जैन न्यायावायं किन्द परिणत शिष्य लोक कहह वेड्री प्रमाग कई ते प्रीक्रवो ।"

આડલા ઉતારા ઉપરથી આપણે સ્પષ્ટ નોઈ શકીએ છીએ કે, ઉપાધ્યાય શ્રીયશાનિજય પ્રતિ ગર શ્રીનયવિજયજી સાથે કાશીમાં વિશિષ્ટ ત્યાયના અભ્યાસાથે જાય છે ^૧ ત્યા (हर्शनाहि शास्त्रो साथे) तेमछे 'वितामनि-शिरोमनि ' महान्यायशस्त्रन् शंहं अध्यत ku". या अधी कही हतीया है। ई क्यायो तेया पाताना सक्षाध्यायी तरीहै श्रीविनयविक्य વિકો ક્રણતા નથી તેમ શ્રીવિનયવિજય ઉપાધ્યાર્થ પાતે કાશી ગયાન, ત્યાં રહી અલ્યાસ કર્યાંત કે કેર્મા પદ્મવી લીધાનું કે ક્ષીયરીદવિજય ગણિ પોતાના સહાધ્યાયી હોવાન લખ્ય દ્વાય એવું જાણ્યામાં નથી. તેઓ અન્તે ગુરસાઈ કે શ્રીવિતયવિજય કાકાગર પદ્ય હતા તહિ. ર શ્રીવિનથવિજય શ્રીકીવિધિજય વાચકના શિષ્ય હતા તેમની ગુરૂપરંપરા શ્રીહીર-વિજયસરિથી જૂકી પડે છે શ્રીવિજયસેનસરિ પત્નીથી શ્રીક્ષત્ર સાગર ઉપાધ્યાયના કારેશ્વે તપાત્રકાના શીવિજયદેવસનિથી 'કેવસર ગયક' અને વિજયસ્થાણ દસનિથી 'આણસર ગયક' શ્રેમ છે કટા પડવા, તેમાં શ્રીયશિક્ષિભ્યા દેવસરિયર પરાના આમ્નાયમાં હતા: જ્યારે શરમાં શ્રીચિત્તમવિજ્યા શ્રીસ્માણં દવિજયસવિતા પક્ષમાં હતા, તે તેમણે 'મેઘદત'ની પદ્ધતિ ઉપર શીવિજયસ્થાણ દસ્તિને પર્શયક્ષના ક્ષમાપના-' વિજ્ઞપ્તિ ' પત્ર ક્ષખ્યા છે.³ તથા તેમની કેટલીક ગુજરાતી પદ્મકૃતિએમાં એમણે અતાવેલી પરંપસરથી પણ નક્કી ઘાય છે. આમ છતાં લારે આઢવર્ષની વાત છે કે, લોકા તેમને શ્રીયશાવિજ્યના ગુરલાઈ, કાઈ કાકાગર તથા સહાધ્યાથી ખતાવે છે. એટલ જ નહિ પણ એક અગસ્ય અને અલલ્ય શંધ,

માં વિગે એલ કહેવાય છે કે, તૈય તામ ધુમાવી-વ્યક્કાલું તામ વિત્વવિત્યાયએ વિત્વવાસ અને જહારિત્યાયએ જલાદાન-તામીધી પ્રાક્ષણ યુનિ પાસે અભ્યામ ત્યોં મહિલિ વદાત શે મુખાપ્રાક્ષછ સાથે આ તેમ તામ તામે તેમતું કહેવું થયું કે, આ વસ્તુ પોટા છે તે વખતે હતીમાં તૈય ત્રોધારોનો પાસું પાસે હતી એટલે તેમતું તેમ ત્રોધા પણ પાસું ત્યાં ત્યાં ત્યાં ત્યાં ત્યાં ત્યાં ત્યાં મારે આ આપાદ સ્થો છે તે વખતે મુસ્કારી ચાર્ચી હતી અપાદા વખતાં પણ પાસું હતી તો તે વખતે હેલ જ હતા એટલી ત્યી

³ આ પત્ર 'પ્લાકોર-ટિવાલા રૃપે નહિ-ચયાતારે લખ્યો છે, જે સફત કાન્બરૂપે એક દ્વારાબ છે. તેની તમાત્ર તરિદ્રનિકદારી વીચ્ચક્રપ્રિયાલ પક્ષો, તેમના વિદાન દિવ્ય ચતુરવિજન્યછ પાસે તેષ્ઠે હતી. તેમને પ્રેયુનકાર (સાચક) હતા ઓછી ચીચનોદિયન (શાયાના) પ્રયતાસયના મતનમાં છે, જે મતત્રના તથા નાયાલિયાત તેમની ચૂંચના ફૂંચ છે.

એ વિદ્યા યુરૂએ ગોપથી સખ્યા હતો તો સુર્યું ગેસહાં જેનો તાલ લઈ-ચુરૂપત્નીને દગી-મેળવી તેતુ છાતુમાતુ વ્યાચ્યન કરી લીધાનું સુર્ધા તેમને માટે કહે છે. આપણી ભારે જિણાસા વચ્ચે આનું આપણને સમાધાન સંચે છે, એનો કહેશા 'કબ્ચાલુપયાં રાસ' અને પોતે લખેલા કારળમાં 'વિદ્યાસ્થિ' અહિના મારાસાર નામે કરેશા આપણે તેઈ એ છોએ. આઠલી ખુલલી રીતે લખેલી હઠીકાત તે હેઠતી સંવત કરવી? જ્યાચાય સ્ત્રીને ત્યવિશ્વ અન્યુંએ પોતાના 'રીયાલ સસ' આરંભેલો તે પેતાના પછી વાચક શ્રીસરો: વિશ્વપાર્ટિંગ, પૂર્વ કરવાના સંદેત કરેલો તે ચુલ્લ પૂર્વ કર્યાં, એ આપણા લોકમાનસનો નાદર માનુંતા છે આપી પણ આગળ વધી તેઓ કહે છે:

ગારત્રજ્ઞ સ્વીકારતાં તેમની પાસેથી વિદાય લેવાં કહે છે ' લગ્રકેવ! અત્યાર સધી અમે વિદ્યા માટે નામ-અંત ગાપવી છે. ખરી રીતે અમે વ્રાહ્મલપુત્ર ન ક્રોઇ-જેન સાધ છીએ, એક્ક્રે અમારી પાસે તમને *દક્ષિણા*માં ગાપવાનું લબ્ધ નથી પછ ગાપને _ભગા**રે** જુલ પટે ત્યારે અમે તમને જે નામ, ગચ્છ વચેરે જુલાવીએ છીએ તે પ્રમાણી પત્તો મેળવીને આવશે તો તમને અનતી સહાય કરીશ ' એમ કહી હરના આશીર્વાંદ હઈ તેઓ બન્તેએ ગુજરાત તરક પ્રયાસ કર્યો, કેટકાક સમય પછી હ્યારે તેઓ જાંભાતમાં હતા લાકે તેમના એ ગ્ર૨૭૦ને પૈસાની જરૂર પડતાં ત્યાં આવ્યાઃ તેમને દેખીને વ્યાખ્યાનપીઠ ઉપશ્ચી જ્ઞતરી તેમણે તેમના સત્કાર કર્યો કોતાએને તેમની એલ્લાયા કરાવી: 'પાતે અત્યાર & સ્થિતિમાં છે તે તેમના પ્રતાપ છે. જેથી તેમને લિંગત પ્રતસ્કાર આપવે આવશ્યક છે.' શ્રીસંઘને એવા નિર્દેશ કર્યો, આથી સાથે તેમને ૮૦ હતાર રૂપિયા તે વખતે જ કરી આપ્ય ! ખ માતથી જેસલમેર લખેલા કાગળની હંદીકત આવળ કહેવી છે. તેમાં આપણે શાસી ગદાધર મહારાજતં નામ વાંચીએ છીએ, જેઓની યાંચ્યલ શું હવી અને તેઓને કેવા કામ માટે શકેલા હતા-તેની માહિતી આપલને તેમાંથી મળી રહે છે. વિનયવિશ્યલ સંબંધે કાઈ ઉલ્લેખ તેમાં નથી. સાથે વિદાર કરતા હોય અને સાથે જ જંલાતમાં ચામાસં હોય તે. અનેક ઘટનાઓથી બરેલા એ કાગળમાં તેમતાં નામ ન હોય એ સંભવિત છે? એમના સાથે વિદ્વાર ક્રેમાં ગતે સિદ્ધ થતા નથી. તેમ પાંડિલના નાચે જે એક વાલ જેવી કરવામાં આવી છે. તેના ક્રેમાર્ડ માંગ શોધ્યો જહેતો નથી. એક માત્ર શાસ્ત્રી મદાધર હતા. એટલો જ પત્તો મળે છે.

ગ્રામ-પરભાબ, દેશ-વિદેશના સમાચાર ચેળવવાલું સાધન માત્ર, આવતા જતા માણસેના મેઠથી સાંભળેલી વાતો સિવાય થીનું અત્યારના જેવું કેઈ ગ્રાધન કે પ્રદેશ પ્રદેશ વચ્ચેનો પરિશ્વત સંબંધ હતો. નહિ. એક ગામથી અભિ ગ્રામ જવાતું પણ વિક્ટ હતું. એવા

[ા] ભાગો વહેર મહિલા નવારના સુર્વિની હાલુથી લહારવા—તેવારા ગામે છે; જ્યું તે કેવી ખનવ^{*}-પરમા શખ્યો કે તે તિણે સારે ગેરુ બસીલા હેરાવી હાલું લાવેની વાનનીમાંથી જાણવા મળી તે હતે: તેવારા વાર્કી દિવસા હાલું લા આગાં કહ્યું કે તે તે તે ભીગતે કારવા હોયી વાર્ટી અગાન દીધે! પણ આપણી, સમાત્ર આદી દદાવાઓ માટે નિલેક્ષ્યુર્વ કિમાર કહતો લગ તો હાલુ

અંધકાર સમયમાં જે કાઈ વટનાઓ બનવી તેને લોકો પોતાની કલ્પના પ્રમાણે સર્જી લોકસ્પમુખ મુકતા. આવી વાતો ઉપર કેટલા આધાર રાળવા તે વિચારકોને સમનવવુ પડે એમ નથી.

૧ આ સ્તુનિઓ અછુવદી ' વચેં?' 'ચી-આન દવન-પદ-શ્રાવાર્થ' ધા તેચના ચરિત્રનિખધમાં પ્રાપ્તિના શીશુક્રિસાગરે (સૃત્ર્ચિ) આપેલી છે

[ं] उत्पाद्यान-विद्योशिक्याहर-योग ज्यों सः वक्तः उत्पादी हैं। उच्चयावनीक शास्त्राहर, टार्क्टेचन, वीर दोगानुस्य बहुठ गयो। यह हाने उत्पर्देश कावस्त्राहर, व्यक्तं वीर प्राप्ति में योग कावी विद्यों से हान हों हैं। विकार वेंद्र सहस्वीचें सुक्त और रोजक वीरता करने उत्पाद काव व्यक्तं की प्राप्ति के उत्पाद काव व्यक्तं की प्राप्ति के स्वाप्ति की स्थाप विद्यान अर्थ प्राप्ति की कावस्त्र की प्राप्ति की कावस्त्र की प्राप्ति की अर्थ के उत्पाद की अर्थ की अर्थ के अर्थ के अर्थ के प्राप्ति के प्राप्ति कावस्त्र की प्राप्ति की प्राप्ति की अर्थ के अर्थ के अर्थ के प्राप्ति के प्राप्ति की अर्थ के प्राप्ति की प्र

ર. ત્રીજી કુજરાતી સાહિત્ય પરિદામાં ગ્ર્યુ કરેલા નિષ્ય ગુજરાતના સગ્ટ્રન સાહિત્યનું સ્પિદાર્યન '

शतसार —भूकृष्टिः

Y. ' પાગરફિલી સન્ત્રાય ' ડાળ પદ્ તેન કેટલાક પદા

પ કાગશાર તપીદદ-વાગરથગ શબ્દ છે. સત્ત્રાથમા-'તે તો આનદનન શક્તિકુ રે, અધ્યાતમ મુજસ વિચિકુ રે 'એ રીતે છે. (--પ્રત્યામી નસ.).

શુંહાતુલાવને લક્ષીને શખ્ડની પસંદથી કરી હોત તો તે चित्रामन्यमनો ઉપયોગ કરત. 'આપપાદી'માં વારંવાર આનંદલન શખ્દનો કરેશા ઉપયોગ વ્યક્તિયત છે, એ અપ્યક્ષની ઉત્પત્તિ જ કહી આપે છે જેની પૂછિ શીઆનંદલનાઇએ યશાબિજ્યાઇના કરેલા પદથી સકંજ રીતે શપ્ય છે આ ગે મહાત્માનું સિકન જે અર્થાનું હતું તેમાં લેકિને ભુકે જ અર્થ સમ્ભપો. તે નિશે આમ કહેવાય છે:

- (૧) તેઓ (ચરોાવિજય) વિદ્યાના મદમા અલી વર્જ ખંડનમંત્રના પક્ષે ગયા હતા. એમતામાં આંતર શૃત્તિ નહેરાવી ¹ તે આતંદ્રશના અને તેમને કત્તવી ! અર્થાત્ આધ્યાત્મિકતા ચરોાવિજયમાં આવી હોય તો તે શ્રીઆતંદ્રશનના સમાગમથી.
- (૨) શ્રીત્રમાનં દાનજીને પોતાના અંતકાળ નજીક જણાતાં પોતાની પાસની લિખિ— સિંહિ અત્મને આપવાની ઇચ્છા થઈ આવી આ માટે તેમની ચરેશાનિજન ઉપર પમંદગી લેતરતાં, કામળ લખી તેમને ગેલાલ્યા તે પ્રમાફે ચરેશાનિજન તેમની પાસે આવ્યા. એક વક્તાના કંમન ગ્રુજન તો : તેમને છ માથ સુધી તું પ્રયોજને શેલાલ્યા છે તેની જણ આના કંપન ગ્રુજન તો દોમને છ માથ સુધી તેવા એમ તે એમ પૈય ત્રાપો કેસી જ્યા! તે પત્રી પૈય 'પૂટતા પોતાને શેલાલ્યાનું પેરોજન પૂછ્ય. આનં લક્ત્યન્ટએ કેશું : 'હવે કોંધું નહિ. તમે પરીક્ષામાં નિષ્ફળ નીવડવા! મારે વિચાર તમાસમાં પૈય'-આંધીય' કેટલું છે, નિર્મામત-અનિવિશ્વલાય કેટલા છે તે ત્રામની ચાર્ચ પાસેની લિખ્ય-સિંહિ તમને આપવાનો કેતો પશ્ચ તરિ અંધીરા અત્મા કહે તમે એમ ત્રાચી ત્રાચી ઉપાધાય વિસ્થા પડી એમ ને એમ માક્ય ક્યાં. શ્રીજ્યાને લાલલાએ પોતાની બધી લિબ્ય-સિંહિ સુધિમાં લંતાની. ત્રિ પહેલાં) પીતા વહાલોએ શાક્યતકારના ઉપયોગ માટે તેમેલું શ્રુવલ્ફીસેંદરે માત્રી: એ પીત્ર કર્યું કર્યાં (પ્રેઝાઈના એક લાલવામાં)

હવે થાપણું પ્રથમ માન્યતાના વિચાર કરીએ શ્રીયશાવિલ્વજીએ કાશીમાં રહી સવં શાસપારંગતતા મેળવી, આવી એમની પ્રમ્રા ગ્રાનના હરેક પ્રદેશ ઉપર ફરી વળી, જેશે તેના અંગ્રે અંગ્રહ્મ સમ્પ્રગૃ સ્વરૂપ પ્રાપ્ત કર્યું હતું આ પ્રાપ્ત લાવના દર્શનપાણે, મતાસહાશે, પ્રમંપણી અને તેથી પ્રવૃત્તિ વધેલા ધર્માલામાર્ય અનુલાને વચેરના ગાતર સ્વરૂપને સ્ત્યપ્ત કર્યો હોય એમ આપયું હોઈએ છીએ એમને એ વસ્તુ નવાપોલ તે તે સ્પષ્ટ સ્વય કર્યો છે નિલ્લાવાદ્ રૃપે લાગી તેતું ખંડન કર્યું છે, જે બચિત હતું તેનુ સ્પષ્ટ લાગા કરાવ્યું છે, અને ત્યાં મૂલતા લાગા ફુલ્લા હતાં ત્યાં ગ્રાળ્ય હોય કામ હીયું છે. ગ્રેયા આપણે ગ્રેમની શાસવિશાસ્ત્રતા, તસ્સ્રલા, નિલ્મંપતા અને નિયંધતાનાં દર્શન કરીએ છોએ. તે સાથે આપણને એમની કલ્લાહ્મુક પ્રથમ પુરુવાર્થ પણ ગાદ આવે છે.

તેમના સમયની સ્થિતિ અવાલમાં થતાં હોવાય છે કે, સાધુઓમાં ચ્લાનિકર શિધિલાચારે વાસ કર્યો હતો. તેઓ પરિગ્રહના ગઠથી ગ્રાસેત થયેલા હતા. ડ્રન્ચ્યાપ્તિ એ જ કિયાકાંડ તથા ધર્માતુકાનોનુ પ્રયોહન્ય હોય હોય સમહાતું હતું! એટલે એવાથી ધર્મના પ્રાણ હારી વધે હતા. સ્વાર્થપા સત્યોપદેશ થતો નહિં ળીછ લેકિકશાહરી પ્રગૃટેલી જણાનમુલક દેશનાએ ખાશા-વારતું મહત્વ વધાની, મૃહ લેકિંગને પોતાના તરફ જાકાર્યા હતા. ' આ રિશતિના નિવારણું મેં મેમને ક્રેક્ક કલમ ચલાવની પહી છે. બગારેત કેટલી, કેવો અને કર્યા છે? એની વિચારણુ-પૂર્વક એમની તેબન્લી કલમમાં નીરોચિંત કર્યાયોગોને હોયપાશ સર્વત્ર દેશિયાર થાય છે. તેમ આતો મનતીવેલી મૃહાવશ્યા અને તદકારાની આચતાલું તરવું મેમણે બન્લત રીતે નિકરતાથી ખતાબું છે. તે માટે મોટે લાગે લેકિંગણીની ઉપયોગ કર્યો છે, સાહાત્રણું સાથા, કોલ્સો પાંચા, સવાસે સાચાની સ્તવનો રુચ્યાં જે અસારે પણ તેટલાં જ લપયોગી છે. પ્રમાન્ય પૂર્વ કરિ એમણી આપણને સાપે છે પત્રાંવરણુ સુધારના જવા છે ક્રાપ્ટપેમ અન્ય સુધારકાને વેશની પહી છે તેના જનુલન એમને પણ વધી હતો. એ એમણે 'શ્રીર'ાખેશ્ય પાર્યનાથના સ્તવન'માં પોતાની મનોબ્લશ બ્લકત કરતાં વર્ણપત્રું છે:

" દોષાનલ ઉપલ્લવ ફર્લન, મધન વચન અરહ્યું; નામ બર્યુ બલધાર હિક્કો છું, ઘટું દુઃખહરવા અભ ગોહે એસી આય ખાની, ચી રાગેવર પાસ બિનેસર ગેરે તું એક ઘણી !! તેવી જ રીતે એમણે ઠેકાણે ઠેકાણે કર્યા પાચી પાતાની કથની કહી છે. તેમાંથી આપશે એમાની શેડી વેશનાના નિખ્યાસ સાંભળી શકીએ કોંગ્રે.

ર એક વકતાએ કહ્યું હતું કે, વિતેઓની અવરિકાત સાથે ઉપાધાયદાએ ઘણા કરક પ્રકાર કર્યો. જેવી બધા મહિલો તેમની ધામે અન્યો વિનવલા લાગ્યા કે, ''ક્કારારન' ગ્યાર આ પ્રચાફે ઉપદેવ કરતો તો અપાર્વી કુંદેશ મારો ''આપો ઉપાધાયદાએ દલ આવવાલી તેમની હાણિતાલો-તેઓએ તે પૂર્વ પૂર્વ વાર્ય્યું કેમી દીધું આ કરીતલાલા કેક્શું મને તો કે કરતે, છાપેય માછ ત્યાં અપિક સ્ત્રે તા નિ તિસ્તેપણે કેમલા વિના સ્ક્રેલા વર્ષ્ક એમના વાયાણોમાં સોંચન નિય્યુ સ્વયત્નની લાવા સ્ટ્રાં ત્યાર કે સે માટે સુધો-

' જે નિર્કાય માગ્ય ગોલે, તે કહી દીષને તોલે." —(૩૫૦ ગાલા ૨૧૧ન, હાળ : ૪માધી)

ो सम्म किलमान, प्रमाण विष्युए विरातिते | को सम्बाध कवान, श्रीक्सको भवसमुहीमा ॥ ---(अद्वानिशीध)

ર. ગીતારથ જવણાવત લાગ ભીરુ એક શદત, તસ વચશે લોક તરિયે, જેમ પ્રવહ્યું બાદરિયે. (પ) તવિ નિકા માસ્ય કહેતા, સમયવિસામે એક ગ્યાસમાતા (હ).

ગલી દૂધણું એક કરાય જે ખલતે પીડા થાય, તો પરંચુ એ તવિ હોડિએ, જે સતાનાનો મુખ્ય દીવે —(૩૫૦ ગાયા સતાન)

गीय सम्बद्ध श्रेत, अस्यो तस्त्रेन होंद्र नस्त्राच । उसस्य य संज्ञतो, सो गीवायो सुरोक्नो ।
——(अदानिशीय)

क्षन्याची क्षम्बाम, क्रेन्ट्र यो लक्ष्य होट् चलकुळ। वाणी नि जो न सामा, यो कहूए नागरिक्य हा ॥ ——{ (हत्संपर्देश)

हमों न बोर दोयो, व वान्स् चलकमस्य पीड सि । सह नि एनडो इत्य, दृद्ध प्रकाण 📰 तोर्घ । सरो दिय व इसक, तत्तो तेसि नि होह न हु भीना । झरडाम्बरा परिचा, सन्दे निर्मासिक्, मरिवरा ॥

—(उप० गाया स्तवत, क्षण : ४)

એપમને શાસ લખવાના ઉદ્દેશ શો હતો કૈ કહેતા આવી બવાતું કારણ શું હતું? એપમા ચારમા કૈક્શા નિર્દોપ હતો કૈ દિષ્ટ કૈટલી સાસ્ત્રાહી હતી કે તે આપણે એપના શબ્કોમાં જ નોઈએ :

" इनणां-सङ्ख्य श्वेतांवर तक प्रेंग, दिरान्समत निर्देशक व छे ए मोटो जंतर छे। ए दिर्गतर हिक छुट, पिंड-डियन वाणि तो परीखक छोकने नहीं खामी छुट्। रामदेशी नाम ध्यावणो टुटें छुट्ट पिण क्रियात्व जावहं छुट्ट। 'छारामयन्यतः ऋगेळक-प्रवेशः' ग्वायः। उक्तं च हेमाचार्वै. 'अयोगज्यवध्येद-द्वाविशिक्तायाम्'-

" प्रुनिश्चितं शस्तरिणो जनस्य, च नाथ ! ग्रुदामतिक्षेरते ते । माध्यस्थ्यमास्थाय परीक्षका ये, मणौ च काचे च समाजुनन्याः ॥ २-२७ ॥ "

सर्थ —हे नाथ । हे बोक्सपरेव ! एयहं शुनिधित हे, जे ते लोक सस्सीरी ग्रुटा सित्तमता न छई, पता ाता-मस्ति व छे। वे बरोक्षक हुंता, मणिनां कने काचवा समानुवंध क० सर्से परणाने छह, काव- तनरो अतः न देखान्ह स्थ्यस्थ रहाई, परिक्रक लोक श्रीवयस कर्षहे जितने भ्रशावह । बोजो-जिनते निर्णय थाई हैनते निर्णय करो परीक्षक गौतार्किश श्राञ्च प्रशाय कर्षहे । बानिधित अर्थ-हाचोई कर्षहे ता-परिक्षफ अपवादमां पहरू-टक्क च 'सम्मतिनहालकुँ '—

" एयंता सन्ध्यं, सञ्जूनमणिच्छियं च वयमाणो । स्रोइ अवस्थ्छियाणं, वयणिक्तपहे पढड् वाई ॥ ३-५९॥ "

अर्थ—एकांतर असदमूत कर्ष दूर रही, सद्भृत कर्ष पणि जो अविश्वित क० संदेशकाग्त कहाँ तो—वादी कोहिक अने परीक्षक ने छोड़ तेहनो—वचनीयपथ क० निवासार्य तेहमां पढे, ते माटे सदेह न करते | 1

આ જ એમની ગંધરવનાનું છવનભાસું એવ શહે હતું. ચેમની રાઘમ સારમાહી હઉં દેશી વ્યાપક અને આત્માસિક્ષમ હતી દે તે તેમહેં 'પાત જ્ય ચેમકાર્શન' ઉપર ફ્રાંત લખીને તમ 'અધ્યાસમાર'માં 'ગીતા 'તા 'શેકોનો સમન્ય કરીને વાતાંધી કાં દેશમ્યર માનાતાનું લેટ લતરીને છુલિકાલા રીતે ખંબ કહ્યું કે. તથાપિ ધુરેપર નૈયાપિક શેનિયા-નિનિ! 'ચારસકાર્યી' ઉપર શિક રથી 'પોતાની' ત્યાગવાર્થાંતને હિપાયી છે. એ બેદો આપણે નિદાન પંહિત શીક્ષમાલાલછના શબ્દોમાં ત્યાગવાર્થાંતને હિપાયી છે.

(त) वाचक वशोकिवय.....वैतान्यर संप्रताब्यें ही नहि किंद्र सम्पूर्ण वैन सम्प्रवायं सबसे अंतर्ये होनेतां त्र त्रांचन प्रामाणक विद्यानके तोर पर प्रसिद्ध है। इनकी संस्थावद कृतियां उपकृष्य है, सबहुर्ता-स्वरावां क्रांचां त्र होनेतां उपकृष्य है, सबहुर्ता-स्वरावां क्रांचां त्र होनेतां उपकृष्य है, सबहुर्ता-स्वरावां क्रांचां त्र त्रांचां त्र क्रांचां क्रांचां त्र क्रांचां क्रांचां त्र क्रांचां क्रांचां त्र क्रां

१ अगण : १४ ८१-८७

૨ તત્ત્વાર્થસત્ર હિંદીવિવેચન-પશ્ચિષ . ('જૈનતર્કલાયાની પ્રસ્તાવના પાર્થી ઉતારા જૈનપત્રે આપ્યા છે)

क्रिया है और भिन्न विज्ञ विषयों पर अनेक शकरण व्हिलकर बैन तत्त्रज्ञानके स्ट्र्स अभ्यासका मार्ग तैयार किया है (ए. २६)

(प) स्विव्हत इति—माप्य पर तीसती वृत्ति उवाच्याय यखीनिवयको है। बदि पूर्ग निरु जाती तो सबद्वां अद्धरनं अताव्यो तक प्राप्त होनेबारू मास्तीय दर्गनदाधिके विकासका एक नमृता पूर्ण करती। ऐसी वर्तमानमं उपलब्ध इस इतिका पह अपेदेश कांड्रेस कहें नेका मन हो जाता है। यह सपढ प्रथम अध्यायके उपर भी पूरा नहीं और उसमें अगराजी दो वृत्तियोके समान ही कव्यका भाष्यका अनुसरण कर दिश्य किया है। एसा होने पर भी इसमें जो नहीं वर्ज्यनुमानी चर्चा, जा यहुयुकता और जो भावस्तोदन विकास देता है यह वर्षोचिवयको न्यायिकास्तायका नियम नराता है।

પણ તમે કહેશા કે આહુ લખવાનું તેમને પ્રયોજન શું હશે !—

" कि नामस्मरणेन न गतिमवा कि वा मिदा कानवोः, संवन्तः प्रतियोगिता न सदशो यावैन कि वा द्वयोः। तद्वस्यं द्वयोग वा वदयते त्याव्यं द्वयं वा स्त्या, स्यात तकोहत प्य कुम्पदमुखे इचो ग्रयीकुर्वकः॥" —(अतिभावतः)

સમયે કહીએ છીએ કે તમે એના આંતર સર્જામાં ગરેશા, અને પૃષ્ઠી કે આ શાળો સપ્રયોજન છે કે નહિં! નિર્ફાય, તેમાં ઝુખ્યત્વે સ્થાપનાનિકૃષ્ણ સ્વરૂપ નવ પક્ષને આગળ કરી તેમણે અલંત સ્કૂમ રીતે સચ્છતન્યુ છે.

જેને આ સમજવાની છુદિ નથી છતાં પૃથલા કરે તેને લીભે શે. જવાબ ઘટે! અર ગ્રેલા દુશાબ્રિઓની, ખોટા કિયાડંગર કરનાત્ર આવી, હાંભિકાની, અહ્યાત્યના કેમને સખત હોયે ખબર લીધી છે. એ એમના ગ્રાન્પપ્રકાશના લાપ છે, જે લાપ સ્થિયાત્વના પ્રિચિદ્ય વિસર્જન કરી સમ્લદ્ધત્વની વસંતર્ગ વિકસિત કરે છે. વાણી ગ્રાંગે તેઓ કહે છે:—

" તકે' ત્રિયમ પણ કવિતું, વયણ સાહિત્યે સુકુષાર; અસ્મિજગંજન પણ દયિત, નારી મૃદુ ઉપચાર, " —(જંબ્રુવારી રાસ)

હવે ભીંગે સુવે તોઈ મેં. આ વિષે અપને પાસવાર આગ્રવા સાથ છે કે, કહી અ એ પુરુવેતા. અંતરમાં ઉતારી તેમને પિછાનવાની, આવી વાતો. પ્રચલિત કરનારાઓએ તત્તી લીધી છે? યા એડલી પરીક્ષક શકિત કેળવી છે? એ અન્યાં પ્રચાવની પ્રચાર કર્યો છે. આત્માર કરતી અન્ય વસ્તુઓમાંથી આતંકને ઉત્તારી લઈ સાતમાર જ સ્થાપિત કર્યો છે. આત્માર અને તેની તાલાપેલી, તેમાં જ મસતા પ્રાપ્ત નિજ આતંદન સ્વરૂપનો સ્થાસ્તાર-એ સિવાય અન્ય કંઇ વસ્તુ એમની નજર સમગ્ર તેવી 'એ જ નિરંજન એ જ પરમાલન' એટલી નિસ્થાતમક કંડતા પાસ્તુ કરનાર માત્માનંદીને લીઓસિલિના સંસ્થાવની વિતાવણા ગીતરને એમાં માપણી પામસ્તાતુ દર્શન નથી શતું? અને એવી રીતે શુદ્ધસકુરના પાનથી જેઓ પ્રશાવાન છે, ' જેણે અકાંગેન હરિંગે મેકાનમાં છવી લીધો છે,' અને જેની દુવિકા અધિરાસુદ શાહિ (વિશુદ્ધ આત્રવરૂપ પરમાત્માં) પ્રસુના સુધ્યનામાં લુલાઈ અર્ધ છે, જેમાંથી ભિષ્યા થેતો સ્વતારસ-તેના પાનથી વિશાન માની સેત માણી સૂર્ણ છે, જેની આગળ હરિલ્દ, જાણા, કે પુરંદરની સ્વર્લ્ડ કાંઈ વિશાનમાં નથી," જેને શાંતિ રવરૂપ પરમાત્માત્રમુશી સમક્તિ દાન પાત્રી-ક્રિનલા અર્ધ છે," તેને લબ્બિટિલિસ્તો મંચ્યુક ક્ષેત અને તે ગાટે લલ્યુક જાવાવવા ત્રેયાં આપણી બાલિશતા સિવાય બીનું શું છે?

પ્રથમ વાત તો-ન્દેહ સિવાય કાંઈ પણ વસ્તુ વગરના એકાકી અરદ્ધમાં વિઘરતા, નિબત'કમાં મસ્ત આનંકઘન પાસે કાળળ, મસી, કાર્ફું આવ્યાં કપાથી ? ગ્રામ-આમાંતરના

- शदार्थेऽदुवानकः, व्यावसेव किया कवाः । अन्तुवन्ति वर केद, अस्कवन्तः वरे तरे १५॥ :-बहाराधिकहासम्त्रः, स्वाव्य-व्य-व्यवस्थाः । धर्मारामञ्ज्यकृत्यः, व्यावस्थानेदियः ।।व। :-याजोत्त्राचारकः नः, व्यावश्च श्रावसेव्य । वर्शनेक्य्य न्यत्येन्तीः, आवीत पर वरदा, ॥०॥ :-— संवाद-व्यावस्थाने
- र. विकरपरकेशामा, पोत्रपोत्रामचे क्रम्य । भोष्याक्युण्याकमण्यपितिकृति ॥५॥ निर्मतन्त्रदेक्षरेष, क्ष्म्य कम्मानमा । जन्मसोत्रपिकम्बो, व्यक्तप्र विद्वाति ॥६॥ ः —वानसार-गेकाष्ट्र
 - " દરાવ્યો અનુસાવ એર હતો એ, ગેહરલાલ લવ્ય વહેત, પરિવર્ધ લેહના સર્યાં કેમાહી, લાગ્ને સીધ પહેર રે સુખ લાહિત અનેતો હીં. ઉદદ પ્રયોગ્સ કરવ ત્રાન તિહા, ત્રીઓ અનુસાવ સીઠેટ તે વિશ્વ સહેત ત્રણ દિધ લાંએ, અનુસાવ સેમ નર્યદિ રે "

—થીયાલ રાસ, ખાક : ૪, કાળે. ૧૩

ध्यवद्वार कुरक्रकोत्त्रीरिशानिष्ठेषु कस्तुषु । कस्त्रिकेतु विवेकेत, तत्त्ववीः स्वयतोष्ट्यते ॥१९॥ —-वेथकोर-वीनिशिक्ष

- हानमानरप् क्रीनसम्बद्धवसीहवोऽप्यहो । १ वं बानोति श्रुन सम्बद्धवान्योति समानित ॥५॥ ——वानसार-समाधः
- "હરિ ક્ષુત્રહ-મુક્લફારી સોલા, તે તો માટી કહો રે"
 —(શ્રીપાલરાસ ખડ ૪, ઢાળ : ૧૨-૧૨)."
- Y 'દય મગત લગે પ્રશુ ધ્યાનમે '—એ આપુ શાનિનાથ ગતવન
- ૫ 'ઋહિ-નૃદિ પ્રકૃતી ઘડમાઢી, આતમ રીતે તેઇ લેકો.' —(શો ગ ખડ ૪, ૧૭–૧૧) 'ક્ષ્મેફો લાસિત નવ સત્તાર, ત્લેક પ્રદૃત સન તે લવપાર; એ વિક્ષક્ષ્મન નર દુધે આવ્યા, પ્રસુ તો અપ્તે નવે નિર્દિ નિધ પાયા.'

—(વાસુપૂત્ત્ય સ્તવન)

वहरतहिप्रवारेषु मुद्रितेषु महालनः । अतरे वातमासन्ते, स्कृष्टः सर्वा सर्दयः ॥१॥ —न्यानशार-सर्वसम्बिक्षः, ત્રાલુકાર ચરોાવિજ્યાલું તેમ તો મેળવી તેમને કાગળ પહેાંચાડનાર માલુસ તેમની પાસે કપાચી? આ વિચારના વિષય છે.

ચાગાજનમાં ચેત્રાથી અનેક લિખ્યસિહિએ ઉત્પક્ષ થાય છે. 'માર્લાગ્લ ચેત્રાવર્શ' (ત્રીભ વિદ્ધતિયાક)માં સાન, મનાળળ, વચનભળ, શારીરભળ આદિ વિદ્ધતિએ ચેત્રાય પ્રાપ્ત ચવાનુ તથા વૈક્રિય, આહારકલિબ, અવધિશ્રાન, મનત્વવધ્યાન આદિ સિહિએ પ્રાપ્તું કૃત હાલાનું વર્ભુત છે. આ ઉપરથી આપણે તેર્ક શકીએ છીએ કે ચેત્રાત્રિવૃત્તિએ આત્માની વિશુહ સ્થિતિની સહેવારી છે તેને દૃશી પાઢી વિનિસ્ત્રાના પ્રદાર્થ બનાવી શકાય એવી એ નથી હોતી. એ તે આપણી સસ્ત્રાત્ર્યો હાલરે તે હપરતી વાતોતી સ્પષ્ટતા થઈ ભય.

આતંદાના મહાયોગી હતા ગતે તેમને યોગવિસૂર્તિઓ હોવા વિષે કરો! શક નથી. પક્ષુ યોત્રીપુર્વે! યોગલબિનો ઉપયોગ કરતા નથી, ગેમ મહિંદ શ્રીહરિસદાયાર્થ 'ચેંચન દિસ્ત્રુસ્થ્ય 'માં કહે છે પણ વિશેષકર્શી લોકો, 'વિક્રેમાર્લ્ડીય 'માંની' હવ'સીએ હવામાંથી 'પાતાની હિમ્ચામિત વહે લોખપા ઉપસ્ત્ર કર્યું ગતે તે હપર રોખ લખી પુરું વા તામને સાક્યો હતો; તેમ શીઆનંદશનભાગે પાતાની પાસેની હિમ્મ હબિદાર્થી આ બહુ કહ્યું'! માંમ મનાવદા પ્રયત્ન કરે તો આપશે ગો માટે આર્ટલ્ય 'પાસીફા નહિં પણ એમણે એટલ્ટે વિશાસા બર્ય શહ્યું નેઈ એ કે, આપશે આ રીતે આ મહામાન્ય પુશુપોની ફૂર મશ્કરી તો કરતા નથી ને?

અમને પ્રસ્ત તો એ થાય છે કે, આવી ખાતથી શેળની કોલ્લું ? શુ આનં દાન છ એવા સાંભ્રાપેડના-ઇ)લ્વા મનના હતા કે તેમણે પોલાની આ મનાબત વાત બીના આગળ પ્રમેડ કરી! અને મશેપ્રિનિયાઝની બિનલાયકાત ઉલાડી પાડી! યરોપિયયથી વધા? પાત્ર કેમ્યું હતું કે જેના આગળ આ પેડની વાત તેમણે કરી કે, જેણે લોકોને તેની જાણ કરી!

અથવા એમ તો કોઈ હતું હહિ કે, કેઇ અનાયાંય જ્ઞાની આ ળત્ને પુરુષના છવન ઉપર અથથો ઇતિ સુધી પોતાના ગ્રાનો સતત ઉપયોગ રાખી રહ્યા હોય અને તે લોકોને કહેતા ફરતા હોય? આનો કોઈ સંતોષકારક બ્યાબ છે? વસ્તુલઃ આ વિશે એમાંથી એકેયે કોઈ કહું નથી. શ્રીસરોાવિબ્વજીનું આંતર અને કેફ હતું તે આ તેમની સ્થના જ તેમના પુલલા પૈત્રો એક્સર કરી લતાવે છે:

बागर्वि झान्दष्टिवत्, तृष्णाकुष्णादिवाङ्ग्वी । पूर्णानन्दस्य व्ह कि स्वात्, तैनवृषिकवेदना । ४४॥ ——तानावार-भूवोधन छिन्दन्वि झान्दावेग, स्वृहाचिपकवां युवाः । स्वस्त्रोपं च मृच्छी च, तैनवं यच्छवि यह फुट्टम् ॥२॥ —वानस्यर-४ १५८७४

[ા] પક્તિ સુખલાલજી કૃત 'ચોધા કર્યોત્ર થતો હિંદી અનુવાદ' પ્રશ્તાવના : ૫૪ · ૫૩

ર, કહે ચઢાકવિ ક્રાલિદાસ

स्पे रूपवर्गी दृष्टिद्धा स्पं विश्ववि ।

मज्ञत्यास्पा नीर्द्धा क्षं विश्ववि ।

प्रमानार्थ विदेष्टि प्रमञ्जाया तदीलावस् ।

अधानसरप्याध्येत्, नार्या केते मुखावयाः ३२४ — तानका-नारदिश्यः, विदे प्रमाना हृत्यः ।

विदे प्रनावि निर्मान स्वार्थमाः क्ष्मा नेदि निर्मिषः ॥४४ — तानका-परिवादः, स्वार्थमाः क्ष्मा नेदि निर्मिषः ॥४४ — तानका-परिवादः ।

विद्याने निस्त्रां कोत्रेतं, प्राविद्धा ने विद्यते दश्॥ नार्द्धस्तापि चेत्यान्यात् कार्वे कार्यवि व ।

नार्द्धस्त्राप्ति चेत्यान्यात् कार्वे कार्यवि क्ष्मा ।

वरस्त्रीः वर्षप्यापात्मपनादिपिः ।

वरस्त्रीः वर्षप्याप्तिविद्यान्द्रपनस्य कः ॥६।

निरमेक्षानविष्ठवा, न ते विद्याव्यवृद्धसः ।

पोगिमो महिलोस्डपाँचवपाँचवपाना ।(८।। — ગાનદાર-ખનાતમ સાટ-સ્મા ઉપર દષ્ટિ નાખ્યા પછી શું સમક્ષ્મય છે? તમે કહેશો કે અને સહુ કોઈ કહે છે-આ આનંદાનજી સાથેના—પાછલી વ્યવસ્થામાં—વંગેલા સમાગમતું આ ફળ છે; પણ તેમ નથી. આ એમનો યોત્રાસ્થાસભાધિત-આંતર સુખતા—સ્ટન્સફપ સ્થિતલા છે, તેજ 'દ્રશ્યાલુ-પર્યાં રસ 'માં' સહજૂરખા તહેઈએ છીએ. એમાં એમણે 'પાલંગ્લ-વે!ામદર્શન' મોના' સમાપત્તિ સ્વરૂપનો ખ્યાલ આ પ્રકારે આપણે છે—

> ' अस्मिन् इटयप्से सति, इदयसम्बतो युनीदः। इति बद्दगम्बिने च तस्मिन्, निष्पान् सर्वावेसिदिः ॥१॥ विन्तासम्बः परोध्सो, तेनेय मचति समस्तापत्तिः। सैरेड योगिगाता, निर्वाणकृता चुँगः। प्रोक्ता ॥२३

આ ગમ્મ તથા 'સાલી પણી ગળાનું આદન, 'લિન્નિલોય પ્રાથસંસ્તિના 'લાન દિવસ 'રો ગુજરાતી અનુવાદ અને 'સચલાહતક' સા દેગમાં પહેલા સ્વાપાનું અન્દરા ખીજા કેખ 'ડ્રન્પ (, ક્લિયાની સાત્યારી પા સર્તિત દર્શું છે

" एहिज इब्बानुक्रेम विचोर-क्रियामार्गभीहे वण-आदि प्रक्रिक क्यावन न्याने भगवंग नमार्थात हुई। "

સમા પ્રમાણે જે અનુસર કર્યો છે તે ઉત્તરોત્તર વધતો રહ્યો છે અને એ જ દર્શનમાં વધું પૈલા જાતુરમરા ત્રણાં શુધી પહેરાએ છે, જે એકતી ' યોગઢારિતિકા' મા તેઈ દર્શએ છીએ. આ નિલય ત્રેન્સ્ટરન, ત્રોમાંચિકતા, ' યોકામાંચ, ત્રોમાંચદાનુવ્યવ, દરિતવિસ્તર-જેવા જેને યોપગ્રેશ સાથે સત્તમતિતર્જન, તરાવાં વગેરે તદ 'સંશો અને વ્યવસારત્યું જ દર્શન અનેકાનેક સ્રશ્નોના પ્રમાણે આપ્યાં છે કે જેના ફિસાબ નધો. આ જ દિશ્તિ એમના ૩૫૦ આધાના સ્તવનમાં પણ છે (હાળ: ૧૫ માં સુનિયદાનું સ્ક્ષણ આતાન્યા પણી હાળ ૧૬ માં સુનિયદાનું સ્ક્ષણ આતાન્યા પણી હાળ ૧૬ માં સુન્દ નગતી વ્યાપ્યા પછી સામાવત્તિ ધ્યાનના અનુસ્ત્ર પણ તેમાં વધુ પેમો છે

જેઓ બાલ્યવરમાં સુનિ થઈ, સ્ટ્રસિહીંત ભરેલા વર્સ અવસ્થા શરૂ થળ ઉપાધ્યય સિન્યું માર્ચ વિકટ પાદવિહાર કરી કાશી વિદે લિલા અર્થે પહોંચેલા તમાં સ્વરેક ઉપસંચો-પરિપદા વચ્ચે પાતાના વારિત ધર્મમાં અત્રમ સ્ત્રી સ્વરે વિદ્યાત્રે પાતાના કરી હઈ છે લાખ વૈદ્યાં કરો કરે છે લાખ વૈદ્યાં કરો કરી હઈ લાખ વૈદ્યાં સ્વરે પાતાના કરી લાખ લાખ પત્ર કરવાર સ્વર્ગ સાસાના દર્શને આપ્યાં, તકે અને કારુમને વર આપ્યો તથા લાખ પત્ર કરવાર રેવે કરી એવા સરસ્વ તીના લાહીલા સુવ અને સુકીતંત્ર કરનાર સુકિયએ વેનકૃત તકે અહ કરી એન તરસ્વાનના સુક્ષ ગરુમાં અને માર્ગ તૈયાર કરી મહામદાં પાત્રામાં પાત્ર વર્ષા પત્ર તર્વા સાસાના દર્શને અનિત-સુરાં અને માર્ગ ત્યાર કરી મહામદાં પ્રધાન વાત્ર કર્યા સ્ત્રિય સામાના સામાના માર્ગ ત્યાર સામાના સા

આ માટે ' યોગદર્શન 'માં વ્યાસકત સાધ્ય તથા ઉપાધાયઝકન પ્રતિ જેવો.

ઋા સર્વેશ ઉપર ગ્રેગની ડીકા છે. બીલ્લ સર્વેશના આધારે 'વૈદ્યાવિશિક્ષ, દ્રાર્ટિશ દ્રાર્ટિશિક' વગેરે રચ્યા છે આ સમલ્યા ગાટે 'પાતલન-વેદ્યાદર્શન ' યાનપૂર્વક ગેલું ગ્રુખ્ય આધાર તેનો છે.

³ માત નચાને કૃતિ દ્વાર જિસ્લાસને તાલ, જે સરકાલ પદ કરી પૂલુ શું મત લાજ. (૩) મનક પાસ્ત્ર સત્તનું લાવિલનો દિલાદેલ, કરતાં મુજ મંત્રલ હતો એ ભારતી મકત, (૫)

^{—(} જંખૂરવામી રાસ)

" મુજ મન અલુ મોદે લક્ષિત છે, છાઝા રી રે તેહ દરિના તું છે માછ રે; યાગી પણ જે વાત ન લાધે રે, તેહ અચરિજ ક્લુલી હુંગા તાણે રે લધુ પણ હું તુમ મન નવિ માતું રે, લ્વાગ્રું તમને દિવસાં લાધું રે; મમ્મારિજવાલે અચરિજ કીંધું રે, ભક્તે સેવક કારજ શીધું રે." — સાવિવિધિજ સ્વતનાથાં)

વાચક શીચરોાવિજવાગની' કથી ઉપરથી વસાવરહ્યું કૂર રહ્યાં એમની ચિત્રમૂર્વિઇં કર્યાંન તો શયુ પણ ' એમના અંતર કર્યાંન માટે હત્યું એક પટ અસ્ક્રેકવાની કરફર હતી. એ કાર્ય મેં આ રીતે ચથાશકિત, ચરામતિ કહ્યું ' કે અને એ રીતે જે એ કૃતદેવતાની મૂર્તિ પ્રત્યક્ષ શ્રદ્ધ ³ તેના ખ્યાહ આપુ છુ.

" इयम्चित्तपदार्थे।श्चापने अञ्चकोमा, ग्रुथ्थनहित्देह्यमीवनापुरुपवाटी । अनुदिनसित एव ध्यानपुरुपेस्दार्रभेवस् चरणपूजा सैन-वाग्देवतायाः ॥१॥ "

સમ રેક જન પાસે પાતાનાં કુલ નહિ હોવાથી-આ ચેમની શુવવાટિકામાંથી યૂટેલાં પુત્રપત્રકે પૂત્ત કેવુ હું અને ભક્તિથી ઉભારતા ફાલ્યે નવમસ્તકે વર્કન કરી કુતાર્ય શાઉ હું.

[े] प हुंबतावयी—कामसारि जयमेको पायक बारी है स्वका वर्ष पूर्वित काई पहेंचेरी ही ग्येश-माणार्थ कामसारिको पूर्वित्त काने सह्वातरे लाए हैं (शतावित्रेयक-परिचय वृक्त १८) मेरो(विक्यक १७ जे ४ कार्ययां वायक दता लेपी जाने जीना कार्या विशेषों सेसी जो वायर है

२ समधिनेन्न वैर्वदमोती समक्षत्रको । क्षान स्वविधान व वावनवीरिय श्रेषे !! हरवानि-वीकुन्वद्रीकाञ्चनतस्वर्षेऽञ्चेव कार्ति ॥ १ श्र रास वाळ, ५, ८ वाका २५ में। गावानवीर

तपाश्रुतास्नासक क्रियाकाणि क्रिय्यते । शाननाझानसक्को विष्क्रकोडिय क्रिय्यते ॥५॥
 —दानसार-निर्धेपाष्ट्रः

કર્યાં ત્માં એ પોલે અને કર્યા લોક દ—

એક અક કાર વ્યવસાર ભધાન, શુકતમને કહે હાન એપ છીના..(સ્પન ગાયાનું રત હાય ૧૬-૯) ર દ્રમ્પણાયામાં રાક્ષ્યા-અસીર્યંગન પછી આપેલું ક્ષ્માં વાપાર-ને શ્રાંત્રાપા રુકે તે હવેલા છે તે સારાયુપ સાગ્ય તેકનો-ત્તાસુપારલ વિશે ...લી સ્થાંત અધ્યન્તની એકલા નામ જિલ્લાનું અર્ધ-તેક એ સામ્યી .જીન્નને લક્ષા લોક, સાર્ત્યાંગિતિક આરંપાંગ્યું સ્વત્યના ઉપલક્ષાનું આપ્ય ખાલાર તેને-ત્યાલિક સુપ્તાન-એ ક્ષ્યાસાને તેકની સાથે સ્થાપ છે સારાયા સુધને વ્યવસને વ્યવસને ૧૯લામાં અલ્લાસ્થ્રી સ્વાન-એ લ્યાસાને તેકની સાથે સ્થાપના સ્થાપના

ન્યાયાચાર્ય શ્રીયશાવિજયછ

એમની ગૂર્જર કૃતિઓની સાલવારી [લેખક : શ્રીકૃત ગાસ્વનદાસ વીસ્વ'દ]

ઉપાધ્માય શ્રીયશેલિન્યજીના છવનનું સપ, વક્લત સાક્ષર શ્રીમોહનલા ક્રદીયાં કેસાઈ અને પંતિત શ્રીસુખલાલછ તથા પુસતત્વેત્તા શ્રીજિનિકન્યાછ જેવા દેશશક પ્રતિશિત દેખકોને લાહ કરતાં સર્વ કાંઇએ હોહપ્રચાલિત લાતો અને પોતાના અનુમાન પ્રસ વસ્તુને કેવી રીતે આવશે લે છે તે અપ્ત અમાઉના " એમની ખૂર્તિના અનાવસ્તુવિધિ" ત્યાર્થ પુસ્તાર કરી લાતાલ્યું છે. હેવે અપ્ત આ શળમાં સેમના ગુજરાતી વેશેના ત્રી ત્યાર્થ લેશી લો સાંત અનુસ્ત્રાન પ્રસ્તાર કે એમાંથી એમના છળનાને કેટલાંક અ કૈડા આપણે હેતી શાંકિએ એમ છીએ. આ ભિષ્યની સર્ચા લપ્ત શ્રીશો.

"ऐ विकास सन्दर्ध, अक्षावां सर्वाध्यं, वृद्ध है । इवका इपेह्सस बनी तर वो कुछ प्रवासित हुना है वह वर्षात गई। है। इवके विविध इतिहासके किये इनके सभी प्रेरीका सांतोपांग यार्राक्षित साथ व्यवकोकन वावस्त्रक है । इसके किये समय जीर त्यास्थ्य पश्चिए, वो सभी तो हमारे मार्यामें नई। है तर कमा प्रेरीका सांतोपांग यार्राक्षित साथ व्यवकोकन वावस्त्रक है। इसके किये समय जीर त्यास्थ्य पश्चिए, वो सभी तो वावक-पश्चीविवका परिवय इतने हीनें कर केना चाहिए कि उनकी सी समन्वय शक्ति एसनेवाल, कैन वैनेवर मीक्टिक स्थानित वहाँ होई कर केना चाहिए कि उनकी सी समन्वय शक्ति एसनेवाल, कैन वैनेवर मीक्टिक स्थानित वावस्था अक्षाविव करनेवाल, योक्षीय व लीकिक मापामें विविध साहित्य स्ववस्त्र काम प्रेरीका करनेवाल सी सिव्ध साहित्य स्ववस्त्र काम प्रेरीका सी विवध साहित्य स्ववस्त्र काम प्रेरीका सी किया साहित्य स्ववस्त्र में सिव्ध साहित्य सावस्त्र सिव्ध मी सिव्ध साहित्य सावस्त्र सिव्ध मी सिव्ध साहित्य सावस्त्र सिव्ध मी सिव्ध साहित्य सावस्त्र में सिव्ध साहित्य सावस्त्र सिव्ध सी सिव्ध सावस्त्र में सिव्ध सावस्त्र में सिव्ध सावस्त्र में सिव्ध सिव्ध निव्ध मी सिव्ध सावस्त्र में सिव्ध सिव्ध सिव्ध सिव्ध सिव्ध सिव्ध सिव्ध सिव्ध सीव्य सिव्ध सावस्त्र सिव्ध सावस्त्र सिव्ध सिव्ध सावस्त्र सिव्ध सीव्य सिव्ध सीव्य सिव्ध सीव्य सिव्ध सीव्य सिव्ध सीव्य सिव्ध सीव्य सीव्य

ही है, पर इसमें एक नहीं कि कोई नीह व्या कोई वैद्धिक विद्वान बात सक ऐसा नहीं हुआ है जिसके प्रश्यके अवलोककारे वह बात पढ़े कि वह वैदिक या बौदशाबके उमांत कैन शासका भी बारतिक गहरा और सर्ववाणी जान सकता हो। इसके निकरोत उपाव्यावको कैन से इसक्षिय जैनशालका गहरा जान तो उनके लिये सहब वा पर उपनिषद, दर्शन बादि वैदिक प्रश्वोक्ष तथा बौद प्रश्वोक्ष निकास निकास कि प्रश्विक वैद्वान अपने अपनी बादि के साथ किनका ही परिणान है।

ઉપાધ્યાયજીકૃત વાતસક-પોતાવર્શન-સૃષ્ઠિ, તથા ફારિસદ્રી યોગાંવિંગિકા-ટીક્સાનું હિની સારસહિત - વિકેખ સંવત્ ૧૯૭૮, ઈ. સ. ૧૯૨૨ માં સંપાહિત શ્રવમાં તેના પરિસ્થ આપતાં પહિત સુખલાસે જે લખ્યું છે શે ગોગાના સુજવાની ઉપસંત સસ્યુન, પ્રામૃત સાહિત્યના અવગાહતની ભારે અભાવતા સમલ્યવે છે. પછુ શ્રે કહ્યું કાર્ય પરિતજીના અધિકાસ્તુ જ હોઈ ગોમાના માટે સહેલા દર્શસું.

ચેરમું છવન 'સુઝવવેલી લાસ' નામની ગુજરાવી પથકૃતિમાં સામાન્ય રીતે સંગ્રહ્માંચેદ્વ મળે છે,' જેના કર્તા ગુનિ શ્રીકૃતિવિજય કે જે તપત્રચ્છના શ્રીકૃતિ(ત્રિજ્ય ઉપાધ્યાપના શિત્ર ક્રીલિન્સન્જિન્શ કપાધ્યાપના શુરૂલાતા હૃત્ય ચેમ મનાય છે. ક્રોલિન્જિન્જે આ શુરૂલાતાના સંબંધ પોતાની 'સેવેગરસાયન બાલની' નામની પશકૃતિમાં બતાઓ છે.' તેમ શ્રીબિનયન્જિન્યો પાધ્યારે 'હૈમહશુપક્રિયા' બ્યામ્યયુ કેવિ ક્રોલિન્જિય માટે બનાન્યુ

પ્રસ્તા પ્રાપ્ત થતા પ દિલ્લાએ ઉ૦ વર્શાવિજનાલ માટે એ શબ્દો કહેવાની ઇચ્છાને રોકી નથી.
 પ્રેસાના કેટલાકનું વ્યવસ્થાન પર અગે આપ્યું છે

ર થી. બ્રિક્તનાલ દ તેમાર્કના સ ૧૯૮૦માં 'જૈન ગુલ્'ર કવિના' શર ર પ્રક્રિક્ત કરેયું. ત્યારે વેમને ફ્લકન્દ્રકક 'શુખ્રવાનેથી લાસ'ની પ્રતિ મળેલી તે મ્યાયારે તેમણે ચોકું લગેશે, પછી માંખી 'શુખ્રવામી લાસ'ની પ્રતિ મળતા તે સ ૧૯૯૦માં પ્રદિલ કરી, ત્યારે તેમણે નિયતપૂર'ક પોતાનો મત પ્રતિકૃતિ કર્મો

^{3.} ગીબ ક્રાંતિજિલ્લ તપુરમ્પાના ગીવિલ્લેગ્રાલકરિના વિષ્ય પ્રેમવિલ્લના ક્રિમ્પ હતા તેમણે મેં દરિસા મામારા મુંદે ૧૧ ના વિરો મેં બ્લિકારી ગતાલે ગોમાંના મેંગામાં વર્ષો, ''સદાયાન-મામારા રોકા' માં 'ભાગમાં તેમાં મામ તિક્કો મામારા, તાલ મેં . પામના ના મામારા મુંદે ૧૫ કેલ કેલા સાથા ' સૌદારામાં, ભાગમાં ' લેગેરે સ્તવતો સાથે કેલાી સાલામાં ' સૌદારામાં મામાં મામાં મામાં મામાં મોં કે સ્પેપની સ્તિમારા પાપણ લેગે છે (હેંગ ન્યૂ. ક લા ૧ પૂર્ષ ૧૫ ના મામાં મામારા મોં કે સ્પેપની સિમ્પારા પાપણ લેગે છે (હેંગ ન્યૂ. ક લા ૧ પૂર્ષ ૧૫ ના મોં કેલાનો મામાં પણ લેગો લે (હેંગ ન્યૂ. ક લા ૧ પૂર્ષ ૧૫ ના મોંકારીશ કરીય મામાં કેલાનો મામાં વિરામ મામાં મામા મામાં મામા મામા મામાં મામાં મામા મામાં મામાં મામા મામાં મામા મામા મામા મામા મામા મામા મામા મામા મામા મામ

શ્રીસુરુ હોરસૂરી દના, ચીક્ષીદિવિભય ઉત્રત્સાર, તેનના ચરેષ્ઠ સુપેસાચવા, મેં ક્ષેપો ગ્રેહ સેન્ક્લાય ગુરુસાતા સુરુસારિઆ, ચીરિનચવિભય ઉત્રત્યાય, શ્રેષ્ઠ ખે લાખ તેનુષ્ઠે કર્યો, વાદી મદ લાલ્યનાર.

તે સાથે પાતાના સંગધની **હડીકત** પણ કહી છે.⁹

> " શ્રી મેશાવિજય વાચકતવા હું તો ન લહું યુવ વિસ્તારો રે; ગંગાજંગ કહ્યિક થકી, ગહુના વ્યક્તિ ઉપગારો રે. ઘરન સંસ્થ સ્થાવાદના, બલા નિગમ આવ્યા ઘંભીરો રે; ઉપનિયા જિલ્લ વેદના, જ્યા કરિ ન લહે કેઇ કીરો રે. શ્રીતલ પરમાનીસી, શ્રુચિ વિપાસ સ્વરૂપા સાથી રે; છેલુની સ્વના વિક્રિક, સંસ્થા જ્યા સેરે સાથી રે. લા બાંધ્યો હરિસારો, કહિશુપમાં જો થયા બીજો રે; લા બાંધ્યો હરિસારો, કહિશુપમાં જો થયા બીજો રે; લા બાંધ્યો હરિસારો, કહિશુપમાં જો થયા બીજો રે સ્વેગી સિર સેક્ટી, કહિર શ્રાનસ્પાણના હરિયા રે; મ

આ દ્રવિમાં જણાવ્યા પ્રભાશે ઉપાધ્યાયછનુ સં. ૧૯૪૩ ના સ્ટ્રેશિકના ચાપાસામાં સ્વર્ધામાન ઘષા ૧૯૬ પાટના સંવત અવિભાગકારી ગા ડૂવે લત્તી છે, રેની સાર સફવત સ્ટ્રીકોન્કતાલ દ. દેવાઈ સં. ૧૯૪૫ આસપાસ માને કે.⁵ સેટ્સે તેની વિધાનીમાં ચિ. કર્યી શંકા સ્ટ્રેલી તથી

कान्ति वेजवास्वर्गणिनः, पटनकृते कृतिषयः सतीर्घ्यस्य ।

चिहितोऽयं यत्नः सफ्तळः स्यात् सर्वप्रकारेण ॥

મ્મા મચ સ્ત્રોપગ રીકા રહિત સ. ૧૯૧૦માં ગધનપુરમાં બનાઓ છે સ. ૧૯૧૮ની દ્રાંથ-પોલીમાં આ વ્યાક પ્રવૃત્તિ સાથે આપેલા છે. જેનેલર્ગ પ્રવૃત્તિક સલાએ આ વ્યાક્તમ ૭૧ વ્યુ છે તેમાં આ પ્લાક નથી

ર. જા ટેલસેપણ લેપ એટલે તોત્રણે લેપિત ≣ેકેતે હભુ સુધી બ્રુસાયો નથી કે વસાયો નથી ઢ. "જેત મુજે ટ્રિએસ" લશ. ર. પ્ર.૧૮૧.

જયસોમ પહિતાં કે જે તપજાસ્કૃતી પદ મી પાટે રૂપેલા આતંદનિયળ, તેમના સોમંપિયલ ઉપાધ્યાય, તેમના પાઠક હાંપસિમ, તેમના ચારસોમના શિવ્ય હોઈ જેમને 'ભાર ભાવનાની ૧૨ સન્જીય' 'ભાવનાવેલી' સં. ૧૭૦૩ જેસલપેરમાં, 'ચોંદ ટ્રાયુ– સ્થાનક સ્વાધ્યાય' આ પલકૃતિઓ સાથે ૭ ક્રધ્યોસ્ત્રેના ૧૭૦૦૦ જેશાક્યંપ્રા જેટલો (ચાંદ) ખાલાયગોધ' સં. ૧૭૧૬ માં લખ્યો છે. તેઓ તેમજ બીજા અનેક ગ્રાયુસ પંદિત સ્રુનિઓ જેમના અર્ટાય ચસ્ત્રુ સેવે તે ચર્શાવિજયા કેવી મહાન વિજ્ઞૃતિ હશે તેની ક્રધ્યના કરેરા. શ્રીતિનાયિજય ઉપાધ્યાય જેમની ગીતાર્થતાનાં અહુમાન વાચક શ્રીયશોવિજયા છે જેતો 'સ્રીપાલ સાસ'માં કર્યો છે, જે રાસ ઉ૦ વિત્યાયિજયે સ્વતા સ્વતાં અર્ધુરા સ્ત્રુદે જેતો હતો તે પૂર્વ કરવા ૭૦ ચરાવિજયા ભારાયલ કરેલી તે હપાંચી તેમણે પૂર્વ કરી, જેમાં તેમણે પોતાની ગ્રાયુન્ટાપિતા પ્રબર કરી છે.

ઉપાધ્યાય સાનવિત્વ, જે જેંગા તપગલ્છની અહ્યુસર શાખા, જેમના નામથી આંબખાઈ તે દર મી પાડવાળા વિજયાન કર્ણાસ્તા શાવ્ય શાંતિવિજય મહિતના શિવ્ય જેમણે દર મી પાડવાળા વિજયણ જરૂરિના સત્વરમાં 'નચવિચાર, ચાંત્રીની, સુચલિ-કૃચલિ (જિન્દ્રપ્રતિમા) સ્તવન ' તથા કેટલીફ સંજ્ઞાયે વગેરે લખેલી." તેમણે પોતાના 'ધર્મસંગ્રહ' ગંધ પ્રશેન

વિજય પાસે તેમને <u>અ</u>તકેવલી માની શોધાવેલા.⁸

૧ પતિ સુખલાલ્ટલ્સ સેમના 'કર્યંત્રમ' ઉપરના વિસ્વનમા શરિ કર્યા છે. તેમતું કર્યંત્રમાં ફિર્મ શરી છે. તેમતું કર્યંત્રમાં કેટલું ક્રેકુ અને આપક હતું તે તેમણે કાર્ય-પ્રવિક અને સૈલિક અલ્લેક્સ વિષયમાં જે શક્ય આવે! આવે!આના કરી છે તે છપાથી જણાઈ આવે છે. ગયા તેમો પ્રતિ સુખલાલાઇએ તારવી છે ગાલાવગોધની પ્રવસ્ત પ્રતિ તેમતા જ સિલ્મ કલ્વાલસીએ લખી હતી.

ર શીમાનવિજય તપાયભાના વિજયસિંદરિતા લિંગ લગવિજનના લિંગ ક્ષેપી, 'શીપાર રાષ્ટ્ર સ. ૧૦૦૨ (૪) આસો સ્કુર ૧૦ સોક્સારે પીલગલમાં લગ્ગો છે, જેની શીચાલવંસે સાહપુર ૨: ૧૦૧૫ ધૈમાખ સુંદિ ૭ સુધૈ-સચિત્ર પ્રતિ પત્ર ૩૧,૧૬ સે લા. વડે. ત. ૧૧૦૫ છે, પણ આ જ્ઞેપાયાન તપી.

ક 'સુપ્રતિ–ગુમતિ રત» ના અંતે તપાત્રજ્ઞાન-લક્ષાર થોવિષ્યાય સ્વરિત્યા પતિ થોજાતિ રિઝપરિયુ દિવ્ય મહેત્યાંપાય-પતિક્રોત્રાણ પ્રામાનવિષ્ય ગોલા સન્નાય કરીયો-તેકતો હગાઈ પશ્ચિ પત્રમાં જનતી પ્રામંત્રણ, કે ગીમાનવિષ્યાયણિએ વળ્યો, સ ૧૯૦૦ તેને સુદિ પ રથી લ શીવિષ્ય-પત્રત્યું-નાત્રને સત્ત્રત્યાય સં, પેમાર્ગ કિંગલ પાત્રત્ય સામે સુધ્યાણો પ્રતિવાતિયો વર્ણયારે, સમતોમં . લખતિન (પ્રમારામી પાર્યસ્ત્રત્યો પહાલી બેલાલ ભગ્ન લ્યો.)

४ सप्तर्कं प्रदेशियाऽस्किद्दरीतु, गुर्केन्द्राविकस्ताराक्यस्त्रपृष्टीः । साला निक्तिः पर्युविक्तपेरीऽत्या, विक्तारितकरकैन्त्रप्रधाना । एक्स्मान्त्रपृथ्यविक्तेत्रेत्र, ब्रेट्सीयादिव्युविकृतिकित्त्राः । प्रमुक्तिविक्यसम्बद्धाविक्तु। प्रजेऽत्र सम्बुवकृति परिवोधनायैः ॥

ાં.), પ્રમાણ, ત્રાનુ પુખ્યવાલું જેયા છે ત્રેના વિચેનન વો જેમણે અવાલના પ્રતિઓનું ગુપરિવિષ્ણું પ્રમાણ 3 એટલે પૈતાના તાનવી જાતદ્યી ત્યાંયું છે કે વ્યાલના સુધારતી આવા ક્ષેપ એવા અને વાચમનુકામાં મુખ્ય સ્ત્રોલિકને આ ત્રાગમાં પૃત્યિલન વ્યાલની ચારા ઉત્ત ઉપકાર કર્યો છે. —(ધર્મસાન સ્ત્રાનામાં સ્ત્રન ૧૦૩૮—દી પ્રકૃતિ) શ્રીનયવિષ્ય, જેવા તપમચ્છાચાર્ય શ્રીવિજયપ્રકારિયા આગ્નાથી સં. ૧૯૪૮થી ૪૯ માં મહિમાસામરપૂરિ પાસે આવાર્યપાલી વેળવી ગ્રાંહવિવહાર્દ્ધ છત્તેલા, તેમણે ઉ૦ યરોવિજયદ્ધ 'શ્રોયદ્ધાર સહત્રાય' તથા 'સાહી ત્રવસે આવાતા સ્તવન' દયર ભાલવચાલ લખેશો, અને પાછળથી ખરતરાજ્યાંય શ્રીદેવવંદ ઉપાધાય સાથે 'શ્રીપાલ સાસ'ની યરોવિજય વાત્રકહુત પાછલી છે હોળાની 'નવપદ પૂર્ભ માં સેયાજના કરી હતી. આ ગ્રાંત વિચારપૂર્વિતા સં. ૧૯૯૪ માં જન્મ, સં ૧૭૦૨ માં હીલા, સં. ૧૯૪૨ માં પાંતિપાલ, સ. ૧૯૯૮ (એક ખીલા સત્ર પ્રમાણે ૪૯)માં આચાર્યપાદ અને સં. ૧૯૮૨ મા ખંમાતના ચોમામા દરમિયાન-ભાસો લક્ષ્ય સુવાર ૮૯ વર્ષે ૧૯૫૫ થયો. એમણે સત્રતન, સ્તજાયો, શ્રોયો ભગેરે વર્ષુ લખ્યું છે.

'જપસામ ' ગાશિયી આપણું આડલી વ્યક્તિએકોનો પત્તી મેળવીએ કોંગે, પ્રથભ કરતાં કહાય બીભાવે ઘણા પડી આવે. તો કે એમના સમયને આવશેને ઘણા પ્રસિદ્ધ-અપ્રસિદ્ધ-પંતિ સુનિઓ છે. તેમના ઉ૦ ચરેશોલિંગ્ય સાથે કેવી રોતના સંપંધ હેતા, એ કહી શક્યાંનું કોઈ પણ પ્રભાણાનું સાધન છે કે કેમ એ એક શ્રેશમાં, નિષ્ય છે. પણ એ રીતે આ લેખને લભાવના ઇચ્છા નથી. છતાં એક વાત કહી કેવી તેઈએ કે-ઇચ્ચીણ ઘણા હતા-એને આટે કોર્તિજિંગ્ય હૈયાની વરાળ કહતાં હશે છે.—

" હતા અચારથ ગુણ સુધિ, કરિયણ સુધ મત ખીજે રે. "

ઉપાધ્યાય શ્રીયશેલિજ્યા નો ગુરૂપરંપરા-જ્વાત્ ચુકુ શ્રીક્રીપવિજ્યા નાય કરવાલું વિજયા શે શરૂ થાય છે. તેઓ ગુજરાતના પાલપહીના પ્રાખ્ય શે સંવર્ષ સ્થાપના પ્રાપ્ત માન્ય કરવાલું તે હવે સામ છે. તેઓ ગુજરાતના સુલતાન મહસુદસાહે (૧ હો દેગદા) પ્રાપ્ત શેર રાજપી, તેના પુત્ર લિરપાલ સુજરાતના સુલતાન મહસુદસાહે (૧ હો દેગદા) પ્રાપ્ત શેર આપતા તે લિપાલ માં સંવર માં ભિન્ય દિવસ થોલ હાલપુર પામ લેટ આપતા તે લા લાવો પૂંછથી ઢાંકરથી ઢાંકરો પુત્ર માં ૧૧૧ લા લાવો પૂંછથી ઢાંકરથી સ્પત્ર માં ૧૧૧ લા લાવો પૂંછથી ઢાંકરોને સુત્ર માં ૧૧૧ લા લાવો પુત્ર માં ૧૧૧ લા લાવો પૂંચ માં ૧૧૧ લાવો પુત્ર મામ લાવે પ્રાપ્ત માર તેમને સ્પત્ર મામ સાથ્ય હતી અને લતા મામ તેમને તે પાસ મામ સાથ્ય સાથ્ય સાથ્ય હતી અને લતા મામ તેમને સાથ્ય પાસ શક્તા તેમને સાથ્ય પાસ શક્તા તેમને સાથ્ય પાસ શક્તા સાથ્ય અપાસ સાથ્ય મામ અધ્યવસ્ત્ર ચોલાલું પરિતોને જન્મા હતા. હાલના વ્યપુર-સમ્તના તૈરાત્નામાં આવ્યા અપાસ આ આવાના આધારો માં મામ પાસ સાથ્ય પાસ શામાં પાસ સાથ્ય પાસ સાથ્ય પાસ સાથ્ય પાસ શામાં પાસ સાથ્ય મામ કરવાલું સાથે સાથ્ય પાસ સાથ્ય મામ કરવાલું સાથે સાથ્ય પાસ સાથ્ય પાસ સાથ્ય મામ કરવાલું સાથે સાથ્ય મામ સાથ્ય સા

૧. 'પ્રાચીન લેખ સગ્રહ, ભાગ ૨, ન ૨૦૬, સમાગ્યોત્રિત્ય

લીધા હતા. ^ર તેમના શિષ્ય ભાભવિજય વ્યાકસભ્યસમાં હતા. રે સ્મકળર માદશાહતે भगवा श्रीहीरविक्यसूरि पेताना १३ साधुको साथै वरेता ते चैडी कोड हता.

આ પંડિત શ્રીલાભવિજયભના-શ્રીજીવવિજય અને શ્રીનયવિજય, જે વાચક શ્રીયશો-વિજયના અનક્ષમે કાકાગુર અને ગુર ઢાઇ તેમના ઉપર એકસરખા શિધ્યભાવ રાખી કાશીના અલ્યાસ માટે પ્રળંધ કરેલા, જેના સ્વીકાર તેઓ ' હવ્યગ્રહપર્યાય રામ ' (આઠી ત્રક્ષસો ગાયાના સ્તવન ' વગેરમાં ઉપકાર સાથે કરે છે. આથી ર્સિવિનયનિજય, રેટ્સ શ્રીક્ષીરવિજયસરિના શિષ્ય કીર્તિવિજયના જિલ્લ-તે યશેલિજયજના કાકાગર દ્વેલાની અને સાથે કાશીમાં અલ્યાસ કરવા જવાની ઘર કરી એઠેલી માન્યલા હધી શકતી નથી ક

આની વિશેષ સર્ચા ભાગળ અને વાચક શ્રીયશોવિજયભના કાશી અભ્યાસકાળની માલાયનામાં કરીશું. એ કે આ વિશેની કેટલીક વિચારસા અમે અમાસ અબાઉતા લેખમાં તા કરો જ છે.

સ્માટલી પર્વ બ્રમિકા પછી હવે આપક્ષે એમની સુધ્યત્વે સુજવાતી કૃતિથોની સાલ-વારી તપાસીએ, એમના ગુજરાતી સાથે–સંસ્કૃત, પ્રાકૃત વધા લઈએ તો કાલકરે સાર ellai uz &-

- (૧) કાશીમાં અલ્યાસ કરવા હતા પહેલાંના ગ્રેશિ.
- (ર) કાશીમાં ઋલ્યાસના પરિણામે ત્યાયના લે હાખ વ્હાકા યા ૧૦૦ શ્રંથ ત્યાયના ભયા, જેના કાસ્ક્રે તેમને શકાચાર્ય તરફથી ત્યાયાચાર્ય પક્ષ્મી અપાઈ પ તે તરા ત્યાં રહી યન્ય રચેલી કૃતિએક તથા વ્યાગામાં રહી કરેલી કૃતિએક
 - ૧ 'ઐતિહાસિક સસસગ્રહ ' ભાગ 🕮
 - ર પ્રત્ મીક્કાક્કવિલય વાગકિત, જીતમાકરવાદિક લક્કમથિ, નિતાઈ લય મંતિ લાગી --(લભ્ય સાય મારા માથા રહ્ય)

દેમગુર સમ વડે શબ્દ અનુશાસને, શીસ તસ વિશુધવર લાલવિજયો –(૩૫૦ ગાથા સ્ત૦ ઢાળ ૧૭ ગા. ૧૨)

- રૂ 'સરીશ્વર અને સઝાટ' મુ ૧૦૨
- પ્ર થ્યા મર્ચા અમે અમારા ળીજા લેખમાં કરી છે. અહી અમે બીજા પ્રમારોક રજ કરીએ છીએ 8યાંષ્યાય વિત્યવિજયના પિતાનું નામ તેજપાલ અને માતાનું નામ રાજમી તેમસે સં ૧૭૧૦ ના વ્યાપ મુદ્દ કુ તે સુરવારે શત્ર જવ ઉપર દયસેન (આગ્રા) નગરવાસી એસપલવાતીય પ્રદેશામીય અને <u>ક્લા</u>ડ-રાત્રીય સાત્ વર્ષમાન (અને વાલ્ડાદે) ના પત્ર સા માનસિંહ અને જીભ્યુદાસ પ્રમુખ પ્રગાદિ પરિવાસ્થદિત पेताना पिता (वर्डभानोना वयनयो तेना प्रदेश भारे जा सहस्रहर तीर्थ उगन्य अने पेतानी ex પ્રતિક્ષમાં પ્રતિક્રિત કર્યું તપત્ર-કાયાર્ય શ્રીદ્ધીયવિજયુરિના પટ્યર આયાર્ય વિજયસેનસરિના કિલ્લ विकयहेदार्शि अते विकयभाषार्शिती आधारी हीरविकयस्टि शिष्य महोत्याच्याय मीडीतिविकयम्भिता શિષ્ય જેપાંધ્યાય વિત્યવિદ્ભવે એતી પ્રતિકા કરી-આ લેખ પગતાવસથી દ્રેડમાં શેંક તસ્તી દેશવાછતા મહિરના મર્સાગારની જ્યારના મડ્ય-૪૩ પક્લિમાં કેલ્ટેલા છે (ભાગાઃ લેળાંક ૩૨, 'પ્રાચીન લેખ સગ્રદ' ભા ર, શા જિનવિજયજી સંપાદિત)
 - ૫ " ત્યાયાત્રાથ" પદ અપાવનાર આ સા ગ્રંથા કથા લેવો હજા સુધી કાઈ પણ પત્તો સળતા નથી .

- (૩) કાશી છેઠવા પછી વિ. સ. ૧૭૧૮માં વાચકપદ મન્યું તે પહેલાંની કૃતિએા.
- (૪) તે પછીની કૃતિએા.
- (૧) પ્રથમ વિજ્ઞાગની કૃતિઓ નહતી કરવાનુ કામ જાવું કહેલું છે. એમનું ગુંજેર તથા અન્ય ભાષાનું સાહિત્ય જાવું પ્રખ્ર શર્ક ચૂક્યું છે, દેટલુંક અપગ્રહ્મ છે-જેમાં નામ જણાયાં છતાં હાથ નહિં વહેલું અને અન્ય રીતે અહ્યાત રહેલું પણ એમાં સાગ્રેલ છે. વિશ્વપ્ત થયેલા લાગ પણ ઓછો કચાંથી હોય ? છતાં જે કૃતિઓ ઉપલબ્ધ છે તેના અલ્યાસથી કાંઈ ફળ-પ્રપ્રિપ્ત થયે તો ખરી જ.
- (૨) બીજા લાખના પત્તી નથી. તે કવાં જારો અને તેતું શું શર્ઢા એક એઠો કેટ ક્રેપરેત છે. કદાચ વિહારમાં સાથે ફેસ્સ્વાનું અનુકૂળ ન હોવાના કારણે કાશીના એન ઉપા-ક્રયમાં કે આચાના શાસસ સંક્રમાં સામેદ કર્યો હોય.

" ચેતન માહેકા સંગ નિવારા, ગ્રાનસુધારસ ધારા ! "

આ ૫કિત નીચે કિગંભરીય પંતિત ભનારસીદાસના 'અસયસાર' નાટકમાંની ૫કિંદ ચાને આ પ્રમાણે મુદ્રી કે–

" તે શે' જસ સત્તા સર્ધીરે, એક ભાવકા દ્વાય. ૧૫.¹¹

રમાં છેડલી પંદિતપૂર્વક સંયોજિત કરેલું પદ-વાદ્યામાં સંભવત અનું હેપ-'રમખાત્યમતપરીક્ષા'એ સંસ્કૃત બંધ કર્યા, ક્યારે અને કેવા સભિયા વચ્ચે બન્યા, તેનો પરામર્શ્વ આ સેળના વિષયની લહારોના છે.

- (3) ત્રીજ ભાગ માટે આપણી પાસે સાધના છે.
- જ્ઞ દ્રવ્યાશ્રુપથીય રાસ-ગા રાસની ગ્રહમ ગતિ સં. ૧૭૧૧ ની એમના શેઠ શ્રીનધવિજય પંતિ સિલ્સુરમાં હળેલી મળે છે. આ રાસ એમણે શ્રીવિજયસિંહેરિંગ ગણાધિપત્ય કાળે 'તોહની જે હિતાચિક્ષા, તોહને અનુસારે' સ્ચલ, તથા કાશીમા અલ્યાસ કરવાનું, ત્યાયવિશાસ બિર્ડ્ડ યામ્યાનું, 'ચિંતામહિ' ત્યાયશાસ્ત્ર સહ્યવર્ડ, વગેરે હઠીકત આપણને એમાંથી પ્રાપ્ત સાય છે.

હાલમાં મરો છે તો ત્રામ તીની બધા તહીવી આ દેશમાં આવ્યા પછીના સ્થેલ II દાતીમાં મેડે પુત્તન એન્ટ પણ હશ્યુ સુધી હત્યભા થયુ વધી " (તે. ત્રું ક જ્ઞા ૨-વર્શીવરના) ગેર દેશાર્ધ સત્યાસીને પ્રગત્ય કરવાની એ વિભાગાર્યિત હશે 'નગપેસો પાર્ચનાયની ગૃતિ' કરી-ત્યાના અફ્લ્ટ દેશ મારે દ્વાં ત્રાપ્યુપાત્રા છે !

[ा] स्ट १७९१ वर्षे पडेच चर्चनेज्यकोचा विरिचन सम्बी इम्मान्ते-आवारपाने ओसिटपुरकार तिरिचन श्रीमधरफानेदेवस्थेराज्ये व नयत्रिकायेन श्रीनेवस्तुस्त्यरे-आवार्यक्ष (११०-१५ वारान्युरस्वार क्री• ११० ३० पर १५० २०)

ત્તપપ્રચનની ૬૦ મી પાડવાળા શીવિજવાદેવસ્તૃચ્ચિ વિજયસિંહસ્તૃચ્તિ વાયકપદ સં. ૧૬૭૩ પાડાવુમાં, સૃશ્યિક ૧૬૮૧ વ્યવસાય ૮૨ ના વૈજ્ઞાખ શ્રુદ દ ઇક્સમાં અને પાલાપીશપણ, સં. ૧૬૮૪ પોળ સુદિ ૨ ભુષવારના અદ્યારમાં-મની જવ્યમલે કરેલા પાલાહુસાના નંદિમહેતસ્વપૂર્વ'ક આપ્યાં. અવસાન-શીવિજવદેવસ્તૃચ્લિ હવાતીમાં જ અપાડ સુદિ ૨ ના (સં. ૧૭૦૯) અસહાવાદમાં શરૂ. ⁸

ગ્યારલી કાળમથાંત ઉપરથી આપણને એટલું વેલક્ક લાન વાય છે કે, શ્રીપ્રદેશ-વિજય અધિ કારીના ક્યારલા વચેરે પતાવીતે શે. ૧૯૦૯-૮ હાળલા સુજવાતમાં પાકા કર્યો હતો. તે સેટલા ઉપરથી કે, સુજવાતી કૃતિ 'દ્રેન્યાસુષ્યાંન-પાસ' જે શે. ૧૯૦૮ પહેલાંની સ્થાના કરે છે, તેમાં ગ્રેમના સંસ્તુત તાર્ક જેશા-' અમેકાંતન્યવસ્થા' અને 'સાયાયક્રમ' નામક લેચનાં અનવત્ત્રશ્રો મળે છે. તેમાં 'ભાયાયક્રમ'તે આરંભ કરતાં સંસ્ત્યપક હઠે અંત્રિત તેમાં ૧૦૮ લેચ સ્થવા ધંધા ન્યાત કરે છે. ' જે કાશીના અભ્યાસ કહ્ય પછીની કૃતિઓ છે.

જ 'સાહી ત્રણના બાળતું સ્તરન' પણ શિનિજવસિંહસ્કિના ગચ્છાધિકારમા રચાયું છે. તેમાં પણ 'રહીય કાશીમાંઠે જેલ્લી મેં લક્ષે, ન્યાયદર્શ'ન વિપુલસાવ 'પાયા,'ના કરશેખ કર્યો છે. એટલે તે કૃતિ તે કાળમર્યાદ્ધની છે.

૫ 'એક્સેને ને પચીસ અધ્યાતુ સ્તાબન' પણ તેમાંના વિચય હોતાં હોગાલેશું બનેલું હાયે છે. કાંઈ નહિં તો તે સં. ૧૭૧૮ ની પહેલાંની ફૃતિ તો છે જ, કારણ કે તેમાં કર્તાએ જરાવિજય શુધ-એ રીતે પૈતાના તામ અને પદલીતું સ્થબ કર્યું છે, એટલે તે વખતે વાચક વપેલા નહિ. તેમ એમાં કાશીના અબપાલ માંચેલાં ક્રિક્ટ સ્થય કહીકત તથી. એટલે એ જૂની લપેલી સંચાવે છે, તે એટલી કે આ પંચેલી અંગ હોકત તરત બનેલા આપણ શાહિલા શુભ્યતી કહીમાં કહી દેવામાં આવી છે.

ઇ હવે 'સઝૂદ વહાણ સંવાદ' વેલામાં ગ્રુનિ-વિલુધ સંવત એ હપરથી 'જૈન શુજે કવિચા' સાગ ર માં સં. ૧૭૦૦ ની કૃતિ લખી છે પણ 'તપાગચ્છ ભૂપણ શાસતા, વિજયપ્રસસ્તૃરિશજ.' એ હપરથી સંવત ૧૭૧૧ કે તે પર્કાનો કૃતિ છે."

૧. વિજયસિંકસરિ સ ૧૯૦૯ માં સ્વર્યવાસી થવાથી મૂળ વિજયક્રેસારિતે ફરીધી ગ્રમ્જ સંભાગવાતું પ્રાપ્ત થયું. ગ્રા. વી.

ર. આગોથી કેઠલા ગયો સ્થાયા તે સન્વીધ કાર્ય પણ હલીલા ગયી નથી. ચાર આગાના 'ભાષા-સરમ, ઉપદેશસ્ત્રમ અને નવસસ્ત્રમ 'નામના અશુ-લ' ગયો. ચાના છે, અગ્રસ્ય પ્રચીની ચાદીમાં 'પ્રસાસસ્ત્રમ' તથા સ્થાદાસ્ત્રસ્ત્રમ'ના નાગો ચાત્ર એવા ગયે છે.

ર, ૧૧ મી ૧૧૩ વિશ્વપાલાણિ-અન્ય ૧૬૦૦ કેમ્બ મંત્રીહારણમાં (વર્શકી માગે), દોશ સં ૧૬૮૬, પત્માસપદ સં, ૧૦૦૧, સરિપદ સં ૧૦૧૦ (૯૧) ત્રધાર ભારાયાં વૈક્ષાભ બુદિ ૧૦ તેના ઉત્સવ સમક્ષતાલકારી અસેચદ ફેરવાઓ પત્ની-સાહિત્યદેવે કર્યો સં ૧૦૧૧ અગતલાદમાં સુરાતા પુત

પણ તે તરતની છે. 'કેવિ જશાવિજયો રૂચ્ચો.' એ ઉપરથી સાબિત છે.સં. ૧૭૦૦માં શેણામાં રચેલા સંભવતો નથી, કારણ કે તે વખતે તો તેઓ કાશીના અલ્યાસ માટે ગુરુ સાથે ઊપડે છે.

જ 'સાધુવંદણા'-સં. ૧૭૨૧ વિજ્યાદશમી, ખંભાત. ઢાળ ૮, ગાધા ૧૦૧.

च ' પ્રતિકેમભુગલ હેતુ-સ્વાધ્યાય '–સ'. ૧૭૨૨ સુરત ચામાસામા.

g 'અગિયાર અંગની સક્ત્રાય'-સં. ૧૭૨૨ સુરત ચામાસામાં.^૧

* 'મોન એકારીના ૧૫૦ કલ્યાલુકનું સ્તવન'–માં. ૧૭૩૨, ખંભાતના ચામાસા વખતે દિવાલી ૭૫૨.

g 'નિશ્વય-અયનકારનિવાદ શ્રીશાંતિજિન સ્તવન '-સં. ૧૭૩૨, હાળ ६.

જ 'સમકિત્તર્વ્યાત્વર્યાં માં ત્રાપાઈ-વર્ષ' (રળા) સહિત 'નાં. ૧૫૩૩, ચોમાપ્ર ઇક્શપુરમાં. ટળાયાળી પ્રત, લેવાગેથ-ન્સન-ટીકા મિલને ૧૦૦૦ વ્લાક છે. (પાનાં ૨૮-૧૩ જા. કા.)

ટ 'દોકમાં ગાયાનું હુંધેરૂપ મહાવીસ્સ્તવન '—સ. ૧૭૩૩, વિજ્યાદશમી ઇક્લપુરમાં' (પશ્ચિત્ર્યાછ ટેગા).

8 'સંધમપ્રેષ્ટ્રિવિચાર સજ્જાવ '-સ્વેપન્ન ટળાસહિત ઉપરાંત સંધમપ્રેશિ પ્રરૂપક્ષાના નાર્સ ગલમાં.

જ ' કેંદ્રતાનિ ભારત, અહિલાનિ ભારત, નાસુબુનિ ભારત, ન્યાસ્ત્રનાસુધર ભારત, સુધર્મ ભારત.' સા ધનાઇએ આક હગર ખર્ચાં ત્રશાસુદ્રાતો નિક્ચિકેતલર, વક્તચોતલર-નાર્તિક વિદ રના વધે સ. ૧૭૩૨માં નાગેરસા ધોનાના પહરર તરીકે કિલ્બસન્સાનિની નિચારુક કરી સ. ૧૭૪૯ એક સ્ટ ૧૩ ક્ષામાં સ્વાર્થિક

૧. " માત ભગેઇ મત્રવ વિતા રેટ્રવ્યટ લાઈ પૈકાર, સાર્યુક્તારે ટેકઈ સાક્ષ્યા રે વિધિ શુ અગ પ્રભાર" (૧૧ અગની સત્તાર્ય અને સિતિકાસ્કૃતલેલિક ભગેતો અત લાય ગાયા (-૯ યો એન્ સર્ચા જ છે.)

એમાં પોતાની જાજનાલા દર્શાની છે- જ અધિવર વર પોલિયોર, પોલી દીપે છે છે.ડી, તખત વખત હવે પામરાં રે, હર્ધ આ દેશ-સેડી ?'

ર ગા કિંદાપુર-અધલાલાનું ક્ષાર્ય જ હવે ' હ્યુએ-' કહ્તાં ચીલખ્યત્વનેપાત્ર સ્પાંતા પી સબત્યરને પિર્ધ નિર્દા પ્રેટલ એ હૈવા શૈદિકાર ચીલાસ્થ્ય નામના હેતી પ્રાર્થના પાંતે લેક્સલાએ સંત્ર તે પારાસામ એટલે ત્યારાઈ, હોફ સે પ્રક્શાનાની વ્યાપ્ય ચીલનને હિંગે કાર્ય થીયો લિબ્લક્ટર્ની દુર્તિ જાલુરી, 'એક પ્રત્યાં નીચે પ્રમાણેને તાનીત ત્યાર અથે હ

श्रेमोराजविद्यांत्रराजनगरप्रस्थातहेमागम्, सारानदङ्कवार्दनगरीराजवव्यासगरमस्याम् ।

पण रोजस्य सर्वाध्वयकारकारकारकारका, व्यक्त वर्षमुद्दे यहाँगविका धीवानकार्य इति ॥ स. १८८२ वर्षे वैद्याप विदे ७ गुनै विभिन्ना श्रीकापुरीवाची १६ पत, प्र. ॥ त. ८७८% रेली मध्यपुत मुक्तिनी, क्षेत्री नेया हेलेछ, चे तसन में दीश संतः

- દ્ર 'આકંદષ્ટિ સન્લાય'–(ગ્રાનનિમક્કસ્ંરિના ટબા).
- m 'આદાગીતા '-કડી ૩૦, ખંભાવ, સં. ૧૭૩૮.
- . ત 'જ'ન્વસ ' સં. ૧૭૩૮, ખંલાતમાં ગ્રેમાસું, સંખ્યા ૧૪૦૦ ગંશાગ્રંથ, હાળ-દુક્ષા સર્વ મળી, તથા ગાંક સંખ્યાયે. (કૃતિની કેસ્તરિલિય પ્રતિ સ્ત૦ પ્ર૦ શાંતિવિશ્વષ્ટ પાસે હતી. એ હસ્લેખ શ્રીકેલ્યાલુવિશ્વષ્ટાએ અપ્લાયદ 'ગુન્ન્સત સાહિલ પરિષદ'ના વિપોર્ટમા પ્રમાટ થયેલા તેમના શેખાં કર્યો છે.)

६ આ જ અરસામાં શ્રીવિત્યવિજય ઉપાંચાયે શરૂ કરેશે 'શ્રીપાલ રાત ' શેરના સં. ૧૭૩૮ ના ચોમાસામાં ૩૫૦ ગાંચા સ્થાયા પછી તેમના અવસાત થવાના કારણે અધ્યુરા રહેશા તે ઉપાંચ્યાય વિત્યવિજ્યની ઇચ્છાને અતુત્તરી ઉપાંચાય સંશોવિજયજીએ પૃરા કર્યો.

- च 'हिस्पट ८४ वेश्व' गावा-१११.
- न-ए-फ-व 'ચાવીસી ' ત્રણ, 'વીશી ' એક.
- म ' समिक्तिना ६७ બાહની સજ્જાય '-હાળ ૧૨, ગાધા ૬૮.
- म 'स्प्रेडार पापस्थानंड सक्ताय '-डाण १८.
- ય 'અમતવેલી સન્નાય.'-સં. ૧૭૧૮ પહેલાંની કૃતિ હશે.
- **ર 'ચૌદ** ગુણસ્થાનની સત્ત્વાય '–હાળ ૨.
- જ 'સમક્તિ સુખલડી સહલાય.'
- ष ' ચાર આહારની સહઝાય. '
- स्र 'કુગુરૂ પર સ્વાધ્યાય '–(કવિના સમયમાં સાધુ માટેની સ્થિતિ જ્યાવી છે)
- इं 'भुश्च पर स्वाध्याय'-काज ४. सिरिवयिक्तव्युरुकं । पक्षावमास्यः सर्वष्ट-क्रम्मक्टं । मणिया गुणा गुरुणं साहुव तससिवयः यते ।-(४१) आ ६ ५२३थी था इति "सं. ५७१८ पहेंदांनी भानी शहाय."
 - વ 'જશનિવાસ'-૫૬ ૭૫-જૂદી નુદ્રી વખતે અનેલાં.
 - દ્દ ' અ૧૫૬ી '--આનંદઘનજની સ્તૃતિરૂપ.
 - æ ' પંચયમમેષ્ટિ ગીતા '
 - क्ष 'सीभंधरस्वामीतु ४२ गायानु स्तवन'-दाण ४-निश्चय-व्यवदेश नयमितंत.
- व 'दुश्तृनी श्रद्धाय 'द्धा ६ भां या थीछ छे. पसो कुत्यस्वस्ताम तिनवयणामो पुत्रं भिषेत्रो: सिरिवायवित्रयमुणीणं सीसेण जणाण चोद्धर्य । आ पशु वाथक्षप सस्या पहेंदांनी क्ष्रुप्य छे.

- (a) 'જિનસહેસનામ વર્ષુ'ન છાંદ'-૨૧ કરી. ભુજંગપ્રયાતકૃત, આ પણ ઉપલી કોડીમાં આવે એમ છે.
 - (સા) 'અડવી પહલીની સહલાય' અથવા 'સૅવિઝપક્ષીય વદનચપેટા '

सिवाय ऋषमजिन स्तवन-अवस्थित्वराज्य गुल्य जाव्य दिन व्यविभारे।. ' इंडी: हं अपमदेव दितकारी, अपमा जिलंदा वजेरे.

शीतहाजित स्वयम-'शीतहाज भोडे प्यास' કહી ; प्रश्नमित स्व०-'वर्ड वर्ड संख्ये सांख्ये सांख्ये स्वव्या-'शीतहाज का 'स्वय क्षय सांख्ये सांद्रित स्वव्या-'शेर शिक्षा सांच्ये स्वया-'शेर शिक्षा सांच्ये स्वया-'शेर शिक्षा सांच्ये स्वया-'शेर शिक्षा सांच्ये सांच्ये

એ એ કા તે કા ! પણ અત્યારે એ ગૂરું? કૃતિઓના ઉપર નિર્દેશ કરી છે, તે તથા 'સુરુસવેલી ભાસ' અને અન્ય કૃતિઓ સંખ્યામાં સ્વલ્યાંએ, સૂરું? કે અન્ય ભાષાની

મેક દ્વર્ગતિષ્યન, દર મત સ્ત્રુન સં. ૧૭૩૨ પેશ સુંદિ હવે રચેલું એ તામે મતિ છે. ૫૫ મેમાં મેમાં માના મન્નને પ્રતિજિ સાલ્યલ કોઈ મારો મોદા દ્વર્ષો કરે સ્વત્રકરી, અંદર્ગત તામો તેવા કે 'સાતિકાસ્ત્રમિક થાં' ૨, અલ્કિરી એ તામાં 'નવસ્થિત મોદારિક્સ કંદ, અંદર્ગ સાતિકાસ નામ અલ્લાન લગે પાંચ વર્ષે સં. ૧૭૪૮ કે પ્રત્યો સાતિકાસ નામ ધાં પાસ કંદ, તે સાતિકાસ માના માં ધારા કંદ, તે સાતિકાસ માના માં ધારા કંદ, તે સાતિકાસ માના માં માના સ્ત્રુન 'એક્સ માના માના સ્ત્રુન 'એક્સ માના માના સ્ત્રુન 'એક્સ માના માના સ્ત્રુન 'એક્સ માના વચ્ચાર શક્યા માના સ્ત્રુન 'એક્સ માન સ્ત્રુન 'એક્સ માન 'એક્સ માન સ્ત્રુન 'એક્સ માન સ્ત્રુન 'એક્સ મા

પાંચ્યુના એક લાડારમાના ક્ષુટક પાના પર ક્રાઈએ શા. ૧૯૬૦ વર્ષે કાલી દૃષ્ટિ ર કિને પાતન-મુખે 8 શ્રી ધરેક્ષેત્રિયળ કૃત્તા શ્રામ—આ સાધ્યાવાલાકી તૈકારતા અભિગત પ્રચીતી દીપમાં દેવસું નામ આનંદનન પાર્વીથી ગાલાઓપના હે. હસ્તું નામ 'કૃષ્યક્રાનિયાદીએશ' છે

જે ત્યાયાચાર્ય શિયકો(વિજયજના જીવનના ચાહ્ય અને અંતર અંગ્રેદ હોવામાં દીપ તરીકે કામ લાગે એવી છે, એના મંદ્ર અને મર્ચાદિત પ્રકાશમાંથી એ અને જેટલું હોઈ શકાય તેટલું હોઈ શર્ડશું.

જન્મ અને દીકૃા :

જન્મ ક્યારે થયા શ્રે લે 'કુબરાવેલી લાસ 'કાર જ્લાવતા નથી. પછ્યુ સં. ૧૬૮૮ તેમના ગ્રામ-કત્તર ગુજનાતના કરોલ પારીના બીજ રીતે પાઠ્યુથી થોડા ગ્રાકના અંતરે હતુ પથુ છે-ક્તાંડુમાં સુનિ શ્રીનેચવિજ્યકુલ્યુએર, જેનુ જેતિલાસિક સંસ્કૃત, પ્રભ્યામાં 'કુમારાસિકિ' નામ મળે છે. જો પાઠ્યુ પાકિના ગ્રામમાં ચોગાસ રહી આવે છે, ત્યારે પ્રાતા સાલાસ પાતાના ભવ્ય છે. જ્યારે તે પાઠ્યુ પાક્ષમાં વિભાગને પાતાના ભવ્ય છે. જ્યાં પર્માપેક્ટ મળતાં હુલ્યમાં વેરાઓના હફલ્ય ગાય છે. આ હડીકા તેમાં તેમણે કહ્યું છે. આ ઉપરાધી મળતાં હુલ્યમાં વેરાઓના હફલ્ય ગાય છે. આ હડીકા તેમાં તેમણે કહ્યું છે. એટલે જન્મના વર્ષ તિ સં. ૧૬૯૫માં લી. એટલે જન્મના વર્ષ તિ સં. ૧૬૯૫માં લી. ૦ લાગામાં પાર્રી શ્રામથ

પાડેશ વર્ષ તે ક્ષેણ લે છે. તે સં. ૧૧૮૮ માં જ શી. મા. દ. કેરાઇના કહેવા પ્રમાણે માતાએ પણ સાથે જ હોણ લીધી લાવે છે. અને આ પ્રસંપથી પ્રેશિ-મીલ પુત્ર પ્યક્તિક પણ તે વખતે ક્ષેણ લીધી, એનાથી જસવાંત ઉપર તાતા છે એ 'હશુતા પણ હુપે આપાલીછે' એ લાક્ષકારના સ્કન્થી સ્પષ્ટ સાથે એ આ જસ્યાંત-જસાવિજય પ્રયા પાયી ઓકાલ્ય અબ્લિક એ અબ્લિક્ય સાથે કેન્દ્રેમના માટે હવે છે.

> 'यः श्रीमद्युक्षिर्यनेपादिविषयेराग्वीसिकी बाहितः, केम्मा वस्य च सब प्यविषयो जातः द्वापीः सोदरः । कस्य न्यायविश्वाद्दर्शविष्टं काम्यां प्रदर्थ चुपैन-स्तरोषा कृतिराजीद्व कृतिनायावन्यसमं यनः ॥ '

સ્મા પ્રસાશે સ્વરસિત ન્યાયખ કળાવની પ્રદારિતમાં ઉલ્લેખ કરે છે આ બન્ને ભાઈ ગોની વડી દીધા પણ તે જ સાલમાં શ્રીનિજવદેવસ્તિના હાથે થાય છે. (પ્રવિજય સહેદર હેવાના વીત્રે ક્લોખ શ્રીહસ્તિદર્સની 'વિશિધ 'ગા ઉપરની ટીકા ઉપાયામાછએ કરી છે તેમાં કર્યો છે. (બૂબ્લાઃ સ્ટ્રેક્નીટ પાત-૧૭૫)

પિતા તારાયું (નારાયયું) વ્યવહારિયા; એટલે તેઓની વલ્ફિક હાર્ત તિલ છે. પણ તેઓ ધને 'જેન હશે કે કેમ એ લિશે શોક રહે છે. કેમકે તેઓ કોઈ ધાર્મિક પ્રસંધે કેમાં કેતા તથી? આપણે ધાર્મિક પ્રસંધે કે તેઓ આ અન્ને બાળકોની બાળકાર્યકાર્યો એલા જ સ્વત્રસ્થ થયા હશે. આને સિલ કર્નનું પ્રભાવ એ છે કે પદ્માસિક જે પ્રસંધી પ્રેસાઈ ક્લિયત થયા છે તે એમ સામઝાં કે મા અને ભાઈ લીશા તે ભાર તેને એકાલ રહેવાથી શે અથવા તોને આધાર કોંગો. આ સામજાં સ્ત્રે મા અને ભાઈ લીશા તો આપાસ કોંગો. આ આપાસ લેખો એ આ અધિવાર વર્ષના ચાળામાં જરાવિન્યને તે

સંસ્કૃત-પ્રાપ્ટ્રત સાહિત્ય સાથે જેનસુનના ગાળમાંથી સાથે અનેક નિવિધવિધારી પ્રકરણ શ્રંથોનો પણ મહત્યાસ થઈ વર્ષેયો. લાગે છે. તે કાશીમાં જેટલા સમયમાં જે જે વિષયના અભ્યાસ કર્યો તથા આગામાં તાર્જે ચારતી પરિપૂર્વ તથા પ્રાપ્ત કરી તે ઉપયો અને તે પછી પરિપૂર્વ સાથ જેન સુતામાન સંસ્કૃત તથા સામતિવાદી ગ્રંથોમાં જેને જે જેને સુતાને પરિપ્ય થાય છે તે ઉપયો નિવાસ છે 'સમ્મતિવાદી,' તત્ત્વાચેશ્વર—આપગા અને તાર્જમાન શ્રાપ્ત થી અથે ત્યાં કરે તે ઉપયો ત્યાં સ્થાન માના પરિપાદ્ય છે, જે વાત એમાર્થ કર્યાનું વિશ્વ સાન કાશીમાંથી તાર્કમાન ચાલના પરિપાદ્ય માના માના ત્યાં કહી જ છે

અમહાવાદના આ પ્રથમ આગ્રમન વખતે તેઓ સંઘ સમગ્ર અહાર અવધાન કરે છે. આ વખતે તેઓ મહિ-પડિતપદ પાગ્યા હશે. આવો ચેલાવી શિવ્ય એ ક્રાંશી લહ્યી અને તે મીત્રો હૈમવાંદ્ર શાય. શાસનને ખપ પડે કામમાં આવે આવી વાત મહત્ત્વાકાંક્ષી દે! ધત્યભ્ર સ્થાને સ્કૂરી.

રોક ધનછ વિશે જણાવ છે કે, અસ્ત્રાવાદના ચોસવાલ સવવી સેર્યુ અને રહ્તન શે કે લાઈ એ સે. ૧૧૭૪ પહેલા વિશામન હતા. તેમણે સત્ત્રાસિંગ (સે. ૧૧૮૭) જે તામથી અત્યારે પણ લાણીતો છે, તે દુક્ષવામાં દાનઘામાં પોલી હતી અને રાતું જયના મહાર માં કાંકમાં હતા. એ સેર્યુનના પુષ્ઠું નામ ચેનલ્છ અને સ્ત્રતના પુષ્ઠું નામ પંતલ્છ માં અન્ત્રેયે સંત્રેતદિયાયનો માં કાંક કહી એક લાખ એંસી હતાર પામાં અને સંવિધાયા પ્રાપ્ત કરી, વિભગ્નસંફિરીનો પરિસ્થ પાદનોધામાં આગળ આપ્યો છે તેમાં ગણાતુદ્ધાની પ્રાપ્ત કરી, વિભગ્નસંફિરીનો પરિસ્થ પાદનોધામાં આગળ આપ્યો છે તેમાં ગણાતુદ્ધાની પંત્રદ્ધાનું પહિલોનો કરું અને પ્રતિસ્થિત્ય આપળ સ્ત્રું કર્યો. નવવિજયછ્છે કહ્યું ' 'પ્રાપ્ત દું પહિલોનો કરું આપ્યા સિનાય તેમની પાસેથી વિદ્યા પ્રેયવવાનો બીને સ્ત્રતો એને માટે તથી, ' ધન્ય સ્ત્રાએ કહ્યું : એ જ ને કારણ હેલ તો તેની નેત્રનાઈ પ્રાપ્ત તરફથી શઈ રહ્યો ' એમ કહ્યું એમણે તરત જ એ હત્યર દૂધિવાની દુધી લખી. આ સ્ત્યપ્રીયંદ સ્ત્રતને પારંપી, તેને એપ આપી. અનેક લાણું તેનું મુળ તેજ પ્રત્યાર કરનાર કસળીને હાંચે સીંપવા ઉદ્યારી ત કરેશે હોત તો ?

કાશીપ્રયાણ :

. ધનજી સરૂત તરફથી સહાય અને પ્રોપ્લાહન મલતાં સુરૂ નયનિવન્યે, શિષ્ય જરાવિત્રવને લઈ કાશી તરફ પ્રયાણ આર હતું, જે રાં '૧૬૯૬માં શયુ હશે ગા તખતે ગચ્છા-ધિકાર શ્રીવિત્રવાંસ હંત્તુરે સંભાગતા હતા તેમના આર્તીયાદ સાથે અતુરોદના પૂર્વ કની અનુમતિ મળેલી અને હિતશિકામ પણ આપેલી વહીલ કહાગુદ્ધ હતા હતા તેમને હતા વિજયને શિષ્યન્ત તાલુતા. એટલે એપના વરલાહાહુલયા ચા વરલ માટે હતા સુરુ મુશ્ક પ્રકાર કરતા તેમને પ્રાપ્ય તેમ તેમ પૈતાના શરૂ સાથે આ બલાનું મોતાના લેવા પ્રાપ્યિતાના નિમિત્ત કારણ રૂપ ઉપરાંત-અફાને, આ કાર્ય પ્લાપ્યા પછી રચેલા સ્થળાવી ગયામાં નાદ્યાલ અને આફર સાથે હતીય કરો છે. તે ઉક્કોખ સહિત અપે અમારા જદા લેખમા નોધ્યા છે.

આ વિહારમાં સાથે કેલા કેલા હ[ા], તેની કેલ્ડિસ્ટાક હંકીકત નેલ્સારેલી મળતી તથી. પણ પદ્મવિજયને સાથે લીધા હશે, તે 🤃 મુખજી ને કે તવા નવા દેશોના તેને અતલવ થશે. વિદ્યાપીડ જોશે. આથી મન થતાં તેમાંથી કેટાં વિદ્યા શીખરી, અને અન્ય ડેટાંઈ કામ प्रसंगे पर अभ अगरी. 'विनयविजय अने कराविजय के क अरी अक्षवा माटे जय है. અને વિનયસાલ તથા જરાલાલ નામથી પાતાને ભ્રાહ્ય અતિના ગણાવી, વિદ્યાર્થી ગામમાં પ્રવેશ મેળવે છે! ' આવી દક્ષમ વર્ષેત્રી માન્યતા ખેતી છે. તેનું નિરસન અમે અમારા છીજ લેખમાં અતે આ લેખમાં–પણ પહેલાં કર્યું છે. આગળ પક્ષ આ બાંતિન નિવારણ શકો.

જે કાળે દેશ અનેક સજકીય સત્તામાં વિલક્ત હતો, રાજ્યો દેશ પચાવવા સત્તા જગાવવા, ધન લેશે કરવા, અંદર અંદર ઝઘડી રહ્યા હતા: ચાર, હંટાર અને ક્રોના ત્રાસના પાર નહોતો. આવી અધાધંધી વચ્ચે જૈન સધુના તીવ આસારાત પાલત કરતા. ઉપસર્ગી અને પરીપહોંને સડન કરતા, પાદ-પત્રે ચાલી, ઘણા લાંગા પંચ વહાવી સં ૧૧૯૯ના વર્ષા–ચામાસાના અપાડ માસ મહેલાં કાશીમા સર અને શિષ્ય આવી જવા જેઈએ.

જૈન મનિઓના અત્યત્ર જઈ વિદાધ્યયન કર્યાના દાખલા ઇતિહાસમાં શાધીએ તે પ્રથમ આપણને (ગ્રતકેવળી) ચૌકપૂર્વધર શ્રીભદ્રભાઢું પાસે નેપાળમાં પાંચક્રો જિજ્ઞાસ સાધ સાથે સ્યલિલક મૃતિ ગયાના મળે છે. તેમાં માત્ર સ્થ્લિલક જ વૈર્ય પૂર્વ કરકી, સરચે આપી તેટલી વિદ્યા લે છે. બાડીનાનુ અધ્યયનમાં પરેપૂર્વ મન ન લાગલાં કટાળી પાછા કરે છે. તે પછી भार्य रुक्षित कार्य बन्ध पासेथी तेमना हुछ पूर्वज्ञानने नेजबबा ब्लय के पूछ ते जान-ગિરિના ઉત્તંગ શિખરે લગભગ પૈદાયતાં જ મનની અભ્યવસ્થિત-વ્યાપ્રાવૃત્તિથી ઉત્સાહ એમરી જતાં અટકી લાય છે. તે પછી યાકિનીસતુ-શ્રીહરિશ્વદ્રસ્ટરિના છે ભાશેજ શિલ્યો ગરની તા છતા પણ બીહ સાધુઓના વિદાસકમાં પાતાના જૈતત્વને ગાપવી કાર્શનિક અલ્યામ માટે પ્રવેશી લાય છે. પછ આ વાલની ગંધ આવતાં તેની ચાકસાઇના પ્રયોગો થતાં આ મતિનેડી ચેલી લાય છે અને લાગવા માંટે છે; છતાં પણ તેઓ તેમના દેરપાબિથી ષ્ટ્રથી શકતા નથી.

૧. આ ઉડરીખ ' ડાળગ્રજીયર્થાય રાસ-નાલવગાલ-સહિત'માતા છે. અને કેટલીક દ્વરીકત એમના કારળપ્રાંથી લીધી છે ' સાડી ત્રણસા ગાયાના ગ્લાન 'ની છેટની ગુરપર વગવાળી હાળ, ૧૭સા–

[&]quot; સીસ તસ જિનવિજયો જયો વિશ્વાર, નવવિજય વિશ્વય તસ ગુરુલાયા. રહિય પ્રશીપ્રદે જેઠથી ત્રે લવે. ત્યાયદર્શન વિપલ ભાવ પાયા (૧૨)

એડવી શહ લહિએ સકલ નમ નિયુષ્ય, સિક્સેનાદિ કૃત શાસ્ત્રભાવા,

તેલ એ સગર કરવાપ્રભેદ તુજ સગુવ

આપરાતે અહીં આગળ એક પ્રશ્ન થાય છે કે, ધના સ્વાને કેમ સલાળવામાં આવ્યા નથી ! ત્યારે એમની ખીછ મુજરાતી પદ્મ-પદ્મ કૃતિએમાં-એકમી કાના માટે-સ્થી તથા એનો વિશ્વ કેરના કાના આપળ સંભળાઓ વગેરે લખે છે (બુસો-૧૫૦ ગાયાનું હુંડી રતવન તથા ૧૧ અગની સન્ત્રાય વગેરે)

સિહર્ષિત મૌધ વિદાપીઠમાંનુ ગાવાગમન સ્ચિત અર્થનું છે!

ક્ષાકાણો અને તતનન્ત્ર પહિલાની ખાસ કરી જેના તરફ એવી દિઈ છે અને ક્લાકાળમાં તે કેટલી બાહારમ કહેતી, તે સો ક્રેક્કને વિદિલ છે. પહેલવલેલો સંસ્કૃતનો વ્યવસાય એક મુશેપિયત વિદાને કલકત્તામાં કેવી રીતે કર્યોં એ કથા એટલી ત્રેમાંચક છે, તેટલી જ પ્રાથણોના સમંડ અને બ્લુદ્ધપિયાની ગ્રાલીક પણ છે. અરે! આપણી શેઠઠ વખત ઉપરની જ આપણા પ્રાંતની જ વાત કરીએ: ત્રજલાલ શાસ્ત્રી વેતન લઈ જેન સુનિએને 'સ્ત્રિન્હેસમે' લણાવતા, તે માટે લાદ્યાણે તેમને શું કહેતા એ તેમના શન્કોમાંથી જ લાધુના મળે છે.!

કાશીમાં અભ્યાસ અને સિહિ :

લક્ષ્યાર્થ એક મહાગેર સુધ સખેશ, જે ગેમને હોવા કે લાયુવા મળે હોવા નહોતા. તે સુકૂના બહાર થયાનો લાય લે છે સુકૂપતી પાસેથી માગી લઈ રાતોરાત વિનાયિજયે અને જરાવિજયે અર્ધો લાગ વર્લેથી કોસ્ય કરી લીધા ! એ વાતના આમા કંઈ પણ ઇશારોપે નથી વિનાયિજય ઉપાધ્ધાર સહાધ્યાર્થો હેયા તો સુકુશાઇ કોરિતિજય હોમતુ તામ આપ્તા સિવાય રહે ! ગાા વાત હોટી હોવાનું એક આપાર પ્રયમના સ્પાપ્ત તથા આ સેપમાં સિલ્ડ કર્યું છે. આ એક લાંતિ છે તે વિનાયવિજયની વિક્તા, સોક્સોચ સહિતના સર્જનથી થયેલી પ્રતિક્રિંક બ્લીપાલતાર્શન અધ્યાલ લાગને જરાવિજયે પૂર્વ કર્યો-સની બાળતોમાંથી જન્મી છે. વસ્તુત તથવિજયના સ્થાને વિનાયવિજયનું પ્રસિદ્ધ નામ પ્રયક્તિત શઈ પશું લાગે છે. સં. ૧૯૯૪નાં વિજયાયુ લાફેર ઉપર 'વિનાયિ જયું' લખનાર સં. ૧૯૯૬ એક સુદ ૨ સુકુવાર કિર 'કેલ્યસર 'ઉપર સંસ્કૃતાર્યા 'સુખ્યોપિકા દીકા

ગૂજરાતી ભાષાનો ઇતિહાસ લખતાર (ગૂ. વ. સોલાયટી તસ્ક્યી) ગા રાજી પેટલાદ તાલુકાતા મહાતજ ગામના હતા ગ્રેચણે પોતાના નિષે કેટલીડ હંદીદત ગ્રેમા લખી છે

ર. આતો ફ્રલ્લેખ અને અમારા બીલા લેખમા—વિવેચન સાથે કર્યો છે

लीक विषाति : ' बहुद्धत' नाजे अध्यक्षते कोवपुरवी स्तत विकलप्रकार्मि क्षतं आस्त्री क्षते.

કર્માર, 'લીક્પ્રકારા ' ગાગમદોહત્વય મહાગે શ રાં. ૧૭૦૮ જેઠ સુદ ૫ તા સુનાગઢમાં પૂર્વ કરતાર, રાયનપુરમાં સં. ૧૭૧૦માં 'હૈમલદ્યપ્રક્રિયા' તાચે બાકરણકાંશ રવો પણ ટીકા સહિત બનાવનાર, ' ત્યકહિંકા' હીરમાં, ' શાંતદ્રક્ષારસ્ત્રાવના ' વગેરે સંસ્કૃત ગ્રંથેઃ અને સુરુપાર્વી સ્થતાઓ પૈકી 'નેનિનાશ વ્રમાસ્ત્રીતા તરવન ' સં. ૧૭૦૬ તથા ' પહાવલી મુક્તાય ' સં. ૧૭૦૬ તથા ' પહાવલી મુક્તાય ' સં. ૧૭૦૬ તથા ' પહાવલી મુક્તાય ' સં. ૧૭૦૧ તથા કે લેવા ત્યારે વિનયવિલ્યોપાંધ્યાય-જરાવિત્ર્ય સાથે કાર્યોમાં અભ્યાસ કરવા સાથે કાર્યો લેવા ' એક હત્યારે પૃત્રી અભ્યાસમાં ત્રારાહ છે ત્યારે ખીજા તે કાર્યું હતા કરતા કરતા પ્રથા સ્થાપાના કર્યોમાં લેકાર કરતા કરતા પ્રથા સ્થાપાના કર્યોમાં લેકાર કરતા કરતા પ્રથા સ્થાપાના કર્યોમાં લેકાર કરતા કરતા પ્રથા સ્થાપાના કર્યોમાં લાગ

ે. કાશીમાં રહી મહોલિંગને જે અધ્યવન કહ્યું, પહલીઓ વેલાવી, વાદ કર્યો તથા શંદો લખ્યા તે હતીકત પોતાના વિના-વેષોમાં નીંધી છે. ગુજરાતી ગ્રહ્યામાંના આ લસ્ત્રીએ વિદે માત્રે અમારા બીન્ત લેખમાં કહી બધા છીએ અને આ લેખમાં પૂત્ર મુંદ્રેપાત્ત જરૂર જેટલ આપળ લખી વૃક્ષ્યા છીએ. લસ્ત્રુત ગ્રહ્યામાંથી જૈન તાર્ક આપાયા તે આ કે વ્હાક અમારા બીન્ન લેખમાં કાંડ્યો છે અને આ લેખમાં આવળ 'ત્યાંચર્યાલામાંથી એક શ્લાક ઉતાર્થી છે. સિવાય એ માત્રે છે તેમાંથી આ લહ્લોએ પ્રાપ્ત થાય છે

> " विमानास्यवाध्यरं परिचिवां काशीं च वास्तान्य, ह्यापालानीप विद्यिपो गतनवान् विद्याणि वास्तीयव्य । मनन्यायाध्ययनार्थयात्रकालकं वास्तस्यक्ष्टस्य ये, सैन्यन्ते वि स्था नयादिविजयमात्राः स्थोदेन वे॥"

—(सामाशारीप्रक्रस-प्रसस्ति)

" मानव्याचित्रं सदाऽऽसनसम्बन्धानीनकादीमदा— सलावीरितयोगदुर्वयम्पतासो गदीयश्रमः । आसीचिनकदिन्दुराध्यसमा दाशीक्तस्याञ्चनो, नोहासी इवि तान् नगदिनिज्यात्रासुपासील कः ? ॥११॥²²

—(अंद्रस्तुति वर्तार्वेशितान-विवस्त्य-प्रशस्ति)

" सत्तर्ककर्कत्रविधाऽसिल्दर्भनेषु, मूर्थन्यताषधिगतास्त्रपयच्छषुर्याः । काद्रयां विजित्य परयूयिकपपदीऽध्यां, विस्तारितम्बरणैनमतमयानाः ॥ "

—(શીમાનવિજવામાધ્યાયકૃત-'ધર્મસમ**્ર**')

[.] આ સાલમા પાલીતાણા ઉપર કરેલી પ્રતિપાતો લેખ ચળી ગાવેલો છે, જે વિગેનો ઉલ્લેખ ગામળા આ લેખમાં કર્યો છે

ર, આ કૃતિ શ્રનામા સાદવા સુદિ ૧૧ ના લિસે જનાવી છે

શીમાનવિત્ર્ય ઉષ્પાથાયે સ્થેશ સંસ્તૃત ગંગ 'ધર્મસંગઠ'નુ પરિશોધન પણ યેશો-વિત્ર્યજી પાસે કરાનું એવો હસ્ત્રીખ કરે છે, જે આ લેખમાં તેના અવતરણપૂર્વ'ક આગળ જણાવી હીયું છે.

પદ્મવીઓ—

'મુન્ટાયેલી ભાસ'માં કાર કરી આવેલા સંત્યાતીને વાદમાં હરાવ્યાનું અને તેના કારણે પંચાયત નિશાનપૂર્વક મહિમા વધારવા સાથે નિજ આવાને પહેંચાડવાનું અને 'ત્યાય વિશાસ' ગોવી મહાપહવી આપવાનું અને એ રીતે મહાવાસવી થવાનું તત્ત્વવિજય દાપે છે. તેને ઉપયુક્ત 'શોકોથી ટેકેં મળે છે

'બહું ઉપાય કરીને કારીએ સ્વશિએને લાલુવાને કારું મૂક્યા તિહાં—માયવિશાસ એક્સું બિરુક પામ્યા!' 'દ્રશ્યાસુયપાય રાસ'ની હાળ આયા ૨૮૧ ના બાળાવધાય હાયતાં આ પ્રયાણે કવિ જરાવિગ્યે કહ્યું છે.

સ્ત્રા પછી, નાચાચાર્યની પત્ની બે લાખ ⁷લાકાત્માનુના સે (૧૦૦)-ચાયગ્રેશ કરી, તે રાતા (સ્ત્રાયાર્થ) 'તેઈ આપી. આ પ્રમાણેના મુહાસો, એક બીલ્લ કાળળમાં જે ' જૈનતક'- પરિસાય! 'મોનો ઉતારો આપી કરી કે, જે અધે અમાસ બીલ તેખમાં બતાવી ચૂકયા છોને. પત્નીએમ માટે લોકોને સંશ્ય ઉત્પન્ન થયે. હેવા એમ શ્રીજ્ઞાત્રિત્મલસૂર્તના નીચેના મુહાસાલી બહામ છે.

" ક્રીનચવિજય પહિતાન વાયકાપાંચાય શ્રીયદ્યાવિજય મ. કાર્સીએ 'ત્યાયવિશાર કે એક મિન્દ પાત્રમ તિકના વાયનથી કાર બાયુલું." ત્રાલું ફ્રાનવિમક્સ્ટ્રોનેએ 'આક વંદની સત્સાય' ઉપર ક્ષેત્ર લખતો લખતો નામને ત્રાત્ર એક કરે તે વખતો એમની વધતી પ્રતિક્ષની જેમને અદેખાઈ ચાવતી તેઓએ લોકને લમનાં નામલા પ્રતત્વ કરેલા—આજે તે કે જેન પ્રતિઓએ એવા વાતાવરણ સદઈ પૃષ્ટુયું છે, તો પણ પ્રદેશિવજનો કોઈ પણ પર માટે—અને તેની યોપ્યતા માટે કોઈને કોઈ બાતોને મંત્રલ વધી. વિશાચાનિય મહાતવ્યચિતક એમાનાં વેચ્યન માટે કોઈને કોઈ બાતોને મંત્રલ પ્રતિસ્થિત કોમાનાં ત્રાત્ર તાર્કિત્ય પરિવાર્યને કેશનતો જ્યાપતા સ્ટેક્સ સાહિત્ય કિલ્સાન કેશનતો જેમનાં ત્રાહ્ય સ્ટેક્સન સાહિત્ય સ્ટેક્સન સાહિત્ય સ્ટેક્સનો ક્રાંયતા વિશાસ સ્ટેક્સન સાહિત્ય સ્ટેક્સન સાહિત્ય પરિવાર્યને સ્ટેક્સનો ક્રાન્સ સ્ટેક્સન સાહિત્ય પરિવાર્યને 'ત્રાપતા ત્રાહ્ય સાહત્ય સાહત્ય સ્ટેક્સન સાહત્ય સાહત સાહત્ય સાહતા સાહત્ય સાહત્ય સાહત્ય સાહત્ય સાહત્ય સાહત્ય સાહત્ય સાહત્ય સાહતા સાહત્ય સાહત્ય સાહત્ય સાહતા સ

એમણે ગંગાકો કે શાસાના હવ કરી. ગાળી લગવતી શાસાએ પ્રયક્ષ થઈ, તારે અને કાંબના વર આપ્યા અને લાળા પણ કરવતંદ્ર સામાન કરી. જાણ વર્ષ કાંશીમાં રહી, શર વર્ષ આગ્રામાં રિશરતા કરી. ગહીં પણ એમણે કંકરા એવા તર્કોસહેલ-પ્રમાણના ગ્રહ્માસ

ત્યાપાચાર્યનો કરવેખ છે કે કેચ તે પુસ્તકથા જોવા ક્લિય કહી શક્ષ્ય નહિ. આ માટે ત્રીછ સાહિત પરિવાદના પ્પિર્ટ તથા નિગધવાંગ્રહનું પુસ્તક જેવું

ર, 'જેમ્હવામી રાસ' પ્રારક્ષ,

ન્યાયાચાર્ય પાત્રે કર્યોં, આંગાના સઘે સાવતો રૂપિયા ભરાવિશ્વ આગળ મૂકવા, તેનાં પાકં-પુસ્તક કરાવી ક્રાંગોને વહેંચી આપ્યાં 1 આ વાત શ્રીકાંતિવિશ્વ 'સુન્યાયેલી ભાસ માં તેમેં છે તેથી બહુવા મળે છે. ઘટાંતિવશ્વના પોતાના હાર્યનો કે અન્યે તેમેંથી આવા દાપ્યક્ષા તેના મળતાં નથી કે જ્યો ક્રાંઈ લાક્યુલિ પણ સંભાવી નથી. આગા મપેલા દાપ્યક્ષા તેમાં મળતાં કર્યો છે. લાક્યુલિ પણ સંભાવી નથી આગા કર્યો કહ્યા તેથી વચ્ચે "વેતાંગર-દિશંબર પિતા બનાવાયાર્થ પાસેથી વિદેશ ગાન મેળવવાનું કારણ રૂપ્ય બર્યુ છે, છે શ્રેક વિચારણિય વિરાધકાર્ય શરા છે જે નથી ક્યાં નિશ્ચંક સત્ય હોવાનુ શ્રી. માત કર્યા કર્યો છે. માત કર્યા કર્યા કર્યા છે. માત કર્યા કર્યા કર્યા છે. માત કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા છે. માત કર્યા માત્ર કર્યા કર્યા છે. માત્ર કર્યા છે. છે કે, ભનારપ્રાંતા કર્યા માત્ર માર્ય કર્યા કર્યા છે. માત્ર માત્ય માત્ર માત્ય

ચ્યાગ્રા છેડી અપકાવાદ આવતાં વચ્ચે વચ્ચે ફુદ મવાકોઓ સામ થયા હશે. તેને પૈરે પેટ પછાડેકા, એટલે વિદ્યાર્થીનિયી તથી ઊંકેકા. એક રીતે આને લેખકોની લેખનદીશી ગણીએ તો પણ માનવાને કારણ છે કે એપણે એ પશરિસ્તાપૂર્વ કે વિદ્યાર્થી પહોંગે પછી તેમાં સ્થાપી તેમાં માનવાને સારણ સાલમાં તેમાં સાથે વાદ કરવા વધા હશે. આપણામાંના પણ અદમત્તા તોના અને સંબંધનું મોદું વાપં સાથે વાદ કરવા વધા હશે. આપણામાંના પણ અદમત્તા તાના અત્યાર્થી તમાં આવાના સ્તવન ' ઉપરથી પર્યુપ્ત પ્રયાદ આવી છે. એમની લી વાધા વધી તેની સ્થ 'લેપશિયાને તાની અને નિસ્તેય કરવા જવી રહેલા લીકો તરફાર્યી જેમ જેમ પ્રયત્નો થતા સ્થા તેમ તેમ એ લેખા તેમ સાથે વધતી રહેલા લીકો તરફાર્યી જેમ જેમ પ્રયત્નો થતા સ્થા તેમ તેમ એ લેખા તેમ સાથે વધતી રહેલા લીકો વધતી જેમ જેમ પ્રયત્નો થતા સ્થા તેમ તેમ એ લેખા તેમ સાથે વધતી રહેલા લીકો વધતી જેમ જેમ પ્રયત્નો થતા સ્થા તેમ તેમ એ લેખા તેમ સાથે વધતી રહેલા લીકો અને એથી ઉત્યત્વ વ્યકારલા આ કે દિશામાં આપાસ થઈ સ્થી.

દિગંતમાં જેના જિન્લીય પહોંચી વાય છે, તેના નાણે પાંચા સંભળતો હોય જેમ મશેનિજન્યને તેના ખને સદાવવા બતાવતાના અને ભાવભાવના લોકો ઉત્સુક હોય તેમાં કોઈ નાથી નથી. એ તેને હમદેશી માનવોદની વચ્ચે નિયુધોથી વંદાયેલા તારામાં ચાંદ્ર જેના તેના અમદાવાદ-નામપુરીય-નાચોત્રીસભ્યમાં ખાતે છે. સં. ૧૭૦૬–૧૬૦૦ વખતે વામમાં તેઓ બહુ તો ૩૦ વર્ષની આસમાસ હતી.

શુજરાતના સ્વ્વાર્ગ ગ્યામ'ત્રણ---

ગુજરાતના સુષા સંક્રેલવભાનને^ર આ પહિલની સાંસળેલી અસાધારણ કીર્તિથી <u>એ</u>વાની

૧, બનારસીને લઈ તૈયના પિતા સ. ૧૬૪૩મા ગનારસી પાર્ચ-વાયની બનાએ ગયેલા ત્યારે તે હ વર્ષના બાળક હતા પ્રવસ તે શ્વેતાંનર હતા, પાછળથી દિવાળર થયેલા લાંભે "જેનેત્રુવ"માં આવેલું એમનું ચરિત્ર,

ર, 'શું'નઈ ત્રેન્ટીચ્ય' વા ૧, ભાગ ધ્યા ગુજરાતના આપેલા કૃતિકાસ પ્રયાણે સૌરંગ્રુંએ સતે ૧૬૫૮ (સં. ૧૭૧૪)માં કિલ્હીની ગાંકી લઈ ગુજરાતના સથા તરીકે જવાવતચિકની (સને, ૧૬૫૯ M ૬૨

હોંડા ચર્ક એમી તેણે ગ્રીમણોવિજ્યજીને સત્યક્ષતામાં તેકાવ્યા. તેમણે સ્ટ્રમાના કહેવાથી ૧૮ અષ્-ધાન કર્યો. આવી મુશ વેરેલા ખાને આતં બરથી એમતા સ્થાનકે તેમને પહેંચતા કર્યો હતા. આ રીતે ગ્રેશસીએ ગરુઆમાં એમની અફેકાલતા મુસ્તાર શર્ક સૂત્રી. તર્યુવ્યય અને રાજસામાને! નવેશસો પસ્થિય છતા તેમને અરાસરખે ફોલા થયો નહીં. આથી આશ્ચર્યમાસ સકળ સર્થે તસ્ત જ શ્રીવિજયદેવસૂરિ પાસે વાત મૂહી કે, 'આમની કૈક્ય હોઠ કરી શકે એમ નથી! એ બહુબૂત ચેલા ઉપાધ્યાય પહેને લાયક છે તેક તે એમને આપલું હઠે છે.'

પ્રાપ્ત આપળ અવધાન કર્યાં પછી આ પ્રસાશેની વિકારિ વિજયદેવસુર્વને જ કરી હોય તો તે સાલ સં. ૧૭૦૬ થી સં. ૧૭૦૧ ની અવધ સુધીની ગણાય. શ્રીવિજયદેવસુર્વને આ ગ્રે વર્ષ ફરી ગરુબદિકાર સંલાત્મા હતો. ' તે પછી શ્રીવિજયદાલસુર્વને સિંપ્સે હતો વિજયદેવસુર્વને સં. ૧૬૧૧ માં ૭૧ થી સં. ૧૬૮૪ સુધી ગરુબદિકાર પર હતા પણ તે પછી વિજયદિકં હસુર્વને સૈંપસે. આ સમય સ્વિયાના જરાવિજય અમલાવાદ અભ્યા પશુ હતા નહિ, એટલે આ વિતિના તે વખતે સંભ્ય નથી. આ ગૃંચવાક્ષાસ્ત્ર પ્રસ્તો લીક શ્રી. માં. દ દેશાઈ કે તિકારોને નાખે છે. સ્વેરણે કામ પતાની વારત સર્શે, વિશ્વ માં પતાની વારત સર્શે, વિશ્વ માં સ્વાર સ્વાર

ર ગ્રીવિઝવિનિકાનિતો જન્મ સ. ૧૬૪૪, દીક્ષા સ ૧.૧૪, વાગત્યક સ ૧:૦૩, સરિયદ સં. ૧:૮૨, ગલાવામી નાદમછેલાત અલેદાસા મંત્રી વ્યવસારી સ ૧૬૮૪ જેવ સંદિ : લુધવારે સ્મે અને ત્યર્ગત્રસ સ. ૧૭૦૯ અમારાગ્રદના નાવનીત્વાપાસ)પુગમાં રહ્યો. તાની પ્રતીતિ એ ગુજવાત માટે શરૂઆતની ખ્યાતિના સમય લાયે છે, પણ ખાન આવળ ૧૮ ગવધાન અને ઉપાધ્યાવપદ આપવા શ્રીવિલ્વાદેવાફિને કહેલું, એ આ કાળ સાથે અમંત્રત વાય છે, જે આગળ પુત્વાર કહું કે એક એક આગલ હરકત નથી કે કાન્તિ-વિલ્વનો આમાં રમસ્વદ્રોય થયા લાયે છે અને શ્રી. દેસાઈએ સ્વવેશ 'વિલ્વપ્રક્રાસિંગ નામ પર્યુ લાયે છે, જે અહેલવામાનની અમદાવદની સ્વાપીરી સાથેના સમયને સંગત થાય છે. કાસ્યુકે તેઓ પોતે જ કહે છે કે, 'ઉપાધ્યાવપદ' તો સં. ૧૯૧૮ માં વિલ્વપ્રેપ્રસ્સ્થિએ આપ્યું હતું.

ગુરુંભાઇ એ!—

પ્લયિજય માટે આગળ કહી ગયા. બીજા વિદ્યાવિજય 'કરિયાવહીની સત્તરાય'ના 'કર્તી તરીકે 'શિપ્ય શ્રીનચવિજય વાચકના કહે, વિદ્યા અસ્થ વિચાર, (૧૫),' એ રીતે પીતાની એમબાલ આપ્યાંથી તલ્લી અંધેએ છીએ. બીજા હશે પણ તે ત્રાથાહ સાધત હાય હાચ્યુ નથી.

(ક્રિમ્પ્રે)—

હેમવિજય-વિજયસિ હેસ્યુરિંગ સમયમાં શ્રીયરોપિલજય છે 'સામ્યક્ષાત તે હતાર કરીં 'સમતારાતક ' હેમવિજય માટે લખાલ્યુ. ગેર્ટ્સ તે શિષ્ય વરીકે સંખ્યાક મે પહેલા' લાગે છે. ગા હેમવિજયશિષ્ય શુરુ માટે અલાંત ધ્યાત કઈ પ્રથમોચરી વહેરાં, લાવતા અને તેના ઉપયોગ કરવા શુરુ સાંગે આજંવલાયે વિત્વલ્યું કરતા હાથ તેની જ્યાન મહેતા ત્યારે જવાબ મહતો કે, 'જરા શાહ, આટલી પરિતા સુધારી લઈ, ગા લગ્ન પુરું કરી લઈ.' આમ ને ગામ ઘણે સમય જતાં હેમવિજય શુત્રસાધિશ્યના હાયમાંનાં પાનાં પેચી લઈ, હાય હાલી હેસની, આહેર પાતાનાં પાને લઈ લઈ, ત્યાં બેસાની, પોતે સાંગે સેમી પ્રક્રિત-'પ્રપૂત્તિથી આહેર સ્તવતા.'

તત્ત્વવિજય—જેમણે 'અમસ્ત્રન-પિમાન'ક સમ ' સં. ૧૭૨૪ વર્ષા તપંચમી, શુરૂ, સ્થાણી શહેરમાં; 'ચોવીસી' (ચતુર્વિંશતિ જિનલાસ), તથા 'ત્રાનપંચમી સ્તૃતિ' સ્થ્યાં , છે, જેમના બ્રાતા સકલમણિગલરાખ્ય હ્વસ્મીવિજય અધિ હતા.³

ર. હેમવિજને 'ઉપદાય અને ગમલુત્વ' એ સીર્પંક પોતાના પદમાં આ પ્રકારે દર્શનો તેઓ કેના કિચ્ચ કે તે બતાર્બ્યું છે—

■ બ્રાન્સિવિજય વિશુધ વસ્સજે, ગાંજે લખ કીસ્તી; શ્રીજરાવિજય ઉવલ્લાય પસાવ્યા, હેમપ્રશ્ન સુખ સંતતિ."

[.] ૧. વધુત લાંધ તથ રિપિકે, મહા ક્ષ્ટ્રેય ક્લાસાફ વિમ્મલિ સ્ત્રીર કોંગ્રેસ જેમતા સતકેશાર (૧૨) વધાવ તાફ તત્વરમાન, હે સમાત સરકીલ; ત્યાં અર્ટ તુલ સંચલ ક્ષાય, અનુભવ ગયર અર્ધાન (૧૨) કિંધ ચારિયત્ય શું રીપા મો, મામ મામ્યું દેત, સારમાંલાક કહાર મહે સંમહિતપ શુંનિક્ષેત (૧૨૫) ર. હેમ્પિલિય કું રીપા મો, મામ મામ્યું તેને સાર્યાલ્ય ક્યાં માર્ચ સ્થાર્ય કોંગ્રેસ કોંગ્રેસ કોંગ્રેસ

^{, 3} કાશીરાળા ગીડિજાવાર્યસરિના-સ્થાતતારારો ગુનિમાંથી ચાલેલા (રવ.) શુનિ શેરિન્નવિજયક નામે શિલ્લે વારાક મરેનિજન્ય માટે ભીજી વર્ણી વાત અને કહેલી ત્રેમાં તવ્યાત જેવું તો છે. પણ તેને અને તૈયાય આપ્રમાના બેઈ નથી

ુાણવિજય—જેમની શિધ્યપર પરાના ખ્યાલ નીચે આપેલા ઉતારાઓથી આવી શકે છે.

'(अ) होत ओस हमना वर सिंग्यमिक्ट्रोपान्याव औ १०५ औष शोधित वर्याणिहर प्रस्तात्र अर्थित स्वार्य स्वार्य

(आ) सं. १०९७ वर्षे वपाद वरि ३० वितं रात्री प्रवस्पवृद्दे छिस्तितं सहस्रदार्विहंदस वृद्धात्रांवातृशेषात्रावात्रात्री १९ वर्षाांवाववाणे—सर्विष्य पं. औष्-वेस्तरिवनयाणि तर्व्हण्यात्री ५ विक्रोतिविजयारिपारेपारवेषविवयणिक्योश्चर्ते ओयोग वरिर औत्रवसंस्वयापर्वनात्र प्रसादात्रे ।

ગ્યા મળી ગાવતાં નાગો સિવાય બીએ એમનો પરિવાર ઘણા હશે, પશુ એકંદરે તેતાં કોઈએ પોતાના તરફનું ધ્યાન કાઈનું ટકાની સખ્યુ નથી. એક્સે એમનામાં વિશેષતા સંભવતી નથી. એ હોત તો પોતાને ચોરન લેવા પોચ્ચ સક્કલતાર્કિકચન્ન્યું,માંધિન મનેમાનેક ગ્રંથા મળતા નથી તે ન અતત. તહિ તહિ તો આ ગ્રામાન્ય મહાશુના ઘરિતની તો આતા રાખી શકત! બીઅપ્યોના હાંચે તે કોઈ ચાહું હાલું થયું છે તે આપશું માં, ૧૯૮૩ માથ છીએ. સિવાય પુનિયાયમથ્યના ભાવસ્ત્રાફિનો સ્થાપ્ય પ્રાપ્ત કરી છે. માં, ૧૯૮૩ માથ શુક્ત અપ્યાપી સ્કૃત્રનાર્થ કે સ્થિયિય સામની પ્રતિ-

'उपाध्यायश्रीवशोविजयगणिकतः स्त्रोपद्धस्यार्थं राद्धः संपूर्णम् [:] किस्तितः (१) भारमण् सं॰ १८०९ वर्षे मासचैतं वित ३ स्क्रमासरे व्यवस्थायाद्यस्य िषिक्तोऽनितः । '

આવા જૂજ લાખદા આપણી પ્રાપ્ત શાય છે. ક્ષળાંવરે એપની શુજવાતી કૃતિઓ ઉપર બાલાવગીધ અને શ્રીકુલ-વીરવિજયે પોતાની શક્તિઅનુસાર તેમના 'અધ્યાત્મસાર' સંસ્કૃત ગ્રંચ ઉપર ટગા લખ્યા છે. પણ એપના ગીઠ વિદ્વતાલમાં ગ્રંચાને તેમના પછી ભાવુષ જેટલી શુદ્ધિ કેશાનામાં રહી નહિ એટલે તેના તરસનુ લદ્ધ આસવા શાસ્

t. ' વેદ રા તવણ રા ઋધિ to વિધુ સંખ્યાર્થ, એ સંવત્સર સારઝ,

માત્ર વસત પૂર્ણ તિથિ પ થયો, કેવમ સુર ગુરુથોલા — (ગારરત પાયત દર્શ) માત્રુ કરી મી લાગી કરીની...ચીતાવિલ્લા વિસ્તુવર સંગે...જાલિલ્લા ઉલાય સિરોસિક્તિ તમ પાપ માત્રુ કરી મી લાગી કરીની...ચીતાવિલ્લા વિસ્તુવર સંગે...જાલિલ્લા ઉલાય દિવસવર મત્રુ પાપ માત્રુ કરીનો મે મહ્યા દિવસવાજ...અમરલ નિભાવ કરી તે તત્વવિલ્લા કરિયાલ મત્રુ કરીને ત્રાંતા ત્રાંતા કરીને સ્વતુવર કરીને સ્વતુવર સ્વતુવર કરીને સ્વતુવર માત્રુ ત્રાંતા કરીને સ્વતુવર કરીને સ્વતુવર કરીને સ્વતુવર સ્વતુવર સ્વતુવર કરીને સ્વતુવર કરીને સ્વતુવર કરીને સ્વતુવર કરીને સ્વતુવર સ્વતુ

ર. 'તેન મુશ્કે હવિનો છા ૨ દ્રુટ કર (આ મોળનગર જે મીયાગામ, વડે દ્રુપ નિયકોઇ વેરટર્ન (પદ્મેતા માં તી. કી. ગાર્ક) તરીનું નીતના અને લાક્ષ્ય વચ્ચેનું નજ હતન જેશન છે. આ રેડેપ્ડ માર્ચ ને મેન્સ્ટ પણ હતારો નીતા જ ૨–૩ શક્તિ દ્રુટ છે,

र बेन मूर्य कीने भा र कि अब

કાર્ટીનિક વિષયોની ગતિસૂસ્ય લક્ષ્યાંતિની વચ્ચીગાથી લશેલા લથા રાબ્દ, છેદું, કાલ્ય આદિ 'રાક્ષ્યોના મહોદુંગોંધ મહત્વ ગયાનું કાર્યું આંક્ષ્રે'ન શક્યું. પરિસુત્તે એના પ્રચાર થયા નહિ, પણ જે કાંઇ હતું તે લધુ સરવાયાં સ્ટેશ્યને બહલે તેમાંના પ્રેમનાં પ્રચાર કરવા તરીકે વરસાં કે ઉપાદ્યયમાંથી શ્રુદ ઉપયોગ કે ક્લ્યપાદિ માટે વિનાશના ગ્રુપમાં પરણે, અને બાકીના કોઇ ક્રેશ્યન્ટ સ્થવે અસ્તરત્વસ્ત સર્ધ અંધા 1' આ ગોક ખેઠના વિષય છે પણ ટ્રેપમાં વિષય ત્રી એ છે કે, તપારાહ્યા આવ્યાં ત્રિયો ત્રાના ગ્રચ્ચનું અનુપત્ર ગૌરત વધારાત્રા આ મહાન પુરુષના અદિલીય ગયાની લહિયાઓ ત્રાનકો કરળવાની કે તેને લાંકારાં આવ્યું લાગ્યા સ્થાન પ્રકાર પ્રાથમિક સ્થાનો કાર્યો ત્રાને સાર્કાય સાથે પ્રાથમિક શાળવાની સાર્કાયાન સાથે પ્રાથમિક શાળવાની લાત તો બાહ્યું ઉપર પદ્ધી, પણ સર્શાવિજયે સાધુઓના ફાશાસન સામે પ્રાથમિક શાળીવાળા લાકમાં તે ખદલ તેમની પાસે માહીપત્ર પણ લખાવ્યું!

. ઉપાધ્યાય સરીવિજવાઇ ત્રજીનાથક ન હેતા છતાં પશ્ચ-ગ્રાસનપત્રી-જ્યાના-મર્યાંદાએ પાંધતા-કાહતા. અતતા સુધી જેમના હાથતું હળેલું જેક શાસ્ત્રપત્ર સં. ૧૫૩૮ ના વૈદ્યાખ શ્રુંક ૫ ગ્રુટુવારતું-પુસતત્ત્વવેતા શ્રીજિનવિજવાઇને યથેલું તે તેમણે 'આત્માન'ક પ્રકાશ ' માસિકના મુ. ૧૩, અં. દમાં પ્રસિદ્ધ કરેલું છે.

ઉપાધ્યાયછના છવન અગેની કેર કેર વેચાવલી વિઝરોને નવાં ન્યાંથી હાથ લાગી તમાં ત્યાંથી એક્કી કરીને અવેચણાપૂર્વ અત્રે રજૂ કરવાના પ્રયત્વ કર્યો છે. આશા છે કે, એ એમના સમ્યગ્રહભનનો પ્રાય કરવામાં ઉપયોગી નિવસ્થી.

ગૂર્જ શ્રામી સાલવાથી જે આ લેખના સુખ્ય વિષય છે, તેની ટીપ આગળ આપી છે. સિવાય ઘણા પદ્ય-ગળ ગંગા-તેખાં સ્ત્રી લવા પાઆ હશે. સિતપુરમાં દિવાળીના દિવસે સંસ્તૃત 'ક્ષાનસાર આટક' પૂર્ક કર્યું, તેના ઉપર-' ઘાલાલાઓપ' તેખાં 'જેનેવાર્કમાર્ય'ના પ્રાપૃત હથે. છે. તે પ્રાપ્તિક થયો. છે. 'અખાનામાતપરીયા- નાલાવાઓપ' તેખાં 'જેનેવાર્કમાર્ય'ના પ્રાપૃત હથેપ-ઝારે લેખ લિખાની ગોકલ્યો છતાં હાતાનાં ત્યનિયા પ્રસાણી પ્રણા રહ્યું છતાં. તે તથા લીજા પ્રસાણના પ્રશા ઉત્પર્ણ કાંગોમાં, પરસુષ્ય લખાશેનું—એ લધુ હજા અપ્રસિદ્ધ, સ્થિતિમાં છે. હાલ તો આપણે ટીપ પુરાત જ વિચાર કરીએ.

. : એરમણે કથાં કથાં અને કથાર કેલારે વિકાર કરતાં સ્થિરતા કરેલી તેવાં ચેમિયાં કરેલા, ત્યાં કાળ કેવી રીતે નિર્ધામત કરેલા, તેના પત્તી મળે છે. કાર્યાના અસ્યાસ પછીની ચાર કૃતિઓ સં. ૧૭૦૯ની કાળ મર્યાંલામાં આવી શકે. તેમાં 'દ્રત્યશુર્વપૂર્ધાયત્રસ-સ્ટોપણ સંત્યાલક' શુલ્યુકે પ્રથમ છે જ પણ રજાતાનું શાત અન્ય લાકાતું નથી. એમાં કાર્યાના અભ્યાસના પરિપાકરૂપે મળેલી સંદેશનાને જાણાવી છે. સ્વતામાં પણ બહુશતતા, પ્રગુર પોઠિય, તત્વચિતન અને તેને સ્વાલુક્યનું તાકગીનાને સ્ટુર પહેલા છે. એમાં તેમો ત્યા ઉસાય કર્યો કર્યાં કર્યા કર્યા છે. એમાં ત્યાં ઉસાય વિદ્યાન એમાં સ્થળ મહેતું પોઠિય કર્યા સ્થળ મેના સ્થળ મેના સ્થળ પોઠિય પ્રયુપ્ત સ્થળ સ્વાલનો સફળ મેના સ્થળ કરી કર્યા કર

ંગે કેરો પ્રગીસ ગાંચાના સ્ટલન 'તે અમે છેલ્લું યા સં. ૧૭૧૮ પહેલાંતું માનેલ પહુ વિચાર કરતાં તેને બીલું માનવાનાં કારણો. પહુ છે. સાધુઓના આચારા અને વિચારા વિદ્વાપણાને પાંમેલા અને તેનાથી એ વે સ્થિતિ ઉપસ્થિત શર્ઠ અને ફાયમાં પાંધામીની ક્રું કૃષ્ય કરેલા વાતા રાજુ માં પાંધામીની અપ સમય લાવવાનો-અને તેના નિવારણનો-અને એ રીતે સ્વય્ય કેરેલા વાતા રાજુ માં પાંધામાં વાતા વાતા વાતા એ સ્તત્રનમાં પ્રયત્ન છે. આ એડીની અસરથી પોંતાનાં ફાયોને તે કંગાના એ લંબિક અઆવો. અને તેના સ્ત્રિયોનિયથએ સ્પષ્ટ પર, ગાંચામાં એઆ અને સ્ત્રિસ્ત ઉત્તર ઉત્તર આપી નિસર્થક કારાના છે.

" નવિ નિશમણા કહેતાં, સમ પરિણામે ઘટ ઘટના ! ' - કાઈ કહે નવી શી જેઠી, ગ્રુતમાં નહીં કોઈ મેઠી.

" જન મેલનની નહીં ઇહા, ઇહા કૃપણ એક કહાય, જે ચલને પીડા થાય..

ં ખલત્રવર્ણ ગણે કુણ સુરા, જે કાંડે પ્યમાંથી પુરા "

ગાવા પાતાના ઉત્પારા-કાળમાંથી રસતાં કાલ્યા કે એ ગ્રેમની રચનાએ માટેન્સે કોર્ડ રોલાનું તેની અસરમાંથી ઉદ્દાવતા કે. એટલે ગા સ્તવન પહેલાં ફેટલીક હોડી હોડો ફરો. ૩૫૦ ગ્રાથાના સ્તવન પછી 'સમતા શતક ' અને 'સમાયિ શતક 'ને મૃદી 'શક્ય'.

આ પક્કી આપણને સં ૧૭૨૧ સુધીમાં એક-માં. ૧૭૧૮ માં વિજયપ્રકારિએ વાગ્રકપદ આપવા સિવાયના-ખીત બતાવે દાયા સં ૧૭૩૯ થી સં ૧૭૪૩ કે જે વર્ષમાં તેમનું ડેસાર્કમાં અવસાન થયુ એ ગાર વર્ષના ગાળા કેવી રીતે તિગ્રધન કર્યો, એ તાલી કરવા માટેનું સાધન બહાર આવે ત્યારે ખરૂ.

ચોમના આંતર છવનનું ઊંડાલુ અમે બીલ્ય લેખમા જણાવ્યું છે. એવી પૂર્તિમાં કહેવાં તેનું એ છે કે, આ લેખમાં એવની પૂર્તિઓ કાલકંપમાં નેકાની છે. તેના એક હેતુ એ છે કે. એમના ખાંતર સંસ્થળા પાસરને સેવા ત્રાલુવાનું આથી બની શકે. પાંડિય બતાવવા તેઓ સંપૂત્તામાં સ્વર્યક કરતા હેલા એનું નથી. તેમણે લેકાલાય પ્રાફત, સૂજવાતીમાં લાખાના ત્રામને સ્પૂત્તામાં સ્વર્યક કરતા હેલા એનું નથી. તેમણે લેકાલાય પ્રાફત, સૂજવાતીમાં લાખાના ત્રામને કેટલી છે, તે પણ એમણે પ્રામાણસન્દ કે તેમ ક્લ્યારે પોડ્ય સ્વિય ને સું એમણે સ્વર્યક મારે તેમણે એમ કેટલી છે, તેમણે તેમણે સ્વર્યક ને સું સ્વર્યક ને શ્રી કરી કે એમાં અનુ લિયે તેઓ કરતીએ છે.

" કબ્યાદિક ચિંતાઇ, સાર, શુક્લ ધ્યાન પૃષ્ટિ **લાહ**ઇ પાર તે માટે ગોહિંજ આ ધરો, કદ્યુક વિલ્ મત**ુલ્**લા કરેંદ "

۵

—ફ્રેબારિકની વિતાઈ યુક્લભાનો પહિ પાર પાસિઈ, એ માર્કિ-ભારમદ્રન્ય-સુદ્ધ પર્યાય લેક વિતાઈ યુક્લપ્યાનો પ્રથમ લેક હોઈ, અનઇ-વેહની અલેક વિતાઇ દિતીય પાક હોઈ તથા શુદ્ધ દ્રબ્ય-ગુલુષ્યાંથની ભાવનાઈ 'હોહ સમાપત્તિ ' હોઈ તે તો શુક્લપ્યાન્તુ' ફળ કઈ.

સમ્પક્ત માકાર્યા કુલાનુલાનિતા, એ તેં એમનામાં શ્રાહ્માં મોડો કુલું હતો. 'ધાતકાર્યન'ના એના દાખીય તાએ જ છે. 'ગીતા 'આ, 'શ્રીક્ષવારિકા'ના 'ચીકોને પાતાના પ્રધાન સમાનવારો' ઉતારો છે. તિમંત્રા માંચોના ચાનુવાત તથા તે ઉપર દીકાળા લખી છે. આનંદાન જેવા પ્રદાયોગીને પ્રવાની એમને ઘણી તાલાવેલી છે અને મળે છે ત્યારે-

" આતંદ કે ત્રંગ સુલવા હિલિકે લગ, તમ આવદ સમ લધા સુલવા; પાસ્સ સંગ લેશકા જો કુરસત, કંચત હોત હી તાકે ક્ય. ¹¹ આ ઉદ્ધિમાં તેમની કેટલી અધી વિતસતા લેવાય છે!²

એ જ તસવાથી હપા૦ વિત્યવિજ્યનો અધ્રુશ રહેલા રાસ પૂરા કર્યો તે સાથે એમના ગીતાર્થપશ્ચાના તથા અન્ય ગ્રહ્મોનો મહિમા ચાર્યા છે!

હા, એમણે કહુ વચનો ઉચ્ચાર્યા છે, તે પત્રિસ્થિતિએ સર્જેલી કૃદિલતા સામે. એમણે ક્રેક્કના અધિતારત નિંદા કરી નથી. એકલી શામા-ગતા એમનામાં હતી નહિ. એમની શાસ્ત્ર સિંહ પ્રત્રાએ તેણું કે, સર્ગ વર્ગના લોકોનો સાચે માર્ગ શો. ∄ તે તે અતાવવામાં નહિ આવે તો લોકો ક્લિપ્સું અની ગમે તે વિમાર્ગ અલી જેશી! ક્રેયકે એ સમયમાં જેઓ સિંહોત ચોરી કરી, ઋજેની દેશના લઈ, ઘામધુમની ધ્યાપમ ચલાવતા હતા! અને એ રીતે

^{1.} સમાપતિ ખાત ' પાર્તજવોષ દર્શ'ન 'ત્રા વર્લું'એ છે, એ અમે અમારા ભીત્ય લેખમાં ટોર્યના તેરા આપી દર્શાબુ છે. વિલનું પેત જિલ્લામાં સમાનાકાર ગતી લાય એ સમાપતિ છે એના ગાર શેર છે. જે બધા સપીત્ર ફોઈ જા આતા વિલ્ફો કેરોયા પે. છે. એ સામતાં સમાપતિ માત્રજ એ લખનાએપી છે કે જે સામતાં સમાપતિ કેરાયા છે. એને સામતાં સમાપતાં આપનાએ કરે છે. મોહતી ઉપાય-દર્શા આવી. ઉપલબ્ધીનુંથી સમાપ્તાં સમાપિતી તપેલ શર્યાળ અને મોહતી લીલ્ફ અમારા કર્યાં પ્રાત્યાં સમાપતાં આપીત્રી તપેલ નિર્ણય અને મોહતી લીલ્ફ જિલ્લે અમારા સમાપતાં આપીત્રી દ્વારા કર્યો કર્યાં છે.

વિષય રસે રાચી મિહના મદમાં મેરત થયા હતા, તેમનુ તે કાર્ય ખુલ્લું કરવા અને તેમાં શોક કસાય નહિ એવી કરુણાથી પ્રેસાઈને લખ્યુ છે.

" કુગુરુના વાસના પાસમાં, હૃતિલુ સમ લાક સપડાઈ. "

અશરણપણે ૮૫૧૫નારના ઉદ્ધાર અર્થે અકાર્યું કાર્ય કરવું પહ્યું છે. એ એમનો અનાચાર સામે પ્રજ્યવિત પુરુષપ્રકાય હતો.

" કલકારી કલબ્રહ લરેલા પોતાના ભાલને શાયવા જિતવચનને ભાજતે કાલે અન્યધા દાખવે; અને વર્ષી કેઈ નિજ દોયને લેકવા-કેકઈ સતને-કેકને રોપવા ધર્મની દેશના પાલેટ-માંક્ષ્ટાહિ સત્ય ભાખે નહિં."

સાવી દુ:ખદ સ્થિતિ એક, ક્યા કાનવાબી અને કમવાળી શાંત એસી શકે ?

ભગેડેલા વાતાવરસૂને મુધારવા-એ લગાડે કંબાસ સાલ્ફોર્સની વર્ચ્ય જ એપફ્રો નિકસ્પક્ષ કામ કર્યું છે તેઓ પાડે સમજ હેતી કે, આવા લોકોને પાડે મારી કાલામાં કે તારોકાલામાં કે ઘૃણા લાવી દૂર ખરી અવામાં કશું સાર્યક નથી. ખર્ચ કામે ત્યારે જ થઈ શકે કે દૂર લોકોની વચ્ચે સ્ફોને જ તેમની ફ્રુટતાને કુર કરવી. તેથી જ તેઓ શીસભ વિજય પંત્યાસમાં પીલસ્ક્ષેધારી-સંવેગ-પાક્ષ્મલામાં લખ્યા નથી. 'પશ્ચ—

" धन्य ते धुनियरा है के बादी समलावे,

સવસાયર લીલાએ ઉતરે સંયમકિસ્યા નાવે. "

" મેલ પતે હવાતો નિત આગમ ભણતા સદ્દગુર પાસે, દૂધમાં કાળે પણ ગુણવેતા વસ્તે તાલ અભ્યાસે;

ં. પક્ષ કૃષ્ણિણ કરવા મેને જીકે કુમ રહિ થતું કૃષ્ણિંતે. ં જ

આ કાળબહ રીતે ઝુનિજનાના ગુણે એમના ગુણતુરાંગી આત્માએ ગાયા છે અને એ રીતે ત્યેતના ઉકાર્ય ઇચ્છતા-એમની સાથાસાય ગ્રાહ્ય છે. અને---

> " તેહવા ગુણ ધરવા અણધીરા વ્હે પણ 🏭 ભાષી: - જિનસાસન સોભાવે તે પણ, સુધા સવેરા પાયી. "

[&]quot; નિશ્-પુત્ર-બુલિ-અશી હવેત્ર ગાંગે, (૧૦૦૧ ફાયણ કોઈ પાંત્રની દિવરેલ્ડ); પત્તનમરતણે તાર પારે ૧૬ માન્યા કાર દેશેલ્ડ. બીજિન્યપ્રાવાનિ પારે પદા હવેત કાલમાલ, ગ્રામનિવારાકી સામેલ દીધે " ૧૨ માં પારે વિતિપશ્ચનકો અને ધોલે પણ કરતી ધારે, તેમ 'તક ત્યાપ્યાનની પકૃતદોને ત્યમ્પ દે

તેમના તસ્કૃષણ પોતાના પ્રભાકભાવ વ્યક્ત કરી, ઉદાર દેષ્ટિ રાખી, તેમને દુક્કર કાર ચંકી પણ અધિકા કહી સન્માનિત કર્યાં છે.*

પ્રસંગોપાત થે વાત થે સારા તરફથી કરી, હવે એક વાત તેમાં કહેં-આ કવિ તાર્કિકેડિકેરામાંલું પ્રપાર વિદ્વાન અને કુરધર પ્રથાવક હૈમચંદ્રાગાર્થ પછી સર્ચ શાસ્ત્ર પારંગત સુસ્મરદા અને શુદ્ધિનિયાન સાનપુખ પ્રવાપી મહતપુરૂપ થયા એ નિરાફ વાત છે. શ્રીમદ્ હરિસ્તાદર્શ જેના વિદ્વાન જૈનશાસનમાં એક જ છે. એમની તપાયર્થના આશાર્થિકિન્ ભર્ષ પછી થા શ્રીપ્રિયન્ય જૈનકાસનના સફલાએ કચા, 'એમને તપાયર્થના આશાર્થિકિન્ આશાર્થ પહલી કેમ ના આપી

રતને રતપરીશક હતો તો-તેની નવરમાં તેતુ મૂલ્ય કર્યા, સિવાય ગ્રેક્ષ્રું નથી, અને એ શૈતે એમફ મૂલ્ય 'ન્યાયાગાર્ય' તરીકે વધું છે. આથી અનત્યાસ્થક એવું તેમતુ શીધ'ક એમના નામ સાથે ક્રોડ્યું છે.

> वियमपीस्य पदावि वागः वाणै-बैरति सम्बयदायिक मानिकतः। मयति देवतिनुष्टिपीय पहुदः, सुगकरी स्वाम सनेत्रस्तवाः।।११९॥ भूगितः भ्रमतः स्वी भ्रम सन्दर्धने, गीति। धीने भीने केते हः भे क. तेव भ्यने वार्षं अपन असूरती हैक्सिति क्ष्य भीने भीने विशेष सुक्र ता लग् के

> > િશ્રીમદ સંશાવિજવાજ

૧ ચરચુકરણ રાજુદીભુડા શાતપ્રધાને ગ્યાદરિક રે, ઇંગ કિરિયા રાહ્યુ જણવારદિ ઇંગ્લાપારિ દિર્દિક રે (૨૬૩) દ રા પ રા

અધ્યાત્મસાર સુરીકો

ાલાદિક મહાલ ફિલામી લાખે ઇમ્પ્યોગી; મધ્યાસ ગ્રુપ પેલ સમારાત, કેમ નહિ સહિમે લેવી (રૂપ બા. રુત) આ બધુ એમણે પૂર્વસસ્થિતા આધારે કહ્યું છે (લૂચે ચેલ કૃસ) શુક્ર સન્વેશ કિસ્તા પારી પણ કૃષ્ટિલાઈ ત પાકે (ફૂ. સ. ય.) સુધ્યયુપ લાધુ નપીએ (સ. શૂ. સ.) રુત્વ ત્રેશ દ દેશાઈ (જે સ. ક. લા. રુ. રહ્ય પ્રોલિયુપ) .

અડારમી સદીના મહાન જ્યાતિધર મહાપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજ

[ટુંક પરિચય]

[લેખક : પરમપૂત્રય આચાર્ય શ્રી વિજયપદ્મસફિષ્ટ મહારાજ]

શ્રી. ચરાાવિજયજી અહારાજના છત્તનચરિત્ર ગ તેની જાધારક્ષત સાહિતી અહુ સાહત પ્રમાણમા મળે છે. તે તે ' શ્રી. ચરાહતિશિક્ત ' શીર્ય'ક પ્રાકૃત લાધામાં વ્યેશ કારખો પ્રાકૃત લાધાને નહિ ભાવનાર જેવા સામાન્ય નાચકવાંને તેમ જ બીજા વિદ્યાનોને પથ્ જપયોગી ઘર્મ પડે એ હેતુથી ફૂળ એ બતાંશીને હક્ષમાં રાખી બીજા કશાને. ઉપયોગ કરીને અહીં એ દરેક 'શાક્રુત વિરાદ વિવેશન ચાપવામાં 'આવ્યું' છે. વિવેશનમાં મૂળ બની-શીનો તે તે ત્યાક દર્શાવવા માટે હરેક સ્થળે શરૂઆતમાં કોંસમાં તે તે અંક આપ્યો છે.

(૧) ગુજરાત કેશમાં આવેલા ખંલાત લંદર નામના પ્રસિદ્ધ નમરમાં રહેલા શ્રી. તતં લગપાર્થમાં મામુને પ્રલામ કરીને તેમ જ જેંગા મારા આત્માના પરસ ઉદ્ધારક છે તે મારા પરમપૂત્રના પરમાપકારી શારૂવા આવાર્ય મહારાજ શ્રીપત્ (લગ્યનેમિસ્ટ્રીપરજ મહારાજના પરસ પ્રવિત સરાયુક્ષભાને નમસ્કાર કરીને ત્યાપવિદ્યાદલ ત્યામારાથ શ્રીમર્ય મશેશિયપર ઉપધ્યાસ્થ મહારાજન્જેનો લગલમા ત્રવસો વર્ષ ઉપર લા પૃથ્વીતાર્ત પાયત કરાત વિચારતા હતા, જેંગા સ્વસ્તિ હોત પરસિદ્ધાંતના શાતા હતા, જેંગા ત્યાપાલના રાતમાં જનાતના પ્રપાર પરિતોને પણ ભાગ્રેય પ્રમાટે એવા શાનવાલા હતા, જેંગા ત્યાપાલના ધારાધનામાં ભાગતા પ્રયાર હતો, જેંગો પ્રાથીન અને નવ્ય ત્યાપના તેમજ ધર્માસ્થિત શ્રી ધારાધનામાં ભાગતા પ્રયાર હતો, જેંગો પ્રાથીન અને નવ્ય ત્યાપના તેમજ ધર્માસ્થિત શ્રી શ્રીલિવિચય મહારાજદ્વત 'સુરુત્વાહી લાસ' વગેરે શ્રીના આધારે હું સરિત રહ્યું હૃ

(૨-૩) પરમપુત્વ શ્રીફિસ્સિસ્ફિક્ટ અને કહિકાલસર્પન્ન હેમચંદ્રસ્તુપિક્ટ વધેરે શ્રીજેવદાસનના સર્પાલ સરખા અને સાનવાળા અનેક પૂર્વાંચાર્યો કરશ તે પછી ત્યાવશાસ વગેરેમાં નિયુદ્ધ અને પ્રતિભાશાળી શ્રીયક્ યશાવિજયજી વાગક થયા, તેમને હું મન, વચન, કાચા વડે નગમકાર કર્ષ્ટ્ર હુ

(૪) ઉપાધ્યાય મહારાન્યે સંસ્કૃત ભાષામાં 'ન્યાયખ હળાવ, ગ્રાનનિવંદુ, અધ્યાતમાર' વગેરે અનેક ત્રથા બનાવ્યા; 'ગ્રાફૃત ભાષામાં 'ત્રીગુદ્ધતત્ત્વવિનિશ્ચન, ઉપાદેશપદ્ધાય' વગેરે અનેક ત્રથે ખનાવ્યા, સુબત્તાતી ભાષામાં 'સાહીગ્યુએ, સ્વાલો, દોક્સો ગાયાનાં સ્તવનો ' ને 'દ્રવ્યસુષ્યયોના રહ્યા' તથા શ્રીક્લિસ્તલના અનેક 'ચોલીસી' વગેરે ઘણા લગ્નો બનાવ્યા તથા હિંદી સાથામાં પણ પ્રભુવક્તિના 'પેડો 'વગેરે રૂપ અનેક બંચો અનાવ્યા છે એ બંચા ઉત્તામ સાવાર્યવાળા અને બંધીર અર્થવાળા છે. એના મહાન બંચોના સ્વતાર શ્રીયરો!િલ્પ્યર્ભ વાચકને હું વંદના કરું હું.

- (૫) શ્રુતારાતનો ધારણ કરનાર એવા, 8પાધ્યાય-વાગકરૂપી તલામાં દર્શને દિપાવવામાં સ્વર્ધ સ્પયા, અને જવાતમાં વર્ષના કુમતીના ધર્મને ચાનનાસ મને સભી ડ્રેપી એવા દ્રેવ. શ્રુકને માનનાસના દુર્મંપનો સ્પાહાંક રોલીથી નાશ કરનાસ, ધૈર્યગ્રુભવાલા અને 'આફારાંય 'વગેરે સ્વર્દ્યાના (એન દર્યાના) સિલાંતને તેમજ શ્રુતિએ આદિ પરદર્શનના સિલાંતને ભાવનાસ એવા શ્રીયસોવિજ્યજ વાયકવરને હું સર્વદ્ય વંદના કર્યું હુ.
- (\$) ક્ષેત્રી કનોના સમુદાયથી પ્રશંસાપાત્ર વધેલા ગ્રુક તત દેશમાંના વરોદરા પ્રોતમા કરીલ ગામ અને પાડસૂની વચમાં આવેલા કનોહ નામના ગામમાં જેમના જન્મ ઘરો; ક્ષ્તો તે શ્રીયદ્યોત્વિત્રય ઉષ્પ્રાધ્યામને વંદના કેવું છું. (અહીં શ્રીઉપાધ્યાયણ મહારાત્ની જન્મકૃષ્ટ્રિ તરીટે-કનોહ! ગામ જલાવ્યું તે 'સુજ્યવેલી લાસ' વચેરે શંધના આધારે કહ્યું છે)
- (૭) તેમના પિતાલુ નામ નાસવાલુલાર અને ચાતાલુ નામ સીક્ષાસ્થકેથી હતું. આ માતાપિતાના એ બેઠા પુત્ર હતા. તેમના નાના લાઇલુ નામ પ્રથસિંહ અને તેમનુ પોતાનુ નામ જશાવંત હતું.
- (૮) તે સમયમાં પવિત્ર ચારિતાળાં પરમયુન્ય પહિત શ્રીનયવિજયછ મહારાજ એ જિલ્લામાં વિક્રેક્તા હતા. તેઓ વિ. લં. ૧૬૮૦માં પાત્રવાથી નાઇકામાં આવેલા કૃષ્ણમ નામના ગામમાં શેમામાં કૃષ્ણા હતા. ત્યાં ચોપાસુ પૃષ્ણું કરીને ચાપેલામ વિક્રાર કરતા અને ભવ્ય છવેને ધમંદ્રેશના દેવામાં નિરંતર જીવમવાલા તે શ્રીનયવિજયછ મહારાજ વિ. સં. ૧૬૮૮માં કેનોડા કાપે પથામાં
- (ક) પોતાના ગામમાં શરૂ મહારાજ પ્યારેશ જાણી સાલ્યાઓથી નિત્ય પોતાના જયાત તે પદ્મમાં નામના અને યુગે સહિત વ્યાપ્યાન સાંભાગ જતાં હતો. ત્યાં શ્રીનાયનિજના ગુરૂ મહારાજની સંચારની અસારતા હશોવનારી વાણી સાંભળીતે ત્રેફોને વૈશ્વપ્રભાવના જાવાથી માતા અને અને યુગે-એમ ત્રણે જ્યાએ નયવિજ્યછ મહારાજના વરક હસ્તે અગુહિલ્યુન-પાડશુમાં વિ. સં. ૧૯૮૮માં ક્ષિય અપ્રાર્થિક કરી.

૧ કન્ક્રેહ, કર્મ્ક્રેહ-આવાં નામ પણ અન્યત્ર જણાવ્યાં છે

ર પૂર્વાર્કાં કોણગોજિબ્લાઝ સહારાજના રહેલાર લાઈ હવા નાના આઇ ઉત્તર મેટાસાઈ પૂર્ણ લામણી કાગરના હવા સેમ 'મીકામ-તર્વાહિલા' આદિતો આદિત શરૂપ વગેરે જેવાં નિર્ણય શ્રાય છે-લ્યો-સંભા સમય વ હવા લામોમમાં લાક ગુલી: હોયર !! તથા-લૉક્સાઓવર મે?ક્ટોરોન્ડ લોઇન સ્થોપેમ્ચર્સન આ દીશા સમયે ને તેની હસ કે તાર વર્ષ થી ગોડી હેમર નહિ ટ્રોય, એમ ંતીન્ડિકિક પ્રેમોના અપસીકામથી બહાલ છે

- દ. (૧૦) ગુદુમકારાજે માતુર્લી સૌક્ષાત્ર્યદેવીના જરાવાંત નામે મેઠા પુત્રુનું સુનિ જયું. વિજય તામ સ્થાપ્યું, જાને નાતા પુત્ર પંદમસીતું ગુનિ પત્રવિજય નામ સ્થાપ્યું, જેમાં શુનિ જયવિજયજી જો જ લાલુળા કે જેમતું જા સ્તોત્રરૂપે જીબન્સવિજ દર્શાંલાય છે. (ક્ષેક્ષા આપ્યા પછી માતાનું શુ નામ સ્થાપ્યું તે સંખેયી હંકીક્ત જ્લાબી નથી.) તે જ સાલમાં (૧૮૮૮ માં) આવાર્ષા શ્રીવિજયદેષ્ય્યું ઉપકારાજે બનેતે વહી દીશા આપી.
- (૧) શ્રીસર્સ્ટ્રમહાત્રવની કૃષાથી સુનિ શ્રીજરાવિજયજી (એટલ શ્રીવરાવિજયજી ઉપયાસ મહારાવે) પૈલાની અગાય અનિના અગાય સિ. સ્વ જેમ માર શ્રેષ્ટ્ર અંગ અન્તે સિ. સ્વાનોના સેન્ટ્રે કે 'સ્માચારાંગ' આદિ સ્વસિત્તાનના અને મુતિઓ આદિ પસ્ટર્શનોના સિન્દાંદ્રના પણ ગ્રમુક અંગે વિશાળ સાનવાળા ધયા, આ રીતે દીણા લીધા બાદ જાદય સપયમાં અનેક શાસ્ત્રોના કેમ્સર અન્યાસદ્ભાર તત્ત્વપસ્થિય ગેળાવયા સતત પ્રયત્નદીલ અન્ય હતા.
- (૧૨) અનુકંગે વિ. સં. ૧૬૯૬માં શ્રીજરાવિજયજી ગાઉ દિલ્ય સહિત શરૂ મહાલજ શ્રીનમવિજયજી સમાનુઆમ વિહાર કરતા અને માર્ગમાં અનેક છવાને પ્રતિવેધ પમાહતા રાજબારમાં એટલે જેન્યુરી અમાલવાદ નમરીમાં પધાર્યો.
- (૧૩) અહીં (અભાવાદ)માં વિ. સં. ૧૬૯૯માં અતેક સભાવનોની સમગ્ર શ્રીજય-વિજયછ સુત્રીચરે જાઢ અવધાત કર્યો, કે જેમાં તેમણે આક સભાવનોમાંના દરેતી આક આક વધુંગ્રીમ-કેમાઇ બ્રિફિંગ, કેમાંઇ કાલ્ય, એમ દેજ વસ્તુઓને વસભાવ યાદ રાખીને અહાંકો તે વસ્તુઓના વવાળ કહી કેમાડ્યા. આ રીતે પોલાની સમસ્યુડાકિતોના પશ્ચિય કરાઓ. શ્રીજયાનિજયજીનું ભુતિશય તેષ્ઠીને અપકાવાદિતવાસી શાયક ધેનજ સંધ "બદ્ધ જ શ્રુષ્ઠ થયા."
- (૧૪) આ પરથી શીધનાજ શેકે શ્રીનથવિજ્યાછ મહારાજને વિત્રપ્તિ કરી કે, 'હે ગુરૂવવ'! આપશ્રીના શિલ્ય શીધભાવિજ્યાછ મહારાજ ઘણા મુક્કાલ છે, ઘણા વૈરાગ્યવાળ છે અને ઘણી ભૂડિવાળ છે માટે આવા ભૂડિસાન શિલ્યને છેયે દર્શ'નના માટા મીઠા અન્યા લાભ્રાવવા ચાલ્ય છે. કારતા કે આપના આ શિલ્ય છેયે દર્શ'નનાં શાસ્ત્રોમાં નિપૃદ્ધ થઈને શીજેનશાસનની પ્રભાવના કરી હતે એવા છે.'

વગેરે દેશામાં વિશાળ જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવાનું કોઈ એવુ પ્રસિદ્ધ સ્થાન નથી. વળી, તે કંશીના શાસ્ત્રોએ ત્યાં શિયાદિકને છેલે દર્શનતા જે મહેત ઋચા લાણવે છે તે ધન વિના બહોવી શકાય નહીં. તેમજ ગઢીથી કાશી સુધી જવું તે પણ મેદી સુધીળત છે. તાટે એ બાળત બહુ વિચારસ્થિ છે.

(૧૬) આ પ્રસાણે શિયાને કાર્યો લઈ લઈને લાંભાવના સંબંધમ છુટુમહારાને મધાપમના પત્રાસ્ત્રી મુસીબલ બલાની ત્યારે તે સાંભાવીને ધનેજી શેઠે કહ્યું કે, 'હે સુર્વાન' આપે ને પત્રાસ્ત્રી મુસીબલ કહ્યું તે સાચી છે પરંતુ ચાવા મહાન ખુહિશાની. અને શાસમપ્રભાવી શિપ્પને માટે અન્યાસની સખવડ કંચવી તેથી એ અમાટું કત્ત્રંપ્ય છે માટે આ બાબતમાં હું રૂપાનાશાના ૨૦૦૦ (લે હંબર) હીનાર (મહાર) ખવતે કંચવા તૈયાર હૃદ માટે આપ કોઈ પશુ સંક્રેશય અપ્યા વગર શિપ્પને લઈ કાર્યો પત્રત્રો! તરફ વિહાર કરી, અનુક્રેયે આવતાં અનેક આપે માં લખ્ય જીવને પ્રતિભાવ કરતા કરતા અને શિયુને હ્યાનાથીને ઉત્તરમ સમ્યક્રશ્રી લીંગ પાત્રના શ્રીયરોપિલન્યલ્ય વચેરે શિપ્પ સહિત દર્મિમ્પલિન્યલ્ય છુટ્ટમહેદાય કારીનેલગરમાં પ્રધાર્થો.

(૧૭) કાર્યાનગરમાં આવીને લાગુાવનાર ઉપાધ્યાવની સાગલ્ડ વધાવરિયત કરીને જનાગ છુંદ્રિયામાં શ્રીચેટ્રીમિક્તમણ એકારાયે આકાલું વિદ્યાસુંગુંગોની પાસે છેવે કર્મનનો લાંતપંધ વાલા-સંસ્થાયાલા અત્યાત અધ્યાત શરૂ કર્યું

(૧૮) તે છ્યે દર્શનના અન્યામાં ત્યાંચ્યાસ્ત્રોનાં પ્રાચીધ અને નવીન ત્યાય એમ એ પ્રકારના ત્યાચ્યાસ્ત્રો છે તે અનેના પ્રત્યો ત્રણ વર્ષમાં સ્થાર્થ લક્ષ્યી લીધા. અને એમો નવીન ત્યાચના 'તત્ત્વલિતામાંદ્રિ' નામના પ્રત્યે એ અઠ્ઠ કંદિન છે તે વધ્યું અલ્પ ઠાળમાં જીતિના પ્રમામથી શક્ષી લીધો.

(૧૯) છે પ્રખાણ છવે દર્શનાના શાસ્ત્રોમાં નિયુશ્વ શહેન અને તેમાં પણ ત્યામ શાસ્ત્રમાં લિશેય વિચુલ લાગેને શીચશોલિજવાડ અહેતાજન કાશીનપામાં કેશકે વાર વર્ષો માટે મગતાં વિહાનોની સભામાં અઈને વચ્ચોવાદ સાંલગતા હતા. એક વાર તે વિહાનોની સભામાં એક અહેત લાકિક-નેચાયિક સંત્યામાં આવ્યો. તેણે પોલાના વચ્ચોપામાં સર્જ વિદાનિતિ લિગ્નુફ એવા બનાવી દીધા તે વચ્ચેત સભામાં તે સત્યાની સાચેના પ્રીપ્યોપાનિ પ્લેશ મહાત પોતિ લાં સ્ત્રા અને તેની લાં વધ્ય વિસ્તરણ અને વિચાર પ્રેપિયોપાનિ પ્લેશ માને વિચાર એને લાં સ્ત્રા મને તેની લાં વધ્યો વિસ્તરણ અને વિચાર પ્રેપિયોપાનિ પ્લેશ પોતિ લાં સ્ત્રા માં તે તેનો સાચે ભાગ તે તેનો સાચે ભાગ પહિનાની સભામાં સંત્યાની સાચે ભગે તેના સાચે સ્ત્રા પ્રેપિયોપાનિ પ્લેશના પ્રત્યો સાચે વ્યવસ્થાન વિદેશ સ્ત્રિયોપાનિ પ્લેશમાં સંત્રાનાની સાચે ભાગે પ્રહિતા પ્રાપ્ત કોમોપાનિ પ્લેશમાં સ્ત્રામાં સાચે ભાગે પ્રહિતા વિદ્યાન તરીકે પ્રતિનેદ થયા.

(૨૦) એ પ્રમાણે કારીની સભામાં મહાન લકે વારી વાં-મારીની સામે છત ગેળવવાથી અને પાતાની વસાઇ, ચોરન સામનવાથી અઠું હવે પાયેલા ત્યાંના વિદ્યાનોએ શ્રીમણે. નિયત્વજ મહારાજને - ત્યાપવિદ્યારત ની પદલી ભાગી ત્યાર ગાદ શરૂમહારાજ- હોન્દ્રમન્દ્રિયરન મહારાજે વિચાર કર્યો કે શિખતે તાલુાવવા મંબ'થી એ કાર્ય માટે અહીં આવ્યા હતા તે કાર્ય હવે સમાપ્ત થયું છે, અને શિખ હવે પ્રખર વિહાન થયેલ છે, માટે અહીંથી વિહાર કરવે! આવશ્ય છે. કાર્ય કે ગ્રુંતિના માર્ગ પ્રયાણે કોઈ એક નગરમાં એક રીમાસાથી અધિક ચામણ કરવું ગ્રુક્ત નથી પરના શિખતે તાલુવવાના મુખ્ય લાભને વિચારી અહીં આતની સુદત નહેંગાની વ્યવસ હતી તે હવે પરિષ્ણું થવાથી વિહાર કરવે! હચિત છે. એમ વિચારી કરવીમાં વિહાર કરવે! તાહિક શ્રેષ્ટિન શાંક શ્રેષ્ટિન શર્મા મારામાં માન્યા પ્રાથમ અધિત શ્રીના પ્રતિભાજ પ્રયાસ કરવી સાથે કરીને આદેશના સામારા નામામાં માન્યા મારા માન્યા માન્ય માન્યા માન્ય માન્યા મા

(૧૧) ત્રધું વર્ષ કાશીમાં રહી લગ્ના ગંગીનો અભ્યાસ કરીને જે બીના કેટલાક ત્યાચ્યેચીનો 'અભ્યાસ-બાદી હતો તે અહીં આગામાં ત્રાર વર્ષ સુધી રહીને નૈયાયિક પંડિતા પાસે પણ કર્યો.

(૨૨) ઓ વખતે આત્રા વચેરે તત્રરામાં અનારસીક્રય તામના પતિનો મત કે જે ઘક્ષે સાચે દિમંબર મતને અનુસરતો હતો અને એકાંત નિક્રય માર્ગ મેપારો હતો તે ઘક્ષે પ્રચારિત થયો હતો. અનુકરે બનારસીક્રયનો શિલ્ય કુંવરજી નાચે શ્યો. તે પશ્ચ પોતાના શુક્રના મતનો પ્રચાર કરતો હતો. આ વખતે કરિયાપાય મહારાજે આ મત જેનવીશ્રીને અનુસરતો કુંતો એમ શુક્રિયુષ્ટ સમ્બરવીતે તે મતના જ્ઞાવો વચેરેને જૈનમમામાં સ્થિર કર્યો હતા. આ વીતે અનુસરતો કુંત્રય કુંદ્ર કરીને શ્રીશ્રોષ્ટિયુષ્ટ સમ્બરવીતે તે મતના જ્ઞાવો વચેરેને જૈનમમામાં સ્થિર કર્યો હતા. આ વીતે અનારસીક્રયનો દુષ્ટ્રયો કુંદ્ર કરીને શ્રીશ્રોષ્ટ્રિયુષ્ટ

[ા] પૈતાના શૂર્યકારાએ તાર્ધવિવાનો અનુભર પ્રાપ્ત કરાવ્યો, ધોર્ત કાર્યાયા વિઝપ રેણવ્યો, અને પૈતિરાત્રે 'ત્યાપવિશાસ' પાત્રી આપી એ લીના શ્રીયસોવિજવછ શહારાએ સ્વકૃત 'ત્યાપખડત'ખાદ ' (શ્રીમકાર્યાર સ્તરન)ના ૧૦૦ માં વ્યોક વગેરેમાં જ્યારી છે-તે આ પ્રયાસે–

[&]quot;भन्नी जैन काजीतिन्यमिककाग्राप्तिकतो । सुदा बच्छद्यस्य समस्वयमीमास्तितनुकाम् ॥

य भीमस् प्रतिनंत्रादिविजयेशन्त्रीविजी प्राहितः । प्रेम्या कस्य संस्य रायस्थ्यये जातः सुवीः स्रोदरः ॥ वरुर म्याविकारक्षत्रिकदः कारण प्रशतः तुर्वेस्त्रदेगाः श्रीदरावतातु कृतिनावानस्यसः सरः ॥ "

ર અંદો જ્યારેલ ખનાસ્ત્રીકાસ રાગરાં સ્ત્રાંતા હતા હતા તે હિંદો લાભાના હેન કરિ તરી પ્રેસિક હતા તેરીમ આગામાં રહીલ ગીમાન રેસ હતા હેવાના પ્રિકાર્ય તામ ખરસ્તેન હતું અને તે સ પ્રેસિક હતા તેરીમ આગામાં રહીલ ગીમાન રેસ હોત્યારે ગુનિશી સ્લાહ્યું સ્ત્રાં માન્ય ખરસ્તેન હતું અને તે સ સસ્ત્રાં કરીને તે તેને તે સ્ત્રાં તે હોતા અને તે શેનિયા જ આગામાં હેવને અપ્યેસ્ક્રાસ્ત્ર કાર્ય તો સાર્ધિક મદિત હરે વિદેશ લક્ષ્ય ગંખીને અમને 'સામસ્ત્રાર 'ના વામત્યી' હે નિયત માર્ગ લગ્દે સાર્ધા આ અન્ધાસ્ત્રીકોનો સામસ્ત્રાય પોત હેવી અમે 'સામસ્ત્રાર 'ના વામત્યી' હિંગ વામાં તે છે. હેતા આ આ આનામીસિક્ષ્યો ફેચ્છ સ્ત્રામાં પ્રમાખ્ય રાગ્ને અમાન સ્ત્રાં કર્યું કે સ્ત્રિક્ષ સામ્યું સ્ત્રાં આ આ આનામીસિક્ષ્યો ફેચ્છ તે સામસ્ત્રાય પ્રમાખ્ય રાગ્ને સ્ત્રામાં અનુષ્યાં ક્રિલ્મેદ હતા હેતા આ આવાન નિયત માર્ગરે પોત્રાન હતા અને ભાખીલક હાઉં અમાન અનુષ્યાં ક્રિલ્મેદ હતા હેતા આ આવાન નિયત માર્ગરે પોત્ર હતા અને લાખીલક હાઉં અમાન અનુષ્ય ક્રિલ્મેદ હતા હેતા સ્ત્રાંત આપ્યાસ્ત્રીક સ્ત્રાંત દેશમાં અને તેના પ્રત્ય અને ' અપ્યાસ્ત્રાના અન્ધાર્થી' હતા આ અના અન્દાર્સ સ્ત્રાંતા ક્રાપ્રમાં અનુષ્યાં ક્ષે વિદેશ ખોતા એન્દ્રિકિક્ષ પ્રમાણ જાણી ફેરો

સંકિત ત્રીનયવિજયછ મહારાજ આંધાથી ગતુકરે ગ્રામાતુગામ વિકાર કરતા કરતા તેમજ માર્ગમાં પણ (લીધશોપિજયછ મહારાજ) ગર્નેક પંકિતો સાથે શાસ્ત્રાર્થ કરતા કરતા જૈનપુરી સરખા રાજ્યગર (ગલાલાદ)માં પધાર્યો

- (૨૩) શ્રીનિયનિજયણ મહારાજે આમદાવાદ આવી હવે પૂર્વંક નાગોરીશાળામાં એટલે નાગોરી સર્વાઈ નામના હત્તો કે જે (ગાનારે પણ સ્તાનેશળ) અવેરીવાડમાં મધ્યભાગે આવેલ છે તમાં ઉપકાચમાં સ્થિરતા કરી. તે વખતે શ્રીલરોાનિજયણ મહારાજ અનેક શ્રાણોના વાદવિવાદ કરનાથ પંતિનોના સમુદ્ધાયમાં ઘણુ ગાદરમાન પામ્મા, કારણ કે કાઈ પણ દશ્'નોના નાદી જૈનહાંમને સંખીધી વાદ કરવા આવે તો તેઓ તેને શાસ્ત્રની સુક્તિ-પ્રમુક્તિઓથી તેમજ સ્થાયશાસ્ત્રોની પરિષ્યાદી મમાણે એવુ સરસ સમ્માલ્યતા કે જેથી વાદી જૈનહાં'નની ખામી દર્શાવી શરાતા નહિ, અને ઉપાધ્યાયણએ દર્શાવેલી સુન્તિઓનુ મહસ્ય સમલ્યને મહત્યના સીના પામતા
- (૨૪) જ્યા વખતે અપહાવાદમાં ચર્ચુણી જેનાના ચર્ચાયુને સત્માન આપનાર દોવાથી સ્વર્યસ્થિક અને પ્રત્યભ્યોલિ કિત કરવાની માંતિવારી સ્વેચિ સહિલવાના નામે હશે પ્રત્યાન પ્રિયાની પ્રત્યાન વિશ્વસ્થ કરે કરતાની કર્યાયલી કરિયાના વિશ્વસ્થ સ્વર્ય પ્રત્ય સંભ્યોલિક વિશ્વસ્થ કર્યા સ્વર્ય પ્રત્ય સાલ્ય સાલ
- (૨૫) શ્રીકરોાવિબ્પાછ મહારાએ અગલવા શાવાના સફાદાવ સહિત રાજસામાં જર્મને સત્યાપિકારીની વિજસ્તિની ત્યાં સલામાં કર્યાં સલાવત્યો હાસ્ત્ર પોતાની સુહિતા બાદથી સહાર અવધાના કરી બતાવતાં, કે જેમાં ૧૮ સલાવબ્યોના લેશની હશે હતું શત (એટલે એક જલ્લુની ગતીક વાત રોવી ૧૮ બજુની લક્ષ્યો લાત) માદ સપ્યીને દરેકની વાત અનુકારે સંલ્લામાં દેવાની ક્ષેત્ર છે ત્રેવા પ્રકારમાં ૧૮ વ્યવધાનો કરી બતાવ્યાં. તેમનું માતું સુહિતા ત્રેકને સત્યાપિકારી મહાબવામાં ગહું જ રાજ લક્ષા.
- (૧૬) ત્યાર લાદ હોય" માત્રેલ મહોલનાવાન રાત્યાવિકારીએ હોય" વડે સીયશીનિજયણ મહોલાંગુલ લખ્ય લસ્ત્રલાહિકાયુલ સમાન પણ હોયું ચા પ્રચારેલ ગયાલાવાના સીયોસી. વેરપણ મહારાત્મે કોર્સિયાલાનની લક્ષી લત્તામ પ્રચાવના કરી અને એવો જેમધાર્ય શું ત્રીજ છે તે બિલાક્સ સમજતા ત્વીલોતા વેલાગ્યોનો પણ બેપ્લયમ્ય પણ ચોક લત્તામ ધર્મ છે

એમ સમજતા કર્યાં. વળી, જૈનાધર્મમાં કેઇ વિદ્વાન નથી, એમ કહેનાર કેટલાયે વિદ્વાને જૈનાધર્મમાં પણ પ્રખર વિદ્વાના છે એમ ઝમજલા થયા.

(૨૯) અમહાવાદના શ્રીસંથે વર્લમાન ગચ્છનાયક ગાયાર્થ મહારાજ શીવિજયદેવ-સ્રસ્ટિની આગળ એવી વિનોલે કરી કે 'હે સુવિશ્ય'! સુનિ જશાવિજયછ મહારાજ વર્લમાન સમસ્યમાં અહુશુલ એટલે ધર્મજાજીના સાલા અનેક વાદિવિજેલા અને શ્રીજિન-શાસનના મહાપ્રભાવક છે સાટે તેઓને ઉષ્પાધ્યાય પક્ષવી આપવી યોગ્ય છે.

(૨૮) એ પ્રમાણે વિનયપૂર્વંક રાજનગર અમદાવાદ)ના શ્રીસંથે વિનોતિ કરી ત્યારે ઉત્તમ શુદ્ધિવાળા શ્રીદેવસ્ત્રિજી મહારાજે સંથવી વિનેતિને પોતાના હૃદયમાં ઉતારી.

(૨૯-૩૦) ત્યાર ળાદ કીયશેપવિશ્વષ્ટ મહારાજે વીસરચાનકના ઉત્તમ તપ આરંજને અને તેવા ઉત્તમ તપની આરાધનાવાળા કીયશેપવિશ્વસ્થ મહારાજે રીલાંના શરૂ ક્ષીવિજયદેશસારિની આરાધી આસાવે ક્ષીવિજયદેશસારિની અહિરાજે કીરાંના શરૂ ક્ષીવિજયદેશસારિની આરાધી આસાવે ક્ષીવિજયદેશસારિની ક્ષાત્ર કર્યું કર્યું અને અદ્યહિના વગેરે ચેતા ઉત્તય વગેરેના વિધાનપૂર્વ કે વિ. સં. ૫૭૧૮ માં (મહિના તથા તિથિ જ્યારુના વગેરે ચેતા આપના સાલિક ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર કામ ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર કામ ક્ષાત્ર સ્થાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર સ્થાત્ર ક્ષાત્ર સાથાર ક્ષાત્ર ક્યાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ષાત્ર ક્ય

(૩૧) પાતાના બનાવેશા 'અધ્યાતમતપત્રીસા' વચેરે અન્ટામાં અધ્યાતમના વિષય, 'ન્યાયખ'રખાદ્ય-વૃત્તિ 'વગેરે અન્ટામાં ત્યાયના વિષય અને 'ચાગવિશિકા-વૃત્તિ ' તથા

ર ત્રી વિજયક્રવાનુંદા અહારાતની હામારીમાં (દા યા પદમ) શ્રીજિન્યસિંદમુંદા અહારાત (જન્ય-ગેડાનામાં દૃષ્ટપ યા, દીશા-૧૬૫૪, વાયાબદ-૧૬૫૦, સરિયદ-૧૬૮૦, સ્વર્ય-૧૯૫૧) દં વર્ષની હસ્ત્રે સાલવર્ત પામ્યા, તેથી શ્રીજિન્યલ્લાનુંદાઓ પેતાની પાટે નિજયમલાનુંદિર સ્થાપા શ્રીશપાયલ્ટ મહારાત્ર પણ દૃષ્ટ યા પદેષ્ટર તરીક લીજિન્યલ્યાનુંદીએ સ્ત્રુત સરની પ્રાતિતા જ્યારે હે તેનો મીના ઢંભાં આ પ્રમાણે ભારાની જન્ય -*જ્યા, દીશા-વિ સ. ૧૬૮૬ માં પ-પાસપદ-૧૯૧મી, સરિયદ-પાસપ્તરમાં ૧૯૫૦ માં, સ્ત્રુતની લાધ્યક સંધ્યો હતે.

' પાતં બ્લયોગ શાસનીલાવુર્ય પાડની વૃત્તિ ' વગેરમાં યોળનો વિચલ-એ પ્રમાણે અધ્યાત્મ, ત્યાય અને યોડાના વિચી જેમણે પોતાના અનાવેલા શ્રન્યોમાં વર્ગેલા છે, અને તે ઉપરાન્ત કર્મપાકૃતિની વૃત્તિ આદિમાં કર્મ 'વગેરેનો વિચલ અને બીબ પણ બનાવેલા અનેક શ્રીમાં ધર્મ 'વગેરે વિચ્લો ઘણ ચર્ચ્યો છે. તેવા ઉત્તરોત્તમ શ્રન્યોના સ્વનાર ઉપાધ્યય શ્રીયશેષિજવછ મહારાજનું જે પુરુષો નિત્વ સ્મરણ કરે છે તેવા બાચ્યકાળી પુરુષોને ધત્મ છે.

(૩૨) ઉપાધ્યાય શ્રીયશોલિજયા મહારાજ ગ્રામાનુગ્રાય વિચરતા ગતુકમેં શુધ-યુગ-હંય-ઇન્દ્ર વધે એટલે ૧૭૪૩ના વિક્રમ સંવહારમાં દર્શાવતી નગરીમાં પધાર્યા. આ દર્શાઃ વતી એટલે વડેદરસ પ્રાત્મમાં આવેલ અત્યારનું કરોઇ નાયનું ગ્રામ સમ્બદ્ધ કે જે વડેદરાથી લગસમ ભારેક ગાઉ દૂર છે, ત્યાંના પ્રનોહર કારોગરીવાળો હીંય દરિયાનો અહેલાં હિસ્સો હંજી પહુ પ્રવેહ છે, અને જે પ્રથમ વીરયવલ સભતી સભ્યત્યાનીનું નગર હતું આ હેશોઈમા વિ. સ. ૧૭૪૩માં ઉપાધ્યાયજ મહારાજ અવસ્ત્રનિવિધિ સર્જિત ઉત્યાર્મ પ્રમાણસમાપ્રિયુજ કરવાં પ્રાપ્તા એટલે કાલાવાં પ્રાપ્તા. વર્તમાન સમયે હેલોઈ નગરની બહાર તેમની સ્ત્રુપ (દેશી) વિદ્યમાન છે. અહીં વિ. સં ૧૭૪૫ની મીન એક્સ્ડાઈએ ઝી.માલાશાયાંની પાદુકા પલરાતી છે.

સમાટ અકળરપાતિમાંક શ્રીહીરવિજયભરદીવરભ મહારાવવી શ્રીયદીવિજયભ મહારાજની શિયામર પરાતુ વંશવૃક્ષ આ પ્રસાહે સમજવ



(33) એ પ્રમાણે લાકિ'કેપ્રિરામાણ ત્યાયાવાર્ય' ત્યાયવિશાસ્ત્ર ઉપાધ્યાય શ્રીયરો-વિજયછ મહારાજનું ગા છનનવરિન-ઉપાધ્યાયછ મહારાજના સદ્દશુણેના અનુરામથી અને તેમના પાયર સાનાદિ સુધીનું ગનુકરનું કરનાની ઇચ્છાથી આરિતા ક્ષેપમાં કેશું છે. વર્તમાન સમયમાં ઉપાધ્યાયછનું ગલથી હતિ સુધીનું સાંસ્ત્રતર યથાર્થ જીવનચરિત માનું નથી, જેથી જેટલું મળી શકે છે તેટલામાંથી ઉદ્ધારીને સાંસ્ત્રતાં ગા છનનચરિત માનું દૂંકમાં કંધું છે. આ સરીક્ષ છનનચરિત્ર વાંચીને ગયલા સાંસ્ત્રતીને અને તેના સુધીની સેવના કરીને, હે લબ્ધ છેલી ! તમે પરમ લાતિ એટલે પ્રસ્ત્ર ક્લાયને પાયો!

(૩૪-૩૫) વિ સં. ૧૯-૩માં જે કિલ્સે શ્રીજોતામરવામીને કેવળદાન પ્રમાટ થયું તે પવિત્ર કિલ્મે અભિકત્તમ શ્રીજેનશાસનની આરાધના કરવામાં રહિક એવા વશે. શ્રાવક સસકાય જેમાં વસે છે તે જૈનપુષી સરખા રાજનગર-અપ્તદાવાદમાં પરમયુન્ય શુરૂવર્ય ભાગાયે' શ્રીવિજયને મિસ્ટ્રીયેનમા શિષ્ય આગાયે વિજયપદાસ્ત્રિએ પ્રિયંક્સવિજયજી નામના સધુને લાસુવા માટે આ ઉપાધ્યાયજી શ્રીશ્રોશિવજયજી મહાસ્ત્રયના જીવનચરિતની રચના કરી

મહોપાધ્યાય શ્રીસરોપિજવાર મહારાજે બનાવેલા ગ્રંથાની હંધેક્ત એક સ્વતંત્ર નિગયમા જ આવી શકે એમ હોવાથી જાહીં ન આપતાં તેમની સાહિત સ્વતાઓ સંબંધી હંકીકત આ ગ્રંથમાં જ મારા થીજ લેખ (પૃત્યુ: ૧૮૯) માં આપતામાં આવી છે.

¥

भारमायमहेतो ध्यानात्, परमारमस्यमम्बुते । रसविद्य यथा ताज्ञे, स्वर्णत्वमधियञ्ज्ञति ॥३०॥

જેમ રસથી વેધાવેક્ષ તાંધુ સુવર્ષું ભને કે તેમ અસ્તિતના 'વાનથી આ આત્મા પરમાત્યવધાને ધાંગે કે

દાત્રિસિકા

[શ્રીમદ્ વરોાવિજવછ

અહારમી સદીના મહાન જ્યોતિર્ધર મહેરપાધ્યાય શ્રીયશાવિ**જયછકૃત ગ્રંચા**

[संक्षिप्त अंथपरियय]

[કેમ્ક : ૫૧મપૂજ્ય આચાર્ય શ્રીવિજયપુદ્ધણિષ્ટ મહારાજ]

આપળના મારા શેખમાં આપણે ૧૮મી સ્ક્રીના મહાન જૈન ન્વોતિમ'ર મહાપાધ્યાય શ્રીયકોતિવન્યજી મહારાજ્યું છતન સહેંપમાં હેયું હતે એ છાનબારિના અને ફર્લ્સખ કરાયા પ્રમાણે આ સ્થળે આપણે એપના હવત-સાહિત્વરસના સંબંધી વિચાર કરીશું કે જે સાહિત્યરસાણે એ મહાપુરખે જ્યારણી સહીના મહાન ન્વેતિય'ર અને પ્રખર વિદ્યાન તારીકે પ્રસિદ્ધ કરીને અમર આવાશ છે.

આ વિષયમાં આપણે તેમની એક પછી એક ફૃતિતું~એ ફૃતિમા આવતા વિષય-નિર્યયુદ્ધં~સંક્ષિપ્ત અવેદાકન કરીશું.

ઉપાધ્યાયજકૃત માલિક ગ્ર[ે]શ

પ્રશ્નોત ખુલાસા કરવાના પ્રસચે તેઓના આચાર વગેરે કશાંલી છેવટે પ્રશસ્તિ જણાવી કર્તાએ ત્રંચ પૃષ્ઠું કર્યો છે આ ગ્રંચ ઉપરની સ્વેપણ ટીકા નવીન ત્યાવની પદ્ધતિ પ્રમાણે અનાવી છે, તે વાંચવાથી કર્તાની અપૂર્વ વિક્રતા જણાય છે.

મૂળ શ્રંથની શરૂગાતમાં ગ્રંથકાર જણાવે છે કે:- હું શ્રીપાર્યનાથ પ્રશુને અને ગચ્છ-નાયક આચાર્ય મહારાજ શ્રીવિજયદેવસ્ટ્રીયરાજી મહારાજને વંદન કરીને ભાષતે અહસારે જમંધાતમતની પરીક્ષા કરીશ તેમ જ ઢીકાવી શરૂગાતમાં પશુ જણાબ્યુ છે કે, જે વાર્યવતા (સરસ્વતી) પરિતોને અથવા દેવોને વંદન કરવાલાયક છે, અને જેતું સ્વરૂપ જેકાર મંત્રાશર મિલિલ કે, તૈ વાર્ગવતાનું સ્મરણ કરીને હું સ્વાપશ્રસ્ત્રાનો અધ્યાતમત્રપારાવાયકાનું વિવરણ કરૃષ્ઠ ઢીકાના શ્લાકનું પ્રમાણ ૪૦૦૦ શ્લાક છે. આ સઢીક પ્રથ દે. લા. જૈન પુસ્તક્રન્દાર ફંડ તરફથી અપાયો છે અને તેતું લાયાંતર શ્રીઆતમાર્નદ શકા તરફથી પ્રશુન્દ શર્ધ કર્યા હ્યા સ્ટ્રામ

૨. અધ્યાત્મસાર—અગંરૂપી વાદળાંથી ઢાંકાવેલા લખ્ય છવે અધ્યાત્મ સેવાર્યી પવતથી તે વાદળને દૂર કરી આત્મિક તેજના અનુભવ કરી શકે છે. આ સુધાર્યી બંધકારે આ પ્રેપમાં સાત ગુખ્ય વિભાગ (પ્રાથક)ની અને તરેક વિભાગમાં સેકાઉ અધિકારની સકલતા કરીને અધ્યાતાનાં સ્વરૂપ વર્લાલ્યું છે. તેમા પ્રથમ પ્રથમ પ્રથમ અધ્યાતા પ્રશાસ કરીને અધ્યાતાનાં સ્વરૂપ —આ ચાર બાબતતું સવિદત વર્લું ન જ્યાત્મું કે આત્મ પ્રથમમાં વૈશ્વસ્થાલ્યન વેશ્વસ્થનાં લોક અને વૈશ્વસ્થ સંભ્યો જરૂરી બીના સ્પર્ય તેવાના સ્પર્ય તેવાના સ્વરૂપ તેવાના સ્વરૂપ તેવાના સ્વરૂપ તે આવાના અને કહાએક્સવાનની બીના સ્પર્યા પ્રથમ પ્રથમ પ્રથમ પ્રથમ પ્રચારન અને કહાએક્સવાનની બીના સ્પર્યા છે. પ્રથમ પ્રથમ પ્રથમ પ્રથમ સમ્પર્યાના અને કહાએક્સવાનની બીના સ્પર્યા છે. પ્રથમમાં પ્રથમ પ્રમાં ચીગ, આત અને આત્મતાનુતિ વર્લુપી છે. હતું પ્રભું પ્રમાં સાત્મતિક્ષ્ય વર્લુખો છે. સાતાના પ્રખાધમાં જેનમત સ્વરૂપિત વર્લુપી છે. હતું પ્રભું પ્રમાં સાત્મતિક્ષ્ય વર્લુખો છે. સાતાના પ્રખાધમાં જેનમત સ્વરૂપીના આધારે આ મૃત્ય સ્વરૂપ પ્રમાણ ૧૩૦૦ સ્વરૂપી સ્વરૂપી પ્રમાણ ૧૩૦૦ સ્વરૂપી સાતાના પ્રાથમિક સાતાના સાત્માં સાત્મ સ્વરૂપી પ્રમાણ ૧૩૦૦ પ્રતાસ પ્રમાણ પ્રાથમિક પ્રસાય આવેલા જોવાના સાત્રે પ્રનાસ કરાયા એ પ્રમાણ પ્રદેશ સાત્માં પ્રથમિક સાતાનો પ્રથમિક પ્રાથમો છે પ્રયાવી છે. અનિક્ષ્ય પ્રમાણ પ્રાથમો છે પ્રધાની છે. તેના ઉપરાયતાના સાત્રે પ્રતાસ સાત્ર કરાયા એ પ્રમાણ પ્રાથમિક પ્રમાણ એ પ્રાપતિ છે.

3. માધ્યાત્મા પતિવક્— સંસ્તુત અતુષ્યુપ હંતમ રકા 'ચીકપ્રમાણતો આ મેથ છે' પ્રકાશક શૈનિવામાં પ્રસારક સભા, શાવનાણ આ મંચમા કર્તાએ-૧. શાસપીબાદુર્ભિ વર્ષિકાર, ર. માનવીબાદ્યાલાર, ક. કિયાલિકાર અને ૪. સામસ્યાલિકાર-આ ચાર અધિકાર પૈકી પહેલા-ચાસસ્યીબાદુર્લિ નામના અધિકારમાં (1) અધ્યાતમાં ખુ રત્યુપ કે પત્મવર્ષ '(2) તેને લાસ કચા છત્યો હોઈ શકે ? (3) કેવા પ્રકારના હુલ્યમાં અધ્યાતનો પ્રદુત્તાને વાલ પૈકી (4) તુષ્ટઅંગ્રહી છત્યોની કેવી ચાલન હોલ શકે ? (4) શાસનું સાયમ્પ 'કેંગ્રહ્ય છે? (5) શાસનું સાયમ 'કેંગ્રહ્ય છે? (6) શાસનું સાયમ 'કેંગ્રહ્ય છે? (7) શાસનું સાયમ 'કેંગ્રહ્ય છે? (8) શાસનું સાયમ 'કેંગ્રહ્ય છે? (8) શાસનું સાયમ 'કેંગ્રહ્ય છે.

ર દીપ્રકારનો ટૂંટ પન્યિય—અન્ય સ. ૧૯૦૦, ચૈત નુક ર, આક્રિયર રાત્યના સોનાગીર પ્રથમ ધનિષણુ સ. ૧૯૧૮, રુપો ક્ષિણ ૧૯૩૧ પં-યાલપક સ. ૧૯૪૮, અને રવરચાસ સ. ૧૯૬૯, પ્રેન ૧૯૮૩, પ્રત્યાસ્ત્રપુરત ચાલુકિવિસ્તાલ્ટ(કિસ્પાદજ) મહારાજ

શું ? (૮) અને કપશુદ્ધિ વગેરે ત્રિવિધ શુદ્ધિ કઈ રીતે શાસામાં ઘટાવી શકાય ⁹ (૯) એકાંવ-વાદીએ: પણ આડકતરી રીતે સ્થાહાદ મતને કેવા રૂપે સ્વીકારે છે? (૧૦) નવસૂહિ, ઘૃતગ્રાન, ચિંતાગ્રાન અને ભાવનાગ્રાનનું સ્વરૂપ શં? (૧૧) ધર્મવાદને લાયક કેમણ હોઈ શકે? આ अभियारे प्रश्नीना स्पष्ट भुद्धासा इरवापूर्वंड वसमां प्रभागे करारी भीना पक्ष सरस रीते વર્ષથી છે. ગીજા-સાનયોગ નામના અધિકારમાં (૧) પ્રાતિભગ્નાન કેને કહેવાય ? (૨) આત્મ ત્રાની સનિ કેવા હાય છે? (3) ખર વેદાપાલ ક્રોને કહેવાલ? (૪) ત્રાની પરધા કઈ રીતે નિવેધ્ય થઈ શકે છે? (પ) ચિત્તની શહિ કરવા માટે કર્યા કર્યા સાઇનોની મેવના કરવી ત્રીઇએ? (t) જ્ઞાનધાગ વ્યાવહારિક દક્ષ્ટિએ અને તૈયાચિક દક્ષ્ટિએ કેવા સ્વક્રયવાણા હોય છે. આ છ પ્રશ્નોના સ્પષ્ટ ખુલાસા કરવી વખતે. બીજી પણ જરૂરી બીના ટુંકમાં જણાવી છે. ત્રીભ-ક્રિયાઅધિકારમાં-ક્રિયાની જરૂરિયાલ જલાવવાના પ્રસંગે કઈ ક્રિયાથી નિર્માક સાવ-યુક્તિ થઈ શકે ? આના ખુલાસા જણાવીને ઝાની પુરુષો પણ કમેરીન નાશ કરવા માટે ક્યિંતી સાધના જરૂર કરે છે. આ ગીના જણાવી છે. ચાંચા-સાખ્યાધિકારમાં (૧) સમતા શુષ્ત્રવાળા છવની કેવી સ્થિતિ હાય છે? (ર) સમતા વિનાનુ સામાચિક પાક કેન્નું હોય છે? (3) પરમાત્મસ્પરૂપને યમાડવામાં સમતા કઈ રીતે કેવા પ્રકારની મહદ કરે છે? (૪) સમ-તાર્થી કેતને કેતને કેવા કેવા પ્રકારના લાભ થાય? આ ચાર પ્રશ્નોના સ્પષ્ટ પ્રલાસા કરતાં છેલ્લા પ્રશ્નના સમાધાનમાં ભરત, દમદાંત ઋષિ, નમિરાજષિ^{*}, સ્કંદસસ્તિના શિખ્યા. મેતાર્ય. ગજસુકુમાલ, અહિલ્કાપુત્ર, દહઅહારી, શ્રીમરૂદેવા વગેરેના દાખલા આપ્યા છે. છેવટે પ્રશસ્તિ વગેરે જશાવીને ગ્રંથ પરા કર્યો છે.

૪. અને કાંતન્સવસ્થા--પૂત્ર ગાંધ ૩૩૫૭ શ્રીકાક્ષ્માણના છે આ ગાંધ સુદ્રિત છે તેમાં શરૂઆતમ કરતી આ માંબલશ્રીકની સ્વના કરે છે---

> " देन्द्रस्तोमनतं नत्ना, बीतरार्ग स्वयम्भुवम् । अनेकान्तव्यवस्थायां, ग्रमः बक्षित् वितन्यते ॥ "

પ, દેવધમાં પરીક્ષાનંદનો રાગમાં પ્રસુપાલિયાની પૂળ કરે છે. પ્રાલમાં નહિં માનનાશ સ્થાનકમાંથી લોકો તે દેવોને અધર્મી કહે છે, આ વાલ ખાતી છે એમ સાબિલ કરનાશે આ માંય છે. એકાં પૂળ 'સિક્કારામાનું પ્રવેષ છે. તેના લેપર દીકા નથી, પ્રકાશક શ્રી. જે ઘ. પ્ર. મસા, બાબનગર, જે વાગ સુવાનો લક્ષામાં માની મંદ્રેશકર મહિલ્યો આ માંથતી વરાના કરી છે તે સુવાનો દુંકમાં માત્રામાં આવ્યું આવ્યું પા છે તે સુવાને પ્રસુપાત એકાર્ય તે કહેલું એ નિસ્તુર વચન છે. (ર) દેવોને સુલધાં લેશ છે એ સુવાને પણ તેમને અધર્મ તે કહે લકાય (ક) કરેક સમ્માન્ત્રવારી જીવને સુવ અને અથે સ્થાની સુલધાર્ય કહેલાય છે. (૪) તેઓ સર્વવિવાલિય સંપાતને ધારાયું કરી શકતા નથી, આ અપેશાએ અધ્યાસિલ કહેલાય છે. (૪) તેઓ વિશિષ્ટ પ્રાથમિક્સિલ છે, માટે આલ કહેલાય છે (૧) સંપાત વિનાતું

^{*} Y, ໂe, દર, તંપાસાળા સ્ત્રો ક્ષેપર મૂક્ત આગાર ગી વલ્લકાવાયમસ્વિયાએ સ્વતંત્ર ડીકાંગા રમીતે એ પ્રશે પ્રસિદ્ધ કરાવ્યા છે. સંવ

સમ્પક્ત નિષ્ફળ છે. આ વસન ત્રિશિષ્ટ અપેક્ષાને નાહેર કરે છે. (છ) નારક જીવોને અને દેવાને લેશ્યાઓ બુદી બુદી દ્વાય છે. તેમા દેવાની લેશ્યા અપેક્ષાએ પ્રશસ્ત ગણાય છે. (૮) સમ્યકૃત્વી દેવોને સાધુ વગેરેના વિનય કરવારૂપ તપ દ્વાય છે. (૯) સુનિ વગેરે મહા-પરવાત વૈયાવચ્ચ કરીને પણ દેવા પાતાના દેવ લવને સફળ કરે છે. (૧૦) ઇન્દ્રી સસ્ય ગારી અને નિરવધ ભાષાના ગાલનારા કહેવાય છે. (૧૧) ઇન્દ્રો પ્રનિશવ્યને અવગ્રહ આપે છે. (૧૨) અમરેન્દ્ર વગેરે ઇન્દ્રો તથા તેમના લાકપાળદેવા પ્રલ-દેવના હાઢકાની પછ આશાતના કરતા નથી. (૧૩) હરિકેશીનું વૈયાવચ્ચ વક્ષાએ કર્યું છે. (૧૪) ટેવાને સમ્યકત્વરૂપ સંવર હાય છે. (૧૫) ધાર્મિક વ્યવસાય કરીને સુર્યાલે પ્રક્ષપ્રતિમાની પૃત્ર કરી છે. (૧૬) વિજય-દેવે પક્ષ તે પ્રમાશે પુત્ર કરી છે. (૧૭) જન્માશિયેકના પક્ષ તેવા જ સાધિકાર છે. દેવા પ્રભુપુતા કરે છે તે, આગળ અને પછી, કલ્યાલ કરનારી અને છે. (૧૮) 'પછી' શબ્દના અધિકાર પ્રમાણે 'પરસવ' અર્થ' લેવા નોઈએ, કારક તપસ્વાદિથી તેવે કળ મળી શકે છે. (૧૯) સ્થિતિ પણ ધર્મ જ કહેવાય. (૨૦) જ્ઞાનવંત મહાયુર્યોના લાકેત્પચાર પક્ષ કર્મ ખપાવવા માટે જ ક્રાય છે (૨૧) દેવાઓ કરેલ વંદનાદિ પણ પૂર્વ અને પછી હિતકારી છે. (૨૨) યુનાધિકારના સમાવેશ વંદનાધિકારમાં થઈ શકે છે. (૨૩) પ્રભુદેવે ઇદ્રાદિકે કરેલ વંદનાની અતમાદના કરી પ્રસુત્તી આગળ કરાતું નાટક બીલાં અશકા કાર્યોના જેવં ન કહેવાય. (२४) आवा नाटकेने शक्तिना क्यंत्र तरीहे कथाल्य छे. आवी शक्तिना प्रशादे हमेति न શાય, સર્જાતિના ખંધ શાય ને છેવટે માસ પ્રજ મહે. (૨૫) દાનના ઉપદેશ કે નિયેલની પૈંઠે જિનપૂત્રાના ઉપદેશ કે નિવેધ ન કરવા એમ નહિ, કારલ કે તે અતુવાંધ હિંસા છે જ નહિ. (૨૬) ચૈરય કે પ્રતિમાને ગાંગે થવી કલ્યહિસા ગર્થકંડ પછ ન કહેવાય અને અનર્થકંડ પછ ન કહેવાય. (૨૭) પૃષ્વતું સ્વરૂપ જસાવતાં અને હિંસાતું સત્ત્ર સ્વરૂપ સત્રપાઠ કઈ ને સમલવ્યું છે.

માનવાનું કારણ શું? (૨૧) પ્રત્યબિગ્રામાં ગાનુમાન વચેરેના સમાવેશ કર્કરીતે થઈ શકે? (૨૨) તકેતું સ્ત્રરૂપ શું? (૨૩) બ્યાપ્તિગ્રહમાં તેની જરૂરિયાત ક્રઈ રીતે અને કેટલે અશે છે? (૨૪) સામાન્ય લક્ષભાના બાેધ થવામાં અને શખ્દાર્થના વાચ્ય-વાચકભાવની સમજણ પાડવામાં કાની વિશેષ જરૂરિયાત પહે છે? (૨૫) તકેનું સ્વતઃ પ્રમાણપણું કઈ રીતે સમજન્ન? (૨૬) અનુમાનના તે લેદો કચા ⁸ (૨૭) સાધ્ય-પદ્મસિદિનું સ્વરૂપ શું ⁸ (૨૮) સ્પાંતની બરૂરિયાત કઈ અપૈશાએ સમ્મળ્યી ⁸ (૨૯) હેતું અને તેના વિધિસાધક-પ્રતિપેધસાધક-ઉપલબ્ધિ અને અનુપક્ષબિધ વાખના લેદોનું સ્વરૂપ શું ⁸ (૩૦) અસિદ, વિરૂદ્ધ અને અનૈકાંતિક હેત્વાભાસનં સ્વરૂપ શં ? (૩૧) આ ત્રહ્યથી વધારે હેત્વાભાસને નહિ માનવાતું શું કારણ ? (૩૨) ગાગમ પ્રમાણતું સ્વરૂપ શું ! (૩૩) ગાનુમાનથી આગમની બુકાઈ કઈ રીતે સંભવે ⁸ (૩૪) સમલંગીનું સ્વરૂપ <u>શં</u> ⁹ (૩૫) તે પ્રસંગે સકલાદેશ, વિકલાદેશનું અને તેના કારણભૂત કાલ-આત્મરવરૂપ-અર્થ-નાં જંધ-ઉપકાર-સંશિદેશ-સંનગ્ને શાહસ્વરમનું સ્વરૂપ શું ? આ પાંત્રીશ પ્રક્ષોના ખુલાસા પ્રથમ પ્રમાણ-પશ્ચિક્રમાં સંધ્રારે જશાવ્યા છે. ખીજ નથ-પસ્થિકમાં નચતુ હક્ષણ અને તેના લેઠો અતાવવાના પ્રસંગે શબ્દની પંચતથી પ્રવૃત્તિ ક્યા નથવાએ કઈ અપેક્ષાએ આનતો નથી તે વિસ્તારથી દર્શાવીને અપિંત, અનપિંત, વ્યવહાર, નિશ્વય, તાનક્રિયા વગેરનું ચેડપ્રદર્શનપૂર્વક સ્વકપ જણાવીને છેવટે તયાભાસતે ડુંકમાં સમલ્લભ્યા છે. ત્રીલ નિક્ષેપ નામના પસ્થિકમાં નામાદિ નિક્ષેપનાં સ્વરૂપ, લેક, પ્રયોજન કર્શાવીને કરેક નિશેષ શું શું માને કે? તે જણાવીને તેને નયમાં ઉતાર્યો છે. નિશ્નેમાની ઉત્પત્તિના પ્રકાર જ્**લા**વતાં છવતા પણ નિશ્નેષા જણાવ્યા છે તક^ર શાસ્ત્રરૂપી મહેલમાં ચહેવા માટે આ ગંધ પત્રવિયા જેવો છે. મૂળ શ્રંધ ૮૦૦ વ્હીકપ્રમાણના છે. તે જે. ધ. પ્ર. સ. શાયનગર તરફથી છપાયા છે. એમ સંભવી શકે છે કે જેમ પૌદ્ધ પંહિત માસકારની 'તાક'લાયા' બેઇને વૈદિક પંહિત કેશવમિક્ષે સ્વમતાનસારી 'તાક'લાયા' ખતાવી, તેમ તે અને તકંબાયાત નિરીકાલ કરીને વાચકવરે આ ગંધની રહતા કરી દેશ.

ંછ. શુકુતત્વનિક્ષેશ્વ—પૂળ પ્રાકૃતભાગા હવ્ય છે અને તેની ઉપર વાયકવો પોતે જ સંસ્તૃત સવામાં ૭૦૦૦ (સાત હેલા?) 'ચીકાંગલાયું હીક અનાવી છે. મૂળમાં મસંગે 'અરહાંગ લાય!' વગેરે બંચોનો પણ આવાંગો ગોહતી છે. તેો પ્રમાણે હીકામાં પણ તે તે લેશાના પ્રસંબેન અતુસારે જરૂરી પાઠે ભાગતો છે, ત્યેરતું જ નહિં પણ કરવા સાટે અહીં વિદ્યાળ અવિધાન પર્યાક્તિ પુત્ર કર્યું છે શ્રુદ્ધતત્ત્વનું ચારારે નિરંપણ કરવા સાટે અહીં વિદ્યાળ અવિધાન પર્યાક્તિ પાત્ર ઉલ્લાસની સંકલના કરી છે. તેમાં પહેલા હલ્લાસનાં-(૧) શ્રીગુરમહારાજનો પ્રસાય કરેને હેલા છે? (૨) શ્રુદ્ધત્ર વામના આવા દોકે ? (૩) શ્રુદ્ધ કેવા હેલા? (૪) શ્રુદ્ધ વામના આવા દોકે ? (૩) શ્રુદ્ધ કેવા હેલા? (૪) શ્રુદ્ધ વામના પ્રાવાલ દેશાં શ્રુપ્ત લાય! (૧) કેવા હોલા? (૪) શ્રુદ્ધત્ર વામના પ્રાવાલ દેશાં કે છે કેવા હોલા? પ્રદેશ ત્રાલ કરે ? (૭) હિસ્તાલી તે (નિસ્પત્ર)નાલ કરે સ્થાન ત્રાન કરે છે કે છે લા સાતે પ્રમાને સ્થય પ્રસાયો છે. લીલા હોલાસમાં - ગ્રુદ્ધ હસાય જાણવાં સદ્દશ્કર, ભ્યવહાત અના સ્માને સ્થય પ્રસાયો સ્થય સ્થાન હોલ, પ્રાથક્તિન, તેને લેવાના

તથા દેવાના અધિકારી, જણાવીને છેવટે શુદ્ધ વ્યવહારને માળતાર સુચુરનુ માહાલ્ય દર્ઘા-વવાપૂર્વક વ્યવહાર ધર્મને માહસ્વા સ્વતા કરી છે. ત્રીભ ઉલ્લાસમાં – ઉપસંપત્ની વિધિ, કુચુરની પ્રરૂપણ, પાર્ચસ્થ વચેરેશ સ્વરૂપ જણાવીને છેવટે કુચુરને તજવાનું અને સુચુરની સેનના કરવાનું જણાવ્યું છે. ચોચા ઉલ્લાસમાં પાંચ નિર્ધ્યાનું સ્વરૂપ છત્રીસ હારને વડાવી જણાવ્યું છે. છેવટે ત્રંપકારે પ્રશસ્તિ વચેરે ચીના જણાવીને ગ્રંપ પૂર્ણ કર્યો છે.

૮. દ્વાનિ સદદ્વાનિ શિકા—(બત્તીસ ખતીસી)-આ ચંચમાં ગ્રંથસરે દાન વગેરે કરે પકાર્થીનું ચંચાયે સ્વરૂપ જ્યાવવા મોટે ૩૨ વિશાગ પાઠવા છે અને દરેક વિશાગને બનીસ ખતીસ શ્રેશના કે સ્વરૂપ કરેલા હોવાથી આતું ચ્યાયે નામ દ્વાનિશાદ્વાનિશિકા પાઠ્યું છે.

પહેલી દાન-હાવિશિકામાં-ગેંધકારે દાનનું સ્વરૂપ જણાવતાં ક્યાં દાનમાં એકાંત નિર્ભય થાય ર અને કથા દાનમાં અલ્પ નિર્ભય થાય ર નગેરે પહિલું રહેસ્ય દર્શાન્યુ છે. અને કેવટે 'સ્પુત્રુતાંબ સ્ટ્રા'માં આવતાં આજ્ઞાસ્ત્રમાર્થ વગેરે પહેલું થથાર્થ સ્ક્રસ્ય પ્રક્રેક કરતાં આતરે ક્ષમ્યક દર્શત પણ સ્પષ્ટ જણાવ્યું છે.

બીજી દેશના-હોત્રિશિકામાં—(૧) કેશનાને લાયક કેરાલું કે કોતાના સેઠ કેટલા કે યુલ્ ગ્રાન, ચિતાગ્રાન, ભાવનાગ્રાનનું સ્વરૂપ શું કે આક વગેરે હબેડને ઉકેશીને કેવી કેવી કેશન દેવી અને તેમાં કેવો કેમ સખવા કે વગેરે પ્રશ્નોનું સ્ક્રસ્ય વ્યવાન્યું છે.

ત્રીજી માર્ગ-ઢાર્ત્રિશિકામાં—માર્ગના લેકો, પ્રશસ્ત-ગપશસ્ત વ્યાચરહ્યું, ધાર્મિકાશા-સની પકૃત્તિ, સંવિગ્ન પાકિકતું સ્વરૂપ વગેરે થીના જણાવી છે.

ચાંધી જિનમકત્વ નામની હાર્ત્રિકિકામાં—પ્રભુ શ્રીવ્યિનેધરદેવતું મહત્વ સાચિક શુણોને લઈ તે જ માનવે લેઈ એ વગેરે બીના જલાવી છે.

પાંચમી લક્તિ નામની ક્ષત્રિશિકામાં—દ્રવ્યક્ષત્રિતું સ્વરૂપ જંઘાવતાં પૃથ્વીશુદ્ધિ, અપ્રીતિના ત્યાબ, આનની જરૂરિયાત વચેર બીના જલાવી છે.

છડ્ડી સાધુસામચ્ય નામની કાર્ત્રિશિકામાં—ત્રણ ત્રાન, તેનાં ચિક્તા, ત્રિવિધ શિક્ષા, પિંડવિશુદ્ધિ, વૈરાગ્યના ત્રણ લેદ, લાવશુદ્ધિત સ્વરૂપ જણાવ્યું છે.

સાતમી ધર્મ'વ્યવસ્થા-દ્વાત્રિશિકામાં—જે સાધુ હોય તે મલમાંસ ખાયં જ નહિ, મૈદ્યનનું સરોપપણ, તપ, જ્વાયતનના ત્યાત્ર કરવા વગેરે બીના વર્ણયો છે.

રૂ તડાવપક્ક વધ, અનાવાલના ત્યાર્ચ કરવા વચર ળાળા વધુમાં છે. આડમી વાદકાર્ત્તિકામાં—ત્રણ પ્રકારના વાદ વગેરે બીના જણાવી છે.

નવસી ક્યા-હાત્રિશિકામાં-અવાંતર લોકો જણાવવાયુર્વક સાર પ્રકારની કથાતું સ્વરૂપ વર્ણવ્યુ છે.

દસમી યેાગ-દ્રાત્રિ શિકામાં અને અગિયારમી યાતંજલયાળ-દ્રાત્રિ શિકામાં—વિનિધ યાત્રનાં લક્ષ્ણ વગેરે જણાવ્યાં છે.

ભારમી યોગપૂર્વસેવા નામની ફાત્રિ શિક્ષમાં—સુરુ પૂળ, દેવપૂક્ષ વગેરેતું સ્વરૂપ જણાવ્યું છે.

તેરથી સુકતારેપાયાન-હાર્તિસિકામાં—સ્ક્રિક, તેનાં સાધન અને મુક્તિનાં સાધનોને સેવનાર લબ્ય છવા આ ત્રક્ષેમાં ટ્રેવ નહિ રાજ્યાસ લબ્ય છવા જ ચરાર્થ ગ્રુટ્સહારજ વચેરેની લક્તિ વચેર કરી શકે છે. પાંચ પ્રહારના અનુશાનમાં વિવાનક્ષત વચેરે પણ અનુકાન નક્ષમાં છે. અને છેલ્લા થે તહેતુ અને અમૃત અનુક્ષત કરવાહાયક છે તે જણાવ્યું છે.

સાદમાં માપુનામ ધક-ઢાત્રિશિકમાં— માપુનામ ધક જીવતું સ્વરૂપ તથા શાંત ઉદાત્ત ૧૦૧તું સ્વરૂપ વચેરે બીના કલાવી છે.

પંકરતી સમ્યબુદેષ્ટિ-ઢાર્તિશિકામાં—શુકુષા, ધર્મત્તાબ, ત્રણ કારણ વગેરે બીના જણાવી છે.

સાળમી મહેરાતુંગઢ નામની કાત્રિ શિકામાં—ગીજા ચતવાળાને માન્ય મહેરાતું લક્ષણ, જપતં કેળ વગેરે બીના જલાવી છે.

સત્તરમી દૈવપુર્વકાર દ્વાચિકિશમાં—નિક્ષ્ય વ્યવકારતું રવરૂપ, સમ્પળ્દર્શન પામ્યા ભાક સંસાદી ભ્રાવ દેશવિત્રતિ જ્ઞાદિ સુદ્ધાને કળાદે કઈ રીતે પાયે ⁹ અને માર્માનુસારિતા વગેરે સક્ષાની બીના કર્યાંથી છે.

અહારમી ચાલોદ-હાત્રિશિકામાં—ચાલના પાચ લોદો, મેત્રી આદિ સર સાવના, ધ્યાન, સમતા વગેરેની બીના જ્યાંની છે.

માગાણીસમી ચાત્રાવિક તામની દાત્રિશિકામાં—ત્રણ પ્રકારના ચાળ, ચાગવંચક વગેરે ત્રણ અવંશકતું સ્વરૂપ વગેરે બીતા જણાવી છે.

્રીસમી ચેલાવતાર-હાત્રિક્કિકામાં—સમાધિ, આત્માના ત્રણ લેહ, જરૂરી દકિતું સ્વરૂપ લહેઉ કરીના જજ્ઞાવી છે.

એક્રિક્સમી મિત્રા-હાત્રિંશિકામાં—દક્ષિતા ભાક લેક પૈકી પહેલી મિત્રાદર્શિતું વિસ્તારથી સ્વરૂપ જણાવ્યું છે.

આવીસમી તારાદિ-દાર્ગિશિકામાં—ત્રણ દર્શનું એટલે બીજ તારાદરિક ત્રીજ ઘલા અને દેશી દીપાતું સ્વરૂપ જણાવ્યું છે.

તૈવીસમી કુતકંગઢીનેશૃત્તિ નામની ઢાર્સિશિકામાં—કુતકંતું સ્વરૂપ, રહ્યું મહારના ગાધ, સદતુશનતું લક્ષણ, કાલ, નથ વગેરેની અપેશાએ થવા દેશનાના શ્રેલ વગેરે બીના જણાવી છે.

ચાવીસમી સદ્દષ્ટિ-લાગિ શિકામાં—સદ્દષ્ટિ, કાંવા, ધારણાવું સ્વરૂપ, સ્થિશ દૃષ્ટિમાં ધવી જીવની રિપાર્વિ, પ્રભાદષ્ટિમાં અસંગાતુશન, નિર્જીવિલાળ વગેરે બીના વર્ણપી છે.

પગ્રીસની ક્લેશકોનોપાય નાગલી ફાર્ગિશિકામાં—નિરોધ ટાન-ક્રિયાની નિર્મલ સાધના કરવાથી કરોશનો નાશ શક્ય છે, આ બાળવામાં અન્ય દર્શનીના વિચારેલું સુક્તિથી ખંડત સુર્ધ છે.

છવીસમી વેડાયાહાત્ય-હાર્ત્રિશિકામાં—ધારણાદિ સંવમતું વિસ્તારથી સ્વરૂપ દર્શાવીને છેવટે શુદ્ધ સંવમતું સ્વરૂપ, સુક્રિયદ પ્રાપ્તિતું સ્વરૂપ વર્ણમ્યું છે. સત્તાનીસમી જિલ્લાલ-ઢાત્રિંશિકમાં—દ્રવ્યભિક્ષ, ભાવભિક્ષ, પર્યાયનાચક શબ્દોતું વિવસ્ત્ર રગેરે બીના જણાવી છે.

અકુલ્વીસમી ત્રીગ્રા-ફાર્ત્રિશિક્ષમાં—દીક્ષા શબ્દના નિરુક્તાર્થ, વ્યુત્પત્તિથી ચર્થ, દીક્ષા અપવાના વિધિ, ક્ષમાના બે લેંદ તથા બધ્ધાદિની બીના બધાવી છે.

સોગાલુત્રીસમી વિનય-હાર્ચિશિકામાં—સાનાદિ પાંચ પકારના કાર્યક વિનયના ૮ લેક, વાચિક વિતયના ૪, માનશિક વિનયના ૨ લેક, એમ ૧૩ લેકના કરેકમાં લક્તિ-અહુમાન -વહુંના-ખગાતનારૂપ ચાર ચાર લેક ઘટાવીને વિસ્તારથી આવન લેકો દર્શાળી છેવટે દીક્ષાપયોર્થ તાના એવા પણ પાકેક્તે વંકત કરતું એઈએ એ વાત જણાવી છે.

ત્રીસમી દેવલિશુકિતવ્યવસ્થાપન નામની ફાર્નિશિકામાં—ક્રિબે બરા " કેવલીને કવલાકાર ન ક્રાય" એમ જે કહે છે તેનું ખુંડન કર્શું છે.

એક્ટ્રોસમી ગુક્તિ—હાત્રિશિકામાં— અન્ય મતે ગુક્તિનું સ્વરૂપ દર્શાવીને તેમાં અધાવ્ય-પદ્ય જજ્ઞાવી જૈન દર્શાન પ્રમાણે ચથાવે ગુક્તિનું સ્વરૂપ જણાવ્યું છે.

છત્રીલમી સજ્યનસ્તુતિ-હાત્રિશિકામાં—સજ્યન દુજ⁴તતુ સ્વરૂપ, ખહવચતતું ખંડન આપી છેવટે મશસ્તિ આપી છે. આ ભગીસ અગીસી અને તેના ઉપર 'તત્ત્વાર્યક્ષીપેકા' તામક સ્વેપસ્ટ ડીકા એ અનેતું સ્થાહમસાજ ૫૫૦૦ શ્લાહ છે.

૯. ચેતિલક્ષણુચસુંચ્યાય-આ સ્વર્ધા વાયકવાં પ્રાપ્તવી રદ્દ ગાયામાં સાધુનાં સાત લક્ષણે વિસ્તારથી જ્યાંઓ છે, તેમાં (૧) આત્રી ચ્યુનસ્ત્રી ક્રિયા, આમાં સાધુનાં આપતાં, ફિક્કોલની રીતિ, આગરાયુતું સ્વરૂપ વગેરે થીતા અલ્યુની છે. (૨) શિક્ષાને લાયા પ્રયુ—આમાં વિધિકૃદ્ધ વગેરે સાત પ્રકારનાં રહેતાં અને કેશનાતું કરવુપ જ્યાંએ છે. (૩) શકાકલલુમાં વિધિકૃદ્ધ વગેરે સાત પ્રકારનાં રહેતાં, પરચાળાલું પ્રાથવાની રોગ્યતા, વગેરે જાયાની તિવાર કાર્યાની તિવાર કાર્યાની તિવાર કાર્યાનો તિવાર કાર્યાનો તિવાર કાર્યાનો તિવાર કાર્યાનો તિવાર કાર્યાનો લાયા કૃષ્ણિકૃદ્ધ કરવાની તીત્ર વ્યક્તિ કાર્યા કર્યા વગેરે પીના જણાવી છે (૧) ગ્રહ્યુન્દ્રસ્ત્ર લક્ષ્યું આત્રાનાં વિધિકૃદ્ધ કર્યાનો કર્યાનો કર્યાનો સાત્ર કર્યાનો વગેર પીના જણાવી છે (૧) ગ્રહ્યુન્દ્રસ્ત્ર લક્ષ્યું આત્ર સાત્ર સ્વયક્ત પ્રાપ્ત અલ્લાનો કર્યાનો કર્યાનો પ્રકાર કર્યાનો કર્યાનો

૧૦. નયરહસ્ય-આ ગ્રેથમાં વિસ્તારથી તેમખાદિ સાત નવેશનુ સ્વરૂપ જ્યાપ્યું છે પૃત્ય શ્રીઉપાધ્યાયજી મહાસભે જે ગ્રેથના છેઠે 'રહસ્ય' શબ્દ આવે એવા ૧૦૮ શ્રીમ સ્વરા ધર્મા હતા. એમ-'માળાવિજીસ્થવે પહસ્ચપરાદ્વિતત્તવા चિकीપિતાપ્ટોસ્ટરાત્રવચાર્જી गतंत्रमारस्यस्याधारपस्यादि समातीयं प्रकरणाविद्याद्यादे ' એવા 'સાધાસ્ક્રસ્ય' ગ્રંથની શરૂ આવમાં જ્યું લેલ ખીતા ઉપરથી તિલું જ થઈ શકે છે. પણ હાલ તે લખા પ્રે શે લહ્ય નથી કોઈ તેવીએ તે ગંધોનો તાશ કર્યો હિલ એમ સંભવે છે. ફાંઝ 'ભાષાસહસ્ય, ઉપદેશસ્ત્રસ્ય, નયસસ્ય 'મળી શકે છે. પ્રસ્તુત નયસસ્ય 'મળી શકે છે. પ્રસ્તુત નયસસ્ય 'મળી શકે છે. મત્યુત નિયસ્ય ભાગ હતા કર્યા હતા કર્યા હતા પ્રસ્તાની છે. તેને માનવાની જરૂરિયન, તેવોમાં માહેસમાં છે અવિદેશ અવિદેશ હતા ક્રેસ્ટ સ્થાપિક ક્રેસ્ટ પ્યાપના છે લેસ, દરેકનુ લસાયું, પૂચ્ચ શ્રીલિબ્લાસ્યાં હું સમાત્રામાં અન્યુલિક સ્થાપિક સામાં સ્થાપિક સામાં સ્થાપિક સ્થાપિક સ્થાપિક સ્થાપિક સામાં સ્થાપિક સ્થાપિક સ્થાપિક સ્થાપિક સ્થાપિક સ્થાપિક સ્થાપિક સામાં સ્થાપિક સ્થાપિ

૧૧. નચ્યદીપ-સંસ્તૃત ગવામર આ સંધ લાગામ ૧૦ વ્હાંગામાણના સંજવે છે. આપી ઢીકા નથી. એંગે છે સાર્ય છે, તેમાં પહેલા સાસાંચે સમર્થન તામના સાર્યમા-સાત લાંગા કઈ રીતે સાથ કે સ્માહાલું સ્વરૂપ શું કે કોઈ કેમણે સ્થાત વાબ ન હોય તો પણ ત્યાં અધ્યાહાર કરવા નોઈ એ તે શું કારણ ? લાંચા સાત બ કહ્યા તેનું શું કારણ ? વગેરે છીતા પહું જ સ્પષ્ટ જણાવી છે. બીલા નવસ્ત્રમાંન તામના સમ્યો-નચિશ્ચાનો જરૂચિત, કરેક નવની મચીલા, કબતાં સ્વરૂપ, સ્વસ્ત્રાપત્રાં, વિશાવપચીલ, કરતાવિંકનવતા દ્રશ્ સુદ્ધો, તેનું સ્વરૂપ, જણાવીને પર્યાવાર્થિક નચ્યું સ્વરૂપ વર્ણસું છે. તેમાં પર્યાય અને શુદ્ધા શેરે, તો લસ્યુપ જણાવીને પર્યાવાર્થિક નચ્યું સ્વરૂપ વર્ણસું છે. તેમાં પર્યાય અને શુદ્ધા શેરે, તો લસ્યુપ જણાવીને પર્યાવાર્થિક નચ્યું સ્વરૂપ વર્ણસું છે. તેમાં પર્યાય અને શુદ્ધા શેરે, તો અંત્રાના સાર્ય અર્થે બીતા ત્યાયાં છે. (ર) સંશ્વનવર્યા-લક્ષ્ણ, સલક્ષ્યુ, તેમાં સત્યાસત્રતા, નેગરાનાના અંદે બીતા ત્યાયાં છે. (ર) સંશ્વનવર્યા-લક્ષ્ણ, સલક્ષ્યુ, તેમાં સત્યાસત્રતા, નેગરાનાના અંદે બીતા ત્યાયાં છે. (ર) સંશ્વનવર્યા-લક્ષ્યુ, સ્વર્યુ, સ્વર્યુ, તાર્યા સ્વર્યા સ્વર્યુ સ્વર્યુન રાગ્લોનો ખરી અર્થા, ત્યનના શેદ વગેરે બીતા ત્યાના છે. એન્યનુત્રનના પ્રત્યો લક્ષણ, સ્વરૂપ, રાગ્લોનો ખરી અર્થા, ત્યના શેદ વગેરે બીતા ત્યાનો છે. એન્યનુત્રનાના પ્રત્યો લક્ષણ, સ્વરૂપ, રાગ્લોનો ખરી અર્થા, ત્યનના શેદ વગેરે બીતા ત્યાનો છે.

ેર, નચેરપદેશ-આ ગંધની ઉપર પોલે 'તયાસુલારચિલ્લો' નામની ઢોકા ઘનાવી છે. તેમાં વિસ્તારથી બહુ જ સ્પષ્ટ રીતે પ્રસ્થકાદિ ઘ્ઇતો ઘઈને સાલે તચેલું સ્વરૂપ, દરેક તમની ક્યારે અને કહ્યાં ચોલના કરવી શહેર ત્યા કથા કચા નિર્ણય માને છે? તે તેમજ પ્રસંગે પ્રતિમા-પ્રતિભાદિના વિચાર દર્શાંના છે.

· ૧૩, ગ્રાનિબિ દુઃ-આ ગયતું પ્રક્તવુઃ૧૨૫૦ ²લોકતું છે તેના ઉપર ટીકા નથી. (૧) ગ્રાન એટલે શું ^૧ (૨) મેતિગ્રાન વગેરે ચાર ત્રાન કર્મ જાયેક્ષાએ છત્રાસ્થિક સુધ્ કહેવાય છે? (૩) ગ્રાનના લેલ કેટલા ? (૪) મલિગ્રાનનું લક્ષણ શં? (૫) મલિગ્રાનને શ્રત ત્રાનથી અલગ કહેવાનું શું કારલ ⁹ (દ) મહિત્રાનના શ્રુલનિશ્રિલ-અંદલનિશ્રિલ લેકોનું સ્વરૂપ શં? (છ) પદાર્થ-વાકુગાર્થ-પ્રહાવાકુગાર્થ ત્રાનને કર્યા ત્રાનમાં મછવં? (૮) તે ચારે પ્રકારના બાધની ઘટના કઈ રીતે કરવી ? (૯) ચૌદ પૂર્વોના ઘટસ્યાનપતિલ બાધને કયા ફાનમાં ગલવા ? આ પ્રશ્નોના ખુલાસા સવિસ્તર જણાવીને અવગ્રહાદિકના ક્રમમાં પ્રયોજન, અવગ્રહના લેક, સ્વરૂપ, તેના પ્રામાણ્યાદિના નિર્ણય, સમ્યકલ્વને લઇને જ ફ્રાનને પ્રમાણ તરીકે શછી શકાય, સ્યાહાદને સ્વલય, એક પદાર્થના ત્રાનથી સર્વ પદાર્થીનું જ્ઞાન, ભવગહાદિ લેદામાં ત્રાન-દર્શનની ચેજના વગેરે બીના મહિત્રાનના પ્રમુગ સ્પષ્ટ જણાવી છે. શુદાશનના વર્શનમાં-સ્વરપક્ષેદ, મિતિશ્રતમાં તકાવત વચેરે જણાવ્ય છે. અવધિજ્ઞાનના વર્શનમાં-દક્ષ્ય, લેક, પરમાવધિ, મનઃપર્યંવ જ્ઞાનથી શિકાતા જ્યાવી છે. સનઃપર્યંવ ગ્રાનના વર્ષેનમાં-લક્ષણ, ચિતિત પદાર્થને અથવાની રીત, મન-પર્યવમાં અપેક્ષાએ દર્શનના સ્વીકાર-અસ્વી-કાર, મત:પર્યાપથી જે મન જણાય તેનું સ્વરૂપ વળેરે ગીના વર્ણવી છે. પાંચમા કેવલજ્ઞાનના વર્શ્વનમાં-તેનુ ક્ષસણ, સર્વસતાની સિન્દિ, તેનું પ્રામાણિકપણ, કેવલગ્રાનાવરણના સથની આવરયકતા, કર્મતું આવારકપાદ, ક્રેક્સહાકિથી દ્રાભાદિની ઉત્પત્તિને સ્વીકારનારના સતત भंदन, नैशद्भयक्षाव-भाननार की दंभते सर्वज्ञपत्रानुं अव्यवस्थितपत्नं, मेहरस प्रदानाने કેવલગ્રાન તરીકે માનનારના મતાનું ખંડન, પારમાર્થાદિક ત્રણ શક્તિ, દેષ્ટિસૃષ્ટિવાદનુ ખંડન, પ્રકાવિષય અને પ્રકાશકારવૃત્તિનું –અધ્યાસનું – ગતાનકલ્પનાનું ખંઠન, દ્રવ્યાર્થિક નચની ભપેક્ષાએ સ્ક્રમ વિચારશ્રેશિ જણાવી છે. કેવટે મક્શવાદી, શ્રીસિન્ડરેન દિવાકર તથા જિત્તલુદ્રગશ્ચિના કેવલગ્રાન-દર્શન અને તેના ઉપયોગની આખતમાં વિચારા જણાવી 'સસ્મતિ-તક'ની તે વિષયની ગાંધાઓન સ્પષ્ટ વિવેચન દર્શાવી નયવાદની અપેક્ષાએ તેનું એકીકરસ અલાઓ છે

૧૪. શાનસાર-મા મંચમા બુલા બુલા પૃષ્ટુંતા વચેરે કર પહાંગ્રેલિં આઠ અઠ ^સાકમાં અહું જ સરસ વર્ષુંત સહોપમાં કર્યું છે-આવી ઉપર પોતે આક્ષાવણાય (ઇમે) પાત્ર કર્યો કે. એમ તીકીના *સાકશી સાક્ષિત શક્ય કેટ

> " फेन्द्रवृन्दनर्त नत्या, वीरं तत्त्वाधेदेशिनम् । वर्षः श्रीक्षानसारस्य, जिन्यते जोकमापया ॥ "

આ ત્રંચ ઉપર પાદક શ્રીદેવચંદ્રજીએ અને પંત્યાસ શ્રીગ્રંભીરવિજયજીએ સંસ્કૃત ડીકા સ્પી છે.

૧૫. ઐન્દ્રસ્તુતિએ!–આમાં શ્રીક્ષાલનસ્તુતિના જેવી સ્તુતિએા અનાવી છે.

૧૬. ઉપદેશ રહસ્ય, ૧૭. આસધક્રવિસાધક ચતુર્સેંગી, ૧૮. આદિજિન સ્તવન. ૧૬. તત્ત્વવિવેક, ૨૦. તિજી-વચેક્રિત, ૨૧. ધર્મ પરીક્ષા, ૨૨. ગ્રાનાર્લું વ ૨૩. તિશાલક્ર્વાવિચાર. ૨૪. ત્યાય ખંડનં ખંડે ખાદા-(મહાવીરતાવ પક્તવ) શિંદપાંચાયછ મહારાજે વચેલ નવ્યત્યાયની વિશિષ્ટ કોર્ટિના ચા ગ્રંથ અત્યંત અર્થળ વીર અને જિટલ છે. આ એક જ શ્રંથ વાયક્ચર્યના પ્રથમ પાહિલની સાધી પુરે તેવો છે. આ ગ્રંગ ઉપર અમારા પરમાપાત્ર પ્રાંથ પંત્રમુખત શુરુપાહેત્રજ શિંતજને મીત્ર છે. આ મારા મોત્ર શુરુપાલે વ્યાવમાં મહારાજ શિંતજને પ્રાંથ પ્રથમ ક્ષારાજ શ્રીવિજવાદ મહારાજ પ્રમાસ મેત્ર શુરુપાલે પરમાજૂન ચાલાર્થ મહારાજ શ્રીવિજવાદ ત્યાં ત્યાર પ્રાપ્યાભ પ્રયુખ્ય અનાવી છે. આ ગ્રંથ મારાભ પ્રયાભ પ્રયુખ મેત્રા છે.

રંપ. અંસ્પૃશદ્ભાતિવાદ.

૨૬. ન્યાયાસાર—આમાં ત્યાર દરિષ્ટે સ્વાહાદાહિતું નિરુપણ કહું" છે. આ લંધાની ઉપર અમારે પરમપુત્રન પરમોપાતરી સુંદ્રવર" આવાર્ય મહારાજ શ્રીવિત્યાનેમિત્રીચરાજ મહારાજે સ્પષ્ટ વત્ત્વોપાદાયક વૃત્તિ આવારી છે, જે શ્રીવૈત્ત લંધાદાલક સભા, અમદાવાદ વસ્કૃષી હૃપાયેલ છે. આ લંકતું લંધાત્રામાં ૧૨૦૦ વ્લાકપાદાથ છે.

ન્યારંખંડનપાલ અને ન્યાયાલાકની શ્રીકપાંચાયછએ પાતાના હાંચે લખેલી પ્રતા પણ મળી શકે છે.

- २७. पंचितिश्रेषी अहरख-मामां पंच निष्यानी भीना कछावी है.
- **૨૮. પરમજ્યોતિ: યચવિ** સિકા.
- ર૯. પરમાત્મપંચવિશિકા.

30. પ્રતિસાશકારક-મૂળ રેલાક ૧૦૦-ચાના ઉપર વાચકર્યાં મોટી ઠીકા રચી છે. અમેં તે દીકાને અંતુકારીને વિ. સં ૧૭૯૩ માં પોલિંગીય ચરળાધીશ શ્રીભાવપ્રસાશિષ્ટ આ નાની ઢીકા અનાવો છે. બંચાંકરે આ લેંચમાં શરૂઆતમાં ૧૯ રેલાકમાં શ્રી. જિનપ્રતિમાને અને જિનપ્રતિમાની ખૂલને જલ્લાલારા આંગમારિક નહિ અનનારા હ્યુપકમત્દુ ખંડત કર્યું છે. પછી ૯ રેલાકમાં પ્રયાસવીય સતતું ખડત કર્યું છે. તે પછી શે રેલાકમાં જિનપ્રતિ-માની સ્તિ હતા છે. ત્યાર આદ ૧૨ રેલાકમાં પાયત્ર કે પ્રત્યું એને પણ વૈદીકમાં પુરુષકમાં માની સાહિ કરી છે. ત્યાર આદ ૧૨ રેલાકમાં ખાયત્ર કે પ્રત્યું એ ત્યાર આપ્યો છે. તે ઉપમાંત જિનસ્તિનિકાલિંગ નવેલીકો પણ દાર્શિયા છે. પછીના ૬ રેલાકમાં સર્વન્ન પ્રસુની અને તેમની પ્રતિમાની સ્તિલે જલ્લાવીને છેલ્ટે પ્રદાસ્તિ કહીને લેંઘ પૃષ્ણ કર્યો છે

39. પ્રતિમારથાપતન્યાય-મા લગ્ર મધ્યું મત્યા છે.

રેર, ફ્લાફ્લવિષ્યક પ્રશ્નોત્તર, (?) ૩૩. લાપારહસ્ય, ૩૪. સાગં'પરિશુદિ, ૩૫. ક્ષુકતાશુક્તિ, ૩૬. વિતિદિત્ત્વમાં પ્રકેરણ, ૩૦. વેશુઆકેલ્પલતા, (મેં ધ્યાન-(૧૦૫૦), ૩૮. શ્રી. ગ્રેડીપાર્થંક્તોત્ર-(૧૦૮ ૫૦), ૩૬. વિજયપ્રલસ્ટિસાય્યાય-(સંક્લમ), ૪૮. શે ખેંથરપાર્થંક્તોત્ર, ૧૮૩), ૪૧. સમીકાપાર્થંક્તોત્ર, ૪૨. સામાચારી પ્રકેરણ, સ્વાપાર્થીકા સહિત, ૪૩. સ્તાવાવલી.

ન્યાયાચાર્ય શ્રીયરોાવિજયછકૃત દીકાશ્રંથા

૪૪. અષ્ટસહસીવિવર્યું—ચાયાયતો આ ગંધ જ્યિંગરીય છે. મૂક કારિકાના ચનાર-શ્રીસમંતલદ છે. લાવ્યકર્યો-શ્રીચાકલક દેવ છે, અને તેને અનુસરીને વ્યાપ્યાકાર-વિધાનંક છે. શ્રીજ્યાયાયજી મહારાજે આના ઉપર વિવરણ સ્થ્યું છે.

૪૫, કર્મ પ્રમૃતિ-મેશિ શિકા-ગંધમાન ૧૩૦૦૦ શ્લાક. ચાની સ્વક્રતાંતિખેત પ્રત પણ મળી શકે છે. શ્રીમલવચિરિ મહારાજે કરેલી નાની શિકાના ચ્યાધારે ચા મેશી શિકા બનાવી છે.

૪૧. કેમ પ્રકૃતિ-લાલુ દીકા-આ ગંધની સાત સાથા સટીક મળી શકે છે, મે આત્માના સભાગે કપાવી છે.

૪'૭. તત્વાર્થ 'ધૂન્તિ-મુન્ય શ્રીક માત્વાતિ વાગક મહારાજે ' તત્ત્વાર્થીય ગામ સુત્ર' નામક મંચની રચના કરી છે. તેની ઉપર જેમ શ્રીહરિયાદાર્થિ અને શ્રીતિહારોન મહિ વગેર મહાત્માઓએ ટીકા બનાવી છે, તેમ શ્રીક્ષપાયજીએ પણ ઢીકા મનાવી છે. પણ ઢીકા આખી મળતી નથી. ફોતા પ્રથમ અધ્યાવની ઢીકા મળી છે. તેમાં પણ કારિકાની ઢીકા માપ્યુ, મળી છે, તેને મારા પરદેશપકારી વિદાસુદ્ર આવાલ મહારાજ શ્રીવિજયકારા પ્રકાશ મહારાજે શ્રીવીજયકારા છે. છપાવી છે.

४८. क्षाहरशास्त्रकोहादार विवराषु-मा अ'बतु अ'बसान १८००० श्वीक्रप्रेसास् छै.

૪૯. ધર્મ સંગ્રહ હિપ્પણુ–મૂલકાર ક્યાધ્યાય શ્રીમાતવિજયછના ગ્રંથ કપસ્ત હિપ્પણ, સાવનગરથી જૈન સાત્માનંદ સભા તરફથી પ્રચાર થયું છે.

પઃ. પાત જલ યોત્રસ્ત્રવૃત્તિ-આ ગઢ શ્રીજૈન આત્માનંક સક્ષા, ભાવનગર તસ્ત્રી પ્રગઢ રહ્યો છે.

પવ, ચામનિ શિકા નિવર્ણ-પ્રકાશક-આત્માન દ સભા, ભાવનગર,

પર, શાસ્ત્રવાર્યા સસુચ્ચયવૃત્તિ-કચા ટીક્ક્ષુ નામ 'સ્યાહાક્ક્પલતા છે અને એનુ મંદ્રમાન ૧૩૦૦૦ વ્લાકપ્રમાણ છે આ ગંધ ભાવનગરની શ્રીયરોનિજયછ જેન પ્રયમાશાએ પ્રક્રત કર્યો છે.

પત્ર. વેદિરાક્લુત્તિ-મૂલકાર શ્રીહસ્તિક્સિર, ગયમાન ૧૨૦૦ 'લેદક છે. પ્રકાશક શૈક દેવચંદ લાલભાઈ જૈન પુસ્તકાહાર કંડ, સુરુત, ટીકાલુ નાચ 'ચોગસીપિકા' છે.

૫૪. સ્તવપરિદ્ધા પદ્ધતિ–શાસભાનાંતમુગ્યય ટીકામાં આ ગથની સાક્ષી આપી છે.

^{*} આ ગય ઉપગ પૂ આ ગ્રીવિજયભ્રાવણ્યમ્સીયરજીએ વ્યવગ ટીકા સ્થીને પ્રસિદ્ધ કરાવ્યો છે. સે.

ઉપાધ્યાયછકૃત અનુપક્ષષ્ય ગ્રંથા અને ટીકાએા

૫૫. ઋધ્યાત્મબિંદુ, ૫૬. અધ્યાત્માપદેશ, ૫૭. અલેકાસ્ક્રાત્મબ્રિટીકા-અનિ કલ્લેખ ' પ્રતિમાશતક'ના હલ્યા 'શ્વીકની સ્વેપદ્મશૈકામાં આ પ્રમાણે છે—' प्रपञ्चितं चैतवस्द्वार-स्वामणिवृत्तावस्मामिः ।'

પટ. સ્વાકર, પર. આરવાવ્યાતિ (જ્યોતિ ?), ૧૦. ક્રોલ્યપકાશીકા, ૧૧. છંદ સ્વામિત્રીકા, ૧૨. ગ્રાનસારસૂર્યિ, ૧૩. તત્ત્વાલાકવિરસ્તુ, ૧૪. વિસ્તૃગાલાકવિરિ, ૧૫. દ્રબાલાક, ૧૬. પ્રમારહસ્ય, ૧૦. મં પાલવાદ, ૧૮. લતાલ્ય, ૧૯. વાદમાલા, ૭૦. વાદ-સ્ક્રેસ્પ, ૭૧. વિચારમિંદ, ૭૨. વિચિવાદ, ૭૩. વીજનવતીકા, ૭૪. વેદાંતનિસુધ, ૭૫. વેદાંતિવીઝ-સર્વપ્ય, ૭૧. વેસવાવીત, ૭૭. શાપકરાયુ, ૭૮. સિહાંતાદ પારિસ્કૃ, ૭૨. સિહાંતા-મંજરી-નીકા, ૮૦. સ્યાહાદમંભૂષા (સ્યાદ્ધમાં જરીકા), ૮૧. સ્યાહાદસ્ક્રેપ્ય-ચા પ્રધાન કહ્યુંબ ધ્યાયાલાકોનાં ત્રીઓ પ્રકાશની છેવટે લ્યા પ્રમાણે આવે છે -'પરાંચામાત્રાત્રના ત્રિત ત્રે તેમાં વિનિવ્યવિદ્યામાં પ્રવાધિક્ષમાત્રનાં લખ્ય સ્વલાદ્યાદ્ધસ્થાનાવાસ્ત્રવેષાત્ર !!

માપણે લેખર તેવું તે પ્રચાણે લપાંચાયલ્યક્ત મેંચાનાં ત્રણ વિલાસ પાઠી શાકાય-(૧) મુક્ષમે છે, (૨) ટીકામ છે, (૩) અનુપક્તમ મંત્ર-દીકાદિત તેમા મુલગંથા લગલમ ૪૩, ટીકામ થે! ૧૧, અને અનુપદામ્ય મંત્ર-દીકાદિતી સંખ્યા ૧૫ છે. સુરુતાવિનિસ્થાદિ મારે લપસ્થી એ પણ નિર્ણય જરૂર શર્મ શકે છે કે આશાસ્ત્રો પાદ્રના મુલગંશો પણ વરીકા છે. અન્યાર સુધીમાં જણાવેલી ગીના ઉપસ્થી વાયકે અન્યા શક્યો કે ત્યાયાચાર્ય છ મહારાજ પાક્રત અને સંસ્તુતાશાયાના અને અને લાયામાં સ્થાપેલા પ્રાથીન લંધાના કચ્ચોકાદિના

हिपाध्यायळकृत साक्रमाधाणस कृतिया

પરેપકારરવિક વાલકવરે' કેલળ વિક્લોગ્ય સાહિત રચીન જ સંદોષ તથી માનો. તેમને ભારાભ્યોને પણ લાળ જાપવાની દીવ ઉદદેશ હતી. અને તેથી તેમણે ક્ષાકશાયામાં અનેક તાની-માટી, જાર-પણ ફિલિગાની સ્થાન કરી છે. આ સંખર્ચમાં એમ ક્ષેક્ષપા છે કે ન્યુરુમંકાશનની સાથે ઉપપંચાલ્ય કાશીમાં જાણવાર પૂર્ણ કરીને આજા વગેરે બોલ બોલ માને વિકાર કરતા કરતા જાતાકરે એક આપમાં પાયાં, સાંખે પ્રતિકાલમાં છેક શાયે ક્ષેત્રિયતિજબાછ સ્ક્ષાસભ્ય સમ્પ્રાથ થોલો, તે સાંચાલવાની કંપણ છે, કૃષ્ય કરીને તેમને આગ્ના દિશાળ 'આ ઉપલી સુરુમંત્રાએ એશોલિલ્યાએ પૂર્ણ કે, 'કેચ, લાઈ કોલાલો' કોલા ક્ષેત્રિયતિજબાળ મહારાખ સમ્પ્રાથ થોલોન્સ લાઈ કહ્યું કે, 'કેચ, લાઈ વાલકાની નથી, ' ક્ષેત્રિયોતિજબાળનાં આ પણ સાંચાનીને સાહે કહ્યું કે, 'ત્યારે શું લાર વાલકાને કોલાલોને સાહે કહ્યું કે, 'ત્યારે શું લાર વાલકાને કીલોનો તેમને કહ્યું કે, 'ત્યારે શું લાર વાલકાને કોલાલોને સાહે કહ્યું કે, 'ત્યારે શું લાર વાલકાને કારોમાં સ્કૃતિ-

⁾ ઉપરંતા વાદી ગાલુ પર પરા સુરુવની કે તેથી ખરાખર નથી. વધુ ચોકસાઈવાથી માદી ૨૦૧૧ માં માત્રે સ્થાર પ્રભૂટ કરી કે તે જેવી. –સે પા.

પ્રતિકેમનું પુરું થયા બાદ વિચાર કરતાં સ્પષ્ટ જન્માસું કે, 'પ્રાથકનું કહેવું' અકરે અક્ષર આપની છે કારણ કે પ્રાકૃત-સંસ્તૃતના બ્રાયુક્તરી સંખ્યા બહુ એકાં છે તે નહીં બાંકુનારે તો પ્રયક્તિ ભાષામાં જ એક શકે શકે. આ ઇસદાથી નહું જ વૈરાગ્યપ્ય સત્યાય નાનધીને, મોઢે કર્ય બાદ બીજે હિસ્સે પ્રતિકેમણમાં શ્રીયક્રીમાં બન્ફુલ્ય કર્યા કર્યા કરતા સત્યાય માના સામાય લાંભી હતી, તેથી નાર બહુ લાગી. સાવકા યુલ્લા લાગ્યા કૈ, 'હવે ખાકી દેરદી સ્ક્રી?'

ઉત્તર્યમારા મહારાજનો વિચાર એ હતો કે ત્યાં સુધી શાસ કાપવાનું કહેનાર શ્રાવક ને ગેલે ત્યાં સુધી સત્રાગ્ય ચાલુ સખરી. કેટલેક સમય વીત્યા બાદ એ જ શાવકે પૃથ્યું કે, 'કે' મહારાજ ! હવે સત્ત્રગ્રય કેટલી બાહી રહી!' જવાબમાં શ્રીક લોધ્યાયારાજીને જણાવું કે, 'મહાતુશાવ! માર વરગમાં પેતા વેવેલા શાસના આજે પૂળા લોધાય છે. એક વરસના શાસના પૃત્રા બાંધ્યામાં લાણે. સમય ત્યારે તે સમય લાગે એમાં નવાઈ શી!' સાથક સુધી સમાજ મળે અને ત્યારી આગાના લામ્યો. શ્રીકપાયાયારાજીએ સત્તરાત્રાની શી! તેની અને કેની અમાં સ્વાર્ય સાથક સ્વાર્ય સાથક સુધાયાયારાજી સત્તરાત્રાની સ્વાર્ય સ્વાર્ય સ્વાર્ય સ્વાર્ય મારે કરી એમ કહેલાય છે. હમર જણાવેલી શત્તા સ્વારાલામાં અત્રર સુધારાં લાનો, શેમ પત્ર પ્રકેશય છે. હાલાસ્ત્રાર્ય જીવા મારા સ્વાર્ય કરી અના સ્વાર્ય સ્વાર્ય સ્વાર્ય પ્રમાણ કરી મારા સુધારા સ્વાર્ય સ્વાર્ય પ્રમાણ કરી સ્વાર્ય સ્વાર્ય સ્વાર્ય સ્વાર્ય પ્રમાણ છે.

૧. અધ્યાભમત પરીયાનો ટોગ (ગુદિવ), ૨. આવંદ્રયત—જરાવી; મેદવામાં આવંદ વાઝ સંસાળને ક્ષ્મોમાય અધ્યાભને ક્ષ્મોમાય અધ્યાભને ક્ષ્મોમાય અધ્યાભને ક્ષ્મોમાય અધ્યાભને ક્ષ્મોમાય અધ્યાભને ક્ષ્મોમાય અધ્યાભને સ્વાદ માત્રા ક્ષાયો સાથકાર્યોને વાગ્યકર્યો તેમની સ્વૃતિ અનાલી હતી. તે આદ ત્રિકાર માત્રા ક્ષાયો સાથકાર્યોને કેકલાય કે. ૩. કૈપ્યેદ્ર માત્રા કે ત્રાપ્યો અધ્યાભને કેકલાય કે. ૩. કૈપ્યેદ્ર માત્રા કરી કરી, ૧. ત્યારા કેવારી ૧. કર્યો ૧. કર્યો ૧. કર્યો ૧. કર્યા કરી કરી, ૧.૧ પ્રતે કેવાર (મૃતિ), ૧. દ્રારા કર્યા કરી કરી, ૧.૧ પ્રતે કેવાર (મૃતિ), ૧.૧ લાકાર્યો (સુતિ), ૧. લાકાર્યા (સુતિ), ૧. લાકાર્યો (સુતિ), ૧. સામાં પ્રતિ (સુત્ર સામય ભારોને તેમાં સુત્ર પૂરા કર્યો (), ૧. સામાં પ્રદાર, ૧. સામાયા (સુત્ર કર્યા), ૧. લાકાર્યો (સુત્ર કર્યા), ૧. સામાયુત્વ લોપાઈ.

६५१६४१४७५त स्तवनी

૨૩. સમાવશ્યકસ્તવન-આમાં છ આવશ્યકનં સ્વરૂપ. કળ વગેરે થીના જણાવી છે. ૨૪. કુમતિખંડન સ્તવન. ૨૫-૨૬-૨૭-વર્તમાન ચાવીશીના ચાવીશ લીર્ધ કર પ્રભ દેવનાં સ્તવના-આ ત્રણ ચાવીશીમાં પ્રમુક્ષદિત વધેરે થીના અઠજ સંદર રીતે સરક ભાષામાં જણાવી છે. તેમાંની એક ચાવીશી શ્રી જૈનક્ષેયરકર મંડલે અર્થસહિત છપાવી છે. ૨૮. દશમતસ્તવન, ૨૯, નવપદપુન-મામાં શ્રીપાલસસમાં નવપદનુ સ્વરૂપ જણાવતી વેળાએ જે નવ હાળા આવે છે તે જ હાળા આપી છે. કેટલાક ભાગ વિમલગચ્છના શ્રીજ્ઞાનિયક્ષ-સરિએ અને કેટલાંક પદ્યો શ્રીદેપચંદ્રભાગે બનાવ્યાં છે. ૩૦. નયપ્રિક્ષિત શ્રીશાંતિજિન સ્તવન, ૩૧. નિસ્થય-વ્યવહારગર્ભિત શ્રીસીમંધર પ્ર<u>થનું</u> સ્તવન, ગાયા-૪૨, ૩૨. પાર્શ્વનાથ રતવન (ધમાક્ષ), ૩૩, ધાર્ધાનાથ (દાતભ) સ્તવન, ૩૪, મહાવીર સ્તવન, ૩૫, સ્ત્રીન એકાદશી ૧૫૦ કેલ્યાગ્રકન સ્તવન, ૩૬, વિહેરમાન જિનવીશી, ૩૭, શ્રીવીર સ્તતિ હિલિક્ય સ્તવન, આચા-૧૫૦: ગ્લામા ફુંલકમતનું ખંડન કરીને પ્રતિમાપૂર્વ કેલ્ક્રી કેલ્ક્રી કરી ? તે ખીના ઢંઢકને માત્ય એવાં ૩૨ સંત્રોમાંના પાસ જણાવીને પ્રતિમાની જરૂરિયાત વળેરત વર્ષાન કર્યો છે. ૩૮ શ્રીસીમ ધર ગૈલવંકન, ૭૯. શ્રીસીમ ધરસ્વામીને વિનંતિ ગર્ભિત રતવન, ગાથા-૧૨૬; આમાં સાચા ગરુનું સ્વરૂપ વચેરે બીના જણાવી છે, ૪૦. શ્રીસીમાંઘર-સ્વાસી સ્તૃતિરૂપ સ્તવન, ગાળા ૭૫૦-આમાં સાધુજીવન અને શ્રાવકજીવનને અંગે મહ જ જરૂરી ખીના સ્પષ્ટલાવે જણાવી છે

ઉપાધ્યાયછકૃત સન્ઝાયા

૪૧. અકાર પાપરશાનકની સહતાય, ૪૨. અગૃતવેલી સહતાય, ૪૩. અગિયાર લંગની સહતાય. ૪૫. આત્રાના કર્યાં તેમાં કર્યાં પારતાની સહતાય, ૪૬. આત્ર દિલ્લી સહતાય, ૪૯. ચાંતા પાતાની સહતાય, ૪૬ ચાર અદિકાર્તી સહતાય, ૧૫. સાંત્ર ક્રાંત્ર કહ્યાં કર્યાં કર્યાં કહ્યાં કર્યાં કર્યા કર્યાં કર્યાં કર્યાં કર્યાં કર્યાં કર્યાં કર્યાં કર્યા કર્યાં ક

આ પ્રમાણે—(૧) ગાફત, સંસ્કૃત, હિંદી, સુખ્યત્વી લાયાના જે જે શેશ પ્રાચીન શૈપ, (૨) માનલાંત્રીમાં અવસીમન, (૩) લુકા લુકા વિદ્યાનોનો વાયાસ્થ્યમાં પ્રેશાની કરેલી યાદી, (૪) મુદ્દિત ગ્રેશા અને (૫) જે ગ્રેય હાલ અથી શકતા નથી, પણ છપ્યયેલા કે લખાયેલા પ્રાચીન મંશામાં તે આલ્લમ ગ્રેશાના લીધેલા પાત્રે અથ્યા કરેલા નામનિર્દેય—મા નરેકે ઉપસ્થી પશ્ચિમપૂર્ણ વાયાનન પરિલાયે તૈયાર કરેલી વાયાસ્થ્યમાં શ્રેયાવલી જણાવી છે.

સંભવ છે કે, આથી પષ્ટ વધુ લેશા જરર હોવા જોઈએ, છતાં ઓછા લંશા દેખાય છે. તેનું કારણ શંે આના જવાબમાં કેટલાએક એમ માને છે કે ઉપાધ્યાયછના સમયમાં યતિઓનં અહે જ તોર હતે. આ વખતે પંત્યાસભ મહારાજ સહારાજ સહાવિજયભ પ્રશિ વગેરેની સાથે સામેલ થઈ ઉપાધ્યાયછ મહારાજે કિયા–ઉદ્ધાર કર્યો. સાચા ગરુ કેવા રાષ્ટ્રવંત હૈાય વગેરે ખીના નિકરપક્ષે ઉપદેશહારા અને ગ્રંથાહારા જણાવવા લાગ્યા. ભાશી યતિએએ ક્રેય ધારણ કરીને શ્રીકપાધ્યાયભ મહારાજ ઉપર બહુ જ ભયંકર બહામા ગુબાર્યા છતાં તેઓ રુષા નહીં. અને તેમના ઘણા ગ્રંથીને અશિંગરલ કર્યા આથી તે **પ્રથા મધ્ય પ્રમાણમાં હવાવી ધરાવે છે.**

દીકાકાર મહાપુરુષોમાં પુજય શ્રીમહાયત્રિજિ મહારાજ વધારે વખણાય છે, કારણ કે તેઓએ બનાવેલા લાંધામાં શબ્દોની અને પદાર્થની સસ્લતા અઠ દેખાય છે. આથી તે ચંચાના અલ્પએપ્રધાળા જવા પણ દ્વાંશથી લાભ લઈ શકે છે. આવી સરલતા શ્રીવા**ચક** વર્ષના પ્રાકૃતાદિ સામાના ગંધામાં જસાતી નથી, એમ ગંધકાર ધાતે પણ છેવટે સમછ શક્યા છે. માટે જ સુજરાતી, હિંદી ભાષામાં પણ પુન્યશ્રીએ વિશાલ પ્રમાણમાં ગ્રંથરથના કરી છે. એક જ ગંધકાર બહી બહી ભાષામાં વિવિધ પ્રયત્ના કરે, એવાં દર્શતા વાચકવર્યની પહેલાના સમયનાં મળવાં મુશ્કેલ છે. પ્રશસ્ય સરલ દીખાનર શીમલયગિરિજ મહારાજ થને સગ્રહેકાર શ્રીઉમારવાતિ વાચકવર્ષની માફક પુદ્રત્ય શ્રીઉપાધ્યાયછ મહારાજ **દ**રેઠ પદાર્થના ખરા સ્વરૂપને નિઠરતા અને મધ્યસ્થતા લાળવીને કહેવામાં સંપૂર્ણ પ્રશંસા પાસેલા છે, માટે જ જ્યાં તેમના ગંગાની સાક્ષી આપવામાં આવે, ત્યાં સર્વ કાઈ કણક જ કરે છે.

णारमी सदीना महान ब्योतिषर अविभवसर्गत श्रीदेशवंद्रावार्यनी क्रेम महापाध्याव શ્રીયશાવિજયજી મહારાજ પાતાના પ્રખર પાહિલ અને ઉદ્યત્ત આરિવના અળે અહારમી સક્રીના મહાન જ્યાતિર્ધર હતા. તેમણે જ્ઞાન અને ગ્રાસ્ત્રિના સુધેળ સાધીને પાતાનું કલ્યાણ સાધવા સાથે સમસ્ત સંવને કલ્યાણના સાગ દર્શાવ્યા હતા. શ્રીઉપાધ્યાયછ મહારાજની છે અમર કૃતિઓ આપણને એ જ પરમ કહ્યાલના માર્ગ દર્શાવે એ શાવનાપૂર્વંક આ હેમ મહીં સમાપ્ત કર છે.

જૈનદર્શનનું ચિંતનકાવ્ય

ગ્રાનસાર

લેખક : શ્રીયુત પી. કે. શાહ (અગઢાવાદ)

શ્રીમદ્ શ્રોપિલ્લછના અનેક શ્રીય, અનેક કૃતિએ આપણને એમની વિસ્ત પ્રતિક્ષાને પરિચય આપી લય છે. એચની સાહેલ્કિ પ્રતિક્ષા, તાનજાહી દૃષ્ટિ અને છબનને હવ્ય કરનારી શાવના, સંકૃતિ સાઢેના અને તહે'પહેતિ સાઢેના એમના લાહ સંપર્ધ-આ થયાં શ્રીમદ્ શ્રોપિલ્લજીના છત્યના ને કવનના અનેકવિય પાસાંઓ છે. શ્રીપદ્ શ્રોપ્ત હત્યજી તકેના પૂરેપૃષ્ટા ગ્રાતા હતા અને એ રીતે કશે'નના વિવેશક હતા અને શ્રે પણ પાત્ર શુષ્ટ પોલિયપૂર્ણ વિવેશક નહિંપણ છબ્લે થવેલ્લ અને શ્રાસીય દર્શન કરાવનાર વિવેશક-કવિ. શ્રીયદ્ શ્રોપીલેબ્લાઓ સાહિત્યની અનેક કૃતિઓ ઉપદાબધ છે.

આ કૃતિઓમાં દેન્દેર ચિતનની સાથે કવિશ્વલ્યા ચાકારા હેવા મળે છે. માત્ર શુષ્ક પરિત કિંદ તો સીમફ સમીવિબચલની અનેક કૃતિઓમાંથી આપણને માત્ર પરિતાઈ મળત, પશ્ચ આપણને મળે છે શાસ્ત્રને ક્લિતામાં રીતે હોવાની દિર સીક્ક્ષ સશીવિબચલની મત્રન કૃતિ સાત્ર કરિતાની રીતે સુલવા બેવી છે. વૃત્તી સુલ્વતી ક્લિતામાં એ રીતે એમતુ અને સ્થાન છે. એમની અનેક કૃતિઓમાં લાવાના વિકાસનો અને સમાજલ્યનનો કર્દનો પચ્ચાલ આવે છે. એ સમાજલ્યનની કૃતિઓ, ઇલ્લાએક એમતી અને સમાજલ્યનની કૃતિઓ કરે છે. કચારેક એમની કૃતિએ સમયના વિવાદા લખનની સમીશા એમની કૃતિઓ કરે છે. કચારેક એમની કૃતિએ સમયના વિવાદા લખનની સમીશા એમની કૃતિએ કરે છે. કચારેક એમની કૃતિએ કરે છે. કચારેક એમની કૃતિએ કરિતા ને ચિંદનની વિદલ કરેકીને સિંહ કરે છે. શીમફ સ્થોબિલ્યલ કરે છે, જેન દર્શનના દ્વાદા કરિ Poet Indoon in the light of Jain Darshan (Phinosophy) છે અને કલિવાની સાંશાસાથ ચિંદનને સ્થાન એમક ક્લિએમાંથી એમ સાંચે છે.

કેવિતા ને ચિતન આ ખનેનો સુચેખ વિલ્લ કોવે જ સાથી શકે છે. સાહિતપનો કોલિકાસ સ્ત્રને વિવેચન બલાવે છે કે આવો સુચેખ વ્યવસાલના સંબેચીમાં હોય છે. અગ્રેજી વિવેચક પ્રેક્ષી કવિતાની આપ્યા કરતાં કહે છે કે, " પ્રેસ સંબીલપાં વાલ કરે છે ત્યારે કવિતા અને છે." કોવતા કેમ જન્ને છે યા સાહિત્યુદ્ધિનું હેફ્યર રચાન શું હોય છે એ વિવેચનાનો સવાલ ક્રેજી ગયું છે. ઓળબુકિયની સહીતા વિવેચકાયી માહીને વ્યવસ્ત વ્યત્તિવ્યાદના વિવેચકાય માહીને વ્યવસ્ત વ્યત્તિવ્યાદના વિવેચકા સાહિતાના ઉદ્દેશના વિવેચકા સાહિતાના ઉદ્દેશના ઉદ્દેશન પ્રેસિયાન કહેના વિવેચકા સાહિતાના ઉદ્દેશના અપ્તરા સ્ત્રમાન સ્થાપ્ત સાથેના અને માનસ્થાપ્ત વિવેચકા સાહિતાના ઉદ્દેશના ઉદ્દેશન પ્રસ્થાપ પ્રેસિયાન કહેના છે તે વિવેચન

કૃતિના ઉદ્દેશન સ્થાનના પ્રેન્પ્યુંને જ્વાબ વ્યાપી શકતું તથી. આ વિવેચન કવિના છવતના કેટલાક પ્રસંધા, કેટલાક ખ્યાલા અને કવિમાનસમાં જ-મેલા સાવેદનોના પહેલા પાઢે છે, અને સ્થેત્ર ક કેઠ છે કે સાકિત્યકૃતિના જન્મ સાધા સંભ્રેપામાં થયા હશે અને એવા અર્થ આવા ઘટાની શકાય. આ નીતે બેલાં, કોઈ સર્જકની કૃતિમાં ચિંતન અને કવિલનો સુલલ હતા ત્યારે એતી વિવેચના એના છબતની આસપાસના વાતાવરણ અને જનમામાં હતાવેલા પ્રસ્થાનોથી શકાય સાધા માન

ત્રીમન્ યદ્યો વિજયજીના જાનનો આકર્યાં આપણું હો કોઈ નહ્યુંએ છીએ. આ આકર્યાં તે કિ અનેક સ્વરૂપ કાર આપણું સમક્ષ રજુ કરે છે. 'જ્ઞાનસાર'માં કિવેને આકર્યાં મળે છે. કવિના શાળોમાં કહીંએ તો ''સ્ફાઝાના પુત્ર ચાંતિકાસના કૃષ્યમે આત્ર તે અને તે પ્રોક ફાંત, અને એનો સ્વના થઈ સિન્દંપુરમાં, અને ગ્રાનકાર પૃષ્ટું શર્ધું દિવાલીના કિવેને. મેમના બને એનો સ્તના શર્ધ સિન્દંપુરમાં, અને ગ્રાનકાર પૃષ્ટું શર્ધું દિવાલીના કિવેને મેમના જ પાળોમાં કહીંએ તો ગ્રાનસાર એ પૃષ્ટુંને કાંચન આત્રનાના ચારિતરૂપી સ્વર્ધાની ચાર્ધ પ્રાણીમાં હવે. મે આંગ લાવનારૂપી પવિત્ર ચોત્રમાથી લૂપિ લીં પાયેલી છે. ચારે વારફ તમારાફ પ્યાણીના છે હોલ છે, સ્વતાચ્ય જ્યાએ અગાએ વિરેકરૂપી પુખ્યની માહાએ લાકલી છે અને આગળ આચાનસ્થય વ્યક્ષાની શરેલો કાંચકું તમુ કૃષ્યો છે. અપ્રમાદ નગરમાં પ્રદેશ કર્મને આંગલ સ્થામાન સ્થાન સ્થિત સ્થાનનાના સાથે છે.'

ં ત્યાનસાર ના અર્થ રપ્ય છે. અગ્નેટ્ઝમાં એને 'essence of knowledge' કહીએ તે જૈનદર્યાન્દ્ર અધું જ તત્વ ચ્યા કેવિતામાં કવિ શ્રીચરોપવિત્યહલ્લો પાતાની રીતે આપ્યું છે સમય લગ્નનો અને જેનામપોલ્લો પ્રકૃષિતા રિક્ષનની પરિપક્ષ લ્લા કવિતામાં છે અને એવી લોકોલ વાન વનનીત રવર્ષ આપણે મળે છે. કવિતા આપા કારતું આપોલન એવી રીતે કર્યું છે કે એમાંથી જૈન દર્શનનો અને એવી વિશિક્ષભાને પ્યાસ સહેલાધી આપી રીતે કર્યું છે કે એમાંથી જૈન દર્શનનો આપ્યો છે પશ્ચ સાથેસાય એ સાર એક્ષ્રી જ નથી આપોપી પશ્ચ કવિતામાં એ આપોપી પશ્ચ કાર્યસાય કાર્યસાય

રહીંસે વર્ષના ગાળા વીલી ગયા છે. અને ચે રીતે સમયના અવાહ ફાનસારની કિવતા યા ચિતાને સ્પર્શ કરી સાથો નથી. ત્રાનસાન્તુ સચ્દૂન ગાયું, કવિત્તમય છે, એનું આપું આયોજન સ્પષ્ટ અને સુરેષ્ય છે, અને એમી કવિલા ને અંતન આપણને સ્પર્શી તમા છે. સ્વરુ પંતિત લગવાનલાને હાનસારના અનુવાદ કર્યો છે. અને એમનું આ પ્રકાશન આપણા ઋજના જૈન સાહિતાની વિશિષ્ટ કૃતિ છે. સ્વ૦ પંડિત લગવાનદાસે સામાન્ય માનવીને સુલભ સાનગાર અનાવ્યો છે. એપના 'જ્ઞાનગાર' જીવનનુ દર્શ'ન કરાવી ભાષ છે અને એ શ્રીમદ્ ચંગ્રોલિવ્યજીની મૂળ કૃતિને ત્યાય આપે છે, અને ગેથી એ કૃતિની લલામણુ થતાં સ્વલાવિક આનંદ ચાય છે.

'ગ્રાનસાર' એ ચિતનાત્પક કૃતિ છે ગાને ગા ચિતન સાચા-ચ સાનવીને સુવક્ષ ભને એ રીતે જ શીપદ્ધ ઘરોપવિજયજીએ ચૈતન્યુ છે. હેન્દ્રકર્યનના ચિતનના પરિપાક આ કાન્યમાં ભેવા મળે છે, ગાને એ શાહક શાન્દ્રોમાં શકું વશું કહ્યું હવે છે.

શ્રીમંદ્ર ચંદોવિજન્થછ ત્યારે સામગ ગ્રાંતને સંવિષ્ઠ અને પલસ્વરૂપમાં આપવા માવતા હેઠે ત્યારે પસંદ્રભીને પ્રસ્તુ એપની સમગ્ર આવ્યો હઠે ત્યારે પસંદ્રપાની પ્રસ્તુ એપની સમગ્ર આવ્યો હઠે ત્યારે પસંદ્રપાની પ્રક્રિયાને અપાવ આપે છે, પણ એક લાકુમત્યનો ત્યારે સે સોમાં સંદ્રાવિજન્યાઓ છવનને સંદ્રાવ્યા સર્પો હિંધા ત્યારે એ વાત્રી કેઠી અંધ્યંત્ર મંબીર હઠી કેઠી અંધ્યંત્ર મંબીર હઠી કે અને એ છવનને લેડાસુપી સર્પો દર્શ છે એને એ છવનને લેડાસુપી સર્પો દર્શ છે એને એ છવનને લેડાસુપી સર્પો દર્શ છે એને સાથ્યા પ્રસ્તુપી કેમ્મત્રવા, નિર્યવત્ત પત્રિયા છે અને એ શીલે સાન્યસ્થાન શિક્ષ્યો આપનાલક્ષ્મને મીઠી વાલ્યો અને એમાંથી નીકળતો સંપીર અર્પ-અન્તેનું સુલગ્ન મિક્ષત હત્યાને સ્ત્રિયાને સ્ત્રિયાનો સ્ત્રિયાને સ્ત્રિયાનો સ્ત્રિયાને સ્ત્રિય

ગ્રાન્સાસનું નિસ્તૃત અલીકાન કરતાં માલુર પહોર તેઓના કેશનું મહાલખ્વાભ્ય સમક્ષ રમષ્ટ પ્રમાલ હતો અને એ ખ્યાલથી મળીક વ્યંત્રનું પ્રાપત તેઓના કેશનું ફાન-વ્યતુવાનો સાર વધુંત્તા પ્રાપ્તાસ્થારમાં અપ્રીક ભાગત સ્થારેક છે. આ ગાલક દરેક રીતે હોતાં સંપૂર્ણ છે અને એ આપી ફૃતિન એક લાગ્ય તારીકે સંપૂર્ણ રીતે રજૂ લાગ્ય છે. અલીસ સેપાનની આ ફૃતિ છે સેમ કહેવે મોડ નથી.

ગ્રાનકારનું પ્રથમ પૂર્ણાંછ. એમાં જૈનાવરું પતા સાંધ્ય વર્શીકે પૂર્ણ ' અવરધાતું સ્વરૂપ સ્ત્યૂ કરાયું છે. પૂર્ણનું સ્વરૂપ સ્ત્યુ કરતા તેલોસી જ્યારે છે કે પૂર્ણનું ક પુત્રની પ્રાતકરિ ભદાવ હેયા છે, તે તૃલ્લાથી કીત હોતો નથી, એમાં પ્રકૃષ્ણોની વપાયુંત્તા હોતો નથી. આપત્કલ્યમાં આત્માલાના કુળથી પૂર્ણ લેલોલા ગ્રાનીની ઇન્દ્ર કરતાં કેઇ લાવતી ન્યૂનતા તથી અને લાવતીની પૂર્ણતા કુકલ્યક્કલ ચંદની માફક શોહો છે.

પ્રયમ અપ્રક્રમાં રહ્યું થયો છે ગાદમાં પૂર્ણ હતો. ગા પૂર્ણ હતી ચારિ માટેના પ્રયાસે અને એ પ્રયક્ષોને કિલ્લુંકલ બીલ અનેક ગ્રન્ટકોમાં વર્ષો છે. સંશાયાર્થી બિનુત્ત સ્વતીશે માતવી પૂર્ણ હતાં ગાદ શવ છે. ગેથી ગાવી ગ્રાંકિએ પત્ર એટ ઉત્પાદ નથી કેતો, રહ્યે તેતે તેમ તથી કેલો, એ સાત્માં પદ્મ સંવેદો છે, એથી સુધ્યી છે, અને આ સુધ્યી કેલ્યુમાં લુધ્ય હતી. કેલો કર્યું પ્રથમ શવ છે અને વાલુંમાં પણ શૉલિટ્યી ગ્રહ્યું વહે છે. માનવીનું મન માળવે (માળવા દેશયા) લગતું હૈાય તો જોના ચિત્તની રિચરતા ન હૈાય, જેમી મનના ઘોડા પર કાળૂ ચેલવવો જો સુરકેલ વસ્તું છે. ત્રીલા અપ્યક્રમાં કવિશ્રી મનના નિગ્રહે માટે વિસ્તા માટે જેમાં કર્યા કરે છે. માનવી હવ્ય સુખની પ્રાપ્તિ માટે જે ગઢ ચિત્ત રાખી ગમે ત્યાં લાટકે છે. સાનવીના મનને લાટકનાની લાઢે કોઈ સીમા નથી અને એવું માનસ વહ્યું લાવ અવિસર ડોલાં ખાતું ચઈ લાવ છે. માનવી છવનના મુખ માટે તલસે છે, લગે છે અને નામી રિચરતા આવે છે લાવે એને આવાલ આવે છે કે એનું સાતું સુખ એમ પ્રેપ્ત લાવે સરકા કરવા કરે છે છે " "માં કેલ્ય રૂપ લીવા સમુવાર પ્રકાશ કરી વિકલ્યોયુરી ધુમાસએ જગાયી આત્માને માલિન કરે છે." "શહેલ્ય રૂપ લીવા સમુવાર પ્રકાશ કરી વિકલ્યોયુરી ધુમાસએ જગાયી આત્માને મીતન કરે છે." શિલ્યોયુરી પ્રમાણી જગાયી આત્માને મીતન કરે છે." માનવીની તૃપણ લગ્ન કે છે એના પશ્ચિમી માનવીની તૃપણ લગ્ન કે છે એના પ્રજ્યાં છે.

સાનવીનું મન થાસ્થિર થઈ વ્યાપોતે લાટકે છે એતું કારણ છે કોહ વાને કોહત્યાન. એ જ જીવનની સ્થિરતા માટે જરૂરી છે. 'અહ" અને 'તમાં' 'હું" અને 'તમાંકુ" જીવનમાં અનેક વ્યનિષ્ટો જન્માવનાર આ જ તત્તો છે. એને વ્યક્ત કરીય એ થયે, અને જનાલમાં સ્થાર્ય વધારનાર આ જ તત્તો છે. કરિની લાધામાં કહીએ તો જેમ આકાડા કાંકલથી સૈપાતું નથી તેમ ગેહહવાતાલાથી માનવી પપાર્થી લેવાતા નથી. તેને આત્મા દારીરન જન્મ, જવે ને મૃત્યુના નાટકથી થેદ પામતો નથી. ચોહતાથીનું વ્યાપ્તિય માર્ચ પ્રતિ હૈય છે અને પરાંત્રઓ મુંબલા થતી તથી અને એની બુહિ વિક્રસેલી પારંચ છે.

આત્માના અભિટોનો ખ્યાદ ગ્રાનથી અવે છે અને ગ્રાહનો ત્યાં ગ્રાન જ જન્મારી શકે છે, અને એથી કરિઝી કહે છે: ' જેમ હુકર દિશામાં અન્ય સ્થય છે, તેમ અગ્રાની અન્ય સાથ છે તેમ ગ્રાની ગ્રાનમાં. ' આ ગ્રાન એર્ડરે માને લોક લોક તેમ અંગ્રાને અન્ય સાથ તેમ અંગ્રાન અંગ્રાન તેમ પણ ત્યાન અંગ્રાન અં

સાશું નાત એટલે જગતને માન્ય પ્રકૃત્તિ નહિ પણ ગાતમાની સાચી પ્રકૃત્તિ. ફાર્ની પીરાં ભીર હિલ, ન્રાનીને મનતા તરચે ન ચાય, એની ગાતમાની અવસ્થા ઉત્નત હેય અને છનતમાં એકે સસાયા કેળવીકો હોય. આવા ન્રાનીની દશા 'ત્રમ' હોય છે, એતામાં નપૂર્વ ગ્રાંતિ હોય છે અને એવા ન્રાની 'ન્રમ્યુય સર્પના વિખ્રતા તરોના તર ખળતા તથી અને એપની અસર વિષયમાં ગ્રાંતિ જન્માવાની શ્વાય છે અને એ ફોસે ગ્રાંતિ ફેલાવે છે. સાંગું ગ્રાન માનવીને સાચી શાંતિ ગાંપી જીવનને ધન્ય બતાવે છે. ફાની સમ તાના બાસ્કર સમાન છે અને ગ્રા સસતા ઇન્દ્રિયા પર જય મેળવવાથી ગ્રાવે છે.

સાથા જ્ઞાની ઇન્દ્રિસ્ટરન અને ત્યાગી હોય છે. ત્યાગની લાવના લાગૃત કરવી શે મોટી વસ્તુ છે. જ્ઞાન ત્યારે સ્વાર્ચ બન્માવે ત્યારે એ વિશંધક પેકા કરે છે. જ્ઞાન ત્યાર કરીને સાવવાની વસ્તુ છે. એવી આધુનિક જ્ઞુલમાં વિજ્ઞાનક સ્વાર્ચ ઉપયોગ્ધ જીવત વિષય ખાનાયુ છે, યુલને અનિવાર્ય બાનાયું છે. નિદ્યાને વિકાસ કર્યો પણ એની સાથે માનવીના સાચા ગ્રાનના એની લાગભાવનોના વિકાસ વ વધા માં પરિસુધે ભવતમાં જ્ઞાન-વિગ્રાને મોટા લેડો, કરાશે, યુલી બન્માઓ, બે માંચ મહર્ય માટે હતું એ શાનનો સંકાર માટે જમીલ વધી, કાશયું કે તેમાં લાલની લાવના બ નથી.

સાયા ત્રાનીને સખતા વહેલી સી છે, સમાન ક્ષિયલાવાએ સવાએ છે અને એકુ આતમાંદ્ર તેવર પ્રકારે છે અને એ સાંકુલ્વમાં રાવે છે. આવો સાથી એ રીતે શાંતિને જન્માને છે. એકુલુ રાન જ નહિં પણ ત્યાવની લાવના જન્મવનું ત્રાન કરવાલુસાંતિ છે. અને તેની સાંદે કિમ્પોને તેવા લેકો તેક્ષ્યો, એવા કેલ કિમ્પ પર લાવ પૂરે છે. કનિ કહે છે: "દીલા માટે લેલાની જરૂર છે તેવ પૂર્વ ત્રાની પણ અલ્કુલ ક્ષ્મિયાની અપેશ, રાવે છે" કનિતે એકુલુ ત્રાન પાત્રન નથી અને એવી સ્પષ્ટ કરે છે: "આદ્રસ્થિયાત લાવને આપણા લાવીને જેવા વ્યક્કારમાં કિમ્મોના નિર્ધ કરે છે તેવેલા સુખતાં કેલિયો તાપ્યા કેલાયા દ્વિત્તે કરે છે: "પહેલાં ત્રાન મળ કિમ્માં એ સાથી વસ્તુ છે. સામેપ્યાર્થક લાવો કેલલા પાર્ટિ એક સમસ્યા પ્રમાદ નિયા પ્રયત્ન કરવો હર્મોં એ, અને એ માટે કિમા નરફારે છે.

સાગ્રા ત્રાનને કિંઘાના કેલ થવાં આવશે અને પણ તૃષ્ટિ અનુભવે છે. સાચું ત્રાન અભિમાન નથી બન્માવનું, પણ એ સાંગ્રાસ્ત્રા સ્વપ્યને ગુલકુ પાલે સમ્મચનિટ પેદા કરે છે માને આ દિવશી આવશે છખાને વિસ્તાવે છે. એ ગ્રાન સંતીય ન બન્માવે એ ગ્રાનનો કેલી અર્જા નથી અન-કિંપાના સુખેળ કેચીનો ચેલ કાલી નાખે છે, અને એ સ્તીપચૂર્યા ગામતત્તું લોકન્ય કુમાવે છે.

સાચું ફાન આરમસંતીય પેદ્રા કરે છે અને એ કર્મોથી હૈપાતો નથી. એ સંસાર પ્રત્યે અતુરાસ ધરાવતો નથી પણ એનાથી નિર્દોય રહે છે. સંસારીઓ સ્વાર્થી દેવા છે. સાચે ગ્રાળી સંસાધીને સમાછ એનાથી દૂર લાગે છે અને એ નિલનંદમા મસ્ત હોય છે. માનવી નિર્દ્ધેય અને એક્ટ્રો શુદ્ધ ધ્યાનની લૂચિકા પર લાય અને એની સાચી દિપ્ટેના વિકાસ ચાય.

સાતવીના આવો વિકાસ થતાં એ નિસ્સૃદ્ધી અને, એનામાં ક્રોઈ અંતની ખેઠી જંમના ત તરે. રહેલાં એ-જંમલાએ ન્દરબ્રાએ સાતવીને વામાણા અનાવે છે. અતિપંત્રિત વ્યવહારની દુનિયામાં ક્રસ્મીનં હંતાની પ્રશાસત કરે તો એમાંથી અગ્રતીલ જગ્ને તહિ તો શું યાપ? સાચું રાતા માળવીની એમાંનો સ્થામિત કરે છે, સાચે ગ્રાની એવો નિસ્પૃદ્ધી હોય છે કે પૂત્રી એની પશારી અને છે, ક્રિણા એની ગ્રાહ્માર અને વન એનુ તર અને છે. 'પારદી આશ સા નિસ્પૃદ્ધ' એ આવાનુ સુગ છે અને પારદી આશા અનેક દુઃખા જન્માવતારી છે અને એશી નિસ્પૃદ્ધી માનવી જ સાચો સુખી હોય છે

જગતમાં નિલ્સ્કૃષ્ટી માનવી સુનિચો જ હાય છે. સુનિચાનું જવાતના તત્ત્વને સમ્યા-સ્વરૂપે નાવવામાં છે. રાખ, તેવ અને મોહંક્ય દોષનિવૃત્તિ એટલે સુદ્દગઢામાં યોગોની અધ્યાપાર પ્રવૃત્તિ અને એસ થીનનું નામ મીન. આ કહ્યાએ પહેલેલ માનવી ચીન્અંધીર હોય છે અને એની ક્રિયા ગ્રાનમથ હોય છે

સાયું મૌનત વર્ત્મ છે સાચી વિદ્યામાંથી. અનિત જુદ્ધિ નહિ પણ તત્વણુદ્ધિ. આ શુદ્ધિમા રાગતા માનવી માટે વાક્ષપુટ્તા નથી, આદી શુદ્ધિમા પ્રમાટ કે ઘનદમાટી નથી, આ શુદ્ધિ 'સંગ્રદના કંદોલ જેવી લક્ષ્મીની, વાગ્રુ જેવા ગ્રાણુચ અને લક્ક જેવા શર્શાની' અનિસતા શિવરે છે એના જીવનનાં મૂલ્યા ગ્રહ્શાય અને કેહેનાં આક્ષ્યું સુધ્યા પ્રમા આતમાતા આક્ષ્યદ્વામાં રાગે. ગેલી ગ્રહ્માન્યુપી જાધકારનો નાશ થાય અને વિદેશણુદ્ધિ જન્મે.

વિવેક એટલે છળ ને અજીવનુ લેક્સાન, સાચું ત્રાન માનવીને સારાસાર સમન્નવે. વિવેક આવે એટલે ઇચ્છા, સુરસો આદિ વિકાશ લાગે અને આત્માના શુદ્ધસ્વરૂપને એ સેવાપો, સાચી વિકા વિવેક જન્માવે, જેમારી લિદ્યા ગવાં પેદા કરે અને એમાંથી આત્માન અન્યવાન, પ્રવાસો શયા, સાચી વિદ્યા રાગ ને તેવ ન કેવાવે પણ માધ્યસ્યભાવ દેવાવે. રાગ અને દેવથી કર્યો જન્મે પણ માધ્યસ્થ્ય લાગ સમાનવા જન્માવે. ત્રાની પિતાના ત્રાનવી પ્રયાસાની આશા રાખે એ જ એની નિર્વળતા, સાચો ગ્રાની કર્યની લીકા નાનું અને સ્વેન સાંતરા એ એટલે એના સ્વેન સ્વેન સંતરા અને તેવ સંતરાના એ એટલો, અન્યાર્થ તેવા સ્વાસ્થ્ય સ્વાસ્થ્ય સાર્થ માર્ચસ્થ્ય સ્વાસ સ્વાસ્થ્ય સાર્થ સાર્થ સાર્થ સ્વાસ સ્વાસ્થ્ય સાર્થ સાર્ય સાર્ય સાર્ય સાર્થ સાર્થ સાર્ય સાર્થ સાર્થ સાર્ય સાર્થ સાર્થ સાર્થ સાર્થ સાર્ય સાર્

એમ.માં જન્મે નિર્જાયાત, આયુનિક માનકાશાસ સર્વ દોયા-પૂર્વીએલ મૂળ બીજ પ્રયંતિ લેખે છે. પડી સાચા માનવીતે 'જાણવા ચેંગ્લ વસ્તુને ફાન વહે માણા માનવીતે માં હુપાવવાતું હેતું નર્મા આત્માનમાં મસ્ત માનવીતે લાયરૂપ સર્પો લિવડાથી શકેલા નથી. મૂંઠ પુરુષો લચરૂપ વાસુ વડે ઝાકડાના રૂની માક્ક ઝાકાશમાં લગે છે, અને સાચા રાતી નિર્ભય રીતે જીવે છે.

આવા સાચા ગ્રાંભીને પ્રશંસા સ્થાર્થી શકતી નથી. સાચાન્ય ક્ષ્મત છે કે માનવી ગયી વસ્તુ જરવી શકે છે પણ પ્રશંસા-પોતાની સ્તુતિને જરવી શકતો નથી. જે માનવીને પ્રશંસાના-પ્રસિદ્ધિનો પોત જન્મે છે તે પડે છે, અને એથી જ કવિશ્રી કહે છે. "પોતાની પ્રશંસાપાં રસતો માનવી મોતકમાં ફળી લાય છે." ગ્રાનતું અદિવાના જરવતું સુરકેલ છે અને એ ગ્રાંનીને પછાડે છે. ગ્રાંન જન્માં છે નક્સાના પણ વ્યક્તિઓ લી. આવા માનવીની તત્ત- દરિ વિકેશની ક્ષેત્ર છે કરિયો આ સ્થાને આદ્યાર્કિંગ તત્ત્વર્કિંગ લેક પાઢે છે. સાન્તિક દર્ષિ જ માનવીના જવનને વિકાયલે છે આદ્યાર્કિંગ સી ફુંકર લાગે અને તાત્ત્વિકને તે સ્ત્રી લિશ અને મુત્રની હોંક્લી જેવા પેટલાળી લાગે છે. તાત્ત્વક માનવી અહારના કેંગાંવો પર ભાર મુક્તો નથી પશુ ગ્રાંનમાં જ સર્ચે છે.

આવી જ સાવી સાચી રીતે સફ્ક છે. સાચે રાવી લોળ-વિશાસમાં રાચતા તથી પણ ક્ષ્મક્ષ્યમાં રાચે છે, સફ-અસફનો એ નિક્ષુંય કરે કે અને એવી આ સમૃતિ આલળ દુમ્પલી સંપત્તિનો ક્ષિમાબ નથી. એના અંતરેખ સાચુની સપ્ટિ ક્ષ્માની સપ્ટિમી અધિક છે. ક્ષાત કર્યન અને ચારિત્ર એખ ત્રસુ રતો પાંધેલા સનાવી લેલીખ સેળવે છે આ દરિ માતવીને કર્યના પાર્વિસ્તાન તેને અને કે અને એની વ્યવતાની લીલા, શોકાસોશ, સુખદ્ધામ, કર્મ, વિચમ બાતે એને સ્પર્ધી કહતી નથી. લેટની પીક એવી કર્યો સ્વાન છે. અને એ ક્ષ્માની સ્થાન છે. અને એ ક્ષ્માની સ્થાનમાં આવી આપાર્કિત કેળવે તો. એ પહે. કવિચી કહે છે: "જે માતવી પરિશામને વિચારતો હકામાં સમસાવ કેલાને છે તે સાનાનંદ્રય મકરતના લોગી બને છે."

ક્યાયા માનવીને છવોનો કહેલ રપથી શકતો નથી. સંસારના વિવસ માર્યો, તૃષ્ણા વિસ્થામિકાયો, ઇન્ફ્રેન્ચમ-રોક્ક-રોક-રોક-મહતર વચેરે રપથી. કાડતા નથી. કાડમન્ત દારાને પામીને આવે સાની સંસાર નાડકમાં રાચતો નથી સંચારના ચાર્નના થોના સંસારના માનવ ત્રાનનો પ્રયાસ કરે, ચા રીતે પ્રયાસ કર્યો ળકા એનામાં સાચી વિષ્ટે આવે અને કેના પશ્ચિપ્ર કોને સંસારના સાથી ખ્યાલ ચારે અને કે નિસ્પૂક્ષી અને.

રમાવા તિરમૂહીને લોકાહરની પરવા હોતી નથી. આક્રવરિત પર લાર નહિ પણ સ્ત્રાંતરફાઢ્ડી પર લાર ગ્રુકાય તો જ છવન ધન્ય અને, અને એ આત્માની સાધીમાં સચે. સ્ત્રાત્માના અવાલ્યા એ મદા રહે અને એથી આંતરિક કુપ એ ચેવને.

... , કુમાવા સામીઓની દર્દિ શાસ્ત્રહતાનથી વિકોશી હોય છે. લધા પ્રાણોગોને ગમંત્રક્ષ છે, ટ્વેને અવધિતાનરૂપ ગ્રહ છે, સિલીને કેવલ ઉપયોગ ચ્હારૂપ છે, અને સાધુઓને શાસ્ત્રુપ ગ્રહ્યુંએ છે. કેવલી લાવાનની શિક્ષા એ જ ગાપણું સાધન શાસ્ત્રો રૂપી ફીવો આપણા ગ્રાપકાર્યસ માર્ગ પર પ્રકાશ લાખે અને ગાપણા જીવનને ગજવાને શાસ્ત્રો આપણી દર્શિ વિકસાવે અને એથી સ્વેચ્કાચાર લાવ, અને એમાંથી લેલલકૃત્તિ ન વર્ષે પષ્ટ્ર સાચી દર્શિ શાય અને એ અપસ્થિહ કરતાં સાનવીને શિષ્યવે.

સાચું રાખ સંપત્તિ માટેની હાંખાન નહિ પણ લાગણત્તિ જન્માવે. કાંઈ પણ વસ્તુ માટેના મેહ ફૂર કરવા જેવી વસ્તુ છે-રાખમાત્રમાં આસહિત અને નહિ કે સાનનાં સાધનાં. ઉપકાશું: પરના મોહ અનિષ્ટે! જન્માવે છે. પરિગ્રહે ત્વર ચોઠશે મોહફાત્તિ ઘટે અને એથી સંયમની શહિ થાય. શાસાહું પકન એ લ્લુદી વસ્તુ છે અને અનુલવ એ બુદી વસ્તુ છે, અડ લવ વિનાની વાળી એ માત્ર પોપાટિયા ગ્રાન બસબર છે. એથી કેવિશી કહે છે: "ક્ષ્યની કરપના શાસમાં પ્રવેશ કરે છે, પરંતુ અનુલવરૂપ છસ વડે શાસાહીરના આસ્લાદ કરનારા શેહા."

અમ અનુસવની પ્રાપ્તિ યોગ વિના ચલી નથી. યોગાની વ્યાપ્યા એટલે 'તોફેલ્ય યોજનાવ યોજા !' પાંચ યોગો, કે કમંચીલ અને ત્રણ ગાનવોળ. યોગ અનુસાને જન્માને અને એનુ અંતિમ રૂપ યાલ. યોગ એટલે શાસ્ત્રોક્ત કિયા અને શાસ્ત્રવિદ્ધાન ક્રિયા ઉત્પાદ પર્યાવે અને એથી અનેક અનિશ જન્મે. [ચોલ પરનું શ્રીમદ્ ચરોાવિજ્યાભનું સાહિય અતિવિદ્ધ કે અને એ સ્તરાંત્ર લેખ માગી લે કે.]

ચાંગદથા માટે લાલપુત્ર જરૂરી છે. જાહુંકારનો તારા એ ગ્રુખ્ય વસ્તુ અને ભાવનથી બસાન ટળે અને સિલ્યાલની વાસના વ્યવ. એના સાટે પૂત્ર જરૂરી છે અને કૃતિથી કહે છે કે, "ક્ષમારૂપ ફૂતની માળા, વ્યવહાર અને ન્દ્રિય એ વસ્ત્રો, ધ્યાનરૂપ ઉત્તમ આનસ્ય, સાનરૂપ અગ્નિમાં શુષ્ત ચંક્રવ્યારૂપી ધૂપ, સત્યરૂપ લંટ વગેરથી સુક્ત માનવીના હાથમાં માશ્ર છે." મુહંસ્યો માટે દ્રવ્યપૂત્ર અને શાધુ માટે હાલપુત્ર જરૂરી છે.

પૂર્ભ ધ્યાનને જન્માંવે છે અને ધ્યાન સેઠનો નાશ કરે છે, આત્માને એણખાવે છે. અસ્થિર મનને સ્થિર કરનાર ધ્યાન આદ્ય ઇન્ડિયને અનુસરનારી વૃત્તિને અવરાયે છે અને સાનાનં દ્રશ્યો અમલમાં આત્માને લીન કરે છે. જેણે ઇન્ડિયોને જીવી છે જેને તમારમાં સ્થિર છે તે પ્રવૃત્ત સંશ્લો છે. ધ્યાનમી સાથે વપ જરૂરી છે અને વપ કરોને તપાયે છે. ધનના અર્ધી રાક-વાપ સર્કન કરે એમ તત્ત્વાનોનો અર્ધી વપ કરે, એના માટે લપ સુરેક વર્ષી, "જે વપાયો ગ્રહ્મકાર્ય" થયે, હત્યાં લમ્યાનં તમ્યુ હ્યા ઘણ, કરાયના તાર્ધ ધામ અને વીલસગર્યી આદ્યા પ્રત્યો તે શુદ્ધ કર્માયા."

તપરનીમાં યા અધ્યત્યવૃત્તિ કેળવનાર ગ્રામી સર્વ વધાને આદ્રિત હેાય છે. ધર્મપાદથી સર્વ વધા બદ્યી શકાય અને એઘી માનવી પરમાનંદ પામે અને એના બધી રોતે ઉત્કર્ય થય.

ભત્રીસ અપ્ટેકામાં આત્માના વિકાસકંત્ર ભલાવ્યા બાદ કવિશ્રી ચરોાવિત્યછ ઉપ સંકારમાં જ્યાવે છે કે—' આ ગીતે લખને 'આપ થયેલ સુનિ શુક્ષ આવિત તથા મુક્તિક્ ગ્રાનસારને પાત્રે છે. ' એવા સાનવીના વિકારી લાવો લાવ છે, ગ્રાનસાર જે ક્લેપોર્ન લય કરે તે કર્યો પુનઃ ઉત્પન્ન ન ચાય. એથી શાસનાં ક્રિયાર્નાહેલ ગ્રાન અને ગ્રાનર્નાહલ કિયા પર સાર મૂકવો નથી પણ ગ્રાન-ક્રિયાના યોગ પર લાર મૂકવો છે. ગ્રાનશૂન્ય ક્રિયા અલ્પ પ્રકાશવાળી છે અને પૂર્ણવેત્રતિરૂપ ગ્રાસ્ત્રિ એજ ગ્રાનનો ઉત્કર્ય છે.

પ્રત્યેક વસ્તુને રજૂ કરવા માટે શ્રીમદ્ ચહેલિલ્નાજીએ સરળ અને કવિતનમ્ય શક્તિને ઉપયોગ કર્યો છે. આ અમાં અષ્ટકામાં ઉપયોગ દાત વસ્તુને તેઓ રજૂ કરે છે અને પ્રાચીન સાહિત્ય પસ્તુ એમાનું પ્રસુત અને વસ્તુને તવી રીતે રજૂ કરવાની એમની લિકની પ્રતાિત એમાંથી આપણુને શાય છે. તત્ત્વચિતનને અને એના હા વિષ્યાને માક શ્રીકાના કુકોમાં રજુ કરવો એ સહેલી વસ્તુ નથી. જ્ઞાનને કવિતનના ચમારા સાથે, શાસ્ત્રીય સર્શિયો રજૂ કરવો એ સહેલી વસ્તુ નથી. જ્ઞાનને કવિતનના ચમારા સાથે, શાસ્ત્રીય સર્શિયો રજૂ કરી સમસ્તર જીવનના જ્ઞાનોના સામ કાર્યક્રી અદ્યોગિલ્લજીએ આપી ફ્રીયો છે.

જીવન ત્યારે ઝડપી અન્ય છે. ત્યારે જીવનને અવલાકવાની દેશમાં નવા ત્રાન-વિજ્ઞાનના ઉપયોગ થઈ રહ્યો છે ત્યારે ચિંતનના એક સત્ય વરીકેની ગા કૃતિ આપણા છવનને ધત્ય બનાવે છે. સર્વ વસ્ત્રું વસ્ત્રું વારા સાથી આ સાહિત્યકૃતિ કવિશ્રીની અનેક પ્રસાદીમાંની એક પ્રસાદી છે. આ પ્રસાદી સાટે અવિજ્ઞાનની જરૂર નથી. ઉપાધ્યાય શ્રીયશે(વિજયજીએ માત્ર પંડિતો માટે આ કૃતિ નથી રચી પણ સામાન્ય ૯નેં: માટે રચી છે અને ઉપમાચ્યા–ક્લપ્રેક્ષાએ અને કાવ્યાહંકારા હાસ આપાલી સમગ્ર કલ્પનાનાં ચિત્રા રજ કર્યાં છે. જ્ઞાનસાસ્ત્ર ચિંતન એટી ડાંખું ળત્સ નથી પણ કવિત્વથી ચમકતું અન્યુ છે. થતે એ આપલી સોંદર્ય દર્ષિ આંતર દરિની સાથાસાથ પીકરે છે. 'ત્રાનસાર' આપલા જૈનર્શિતનના વારસાના ખલ્લના છે. એમાં સર્વજાહી અવલાકન અને છવન પ્રત્યેની આવંદષ્ટિ છે. માસના માર્ગના જાલ્દા આપણી સમસ રજુ કરતાં આ કૃતિ એના વિકાસ માર્ગ અતાવે છે અને એ જ માર્ગ આપણા ક્રહ્યાણના માર્ગ છે. આ માર્ગ અતાવનાર કવિ શ્રીયશે(વિજયભા આપક્ષે ત્રભી છીએ. 'શિવમસ્ત સર્વ જગત:' એ ભાવનામાંથી જન્મેલ સાહિત્ય માનવજીવનને ઉલલ અને સંસ્કારી અનાવે છે. એ હંકોકતને કવિશ્રીની પ્રતિઓ વાજળી ડેરવે છે. અને કવિશ્રીના ગ્લા વારસાને જીરવવાની લાકાલ આપણે . કેળવવાની છે. સાહિત્યનાં સ્વરૂપા અદલાય, કથનપત્કતિ અદલાય, પણ કવિની પ્રસાદી તેા નદીનાં તિમળ નીર સમાન છે અને એનાથી આપણાં પાપા ધાવાઈ જાય છે

कैनसिद्धांत अने संस्कृतिने।

સાચા પ્રચાર

લેખક પુત્રય મુનિસજ શ્રીમાન મહયવિજવછ

પ્રાચીન જળવામાં કાઈ પણ સિલાંત કે સંસ્કૃતિના પ્રચાર ઉપરેશકાના ઉપરેશ અને આચાર-વિચાર કારા ચેતો પણ ગર્યાંચીન જગતમાં યંગ્રંગકનો કુચ આવતાં કાર્યો, સ્તિમા, રેડિયા વગેરે કારા પણ કાર્ય છે.

વીશાના ત્રશ્કે તારમાં એક હેલિ, એક કહક, એક મધ્યમ એમ હેલ તો તે ગેસ્ટ્રી લાગે અને સાંસ્થાનારને કંટાંગા જાપે. પશુ તેના હ્લાવકાર-ઉસ્તાહ તે ત્રફે તારને સમ કરે છે ત્યારે તે સુંદર સરોહો હવ્યક કરે છે. ને તેના રસિક્રોને સહ્યારે છે. તેમ ઉપદેશાના વિચાર, વાલ્ફી અને વર્તાનરૂપ ત્રણે તારમાં ત્રે કેશ્ઈ હેલ્કા-પાચા હ્રોય, ક્રેશ્ઇ કઠક હેલ્ય તેને તેની અસર આમ્બબતા પર નહીંવત સાથ છે પશુ વિરસ્થાર્થી થવી નથી.

તો પછી ઉપરના શુધુ વર્કત અર્વાચીન વળતના વાંત્રિક સાધના હાસ થતા પ્રચારમાં ક્લાચ લાહાલિક માંત્રિયથ દેખાતો સ્ત્રેય હતાં તેનાં પશ્ચિમમાં મને સ્થિરતા તો ભાવિ ઇતિહાસ જ બાહશે.

" हातकियाच्यां मोहाः" એ મહાન સહ્ય વિચાર, ત્રાણી અને વર્તાન્દ્રય ત્રણે તાર સમ માખીને જૈન પૂર્વાસપોંએ આસલ્બતાના ફુલ્યમાં સંપ્રસારે દેશવાના પ્રયત્ન કર્યો છે. તેની કાપ "પદી પેટાળે સાત, ફેટે પણ ફીટે નહિં," છાલું શીલું ચઈ જવાં કર્તા લહે તાછ જ સાત ન હૈય તેમ આગે લીતિ દિતાનાથી પાંચરેલા પંત્રસાદનો સુગ આવશ કર્તા (સારિમાં ત્રપે તે ચાંચો) હેલું પશુ ખતુલવાય છે. એના સામાન્ય આદર્શ' આ ચરિત્રનિયક મહાપાંચાય શીધોશીવિત્યજીયાં પદ્ય રેખાય છે

એટલી કે ગ્રાન અને કિયા એ લહેને સમતુલાએ સમ્મીને કામ લેવામાં આવે તો "વિચાય, વાશી અને વર્તાન " એ વહે તાર સરવાના તેકે તે કુક્ત સંગીત (સંસ્કાર) મળે. પણ આજે તો કેટલાએક ગ્રાનને સુખ્ય કરીને કિયા હીતી હૈયા તો ચાલે એમ કાઠે છે. ત્યારે કેટલાએક ક્રિયોને સુખ્ય કરીને ગ્રાન એમ્યુલન્યું હૈયા તેને અને એમ માત્રે છે તેનો તેને તેના ક્રિયોને માત્ર માત્ર માત્ર પ્રાન્ત પાત્ર કરે છે ને તેમ કરતાં વાદમા જેમ શબ્દોની સાત્ર માત્રી મો પ્રાન્ત કરતાં વર્ષો સાત્રોને પ્રાપ્ત માત્ર કરતાં વર્ષો સાત્રોને પ્રાપ્ત માત્ર કરતાં વર્ષો સાત્રોને પ્રાપ્ત કરતાં વર્ષો સાત્રોને પ્રાપ્ત કરતાં વર્ષો સાત્રોને પ્રાપ્ત કરતાં વર્ષો સાત્રોને પ્રાપ્ત કરતાં કરતાં વર્ષો સાત્રોને પ્રાપ્ત કરતાં કરતાં વર્ષો સાત્રો સ્થાન કરતાં પાત્રો પાત્ર કરતાં સ્થા કરતાં સ્થાન સ્થિત સ્થાન સ્થિત સ્થાન સ્થિત સ્થાન તેઈ શકતા નથી કે માત્ર ફાનને સાતનાર ક્ષતકેલ્લી-ચૌકપૂર્વી પણ ક્રિયાહીન થતાં નિગાદમાં ચાલ્યા અયા. સાહ્ય નવપૂર્વી પણ ગાહાની કહેવાયા. વસ્તુત: " જ્ઞાનસ્ય વર્સ્ટ વિરકિ: " વગેરે ચિરંતનાચાર્યોનાં વાકચો તથા—

भारुदक्षुर्मुनियोगं, अयेद बाह्यक्रियामि ।
 योगारुद: शमादेव, शुश्करवन्तर्गतिक्यः ॥ ⁷⁷

એ મહામહાયામાય શ્રીયશોવિજવાના વાકવને લહી લવ છે. અને ક્રિયાવાદી:-

" દેશ આસંધક કિયા કહી, સર્ગ આસંધક જ્ઞાન; ગ્રાન વિના સર્ગ કિયા કહી, કારાકસંગ ઉપમાન, "

એ વાકચને અહી જઈ સ્વ અને પર એમ ઉપાયત હિલ મગાડે છે.

" દેવ, ગુરુ અને ધર્મ" એ ત્રક્ષિતું કુંદર ચારાધન તો મુશ્લં કાર કોચ તો અ ક્રાર્ટ શકે અને સંસ્કાર તો દેવ, ગુરૂ અને ધર્મની આરાધનાવિધને જ્યાબનાર શાનથી શાય. તે રાત દેવ, શુરુ, ધર્મની આરાધના વિષયને જ્યાબનાર શંધના અભ્યાસથી શાય

જેન સતમાં તો તેને માટે 'દેવવંદન-લાધ્ય, સુરૂવંદન-લાધ્ય તથા પચ્ચાયુખાયુ-લાધ્ય ' છે, તેના અમ્યાયાથી અહેરા દેવપાંદિરમાં દેવી રીતે હતુ તથા વર્તાનું તેઈ એ, કેટલી વસ્તુ નિવારનો તેઈએ વચેર વધુંન છે. 'સુરૂવંદન લાધ્ય 'માં શુરૂ પાસે કેવી રીતે હતું. તેમના ક્યા પ્રકારે નિયમ શાસ્ત્રવેણ, વિનય કરવાથી કે ત કરવાથી શું લામ કે તુકસાન શાસ તે વચેર વિષયો, વધુંન છે.

દ્વાન, શિયાળ, તેપ અને લાવરૂષ ધર્માં આરાધન કેવી પ્રતિજ્ઞાઓ કરવાથી કાઈટાકે? શા માટે પ્રતિવાગના કરવી નોઈ મીં? વચેરે વર્ષા ' પચ્ચકપાણ લાખ્ય'માં છે. આ ઘશે.તે: નિષય પ્રતિભાસ સાન તરીકે અલ્પ્યાલ કરવાથી વ્યાસર સાન વિસાય કંઈ ખાસ લાભ ઘરો નથી. પશું એ તાન આત્યપરિલ્યુ થતાં તત્ત્વસ વેદન તરફ લિખ્યંત્રમન કરાવે ત્યારે જ તેને! સાથે! લાલ લદાવી શકાય છે.

જે કે વિધિમાર્ગી! વ્યાર હોઈ મેન સમાનમાં વર્ષ, દશેક સમાનમાં આવનો દિયાવાદી વર્ષ માર્કામળી કિયામાં જ રહા છે. ત્યારે ગ્રાનવાદી વર્ષ વિધિ વ્યાર્ગ ધરો કોઈ એ અને તેમ વર્ષો એઈએ તેમ કહે છે. પણ પેતી (ત્યાં ફે કહતાંદીન હોય તેમ) તાન કિયામાન વ્યાર્થ છે. માટે ગ્રાનવાદી વર્ષ ગાન હોયાથી સ્વાતુવવાર્થ કે સુલિત 'નિધિમાર્ગ'ને આદરે અને તે વર્ષંત્રમાં સુધ્યા પૂર્વક પોતાની પાછળ પેઢા એની ક્રિયાવાદી આસ્થળતાને કોર તે હોય રૂપ પર્ચની આદિવાદ ચાહિય ગ્રાફ્યન અને કરિ તમાં નાય આસ્થળતાને તો " દુનિયા વૃત્તની હૈ વૃદ્ધાનેવાદા ચાહિય ગ્રાફ્યન એ નિરેશ દ્વારા પ્રદાત ત્રી જ હોય છે. તો તેને ગ્રાફ્ય દિશાએ વાળવાને વિવેકપૂર્વક અને નિરેશ દહિત પ્રયત્ન ગ્રાનવાદીઓએ જ કરવા સ્ત્રી

પૂ. ત્યાયવિશારદ ત્યાયાચાર્ય મહે!પાધ્યાય

श्रीभद्द यशाविकय्थ भढाराक

ક્ષેખક . પરમપૂત્વ્ય મુનિરાજ શ્રીમાન્**શ**ક'કરવિજયછ [લેખ ન', ર]

સ'વત ૧૬૮૮માં દીક્ષા ૧૭૧૮માં વાચકપાવી અને ૧૭૪૩માં સ્વર્ગગમન દ્વાવી, આ મહાપુરુષના સત્તાસમય લગભગ સ'વત ૧૬૮૦ થી ૧૭૪૩ સુધીના નક્ષી થય છે.

શ્રીમહાવીરમણની પહેપર પરાએ ચાલતા આવેલા તપાગામમાં લાસતવર્ષના પ્રખ્યાત ખાકશાહ અધ્યત્તને પ્રતિએક કરનાર સુવિખ્યાત વ્યાદૃક્ષુક આવાર્ય લગ્નવાત્ શ્રીમદ્ વિશ્ય-દ્વીરસ્ત્તિર કથા. તેમના સિખ જમાધ્યાય શ્રીક્રિત્યાનુવિત્વાભ્ય માન્નિ, તેમના સુખ્ય શિષ્ય શ્રીક્ષાસ્ત્રાલિત્યભ્ય માન્નિ, તેમના સુખ્ય શિષ્ય શ્રીત્રિત્યવિત્યભ્ય માન્નિ, તેમના સુખ્ય શિષ્ય શ્રીત્માંવિત્યભ્ય માન્નિ, તેમના શિષ્ય શ્રીયશેપિત્યભ્ય માન્નિ કથ્યા. આ વાત એમના જ પ્રકારમાં 'શ્રીત્રસ્તુનિ-ન્વોપાસ્ત્રિવરણ,' તથા ' ૩૫૦ ગાશાના સ્ત્રવત'ના પ્રાત્ત લાબાદિ સ્થ્યોએ જમાન્ન થય છે.

ઉપાધ્યાય શ્રીમક્ ચટેમનિજન્યજની સંસ્તુત-ગંવસ્થનાંગાની ગ્રાફિંમ 'ફે' પદ મુકવામાં આવે છે. 'ફેં' એ સસ્ત્વતીના અંત્ર છે. વેં પદના લાખ્યુવકે તે અહાપુત્રને કાશીમાં પહે મંત્રા તરીના તટે શ્રીસસ્ત્રત્વી રેપીદ્ય ભાગધન કહ્યું હતું. તે વખતે તેઓ શ્રીતે સસ્ત્વતીરની પાસેથી તાર્કપાસ્ત્ર તથા કાન્યશાસના પ્રસાદ પ્રાપ્ત થયો હતો. એ વાત સ્વયચિત 'શ્રીજ પ્ર-સ્ત્રાનીના સસ્ત્ર 'અને 'શ્રીજહાનીસ્ત્રુતિ '! આહિનાં પોતે કરેલાં મંગ્રહાચરહ્યું. ઉપસ્થી સિદ્ધ થાય છે.

સમા મહાપુરુષના સમકાલીત શુરધર વિદ્યાન, અનેક ગંધરતેનાના પ્રદેશના મહાપાધ્યાય શ્રીસાનવિજયછ અહિવર સ્વરિવેદ સ્વેપસ્કઇત્તિસ્પેત 'શીધર્યસ્ટ શ્રહ નામના અંતિ વિદ્રાદ કાંગરતની પ્રશસ્તિમાં 'શીકપાધ્યાચ્છ'ના સુધાનુવાદ કરતાં લખ્ને છે કે– રેન્ડે પ્રહાપુરુર

वरत्य वाज्ञव पर्युवकार्यञ्चनः गर्यामध्यस्यक्रियाः ॥११ वर्षमाणाव्यस्वविवेदाेन प्रोट्सीयवरित्युनियुवनेत्रस्यः । वर्षुर्यमितिकसायस्याजिसुरुगं ऋषेऽत्र गर्युपर्वतं परितोचनार्यः ॥२॥

સત્ય તકંપી ઉત્પન્ન રપેલી લીક્ષ્યુ છુંદિ વહે સમગ્ર દર્શનામાં ગામરાપદ્ધ પાસ્યા છે, તપા-પ્રાપ્તમાં મુખ્ય છે, કાશીમાં વ્યત્ય દર્શનીઓની સલાઓને છલીને શ્રેષ્ઠ જેનમતના પ્રશાવને જેમણે વિદ્યાર્થી છે અને જેઓએ લાકું, પ્રશાદ્ધ અને નવાદિકના વિવેચન વહે પ્રાચીન મુનિઓફ લતકેવલિપદ્ધ ગાં કાળમાં પ્રગ્રહ બાલી ગામ્યું છે, તે લીધશોનિજયાપાધ્યાય વાયસમાહેલમાં મુખ્ય છે, 'આ પૈકાનો માત્ર તેને શોધાવેલ છે.

ં ઉપાધ્યાયછાએ સ્લેશ ગાંધી કોશ શ્રેશ જ ઉપલબ્ધ થાય છે. પોતે સ્વેશ 'જેન તાર્કપરિસાધા' મે મેળી પ્રશસ્તિમાં તથા 'પ્રતિમાશતક'ની પરતાવનામાં (૧૦૦) એક્સો ત્યાપના શ્રેય સ્થાહું સ્પષ્ટ પ્રતિપાતન છે. એ ઉપરાંત '૧૯સ્થ' શાળ્ધીકેત ૧૦૮ શ્રેશ સ્થાની હંકીકત પોતે 'શ્રાયાસ્કૃસ્થ' જે જેમાં પ્રારંભમાં જણાવી છે.

બીજા પણ અનેક સંસ્કૃત–પાકલ ગ્રંથા તેએાશીએ સ્થેલા છે. એ વાલ અત્યારે ઉપલખ્ય થતા 'રહસ્ય' શખ્દ અને ત્યાય સિવાયના વિષયના અત્ય ગેંથાથી તથા તેમછે સાક્ષી તરીકે બલામણ કરેલા લંકાથી પરવાર થાય છે. આ રીતિએ અદિતીય પ્રદેશની રચનાએ કરી આ મહાપુરુષે શ્રીજૈનશાસનની લારે પ્રભાવના કરી છે. ઉપાધ્યાયજી વ્યાકરણ, કાવ્ય, કાય, અલંકાર, છદ, તકે, સિહાંત, આગમ, નય, નિકાય, પ્રમાણ, સપ્તભળી આદિ સવે વિષય સંગંધી ઊંચા પ્રકાસન અતિશય સક્ષ્મ ત્રાન ધરાવવા હતા. એમના પ્રત્યેક માં મામાં અપૂર્વ કરિવલશકિત, વચન-માતરી, પદ-લાલિત્ય, અર્થ-ગૌરવ, રસ-પાયક્ષ, અર્થ કાર-તિરૂપણ, પર-પક્ષખંડન, સ્વ-પક્ષમંડન સ્થળે સ્થળે દેશિયાચર થાય છે. એમની તર્કાશિત તથા સમાધાન કરવાની શક્તિ અપર્વ છે. પર્વાચાર્યપ્રહીત અનેક શ્રીમાં સત્ર-દીકા વગેરમાં નાદી પહેલી અનેક ભાગતોનાં સમાધાન તેંગાશ્રીએ એક સંક્રિવપરાસર કર્યા છે. પાલાના ગ્રાં શામાં તેઓશ્રીએ વ્યવહાર અને નિશ્ચન સ્વરૂપ તથા શ્રીજિનેશ્વર દેવની પ્રતિમા તથા પત્નન મંડન એવી હતામ રીતિએ કર્ય કે કે તેને મધ્યસ્થ અને જિસાસવૃત્તિએ વાચનાર તે સમજનાર આત્મા તરત જ સન્માર્ગમાં સસ્થિર અની બાય છે. સત્ર, નિયંદિત, યુક્ષિ, ભાષ્યા, અને ડીકા સ્વરૂપ પંચાંગીયુક્ત શ્રીજિનવચનના એક પણ ગક્ષરને ઉત્યાપનાર પ્રત્યેક કમતવાહીની તેઓએ સખત રીતે ખબર લીધી છે. ઢુંઢકોના ખંડન માટે વધા યતિઓમાં પ્રવેશેલી શિથિતતા કુર કરવા માટે તેઓએ પાતાના ત્રેથામાં ભારે પ્રયત્ન સેબ્યા છે. કમતાન સખત શબ્દોમાં ખંડન કરવાથી તેમના અનેક દ્વામના પણ ઊભા થયા હતા, પણ તેની विश्वभाव परवा तेके।श्रीके हरी नथी, हरेड स्थवेथी भानपान सेवायवासां क रेसतानी

२ "ततो भाषाविश्वद्वयर्षे व्हस्त्रसाद्भितवण विश्वविद्यानेत्रस्यान्वर्गतवनारहरू-स्ट्यार्रस्याद्धित्वर्गत्यः —युक्ते स्वातीय अध्यामेष्यार्यस्यते ॥" —युक्ते स्वातीय अध्यामेष्यार्द्स्यते ॥"

વિક્રવાના કરવાળ નહિ કરતાં, શિધિકાચારી યતિસપુદાય અને ઠૂંદકે: સારે નિંદરપૂર્વે લેશ રહી, તેઓશીએ શ્રી જૈનશાસનની લારેમાં લારે સેવા બનાવી છે. અદિવાય શાસનરેના અને અતુષ્ય વિક્રતાના પ્રતાપે-લયુ હરિશદ, ળીના હેમવાંદ્ર તથા કલિકાલમાં ફ્રતકેવદીએમું સ્મરણ કરાવનાર તરીકેની અનેકવિય ઉત્તરા ઉપમાંઓ તે પુરૂપપુરુષ પામી ગયા છે.

માત્ર ૨૫૦ વર્ષ પૂર્વે થયેલા આ મહાપુરુષ્તુ પણ પૂર્વપૂર્વ સાહિલ આગે ઉપલબ્ધ થતું નથી, એ ખરેખર આપણી લયંકર કમનસીળી છે. છતાં વર્ષ માતના જે સાહિત્ય મળે છે તે પણ આપણા ઉપકાર માટે એશકું નથી. આતું પરમ ઉપકારક સાહિત્ય અગતમાં કીલ્યુંકાળ પર્યંત વિસ્થાથી લગી રહે, એ માટે સવળા પ્રયત્ના ચોજવા, એ સાધ્યાવૃદ્ધિ આતમાઓતું પરમ કર્તાઓ છે.

રીઉપાધ્યાયભ્ય મહારાવાં , 'ત્યાયળં દ— મારા ' જેવા સંસ્કૃત લાયામાં દુધ' કરેશ ખાતાવા સાથે, પ્રાકૃત જેનાના ઉપકારાવેં ગુજરાતી લાયામાં પણ ઘણી સરસ પલસ્થતાં કરી છે. અસાધારણ ત્યાય અને પ્રમાણ વિશ્વક શ્રેશ હાસ પંહિતશિરોમાં ફિલોનાં શિરોને પણ ઇપત્ કેપાલાર આ મહાન પુરુષ ' જવાલ્યન નવા વા'લકો ' અને 'પુષ્પમલ્યાં વિજયે જેવો' જેવા સરળ પણ ગંભીર આપવાળાં રવતનાહિનાં સ્થતાંથા કરે છે, એ તેઓની પરેપકાશશીલતાંની પરાકાશ છે. રૂજે લાવામાં પણ તેઓદાં એમ સરલ ચોનીસીઓનું વીસી અને પાંચીનાં સ્થતાં કરી છે. એમ તરલ ચોનીસીઓનું વીસી અને પાંચીનાં સ્થતાં કરી છે, એ માર પાંચીના સ્થતાં અને ' કર્યાનાં સ્થતાં સ્થતાં કરી છે. એમની વિશ્વ-વિચિત કૃતિઓનો અનુલાવ કરનાલ વિહાનો એમની અસામાલસ્થાં પુર્લિમના અને અપલે શાસ્તાહીસાં તોઈને વિશ્વમાં વ્યવકાર પાત્રામાં સિસાય રહી શકતાં નથી.

શ્રીઉપાધ્યાયજની કૃતિઓએ તે સત્યવના વિદ્યાનીને વ્યાકમાં હતા, એટફું જ તહિ પણ ભાજ સુધી વિદ્યાનોનું તે તરફ એક્સરજું આકર્યદ્ધ કર્યું છે તેઓસીનાં વચના ભાજ પણ પ્રભાદ તરફ લેંગોના તરફથી અંગીકાર કરવામાં આવે છે. વધારે અહેવાં ઉપનવનારી મીતા તો એ છે કે-સરફત પ્રયોગ લાયાતુવાદો તો ઘણા થયા છે, પરંતુ લીઉપાધ્યાયજ મહોરાજના ગુજર લાંઘ 'દ્રભ્ય-સુધ-પર્યાય રહ્યાં'ના અનુવાદ સંસ્તુત સાયામાં થયો છે એ પહું લીઉપાધ્યાયજની બહું શુંતાનો સેસરજના સાથે, તે મહાયુરુનના વચનાની આફેયતા પ્રવાસ કરે છે.

ઉપાંધાયછની લાયાકૃતિઓએ અનેક ગારાયઓને ગોરિવીજની પ્રાપ્તિ કરાવી છે, સંખ્યાપંત્ર અત્મારોતા સમ્મગૃદર્શન નિર્મળ કરાવ્યાં છે તથા અનેકાનેક અંતક્રતદોને પ્રીજિન્સાસનના અધિક્રદ રાખી રંગી દીધાં છે. વર્તમાન સક્ષેતા પરમ-પ્રભાવક પાંચાલ-દેશાંતારેક સીનદ્ નિજ્યાનંદ્રારિ સંક્રદાભાગે કુમ્લતો ત્યાર કરી, જે મહાપુરુષ રાષ્ટ્ર સ્વીકાર કર્યું હતું તે, શીમદ્ આત્મારાસપાર અંકારાન્ય સુરુષ, શીમદ્ શુદ્રેરાયછ મહારાન્ય વગેરે અનેક મહાતાઓના આ મહાપુરુષની લાલકૃતિઓએ વિષ્યાપારમાંથી પહેરીને સ્પાપ્યમ્ માર્ગની શહા અને અનુસરાયુ કરાવ્યું છે, એ વાલ પશ્ચિત આત્માઓને સુનિદિત છે. શ્રીકિપાધ્યાયભાની મૂર્જ સૂર્તિઓ સંસ્તુત-પ્રામુત લાયાના અલ્વાસી એવા સતાચીતે પણ જેનશાસનનો તલસ્પર્શી હોય કરાવે છે. રાસુક જેવા ગંભીર આગ્રસગંગીતુ સારહ્યું તત્વ પીતાની મૂર્જ કૃતિઓપાં ગૃંભી તેઓશ્રીએ પ્રામુત લનતા ઉપર અનુપત્ત ઉપકાર કર્યો છે. કૃતિઓમાં કૃતિ વિચલવાલા સંસ્તુત પ્રામુત લાયાના પૂર્વ મહોર્તિઓ વિસ્થિત શ્રીમોના સરભામાં સરભ મુજે પ્રાપ્ત અમને કૃતિ તેઓશ્રી અપૃત્ય અફ્રિતિએ અને કૃતિ સપ્તમાણ છે. શાસ્ત્રામાર સિગાયનો એક અસર પણ નહિ ઉચ્ચારીને. તેઓશ્રીએ પીતાતુ લવલીટ્રપણ સાળિત કરી આપ્યુ છે. તેમનાં સ્ત્રોલં સ્ત્રાનો આદિ એક્સ સ્ત્રાસ સ

> [િવ સાં ૧૯૯૨માં પ્રકાશિત થયેલ 'ગૂર્જ'ર સાહિત્ય સંગઠ ' સાગ ૧ લામાં આપેલી ગલતાવનામાંથી ઉપયોગી ભાગ,]

> > 7

 [&]quot;ससर्वनिषयनसम्बोदार प्राण प्राप्तते सरागेण । वदननामोटिश्राण्य सुनेष कमदे गीतरागः ॥"

[—] इति शीवसमस्ती = सर्व' जिल्ला अध्यक्तितितः के साम्य लाहे स्तान्द्र तेहनी डिटि अनता सुख सुन्धा सहे जनताला. "

શ્રી મદ્ યરા વિજયજી લેખક: સ્વ. શ્રીયત માહનહાલ કહીવાંક દેવાઇ

[જૈન સાહિત્યને સાંક્ષિપ્ત ઇતિહાસમાંથી]

૯૨૭. આ (સુજસવેલીના) જીવતવૃત્ત પરથી જણાય છે કે નાની વધે દીક્ષા લીધી હવી તેથી જન્મ સં. ૧૬૮૦ મૂકી શકાય. પર વર્ષમું આસુષ્ય એ ગણનાએ શ્યું તે દરસ્યાન ૮ વર્ષની શિશમવસ્યા પછી નવવિજય ગ્રુરુ પાસે ૧૧ વર્ષ અભ્યાસ કરી શરુ સાથે કાશી જઈ ત્રણ વર્ષ ત્યાં ને પછી આગામાં ૪ વર્ષ અખેડ ક્ષેત્રો અલ્યાસ કરી—એમ ૧૭૦૬–૭ સુધી ૧૮ વર્ષ વિશા-આયામમાં ગાળી જીવન પર્યોત શ્રેટી સ્થવાન ચાહ રાખ્યું, લાયાદરિએ પ્રાકૃત સંશકૃત અને રાજરાતીમાં પ્રષ્કળ કૃતિઓ રચી. વિષયો પસ્ત્વે ત્યાય, ચાત્ર, અધ્યાતમ, દર્શન, ધર્મ નીતિ; ખંડનાત્મક ધર્મસિહાંત, કથાચરિત, મુલ તેમજ ટીકારૂપે સ્થનાએ કરી. ' તેમના જેવી સમત્વયશક્તિ રાખનાર, જૈન જૈનેતર મોલિક ગંગ્રેલ ઊંડું કોહન કરનાર, પ્રત્યેક વિષયના અંત સુધી પહેાંચી તેના પર સમશાવપૂર્વક પોતાનાં સ્પષ્ટ મંતવ્ય પ્રકાશનાર, શાસ્ત્રીય અને દીકિક ભાષામાં વિવિધ સાહિત્ય સ્ત્રી પાતાના સરળ અને કઠિન વિશાધાને સવ° જિજ્ઞાસુ યાસે પોકોંચાડળાની ચેષ્ટા કરતાર અને સંપ્રદાયમાં રહીને પણ સંપ્રદાયના ળંધનની પરવા નહિ કરીને જે કાંઈ લચિત જ્લા<u>યં</u> તેના પર નિર્ભયતાપૂર્વંક હણનાર, દેવલ શ્વેતાંખર-દિર્ગાભર સમાજમાં જ નહિ લહેદે જૈનેતર સમાજમાં પછ તેમના જેવા કાઈ વિશિષ્ટ વિદ્વાન અત્યાર સંધી અમારા ધ્યાનમાં આવેલ નથી. પાડક સ્મરદામાં રાખે કે આ અહાકિત નથી. અમે ઉપાંચાયછના અને બીલા વિદ્વાનાના ગ્રંથાનું અત્યાર સુધી ને કે અલ્પમાત્ર અવસાકન કર્યું છે તેના આધારે **તાળી-એ**ખીને ઉક્ત વાકન લખ્યા છે. નિ:સંદેષ્ઠ શ્વેતાંબર અને દિગંબર સમાજમાં અનેક અહ્યુત વિદાન થઈ ત્રયા છે. વૈદિક તથા મૌદ સંપ્રશયમાં પણ પ્રચંડ વિદ્વાનાની કમી રહી નથી; ખાસ કરીને વૈદિક વિદ્વાન્ તાે હંમેશથી ઉચ્ચ સ્થાન લેતા આવ્યા છે, વિદ્યા તા માના કે તેમના આપની: પરંત્ર એમાં શક તથી કે કાઈ બૌદ્ધ યા કાઈ વૈદિક વિદ્વાન આજ સુધી એવા થયા નથી કે જેના પ્રધા અવ લાકનથી એવું અલ્વામાં આવે કે તે વૈદિક યા બીહ શાસ્ત્ર ઉપસંત જેન શાસ્ત્ર મધ વાસ્તવિક શે.ફું અને સર્વવ્યાપી જાણપણું સખતો હોય. આથી ક્ષેત્રતે ઉપાધ્યાયજના પ્રધાને ધ્યાનપૂર્વ'ક નેનાર કેઇઈ યછુ અહું અત દાર્શનિક વિદ્વાન એવું કહ્યા વગર નહિ રહેશે કે ઉપાધ્યાયછ જૈન હતા તેથી જૈનસારસ ઊંડું તાન તે! તેમને માટે સહજ હતું પરંતુ ઉપનિષદ, દર્શન આદિ વૈદિક ગ્રંથાનું તથા ભૌદ ગ્રંથાનું ગ્રાહ્લું વાસ્તવિક પરિપૃદ્ધ અને રપષ્ટ ગ્રાન તેમની અપૂર્વ પ્રતિભા અને કારીસિવનનું જ પરિણાસ છે, '! પ્રદાયલ પ્રતિ યીકુખતાલનો 'ચાયદર્શન તથા ચાયવિશ્વિત'મા હિંદીમાં આપેલ 'પરિચય'માંથી અતુવાદ

૯૨૮. 'તેઓ બન્મસંકારમ'માં ક્ષેત્રયોગ્રહ'મત અને આબન્મ છાહવારી ધુરધર સાચાર' હતા. સામાન્ય રીતે પોતાના બધા ટીકાગથામાં તેમણે જે જે કહ્યું છે તે બધાતું ઉપપાદન પ્રાથમિત અને પ્રમામાણિક ગ્રંથોની સમ્યતિહામ કર્યું છે, જ્યારે કોઈ પ્રથમિત અર્થ કાહવામાં ખેતાલાયુ નથી કરી. તકે અને હિહાનત બનેનું ત્યનેતાલપાયું સાચાર્ય પોતાના વસ્તબની પુષ્ટિ કરી છે, XX માત્ર આપરી દિશ્યે નહિ પાયુ હરકેક્ક વસ્ટલ્ય વિહાનની દિશ્યે જેન સંપ્રકારમાં ઉખાધ્યાયજીનું રસાન, વૈદિક સંપ્રક્રભના શ્રાં કરાવાર' જેવું છે."

હરદ, માતે શ્વેતાઝાર તપાક્રચ્છમાં હતા અને શીઝકળરપ્રતિકાલક હીરવિન્યા भविता शिष्य पटतर्भी विद्याविशास्त्र प्रसिद्ध क्षणांध्याय केटबार्ष्यविकथः, तेमना शिष्य सक्र શાબાતશાસનનિશ્લાત લાભવિજય, તેમના શિષ્ય પહિંત જીતવિજય, અને તેમના શરૂલાઈ તમાવિજયના શિષ્ય હતા. તેમન ત્યાય-તાર્કેન ત્રાન અકસત હતે ને પાતે જળરા વાદી હતા. પાતાના સમયમાં ગાલતા જ્રુપ સંપ્રદાયા નામે દિયાંબરમત, અને સ્વ⁹યેતાંબરમાંથી તીકળેલ મનિ પત્રનિવેષક લોકાસંપ્રહાય તથા ચીછ નહી નહી વિધિ અને માન્યતામાં જાદા પડતા એવા નાની શાખાએ રૂપી ગર્જી નામે પાર્શ્યક ગ્રચ્છ, કેડવાના મત અને बीलने। भत देता तहपशंत धर्मभागरे जनेड प्रउपद्यान्त्रा हरी आधा श्वेतांणर शहरता તંત્રને હતાવી મક્યાં હતું અને પછી તેમના શિષ્યવર્ગે તે પ્રરૂપણા ચાલ રાખી હતી. આ મવીના મતાના નિરાસ કરવા માટે પ્રસાશેદ આપવા ઉપરાંત તેમની કેંગ્રેર શબ્કોમાં ઝાડકની કરી છે. િકા ખરા સામે ખાસ ગંદા ' અધ્યાતમત પરીક્ષા, ગ્રાનાલવ' (અનુપલબ્ધ) એ સંસ્કૃતમાં. અને હિંદીમાં 'દિકપટ ચારાસી ગાલ,' લોકા-કૃહીઆ સામે સંસ્કૃત-ગલ ગંગ નામે 'કેન્પ્રમ'-પર્વાક્ષા ' સ'રહત કાલ્યમાં ' ગ્રોતિમાશતક 'ના ૬૯ વૈલોકા અને તે પછી સ્થેલી તે પર સ્થેપન દીકા. રાજરાતીમાં 'મહાવીર સ્તવન' અને 'સીમ'ધર સ્તવન ' આદિ, ધ્રમ'સાગર સામે ઉદ્ધત 'પ્રતિમા-ગતમ'માંના હ શ્લાક. પ્રા 'ધર્મ'પરીક્ષા' અને તે પર સંસ્કૃત હીકા સ્થેલ છે. આ ખડના મક પ્રશા સ્થવામાં પ્રેરસાલ્મક વસ્ત પાતાના હક—'કર્યાન પ્રથા' કે અને વળી કહે છે કે. ં વિષિત કહેવ, વિધિ પરની પ્રીતિ, વિષ્કૃતી ઇચ્છા રાખનાર પરદ્યાને વિધિમાગ્રમાં પ્રવત્તીવવા તથા અવિધિના નિષેધ કરવા એ સર્વ અમારી વિતાયવાત પરતી લાકત પ્રસિદ્ધ છે." (: 24 ધ્યાપ્સસાર ના અનુસવાધિકાર શ્લા. ૩૧, ૩૨). આ દર્શન પક્ષ અને પ્રવસનભાષ્ટ્રિતે પરિભાગ માં મંથા સ્થ્યા અને તેમાં પાતાની તક શક્તિના ઉપયોગ કર્યો તે જ તક શક્તિને પાતંજલ, સાંખ્યાદિ સર્વ દર્શનોના સ્વદર્શન સાથે યુક્તિયક્ત સમન્વય કરવામાં પણ કામે લગાડી, એ રીતે વાગ અને અધ્યાત્મમાં ઊતરી આત્માનુસન પણ પાતે પ્રાપ્ત કરી શક્યા.

૯૩૦, ત્યાયના ચાર્યા નામે ફ્લ-કાળ-ચા યુપમાં જે સાહિત્ય રચાયુ તે ફળકૃપ છે. ફળમાં બીજવી કુંલ કુધીના ઉત્તરેત્તર પરિપાકના સાર ચાલી નાય છે, તેવી રીતે આ યુપના સાહિત્યમાં પહેલા ત્રણે યુપના સાહિત્યમાં થયેલા પરિપાક ચોડલાયે આવી નાય છે. આ યુપમાં એ જૈન ત્યાય સાહિત્ય સ્થાયું છે તે જ જૈન ત્યાયના વિકાસનું છેલ્ટું 'પર્ફાયનું

૧ ઉત્ત સુખવાલ પશ્ચિમનો સુરુત્તરવિનગમ 'એ નામના યક્ષેત્રિખયછ કૃર અથમાં 'અય અને ક્રાંત્રિન પશ્ચિમ '.

છે, કારણ કે ત્યારખાદ તેમાં કાઈ એ જરાવ ઉપરેશ કર્યો નથી. અહિલવસૂની 'સ્યાદુનાદમંજની'ને ળાદ કરીને આ સુગના ક્લાયમાન ત્યારખિવલક ઉચ્ચ સાહિત્ય તરફ નજર કરીએ તો જણારે કે તે અનેક વ્યક્તિએમના હાથે લખ્યું નથી, તેના લેખક ફક્ત એક જ છે અને તે સત્તરમા-અહારમા રીકામાં એચેલા, હમલાવ તો (? સાક) સરદો સુધી મુખ્યપણ મારણીયા સિંહ કરનાર, સંસ્કૃત, પ્રાકૃત, ગુજનાવી અને મારનાહી એ ચાર લાળાએમાં વિવિધ વિપેશીની ચર્ચા કરનાર, સંસ્કૃત, પ્રાકૃત, ગુજનાવી અને મારનાહી એ ચાર તેના સ્વાન, આવાર, અલંકાર, કર્ય વચેરે અન્ય વિપેશના ચીંચોને વાદ કરી માત્ર જેન ત્યાર્થનાલક અચી ઉપર નજન નાપીએ તો એમ કહેલું પહે છે કે, સિંહસેન ને સમાંતલાદથી વાદ દેવસૂર્ય અને સેમ્પક્ર સુધીમાં જેન ત્યારના આત્મા જેટલા વિકહિત એમ હતો તે પૂરેપૃષ્ઠ ઉપાધ્યાયછના તકે-શ્રીમાં મુખ્યતાન, સ્પષ્ટતાના અને સમન્યના રંગો પૂર્ણ છે કે, જેનાથી સુધિતાના શર્ધ આપ્રાયાપ એમ કહેવાઈ અલ્થ છે, જેન સાંદ્રના ત્રહ્યુ સુક્ષુ અને (ક્રિયંગર અને 'વૈર્તાબર) સંપ્રધામું જેન ત્યાયનિયક સાહિત કહાચ ન હેય અને માત્ર ઉપાધ્યાયણનું જેન ત્યાર વિપ્રક્ષ સંપૂર્ણ 'સાહિત ઉપકાર્ય હેલ તેમી જેન વાદ્યમ્ય પ્રવાશ છે.

૯૩૧, 'ઉમાંચાયલ્યુંએ અધિકારોલેકને ધ્યાનમાં રાર્યો, વિષયોની વહેં ચાલી કરી તે ઉપર નાના-માટા અનેક જૈન ત્યાલના ગંલા હખ્યા. તેઓએ 'જૈનતક'પરિસાયા' એવા જૈન ત્યાયપ્રેશ માટે હલુ ગંધ રચી, જેન સાહિતમાં ત્રાંકે અંદ 'અને 'લાકંચાયા'ની પોટ પૂરી પાઠી. 'હેન્સમ' પાકીકત એક્સો ખાક લેશ કે તેમાંના કેટલાક રચી જૈન ત્યાયલાનું પાયમાં ત્રે ચાલિક મળ ગાંકપાર લાકાચાર્યના ગંધાની ગરુ સારી!, 'નાયપાકીય, નયનક્ષ્યાન, નાયાલાતર ગિંધી શકિત ત્યોપદેશ, સ્વાદ્ધાલાકાસ્પાદાન, ન્યાયાલીક, 'ખે તેખાં ત્યાય, ત્યાયક્ષ્યક્રેસી દીરાં 'આદિ અને જ બ વીપારેશ, સ્વાદ્ધાલાકાસ્પાદાન, ન્યાયાલીક, 'ખે તેખાં ત્યાય કરિયાન દિરાં મહિ અને જ બ દીરાની પ્રતિસાર્યું નૈવેલ ધર્યું', 'અપ્યાત્મારા, આધ્યાત્માં પ્રત્યા કેટાં મહિ અને જ બ દીરાની પ્રતિસાર્યું નૈવેલ ધર્યું', 'અપ્યાત્મારા, આધ્યાત્માં પ્રત્યા તેમાં સાથાં સ્વાદ્ધા કેટા સુધીમાં જ કહેલું ભાર છે કે, વૈદિક અને ખીત સાહિતો દાર્શીન પ્રદેશમાં ત્યત્રસા ટેકા સુધીમાં જે ઉદ્ધા' સાથો હતો, હાલલા તે બધા ઉદ્ધાના સારવાદ જૈન વાન્યું પાત્ર આપ્યા ઉપાધ્યાયલ્યું પાત્ર માત્ર હતા હતા સુધી તે તેના એક તેળમાં જૈન ત્યાયતાં બીર્સ બાધાં તેને હલલાન સ્વાદ લખ્ય છે, એય કહેલ પદે કે.'!

લ્ટર. 'રહસ્ય'થી શ્રોકત 'પ્રમામકંત્ય, સ્થાદ્વાદસંત્રય, (કે વા અને) વાદસંત્રય, સામાસંત્રય, નયસંત્રય અને ઉપદેશસંત્રય' તેમણે સ્થ્યા છે તે નિર્વવાદ છે. પ્રથમતા ત્રણ અત્પારતન છે પણ તેમના દરશેખ-નિર્દેશ અન્ય ગેચામાં સ્પષ્ટ છે. એવા 'રહસ્ય' માં કેંદ્ર મો ગ્રંચ કરવાની પોતાની ઇચ્છા 'સાધ્યાસંત્રય'માં બ્યક્ત કરી છે. આ 'રહસ્ય' શાન્યો અંકિત કરવાની સ્કૂરણા, પ્રસિદ્ધ નૈયાવિક સ્પષ્ટાનાથમાં 'તત્ત્વસ્ત્રય' અને 'તત્ત્વારોકસંત્રય'

પૃતિ સુખતાલનો ભાવનગનની સાર્યો મૂજવાલી સાહિત્ય પરિદ માટેના નિતૃત નામે 'જૈન ન્યાપતો કૃષિક વિકાસ.'

નામના ટીકામ થા પરથી થઈ લાગે છે. તેમના 'મંગલવાદ' અને 'નિધિવાદ' તામના હાલ અનુપહલ્ય ગંચાના નામમાં 'વાદ' શબ્દ વાપરવાની સુરણા તેમના સમકાલીન નવ્યત્માયના વિદ્વાન ગદાધરે રચેલ 'બ્યુર્યાવિવાદ', 'શક્તિવાદ' આદિ ત્યાયમંથ પરથી થઈ લાગે છે. ઘરોનિલપ્યાળ નવ્યત્માય પીને પરવાવી ગયા હતા અને તેથી જ નવીન તત્યો તેમણે છેને દઈએ ખંતન કર્યું. આ જ પરિપાલના મામ સુધી જે અત્ય જેનારાથિન પરાણની વિદ્યાલ છે કે શું. ૧૫૧ની મોહી લપ્યદીશ લઇગાર્યના એવી શબ્દ અને તેમણે એ અત્ય જેનારાથી ન કરી શક્યા તે તેમણે કર્યું. તેમની ગ્રેલી લપ્યદીશ લઇગાર્યના એવી શબ્દ અને તેમણે લઇ સુધી જે અત્ય અફ્રિયા વર્ષની ગંધીર ચર્ચા કર્યા તે તેમણે છે. માણવાના સ્થાપલીન સલ્લપિરિ અને વાદી સ્થાપલ સ્યાપલ સ્થાપલ સ

૯૩૩. જૈનાના 'યોગ સાહિત સંવધમાં હસ્થિદસસ્તિના યોગવિષયક શ્રધ અને ત્યાર ભાદ હેમસંદાસાર્થતું 'ચાલશાસા' આપણે નોઈ ગયા. પછી આ ઉપાધ્યાય સર્શો-વિજયકત ચાેગપ્રથા પર નજર કરે છે. તે ઉપાધ્યાયના શાસત્રાન, તર્કકોશક અને ચાેગા-તભવ ઘણાં ગંભીર હતા. તેથી તેમણે 'અધ્યાતમસાર, અધ્યાતમાપનિયદ' તથા 'સડીક અપ્રીશિઓ ' ચામ સંખર્ધા વિષયા પર લખેલ છે. તેમાં જૈન મંતન્યોની સક્સ અને રાચક પ્રીમાંસા કરવા ઉપરાંત અન્ય દર્શન અને જૈનદર્શવની સરખામ**થી** પ**થ** કરી છે. દાં તે 'શ્રમધ્યાત્મસાર'ના ચેણાધિકાર અને ધ્યાનાધિકારમાં પ્રધાનપછે 'ભગવદગીતા' તથા ' પાતંજન સત્ર 'તા ઉપયોગ કરી અને જૈનપ્રક્રિયાપ્રસિદ્ધ ધ્યાનવિષ્યોના ઉદ્ધા મ'તે ઘ'શાની સાથે સમત્વય કર્યો છે. ' સ્મધ્યારસાયનિયદ 'ના શાસા, જ્ઞાન, ક્રિયા અને સાસ્ય એ ચાર ચાળામાં પ્રધાનપક્ષ 'ચાબવાસિક' તથા 'તૈત્તિરીયાપનિષદ 'નાં વાકચોનાં વ્યવસદ્ય આપી તાનિક ગ્રીક્ય અતાલ્ય છે. 'ચાઝાવતાર' દાવિશિકામાં ખાસ કરી 'પાતંજલ-ચારા'ના પદાર્શીત જૈતપ્રક્રિયા અનુસાર સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે. આ ઉપરાંત તેમણે હસ્સિક્સિક્સિકત 'યાગ-વિશિક્ષા' તથા 'વેદરશક' પર ડીકાંગા લખી પ્રાચીન ગઢ વત્વાતું સ્પષ્ટ ઉદ્દેશસ્ત્ર પણ કર્યું' છે. માટલાં જ પ્રકીતે સંતષ્ટ ન રહેતાં તેમણે મહાર્થ 'પલંજલિકલ 'ચાઝસંગ 'ના ઉપર એક ના તીશી વૃત્તિ પણ લખી છે. આ વૃત્તિ જૈનપ્રક્રિયાતુસાર લખાયેલી કાવાથી તેમાં યથા-સંભવ યોગદરા નની સીંતરૂપ સાંખ્ય પ્રક્રિયાની જૈન પ્રક્રિયા સાથે સરખામણી પણ કરી છે. ઉપાધ્યાયભતી પાતાની વિવેચનામાં જેવી મધ્યસ્થતા, સુલુગાહંકતા, સરમ સમન્વશક્તિ અને સ્પાપના વેતા દેખાઈ છે તેવી બીજા આચાર્યોમાં ઘણી ચોછી નજરે પડે છે.'?

૯૩૪, સહીવે 'પરાંજલિએ 'રોલાનું 'રોઝકર્યા'ન' સંખ્ય સિહાલ અને પ્રક્રિયા પર રચ્યુ છે તો પણ તેમની દૃષ્ટિવિશાલતાથી તે સર્વ' દર્શ'નોના સચન્ય રૂપ અન્યું છે, ક્ષા. ત. સોમ્પ્રોને નિરીધરવાદ વૈદ્રેપિક જાદિ દર્શનો હાત દીક નિસ્ત્ત થયો. અને સાધારણ લોક

१ रा भेडनशह उवेरीने अक्तिगव.

ર લુગા તેમની 'શાસવાર્તાસમુચ્યય-કૃતિ ' અને 'યાત બલસ્કારૃતિ '

સ્વભાવના હુકાવ કવિરાપાસના પર વિશેષ જણાયા જારે અધિકારીબેદ તથા રૂચિવિચિત્રતાના વિચાર કરી તેમણે ઇધિરાપાસનાને પણ સ્થાન આપ્યુ (સૂત્ર ૧–૩૩) અને ઇધિરના સ્વરૂપદ નિષ્પક્ષભાવથી એવુ નિરૂપણ કર્યું કે જે સર્વને માત્ય થઈ શકે (સૂત્ર ૧-૨૪, ૨૫, ૨૬) પેસંદ આવે તે પ્રતીકની ઉપાસના કરા પણ કોઈ પણ રીતે મન એકાગ્ર-સ્થિર કરા અને તે દ્વારા પરમાત્મચિવનના સાચા પાત્ર ભના, આથી ધર્મને નામે કલદ ટાળવાના સાચા માર્ગ ખતાવ્યા. આ દર્જિવજાલવાની અસર અન્ય ગ્રહ્મચાઢી આસર્ચો પર પશ પડી. તેયા શ્માચાર્યોમાં હસ્થિકસૂરિ અને સશોવિજયનું ખાસ સ્થાન છે. (દા. ત. હસ્મિકે 'ચાર્ગાર્ગેદ ' શ્લેષ. ૧૬–૨૦ માં સવ' કેવાની ઉપાસના લાલદાયક અતાવી તે પર ' ચારિ સંજવની ચાર' એ ત્યાયના ઉપયોગ કર્યો છે અને એ જ રીતે ઘટાહિજયે પાતાની 'પૂર્ય-સેવા દ્વાત્રિશિકા,' ' આત દૃષ્ટિઓની સજ્જાય ' આદિ ગ્રંથામાં અતુકરસ કરેલ છે.) જૈન દર્શન સાથે 'પાતંજલ યોષ્કદર્શન'નું સાદરય અત્ય સર્વ' દર્શનાની અપેક્ષાએ અધિક છે તે સાદશ્ય (૧) શખ્દતું (૨) વિષયતું અને (૩) પ્રક્રિયાનું -એમ મુખ્યતથા ત્રણ પ્રકારતું છે. (૧) મૂલ યેાગસુરમાં જ નહિ પરંતુ તેના લાખ્ય સુદ્ધામાં એવા અનેક શબ્દેર છે કે જે જૈનેતર દર્શનામાં પ્રસિદ્ધ નથી યા તો એછા પ્રસિદ્ધ છે, હ્યારે જૈનશાસમાં ખાસ પ્રસિદ્ધ છે. જેવા કે ભવપત્થય, સવિતક^ર-સવિચાર-નિવિધાર, મહાવત, કત-કાસ્તિ-અતમાદિત, પ્રકાશાવરથા સાપક્રમ, નિર્પક્રમ, વજરાંહનન, કેવલી, સ્થલ, ગ્રાનાવરહીય કર્યા, સમ્યવ્સાન, સમ્યવ્હાન, સવ'રા, સીશુકેલેશ, ચરમદેહ આદિ (સરખાવા-ચાંત્રસત્ર અને તત્ત્વાર્થ'), (ર) વિષયામાં પ્રમુપ્ત તતુ આદિ કહેશાવસ્થાએ, પાંચ યમ, વાલજન્મ વિભૃતિ, સાપક્રમ નિરૂપક્રમ કર્માં સ્વરૂપ તથા તેનાં દખાંત, અનેક કાર્યોનું નિર્માણ આદિ. (3) પ્રક્રિયામાં પરિણાસી, નિત્યતા મર્શાત ઉત્પાદ, વ્યય, પ્રીવ્ય રૂપે ત્રિર્મ વસ્તુ માની તદતુસાર ધર્મ-ધર્મોતું વિવેચન. ગા रीते कथाती विवास्त्रभवाना अस्त्रे हस्सिंद केवा कैनाकारे कहिए पतंकति अति હાર્દિ'ક આદર પ્રગટ કરી પાતાના યાગગથામાં ગ્રહ્મચાહકતાના નિભી'ક પરિચય આપ્યા 🗎 (ભૂગા 'ચાલબિંદુ' શ્લા૦ દદ ઉપર અને 'ચાલદ્રષ્ટિસસુરગય' શ્લા૦ ૬૦ ઉપર ડીકા) અને સ્થળે સ્થળે પત જલિના વાેબશાસાબત ખાસ સાંક્રેલિક શખ્કોને જૈન સંકેલાે સાથે સરખાવી સંદ્રીષ્ દરિવાળાને માટે એક્લાના માર્ગ ખાલ્યા છે. (ન્ત્રણા: ધારાબિંદું મીં ૪૧૮, ૪૨૦) યશાવિજયે પતંજલિ પ્રતે આકર લતાવી (લુઓ: 'ચાગાવતાર હાત્રિશિકા ' હરિસ્ક્રસ્સરિના સચિત એકતાના માર્ગને વિશેષ વિશાસ અનાવી પત અલિના ' ચાગરાત'ને જેન પ્રક્રિયા અનુસાર સમજાવવાને ચાઢા પણ મામિક પ્રયાસ કર્યો છે (ભુગો: 'પાતંજલ સુત્રવૃત્તિ') આટલુ જ નહિ અલ્કે પાતાની દ્વાર્ત્રિશકાઓ (અત્તીસીઓ)માં તેમણે યતંજિલના ચેાગસૂત્રગત કેટલાક વિષયો પર ખાસ ળત્રીશીઓ—નાચે પાતંજલ ચેાગલકાણવિચાર, ઈશાનુગ્રહેવિચાર, યોઝાવતાર, ક્**ટેશહા**નાયાય અને યોગમાહાત્મ્ય (દ્વાત્રિશિકાએા) સ્થી છે.'^૧ ['कैनसहित्यने। सहित्र अतिहास' (स १६८६)मांथी 'શીયરોહિજય લુગ' વિભાગના પૃષ્ઠ ફેટર થી ફેટલ્.]

૧. પહિતવર્ષ શ્રીસુ ખલાલજની 'વેલ્પાર્શન તથા વેલ્યવિશ્વસ'ની હિટી પ્રસ્તાવના પરથી

શ્રીમદ્ યશાવિજયજ

લેખક : શ્રીયુત નાગરૂઆર પ્રકાતી. [વડેદરા]

ભારતવર્ષ એ સતો અને મહાત્યાઓની શ્રૃત્રિ & એમ કહીએ તો તેમાં જરા પશુ અતિશહેપીલ નથી. સમન, કૃષ્ણ, મહાવીર અને શુદ્ધ જેવા પરાયમ્ગરેશથી માંદીને કરેકની પર પરતે તાળવી રાખનાથી મહાન વિલ્લિઓ શામી સમયે અને શુગે શુગે આ કેશમાં પ્રગાટી છે. ભારતવર્ષનું એ સૌમાન્ય છે કે તેના અનેક શોધા શપૂતોએ ધોતાનાં સાય, તપ, વૈદ્યમાં, સાત, સ્થાન, ધ્યાન, ચેંદમ, અધ્યાતમ, સોલ્યસ અને સ્વાપ'લુધી જન્ની જન્મસ્ત્રિમિની દૃષ્ય દીષાથી છે

આપં પર્યની ત્રણ મહાન શાળાગા—જેન, વૈદિક અને લોહ. તે પૈકી લોહપસં ભારતમાંથી દેશવટે લીધા પછી પશુ વૈદિક અને જેનધર્યોએ દેશના સરકારઘરતરમાં પોતાના યશસ્ત્રી ફાંગા સતત ગાપ્યા કર્યો છે અને હતા પશુ ગાપ્યે લાય છે.

જૈનાધર્ય જે સંસ્કારવાગીઓ અને ધર્મપુર ધરોવી ઘેટ હારતવર્યને ચરશે ધરી છે તેમાં ૧૪૪૪ સર્થાના સ્થિતિ શીક્ષિક્સદ્રસૃષ્ટિ અને સાન-વિજ્ઞાનનાં તમામ ફેરોને ખૂર્વ લળનાર કહિકાલસ્વંગ્ર શીક્ષેમલ દ્રાવાર્યનાં નાયા જૈન અને જૈનેતર જનતામાં સારી દીતે જાણીતાં છે. તેમના જ જેવી એક મહાન વિશ્વૃત્તિએ આજવી શ્વહીસા વર્ષ ઉપર પોતાની દ્રાન-સૌરક્ષથી લાયતને અને ખાસ કરીને ગ્રુજરાતને અઠધી સદ્યો સુધી સુધારિત કર્યું હતું. પોતાના હ્યા ચારિન્યથી, ક્રિલ્ય સાધુતાથી, પ્રગર સાંહ્યથી, નાદ્ય-પાયની પ્રમર મહિસાથી, મહિનાવ કાલ્યશક્તિથી, પફર્સ્યાના લક્ષ્યસ્થી સાનથી, નાવ-પાયની પ્રમર મીમાસાથી અને ધર્ય-ક્ષ્યાનના 'લગીસ્થ પ્રચનાથી વિશાદ ચરા પ્રાપ્ત કરનાર એ સુગ-

સા મહાપુરખી જન્મસાલ ગાહેલ પ્રાપ્ત થતી વર્ષી પરતુ વિ સ. ૧૬૮૦ માં ગાર તેની લગલમાં તેમના જન્મ ઉત્તર ગુજરાતમાં રૂપેલુ નદીના હિનાસ ઉપર આવેલા કેનોડા ગામમાં થયા હતો. ગા ગામ દશાયા-અભિયારમાં કેઠણી પણ પ્રાચીન હોવાના પુરાવા માળી આવે છે. તેમની ગાતાનું શુધ નામ 'દેશાલાબર્ડ' અને પિતાનુ શુધ નામ 'નારાયલું હતું. ત્રીતર્થી સિલ્યજીનું લાગ્ય 'જજાવંત' હતું અને તેમને 'પ્રાપ્ત હતા નામ લાગ્ય લાગ્ય ગાલે વિ. ૧. ૧૬૮૮ માં પડિત શ્રીનય-વિજયજીના શુધ્ન હત્વે હીલા ગાંચીકાર કરી હતી અને તેમનાં નામ ગાતુકમે 'શ્રીપરોત્ત-વિજય' અને 'શ્રીપરાયિલ્ય" સખવામાં ગાલ્યાં હતાં. શ્રીશરોા વિજયજીની શુદ્ધિતિલાના ચપાલરા શરૂ વાર્તથી જ જણાવા લાગ્યા હતા. વિ. સં. ૧૬૯૯ માં તેમણે અપ્રહાવાદના 'સંઘ' સમક્ષ આઠ અવધાન કર્યો. અમરી પ્રકારિત થઈ ત્યાંના એક શ્રેષ્ઠીએ તેમના સુકૃતે વિનિ કરી કે, શ્રીયશો વિજયજી જેવા દોડિયાર સુવાન સાધુને કાશી જેવા સ્થાન્યો અન્યાસ કરવી બીલા દુંચ્ય દ્ર જેવા પ્રનાવો. કાશીના અન્યાસનો બધા ખરવા પોતે ઉપાડી લેવા તૈયારી અતાવી અને એ હબર કીન્યાની ફુંધી લખી પણ દ્રધી. સુરૂ નયવિજય શિખો સહિત કાશી આવ્યા અને ત્યાંના પ્રસિત કરોશ્યાર્થ પાસે વદ્ય વર્ષ 'સુધી વિદ્યારુપાય કરાજો. તીરણ ચેધા અને સફાય કહેલા શરી વસ્તુત્વ પ્રસ્ જ વર્ષના માળામાં અદ્ભાવ વિદ્યાર્થ પ્રક્ષા કરી કાશી કાશીમાં જ પોઠિતાની સસાએ તેમને 'ન્યાયવિશાસ્ત્ર' અને 'ન્યાયાયાર' જેવી પ્રક્ષાનીઓ આપી.

કાશી છેઠવા પછી તેઓ ચાર વર્ષ આગ્રામાં રહ્યા અને ન્યાયશાસના અને ખાસ કરીને નવ્ય-ન્યાયના ગઢન વિષયના સફય અભ્યાસ કરી.

ત્યારખાદ તેઓ અપ્તરાવાદ આવ્યા. તેઓ ગ્રુજરાત તરફ આવવા નીકામાં તે પહેલાંથી જ તેમની ઉ_{લ્લા}વલ કોર્તિ ચારે દિશામાં ફેલાઈ ગ્રાઈ હતી. ગ્રુજરાતના તે વખતના સુષા મહાબતખાનની શબ્યલલામાં તેમની પ્રશ્ન શા થતાં મહાબતખાને તેમને ખાસ આમંત્રણ આપી રાજસ્વસામાં તેડી મળાત્યા; હતાં સુષાખાતની વિન તિથી તેમણે અહાર અલ્લાન કરી બતાનાં.

આ ખનાવ પછી તેમની કીર્તિના સ્વાં મધ્યાકૃતે તપવા લાગ્યા. તેમની વિક્રતાની સુવાસ સારાયે ગ્રુજરાતમાં ફેલાઈ થઈ. તેમના લાવડાલુત્વે, તેમના ચરણી સિક્ષા જેવા દ કેતરીકું પ્રમાણભૂત વચનાગુરોલો, તેમના ઉત્કર સંયમ અને ચારિસ્પે, દભીઓ-વેપ દિલંબારોને પુશા પાઠવાની તેમની વિક્રતાએ, તેમ જ તેમના તેનેમચ અધ્યાપ્ત જીવને તેમને તે વખતના સમય વિકાનવર્ગ અને સમાયુસંયમાં અનોખું સ્થાન પ્રાપ્ત કર્યું.

તેમણે લગલગ ૩૦૦ ઉપરાંત થયા લખ્યા છે. ત્યાય, અધ્યાત્મ અને પાંચાન ગઇન વિષયા ઉપર તેમણે સ્વાતુસવપૂર્વક પોતાની હોશીલી કહ્ય ચલાવી છે. યદ્દર્શનના સર્વ હિન્દ તેની તેઓ પ્રાપ્તિ મેં થાય છે. પ્રદર્શનના સર્વ હિન્દ તેને તેઓ પ્રાપ્તિ માં થાય છે. પ્રદેશ હોય છે. તેમના વિષે એક હેખકે પ્રદુ જ લખ્યું છે કે, "શ્રી યોગિલભ્યાછની નય-નિગમથી અગમ્ય અને અંધીર સ્પાદાન-થત- પ્રત્યાની સ્વના એ આપ્રત્યાન જે એક વિશ્વાત્રર્થ છે તેમની શાસન-સ્થતાર્થી શ્રદિશ સિંદા, પરસ અનં દર્ભ આપ્યત્રન પરિત, વિશ્વાત્ર્ય સ્થતો છે અને તેથી રહિશ હોસી સેલા કરે છે."

ન્યાય અને લક'ની એક મહાન પ્રશ્રાલી ભારતવર્થમાં પ્રાચીનકાળણી વિશ્વમાન હતી. મહાર્વ ગાલમ પ્રાચીન ન્યાયશાસના ફરસ્કર્લા ગણાય છે. હ્યાં પ્રમાણેને આધારે ન્યાય શાસે સ્વીકારેલા પ્રમેશોની પણ ચર્ચા કરવામાં આવી હોય એવી પરંપરા પ્રાચીન-ન્યાય તરીકે ઓળખાય છે. પરંતુ દશ્યી—પશ્ચિવારથી સહી પછી એક નહ્ય-ચાયની પરંપરા શરૂં શર્ક હતાં નહ્ય--ચાયની શાસ્ત્રીય અને સંચાટ રસ્તુઆત તો સૈવિતી ગંગેશ ઉપાધ્યાયે લગભગ તેરમી સહીમાં કરી. આ પહાર્તિયાં પ્રમેશેની ચર્ચા પહાર્તા મૃત્યામાં આવી અને કેવળ પ્રમાણેના ગાધારે વસ્તુ સિદ્ધ સ્થી બોર્ક એ એવી સુક્ષ્યાત્ર વિચારકેશ્વીને અવદ બી ન્યાયશાસને શુદ્ધ અને વૈજ્ઞાનિક તહેશાસનું સ્વરૂપ આપવામાં આવ્યું. નવ્ય--ચાયમાં શુદ્ધિની સુસ્તાત, વિચારોની સ્પષ્ટતા અને કહીશાની હીશ્વન્ડ પ્રધાન્ય શોગયે છે અને તેથી આ ન્યાયને પ્રચાનનારમાં અહિતીય સેધાની અને આપ્રતિમ પ્રતિભાગી જરૂર રહે છે. સ્રીશોનિયયજ નવ્ય-ન્યાયના એક્સ અને લાકિકારી તેમની શુદ્ધિ -પ્રભાના ચમકાર સાત ઉપલબ્ધ સિદ્યાય રહેતા નથી.

શ્રીયોશિવિજ્યજીની ફૃતિઓ સસ્કૃત, પ્રાકૃત, શુજરાતી અને હિંદી-મારવાડી એમ ચારે ભાષામાં ગણબદ, પશ્ચમદ તેમજ ગલ-પશ્ચમદ છે. તેમના હેમ્મનના મુખ્ય વિષયે. આગામીમ, તાર્કિક છેલા છતાં તેમણે પ્રચાલ, પ્રયેશ, નવ, પ્રચાલ, પ્રકૃતિ, ન્યાન્યા, યોગ આદિ તાર્કિક વિષયે. ઉપર નગ્ય તાર્કિક્ષેત્રીથી લખ્યું છે, એટલું જ નહિ પણ બ્યાકરણ, કોલ્ય, છત્ક, ગ્રહાર, કરીન આદિ તે વખતના ચર્લપ્રક્રિક વિષયે ઉપર તેમણે પેતાની વિસ્તાલયી કહ્ય બહાવી છે.

'સુજસ્વેલી ના કર્યા તેમને માટે લેખે છે કે, "નિચે જાપતું કેવમણિ-ચિંતામણિ જેવું (નિર્મળ) મૃત-રાભ છે, વાલેગોનાં વચનરૂપી કરોતીએ ચરેલું છે, તેના અમ્યાસ પડિતજના જામિ એટલે સમ્યાદ્રતની શુદ્ધિ માટે કરે છે. તેમની વિક્તોથી તેમને "કુર્યાલી શાસ્ત્ર" ખર્ચાત્ સરસ્વતીના મૃત્રભાં અવતારતું નિક્ક મત્યું હતું. તેમની વચના અને લાયા માટે 'સુજસ્વેલી'ના કર્તારે લેખ્યુ છે કે?—

> " વચન-સ્થાત સ્થાહ્નકર્યાં, તમ-નિયમ-વ્યાપ થ'લીશ રે; ઉપનિષદ નિય વેડની, જસ હીંત શહે કાઇ ધીરા રે, શીતલ પરમાત દિની, શુચિ વિચલ-સ્વરૂપ સાચી રે; એહની સ્થાન-ચહિંદા, રહિયાલન સેવે સચી રે."

શ્રીપ્રદોષિત્યાછ એક સફેલ ગ્રુપ^{*}ર લાયાના કર્ય પણ હતા. તેમનાં કાવ્યે તર્રાહ્યું અને મીજાંની પેડે લક્તિપ્રગુર અને પ્રસાદિક છતાં ઉત્તપ કાન્યતન્વથી શરપૂર છે. તેમના પલસાહિત્યમાં સ્તવનો, સાત્કરોડ, લજનો અને પહો ગ્રુપ્ય છે.

'સ્માત્રમભ્રજનાવલિ'માં સગ્રહાયેલાં અને મહાત્મા ગાંધીજીના પ્રિય ભજન—

" ચેતન અબ મોહિ કર્યન કીજે, તુમ કર્યન શિવસુખ પામીજે; તુમ કર્યાન ભાવ છીજે, ચેતન અગ મોહિ કર્યાન કીજે. "

સા લજન શ્રીયશોવિજયનું જ છે.

પ્રેલના ગુખનાં દર્શન થતાં તેમના લહેત ફ્રેલ્યમાંથી કેટલી સુંદર અને લગ્ન કલ્પનાઓ સરી પડે છે!

" આંખી અ શુજ પાંખી, અધ્યી રાશી સગ લાલ લાલ રે; વદન તે શાહ ચંદલો, વાણી અતિહિ સ્સાળ લાલ રે. " અને પશુલક્તિના રસના જેશે રવાદ ચાળ્યો તેને પછી બી.ને રસ ક્યાંથી ગમે !— " અવિત વિભ્રંદસું પ્રીતકી, ગુજ ન વધે હા બી.બેના સંગ ટે; માલતી કૃષે ગાહિયા, કિમ એસે હા બાલવાત ભૂંગ રે. અગ અંગાજળામાં જે ત્યા, કિમ કિલ્લાર હો તિતે પાંચે મરાલ કે, સ્રેશ્વર જળ જલાર વિના, નવિ ચાહે હો જગ ચાલ લાલ દે. અગ કેન્લિસ દલ ફ્લિલ સ્ટેર પાંચી મંજરી હો પ્રેલ્ય સહ્યાર કે આલો તરુવર નવિ ગયે, બિરૂઆફ! હો હોયે ગુણુનો પાર કે. અગ "

अंदि

" હુંએ છીયે નીંહે અધર અરૂછ જિમ, ખાતાં પાત સુરંગ; પીવત ભરભર પ્રક્ષુ ગુણ 'વાલા, તિમ સુજ પ્રેમ અલ્પ'ચ. "

ઉપાધ્યાયજની કેટલીક કૃતિએ। મૂર્જર સાહિત્યમાં અમર થઈ જાય તેવી છે.

આ મહાપુરપું અવશાન વિ. સ. ૧૭૪૩માં ગેતિહાસિક રહેશઈ નગરમાં ઘડું હતું. ત્યાં તેમની પાદુકા વિ. સં. ૧૭૪૫માં પ્રતિક્રિત થયેલી હાલ પણ નિવસાન કે. તેમના સમાધિતપત્તી મુત્રા પ્રતિક્રાના શુલ અલ્લારે ગા મહાન તાર્કિક, મહાન તૈયાયિક, મહાન ૧૪૧૧ પુત્ર અને મહાન ભારતીય સંસ્કારનામીને 'અલ્લે' સપંધા તા છ-૮ માર્ચાન ૧૦૧ મા સારસ્વત સગ્ર પ્રીજનામાં અલ્લું છે. હું પણ તેમને મારી ક્રહાં-માર્બાલર્કિ મર્પી કૃતાર્થ શાર્ક શું

श्रीयशोविजयजीकी जीवन-कार्य रूपरेखा

क्षेत्रकः एं० श्रीमान् सुख्यकाळको संघवी

" प्रस्तुत प्रण्य कैनावर्धसायकी प्रणेता उपात्यान आँमान् स्वयोध्यय है। उनके जोवनके सारेमें साथ, सर्वेतस्य बगेक बाते प्रचलित यां तर वस्त्रें उन्होंने समझार्थन यां का दिवारिकायणीका सनाया 'सुवार्यको ग्रास' प्रा प्रा हुच्या, जो विख्कुत विश्वस्यां है, उनसे उनके जोधनको स्वीत्स्तरी बाते विख्कुत त्या हो गई। वह 'ग्रास' उपात्यां प्रचलित प्राचारी प्रचलित हो गई। वह 'ग्रास' उपात्यां प्रचलित प्राचारी प्रचलित हो तिसक्षा लावु-निक सुवारोतीमें सरियाल सार-विचेचन प्रविद्ध केसक श्रीस्त्र मोहनकाल द, देसाई B. A. LL B. ने हिल्ला है। उसके व्यावरात्रे वहाँ उपाच्यां का बीचन संक्षेपों विश्व वाला है।

"अपाप्पावक्षीका कन्मारथान गुकरावर्ष करुंख (वी वी. एन्ड ही. खाई, हन्ने) के पास
'कनांडु ' नार्यक ग्रेंब है, को कसी भी मीजूद है। तस गाँवमें 'नारावण' मानका व्यावारी था
किसकीं प्रमायनी 'सोमायदे' थी। उस बन्धांके 'सम्बन्धं' और 'वस्विंद्धं' तो कुनार थे।'क्ष्मी
कड़बरमाजिनोधक प्रतिवर्ध कैनावर्ष्ट हैरिक्वकस्तिको तिम्पावरंप्यमें होनेनाने पविद्यार्थ भी, 'न्याविक्रय'
गायको समीवर्धी 'कुम्मेर ' मामक मीवर्ध बिहार करते हुए उस 'कनोंडु ' योवर्ग पमारे । उनके
प्रतिवर्धिक उस्त बोनी कुनार स्वयंन भावा-भवाकी सम्माविक उनके साथ हो क्रियं भी, दोनोने
गायमा ये, न्याविक्रमाधीक गास हो सि. सं. १६८८ में दीवा की और उसी साथ करते होने हिस्स हो है। श्रीक साथ मारे की साथ की साथ की साथ साथ होने । वर स्वयं होने हिस्स उनके साथ वर स्वरं को 'य्योविक्य'
कीर 'प्याविक्र' का 'क्ष्मविक्य' नाम स्वा मारा । उसी व्यविक्षको ज्ञापायाव्यो करनी होनेके
वेतने सहीरक्षको सम्माव्यक्षी की

सं, १६९९ में 'अहमदानाद' सहरमें वंच समय संगोधिनवानीन आठ अवधान हिन्ने । हमसे प्रमारित होत्त बहीत एक धननी सुरा नामक प्रसिद्ध न्यावारीने सुरु धोनवविजयतीको विनति को कि विषय प्रशोधिनवानीको काशी सैसे स्थानमें पदाक्षर हस्या हैमक्ट तैयार क्षेत्रित । उक्त तेरूने हस्तें बातते वो हनाम चौदीके दीनार संचै करना मैनूर किया और सुंद्धा किया हो। सुरु नविजयती शिष्य यशोधिनवान आदि सहित काशीन नाप और स्टेंड बहेरित प्रसिद्ध दिसी महाचारिक पास न्याय आदि दक्षेत्रीका तीन वर्षतक दक्षिणा-दान-पूर्वक व्यन्तास स्थाय। सामोर्स हो क्सी वारमें किसी विदान् पर निजय पानेके बाद पं. यशोविजयजीको 'न्यायविशास्त्र'की पदनी मिछी। उन्हें 'न्यापानार्य' पद भी पिछा या ऐसी प्रशिक्ष रही। III इसका निर्देश 'सुजरुवेशीमार' में नहीं है।

कार्शिक बाद उन्होंने जानामें सहक्रद चाद वर्ष ठक न्यायशासका विशेष अन्यास व चिचन किया । इसके बाद वे अवहायद बहुँचे चाँडा उन्होंने औरंगचेनके महोबदासं नामक गुजरातके सुदेके समझ अदारह अवशान किये । इस विद्या और कुअब्दारी आकृत होजर समीने पं. यदी-दिवनजीको 'उनाप्याय' पहके योग्य समझा । श्रीविजयदैक्स्ट्रिके शिष्य श्रीविजयप्रस्मृति उन्हें सं. १७१८ में बाचक 'उनाप्याय' पद सम्बीण किया ।

षि. सं. १७४३ में डमोई याँच, जो बडोदा स्टेटमें सभी मौजूद है उत्तमें उपाध्यावनीका स्वर्यकास हुआ, जहां उनकी पादुका वि. सं. १७४५ में प्रतिष्ठित की हुई सभी विचनान है ।

द्रपान्यायकीके क्रिव्यवस्थितका निर्देश 'सुन्यवस्थां' में तो नहीं है पर उनके सम्वयिनग, कादि शिष्य-मशिष्योका पता अन्य साथनीते पक्ष्या है जिसके वालो 'जैन वृर्वर कविशो' मा. २ ५. २७ देखिए ।

खपाप्पायबांकि वाह बांबनको स्थाप पटनाजोंका वो संवेद राजैन कर किया है, उसमें वो पटनाएँ लाल भाईकी है निनके काल ज्याज्यायांके बाग्यतिक बांबनका बोल वहाँ कर लग्छेंक होका विकासित हुव्या कि जिसके कर वर ने मारतीय साहित्यमें ज्यार खादि रहेंगेंका हो गर । उनमेरी राहिको बदना बण्यायांके बाले कालो बानेका ज्यार हुएतो न्याय आदि रहेंगेंका मीरिक ज्यादा कारिके अध्यापनकी सिननी हो न्यांने मारति बाती, गर हमर्स केई सर्वेद हो नहीं कि वे कार कालीन न वाते तो उनका शालोज व वारोंनिक हान, वेहता उनके प्रत्योगें पापा वाता है, संगय न होता । काशोज ब्यक्त भी व उत्त सम्ब वक्त विकासित न्यायायांक लात करते नवींन न्याय साला हो हो बच्चे क्यायां न कारते तो उनहोंने वैन व्यन्याहों और तहारता भारतीय साहित्यको बैन विधानको हैस्थितके वो ज्यूयों वेद हो है वह कामी संग्रह न होती।

दूसमां शताब्दांसे नकोन न्याबक विकासके साथ ही समन्न वैक्षक दर्शनमें हो नहीं विक्ष समन्न वैक्षक साहित्यों सूक्ष विक्रवेषण और रुक्ते एक नई दिखा ग्रास्थ हुई और उत्तरीवर अधिकसे सादक विचारिकास होता चला वो नगी तक हो ही रहा है। इस नवीनन्यावहत कल सुगों उपाण्यवचीके बढ़के भी ब्लेक लेताब्य दिगम्बर विद्यात हुए वो बुद्धि-प्रतिसासम्बर होनेके अलवा बीवनम्य रासवयोगी में रहे किर मी हम देखते है कि उपाच्याब्योके पूर्ववर्ती किसी वैतान। उपाच्या-विद्यान्ते नैन मन्तव्योक्त उदला सतर्क हारिक विकास मार्गिक व्यवकार्य हो है। नवीन न्यावदास्त्रके सम्मास्त्री यौर तम्मुळ्ड सभी तत्काणीन वैदिक दर्गनीके बम्पासि उपाभागवीका सहज तुर्व प्रतिमाहित्कार इतना विकसित और समूद हुमा कि फिर उसमेरी जनेड शालोका निर्माण होने क्या । उगाम्यावजीके प्रत्योक्षे निर्माणका निष्ठित स्थान व समय देना जागी संग्रह नहीं । फिर भी इतना तो अवस्थ ही कहा वा सफता है कि उन्होंने ज्वन्य बैन सालुवांको ताह प्रनिद्योगीण, गुर्विअतिस, संप निकालना मादि बहिर्दुल दर्भकार्योंचे ज्वना प्रनोचीन व स्था कर व्यापना सात वोदन वहाँ ने गये और लाई ने रहे बही एक्शा कार्योंके व्यन्तन तथा क्या सालोंके विगाणी स्था दिया ।

स्पाप्तायमंत्री सन कृतिया उपरूप नहीं हैं। कुछ तो उपरूप्य हैं फिर भी वो पूर्ण उपरूप्य है ने ही किती प्रस्त बुदिशाओं जोर प्रनय पुरुपायिक बाजीयन बप्यावसे वाले पर्यात हैं। उनकी रूप्य, अरूप्य और जपूर्ण रूप कृतियोकों बानी तककी बादी अरूप हो जाती है विकंत देलने से ही बाई संक्षेपों किया वानेशास उन कृतियोका सामान्य वर्गीकृत्य व सूच्याहृत गाउहोंके प्यानमें बा सकेमा।

चिदयर दिये उपायाचांका हाहिय सामायकपर वावांक, तार्किक हो प्रकारका होने पर सी विदेश क्रमें कोक विकासकारी है। उन्होंने कर्मतल, व्याचार, चरित्र आदि बनेक सामामिक विद्यार्थ पर सामान्त्र कैटांग्रे सा किसा है, और प्रमाम, प्रमेग, नय, संगक, मुक्ति आला, योग सावि सनेक तार्किक विषयों पर भी तार्किक कैंग्रेसे खासकर नय्य वार्किक कैंग्रेसे किसा है। व्याकरण, काव्य, उन्देश, व्यक्तार, दर्शन सावि सभी तकाकारियद सामाय विद्यार्थ विद्यार्थ पर कहीने कुछ न हुन स्रावस्थार्थ किसा है।

ब्रैलोड़ी शिंक्ष उनकी कृतियाँ संख्यात्मक भी हैं, अविपादनात्मक भी हैं, और समन्यपासक भी। वस वे खब्दन करते हैं तब पूरी ग्रहंगाई तक पहुँचते हैं। अविपादन उनका सूरम और विवाद है। वे बब योगशाब वा गीवा व्यादिक सल्लोक चैंन मन्त्रमक साथ समन्यय करते हैं इस उनके ग्रम्भीर चिरक्तका और व्याव्यात्मिक यानका गता चलता है। उनकी अनेक कृतियाँ किसी अन्यक्त प्रयाद्धी व्याद्धां न होकर गृह्य, श्रीका वा तेनी हसके स्वतन्त्र ही है, चय कि अनेक कृतियाँ प्रसिद्ध पूर्वावार्विक प्रश्वोत्ती व्याख्याद्वर हैं [ज्याव्याख्यों थे बढ़े जैन और भेराग्वर । फिर भी विवादिवरण उनको र्राष्ट इतनी विवाद्य थी कि वह जपने सम्प्रदाय सावमें समा न सकी अवस्य उन्होंने 'प्रावञ्च खोमपून' उसर भी व्यिद्धा बीर अपनी दोन समाजीवना की। क्या दिमग्यर-परम्पर्स सुरुपाद्य तार्किक्षम्य विवानन्त्रके क्रिक्तर 'अष्टसहस्त्री' नामक प्रश्वके उत्तर क्रिक्तिम न्याच्या भी व्यित्ती।

सुवाती और हिंदी गारवाधीमें छिसी हुई वनकी क्षतियों का थोड़ा बहुद बायन पठन व प्रचार पहिंच ही से रहा है; बरखु उनकी संस्कृत-प्राहत कृतियोंक क्षयावन-क्ष्यायंत्रका गांगोनशान भी उनके जीवन काछसे केवर २० वर्ष बहुट तक रेस्क्नेयं नहीं आता। यही सत्तव है कि प्राह्म सी वर्ष जितने कम और स्वाह उनदक्षेत्र सुक्त इस सुरक्षित समयमं भी उनकी सब कृतियाँ सुरक्षित न रही। पठन-पाठन न होनेसे उनकी कृतियोंक उसर देखा टिप्पणी क्षित्र वानेका तो समयर रहा ही गई पर उनकी नफुट भी ठीक-टोक प्रमाणमें होने न यहैं। युक्त खुक्तियाँ तो ऐसी निक रही है कि जिनकी सिक्त एक एक प्रति रही। सम्पन्त है ऐसी ही एक एक नक्तकवाड़ी क्षेत्रक हातियाँ वा तो छह हो गई हो, या क्रियाँ कहात स्थानोर्म जित्रत-निवार हो गई-हो वो हो है हो एक स्थानवाधकी जित्रता साहित्य क्षम्य है उतने सात्रका और-टीक सुरी तैयारिक साथ क्ष्यपन क्रिया ज्ञान तो बैन परस्पाक चारों अनुवेश तथा व्यापीयक ठाविक कोई विषय

ब्दयन और गड़नेश कैसे मैंबिक वार्किक्ष्युस्त्रकोंत हारा यो वध्य वर्कशासका गीनारोग्य व विद्याद प्रास्प हुना और विस्तका व्यापक-प्रमान व्याकरण, शाहरण, अन्त, विविध-दर्शन और वर्मकाक्ष पर पदा और सूच कैश वर विकास विक्ता विक्त विक्त प्राप्त प्राप्त कि साहिष्य रही। विनमेंसे नीद साहिष्यकों वस प्रदिश्य विक्त हो सम्प्रदाय भी न रहा शा क्योंकि वारहारी तेष्ट्रणी प्राप्तवर्षित वार भारतवर्षित बीद विद्यानोकों सम्प्रदा वानाशकों भी न रहा हरिक्ष पह पुढि वरतों मही वास्ति विकास वार्मका वार्मका वार्मका भागोंने मीन्द्र रहे, विनक्त सुरूप व वोक्त्यापी प्रोप्त व्याक्तिकाल के स्वत्य वार्मका वार्मका

[सिंची चैनप्रन्थमाळा फंगाक ८, वि स १९९४ में प्रकाशित उपा श्रीक्कोक्वियवीकृत 'चैब सर्कभावा'की प्रस्तावनागेंसे]

श्रीमद्यशोविजयवाचकानां वैदुष्यमाध्यात्मिकतं च ।

हेवर : स्वा॰ साहित्याचार्यश्रीमारायणाचार्यश्री

धारायायमध्येष्य प्रन्यः सानन्तं रिदांसो 'न्यायायायं गब्दसुषदीच्छः । एती रिसता न्यायमयाः सुनरां गमीत्य बेद्वयेण बार्युणी दस्यन्ते । वद्राष्ट्रनैयान्यिका जापि तेषां चेतन्यकः हतित्रवर्ठे पर्रष्टिद्रपं दक्षा सार्वियानं कृषयन्ति विरः ।

न च केवलं राँग्नाख यत नैजुष्यं तेतं, जिन्तु कात्य-या हाण-सिनाश्वादिवायेयाथि योग्दाय वरोदस्यते । यत्तसर्थे तत्वणोत्ता-यागां विद्वाद्वात्मेवान्ते मृत्युटं जावत ११ । सर्वे-यनुपयोगित्ययेषु नैकाषु यायानु वायान्त्रम्योयसामञ्जय प्रार्थेण सिनाश्चे मद्दन्यं साहिन्यसाध्ययेष्टरस्यन् । सर्वश्येष्टर मतिरायिहद्ववर्षत्रमात्रम् । जतः एत्र च तदानीग्यत्म विचलणाग्वान् 'कृषीतीस्वार्दा' इंग्यपितुक-प्रशस्त्या तैन्या वर्गव्यामानुः ।

नैनानि वर्गीण वाद्यमातीत्वयुष्युक्तांणा एते महानानाः पाविस्तेषं भारतक्षेत्रं वेतने १०५१ एते सत्तरे प्रतिस्तिकं वितने १०५१ एते सत्तरे प्रतिस्तिकं वितने १०५१ एते सत्तरे प्रतिस्तिकं प्रतिक

सुकसवेदी श्रास भां : फूब भ्रानियर श्रीसंतिविकवछ

[dan: 1]

ि आंअरीया भनिवर ! धन धन तम व्यक्तर-के हेरी. Ì પ્રથમી સરક્ષતિ સાત્રિથી છે, સૂગ્રુરુના લહી સુપસાય; શ્રીયરોાવિજય વાચક તથા છે, ગાઈનું ગુલ-સમુદ્રાય. <u>બ્ર</u>થવતા રે સુનિવર! ધન તુમ સાન-પ્રકાસ, ૧ वाहि-वयन-४ सिख् यहेयो छ, तुक खत सुरमिद् भास, માયિ-વૃદ્ધિ-ઢેતિ કરિ છ, ગુધવન તસ અસ્થાસ ગ્રુ૦ ર સક્લ મનીસર રોહરા છા, મહાયમ માત્રમના લાલ: ક્રમત-ઉત્થાપક એ જ્યા છ, વાચક-કુલમાં રે ભાષ. ગ્ર૦ ૩ પ્રસવાદિક પ્રતકેવલી છે, આગર્ક હેંગા પટ જેમ; કૃતિમાં કૃતિ જોતાં થકાં છે, એ પણ શતથર તેમ ગુરુ ૪ જસ-વર્તાયક શાસને છ, સ્વસમય - પરમત - દક્ષ; પાહિય નહિ કાઈ એકને છા. મુત્રણ અનેસ શત હશ્વ. મું પ ' કુચાલીશારદ' તહેા છ, બિરુદ ધરે સુવિદિત; आसपिश अवि कि हो छ, बीधा त्रिदश शुरु कित. अ० ६ ગુજુજરધર-મંઠણ અછિ છ, નામે કેનોહે વર ગામ: ાતાં હું એ વ્યવહારિયા છે, નાસયથ એહવે નામ શુવ છ તમ ઘર**ની મો**ાગાયકે છે, તમ નકન મુણવંતા શ્યાતા પણ ખુદે^ર આગલાે છ, નામે કુંમર **જસવ**ાત. ગું ૮ संवत सिक्षणकेयासियें ७, २६ी कुष्तिरि^र वैश्वमासिक શ્રીનસવિજય પહિતવરુ છે, ગાવ્યા ³કન્દ્રોડે ઉલ્લાસિ. ગું૦ ૯ માત પુત્રસ્ત્રં સાધુનાં છ, વાંદિ ચરણ સવિલાસ; સગરુ ધર્મ ઉપદેશથી છા. પાસી વયરાત્ર પ્રકાસ સુર ૧૦ અહિંદ્રિયર પાર્ટિશ જઈ છે, દવે ગરુ પાસે ચારિત્ર: યશાવિજય એક્લી કરી છે, ચાપના નામની તત્ર. ગુંહ ૧૧

પક્ષમસિંહ માં અલી છે, તેસ આંધવ ગુણવંત: તેડ પ્રસાગે પ્રેરિયા છા, તે પશ્ચિ થયા વાવાંત. ગુરુ ૧૨ વિજયદેવગરુ-હાયની છા. વડ દીક્ષા હઈ ખાસ: બિઠને સાલસ્પ્રદેવાસિયે છે. કરતા^પ યેલ-અલ્યાસ, અન્ ૧૩ સામાઈક માદિ લણ્યા છ, શ્રીજસ ગુરુમુખિ આપિ: સાકર-દશ્વમાં નિષ્ટવા છ, વિષ રહી મવિ ઘવ વ્યાપિ. ગુ૦ ૧૪ स्रवत सालनवाहाओं छ, सक्नगरमां स्वयानः સાર્ધિ સાર્ષિ સંદની છાં ગષ્ટ મહાસાવધાન ૧૦૧૫ 'સા' ધેનજી સારા તિસેં છા. વીનવિ ગરું એમ: 'માગ્ય પાત્ર વિદ્યાવાલું છ, ચારધે' એ બીઝો હેમ.' ગુરુ ૧૬ ને કાસી જઈ અસ્પરોં છ, પડ દર્શનના ગ્રાંધ; કરિ દેખાઢે ઊજલું છે, કામ પડયે^હ જિન-પથ ' ગુરુ ૧૭ વચન સથી સહેરારુ લાઇ છે. 'કાર્ય એક ધનને' અધીના નાણીના ગુણ બાલતાં છ, હુઈ રસનાની ચાવ(ખ)

મિશ્યામતિ વિદ્ય સ્વારથે છા. નાપે નિજ શાસ નવીન.' ગૃહ ૧૮ મજસવેલિ સસતાં સર્ચે છે, ક્રાંતિ સકલ ગુણપોલ સુરુ ૧૯ િલાળ: રી ि थार्स ने। दर्श अपरि, नेंद्र अधुरे पीकवी है। वाव, अधुरे पीकवी-के हेरी] ધેનજી સૂગ સાહે, વચન ગુરુનું સુઘી હેત લાલ, વચન ગુરુનું સુઘી હૈત લાલ. આવી મન 6~છા હે, કહેં ઇમ તે ગુણી હા લાલ, કહેં ઇમ તે ગુણી હા લાલ 'દ્રોઈ સહસ દીનાર, રજવના ખરચસ્યં હો લાલ, રજવના પક્તિને વારંવાર. તથાવિધિ અસ્થસ્ય હો લાહ, તથાવિધિ ૧ છિ મુજ એકવી ચાહ, ભ્રષ્ટાવા તે લક્ષ્યો છે લાવ, બ્રહ્માવાન ઇમ સુધી કાશીના શહે, શકે શરુ. દિનમણિ દેશ લાલ, શહેન **હ**ંદી કરિ ગુરુરાય, ભગતિ अच અટક્સી है। सास भगति० પાછ**િલથી સહાય, કરઇવા સાક્**લી **હેંા લાલ, કરઇવા** ર કાશીદેશ-મનાર, પુરી વાસવસી દેા લાલ, પુરી ક્ષેત્ર તથેલ ગ્રુપ ધારિ, જિલાં સરસતિ વસી દેશ લાલ, જિલાં તાસિક-ક્રલ-માત્તા, ગાચારજ શાકનો કો લાલ, આચારજ લાશેં રહસ્ય અખંડ, તે કર્શન પડ્ના હા લાલ, તે૦ ૩ લદાચારિજ પાસ, લહે શિષ્ય સાતરે હો લાલ, લહેન મીમાંસાદિ અભ્યાસ, કરે વિધારસે દા **લાલ,** કરે હ

પ્રપાસિંદ મ કરસાં દ લાગાઈ છ પાર્સ ૮ તરુએ

તે પાસિ જસ ચાપુ લાશું પ્રકરશ વધું છે. લાલ, લાશું બ ન્યાય મીમાંસાલાય, સુગત જૈમિનિતથાં છે. લાલ, સુગત ૪ વૈદેષિક તિન્દાંત, ભર્યાં ચિંતામાંલું છે. લાલ, ભર્યાં વાડિ-વાટા દુરલાંત, નિમુષ-ચૂત્રમણી છે. લાલ, ભિરુષ૦ સ્મીપ્ય પ્રભાકર લદુ, મતાંતર સુગલા છે. લાલ, ભરાતર૦ , ધારે મહે દુરથક, જિનાબમ-મંત્રણા છે. લાલ, જનાગમ૦ પ ,પહિંતે લેં શ્રાપ, રેપેલા કિંગ પ્રતિ છે. લેલ, રેપેલ ,પક્ત મહારસ બાપ, લક્ષે જસ શુભાર્ય હૈંદ લાલ, લક્ષે ૦

તેહેસુ મોઠા વાદ, સરહ જન પેખર્ડા હા લાલ, સરહા નાઠા તિજ હ-માદ, સન્યાસી દેખતાં હા લાલ, સન્યાસી . પ્રાથમમા-નીશાયા, યુરતિ કંગતી હા લાલ, સુરતિ . અંગતિ હા લાલ, સુરતિ . અંગતી જો લાલ, સુરતિ . આત્મા જસ છુધ-રાશુ, વિજાવાસિ તિતિ હા લાલ, નિજાત હા પ્રાથમિકી સ્થિતા કર્યા હાલ, તાથી . જો હાલ, તાથી . જો હાલ, સહાત તાથી . જો હાલ, સહાત સાથી . જો હાલ, મહાત . સિંહુ . તાર્કુક નામ પ્રસ્થે . જો લાલ, આવ્યા . જો હાલ, આવા . જો હાલ, . આ . જો હાલ, . આ . જો હાલ, . જો હાલ,

સંન્યાસી કરિ ઠાંઠ. ગાયા એહવે ધર્સા હા લાલ. ગાયા દ

ત્માયાગાર્યનિ પાત્રિ, શુધ નહિ આગરે છે. લાલ, શુધન દીધો શાસ-અભ્યાસ, વિશેષથી આદરે હેંદ લાલ, વિશેષથી સ્થાર વરસ પર્યંત, રહી અગ્યાહિયા હેંદ લાલ, રહીન કર્મશ તર્મ હિલાંત, પ્રમાણ પ્રયાહિયા હેંદ લાલ, પ્રમાણન હ મ્યાગરાઈ સંઘ સાર, ર્યેયા સાતરો હેંદ લાલ, રૂપેયાન મૂટે કરિ મતુહાર, આગે જસને સ્ત્રે હેંદ લાલ, આગે ન પાર્ક પુસ્તક તાસ, ક્યાય ઉપગસ્યુ હેંદ લાલ, કરાયન છાત્રીને સવિલાસ, સમાપ્યાં રુપસ્યુ હેંદ લાલ, કરાયન્ય

'દુકંમ વાકી-લાંક, પરિંપરિં છપતા હ્યું લાલ, પરિંગ આત્મા અહંમકાવાંક, વિદ્યાર્ધ દીપતા હેં લાલ, વિદ્યાર્ધ ઇન્દ્રિ પરિ સુજરાની વેલિ, સદા બહુરને જિકે હેં લાલ, સદાગ ફ્રાંતિ મહારંગ રેલિ, ગ્રહી લહિસ્પે વિકે હેં લાલ, સફીગ રૃષ્

[&ton : 3]

િ ખંબામંતી—ચારી સાહેલી વીંદ વિદેશના છ—એ દેશી ી કાશીથી પાઉ ધારે' શ્રીગરુજ ઈહાં છ, જિવી દિશિ દિશિ વાદ: ન્યાયવિશાસ્દ નિરુદ ધરે વડા છા. આવે તર-નિનાદ ૧ ચાલા અહેવી હૈ! સગ્રગને વાંદવા છા. ઇમ કહે ગૌરી વેંછા શાસનદીપક શીપંડિતવરુ છે. જેવા તસ્સેં નેંઘ, ચાલાે ર **લ**ઠ~ચઠ~વાદી વિષ્યુર્ધે વીડિએા છ. તારાઇ જિમ ચંદા ભવિક ચકેર ઉદ્ધશાસન દીપતા છે. વાક્સિઝ્ડ ગાર્વિક, ચાલેલ 3 યાચક-ચારલ-ત્રસિ સલહીજતા છ, વીંટથા સવ સમગ્ર તાગપુરીય-મરાહે પધાત્યા છ, હેતા અરવ ઉદય ચાલાે ૪ પ્રેરિત પસરી દિશિ દિશિ જેજદી છે, વિબુધતથી અસમાન; રાજસભામાં કરતાં વર્ષોના છા, નિસવીં સહખતખાન, ચાલાે પ ગુજ્જરપતિને ફંસ ફૂઈ ખરી છ, હેવા વિદ્યાવાન; તાસ કથનથી જસ સાથે વહીંછા. અપ્ટાદશ અવધાન, ચાલાે દ મેખી ગ્યાની ખાન પ્રસી થયા છે, બુલિ વધારો નિબાય: આઠ ભરસ્ય વાર્જિય વાજ તેં છા, આવે યાનિક આપ, સાલાેા હ શ્રીજિનશાસન ઉત્તિતિ તાં ચર્ધ છે. વાધી તપ-સચ્છ-દેશન ગય્છ ચારાસીમાં સફ ઇમ કહે છા. એ પહિલ અક્ષાલ. ચાલેહ ૮ સંઘ સકલ મિલિ શ્રીવિજયદેવને છા. અરજ કરે કર એડી 'फाइंश्रत' में बाय: यहरे पहिं छ, इष् इरें मेहनी हारि? साहै। e ગચ્છપતિ લાયક એહવું લાધિને છે, ધારે સનમાં આપ. પહિલ્છ થાનકે-તેય વિધિસ્તું આદરે છે. કેદશ લવસંતાપ, શાક્ષા ૧૦ લીના મારત શુદ્ધ સંવેગને છ, ચાઢે સંવય ચાષ (ખ): જયસામાદિક પહિલ-માંહની છા, સેવેં ચરણ અદેવ, ગાલાે ૧૧ એાલી તપ ગાસધ્ય વિધિયદી છે, તસ **દ**્ય કર–ત**લિ** ક્રીય: વાચક-પડવી સત્તરઅદારમાં છ, શ્રીવિજયપ્રભ હેય. ચાલા ૧૨ વાસક જસ-તામી જગમાં એ જ્યા છે, સુસ્યુરુનાે અવતાર, 'મુજસવેલિ' ઇમ મુખુતાં સંપન્ને છ, ક્રાંતિ સદા જ્યકાર, ચાલાે ૧૩

[sie : x]

[માજ ગયારે આંગણિયેં-એ દેશી.]

'શ્રીયક્ષેત્રવિજયા' વાચક તથા. હં તો ન લહે ગ્રથ-વિસ્તારા રે: ગંગાજલ-કશિકાધકી, એહના અધિક અછે ઉપગારા રે, શ્રી ૧ વચન-સ્થન સ્થાદવાદનો નય-નિગમ ગણીરા કે ઉપનિષદા જિમ વેદની, જસ કઠિન લહે કાઈ ધીરા રે, શ્રી૦ ર શીતલ પરમાનદિની, શૂચિ વિમલ-સ્વરૂપા સાચી રે: જેહની રચના-અંદિકા. રસિયા જજા સેવે સચી રે. શ્રી૦ ૩ લઘમાં ધવ હરિભાદના કલિયગમાં એ થયા બીજો છે. छता यथास्य अस सनी, इतियस सुध है। यत भी दे हैं। ४ સતરત્રયાલિ ગામમાં રહ્યા, પાઠક નગર હસાઈ જ્ તિહાં મરપદવી ગાલસરી, ગાલસહિ કરિ યાતક ધાઇ દે શ્રી પ સીત-તક્ષાઈ પાખવી, વિહો ચભ અર્છ સસતશ કે. तेमाહि थी ध्वनि न्यायनी, प्रगटें निक दिवसि पहुरा रे. श्री० ६ સ વેગી શિર–સેહરા, ગુરુ વ્યાન–સ્થકના દતિયા ક પરમત તિમિર ઉક્રેદિયા, એ તો આલાસ્થ દિનકરિયા રે. શ્રી છ શ્રીપાટલના સંઘના લઇ. અતિ આગ્રહ સવિશેષિ રે. સાલાવી સુષુ-ફેવર્ડિ, ઇમ 'સુજસંવેલિં! મેટ્રે લેવિ (ચિ) દે શ્રીવ ૮ ઉત્તમ-ગ્રહ ઉદભાવતાં, મેટ્રે પાવન દીધી છતા રે. 'કાંતિ' કહે જસ-વેલકી, મુખ્યુતાં હુઈ ધન ધન ક્રીકા રે. શ્રી લ

इति श्रीमन्मद्वीपाच्यावश्रीयत्रोयित्रयमणिपरिचये 'झुक्सवेकि' वामा श्रासः संपूर्णः ॥ [३-१४ श्रीसांतिसागरू +क्ष'त्रारूनी अति]

*

માં પ્રતિ અપ્રદાયદના ચીલાન્તિસાચરજના લાહારમાં તથા ચીલીરવિજયજના લાહારમાં હતી.
 હાલમાં [વિ. સં. ૨૦૧૨ માં] વીરવિજયજના લાહારમાં ન હોવાનું જાલતુલા ચત્યું છે. સં.

સુજસવેલીના સાર

િલાળ : પહેલી 7

[સ્થના- નીચેના અનુવાદની સહત્ત્વની ભાગતોનાં સ્પષ્ટોકસ્થ માટે યથાચિત ડિપ્યણા આપાં છે તે જોવાં,]

સરસ્વતી કેવીને પ્રણાય કરી, સદ્દગુર્યા સહુયા પાધી રેશીયશોહિજય વાયકના ગ્રાથસસલયનુ બાન કરીશું. કે ગ્રાથુવ તા સુનિવર શ્રીયશોહિજયન ! તસારા તાનપ્રકારો ધન્ય છે. (૧)

નિશ્વરે ગાપનું દેવગાણુ–ચિતાયાણું જેવું (તિરાંળ) શુલ–ચાસ છે, વાકોચોનાં વચનરૂપી કરોડીએ ગઢેલું છે, તેનો અભ્યાસ પહિલભેના ^કરોહિ એટલે સમ્પર્યત્વ (સાચી શ્રહ્મ)ની વૃત્તિ કરવા સાટે કરે છે. (૨)

સકલ સુર્નાશ્વરામાં શિરામણિ, ^કઆઝમ-સિહાન્તોના અતુષમ ફાતા, ^પકુમતોના ઉત્થાપક, અને વાચકા (કળાધ્યાયો)ના કુલમાં સુર્ય જેવા આપ જયલંતા વર્તો કિ. (3)

પૂરે પ્રકાયરવામી આદિ છ^{ાદ} શુત કેવળી' થયા, તેવી રીતે કલિકાળમાં નેઇએ તો આ ક્રીયશાવિજય પણ તેવી રીતે (વિશિષ્ડ) શુત્રધર વતે' છે. (૪)

- ગ્રહ્મ વશ્વાળા વર્ષોનિજવદાની ગ્રહ્મેય લતાના વર્ષોન કરનારી ક્ષેત્રાથી આ ફૃતિતું નામ કર્તાએ ' મુજબવેલી ' રાખ્ય છે
- સીધરોવિજયછ, તે જસદાદુ મોદ્ધીરસરિક્કના ક્ષિપ્પ ઉપાંચાય ચીકવાભૃવિજયછ, તેમના દ્ભિપ ચીક્ષાશ્વિજયછ ગોલું હતા, અને તેમના ક્ષિપ્પ ચીનવવિજ્યક્કના ક્ષિપ્પ તરીકે હતા.
- સ્ત્રેમની સરફાન ગુરુવાલી અને શિશ લાયાઓની સુનિયા એવો છે કે નાસ્તિકોને મ્યારિતો જનાવે, અધ્યોતિ ધર્મો જનાવે, અલલાયુને સલાગુ જનાવે તે લક્ષા ક્ષેમ તો લહાના મૃત્ર સ્ત્રબૂલ કંદે અમાલ, સરકાલ માર્ગનો રચ્યુ વિલેક કરાવી આપે છે.
- તેઓથી ૪૫, આગમાનું પાત કરી કર્યા હતા. ઢેન્લમાંના સિદ્દત્તિતિ ' આપમ' શબ્દથી આપખા-વવામાં આવે છે.
- મૃતિ અને મૃતિષૂબ વિરાધી ગતો, કિયાલાયક જવાસ્તીકાસ પ્રકાળ શુષ્ક રિદ્રાનોના તેમજ અન્ય અનેક મચ્છે કૃષ્યોને શાસ અને તકંળળદાસ ઉચેકી નાળનાસ કહા.
- 'साम्यय प्रथम प्रश्नः । कार्यकाने नवीच्यः सम्पृतिक्षेत्रनकातः ।। भरम्बुः स्थून्यरः भृतक्रेनकेनो हि एर । मारुपी के क्ष्मार वर्षः पूर्वः अक्ष्यरकारी न्यादि छ 'वृद्यक्षेत्री' थथा. न्योदः पूर्वना ज्ञानराणी

વળી, તેઓશી જૈનશાસનના ચશર્ની વૃદ્ધિ કરનાર, સ્વસમય' એટલે પોતાના સિદ્ધાંતોના અને 'અન્ય મતો ને શાસોના દશ-ગ્રાતા હતા. તે ઉપરાંત તેમનામાં બીજા સે કેશ-લાખા અનેત્ર્યા સદુસણા હતા કે એથી તેમને કેઇ જ પહેંચી શકે તેમ ન હતું. (પ)

તેઓ 'ફુંચાંલી ચારદા (ગૂઝળી-સસ્સ્વતી)ના બિરુદથી સારી રીતે લાધોતા થયા હતા અને જેવું બાલપાયું લીલામાત્રથી (અલ્પ પ્રયાસથી) દેવતાના શુરુ ખૂકસ્પતિ જેવાને પાયુ છતી લીધેલા હતા. (ફ)

ગૂજર-સ્મિના શક્ષમાર રૂપ ^{૧૦}૯-નોહું' નામે ગામ છે, ત્યાં 'નારાયક્યું' એવા નામવાળા વ્યવહારિયો (વહ્યુંક) વસતો હતો. (૭)

તેને ^{૧૧}લ્સાસાગાર્ટે નામની ગૃહિથી હતી, અને તેઓને ગુલ્લાંત પુત્ર નામે 'જસવ'ત' કુમાર હતો, જે પુત્ર ઉચ્ચરમાં હશુ હેલા છતાં શુહિમાં વ્યયથી–મહાન હતો. (૮)

અહિલાગોને ' કુન્કેન્ગિ' ની કરવા આપવામાં આવતી હતી હરણ કે વેમાં સંપૂર્ણ શાસ-રિલ.ગોને જણાવાળા ક્ષેત્ર છે સર્વાત ન કેના અર્જા સર્જાતનાં એની જ પદાસ્ત્રીની ભાગમાંને કેનેનાર ક્ષેત્ર છે. સ્વાત બુંગરસની માત્ર પ્રીયુક્તિ હિલ્લામાં અંતાના સત્કારા કાર્યો એન્દ્રે સેન્દ્રને કેન્દ્રનોના સ્વાદ્ય સેને છે કે સે ક્ષ્માં વર્ષોમાં (અલ્લા છ બુન્કેન્લરીમાં પણ) આપો ચહાતાની પુરુષ થયે તથી સ્ત્ર સુપ્તાસની આદ્યાસ એક્સા કાંગ્રેસ જ હ્યું છે સેખ નહીં, પડા સ્ત્રેય તબ સપ્તાર્થિક અને પરિદિત પહેલા શ્રી માર્ગાલ્યક્રમાં ક્ષ્માં પોતાનો સ ૧૭૦ ટર્લા સ્ત્રી પૂર્ણ કેનેલા 'પર્યાસાઈ ત્રાનો સ્ત્રય કે જે પુદ્ધ શ્રીશ્રીલિંભક્ષ્યાઓ સક્ષ્માંનો હતો, તેના પ્રકારિતા અલ્લાવે છે કે:—

> तर्क-प्रभाग-नवमुक्यविनेनवेन, प्रोद्वाधितादिसमुनिभृतदेविरसा | सकुर्यकोविज्ञयदानकराधिमुक्यक, प्रन्येऽत्र वस्युपकृर्वेत परिप्रोधन से ।

—તાર્ક, પ્રમાણ અને નવની પ્રધાનવાલમાં ત્યિયન વડે પ્રાચીન યુનિઓનું કુનીવરીપણું પ્રગ્ન કરી ખતાલ્યું કે (સેટલે કે પોતાની વાનપ્રતિસાધી ભાવાં આપ્યું કે કે અવાલના કુનોવરીએ આવ્યા અપાય દાત્તી હતા) તેવા, અને વાયત્રદાહમાં ગ્રુપ્ય ચીધકોર્તિત્ય લખ્યો એ ક્ષેત્ર પરિશયનાદિ કરના વડે માત્ર પર્વ ઉપાય કરેલી છે. ખીછ રીતે શારાયો તો અન્તિસ કુનોવચીની સાફ્રેટ થા 'અન્તિસ કુનપાયરાધી' હતા, ત્યાર પછી ચાલો સુત્ય પ્રકાચી નથી.

- 'સમન' એ સસ્કૃત શબ્દ છે તેનાે ગૂળવાની અર્થ સિલ્લન્ત-શાસ્ત્ર થાય છે.
- ૮. સાંખ્ય, યેક્ષ, વૈક્ષેવિક, ન્યાય, વેશન્ત, ગૌંદ વગેરે.
- ભાગે સાક્ષાલ સરસ્વતી જ મુખ્યારી મીત્રકોલિજવરૂપે રહી છે કે શૂ !
- ૧૦. કન્લેડ્-એ ક્લોલ પાસે નહિ પણ કુલ્યોની ૧૨ ગાઉ અને ધીરોજથી ત્રફેકગાઉ ઉપર છે. શ્રીકૃત સા. દેસાઈએ ક્લેલ પાસે લખેકું છે તે બરા ૧૨ નથી.
 - ૧૧ સૌભાત્ર'ફે'-લેવીના અર્થાંથી 'ફે' વપરાવેદ છે.

^{૧૨}/કુચુગેર' માં ગામાસું (ગામાસ્થી કર્લિક સુધીના ચાર માસ) કરીને સંવત ૧૬૮૮માં પંડિતવર્ષ ^{૧૭}શ્ચી**નચવિજયજી** ગતકપૂર્વક 'કેન્છેહું' ગામમાં પધાર્યા. (e)

માતા સોલાગઢેએ પુત્ર સાથે ઉલ્લાસથી તે સાધુ પુરુષનાં ચરણામાં વદન કર્યું. અને સદ્દયુરુના ધર્માપદેશથી જસવંતકુમારને વૈશસ્ત્રનો પ્રકાશ થયો. (૧૦)

^{૧૪} અવિકિશ્યુર-પાડેશ (ગુજરાત-પાડેશોમાં જઇ તે જ શરુ પાસે જસ્વાંતદુધારે ચાન્ત્રિ (ત્રિકા) હાંધુ અને તે વખતે ^{૧૫} સ્ત્રીયિજીય? એવું તામ સ્થાપત કરવામાં આવ્યું. એરલે હવે તે તામથી એલપાયા શાવ્યા. (૧૧)

થતી, બીજા 'પદ્મસિંહ' જેઓ જ સ્વંતકુઆરના લાઈ હતા અને સુવૃત્તં હતા, તેમને પ્રેરણા કરતાં તે પણ ત્રતવંત રચા એટલે મહાનતો લેવા હાસ ચારિત્ર અગીકાર કર્યું. (તેન્દ્ર નામ ^{૧૬}પહેલિજય સખ્યું.) (૧૨)

^{રાહ}નડીદીક્ષા માટેના "ચામ-તપ અને ^{૧૯}ટીદિશ-વૈપાસિકાઉક સુત્રના અભ્યાસ કરવા (ચેલ્ચલા પ્રાપ્ત થતાં), આ અને ઝુનિ-અધુચાને ^{૨૯}સાં, ૧૬૮૮ ની સાલમાં ^{૨૧}તપાય⁴મના આચાર્ય ^{૨૧}ટીપિજચદેવસ્તૃતિના હસ્તે વહીલીક્ષા આપવામાં આવી. (૧૩)

- આ 'પાટસૂવી (ક્લોલ અવવાના માર્ચ) નજીકથા જ આવલું છે. ઐતિકાંશક 'વિશ્વપ્રદૃતિ' આદિ સર્જ્ય પ્રયુપાયા કુચકર્વારિ તરીકે તેને ઉલ્લખ નથે છે.
- ૧૩. જપાર્વ-કૃષ્યરના લ દિ ટ્રુટ્ટ કરાર મા મહાપુષ્ય કેતા હિમ્મ હતા તે માટે દિમ્મણી તે ૨ લુગે. ૧૪-૧૫ 'અન્કલિવ' તામના લાલાહતા તાન્યી ઓલખ લુ વર્તમાતમાં મૃતિ જ્યુર ક પ્રસાપમાં હૈતે-ધાર્યની કોક્ષામાં સ્વરત્યક્રમનું તામ બદલી, તેની જન્મત કિ સહિત માનું કોઈ પણ પ્રમાનક તામ રાખવાની પ્રમા છે એવી ગૃહરમ થાનના તામને મૃત્યુલ જ તામ પ્રધાવારા માન્યુ
- ११. शीर्ध्वक्वश्र्मे। इस्तेण 'न्यायणं अवाव नी अक्षत्तियां-'प्रका सच च वस्य 'पश्चविक्रयो' वातः हुनी सोवटः'-जे पुलिया क्ष्में छे.
- જૈનધર્મમાં પ્રથમ લઘુ/દેશા આપવાતો અને અક્ષક ચાંગ્યના આવ્યા બાદ પુનઃ વડીદીક્ષા આપવાનો નિર્ધ છે.
- રેડમ-તપ એટલે લ્લુડીમાં જાદ સરાદાન લક્ષ્યુલા અમે મામના એક પ્રમાણમ તપ અને વિધિ બતાવવામાં આવ્યો છે.
- ૧૯. એ નામના સત્ત્રથ એ દીક્ષા બાદ પ્રારક્ષ્યાં જ લક્ષ્યાવવામાં આવે છે.
- સ ૧૬૮૮મા વહીંડોણા આપવામાં આવી છે એ હિસાએ તેમણે ૮-૧૦ વરસની ઉત્પરમાં ડીક્ષા લીધી હેતી એઇ એ એચી એમની જન્મસાલનો સમય સ • ૧૬૮૦ની આવપાસનો સભવે છે
- રા. જૈન સફુએમાં એ નામથી એળખાતી-જાહદ શાખા
- ગાં આગળ", તપાગજના આગાર્થ થી વેજબહી ગહેરછતા પહેર ગળનાયક શીવિજયરો તહિછતા પહેર હતા, અને તેમને તિ. શુ. ૧૬ ૧૧માં ગળનામાં શું પર શ્રેત્યું હતું.

વંડીદીસા લાદ શ્રીજરાજિત્યુજીએ સુરુપુષ્પદાર ^{રેટ}સામાવિક ગાદિ (વંડાવસ્થક સુત્ર ડિ) સુત્ર-સાનો અલ્યાસ કર્યો, જેના પરિસાધ જેમ સાકરના કલમાં ગીઠારા અપીતે (અદ્યુએ અદ્યુએ) રહે છે, તેવી રીતે તેમની મહિ ^{રહ}યુત-સામ્સ સાનમાં આપી ગઈ. (૧૪)

સં. ૧૬૯૬માં ^{૨૫}શજનગર—અમદાવાદમાં સંવ સમક્ષ સુન્નાની શ્રીયશોવિજયે માર્ક ^{૨૬}૬ સહ્યુ અવધાન ⁷ કર્યો. (૧૧)

ते वभते श्रीसवारा जोड ज्यादी शास १४% देना से स्था है हार श्रीतंत्रविश्वयक्षण ने प्राप्त दिनति इसे हैं—" या [श्रीयरोतिकवक्षण ने संत्राप्त हैं जिल्ला ने से स्वाप्त हैं ज्या है जोवने (स्वयुवयामां करते ते।) भा १९% तिला न्हान में स्वयुवानुं केश्य पात्र हैं। जोवने (स्वयुवयामां करते ते।) भा १९% तिला हैं भाषार्थ धार्य तेम हैं। (१९)

- સામાધિક આદિ વ્યવસ્થક સર્વોના અભ્યાસ ગીલુર્ગુખદ રા શહ્યુ કર્યો, તે જ્ઞાન શ્રક્ષ્યુનો 'વિનયાગાર' ધર્મ સચિત કરે છે.
- ૨૪. જૈન તત્ત્વશાનની પશ્ચિમાર્ગ 'કુન' શબ્દ દાદશભી વચેરે શસ્ત્રોના વ્યર્થમાં બદુધા વપસય છે,
- ૨૫ 'ર.જનગર' એ અગદાવ દતુ અયગ્તાગ છે.
- 25. મહા અરધાન—એહવે ધારણા દલિકા નિવાર પ્રધાના પ્રવેશે અન્યારે જે પ્રધાનો અરધાને વાય કે તેમી આ કોઈ નિવાર પ્રધાનો ફેચલે એકેએ, તે કીલો કાલ્ય ખાદ અરધાન કર્યો એક નિક કિન્દુ એક લાવે જ માદ ભર્યાને અર્થી જો કરી કર્યો હતા તેને અર્થી જ કરી કર્યો હતા તેને અને તે એક સાથે જ કરી કર્યો હતા તેને અને તે અર્થો અર્થી પાત્ર કર્યો હતા તેને અને તે અર્થો કર્યો વાય કર્યો હતા તેને અર્થો તેને અને તે અર્થો કર્યો અર્થો કર્યો અનાવવાં તે, આ ઈંગ ધારણા કર્યાં હતા તેને અર્થો કર્યો અનાવવાં તે, આ ઈંગ ધારણા કર્યાં હતા પ્રત્યો અર્થો તેમાં અર્થો હતા તેની અર્થો તેમાં અર્થો કર્યો અનાવવાં તે, આ ઉંગ ધારણા કર્યાં હતા તેને અર્થો કર્યો અનાવવાં તે, આ ઉંગ ધારણા કર્યાં હતા તેને અર્થો કર્યો અનાવવાં તે, અર્થો કર્યો હતા તેને અર્થો કર્યો અર્થો કર્યો હતા સ્થાન કર્યો હતા તેને સ્થાન કર્યો હતા સ્થાન કર્યો હતા કર્યો હતા સ્થાન કર્યા હતા સ્થાન કર્યો હતા સ્થાન કર્યા હતા સ્થા
- રા, આ ધના કરા, તે અભાગાદનાં, આક્ષ્યત્વન થતા શંધની સંગ અને સ્તત એ નામના એ સાઇઓ સં. ૧૬૦૦ પહેર્ન વિશયન હતા તેઓફે સ ૧૬૮૦ ના કુમળુંથી શનશાળા માની હતી. અને સંશ્લયત્વનાંથના અહતે તો શકે. કૃદયા હતા.

આ પૈકી સંદ્ર તા પ્રકૃતું વાય પેલાઇ અને સ્તરના પ્રકૃતું તામ પતછ હતું, તે બન્નેએ સમેને કિમ્મનોરા પ્રવાસ શાવાલ કાર્યો, તેમાં કેમ લાખ તે મેરી હનાનું ખરમ કરી સત્તું ધ પ્રકૃત રેતાનો હતો વર્ષા ભાધન સ્ટારો મોલિબનો સ્વાફિટલી સાથે વિન્નપોત્રસારિક સં, ૧૯૧૧માં મહાસારા મામાં ભાવા તારે, બિન્મગ્રસારિકની પ્રાણકારીના વિલ્ફિટલના માત્ર હત્ય દ્વારાયુ પ્રાસ્ત્રો કર્મો હતો [તે માટે 'તેન મેન્ રાજ્યાળા' અને 'પ્રામીન વીર્યમાળા સપ્તદ' છતો]

- ફાલ્યાર્થ તરિકે છી કે ગાલુક લાકિસ ગીવશોલિયલ અને વિશાના યોગ્ય પત્ર અને બીલ્લ દુષ્પાલાર્થ તરિકેની એ લિલ્યવાલી ઉત્ત્યારી તે કેવી સફળ નીવાર્ક તે ઋપણે આ 'બાસ'થી ત્રેઈ શાં!શું.
- રહ કવિકાલસર્વાત શીક્ષેત્રમાં દાગાર્વ અહારાજ સાથે લીકવાં વાવછ મહારાજનુ અનેક ક્ષેત્રોમાં ક્ષામ્ય બેવા મળે છે. જેલ કે-

બંને બાળ દીક્ષિયો હતા, ખનેની માતાઓએ પોતાના પુત્રોને રાજ્યુસીયી ધર્મ-શાયનના સરણે સૌપી દીધા હતા. ખને સરસ્વતીના કૃષાપાત્રો હતા ખને જેન-જેવેલર શાસ્ત્ર-સિલા-તોના ³° જો કાશી જઈ ⁸¹છએ દર્શનના ગ્રંથોના અલ્યાસ કરે તા કામ પડયે ³¹પ્રીજિનમાર્ગને ઉજાવલ કરી દેખાદે તેવા છે. (૧૭)

શાહ ધનજળાઈનાં વચના સાંલળીને સદ્દશુરુદેવે જ્યાલ્યું કે, 'કારી જઈ લક્ષાવવાનું કામ ^{લક્}યન–લદ્મનીને ગામીન છે, કારણ કે નિના સ્વાર્થ અન્ય મહિગા પાતાનાં શાસોનું ફાન આપતા નથી? (1c)

પરગત દત્તા, ખતેએ સાહિતના સર્વાય અગોતે વિકાશમાં હતો. ખતે ઉત્તર કોટિના વિદાન દત્તા. ખતે તત્તન ગ્રેપના સમ્પેકો હતા ખતે ગ્રાહન-સરેફત વ્યાચાના પરંપ ઉપાસર હતા. ખતે તૈત્રતારાત્ત્વા પૂર્ણ વર્ષાકાર રેલેદેકા હતા. ખતેની વિદ્વારા તૈત્રેનેતર સચાલના વિદાનોને સાત્રંદાભળે શ્રાપ્યત્વે તેથી હતી અને આત્રેય છે. આપ એંચના છત્રતની આપક ખ્યાલ કરનારને ઘણી પક્ષી સામતાઓ મળી આવશે.

ફેડા એકના સાહિત્યસર્થન પાળળ રાજગેરણા પ્રધાન હતી ત્યારે ભીજની પાળળ અંત-પ્રેરણ સુખ્ય હતી. એક સાહિત્યોએ અદમ્યાપીની પહિંદળો ગઢલાચાકરણ રચી ભગર મન્યા તો બીજ 'ત્યન્યાર' તે પીતાના વિચારોનું વાહન જનાલીને અઘર જન્યા વચેરે અંતેક બાળતો વચેન્દ્રે સામર હોવા એક ક્ષે

ક. કાંધી એ ઉત્તર લાગ્તમાં આવેલા તેલ હંજુ જેની ગુખ્ય નવરીનું સંસ્તૃત તાળ વારાણસી-તેનું લેલ લાકામાં સાંગમાતું હતા નાગ અનારાસ છે. કાંધમેર પહો કાંધી કેંદો વર્ષોથી વિદ્યાલું લાય રહ્યું છે, તો સરસ્તતીએ નિરાસ કોંધે હતાથી તો, તાતા વેલી પ્રસ્તુ છે કે અન્ય સ્થળ કાંતો આ સ્થળની લીધા તે શાલામાં છે ઉત્તર પ્રકાર કિંદો પ્રસ્તુ છે કે અન્ય સ્થળ કાંતો આ સ્થળની લીધા તે શાલામાં છે ઉત્તર નાતા કોંધી સ્થળ કોંધો કે શેલ અનાને સામાન્ય અનુકાર છે, તો તે પત્તે ખાતાસમાં દરે કાર્યાના પ્રમાન, ક્લિખ પાંદુ એનું સોરા વિદ્યાલું હતા, તેઓ લાલ પ્રવાસની સ્થાપીયાં સ્થાપીયાં હતું, તેને તો કાંધા બન્યાય તો ક્લા કુંદા કાંધો અનાય તે કે કાર્યાના પ્રયુ ક્લિખ કાંધો હતું કે તો કાંધા બન્યાય તો કાંધા કાંધો કાંધો

અને વળી, સર્વનય સમ્યત જૈનકાર્યનનું સર્વોપરિષણ સાનિત કરી આપનું ક્રેમ તેણે એકોરી 'નરોપી અનિકન તમાત્ર ક્ષિતિનો અભ્યાસ કરવે જ એઇએ

- ક1. ૧ જૈત, ર સાંખ્ય, ૦ રોગ, ૪ વૈદ્ધાંક, ૫ સીમાંકા, ૬ ભીક. નીજી રીતે—સાંખ્ય, ચેા, વૈદ્ધાંક, ત્યાર, વૈદાન્ત—માં છ દર્શના મારૂપ છે. મહુદર્શમાં સુધી સુદ્ધો પદદિત તે માન્યતામાં પ્રતે છે.
- . ટર. પર-પક્ષીય કિલ્લાનોના જાગવાલ કર્યા લિવાય રવ-સદસ્થાપન કઠી ન વર્ષ શકે. વળા, તે વખતે કાઈનિક વિદ્યાનોનુ ચહત્ત પણ ખૂત જ ગકાઇ આ ગંધી દીર્વદિકને શક્ષ્યાં રાખીને કાંધીની સ્થાના જન્ય પાળી હવી
 - રસ, વિદા ત્રણ પ્રકાર મળે છે, એ નીતિવચનનો પક્ષ્યો સુરદેવના વચનમાં પક્ષ્યો છે, આ રહ્યું તે નીતિવચન– "ગ્રહ્મપુષ્પણ વિચા, વુષ્પક્રહેન અનેન લ ા લવલ વિચ્ચા વિચા, વર્ણને ત્રોષ્પરસંપાદ્ધાં" તૈય વિચ્લો) !! "

આ 'સુજસવેલી' કાવના સ્થવિતા ^{તમ}શીકાન્તિવિજય**છ કહે** છે કે જ્ઞાની. પુરુષેના ગુણેતું કથન કરતાં સારી જિલ્લા નિર્મલ થઈ અને આ સુજસવેલી કાવ્યને સંભગતાં સથગા ગુણોની પુષ્ટિ થાય છે. (16)

[@a : offer]

ગુરુષ્ટનું વચન સાંભળીને સુધી ગાવક શાહ ધનષ્ટ સ્કૂલએ સનના ઉત્સાહેપૂર્વ'ક કહ્યું કે, 'રૂપા નાલાંની એ હત્વર ^{કપ્}દીનારના હું ગર્વ' ગાપીશ અને પ્રહિતના તચાનિધિ-યયાયોત્ય તીતે વારંવાર સત્કાર પણ કરીશ. (૧)

'માટે મારી એવી કેચ્છા છે કે તે તરફ જઈને તેસ લાલાવો.' આ સાંલાળી સૂર્ય' જેવા તેજના ગુરુએ કાસી તરફ વિકાર કર્યો, અને તે સાવકે હું હી કરી (લખી) તેથી શુરુરાજે તે સાવકેના લાઈલાગુલ કળી લીધા, અને પાછળથી સાકાય અર્થે (નાલાં સળી શકે માટે) તે ⁸ દૂં હીને કાસી સોકાલી આપી. (૨)

કાર્યો દેશની ^{અન}નાવાચી નગરી છે, જે ફેંગના ગુલુ-મહિયાને લદયમાં લઈને ત્યાં ક'દ્મારસ્વતીદેવીએ પાતાનો વાસ કર્યો છે. ત્યાં તર્કિક-કુલવા સર્થ સરખા પડ્ડાઈના ખખંડ રહ્યાને બાલુનાર એક લાકાયાર્થા હતા કે જેની પાસે સાતરોદ દિગયે મીમાંશ માહિ દઈનોનો અભ્યાસ વિદ્યાના સર્યપુર્લ કરતા હતા તૈયાની જ પાસે શ્રીશ્રોદિતભાજી પીતે વાલું પ્રકારોક લાલુલા લાલા. ³⁶-સાય, સીમાંસાલાન, સુત્રત (બોહ.), જેમિનિ,

- 27. મુજબનેલીના કર્યા પીકોનિવરુપથ્ટ એ ક્યા છે? તે ખાબનાં તે પીમાંકતવાલ દ દેશાઈ તેમને માર્ગિવરિપિત્રપથ્ટ શુધાવાલના કિલ્મ તરીકે તે તે પાપામાં પીનિવરિપ્તિત્રપથ્ટ શુધાવાલના કિલ્મ તરીકે તેમાં મોં પાપામાં પીનિવરિપ્તિત્રપથ્ટ શુધાવા તરીકે ફોલાની પોલાવાલ કરે છે, પરંતુ એ વરાવાં એક ખીબા કોનિવરપથ્ટ પણ થયા છે. ફેલાપી કૃષા કે તેને તેના સ્ત્રાપ્ત્ર નિવાર્ય કહ્યા કરી કહ્યાં તેની.
- ૭૫. એક દીનારના વ્યક્ષી રેન્સિ થતા હતા. આ નાહું પૂર્વ કેમતુ હતું. એંચ જ્યુવત્કસ્પાસમાં માં મહ્યાઓ છે. 'દીનાર' મુનર્જુ અને રજત-એમ એ પ્રકારના હતાં. સપ્પર્શની ક્રિમત રુપત કરતાં વધુ હતી.
- રફ, જૂના વખતમાં કુડી લખતામાં આવતી, અત્યારે પણ હુંલીને રિવાજ છે. અત્યારના સુધરેક્ષા દ્વાપાં તેત સ્થાન બે કના 'સ્ટેકા 'એ લીધ છે
- કહેવાય છે કે સરસ્વતીનું પ્રથમ નિવાસ સ્થાન 'ક્ષ્મમીર' હતું તે ત્યાર પછી કાશી થયુ તે તે અત્યારે પછ ગાલું જ છે.
- સ્ટ ન્યારમાં પ્રથમ પ્રાચીન ન્યારનું જ અહિતન હતું. પરંતુ વિચની દરાયો કરી પછી શાંતમાં નખ ન્યારની તત્ર્ય રિદ્યા પૂર્વી, તેતું અધ્યયન અર્જ્યાપ પર્યંત ચાલુ રહ્યું છે. પ્રાચીન નાય અને નખન્યાય ભગ્ન વચ્ચેનો લેઠ-નલિક-લેલી અને તેતું સ્વાય સ્થળન્ય ભેતું છે. શું હિમાનોએ ' પ્રાદેશનની સાથી ' ચિલ્ડાટ શે] ભેવા સર્જકારીના આરાયેલે ખેલા સ્થાપનાર નખન્યારનું અધ્યયન ભવાય કર્યું ભેત્રિએ.

વૈદ્દેપિક અહિના તિહાનો સાથે ^{કર}ાએ તામ હિં તેના કર્યટ ન્યાય કર્યોનો પણ વ્રદ્યાસ કર્યો. જેથી વાદીએના સમુક્ષી ન છતી શક્ય તેવા અને પદિતોમાં દિવસિષ્ઠ થયા. તેમણે સાંખ્ય અને ^{પ્રદ}12લાકર લદું [પૂર્વમીમાંથા]નાં મહાદુર્યમ (સુવના) મત-મતાંતરાની સ્થનાના વ્રદયાસ કરી જિનાવમ-તિહાતો સાથેનો સચન્વય પણ કરી લીધા. (3-X-પ)

- અધ્યાપક પંડિતાએને હેંચેશના કુવેશ જણાતો, કેંગ્ડ છુંહિશાળી શ્રીઘરેશનિજયાએને અધ્યાપ કરવામાં મહારસ હાત્ર્યો. હતો, તેઓક્રીએ ^{પ્રદ}્રતાણ વર્ષ કુવી સતત ને પૂજ ^{પ્રદ}્રતાણ વર્ષ કુવી સતત ને પૂજ ^{પ્રદ}્રતાલમપૂર્ષ કે અલ્લાસ કર્યો. એવામાં ત્વાં વૈદાર કંઠચી ઘત્રી અવેલા એક સંત્યાસી સાથે, સર્જબન-સમસ શ્રીયરોલિજયાએ વાદ (શાસાર્થ) શરૂ કર્યો. તે સન્યાસી શ્રીયરેલિજયાએને પ્રદાલનો પ્રવાસ તે તે છે પહાસન પ્રદેશ મેં શ્રીયરેલિજયાએ પ્રવાસ તે અલ્લામન અંગ એક પ્રધાન એવા માર્ચનો આપણ પ્રધાન સ્વાસ્ત્રો પંચાયત માર્ચનો આપણ પ્રધાન સ્વાસ્ત્રો પંચાયત—અર્ધત તેમને વાજને-માન્સ્ત્રે સદેશ સાથે વૈદાના વિજેતો સાથે સ્વાસ સ્વાસ્ત્રો પ્રધારો,—અર્ધત તેમને વાજને-માન્સ્ત્રે સદેશ સાથે વૈદાના વિજેતો સામે અલ્લામાં આપણ (.4-છ)

ત્યાં અવીને ^{૪૧}વારા**ણસી**–ત્રીપાર્જનાથની સ્તુતિ કરી અને તેસાની ^{૪૫}ન્યાય-

- મીમાસામાં ગે પ્રકાર છે. (૧) પૂર્વ મોર્યાસા (૨) ઉત્તર મોર્યાસા. પ્રશાકર લઇ એ પૂર્વ મોર્માસાના સમર્પદ પ્રપાર નિકાન હતા.
- કર. કિલલ્લોએકમાં ૧૦ કે ૧૨ વર્ષ સ્થાની વાંત્રેય જાણાય છે પણ ઉપરાર્તું કચન એસ સ્થારે છે કે તેઓ કાંધીમાં ત્રણ વરસાજ રહ્યા હતા.
- ૪૩. આ શ્રમના જ પરિસૃષ્ટિ પાપર્યનમાં નિષ્મુત થયા. સમન્વર દક્તિ કોલ કલાઇ ખાતી શક્ષી અને દેવી દર્દનોની મહત્ય વર્ષની વિભિષ્ટ કરવાની મિત્રિલ પણ લભ્ય ઘર્ષ અને તંબનાવતા આપાસ્થા ભ્રમ્ભાવતા ફર્યાવે તૈબી સહીતોક શાહિતમાં-તત્વાવતી દૈશાને, તમે તંબનાવતા આપાસ્થા ભ્યાની પાર્ટની હવે કે હતાને ભ્રમુપૂર્વ વખતાર આપો તે તત્વનાવતા અને લાહતે હતાને તે ત્વનાવતા અને લાહતે સહિતાના સામને લાહતે સાહતા સ્થાન સ્થાન લાહતે વાર્યાનું સ્થાન લાહતે વાર્યાનું સ્થાન સામને લાહતે છે.
- YX. કાલી જેવા દ્વારુખા પૈતામાં બઇને વ્યવાધારણ વિદાબ વધાના પાત્રિના પાત્રસ્તે ત્રીલખે તે દ્વારે વિદાબીનો વધાન વર્ગ્ય હિતામણે લાદ કરી વ્યવસાદ એકવા એ કંઈ નાનીસની ધના ત્રી. એક પ્રત્યાદી કારીમાં લાદી અને વધા તે કલ્યા કહ્યાં ત્રી અને પ્રત્યું એ પ્રવેષ વ્યવસાદ ત્રી તે વધાના સાથી લંબ દિવસ પ્રત્યું એ પ્રવેષ વ્યવસાદ ત્રીને વધાનો ત્રી તે હતા કાર્યન્ય પ્રત્યું હતા કરણ કર્યું હતો એ ત્રીન સ્ત્ર કર્યું હતા કરા કર્યું હતા કર્યું હતા કર્યું હતા કર્યું હતા કરા
- ૪૫. જાલાગરાં 'વાર લુધી પાર્ચનાય ' ગ્રે ગ્રેક લીધીરૂંગ રચાન હતું તે ગ્રામ્ટે પણ છે. વારાણમી(કાધી) તે ૨૩ માં તીર્ધ કર શીધાર્ચનાણની લન્ગ વગેરે કલ્લાલુકાવાળી સૃત્રિ હોવાથી તે હેટેતેણ તીર્ધ કેઠ મનાઇ.
- ૪૫. અહીં કવિએ 'ન્યાયવિશાસદ' નિર્દેશ ઉલ્લેખ કરેલ છે પરંતુ પહિતસ્ત્રે ભેગા થઈતે

૪૦, તત્ત્વ-ચિન્તાર્માણુ એ ન્ય વસાઅનો આંતરકત્ત્વના પ્રાચીન ગય છે.

વિશારદ' તરીકેની મહાઠીતિ થઈ. ગા પ્રમાણે ત્રણ વર્ષ મુધી કાશીમાં રહીને ^{૪૯}/તાિકિ'ક' નામ ધારણ કરીને પંડિતરાજ શ્રીચરાેવિજય દેશશીથી આગા નગરે પધાર્થા. (૮)

ત્યાં ^{૪૭}આગા શહેરમાં પણ ^{૪૯}ચાર વર્ષ પર્યન્ત રહીને વિદ્વાન ન્યાયાચાર્ય પાસે આ પડિત શ્રીયોગિલ્યવાગ્ગ વિશેષ ગાદરપૂર્વંક એટલે અતિસૃક્ષ્મતા ને ઊંદાષ્ટ્રથી કઠિન કર્કશ અને પ્રમાણીથી અતિભરપુર તર્કના સિંહ ન્ડોને અવગાહી લીધા (૯)

શ્રીયરોપિજયછની વિક્રવાથી આકર્ષાઇ આગાન લાક્તિવત શ્રીસ ધે તેમની આગળ અગ્રહપૂર્વક ^{૪૮}નાતસ રૂપિયા લેટ ધર્યો, તેને ઉપયોગ ઉમંગધી પુસ્તકા હૈવા– લખાવવામાં અને પડ્ઠાં (પાટલીઓ આહિ) બનાવવામાં કર્યો અને પછી તે વસ્તુઓ આનંક ને ઉ.સાદ્ધર્યા દિશાલ્યાસીઓને સમયેલ કરવામાં આવી. (૧૦)

ત્યાંથી રિહાર કરીને સ્થળે સ્થળે ^{૪૯}ફુર્દમ વાદીઓની સાથે બાતબાતના વાદો કરતા, તેમને પરાબિત કરતા, વિદ્યાઓથી દી પતા સીચરોપવિજ્વણ ક્યમહાવાદ નગર(શુજરાત)માં પદ્માર્થા.

સ્મા પ્રમાણે આ સુચરાની વેલીને જે સદા લાલ્યો, તે મહા આનદના પૂરને પ્રાપ્ત કરશે---એન શ્રી કોલિવિજવજ કહે છે (૧૧)

પામાં પ્રાપ્ત કરી હતા અંગ રુષ્ટ શબ્દોમાં વચ્ચુલ્યું નથી મેડા વ્યત્તિ એક વ્યક્ત થય છે કે તેમને તે પક અપૈયું કરવામાં આવ્યું હતું અને તેમએ તેમ તેમ વ્યક્તિ માર્ચના લાધી કરીના વિદાનો મન્યુંગ જન્યા હતા અને તેમએ એકોંગ્લ થઈને કરતાત નિર્ફાયી ત્યારતા હતા. એ તાત તેમોશીએ જ ચયુતા 'તેને તકેમ ખેતી 'વર્ષ વ્યાયવિશાસ્ત્ર સચિવ્યું ક્યાર્થના ક્રાફ્યું સાફયાં ત્ર માર્ચના ક્રાફ્યું સાફયાં કૃષ્ય ક્યારતા કૃષ્ય ક્યાર ક્યાય ક્યાર ક્યાય

પ્રદ. આજે પદા ઉપાધ્યાવછને 'તાર્વિક' તરીકે જ બાળખાવવા**ર્યા** આવે છે

૧૧૯ મામાં અને કાંચીમાં કુલ [૧+૪=]છ વર્ષ પલાદ કર્યો છે, ત્રોદલ વર્ષમાત્ર સં. ૧૯૯૯ મુધીના માત્રમ કાંચી-લ-ત્રામાં પલાદ લેવા અને ત્યાર પછી સુલ્લાન તરફ સ્પાણ કર્યાત સ્ત્રાને છે.

૪૮. ચ્યા પ્રયાણે સહકાર કરીને આગાના લાહિયાના લીલાયે ખેતાના વિનય, વિવેસ અને જ્ઞાનકાતિના અન્ય હોંદો મેટ અનુકાણીય લ્કારે પદ્ પાર્ચા છે. અને તે રૂપિયાઓનો લાયોગ વિલ શૉકનો જ્ઞાન કરાયુ માટે હતા કરાયાં કરતીયો. એ ઉપાયાયજના-લાયદોય, શાંભીતોમળ, રિસાગ લાય અને નિ પરંચાયલા આવ્યાં હાલા પદ્ પાર્ચ છે.

[હાળ : ત્રીછ]

[તેમેક:-વિશ્લાય કાર્યા જેવા દ્વાના પ્રદેશમાંથી વિજની મની વ્યપ્રદાવાદ પંધારતી વ્યપદાવાદની જનતાએ તેમનું શાવભીનું સ્વાયત હતું" તે વાતને હવિ વ્યા હાળમાં વર્ણ વે છે.]

અમહાવાદની નારીએ આ પ્રમાણે વચનો લ્વ્યારી રહી છે કે કારીથી ગુરુકેવ ચરોાસ્ત્રિયછ દરે દિશામાં વાદમાં વિજયો મેળવીને, 'ન્યાયવિશાસ્ક ' જેવી ત્રાદી પદ્મીથી અલકૃત વર્ષ ને, વળી જેમની આગળ વાજિયો નેસથી વાત્રી રહ્યાં છે તે અહીં (અધીત્ વાજતે-વાજતે ધામધૃમથી) પથાયાં છે માટે હે ચાહેલીઓ! સદ્યુક્ટેવને વાંદવા ચાલી.

અપ શાસનહીપક પહિતવર્ય છે, એમને જેવાને માટે અમાર્સ નેત્રો તક્ષ્મી છે. (૧-૨)

તાસચા વડે જેમ ચંદ્ર વીંડાયેલા છે, તેવી સીંતે લાટે, હાલો, વાદીએ અને પાંડિતનના વડે તેઓશ્રી પરિવર્ષ હતા. અચાત તેમના સ્વાગતમાં તેઓ સાથે હતા. શ્રીયશેષિભ્યાછ લખ્ય છવારૂપી ચક્રોશને ચાનંદ ચાપવામાં ચંદ્ર સરખા ને વાદીરૂપ મરુદ્રોને વશ કરવામાં વિષ્ણુ સરખા હતા. (3)

સાયકા ને ગારણાના રાષ્ટ્રલાયથી સ્તુતિ–ગ્રામાં કરતા, ઉત્તર ગ્રહ (પૂર્વ)ને ગ્રહ્યુ કરતા સકળ સવન્સમુશ્રયથી નીંટાયેલા [અગ્નલવાદની રતનપોળના નાકે ગાયેલી] નાગપુરીય સરાહ (હાલમાં–નાગેલી સરાઈ છે) તેમાં પધાર્યા (૪)

અમધી જા અમેદ પંડિતની જીન્નવાલ ક્રીતિ અનેક હિસામાં ફેકાઇ ગઈ જને (અમલાલાની) "જાનનક્સામાં તેમની થતી પ્રશાસને મહાબતામાને સાંસળી તેથી સૂર્ય'ર પતિ (સૂલ્ય) "મહાબતાબાને પંડિતવાર્થ શ્રીક્ષસીલ્યાહને એવાની તીત્ર દ્વેશ લગી અને સુલાબાનની વિન તિથી (ગુર્લિની મહત્તાનાં સુલક) તેમણે 'વંદ અહાર ક્ષાથમાન' સાથી ધાતાલ્યાં (૫-૬)

५०. 'निहास सदत प्यन्ते भी सिता आहीं अस्तिकं स्ती कोदानां आपे से.

પર. ભૌરમજેને શેજસતમાં સામા લીંક અફેડજનામાનની અને ૧૬૧૨ માં ત્રેટલે વિ.સ. ૧૦૧૮ મી નિર્ભાદુંક કરી અને તેની સનાવીરી અને ૧૬૧૮ સુધી માં. ૧૦૧૩ સુધી કરવા ની. એક સુધી મેડે પર (વિ. ૧, ભાગ)]માં ગુજરતના કનિકારામાં લવ્યાવ્યું છે. તેમ શ્રી મો. દ રેસાર્ધ્ર કહેતું છે. અની આ ભાગત વધુ સહીયન માને છે.

નવાગ-ખાત તાની સુરુની ફાન-રાકિતથી ખુશી થયે, તેએક્કીની સુદ્ધિનાં વખાલુ કર્યા, અને [ગ્રાસી] મહા માડેળસ્થી વાજપે-ગાજપે રવસ્થાનકે પધાર્યા. (૭)

આપી જેનશાસનની ઉત્તરિ થઈ અને તપાગચ્છની શોભા પૂચ વધી. આ પંડિત ચેરાશી ગચ્છના સાધુએલમાં અફોલા-કેલ્ડી ફોલા ન પાસે તૈવા છે; એમ સર્વ લેકિંક કહેવા લાગ્યા (૮)

અમહાવાલના શીરા થે ^{૧૩}શોલિલ્યાદેવસૂરિ ગગ્છનાયકને હાથ એકો અરજ કરી કે, ^{૧૪}મ્મુહુક્યુત' શ્રી સંશોલિલ્યાછ કે જેગની ^{૧૪}હોડ કોઈ કરી શકે તેવું નથી. તેથી તેઓ ^{૧૬}(પ્રચારસંદી) ના સાથા ^{૧૫}(ઉપાધ્યાય)પડે સ્થાપન કરવા ચેડ્ય છે. ' (÷)

તપગચ્છાધિપતિ શીવિજયદેવસ્વિષ્ટિએ પોતે, એ વાત **લહો**ને મનમાં ધા**રી લીધી.** ત્યાર માઠ પક્તિ શીચ્છોવિજયભ્રેએ સસારના સંતાપોતું ઉચ્છેદન કરવા માટે ^{પડ} સ્થાનક'

આપણને શકા થાય છે કે આવા અપર્વે કેડ્રેય શનાવધાની શ્રું પણ દિન્ત્રિ શનાવધાનીનું દર્શત પુરું માટે તેવા હતા તો અહાર કેમ દે વે માટે ટિપ્પણ ને રક ભૂઝો. વળી, ઉદ્યાપ પક્ષને શાંભા સમય સુધી શકાતાનું અનાકુશ ન હોય એવી અપેક્ષાથી મર્યાદત કરી બનાવ્યાં હોય.

- પત્ર, સપત્ર ગળ્યના સાધ્યુંઓએ તેમને નિક્રર પુરુંન તરીકે જર્ફલ્યા તે વધાર્ય છે. એની પ્રતીને અન્ય-ગન્યડીઓએ કરેલી પ્રશાસ વગેરેલી પણ બેવા ચેલે છે કારણ કે તે કોઈથી વોતના જન્મ તેવા તે હતા. અસ્ટફામાર્ગનું છે-પ્રકૃત કરવામાં તેમણે કરી પીછેલ્ડ કરી નથી.
- ૫૪. ઉપાધ્યાપછતે શ્રીસંધ 'બહુગૃત' તરીકે નિરદાવે એ વાત પશુ ખૂબ સવક છે. અને તેમાં કધી જ નવાઇ નધી.

આવા **મહાની,** પરમ અધ્યાત્મ-તેણી, આવેદણને અનંત વેદના

- પર શીભરિતા, સિંત, ગામાર્ય, ઉપાધ્યાય અને શાધુ નિયાર્યા આ પાંચ પરવેલી પુરુષો કહેવાય છે. પાંચ અની સાથે ઉશાધાયાજીને ગ્રમ્ચનાલકાર્યે સ્થાપથા અને ગામારાર્યંથા આપવા નિર્વાત કેમ ન કરી ! એ ત્રણ નિયાસ્થ્રીય છે, એવી વધુ દિધાશું ન કરતાં જાત્યારે તેર તે વાત સારોધાંથે ઉપર હોડું ધું
- ૧૮. સ્થાનાથી 'વીક સ્થાના' નાચનું ગેક તમ લેવાનું છે. તે કપાચા વગેરે તપથી વિદિષ્કુ'ક કરવાનું કેપ છે. ત્રેન ખુલ લેવાનું કેપ છે. ત્રેન પર કાર ને નિર્દાની વૃદ્ધિની વૃ

(વીશ સ્થાનક નાચતું) તપ ત્રિધિ–પૂત્રેક વ્યારકુ". મેણાની શાધનાના-ધ્યેથથી શુદ્ધ સાર્ગથી ^{પર}ર્લીલપેક્ષા આ સુનિશ્રી સંગ્રમની નિર્ધળતામાં ગ્રહળા હતા. તે વખતે ^દેજપ સામ આદિ પહિત-મંદ્રક્કી તેમનાં નિર્ધળ ગરણોની સેવા કરતી હતી. (૧૦–૧૧)

વિધિ પૂર્વક વીશ સ્થાનકનું તમ જાણકથા પછી તેના પ્રત્યક્ષ કૃદરૂપે તેમને ¹¹નાચાં – ઉપાધ્યક્ષની પદની ⁵²સ વત ૧૭૧૮, માં (ગચ્છપતિ) ⁵³શોવિજયપ્રસસ્પિશ્ચને આપી. (૧૨)

સમા વાચક-જ્યાંચાય શ્રીક્ષેષ્ટિવિલ્ય જગતમાં હવારતા ઘરાનામી ઘરા. તેઓ ખરે-ખર મૃદ્દરતિના ગવતાર સમા હતા. શ્રીકોતિ.વિલ્વજ કહે છે કે ગ્યા સુજસ્વેલીને સીલગતા હંમેશાં જય જયકાર ચાય છે. (૧૩)

[હાળ : ચાેથી]

કર્તા શ્રીકાંતિવિજયજી કહે છે કે હું શ્રીયકો.વિજય વાચકતા ગુલુનાં વિસ્તારાને પામી શર્કુ તેમ નથી. તેમના ઉપકારા ગાગા-જલાનાં બિન્દુઓ કરતાં પણ અધિક છે. જેમ ૧૧૨ ઉપનિષ્દે વેદના એક લાગરૂપ છે, તેમ શ્રીયકોવિજયજીની તય-નિગમથી આગ્મ્ય

પ્રકારની ઉત્તર ક્રોતિએ ભારાધના અન્યસ્થ કરે છે જ, તે ત્યારે જ તે પાને ચામ્ય ચાય છે ભાગેય કે. કે. પુષ્યાત્માઓ તે તપનું ભારતથત કરી વિલ્લ તે ક્યારોની વાસનાનો ક્ષય કરી ભાગતાને પહેલા અનાનો ત્રકા છે.

- પ્રદે. ઉપાંપાના અને ગિલ્ફાર્યના અને મિત્રેવસ્ટ્રેલકથિત શુદ્ધ શારે ઉપર ગાલ્યાના ગ્રાફ્યો ગ્રાફ્યો વ્યાપેલા રુમ ને અના કેવી હતી દે તે માટે ઘણાં પાની રોકના પરે વિનાશ તથે નહીં તો તેમની ગુરું મુન્તિએ ઉપયો પણ તેનુ લાપ કાઢી શકે છેલ છે ગ્રાહી હતેએ ટુકા વન્નેતા તેમના અનેત જીવનનો પણ હત્ય રિકા કાઢિયા કોઈ છે
 - દગ, જવસીના એ લાગભ્યની પદ્મી માટે વગેલા શ્રી આતાં દેવપાલાનિક્ટના શોરો પ્રવિભા શપાયાય તેમના પાક શ્રીહર્મનીઓ તેમના શ્રાક સેમ્સ અને તેમના દિખ્ય જવસોના પતિ હતા તે તપાયાઓ હતા તેમતે સ. ૧૫૦૩માં આસ્ત્રાલનાની સહ્તાય વગેરે ફૃતિઓ સ્વય છે તે સ્તિયાય અન્ય સાફ્રીઓ વગેરે શ્રીપ્રમાવક્ટના સહત્વની હતા અને વિત્ત ૧૫૦ વર્ષાઓ ગૃહ્યાના પાસ્ત્રમાં શ્રીનવસ્ત જેવા અને અપને બાર્ય રહ્યા હરી શર્માયાયાઓ મુન્લીં ખત કરાવ્યું ત્યારે છ સહત્યકો પૈકીના તે હતા. તે તાત તે અન્યતા અન્યત્વા તેઓક્રીએ જ અહારી છે.
 - ફર, પચપ-મેહીના ત્રીજ પરે વર્ષના વ્યાસર્થીના જેઓ અત્રી કે ચુવસજ તરીક ઓળખાવાય છે ભાવનું ને જ જેનું કર્તજ છે, જે અગ્રેયમંત્રણ વ્યાનમાંના ત્રાદ્ય હોય છે, તેને દેપાંચ્યાલ કરેડાય છે.
 - કર દોક્ષા લેવા બાદ રહ વર્ષના દોદ્માવર્ષાય મળો (વળ લગ્નમા ૪૦ની આસપાસ કરે) ત્યારે તેમને પલીબદાન થય
- ૧૩. વી વજવામાં મારે જ હિંપાણી માં ૨ પ્રામણે શ્રીવિસ્તારેલ્યુન્કિંકના પક્ષક આવાર્યા. આચારપૈક સં ૧૧૦ વેલામાં અને મચ્ચર્યનપદ સં ૧૭૧૧ અપ્રદાસદામાં ને સ્વર્ગવાસ સં, ૧૫૧૯ ઉતાર્યાં તે તેમોનું જન્મ રાયાન ૧૧૦ જાતોહાપુત્ર હતુ.

અને ગંભીર સ્યાદ્વાંદ્ર-વચન-હિલા-તોની રચના એ આગમ (૪૫)ના જે એક ^{૧૯}૧ભાગ-રૂપે છે. અને તે અતિ કહિન છે. આનેો લાભ કોઈ ધીર પુરુષ જ ઉઠાવી શકે તેમ છે. (૧-૨)

જેમની ^{૧૫}શાસ—સ્વનારૂથી ચક્રિય શીતાર, ^{૧૧}શાસ—ચાર્યકર્ને આપનારી, પવિત્ર, વિમળ-સ્વરૂપ અને સાચી છે, અને તેથી ^{૧૯}નવિકજના તેનું **હોરો** હોટો સેવન-પાન કરે છે. (3)

૧૪. ઉપાધ્યાયજી નય-પ્રનાશ, નિર્દ્યય-સંપ્રકાર્યો આદિ સિદ્ધાન્દ્રોનો જાનતા ને આધારાયુલ ખૂતીઓતું આકંદ પાન કરી સ્થા હતા ત્રેમ ત્રેમની કૃતિઓ ભેનારને લાગે છે અને હેલી જ સહસા પ્રત્યાનના લધુ અવતાર ત્રેમાં હોવે તેવા તેવા લાગ પડે. કરે છે. સાટે જ હેલને બુતાવનો તરીકે નિરદાવ્યા છે તે બરાબર વડે છે) આવે પણ હેલનું વચન ડેક્ટાલી ગ્રહ્યાય છે તે ' ઉપાધ્યાયજની સાધ્ય એટલે આપ્રસામાળ' ત્રેઓ પ્રસ્થિત પણ વર્તો છે.

વળી, દરિએ તેમની ફેનિએને કહિત કહી છે તે જોડું તથી. તેમની તવ-ન્યાયને પ્રમાણાદિની દેવીથી કરપૂર સરફા-ચારન દુવિએ પ્રાંત અને પ્રતિકાશાળી ચલિયાન પુરુતેથી શ્રાદ્ય થયા તેની પ્રકાર અને તાનિક વિચારીથી લરપૂર છે. તેની કહિન્યાનો અહાવન આજના હિંદોને પશુ દાય જ છે. વળી, એમની વાચી કોઈ નવથી ચારફી નથી ચાર્યા દેવા સમય તેમે. વર્ષિને ક્યા મોના ક્યાને સ્થાપની પ્રાંત કર્યા હોય તેમાં ત્યા હોય કર્યા હોય કર્યા હોય તેમાં ત્યા હોય કર્યા હોય કર્યા હોય કર્યા હોય કર્યા હોય કર્યા હોય તેમાં ત્યા હોય કર્યા હોય કરા હોય કર્યા હોય કર્યા હોય કર્યા હ

- ધ્ય, તેમની શાસ્ત્રસ્થના અને વ્યન્ય ફેલ્સિનું શું મહત્ત્વ છે. એવા પર તો એક એક મહાનિયધ વર્ષી શામ તેમ છે. એક એક નિગય પીએવા દી. તી વસ્ત્ય સારે તેવે અને, પણ એમના કરન ઉપર સ્વતંત્ર કળત-મસ્ત્રિય લખ્યાય ત્યારે જ દૂરત્યી વર્ષી શક્ય
- ૧૬. તેમના રજરેશમન માદ રૂપ- વસ્ત્રાથી માળવી લલ્લાઈના, નિસ્ક્રાથી જાણદ પરંતુ, આત્માર્થી પ્રકાર કરે. આત્મારે રસ્તા કરે આપનારી પ્રકાર કરે. આત્મારે રસ્તા કરે આપનારી તેમની લીધન કિમ્પેસની જે તેમને સાથે સ્વાર્થ કરવાની સ્વાર્થ કર્મની સ્વાર્થ કરવાની સ્વાર્થ કર્મની સ્વાર્થ કર્મની સ્વાર્થ કર્મની સ્વાર્થ કર્મની સ્વાર્થ કર્મની સ્વાર્થ કર્મની સ્વાર્ય કર્મની સ્વાર્થ કર્મન સ્વાર્થ કર્મન સ્વાર્થ કર્મની સ્વાર્થ કર્મની સ્વાર્થ કર્મની સ્વાર્થ કર્મની સ્વાર્થ કર્મની સ્વાર્થ કર્મન સ્વાર્થ કર્મની સ્વાર

हुए. क्रेसनी इतिको। क्रेनी स्वपूर्व के हे कक्षुनारने भूभ वर स्थादवाह क्रिपन्त हरें

¹લ્ટીનિકિયર્સ્ટ્રોના ગા હશુ લોધવ એટલે કળિયુગમાં 'સ્મીતન હરિસહ 'થયા આ પ્રમાણે મેં સ્તવેલા તેમના પ્રગટ અને ચથાર્થ સુણોને સાંભળીને કોઈ પણ કવિએ કે પહિતો ત્રેન કરશા નહિ. (૪)

^{ક6}સંવત ૧૭૪૩ માં આ પાઠક-ઉપાધ્યાય ^હેલોઇ નગરમાં રામાસ રહ્યા હતા.

- ૧૯. ગોલુરિસ્ટાફિઝ નામના ચારામાં અરહ્યો (અહંતર ચીતરો) વર્ષ ઉપર ઘયા, જેમણે ૧૪૪૪ મન્યા રચ્યા હતા તેઓ એક ચહ્યા ધ્રુર પર લિદાન હતા. તેમની કૃતિઓની રચના, દેશી, તે તત્મ પ્રેનિયાનના કંપના ચારા પ્રેનિયાન કંપના પ્રેનિયાના અર્ગ પ્રેનિયાના સાથે પ્રત્યાન કંપના હતી. તેઓ પાર્ટ પરંતના સ્થાન અરુત્તાની, વખાપના અર્ગ જેન્નેયાના ચાલા પ્રસ્તાનો, તે અહિત્વ લિદ્યાં આપ્યાના તતા. તેઓમાં વિલ્ડિયા આપ્યાના ચાલા પ્રસ્તાનો, તે અહિત્વ લિદ્યાં આપ્યાના પ્રાપ્તાના સાથે પ્રાપ્તાના અર્ગ વેશના પ્રાપ્તાના અર્થન પ્રેનિયા સાથે પ્રાપ્તાના અર્થાન પ્રાપ્તાના અર્થન પ્રેમના પ્રાપ્તાના પ્રાપ્તાના અર્થન પ્રેમના પ્રાપ્તાના અર્થન પ્રેમના પ્રાપ્તાના અર્થન પ્રેમના પ્રાપ્તાના પ્રાપ્તાના અર્થન પ્રેમના પ્રાપ્તાના પ્રાપ્તાન અર્થન પ્રાપ્તાના અર્થાન પ્રાપ્તાના અર્થન પ્રાપ્તાના પ્રાપ્તાન પ્રાપ્તાના પ્રાપ્તાન પ્રાપ્તાના પ્રાપ્તાના પ્રાપ્તાના પ્રાપ્તાના પ્રાપ્તાના પ્રાપ્તાના પ્રાપ્
- કેદ. વિ. સ. ૧૬૮૮ માં દેશા અને ૧૯૪૩ માં સ્વર્યવાસ એટલે દેશા-વર્ષાય પણ, વરંતો ઘયો. દેશા વપતાની વય એ અલક વર્ષની ચાન્ય રાખીએ તો તેમની વય સાવવારે—વર્ગ્યમન વખતે કર, વર્ષની ઘવ. માં ભોતા માં લદયેખના માધારે તેઓ વધુ લીલ ઝળત છરવા પામાન તેમી એમ કરી સારમ. (અન્ય પુરાચાના માધારેઓ તેઓ વીતું માધ્યુમ ૯૦ વર્ષોયા માંધ્ર શવા અપ છે. એ ચર્ચા મન્ય પ્રસાગે તેઓ લોંએ જે લાંગીય કાર્યો અમેં તે આપુખાની પ્રસ્તેક પ્લોગે સાયુ પ્રસાગે છે જીવન લાધનાઓ કરી, એ આપુત્ર મામાં લાંગને લીલી છે તાન અને તપના ગમા-અધના ભેવા વિશ્વ સ્ટેમીએ વિચેત લેશા સિલાન્સી અને લેલા વિચારીની એ સ્તાન સેટ આપી, તે માટે વિચેતી હરીએ ક્ષાલા માનવી તેઓ તામાનોક લાં કરા કર્યો લિવા નહીં રહે. છવન અને સાહિતના નિયંત અને પ્રતિકાર તેમાં તામાનોક ભાષાના માર્ચાલ વાંકા કેડ!

ગીજી વાગ એ કે બ્લારે 'સુરત્વનેલી' પ્રાપ્ત કાઈન હતી ત્યારે તેવની પાદુકાના વેખ અને તેમની સુરતની એક ગૂર્નર ફિલ્લી પ્રકૃતિ ઉપરાંથી તેમની ક્રાન્યવર્ધની સાથ ૧૯૮૫ (પિં માત્રકાર કંઈ ૧૧) ગણાવી હતી, પશુ બે સુરત્વાં તેમની ક્રાન્યને સાન્ય રાખીએ તે પ્રદુષ્ટ્ર પ્રવાસ પોડો દરે છે. ને ૧૯૯૩ ની સાત્ર એ સાન્ય દરે છે એ અને વિશેષ વર્ષો કરવાનું આ સ્વાન નથી.

વેચાનીની જન્મસાલ અને નિધે ખન્ને સમતાં તથી, ત્યાર બાદ દોકા અને ઉપાધાવપારી દુધ્ક સાલ માત્રે છે પણ ઓરિવાી નિધિ વાતી તથી, સ્વારે દહ્યું દાવડામાં જ શક્કે કે પ્રાપ્કલ એક વાત સ્વારે દહ્યું દાવડામાં જ શક્કે કે પ્રાપ્કલ એક પણ સ્વારે દહ્યું તથી, પ્રેમાસામાં કાળધાર્ય નોંધે હેમ તો દાવડા તે સ્વાત અપન્ય ના તીત તેઓક મો એક તમાર કું પાંત્ર છે અને એકી એક તો પ્રેમાનો કે તમાર કિયા કે તમે તાર કું કરો કે કે તમાર તમાર હતા કે તમાર પ્રેમાં તે સ્વાત અરુ જ લાકતો રહ્યો છે. જેનસ પે કોઈ પણ તમે દિવસ તમો હતાની ખાસ પ્રસ્તુ કે,

કેટલીક પ્રચાળ વડેરમાં ઉપાધામજની જન્મનિય કે સલ્લર્મની નિધિ નરીક મામસર સુધિ 11 67 સંધી વખે છે. તે વૃત વરેલી તકે સંવાદી લેવો જેક્કેસ અને તે ગામમાં તેઓશી ^{છા}અતશેનતપ કરી, પાપાને ક્રેપ્રક, સુર-પદવીને અલુસર્ચા— અર્થાત ^{પર}સ્વર્ગવાસી રચા. (પ)

૭૦, ડોમોર્ક વડાદરા (ગુજરાત)થી દક્ષિણ-પૂર્વના રેલ્વે રસ્તે ૧૯ ગાઇલ 🛭 માવેલું શકેર છે. તેની -- વસ્તી અત્યારે ૩૦ હવ્યસ્તી છે. તેનું ગ્રાચીન (સંરક્ત) તાચ ક્રમાંવતી છે ક્ષતકાળમાં લાંટ દેશની આ ુ નગરી ગુણાતી હતી છે. ત્યાયનિષ્ણાત વાદી ગૌદિવનરિજીના રાહ્ય શ્રીસનિય દસરિજીના જન્મ "આ નગરમાં થયેલા ત્યાં મંત્રીયર પેયક્સાહ અને તેજવાલે વિશાળ જિનમદિસ બધાવેલાં. મંત્રીશ્વર તેમ્પ્યાલે આ મહાન નગરીને દક્ષિણ સરદદનું સરકાક ચાલ બનાવતાં આક્રમણકારીથી સંગીતત ં રાખવા ત્યાં મજબત દિલ્લો ભધાવ્યા હતા અને એ કિલ્લાના દરવાળનું લખ્યં ને કલાત્મક સ્થાપતા ગુજરાતના ઇતિહાસપ્રસિદ્ધ ગણાતા અગતના સ્થાપત્માર્થનું એક ગણાય છે. એને કૈના કાઢે 🗓 વર્ષે सेंक्ष्रेर प्रवासीका आवे हैं. क्रेमां द्वीस कानेजनं स्थापत्य वह महत्त्वतं हे. क्या क्रिसा पाछण ઇતિહાસપ્રસિલ હીરા કહિયાના રાયાંચક ને રસિક ઇતિહાસ રહેલા છે. આ હિલો કે કોઈ ખ ધાઓ ते जाजतभी केवे। क्रेड अक्षेत्र याथे छ डे गूर्व स्थर सिक्टराज कवसिंहे जभाजी परंत ते બાબતમાં કોઈ ઐતિહાસિક પ્રસાવા જોવા મહત્યા તથી તેમ જ 'જાલવામાં પક્ષ 'આવ્યા તથી, પછ મ શ્રીશ્વર તેજવાલે આ દિશો મધાઓ કરે વાત શીજિના પ્રશ્નિત 'શીજારત પાલચરિત્ર'માં અતિ સ્પષ્ટ રીતે કહી છે. અને ત્યાં પ્રસ્તુત લિકો તકન નવા જ વનાવ્યાન સવવ્ય છે. માં, ૧૨૮૮ના િંગરનાર પરના વસ્તપાલ-તેજપાલ સત્રીના હિલાલેખના ઉલ્લેખથી જ્યાર છે કે કર્ભવતી તે વખતન ગુજરાતના પ્રધાન શહેરામાંન એક હતાં આજે તો સાપ ગયા તે ક્ષીસારા રહ્યા જેવે છે. ડને કંમાં ૧૭૦ રેલિલા મહાનાવક માર્ચ પ્રમુન જિન્મણિ તેજવાલે વધાવ્યું. - તેજવાલનો જ **बत्तरता हरताके बिसेएडीर्क्ट अक्टिलक्के, सम्मावेबी**द तेम कतां कार्य प्रशासने निराक्तमान तीर्घ स्वरूप લાંગ શ્રીક્ષાહ્રવામાર્થ નાથતી ગતિ અને લાઈ દેશરાયાલા યદાન ત્રનોતિષેર ન્યાયાયાર્થ ન્યાયવિદ્યારદ ઉપાધ્યાય શ્રીયદાવિજયજી મહારાજની સ્વર્ગવાસ શ્રીયથી હબોઈ ળાબામી બન્ય છે

ગમના લગાધિયાંએ અંત્રમારિ પાલપુરીનું નાલાર મનિ તેલાં ગ્રામનપાલાય અભાગાં મહિલ્યું કોમના લગાધિયાં અહિલ્યું અને ત્રાપ્ત પાલપાય અભાગાં મહિલ્યું કે તે તેની ગીજા પરમપૂર્વન લગાયાં મહિલ્યું કામ ત્રાપ્ત હતા કર્યો કર્યા હતા ત્રાપ્ત કર્યા કરા કર્યા કર્યા કરમા કર્યા કરા કર્યા કર્યા કરા કર્યા કર્યા કરા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્

ા. અતાન એટલે ગય, જ્યના ત્યાસ્ય તપ

૭૨. ૧૭૪૩ માં ઉપાંખાયછ ચોલ્યાસ તથા પશ્ચ કાળધર્થ ચોલ્યાસામાં પાત્ર્યા કે ચાલુમાંસ બાદ તે માટે કતોએ મીત રોબ્લે ઊ

— 'ત્યાં (અબિ-સંક્ષાસ્યાસથી) તેમીમ તેમામ ^{ઇન્}રાયાધિત્યુપ વર્તી છે અને તેમી પડપે જ ^{પડા} શીત ' નાયની તલાવડી ક્રિ. તે સ્તૃપમાંથી ^{ઇચ} 'ન્યાવતી ધ્વનિ' નિબ-સ્વર્ગયાસના કિસ્સે પ્રગટ રીતે પ્રકટે છે. (ફ)

(કર્તા પેતાનો લિકાલાવ વ્યક્ત કરતાં છેવડે કહે છે કે-) ગા ઝુરુરેલ સવેળી— ક્ષમેશ્વેના ચિરામિશ્વે, ઝુનવૃપી સત્તના સાગર, અને અન્યસત્વર્યો અધકારનો નાશ કર વાસાં ભાલ સર્થ જેવા છે. (છ)

શ્રીગ્રુપરાત-પાટલના શ્રીસંવના અતિ આગ્રહથી સુખરા (શ્રીયફ્રોપિજયછ)ના સુવિશેષ શુદ્દો વડે કરીને રોલાવી આ **સુખરાવેલી લ**ર્ખી-સ્વી છે. (૮)

(કર્તા) શ્રીકોતિવિજય કહે છે કે ઉત્તમ મુખ્યોના ઉત્તમ મુભ્રેને પ્રગઢ કરતાં મેં મારી જીમને પવિત્ર કરી છે, આ યશ-વેલડીને સાંભગતાં સાંભગતારના દિવસો ધન્ય થાય છે. (¢)

٠.

इति श्रीमन्महोपाध्यायश्रीयशोविजयमधि-परिवये सुक्रसनेहि-

नामा भ्यासः संपूर्णः (३-४) [श्री शातिसभ्यत्यः क्रांसरीः श्रति] अर्थं अरे क्षेत्रे रिषक्षारः :— अनि यरीप्रिक्य

७३. दूप के.से तेवना क्लोडांकना रुक्ते कावया आव्यपासची तेवनी याद तरिः अवार्गा कार्यु स्थारक क्षांत्रमा पण्ड वर्षण्यायकनी पहुंत्रनी रुद्ध विकास के ते त्यां त्रिकासीनी परित्र पहुंता स्थापिक रुप्याम व्याप्त के. तेवा प्रकास के तेवा के विकास कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार्या कार्य कार्

હંપ, એ સ્ત્રુપથી ૨૦૦ પ્રવર્શ 💹 આજેલ 'શીતતાલાઈ' નામનુ તથાવ વિશેષાન છે ને ત્યાંના લેશિ તેને 'શીતવાઈ' કહે છે.

પપ. 'ન્યાયના ધ્વનિ'ના ઉલ્લેખથી કર્યાં એમ કહેવા સાથે છે કે તેમના સ્વર્ગવાસના લિવને સ્તૂપમાંથી ક્રેકિ'નાદ∽ધનિ' પ્રગ∠ ચાવ છે. તે શું છે તે જોધવાતું–આવતાનું રહે છે.

^{*} કર્તાએ પોતાના કાવ્યમાં સુરુસવેલીના 'શાસ' તરીક કરેશ જ ઉક્લેપ નથી કર્યો.

[તેર્પવ:—અહીં જ્યાધ્યાયજીની તે અપ્રસિદ્ધ કૃતિના હસ્તપ્રતિમાં જેય હતી તેમ જ આપવામાં આવી છે.]

આધ્યાત્મિક પદ

[અંતરના અન્નભવ કદ્ગર]

(9)

હંમ લઈ ક જયને ગ્યાનમાં વાગવાદ કરત દક્ષ કાંહે, જાણ ન આવઈ વયાનમાં. હંમ ૧ શું દ્વે દ્વ સુન પર્યંથ ચીન્હોર્ડ, રહે તાહિકે ધ્યાનમાં હામ સ્વારત સ્વાર્ટિક લીને અનુશવ પ્યાનમાં હંમ ૨ લગરત લાત બહુંત નિજ મતમાં, તે કાક ન પર્સ કાંનમાં હંમ ૩ પાદ પહોંચી ગયની જાહિ પ્રમી, કહા ચોરકે તાનમાં હંમ ૩ પાદ પહોંચી જિમલા પરંકુ, કાર્ય ધ્યાર આવધાનમાં, હંમ ૪ આપ્યું ગાય રિઝાવત નાહી, હોદ ન લાન અલાનમાં, હંમ ૪ ધારન ધ્યાન સમાધિ એક્સસ, સંધમ ન સંહે ગ્યાનમાં, હંમ ૫ વાચક જયા કહી મોહ મહાલક, હાત લીઓ મચાલનમાં, હંમ ૫

મ કવિ શ્રી ગીવ' મ

સંવત ૧,૦૧૮ વર્ષે આશુ શુદ્ધિ ૧૩ દિને પં. ધનછ લખીતં હન્મણર મધ્યે લપીતં ॥ કલ્માણમરતુ : શુભં ભવતુ : શ્રી ભાગવંતછ સત ॥

૧.-' કુબ્લનેલીઆર્સમાં આપેલી આલોની પ્રાથાસિન્તા માટે અન્ય ઉપલેખોએ મહેદર રિકાલા ઉત્તેમ મેથી છે, અને તેમી તે માકેલે નીજી હતી માંત્ર કર્યા આવે છે. મારે કે માર્ચ કર્યા હતી મારે કર્યા હતી કર્યા પારા લપાસે મહત્વને પાર્ચ ખૂબ જ માર્ચિક છે અને સુરુવલેલીમાં વ્લાવરેલી અદ્યાના અદ્યાનો ભાગના ત્યાને મહત્વને પ્રાથાસિક દેશના સાથે છે. તે શું સુરુવલેલીમાં આપ્ર હાર્યકાને અપ્રાથાસિક દેશના કાર્યક મેન્સ હતો પાર્ચી કે

શ્રીગાેડીયાર્જીનાર્થ સ્તવન

·(?)

હિતમારી તે હિતકારી, ગ્રેહીયાસ પરમ ઉપગારી રે, તારી મરતિ મેહનગારી રે. તે તા લાગઈ મુઝનઈ પ્યારી રે 11 9 11 વાહોઇ છમ ચંદ ચઢાર દે છમ વંછઈ વનનઈ મારા રે. જીમ વાલ્કી ગજનઈ રેવા રે, વીમ વ્હાલ્હી મુત્ર તુત્ર સેવા રે 11 2 11 એ સાહિએ ગતર સનેહી રે, તેક્રેસ્યું વાત અંગાગર કેહી રે, સગભારમાં તિથિ પરિ મિલિઈ રે. છમ સાકર દર્ષિ લલિઈ રે It B II એ તુઝ બ્રહ્મ માટે ચિતિ ધારિયા રે, તે તેા બાઈ નવિ વીસારિયા રે, સહક્ષઈ પછિ સાંભરિવાઈ દે પરના રાજ ચિવિ ન સહાવઈ રે IL Y I મદ-માત-મનાભવ દક્ષિયા જે. પર સર તા સવલા અક્ષિયા જે. તેહના ગ્રહ જે મુખિ ભાષે કે, તે તા દરિસગ નિજ કાપાઈ રે ા પા બિહંમાંહિ ઇંક અધિકાઈ રે, પરખંતાં સુત્ર મનિ લાઈ રે, તુત્ર વચતાર્ગ સથકું સાચું દે, પર વચતાર્ગ સથકુ કાચું દે 11 🗧 11 आहे। तिभ क्यात बाहा है, अठ भनि ते। तठ सक्षाहा है, સરવંગી નચની વાણી રે, તારુ વિષ્ઠ અવસ્ટ નિવ હાણી રે II IS II આજ અમિય ધનાયન વૃદ્ય રે, સમક્તિલ્છી સર તહ્ય રે, નિજ કરિ ચિંતામણિ અચે રે, જે મઈ તુલ દરશન પાચા રે ા ૮૫ સાહિળ તુર ગરજ કરીજઈ રે, સેવક જ્ઞપરિ હિલ કીજઈ રે. વાચક જશા કહેઈ અવિધારા રે, લવસાવર પાર ઊતારા રે 11 6 11

> ા ઇતિ શ્રીગાડીપાર્ધનાથ સ્તવન સંપૂર્ણ ઘ સમાપ્તે ॥ શ્રી ॥

શ્રીયશાવિજ્યાપાધ્યાય અને તેમણે લખેલી હાથપાથી

'नयचक

[લે. પૂ. મુનિવર શ્રી મુશ્યવિજવાઇ ગ.]

कीन शीरंघ भारी आक्रे के ज्ञान संबद्धा जाने देशों के विद्याण प्रथाश्चि विद्यान के ते कारी એના વિશિષ્ટ મીરવની વસ્તુ છે. અને અલકાલાને પણ આવર્ષ ઉત્પન કરે તેવા અને તેટલા વિસાળ છે હળરાની સંખ્યામાં વિનાશના મુખમાં જવા હતાં ર જાજે જેન મુનિવરા અને જેન મૃદરથ શ્રીમદ્યાની નિસામાં જે ગામ સમક્રો છે તેની ડરતાં રસ્તાં પણ સંખ્યા કલ્યવામાં આવે તેલ તે પણ લાગભા પદાશી વીસ લાખ જેટલી છે. આ બધા સાન લાડારામાં ચાત્ર જૈન સવી જ છે તેમ નથી પણ તેમાં ભારતીય क्रेन-क्रेनेतर विधविध प्रधारना सभग साहित्यना संग्रह छे आई नेदी साहित्यनी हिंशा बाजरे रू क्री क्रेने લગતા પ્રશ્ના આ સંસ્ક્રોમાં ન દ્વેષ્ય આ સંગ્રહેલી ગઢલા જ એ છે કે તે ચાત્ર સંપ્રદાયિક પ્રશ્નેની સીમામાં જ વિસ્મી જતી તથી. પણ તેમાં વૈવિષ્યપૂર્ણ ભારતીય વિશાળ સદક્તિય રહિ છે. જૈનેતર સંપ્રદાયના એવા શ્રેકો પ્રદેશ થયા સમક્રોભાથી મળી ભાવ્યા છે. જેની ગાપ્તિ તે તે સંગ્રહ્મના સંગ્રહ્માંથી પણ નથી શર્મ um ते। अधा कैन अन्तरंभकोत संपर्धभन्ने अवसीक्ष्य खड क नहीं, ते छता तेनी निविधता अने વિશાળતા વિદેશભાષાને દગ કરી દે તેવી પુરવાર થઈ છે, પરદા જ્યારે આ સમગ્ર શાનમાં કોરત અવસાકત ભાવસ્થિત રીતે કરવામાં વ્યાવસે ત્યારે તેમાંથી એવા સાહિત્યસગ્રિ ગામ **યક્ષે કે જવ**ત મુખ્ય બની જશે. એવી આ નક્ષર વાત છે જેન મુનિવરા અને જેન શ્રીસંધાની આજે એ અનિવાર્ય કરજ છે કે પાત-पेताना अधीनमं रहेवा तानकारराजु समग्रकाचे रहम अववेतान हरे आक्षा प्रास्त्रीह रूपाच्या प्रकी min પ્રસ્તત સ્મારક પ્રથમાં **વ્યવસ** પ્રથમાં આદિ અંતના પાર્નાએક જે પ્રતિબિ બચિત્ર આપવાસ! આવ્ય છે તેના પરિચાય અહી કરાવવામાં આવે છે

सदयकाम्य એને द्वारकारणकान नारणी पक्ष जेवण्यायां आने हे जे श्राधा आधारों श्रीभक्तवादि दिग्लिन के जैनावर्धिक आधारों को लेन प्रण मा व्यावस्ति "सही" तहि जीताये 8. आधार में हिस्परें सिक्कीन न्याध्वर्ति को तहार्यक्रमें स्टार्च मा व्यावस्ति सार्किस, हस्तापने होता जैस अस्वादिक आधार्य सार्व ल्यास्त्र के

જૈનાદાર્દિક ફેરમાં સમ્મિતિક અને નાયક મેં મેં માત્ર સાન ઘણ સૌતવરા દે. આ ભરે ય મોલી સીકાંબન મને સંપાદન મેં ય. મીસુમાલાકાલમાં છબતાં રાખ્યપેલ હતું. પણ અનિર્દાદ કરોલન અને સંપાદનો સીકાંબન અને ત્યાદન પ. મી વિચારસાદ દેશીના લહાકારી કર્યો થઈ નાયકાંચન તો સંદાન માને સંપાદની હતા દેશાક સીકોંગ્રેને લીધી ત્યાં જ લિપ્પી થઈ બાર પછી મેં માત્ર સીકાંબન અને સંદાદન માત્રના મોસિન્ટર સિકિંક લી મુન્યપાદ ચીમાંચાઈનાજ અલાકખા વિદ્યાનીલ્ય દર્વ સીવાગૃહિત્યક્રમાં અપાદી લીફ તેને પ્રથમ લાગ બાર પહાર પદે શે પહેલાં મા માત્રમાં પ્રથમ સીકાંબન સ્તૃત માત્રફેરિ સાર્પ પુત્રન આપાદ્યાં લક્ષાસ્ત્રમાં મી દિવન લબ્લિક્ટિંક્સ પ્લાન એ દેશમાં સીક્ટ, પદ્મ ક્યાર્ટિક

^{*} શ્રીમહાવીર વિદ્યાલયના ગા. શ્રી. વિજવવદલક્ષર્ણરે સ્મારક્ષ્મ ક્યાંથી હન્દ્રદ

ગાયતમાં ઓલ્પિન્ડલ હિરિક અને યુન્યપાદ ગાગારે મ ગીલિન્ગલિન્દિસફિંદ રહારાજ તાર્યો આ માનું કાર્ય ચાપુ કેવા બના આ ગીલ ગ્રહ્મીના આરત્યાના સુધ્યા પાસ કારણ મેં કે કે ગ્રહ્મ માન્કિક મના સરોધન કરતા જે રાલાલા નવવાથી તોકેએ તેવા તે શારે આ છે કર્યા પ્રકાશનામાં તમાર સમાનીતિ છે રીતે કર્યોલા થયો તોકેએ મેં, મેનોથી મોક પણ કરી શદે રીતે શાયતા તેવાં ત હતી એ જ કારણવર ભાગે, 'આદાવ્ય' બળ મને મહત્યામ સાધ્ય માં કાર્ય હતા દરવામાં આવ્યું છે, આ પ્રથત સરીધન માં કે કેલી અને કોને પિયુલ મને મહત્વની અલગ-દુર્ભવ્ય સાધારીતી કર્યોલા કારણ માર્યો કે કર્યા માર્યા રેતી જે મહિલ સાધ્યો ગ્રાહ થઈ કે તેને માં માર્યલે કરીળ પ્રવાદો નાવે છે.

પરંદ્ર જેને લીક્કમાં કહે, ગરાહ ગયા રહિક વિદોશના કહે કે પરંદુત મળતા હરીકન પાળ રાતિકર જ્યાગ પરિવા હેમના ટ્રોનિયર લીક જામિલ્યાના કહે, મહામાંગોરાનું તળી લિંદ કે લેવી ગરા પ્રત્યે પુત્રન્યાલવાની દિશાસાથી હતી છે. એ સાર ત્યારી કહે રહેતા પ્રત્યાર શે પ્રત્યે પ્રત્યાના પાત્રના પત્રાના પત્રાના પત્રાના પ્રત્યાન પત્રાના કર્યા પત્રના પત્રાના પત્રાના પત્રાના પત્રાના પત્રાના પ્રત્યાન પત્રાના પ્રત્યાના પ્રત્યાન પત્રાના પ્રત્યાના પત્રાના પત્રાના પત્રાના પત્રાના પત્રાના પ્રત્યાના પ્રત્યાના પત્રાના પત્રાન પત્રાના પત્રા

એમાં એક નદ્વારન નાપના ત્રથ (અપલે વાવતાનથી શુદ્રો, લીએ વેક્સપક્ષીત ક્ષદ્રમક્ષ્મણ ક્ષિણ અધ્યાન કર્યો છે. આવ્યા કે માને ક્ષ્માન કર્યો હિલ્લાન કર્યો કર્યા કર્યો કર્યા કર્ય

ચ્યા પ્રતિના અંતર્યા ઉપાંધાયછ ગઢાતએ એ યુખિકા આવેળી છે એ તો વર્ષે પહેલાં લાવનગરથી પ્રસિદિ પામતા 'ચી આત્માનદ પ્રકાર 'માં શુનિ થી જ'જ્વિજયજીએ પ્રક્રિક કરી જ દીધી છે તે અર્ત પ્રત્યુત સ્મારક પ્રથયા ઉષાધ્યાયછ ગઢારાજની એ પોલીના પ્રતિનિંભને સાક્ષાત એનારા રસિક શક્ત લાયકોને અત્યિ ન રહે તે માટે એ આખી પ્રુખિકા અર્દી આપવાર્યા આવે છે ·—

प्रतिष्ठितिस्वर्णिकस्वर्यसम्पूर्वस्वित्वस्यप्रतिष्ठिः यक्तस्वरिकि ॥छ-॥ इति जीनक्षाविक्षमाभयस्यस्वरूपः स्वयकस्यपुरुषः समारुपः ।। जवात्र १८००० ॥

> याहर पुस्तके दह तादन किस्तित सवा । वदि सुद्धसमुद्ध वा स्थ दोषों व दीवते ॥१॥

धरह १०१० वर्षे शेवनदि १३ दिने जीपस्तम नगरे ॥ प॰ जीयश्चित्रदेन पुस्तक क्षित्रितं । इ.स सब्द्र ॥

> उद्शासक्वीरेम्गो । मुख्येस्मो विश्वेषतः । अध्य विविध्य ग्राह्य स्वयेग अतिपालनेदः ॥१॥ सम्मृतिकादेमीला । वृक्षित्वम व्ययोगुर्वती । ब्रह्मेन विविद्या साम्र स्वतेन अतिपालनेद् ॥२॥

पर्द पः **राजस्थितय जीवना श्रीयक्तने वाचि**र्द शिक्षा

वार्छं उर्व रंभते । एकं श्रीविक्षवर्ष्यस्थित ।

स्मृत्र वेरतियः । तक्ष्यस्योः अध्यानि ।।।

गिवृत्या श्रीवर्षिकवा प्रश्ने अस्योन भीवा प्रतियः ।

तिवृत्या श्रीवर्षिकवा प्रश्ने अस्योन भीवा प्रतियः ।

तुत्राक श्रामिकवा प्रश्नो अस्योत्यः वर्षाचिरत्यस्याः ।२।।

तुत्राक्षिकवार्ष्यस्यो मानाम सः इति तिस्योः

स्द र्विक्ववर्षेम्प्रतिर्धेनम्य प्रश्नो विक्ववर्ष्यस्यः ।।।।

श्रीवर्ष्यस्य । स्था तुष्यस्य स्था ।

श्रीकारम्यस्योतः । द्वेष्टिक् स्थाते निर्धानाः

केनी समस्योगन्त्ये प्रयादे सं व्या स्थितः ।

सार्वराज्यस्य वेर्षे विक्यवर्ष्यस्य दे ।।।। स्थीस्य ।

सार्वराज्यस्य वेर्षे विक्यवर्ष्यस्य दे ।।।। स्थीस्य ।

सार्वराज्यस्य । क्षितिक परिद्यो स्थाः।

 હતે અને ત્યારમાંગે ચીતમિન્સિયા ચ્હારાજ, શીલવોદાયદીત, શીલાલનિત્યા પ્રદાર, શે ટીર્તિક્તરણી, ચીતત્વરિત્યાળ, ચીત્રિવિક્રિયા પહિત અને ખુદ શીધશોલિચ્યાળ મહારાજ, એમ સાત શુનિવરોએ મળીને ૧૮૦૦૦ ચીહર પ્રચાણ આ સહાદાય રાજ્યની ચાત્ર એક પ્રયાહીખામાં — પત્ર દિત્સમા∷ પોચી લખી છે — તાહ્ય કરી છે."

મમાં પ્રથમી નકલ કરવા માટે ખાટવી જવી ઉતારળ કરવી પડી ગો ગેક નવાઈ રેવી વાત છે. શું એપની પાસે માં વિદ્વા પ્રથમી પ્રતિ હતે તેઓ આવી રૂજ પાડી હૃદ્ધી કે શું કે અને ગ્રેફ ફેપ્સો જ છે. વ્યવું આ ત્રય દેશવા પાક્રત્યો અને હૈન લાઈનિકલાફ્યવના ખાને હૈન્યક્શવનના આધાર સ્તરાસ્થ્ર છે કે એની અનેલિ આપણાને એક્શાયો જ થાય છે કે શીધશોલિંગ્યજી જેવાએ જા સંપની તકલ કરાતું કાર્ય હાય ધર્યું.

પ્રસ્તુત પ્રતિને લખવામાં જે શાત યુનિવરોગ્રે લાગ લીધી છે તેમના વ્યક્તિ અહિતવાર પારપ્તવાનું ક્ષમ નથી ગ્યા લખાયુંપાંથી આપણે ત્રામ નથી ગ્યા ગામ કરતા તેના યુક્તર શી તમ-વિભ્વાલનો ફ્લાફેરોને પારખી ક્ષમોત્રે તેમ એવે આ પ્રસ્તા પત્ર ૧ થી પ્રજ, ૫૦ થી છાં, ૨૫૧ થી ૨૫૫ ગતે ૨૯૧ થી ૨૯૪ એમ કુશે છ યાના શ્રીવર્ધિતન્યજી લખેશા છે. જેના લક્ષ્મી ત્રીણ એક એક ૧૪૫૦૦ થી ૪૮૦૦ જેટલી ચ્લેફેડાયમાં થાય છે. શ્રીયર્ધિતિક વ્યક્ત પ્રતાર પંતર વિવસમાં ગ્રીક્શાધીઓનું આપોલું લખી શકે, એ એમની વેષ્યાનાથા વિવયક શિલ્લસ્તાનો વ્યાપ્ય નવૃત્તિ જ છે અને એ હી ક્ષમી વ્યાવ્યાંથિતિ કરે તેની ક્ષમીતા છે.

પ્રસ્तુત પ્રતિનાં કુલે ૩૦૯ થાનાં છે. તેમાં પક્તિઓનાં લખાલુનો કાંઈ ખાસ પ્રેન નથી. સીએ પ્રતિના લખાઈ સીએડ પ્રમાણે લીડીઓ લખી છે છતા રોડે લાગે ૧૦ થી ગોક્કી નથી પ્રત્યે રૂપી નથાર નથી. પ્રતિની લમાઈ-પ્રોક્ષાઈ ૧૦૮૧૧૧ દાંચની છે ૩૦૯ સા પ્રતામાના અન્તિય છ ચ્લાદ પ્રમાણ દુખિય શ્રીલક્ષાલિયલ્ય મહાસભે લખેલી છે

એવના એક વાત જ્યાનીને આ વાતજ યુટ્ટ કરવામાં આવે છે આજે આ વધુને તપચંક પ્રચને જે પ્રાચીન - અરોચીન પોલીઓ અંગ છે અને શ્રીવશેષિન વાછ ગઢાદાલન્યા હાયની જે પોલી ગયી આવી છે તે માત્ર ત્યારક માં છેવર આવાર્ય શ્રીકિકલાદી – ગહિનુ ન્યુયાશ્યાએ, રેપેસી ડીકા ચાત્ર જ હૈ અપને જૈન શ્રીસંત્રના ભાગનિકાશાની નિરંતિના છે કે આપાર્ય શ્રી ક્ષાશ્યાની કહ્યુંત સે પ્રયુવાત વ્યવસ્થ પ્રયુવી નહ્ય આજે ક્યાર તેવાને આવતી તથી આ ત્રવની હાયપોવાને ક્ષેપી ક્ષકતા મળ્યને જૈન વ્યવસ્થા જ નિર્દે પણ સમસ્તા વિદ્વાન્યવાસી સુધી કોલાક્ષ્મથી વસ્ત્રોનો વસ્ત્રોને સ્વર્થો, ચનારી અને પૂત્રી

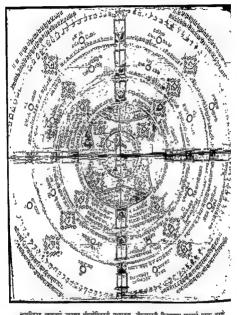
7

જૈસે પાલ કોઈ શિર બાંધે, પહિરત નહિ લગાડી, સદગ્રુરુ પાસ કિયા બિહ માગે, આગગ બાત ત્વું ખાડી.

—৪খা০ স্থা যথ্যবিদেশত

रधिते अभवमतिनयान कार्यस्था अशास्त्रवादि आसीतने मानादि श्रत्ये स्था तालास्य भने देशस्य सम्बद्धाः लारमप्ताप्त्राभ्यमातुरारिष्णमानित्रार्षे स्ततम्यातारम्काभ्यमेन।सम्मिष्रहर्गरस्य ता देन प्रवास प्राप्त प्राप्त प्रतिद्वित अन्त्रायम् वामेशान् वेती त्यास्त्रहा स्वेता अवस्थाना भारता दिशासीना व राजे प्रमादाल दीव बन प्रतिद्वित अन्त्रायम् वामेशान् वेती त्यास्त्रहा स्वेता अवस्थाना भारता दिशासीना व रण्ड नगर्भावस्थानम् । अप्रत्मानां अवरणम्यतावद्वर्तनम् त्याचितस्य नावस्य निवासम्बद्धाः स्थानम् । वस्ताना न्याना । भारते इपिन सम्बादरम् मार्वस्तान्यस्ति इद्देश्यास्त्री हे नामिन्न तिपादने वास्त्रास्त्राम् सम्बद्धाने तिमस् मा व्यक्ति स्वाधिक रमधनी मन्यन्ते पातिकादितः शिक्ष क्रमानुग्रे । ब्रम्मामान्या मनाबातिनम त्र दूष्णच्या द्वार रूप म्यार्थित प्रदेश स्टलनगातुन्द प्रयोजन्ति सम्युषे ब्रह्ममैनिर्दन मनक्रमात्स्री जीतन स्रमाभीकेर दाहने अन्य स्टब्स्य स्टलनगातुन्द प्रयोजनित स्वयं क्रिस्य स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं क्षेत्र परमात्र गरिक्त मान्त्र नेण नावि दिवे समिति स्वयं त्रिमाश्यक्षत्रभागतिका स्वातिकाष्ट्रभाविकाष्ट्रभन्न विज्ञानिका स्वातिकारे के ता विराह ता मनाराज्यास्य । तात्रविद्यासभ्य राजना सङ्क्षेत्रदे परोजना मिन्नगद्या विदेशता वृद्धविनतत्त्वा सा भूत्रदन्ति सत्ति तामान करना चत्र बुदिना निवचकर ने उच्चे नी सिन्द पतानी विविध्त ने विभिन्न निक्ष करने इन्यान करणा वित्रविध्यवादिनोत्रै नाना जिन शासनप्रता वनाक के तीना मादिनकराधित भविषये । दिवक्रवर्ति विध्यादि यसमुद्रीमाने तस्तु मचक शास्त्रव्यविभागे चन्या जनामा वित्र वे मद्वभादमा गारभम्बक्रीक्षेत्र्त्रतिष्टिनममाहितंत्रक्र वर्तिचक्र रख्वदेवासाविष्ठश्रह किन्या कि परा पित्र वन महारा कि युक्त चारि देनिक नामुग्रह एक्चिम राज के त्याणीशिय महाव्या पर श्मानतिश्व।प्रमर्शति।प्रतिवित्ततिवित्तवाव्यत्त्रमम्ब्र्स्तवित्वव्यतिवित्यसम्बर्गानी क्तिमीम्द्रवादिक्तमान्यवाषादिक्तत्वम्बन्नस्यवेवस्याचीक्षास्यस्यक्ति

হিলাবেইজিজিল সংগানেছিল, দেছা দ্বাাজন বিজ্ঞান কৰাৰী লগাংকাৰা ও পৰাৰী নামৰ বিশ্ব বিশ



न्यापविशास न्यायामं वर्णायाम श्रीमञ्जीविकाची सहाराज्या जीवनस्टानी मिचारणामा अभूतर्त् प्रकाश पाडणे वि. से १६६३ मा चीतरावेजी जैतिहासिक सहस्रट

અન્ય વિષયક નિબંધો

×

—સંપાદક



अरुणन्महेन्द्रो मधुरास्--

िलेजक— डॉ. वासदेव शरण अञ्चल, काशी विञ्च-विद्यालय]

(Dr. Vasudeva Saran Agrawal)

जैनेन्द्रज्याकरण सत्र २।२।९२ (अनवतने छक्) की **अभय**नन्दि विरचित महावृत्ति में

- ' परोक्षे छोक विज्ञाते प्रयोक्तः शक्यदर्शनत्वेन-दर्श्वनविषये छक वक्तव्यः। अरुण-न्महेन्द्रो मधुराप् । अस्मब् यवनः साकेतम् ।
- इस उल्डेख को पढ़ते ही पतछक्रि के महाभाष्य के धन्तर्गत निस्नविसित प्रकरण 🖩 च्यान आता है---

(वार्तिक) परोक्षे च छोकविद्वाते प्रयोक्तुर्दर्शनविषये । '(भाष्य) परोक्षे च छोकविद्वाते भयोक्तुर्दर्शनविषये छङ् वक्तव्यः । अक्वव्यवतः साकेतम् । अरुण्यवनो मध्यमिकाम् । (महाभाष्य, सूत्र ३।२।१११ अनगतने छ्या।

यह स्पष्ट है कि यहां जैनेन्द्रस्याकरण के रचयिता ने उसी विषय की चर्चा की है जिस पर कारवायन का दातिक और पसल्लाक को शान्य है और यह मी सन्भव है कि महादृष्टि के क्लां अर्भयनिद के सामने उदाहरण छिसते हुये पतझकि की सामग्री उपस्थित थी। 'अरुगदयननः सानतम ' उदाहरण-दोनों में समान हैं । शेष दो उदाहरण सिम्न हैं । इस प्रकार यहां तीन ऐति-हासिक घटनाओं हा। उस्केल हैंं —

> पत्रविष्ठं हैं १-अस्माद् स्वयः साकेतम् । १-अस्माद् स्वयः स्वयंशिकाम् । श्रायनन्दि { ३-अस्थन्महेन्द्रो मधुराम् ।

'शवन ने सावेज और ग्राप्यमिका पर काकमण बरके उन दो नगरों पर घेरा डाइटा । महेन्द्र ने मधुरा को छेडकर उसका घेरा ढाछा । ' व्याकरण के नियम के अनुसार ये तीनों छोकों में प्रसिद्ध पेतिहासिक घटनाएँ (लॉकविज्ञात) होनी चाहिये। इसरी शर्त यह थी कि जो व्यक्ति इस वाक्य का प्रयोग करे वह उस काल में जीवित हो, वब ये घटनाएँ पटी, क्वर्यट घटनाएँ उसके समकाठीन होनी चाहिये । प्रतक्षांछ ने जब साकेत और मध्यमिका पर यवन-व्यक्रमण का उल्लेख

किया तब वे इन होकविज्ञात घटनाओं के समकाठीन ये । ऐतिहासिकों का मत है कि यवन राजा भीनंदर ने वंदान या महदेश की राजधानी भाषक पर अधिकार करके पूर्वी भारत की ओर एक अभियान किया और वह बदता हथा साकेत और पाटलियन तक चला गया । एर वहां वह रियर न रहे सका । किसी कारणवरा वह शीव ही पाटलिएन से वागिस छीटा । इसका एक कारण यह कहा जाता है कि कर्छिगराज महामेक्वाहन खारकेछ ने मगध धर जो अभियान किया था उसके सम से यसनराख दिसित स्थारा की ओर औट गया । यननों का यह अभियान पृथ्यमित्र होंग के समय में इक्षा था । उस समय पतक्षांत्र जीवित थे । बसूपन सूत्र पर लिखते हुये उन्होंने अपने समय की 'भारतें देखी' (प्रकेकुर्दर्शनविषये) क्षेत्रप्रसिद्ध घटना का उल्केख कर दिया। बस्ततः पतःखरि ने यहनों के दा अभियानों का करेन किया है। एक पूर्वों वो सक्तित की ओर हुआ था, और इसरा दक्षिण पश्चिमी, जो मध्यमिका नगरी की ओर हुआ था। सध्यमिका चित्तीर के पास नगरी स्थान है जहांसे मारा श्चिवि धनगढ़ के पुराने सिक्कों वर 'बखसिका' नाम पाया राया है। मध्यमिका और सक्षमिका एक हो हैं । इससे निश्चित है कि यक्तों 🛒 एक हमला दक्षिण की. ओर हुआ विसमें यवन-छेना तीर की तरह देश के भीवर पुसर्ता हुई विचौद तक पहुंच गई थी। दक्षिण-पश्चिम का समियान अस्सोसिका (हरहैती) वा अस्यन्दान प्रदेश की ओर हे वदकर पाटड (दक्षिणी सिन्य), और सुराष्ट्र पर अधिकार इतता हुआ सिर्गार्देश तक पहुँच गया था, जिसकी पहचान अवनती या सावरमती के कठि से की बा सकती है, बिसका प्राचीन नाम 'बहुगरी' देख मो मा (कैन्त्रिज हिस्दी १)५५२) यूनानी इविहास केलक खानो ने किला है कि ग्रीनंबर और हिमिटियस दोनों मे, बक्नों के ये व्यवस्थान किये थे । बात होता है कि मीनंडर यहतराज था तिसकी अध्यक्षत में हिमिट्यस ने बेना का सैनावन किया। खेक में स्याति यही हुई कि मीनंडर ने ही विजय की। इसी प्रसंग में डिमिटियस ने सिन्ध-सौबीर देश में झात्रासियी नगरी की विजय की रधापना की, जिसका उल्लेख काशिका (शर्1७६) में बाया है।

भारतीय साहित्यमें भी इस बबन अभियान को गूंच शहें वाली है । वाली संहिता के जुग-प्रतगण क्षेत्र में लिखा है :---

> ततः साकेतमाकाय पाञ्चाकः [न्] माखुरांस्तया । यवनात्र्यः द्विकानमाः मान्यनिन कुसुमध्यक्रम् ॥ ठतः पुणपुरे प्राप्ते कर्वते प्रथिते हिते । याकुछाः चिषयाः सर्वे मीक्यनिन न संज्ञयः ॥ मन्यदेशे न स्थास्त्रनिन यक्ता बुद्धदुर्गदाः । वैकासन्योन्यनेत्रमायाद् मीक्यनिन न संज्ञयः ॥ मान्यकोशियां चोरे वुदे परमान्यकाः । वतो बुगवशाचेषां यववानां प्रतिवाने ।

इसमें स्वष्ट कहा है कि प्रिकान्स करन सानेज , पाञ्चाल और श्वास को आकारन करने उन्हें अपने अधिकार में लाकर, अनुसम्बन्ध पार्टाल्युन तक पहुँच वायेगे। वहां नहीं नारामारी होगी और समस्त देश आकुल हो उटेगा। किन्तु युन्दुर्वीद यवन मण्यदेश में ठहर न पायेंगे, क्योंकि आपसी स्वयां हे (अन्योग्य संमावाद) उनके कपने ही मंदल में क्यांगेर युद्ध किंद्र नापमा, विसके कारण ने मण्यदेश से हटने पर नाण होंगे।

इस वर्णन में बवर्नों द्वारा सावेद और मसुरा पर आकारण करने का त्यह उल्लेख हैं । वहीं छोकप्रसिद बटना व्याकरण के निम्नलिसित दो उदाहरणों में बहाँ गई है—

अवनन्महेन्द्रो मञ्जराम् । अवनव् यवनः साकेतम् ।

बरूपसीमन्द्रो मयुराम् ।

सर्थात् मेक्ट्र ने म्युरा को काकान्त किया। बीमंडर के स्विको पर उठके नाम शा मारतीय रूप स्वरोध्दे शिष में मेक्ट्र ही मिळता है। पीछे के किसी केन्द्र ने 'मेक्ट्र ' नाम से परिचित न होने के कारण अस में पड़कर 'मोट्ट' पाठ बना दिया। येशे दिंह में मूखपाठ मेक्ट्र निश्चित ही है। सामेठ हा बनन बाकान्य और मेक्ट्र द्वारा स्थुपा का आकारण-से दोनों उदाहरण पठ ही कोटि के हैं जीर बुनानी राजा मीनंडर के पूर्वी भारत पर चन्नाई के स्मारक हैं।

बहुत कुछ सम्पादना यही है कि जमननित्व ने उत्तहरूलों का बो क्रम रस्सा है बहा कर उस मुख्यम्थ में भी बा, बहाबि उन्होंने अपनी सामग्री हो। उन्हें वैसा मिल, वैसा ही यथावत् रस विधा। यदि यह अनुमान सत्य हो तो इससे एक परिलाम बोर निकस्ता है। यूर्वी अस्मियान का नेतृत्व स्वयं अवनताव बेनन्द्र कर रहे ये और मधुरा तक की चढाई में स्वयं आए। युरा पर अधिकार कर केने के बाद सम्पादतः ने स्वयं आगे गहीं बड़े। आगे साकेश की नशाई में सेनाका नेतृत्व उनके केनानी डिविस्टियम ने किया ज्ञात होता है और वही बेना पार्टाछतुत्र भी पहुँची होगी। इसीकिए 'वदनशत दिमित' का नाम खारबैछ के हार्थामुका छेख में आना है, जैसा श्री जायबराज्यों ने पड़ा था।

इस अभियान के जुछ पुरावपाद प्रयाण भी हाल में मिले हैं। मीर्नंडर के सिश्के तो नहुरा में एहले हे ही फिलते थे। इबर १९३० की खुदाई में काशी के समंभ गंगा तट पर खित सखार जानक पुराने अक्लेपों में युनानियों की वहुत सी पिछी की मुहरे पाँह गई हैं। उनपर देवी अप्येग, देवता अपीखों, विकय को देवी नाहकों और हस्त्युलीव की मुर्तियों लेकित हैं। पत्तर कुछ झालों पर किसी यूनावी राजा का स्तक्त भी हैं, वो अभी तक ठीक नहीं पहचाना गया। इन मुहरों के सत्त्याट में फिलने की व्यावचा हवी प्रकार हो सहसी है कि सब वयनहेना साचेट पर विकार के वाद पारतियुक्त की और बढ़ी जो जनहीं एक अवनी साचें में काशी के गीरावट पर वर्गाई गई। बढ़ी ये मुहर्रे किली हैं। इसमें तो सन्तेह नहीं कि वयन-केवा ने काशी-राजयाट में ठीक उसी पारतियुक्त की और बढ़ी जो स्वावेह नावी कि वयन-केवा ने काशी-राजयाट में ठीक उसी साम पर योगा पार करती है। कुसुनवज पारतियुक्त के लिये बढ़ी आहितो नाजा था। मार्चान काल से ही विनिवास और अजात- एजू वैंड सामस्त्राव काशी के इस साके को अपने अधिकार में रहने के लिये बढ़ाइक रहते थे।

k

ધર્મમાંહી ત્યાંત્રમે ધારા શ્રહ્મગતમાંહિ વબ્જસ્ટિકોરા દાનમાંહિ અભયદાન રૂડું, તપમાંહિ જે કહેવું ન રૂડું

ત્તાનાલી ત્રિખ પેડી, ભાર અધ્ય ખાદુ મૂલ ચારપુરનાં સાર છે, મંત્ર એ તેહતે તુલ્લ સ્ટળ સમય અભ્યાત, એ પદ પંચ પ્રચાણ મહસુઅ-ખાંવ ને ત્રાણે, ચૂલા સહિત સુત્રાણ. [વરોજિય]

आध्यात्मतत्त्ववेत्ता श्रीमद देवचंद्रजी-

[लेखक-श्रीयुत्त समरचंदकी नाहरा]

आहमा की श्रुद्ध कवरणा का यान परमाध्या या सिवलनरच्या है। सायारण बीद दिश्लामा होते हैं उनका प्यान धन, येह, ग्रेद्ध, अञ्चल्य परिवार कावि बाहरी क्यांत्रों में मुंचा रहता है। इसके स्थाद्य कव काक्ष्मा देहादि भिन्न काव्या की स्वक्त्याध्यांत्र की कोर व्यवस्त होता है तो उसे अन्तरात्मा कहा जाता है जोर साधना के द्वारा जाव्या की श्रुद्ध व्यवस्था प्राप्त कर की चारती है तब परमाध्या कहा जाता है। चीनन के क्रिये परमाध्या स्वक्तर ही क्यांत्र है। इस उत्यक्षम का क्युन्यन व साधा-रुद्धार कार्त है। वीनन के क्रिये परमाध्या स्वक्तर ही क्यांत्र हैं। उन्होंने मिन्न मिन्न भंकार व साधनों में के प्राप्ता की वानुष्ति को बीर जोनी की उनिव प्रकृतिस्थानता को इंट्यंत्रक कर निविध्य मार्थी के प्राप्ता की वानुष्ति को बीर जोनी की उनिव प्रकृतिस्थानता को इंट्यंत्रक कर निविध्य मार्थी की प्रचारित किया। इस्त व्यावस्था की श्रुद्धानस्था-स्थानस्थानस्था क्रमेंचेए प्रधान है। बैन दर्शन में ज्ञान एकंच् क्रिया दोनों के सम्मिन्न को मोरुमार्ग माना है। इस दर्शन के अनुसार प्रत्येक बीन त्वसायकरा से परमारमा है। उस अवस्था का तिरोमान क्रमेंबर के कारण हुया है। क्रमेंबर विच्याल व्यविसीत कमाय और गोध से होवा है और संयम और तय द्वारा क्रमेंबार होता है। क्रमेंबाल से सुचित है-यही बीन का चरन यू प्रस्म स्वस्थ है-साय्य है।

य • महानीर के पद्धात कुन्दकुन्द, पूर्णपाद, योगोन्द शुस्तक्यादि करेक आवार्य आध्यक्ष प्रमेता हो सचे हैं, विनक्षे मन्य पर्वत प्रसिद्ध हैं। आवार्ष सिद्धिम ने हमक के बहाते आध्यक्त भो निक्ष स्करण चितिक किया है वह अनुस्त्य है। बाव उपायवािक का प्रणासित हिस्सिद्धिक चोगोन्द्र, योगकितमुद्धिक वार्षित किया है वह अनुस्त्य है। बाव उपायवािक का प्रणासित हिस्सिद्धिक चोगोन्द्र, योगकितमुद्धिक वार्षित के निर्माण भाग किया भाग विकास हिस्सिद्धिक के किया कि प्रमाण का मार्च है। सवद्धी कार्षित कर्माण का चार्च वोष अच्छा प्रमाव निकास हुव्या। १८वी सार्वी में गुष्ठाला में कही प्रशास कार्यायात स्वाद के प्रमाण के प्रमाव किया वार्षित हुव्या । १८वी सार्वी में गुष्ठाला में कही प्रशास कार्यायात स्वाद के स्वाद क्षण कार्यायात है।

१८ वी सती के प्रारम्भ में मारा बोगीमान व्यानन्यनानी को साथना मेहता में होना समिवित हैं। उनकी पंजीकी एक्य पदों से बैन सम्मान को सुपिरिश्व हैं ही, बैनेटर विद्वान भी नामके प्रशंसक है। जानन्यनाची को जोतीसी के बाद व्याप्यास्त्रक वर्षित बोगीशो औमूर देवस्त्रचा की मार्गी बाती है। व्यानके समाद अन्या को सोज कर बाप्यास्त्र मन्य प्रणेता बोगी अंसुदिसामस्त्री(वी ने श्रीमद् देवस्त्रच माण्यक हो बादी बढ़ी बढ़ी विद्वारों में बाप्याक सूत्रच प्रसादक व्याव्यक से प्रकाशित करने का निकार किया था। वदस्त्रसार कम बात में बीगद् देवस्त्रचा के आयामसार, वयस्त्रसार, कमेन्य व प्रजीवित क्षित अन्यादित हुए हैं वोने दुसरे मार्ग में व्यानस्त्रव्यदे, हत्यप्रकृत, बोगीसी, सीवी, व्यवस्थायित पर प्रचार्य पर ही हु हैं। सुक्त जाएकी व्यवस्थायित पर प्रचार्य का सीक्ष्य हैं। सुक्त जाएकी व्यवस्थायित पर प्रचार्य का सीक्ष्य हैं। सुक्त जाएकी व्यवस्थायित की स्वानका की परिवर्णन के बात की सीवित की सीव

ं श्रीमर देनकरती का कमा हि० सम्बद् १७०६ में बीकानर के निकटबर्ती किसी प्राम में हुमा या । व्यन्नीया इच्छीदाधाओं की पनी चनवाई को कुछि से आफ्रा कमा हुना था । २० वर्ष की माद्य में सरसरगण्डीन वायक शुम्बासम्बत्ती से व्यानरे सीचा प्रदेश की देनकर वाएका तम्म नाम था। दीवित होने पर बापका नाम शुन्तिकार स्था गया था, पर बापका वह नाम अधिक प्रसिद्ध नहीं हुआ। श्रीवर ने प्यानचनुष्यदी बाहि की प्रशस्ति में बहू नाम भी श्रयुक्त किया है। विद्याध्यक्षन व्यापका सहस बच्छी तसह हुआ। देवविकास के बनुस्तर वैनातट से दीकासुरु राजसागरणी के दिये सरस्वतामन्त्र की बापने सांक्या कर सरस्वता की प्रस्कात प्राप्त की। इस्पतुकोग से आपकी विशेष गति थी।

संयोगवरा अपने गुरुओं के साथ शिन्य को जोर बिहार किया। वैसा कि उत्तर दिखा गया है उस समय मुक्जाण में ग्रिटुमक मणसावी आदि व्याच्यावरसिक आवक रहते थे उनकी प्रेमण के आपने आच्यानिक प्रन्यों का अञ्ययन-आव्यापन किया। व्यापकी सर्वप्रवम रचना ह्वानामैन का राजस्थानी परातुकाद व्यानवंशिकाच्यापदी के नाम से प्रकाशित है विसकी प्रशासित में आपने किया है—

> " बाध्यात्म अदालां चारी, जिहां वसे करनारीजी, परिमध्यात्का परिहारी, स्वपर विवेचन कारीबी । निराष्ट्रण बरचा निर्हाणी करता, मन अनुपय में बहातजी, स्थाह्माद निराष्ट्रण असुसरतां निरा अधिको हुस धरतांची ॥ सणसाली निष्ठमण बाता, वारतम-स्टर्ज स्थाताती, सक्ष आगृष्ट चटवाई ओही, हुपांची सम्बद्धी कोरीबी ॥

इसकी परवर्ती रचना "हूब्य-प्रकार।" है, वो हिन्दी सबैबा, दोहा व्यक्ति में बढ़ हब्द निहर-पनार्थ से ० १७६७ बीकानेनमें बनावा गया है। यह भी उपकुंक मिद्रमक व्यक्ति के क्रिये ही बनावा गया था—'असस समाव मिद्रमकका'।

द्रम्यानुवोत विषयक गर्य अभ्यस्त आयमसार की रचना बरोठ में विशवसासनी की पुत्री सामनी असाईओं के किये की गई थी !

सं० १७०७ में व्यवस्य विद्वार बुक्सात की बोर सम्बन्धाओं युक्सत की सूच-पूर्व राजधानी कैनवर्स के कन्द्र स्थान पाटक नगर में ध्वारे । नगरकेठ तीवसी दोसी सहस्वकृट विनाहण बना रहे थे । प्रसंतवन "सहस्वकृट" विनक्ते नामे के सम्बन्ध में श्रीवर देवचन्द्रवों के पृत्तने पर छेड़ने हास-विनक्ष्यिती से नाम पृत्तने पर स्विची वात नहीं सके । क्वन में दोनों विद्वानों के विनाहज में 'तत्तर-वेत्ती' पृत्ता के समय व्यवस्थित होने पर, सुमेंग देह, नगरस्वेतन किर स्विची को पृत्ता । कनके अनुस्क्रम व्यवस्थित होने पर, सुमेंग देख, नगरस्वित किर सहस्वकृट विन नामावित कर एत हाल में बमा दिया । बद देख द्वानिक्षव्यक्ति कव्यन्त चमक्त हुए भोर आपको विद्वात पुर परस्पादि की प्रवेता हो। यह देख द्वानिक्षव्यक्ति कव्यन्त चमक्त हुए भोर आपको व्यवस्था हो। यह यह व्यवस्था विवक्त क्यान्य चमक्त हुए भोर आपको व्यवस्था हो। यह यह व्यवस्था विवक्त क्यान्य चमक्त हुए भोर अपको व्यवस्था हो। यह विवक्त सुमें विवक्त कर सहस्वता हो। व्यवस्था विवक्त व्यवस्था से व्यवस्था की व्यवस्था विवक्त क्यान्य व्यवस्था हो। यह विवक्त सुम्पेत व्यवस्था से व्यवस्था की व्यवस्था विवक्त क्यान्य व्यवस्था से व्यवस्था की व्यवस्था विवक्त क्यान्य व्यवस्था से व्यवस्था की व्यवस्था विवक्त क्यान्य व्यवस्था से व्यवस्था की व्यवस्था विवक्त व्यवस्था स्ववस्था से व्यवस्था की व्यवस्था की व्यवस्था विवक्त क्यान्य व्यवस्था से व्यवस्था की व्यवस्था की व्यवस्था की व्यवस्था क्यान्य क्यान्य क्षा व्यवस्था से व्यवस्था की व्यवस्था क्यान्य क्यान्य की व्यवस्था की व्यवस्था क्यान्य क्य

श्रीपर देवचन्द्रवी के समय सावाचार में कुछ शिविष्ठवा जा वह यी। जनमें आफी फितोबार कर उसका परिवार किया। सं० १००० में ही जहस्वतावाद पवारे। "नागोरीस्ताय" (हाळ-'नागोरीसावा") में जापका ठहरना हुजा। ज्यास्थान में ज्यास्थान की जीवरण वारा प्रवादीन होने छमा। ज्यासावामों में वार्षिक बाह्नज़द बढ़ने छमा वार्ष्य भ्रपवती—वैधे सूत्रों का मंगीर स्वस्थाद्वाद्वर होने छमा। बांठ १७०९ का चाहुमाँव खंगात किया। जापक्षी के उपदेश से सुत्रेवय तीर्थ की क्यास्था व जीजीबार के विविच पेदी की स्थायत क्या। जापक्षी के उपदेश से सुत्रेवय तीर्थ की क्यास्था व जीजीबार के विविच पेदी की स्थायत क्या हुई। सुरुवादि में वीमासा समान करते हुद सं० १०८८ में "रावचनार" में चीमासा किया। मिती व्याप्त खुक्का र को कापक गुरु वीपचच्चीका स्वर्यवास हो बया। च्यापक खुक्का र को कापक गुरु वीपचच्चीका स्वर्यवास हो बया। च्यापकीय विविच पेदी की व्यापक स्थायन हालों का क्यायन कराया।

बहुमदाबाद का आसनस्य इस समय रस्वन्यन्य भाकारों के हाथ में या। 'आयंतरामवी' उनके प्रधान कार्यकर्ता थे जीर वे वो शीनर के जनन्य मक थे। उनसे आपकी प्रशंता प्रकार प्रधान प्रवास कार्यकर्ता थे जीर वे वो शीनर के जनन्य मक थे। उनसे आपकी प्रशंता प्रकार प्रधान प्रवास कार्यकर्ता थे जान उसने क्यों । अपनीन मन्यारीओं के जनुरोप से नाहामारी का उन्प्रद मन्त्रामाथ से निवासन किया था। बोलका के तेली जयवन्यते पुरूरोत्तर योगी को सुरुशी के पास लोक प्रतिविध्या । सं० १७५६ न्दं क का नवन्यतं में वासुनीम किया। प्रकार ग्रामाय का अनुर व्यवक्त किया । सं० १७५६ न्दं क का नवन्यतं में वासुनीम किया। प्रकार ग्रामाय का अनुर व्यवक्त किया । सं० १८०६ में भावनाम में वासुनीम कर पालीमाका प्रणि उन्प्रद उनकान्य किया । सं० १८०६ में भावनी किया निवासने कर पालीमाका की प्रतिला प्रीतिव्या हिम्मी व्यविध्य ने विचारीक में मान क्याया। सं० १८०८ ने में प्रकुष्ट वोर्थक में किया निवासने का प्रतिविध्य प्रतिक्रम किया। स्वासने का प्रतिविध्य प्रतिक्रम क्या सामित्रकर में हथा और बहु अपने क्याया। सं० १८०८ ने में प्रकुष्ट वोर्थक में किया प्रतिविध्य स्वतक्त निवासने किया मान क्याय। स्वासने क्याय क्याया हो गया। आपके विध्य प्रतिक्रम विचार प्रतिव्यवस्था विध्य प्रतिक्रम विध्य प्रतिविध्य स्वतक्त । क्याय कुष्टी स्ववन्यते । स्वत्य व्यवक्त स्वस्ति क्यायाना प्रविद्य प्रतिक्रम करते हुए से० १८१२ में मान विदिश्य स्वतिक्रम स्वास पर उत्तरास्वता होने पर अपने क्यारीक क्य

श्रीगद यशोविवयना के "ज्ञानसार" प्रत्य पर संस्कृत में वापने सुन्दर टीका बनाई है। प्राकृत में कर्मनन्य सन्त्रनी २—2 प्रत्यों का विगीण किया है। हिन्दी में 'इत्यप्रकाश' पूर्वती रक्नाप्र मादमाण राजस्थानी की गणस्य में व परवर्ती गुक्तात में व्यक्त रहने से गुजराती माण में रचित है।

चीनीसी के आदि स्तवनों में अपने अब झान के साथ साथ मांके का असएड प्रवाह बहाया है। "अप्पाम-गीता " व्यवाम ज्ञानकी सुन्दर रचना है। "अब प्रवचन " माता की सन्धाम में आपने हिन के प्रत्येक प्रवृत्ति का सहस्वीत्साटन किया है "मंच मातना में सत्य एक्ट्र भावना तो प्रसाद निद्धा से हुटाने के किये सुघोषबंटानाद सहस्य है। सजसकुभास, इंदरण एवरी प्रभंजना आदि सञ्जायों में वो अध्यात्म-स्स उदेश गया है वैसे अन्यन्न मिछना दर्छम है। "स्नान-पना ¹¹ तो आपकी सक्तिरस की श्रोतस्विनी ही है । स्तवन सन्बाय आदि तो अनेक जैन कवियाँ की हजारों की सख्या में उपलब्ध हैं पर आपकी रचनाओं में अध्यात्म-रक्षधारा जिस रूप में उत्तक पहती है, वह अपनी अमिट काप इदय पर सर्वटा के किए वाँकत कर साती है। अध्यास-तक मानी आपके हृदय में मूर्तिमान होकर विराजमान हो गया हो | स्तवना एवम् स्नात्र पूजा आदि में मिक-रम की को मन्त्रकिनी प्रवाहित की है, जनकी दीवी बल्य कवियों से मिल है। सापके मिक पदों में भी अध्यात्म जैन सत्व-जान का शहरा प्रभाव नवर आता है । फरतः आपकी प्रमुमक्ति में, देसे दूसरे कैन कवि मानावेश में कैनेज को मूछ से गये हैं, वैसी बाद आपकी रचनाओं में कहीं दृष्टि गोचर नहीं होती । जैनमान्यतानुसार प्रमु परमाध्या है सही पर एक व्यक्ति विशेष नहीं, अनेक हैं | हां ! गुणों की दृष्टि से उनमें एकता सहपार्मिकता अकरय है | जैन व जैनेतर रृष्टिकोण में ईश्वर सम्बन्धी यह अन्तर है जैनेतर ईन्बरको " एक महान् कृति " सृष्टि कृती और कर्म-फलादिक बाता मानते हैं तक जैन इसइस्य वा सिद्ध खद्ध मानते हैं । ईबरख शासकर केने पर फिर इस्छ भी करना उनके छिये अवदोव नहीं रह जाता अतः वे किसीको तारते हैं और न संसार में रखाते है। जीव अपने भक्ते के क्रिय सर्वेशा स्वतंत्र है । वह अपने कार्यों द्वारा कर्स-वंधकर भवभगग करता. शाह्य प्रखदसका धनुमव करता है और अपने ही प्रयत्न हारा कमों से भूक हो. छह-स्वहर परमारमा पत प्राप्त कर केता है । वहां प्रकृत हो सकता है कि तब संचिको त्थान वहां रहा । इसका उत्तर यह है कि कर्म-निश्वति के दो कारण हैं उपादान और मिमित्त । मूछ कारण हो उपादान ही है पर बहस हेदतक निमित्त को भी महत्वपूर्ण स्वान है। जैन-दर्शन के अनुसार मुक्ति पाने में उपादान तो स्त्रवं क्यानी आह्या या उसका प्रवाध-प्रकल ही है पर प्रम मार्ग प्रदर्शक. प्रेरक के रूपमें निमित्त कारण है। सतः उपादानको खदला के लिये निमित्तका अवसम्बन भी आवश्यक माना गया है । और वहीं मक्ति को बनकाश मिलता है । इमें प्रमु से 📾 देने द मांगने नहीं जाना है बहिर उनको देखकर अपने शह व वास्तविक स्वरूप को स्परण करना है और उनके जीवन भीर उपदेशों से निज-स्वरूप प्राप्ति के मर्स को जानकर प्रशुच होने की प्रेरणा छेनी है। कर्ता-मोक्ता हम स्वयं ही है। क्षरिहंत, जीवन-मुक्त, इसमें सहाय मार्गप्रदर्शन व क्लुतच्चका चाल्तविकरूप मोश के रापाय बतलाने द्वारा करते हैं। बीर सिन्द तो कह मी नहीं सकते उनसे सो हमें केवल प्रेरणा केनी है। उनके दर्शनदारा अपने अद-स्वरूप का दर्शन करना है। उनके गुण-कॉर्तनद्वारा अपनी आस्माके स्वामायिक व वास्तविक मुणों को ही संमारूमा है। उनकी पूजा व मस्तिद्वारा उनके मुणों का जनसरण व आदर-बृद्धि उत्पन्न करना है। उनके चरित्र से साधन मार्थ, उसके छिए आवश्यक तैयारी व अपने जीवन को तदनुरूप बनाने की प्रेरणा केनी है । अपनी सञ्चादता व जारिसक दौर्यस्य हटाना है । सीर इंडतर तितिक्षा, सहनशीखता सतमाव वीदरागता आदि वदाते जाना है ।

श्रीमर देवनन्द्रजी ने प्रमुस्तवबीड़ो पुनः पुनः विश्व प्रकार साष्ट्र शब्दों में दुहराया है वैद्या अन्य किसीने किया नहीं हैं। बहो उनकी महान विशेषता व गीलिकता है। बान पाठकों को जाएकी स्वनायों के कुछ चुने हुए परोक्त स्थारवादन कर देना उचित समझता हूं विससे उपरोक्त कथन आ वे स्वयं अनुभव कर सके।

प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेवके स्ववन में प्रश्तु से श्रीति करने का जो उपाय वतलाया गया है, सह सरकरत ही मार्थिक है—यदा सुनिये।

> " प्रीति अनंती पर थकी, जे तोड़े होते जोडे पह । परम पुरुषधी रागता, एकत्वता हो दाखी गुणगेह ॥ "

अर्थात् हाणु है प्रीतंत तो पर यानी अन्य सीतिक, सामध्यार पदार्थों से मोह हटाने पर ही है। सकती है। प्रीति को होर तो पर पदार्थों की और हो इटाकर प्रमु के हायरों दो जा सकती है। प्रीति करना अनुष्य का एक स्वयान निशेष है। उसे विषय विश्व के साथ जायर हमाना चाहें, हमा सकती हैं। केनिक अन्य दूसरे पदार्थ और प्रमु वापने गुधी के अन्यर एक हुसरे हो किन गुण बाले तथा विरोधी हैं। इसकिये दोनों हो ही एक हंग प्रीति नहीं को जा सकती। इस पर के प्रथम नरणाने कहा गया है कि वितानी मानार्थे हमारी प्रशित पर पदार्थों व विषयपादि में है, उसको तोइने हुए यदि प्राण प्रमुद्ध प्रीति-जनके गुणसम्हाण और कीत्रीन करते बाते हैं तब पुक्र तरफ दो उद्यादीना और दूसरी और सन्वीतना जपने जानन-मुणोर्ज नियक्षता को प्राष्ट करते हैं।

दूसरे पदमें प्रसु को " आष्ट्रणनक्त्र" वताया है कि विसके द्वारा करनी वात्तविक प्रसुता प्रगट होती हैं । वह इस प्रकार है—

" ममुजीने अवञ्चवतां, निज्ञ बसुता हो प्रवटे गुण राख ! देवचन्द्रमी सेवना, आपे मुझ हो बविचळ श्रुस वास ॥ "

अन्तित्वाश प्रमुक्ते सावन के प्रारंग में ही अन्नित्वप्रमु के बन्नन मुणोक़ों सम्पदा को द्वनकर गुणों के प्रारंशित्वण होनेक़ी होने अल्पन होने का कहा गया है। हारोर चल्लों में कार्य विदि तो कर्तों के हाममें है पर निमित्त रूप से अपने सहामक प्रमु विके हैं। कारण से हो कार्य की लिहि होती है। प्रमु के दर्यंग से आज-नाक्स व शांक का रुपरण हो बाता है—हरे किस सुन्दर स्थान के साथ ग्रीमर् देवचन्द्र भी कहते हैं।

> " अज कुटात केसरी रहेरे, विज-पद सिंहनिहार । तिम यसु मके मंत्रि रहेरे, आतम-श्रक्ति संमात ॥ "

अर्थात् निवर प्रकार बिंह-स्वावक वकारेनों के ब्रीड में रहते के कारण अपने को सूखरे वैसा ही नानता है पर जब वह सिंह को देल नेना है, तब बढ़ अपने वास्त्रांकिक स्वस्प को समझ कर विहों के सन्हर्म में चन्न बाता है। उसी प्रकार सांस्रारिक-उपयोगों में मूझी हुई हमारी ब्याजा जब बोतराप-प्रस् के दरीन करती है तब उसे अपनी वीतरांग दशा व अनन्त ज्ञान-दरीन-चरित्रादि गुणों का ज्ञान होता है और तद्रप मक्त की आत्मा अपनी वास्तविक दशा को प्राप्त होती है ।

कार्य-सिद्धि यदि अपने हाम से ही हो तो फिर प्रमुको तारने आदि के लिए क्यों कहा नाता है २ इसका रहस्य श्रीमद अगले जरणमें स्थष्ट करते हैं ।

> " कारण पद कर्ता पिणेरे, करी आरोप अमेद । निजन्यद अर्थो यसु यकीरे, कर्ता अनेक उमेद ॥ "

अर्थात्—प्रसु फारण हैं। उनमें कवांशने का बारोप कार्यक्रियिमें सहायक मान कर किया गया है क्षीर उसी क्षत्रोपने के बारोप के कारण प्रमुखे मक-मानक बनेक उन्मीदें व याननाओं की मांग कारत है।

ह्या के दरीने के नया ज्ञाम निष्णा इसका उल्लेख बगाने पर्वोगों किया गया है। बाह्य पीट्-गालिक क्यापोंने मुख का जो अम बान्वह टेल गया और बाह्या के बाह्यित मुख, धानन्द का बोब हो गया। इससे माहकटा, त्याभित्वा, पोळा-बाद रामक्या दानपरियानादि बाह्युण, अब अन्तर्मुंखी हो गये। इसस्य प्रमुख के नियोगक (बन-समुद्र के तात्क), साहबा, वैच (भरोग नियात्क) गोप (पद्यीक रखक) और बाब वर्ष बांता कहा जाता है।

तीपर स्तवनमें अनु को व्यवस्ताद निमन होने से बयद बंदाओं के सुखकार है । अनु मोल-रूर कार्य के हेतु हैं । इस माननारे वहुमान-पूर्वक बेवा करनेसे मन्य-वांदों को मोल रिख्या है। ज्यादान कारण आधा है जीर कुट व्यवज्यनकर प्रष्ट है। उनकी सिददा हमारे किये सायन सुप है अत्तरमु-स्वरूप को जानकर उन्हें बंदन करने वाला उनकी सरणमें रहनेवाला स्वय है।

चीचे अभिनन्दा-स्तवन में अब हे स्सरीट केंद्र बीर का होनी इस विश्वास के उठाते हुए, उत्तर में कहा गशा है कि चौरनिकेक अञ्चल के त्याप से ही अब्रुक्त निकले की प्रतीति होगी। अञ्चल गुजो की चर्चा आगे के पदों में की गई हैं।

पंचम श्वनिकाय के स्तवन में उनके बाजाधिक गुणोड़ा वर्णन है। जन्तमें कहा गया है "माहरी शुद्ध स्टाहण! प्णीता तेहनों हेतु बखु तुँही साचों " यानी है बखु मेरी झदताकी प्णीत! के कारण जाप ही हैं।

्वें श्री बदन-प्रश्नामु के स्तवन में ग्रमु के संख्या के जातम को संपदा श्रक्त होने का कहा गया है। "तिम हुझ बातम संपदारे, प्रगटे ग्रमु संगोग।" गारसफलर के संयोग के स्पर्ध से छोहा स्वर्ण वन जाता है उसी श्रक्कार श्रमु के शुण ज्यक हैं। उनके शुणों के संयोग से इमारी अध्यापन-दशा प्रगट होती है। आधारितिंद में कारणमृत श्रमु का नाम निर्योगक स्टट्टा है।

चन्द्र-अग्रप्रमु के रहरन में बंदन, नमन, कर्चन, एवं गुणगम को द्रव्य छेना बतलाते हुए आवसेवा से प्रमु मय अभिन हो बाने को बतलाया है। आगे सेवा पर सातनब धराये गये हें। मुविधि-जिन स्तवन में प्रमु दर्शनसे होनेवाने उपमका वड़ा सार्विक चित्रण किया गया है। यथा:--

" दीठा सविधि निषंद, समाधि रसे भयों हो छाछ। भास्यो गात्म-स्वरूप जनादिनो विसर्यो । 10 मक्रम विज्ञान रचाचि शकी यस अवसर्थों **ए**का साधन मार्ग मणी य संचर्यों हो । दानादिक निजयाव हता से परवशा п ते निज सनास भाव ग्रही रही तब दशारे । मोहादिकनी घुळि अनादिनी 11 बस्स असण्ड बलित, स्वदाव वे सांसरे रे । 11 राष-रमण श्रुचि व्यान मणी जे आहरे रे п हे समतारस थाम, स्वामि सुद्रा वरे। 35 प्रमु सडाने योग प्रमु प्रभुता छुँ हो छाछ। रण तणे साध्ययं स्वसंपति बोल्ये हो। कोल्ख्यां बदमान सहित रुचि पण वधे. п हिंच बनवाबी बीर्च खरण घारा सबै हो ॥ "

यह पूरा राजन ही किंव के इत्य-राजने निवृत कथ्याल-अवाह है। विसे गाँगे ही इवय बारान्य विमोर ही उठता है। पाठक राजने इसका रसारवाहर-का देखें !! निविज्ञित स्तवन में क्रिये कपनी अभिजाब भी कैसे कुन्दर इंग से व्यक्त करता है:—

> " ममु को त्रिमुक्त नाय, दाल ई ताहरो, करणानिधि अभिकार, ग्रेके प मुख बरो ! बातम क्सु स्वसाव क्सा कुक सांसरी, भासन-वासक यह करण ध्याने सरी। "

आगे के स्तवनों में श्रीगद दूसरे कवियों की सींति दीनता व्यक्त नहीं कर प्रमा के निमित्त है सपना साम-स्वकूप समझ Im उसकी प्राष्टि में प्रकृत होने की ही प्रेरणा करते हैं ।

> " अनु-मञ्जूता संभागता, जाता करता गुणप्रास । संबक्त साधनता वरिवित्त संबर परिष्मति साम रे। प्रगट तत्तवा ज्यायता विज्ञतत्त्वना व्यादा शाय तत्त्व रम्ब पकाशता पूर्णताये यह समय मञ्जू दीठे मुझ सांमरे पत्मातस पूर्णानंद ॥ ^{प्र}

बारहरें बासुपूर्व असु के रतका में उपर्धुक तरन को बड़ी ही स्पष्टता से व्यक्त किया गया है:--

" आप कहताँ सेवाधी हुवे दे, सेवक प्रण-सिद्धिः । निज्ञ घन न दिये पिण, वाधित छहेदे, बक्षस बहारसिद्धिः ॥ जिनवर-पूजासे विज्ञ पूजनारे, प्रगटे बन्बस शक्तिः । परमानन्द् विछासी बहुअवेदे, "देवजन्द्र" पद् व्यक्तिः ॥ " प्रमु जकती है पर उनकी प्रेता से वेवक प्णै-सिद्धि प्राप्त कर लेवा है। प्रमु जपना घन किसीको कुछ भी नहीं देते पर जनके आधित-सामक उनके निर्माद कारण से अपनी अध्या रिद्धिको प्राप्त कर लेता है। "अमुको पूना चास्तवमें अपनी हो पूना करनी है" इस नाम्य में किने "मानों उसके हदय में उसका अध्या-अ-उन्ह सर्वीन गोछ उठा हे" व्यक्तकर कमान कर दिया है। इस स्थान की प्रथम गावामें कहा है कि प्रमु में पूज-भान स्थं प्राप्त हुवा है। में दूसरों हारा की गई एवाकी कभी संबंध नहीं करते वाचित्र सामक अपनी कार्य-सिद्धि के लिए ही उनका पूजन करता है। प्रमु को इसकी विनेक भी हुका व असन्तता नहीं ।

मा विमलनाथके स्तवनमें मी प्रमुक्ते सम्बोधित करते हुए श्रीकर् देवचन्द्रजी कहते हैं:---

¹¹ ताहरा शुद-स्थमाव वे जो आदरे वरी बहुमाव। तेहने तेहि जे नीपने **र कोई बहुत तान** "

अनन्त-जिन स्तवन में श्रभु-मूर्तिको व्यर्थ समग्रा से मन्य-बीवों पर होनेबार्छ प्रभावों को व्यक्त किया गया है । सर्वन एक हो तक प्रिन्न मिन्न राष्ट्रोमें परिस्कृट हुव्या है !

धर्मनाध-म्यु के स्तवन में प्रशु के साथ जननी वालीय एक्या व्यक्त कहते हुए मीनदूर उनके समान ही वालने को सनकने को अभिलाध प्रयट को है। त्यांची ने तो पर माद परिहार कर करना आदिक कानन्द या किया और में पर-मानडी संगति व जासकि में फेला हुआ पड़ा हूँ केकिन फिर मी स्वाटिक के समान एक ही सत्ता को शहेंडने-निर्मेक हूँ। परेणाधि मेरी नहीं है जार परना-शाबी मिकि के रंगमें अपने को रंगकर अपनी वाश्योक शुद-स्वकृत का खाइक बन, परमाव का त्यारा करना ठांक है। नेरा अकत-स्वकृत गेरे हारा ही संगव होया। नेरा सब व्याप-स्वार्थ, भीरी, वीरी, "प्रसु को ही मेरे मन मन्दिर में ध्वान करते हुए ग—में ही समुट कर सकूंगा।

श्वाप्ति नाम के सत्तन में देव-निर्मित समकारण में प्रमु देशना देते हैं। उसका धर्णन है। और भगवान कैंग्रनाथ के स्तवन में श्रीमद ने निवयक्कार कॉम्रकाश ज्वाक की है। यथाः—

> " महित स्वभाव को कपको है, रुचि कैराम्य समेत । प्रसु सम्मुख वंदन करी है, ग्रांगीश जात्म-हेतोरे । "

अरनाक-प्रमु के स्तवन में कार्य-सिवि के १ कारणें को व्यक्षण पर पराते हुए उपादान कारण बाहमा और निषय कारण प्रमु को नतकाते हुए कवि के मक-बदय की वर्षि दोन्त हो वठी है। आए कहते हैं:---

" मोटा ने बरस्य वैद्य ने सी बिन्ता विस्त प्रशु चरण प्रसाद, सेवक वया निचिन्ता ॥ " महिनाय-त्ववन में ६ कार्स्कों को माला पर ही भयकर वतामा है । प्रसु सेवा की सावस्यकरा बतलाते हुए श्रीमद कहते हैं:---

" माहरू पूर्णानन्द प्रसट करवा भणी रे। पुग्रावर्श्वनरूप-सेव प्रमुखी तणी रे।"

मुनिसुबतनाथ के स्तवन में बही भाव इन शब्दों में ब्यक्त किया है !

" अतम बातम कर्ता, कार्थ-सिदि तारे तस साधन जिनराज । प्रमु दीठे प्रमु दीठे कारज किंच करजे रे प्रगटे शात्म-समाज ॥ "

२१ वें समिनाथ स्तवन में कवि ने अध्यात्म-वर्ण का रूपक बहुत ही भाव-पूर्ण बांध है।

२२ में असिष्ट-नेमी-असु के स्तवन में आप कहते हैं कि रामां की संगतिसे रागदण ववती है। प्रसु बोतरामां हैं इसिट्य उनमें प्रेम की बोडने से मन से भार हो बाता है।

२६ वें असु पार्वनाथ के त्वका में असु ने बुदका, पफ़्ता, तीरणवादि द्वारा मोह-रिपु पर कैरे विजय प्राप्त की-इसका सुन्दर क्लियन है। क्ला में असु को वंदन कर गुणो को चित्त में रसाते हुए कृति कपने को क्ला कृतकुष्ण कल्य-सफ़्त हुज्य, ऐसा मानदा है।

अन्तिन बीर-मुझ के खनन में अपने अवमुणी पर खेद अकारय करते हुए प्रमु हारा अपने को ताले के छिप, प्रमु से अनुतीय किया गया है। प्रमु का सचा अवन, प्रमुक्त गुणों को पहचारने से ही होता है। अपनी आणा के समस्य व्हेंबर-मान-चारिन, बीवॉटि गुणों के उहास से ही मध्य बीन कर्तों को जीतकर मीश था केवा है।

'बीक्षो' इचाहि पदों में श्रीमद ने वैनतः बागतत्त्व को परिख्यांचित कर दिया है। यहाँ सन उन कानों के पदों को उन्हान कर देना संभन नहीं। बात. १-४५ उदाहरूमों के द्वारा ही सङ्क्ष्य पाठक सुन्तीय करें।

प्रथम सीमन्यर-स्वामी के स्तवन में प्रमुखे विनती बहुत सुन्तर वंव से की यह है । सुनते ही हाइय नाव उठेगा । देखिए ! जाएकी धनोसी विनती । सनिये —

"श्री सीमन्धर जिनवर स्वामी बीमतड़ी भवधारो, श्रुह-वर्ष ममत्वों ने हुमचो, मनदे तेत्र बातारो रे! ने परिणामिक वर्ष हुम्हारो, ते हवी कमनो वर्ष। अद्या मातत राज्य वियोगे, वन्त्रमो विमात अवर्ष।" निमांक कड़ी के गांते हुये तो मानी अध्यान का सारा सहस्य पिछ वाता है:—

" अञ्चय विभिन्ते प संसरता, अत्ता करता पर वो । शुद्धविभिन्त पत्ने जवचिद्यव, कर्ता योक्ता घरतो ॥ " सीपन्त्र-मधुक्ती पेवा ववकवत व उपरेश प्रद्रण इत्ते के बोध्य है क्योंक जच्छे विभिन्ते की प्रदेश कर संसार की कुटेबों को ओडबा ही साधन वार्ष है । युगांवर-स्वाधी के स्ववत में पर-गिलांगों के रंग वे बचाने की प्रार्थना की गई. है। इक्क्शानन-स्ववत में "बच तक जमनी व्याव-संबद्ध न प्रसट हो वान "-व्यवत गुरू-मश्च की लेवा जावरक है। स्वपंक्ति कार्य-गुर्ण वनतक न हो उनवक कारण को नहीं छोड़ा जाता। प्रश्च मेरी तिर्दि के पुत्र हेंहु हैं। कारण के कार्य होता है जबार प्रश्च तो स्वोद्धन-कारण हैं। वजनर स्ववन में अपनी वर्तमान पतित दशा का विश्व प्रश्च के सम्बुख बड़ी मार्मिक शिति के स्वा गया है।

चन्द्रानम-स्तवन में बर्तवान काल को विषयता व बांदो की होन सख्ता का विषयण सुन्दर देवारे किया है। निगम्पुके राज्यन में जनने जनावि बुळ का घटल्हाट किया गया है कि मैं परमाव करों, जोका तथा बंध, व्यावन का प्राइक हो गया हूँ। वह में रचा हुका हूँ। सहम-धर्म को मूळ रखा है। बंध व्याववको व्यावशा व खबर निर्वत का त्याम कर दिवा है। बढ़ बळ कमें और छारेको जाला यान किया व्यवंत् कुणे क्य से बहितस्य बन गया। पर जब सुबोग से परमाला को देखने से मेरी जनादि को चानिक्यां मिट गई। प्रमु के समान हो करनी सत्ता को जानकर उस ब्वह्म के प्रमुख्य कर के इच्छा हुई, वह वाँदरम्या की स्वावा है। बाह्य पर परिणित के प्रति सर्वया निर्देशना हो जाता है।

१४ वें देवदत्त-प्रमु के सत्वनमें मिक मान प्रगट काते हुए कदि-इदब बोछ उठता है:—

है होवत जो सनु पांचदी वायत नाथ हजूर काल रे। बो होती चित्त-बांचदी, देवत नित म्रश्च-बूर काल रे॥"

श्रान्तम् श्रावित वीर्य्यस्तवन में श्रञ्ज गण्डि के शुक्तन की चर्चा करते हुए श्रीमद देवचन्त्रज्ञी कडते हैं कि:---

> " जिन-गुज-राग परमात्री, वासित मुझ परिवास । तजसे तुव विभागतारे, सरले जातम कामरे ॥ विन-मन्ति रत विचनेरे, वेशक रस शुण प्रेम रे ! सेवक निज पर पामवेरे, रसवेषित वाप सेमरे !! "

अतीत चौतीती के चतुर्व रजन में शान्याशिक होएं का रूपक छुन्दर बना है। अध्य रजन में यंक्षेत ऋतु में काम खेराने का वित्त रूप से विश्वय है। १६ वें नवीबर रजना में मुद्ध के सुस्त का दर्शन कर जाव्या की जनादि मुख दूर हो बहु इच्छा प्रयट की गई है तथा निज स्वक्त्य दक्षा वागी-उसका वर्णन है। १९ वे अनीख जिन स्तवन में "शुद्धी कुछ नहीं करते"। मरू अपनी कारपाड़ी प्रमु के निर्माण से ही किया उठाला है तथा जमना कार्य सिंह कर लेता है जैसा कि:---

> "धर कारज करता नहीं रे, सेवक धार न हेत। से सेवे तनमय और रे, ते उन्हें सिख संकेत !! सेवा-प्रक्ति मोणी नहीं रे, न करे परनो सहाथ! तुत्र शुष रंगी-अकनो रे, सहसे कारज शाय!!

कुरान्त-बिन स्तनन में श्रीमद् ब्हुते हैं कि में सेवा का फल नहीं गांगता गरिक ससी हैवा फल ब्हरय मिनेगा। अर्वात चौनीची के १० स्तनन ग्राह नहीं हैं। बलिय सोन तो व्याप्य हैं। चौनीसी पूर्व बहु बिन स्तन्त पर तो श्रीमद्दे राये निवेचन किसा है। यांचों को स्पष्ट कर दिया है। बीर निवाय स्तन्त व्यान में सोकर्स की यांग ज़ोरों से बहाई है। गौतम स्वामी का "लेस्हज़ विकाय" में तवा हो करणीवायक है।

सिदाचल-स्तवन में वहां सुनियोर्ने किस प्रकार सिदता प्राप्त की इसका तो कित्र सा अंकित कर दिया है । अश्माको उदयोधन करते हुए आप कहते हैं कि:—

व सातम भावे प्यो हो चेचन, सातम भाव प्यो ।
परयांवे रमतां ते चेतन, काळ सत्तम मान प्यो । हो चेतन ॥१।
रागादिक सुमविने चेतन, पुरुगळ-संथ मध्यो ।
हो चेतन ॥१।
होगति महि गमन करतां, निश्च सातमने न्यो ॥ हो चेतन ॥१॥
हानादिक गुज रंग घरीने, कर्म के संय रमो ।
परमातम सहस्य ध्यान चर्दतां, शिव-प्याम हु प्यो ॥ हो चेतन ॥१॥
परमातम सु ध्यान चर्दतां, शव चिति में व समो ।
"वेयनक्" परमातम साहिव, स्वासी करीने नमो ॥ हो चेतन ॥॥॥

साह की गाँच शागनाओं में आध्यास का कैसा आकर्षक पुट दिया गया है । वह देवनें योग्य हे | इनमें मक्स में "अहर गंका, दूसरी में "तव गंका महत्त बरकाकर तीसरी और चौधी में सब और एक्स में आध्या को बड़े ही मार्निक अच्छों में उदनेचित किया गया है । ग्रांनर्से की मानवार्कों से क्या ग्रांसि कोडी है । प्रांत्म में ही बक्का है:—

> " शुक्त-आक्या मण थिर करो, राखे अवसे छेद । वय ग्राक्या काया दर्म, वामे वेद उमेद ॥ चरव भाव निर्मेड दशा, निज्ञ क्युता इक भाव । वय भायमा आरम्युच, सिद्ध साधना दाव ॥ "

तप-माथना में तपस्वी गुनि की भूरि भूरि प्रश्नेसा की गई है:---

मिवन तय गुण भादरो, तप तेले रे छोजे सहकाँ । विषय विकार सह रेख, मन गंदी हो मंत्रे भव-मर्म ॥ क्रोगे जये इन्हिय वप तथा, तपजाणो हो कर्म सुद्दमहार॥

विण सांधु तप उजनार थी, सुब्जों है हो बरि घोड़ पगंद। विज सांधुनों हुं दहन हुं, निरप वेंदें हो तस पद अरविंद। प्रम्य तेंद्र वे धन-पृद्ध तबी, तन स्वेहनों करी हेट्। चिसंग वनवासे वसे, तपदारी हो तो बनिषद बेंद्र। तीसरी सन्द-भावना में चेतनको उदबोधन करते हुए कहा है:---

"रे बीव साइस बादरे, भव चानो दीन। सुख दुःज संपद बाएता, पूरव कर्म जाचीन। कोचादिक क्टो एव समे, सहा। दुःज बनेक। ते वो समता में सह, तो तुझ करो विवेक।"

तेरे दैसर का मान कैसा !

" बाजी इरिक्ट प्रतिहरी, तस विश्वय समान । ते पिण काछे संदर्धा, तुझ वन स्थो साल ॥ हा हा हुं तो स्ं फिरे, परियणकी स्वित । मरक पर्थ्य कहो तुझने, कोण करें निर्मित ॥ "

रोगावि में धैर्य-धारण करे !

" रोगादिक दुख उपने, तन बरतिम घरेय । पूरव निज्ञ कृत कर्मनो, प शतुसद देवरे ॥ "

देश पर प्रीति केसी !

"पद शरीर बाशाधातो, सिष में सीहंत। श्रीति किसी ते उपरे, से स्वारसवंत।

" आलाड पाछड सिंह चिने, वो विषसी बाय। रोगानिकयो निय रहे, क्रोचे कांवि उपाय॥ स्मने विक पडते उत्यां, धार्चे छिन सुन्। यो बे हुटे धारबी, 'तुकने स्थो हुवा। र तन विषके ठाडरै, निये को हामानिक गुण तकी हुए॥। को हामानिक गुण तकी, छुट भाने हुए॥।

आह. प्रकलन-माताकी साजाय में शुनि-जीवन का खुल्य विकाद दय हे लोका गया हैं। प्रांत्त में नहीं करते हैं कि करतेनों चान के इल्लुक करि बांचे शुनि सन, वचन, कावा, इन सोनों की गुद्धि रहंती है। सन की तक पिन्छन, जनत है मौत और कावा है स्थिर रखते हैं। सापना में उद्धान रहते योगी हा उपयोग नाहर नहीं हो पाठा विकेट शुरा बहुता है। पर वह व्यवस्था निरुद्धा हो जनते योगों हा उपयोग नाहर नहीं हो पाठा विकेट शुरा बहुता है। पर वह व्यवस्था निरुद्धा होती है जनते सोगों की शुप्त प्रवृद्धि में बोहे बाते हैं। उनकी प्रवृद्धि क्वेंट में बोहे वाले हैं। उनकी प्रवृद्धि क्वेंट में बोहे दोष उनका होता है उतस्थे वे उपयोग निवेद पूर्वक मचे रहते हैं है।

" मान अंधोगी करण रुचि, सुनिवर गुप्ति घरंत । जो गुप्तिना र्यह' खकै, तो सुमते विचरंत ॥ व्यवहार-क्रिया करते हुए मुनि की दृष्टि परमार्थिक हो । कहा है :---

" भाव दृष्टि द्रव्यतः किया, सेवी छहो शिवमित्त । "

करतर्थरपोग ठीक रहने के कारण ही सम्पक् हाँए को किया व भोग को निर्वरा का कारण माना गया है। बाहर में व्यक्षकि नहीं होती। तजर्वांध से किया करते हुए भी क्य से बह सुनि अब्बा सहता है।

प्रथम समिति इत कार्य पुणि क्ल उन्हर्यन-मार्थ का व्यवसह वतलाते हुए ज्ञानप्यान में रियर सुनि उठने, विक्तने की क्लबड़ा क्यों करते हैं। वह अध उठाकर उत्तर में श्रीमद् बतलाते हैं कि मति विजोक २ कारणों से उठता है।

> " मुनि उठे बसदी बकी जो, पामी कारण ब्यार । जिन वेदन (१) जामांतरे जी (२) के ब्राहार (३) निहार (४) ॥

चिनवंदन, प्रामानुमाम विहार, आहार निहार, भी क्यों किया जाता है:---

"परम चरण संबर पकड़ी, सर्वे आण जिन दीं । श्रुचि समता रिवे पपड़ेसी तिन्ने मुक्ति र इंड ॥ एम पर्वे रिवर आक्षी सी, बान विना परमाद ! बीतरागता हहताखी, विचरे मुन्नि साखाद ॥ र शरीर मनमूल है, तसु पोण्ड माहार । आव क्योगी नित्र दुवेती, यह जैन विनहार । पर बारत, परमालाकी, विहा विनहार ॥ पर परिणांत हम्न स्वलाबी, हम्म कुस्त्ये रे यह । पर विरायं हमारी की करें मोच्यी तेता ॥

अपात् महानजरित-वेषण्न, सेवर-वारक, सर्वेज विकेवर या उनकी सूर्ति को देश समया मात्र की पवित्र रणि उत्तरण्य होती है इसकिए सुनि विकट्सेन, बंबन करें। एक स्थान में अधिक समय पर रहते से स्थान व न्यक्तियों के प्रति ग्रीह हो जाता है। इससे ज्ञानन्यान में नाथा पढ़ती हैं। प्रमाद वहता है। खतः नीतराम-जाय की पुति के क्रिए सुनि विक्ता रहे। एक ही स्थान मर स्वा नहीं बनाने। जहां तक अनीमी गांव ग्रान नहीं हो जाता। विकास के किए आहार को शाद-रामका है नीर नाहार करने पर निवार वानी नाकम्यादि का परिवार स्वामादिक है जतः आहार और निहार के क्रिय भी चुनि को स्वामातिय होना पढ़ता है। जक्रमा होता है। पर चलते समय दिस नीचे रहे-बीनो के रुखन में सावधान रहे।

दूसरी माथा-समिति काशिक प्रशृति का कारण बतसते हुए व्यापने वहा है-ववन-गुप्ति रूप उत्सर्ग मार्ग का अथवाद साथा-समिति है। सर्वया मौन रहना संभव न हो तो हित-मित सत्य, तिर्दोष वचन बोछे। बाधवहरा वचन व बोछे। बाधा पर्याति आह हुईँ है उसका उपयोग स्वाध्यान, स्वरूप-बोधक, परोपरेश के छिए करें। जो वाहय-शति बाधव मार्ग है उसे सुनि निर्वता में परिपेत का हैं। प्रसु मुख की सत्वना जपने स्वरूप को संसादने के छिये व अन्य-बोनों की प्रतिबोधित करने के छिप पर्योगवेश करें। सूच बांचना वस्तु-स्वरूप हन्जादि अपने बोध के छिप करें। श्रीमद कहेते हैं:

> पोमचे आश्रव पह हतो, ते क्यों निर्वेदा रूप रे। त्रोव की कंबल मुनि करे, खाध्यता खाध्यनिद्रूपरे ।। सम्पर्वेत परिवृत कार्ये, आरेप पांच क्षित्राय रे। ते भयी नगर सहनादिका, आश्रय वर्ष नववाय रे। त्रिमगुण सत्तक वित्र तत्रने, त्रोपदा करे व्यविरोध रे। हेराना भव्य प्रतिवोधका, नाव्यक्टप्य निज्ञ वोषारे ॥

तीसरी कमिट छाद व्याहर ज्यूनकर-पुण्या समित है। सुकतः व्यास्मा बनाहरी है। भातः असर्गे मार्गे वही है। उसका व्ययक्ष निर्दोण व्याहर-पिखा इति से केना है। काना पुरसक निर्मित है जीर बाह व्याहर-मोकन का पुरसक कहनी है भातः व्याहर देह वर्गे है। सारणा वर्ग नहीं। तब व्याहर ग्रहण बनों किया भाता है सर प्रभा का उत्तर श्रीमद इस प्रकार देते हैं:—

> " हम पर त्यापी छंचरी, व गहे पुराव्य कंव । साजक कारण राखवा, सचनारिक छंचर । आतम तस्य अनंतरा औ, हाम चिना न जणान । तेह मान करना मंत्री औ, पुरित स्वाचार चराव शे तेह मेद श्री गेह रहेखी आहारे शक्यान । साध्य अपूरे हेतुनेकी, केम तसे गुणवान । सह अनुपाणी शीर्वनोजी, गतैन अचन छंसोल । बृद्याधी सम शाणिनेजी, जणानिक उपनोप ॥ को साधकता नवि धडेजी, तो नम्ह शाहर । वाधक परिचली सास्वाली, अधनानिक उपनाप ॥

क्यांत्-माध्य तरका बोच ज्ञान द्वार्ष होता है। उसके प्रायोक्षण के छिए सुत का स्वार्ण्याय व्यवस्थक होता है। कुल-स्वाब्याय देह से जीर देह के रिव्य आहार की ब्यायस्थकता है अतः वहांतक सापक पूर्ण गहीं हो बाता सावन हेत को गुणवान छोट नहीं सकता। सुनित्यम आहार देह को बाता देने के छिए ही करते हैं। पुष्ट बनाने व स्वाद प्रस्ति के छिए नहीं। अता नहीं निमा ब्यहार छिए भी सावना में विश्व प्रतीत न हो तो सुनि बाहार न देरे। शारोरिक स्वीत को बीमारा से सावनिक्षित में बावा पहती है इसके छिए हो बाहार छिया जाता है।

मिक्षा के लिए बानेपर यदि संयोगक्श निर्दोंप पिक्षा न मिले तो सुनि को खेद नहीं करना

चाहिए। उसे तपबृद्धि निर्वेत हुई, समझक्त शान्त रहे । मैं कव अनाहारो पद पार्कगा-यह भावना में रहे ।

चौदा क्षमित संबध साफ्त बाब बस्तुओं के प्रहण का-बाग विवेक वा उपयोग पूर्वक करने को संहित्तकोचना नामक हैं। सर्व परिमद्द परित्यायहर का यह अपवाद मार्ग है कि संवग से तम को इदि के लिए आवश्यक कर्तुओं को कम से कम मात्रा में प्रहण करे और उनका विवेकस्पैक उपयोग करें। इसके व्यर्थ का कर्म-वय वहीं होता है।

परिप्रह स्थापो परसाव विरक्त सुनि सांबनोचित सर्वोहित उपकरणो का भी संग्रह क्यों करें । इसके उत्तर में, अध्येक उपकरण रखने का कारण समझते हुए श्रीवर्ने कहा है कि:—

> " भाव गाँडसकता कारव मची. उच्च गाँडसक साथि 1 रतोडरण स्थ बिचका घरे. चरवा योग समाघि ।६॥ शिवसाधननो सूख ते हान हे, तेहनो हेतु सल्हाय । ते माहारे ते विष्ठ पात्र की, क्यजाए त्रहवाय ।। अ। बाका तरुव नरनारी जंतु ने, नन्न दुगंकानो हेता। तिणे चोखपट प्रही सनि उपविशे. श्रव घरम संदेत ॥८॥ दंस मक्क कीतादि परिसद्दे, न रहे ध्यान समाधि । करमक आदिक निरमोही पणे, चारे मुनि विरयाधि ॥९॥ छेप अळेप नदीना शामनेः, कार्य वंड प्रहंत ! इश्वेकालिक सगवर सालग्री, तब शिरता ने तंत ॥१०॥ छ्य सबीव सचित्त रजादियो वारव द्रख संबद्द । देखी पुंते रे सुनिवर तेहबी, प पूरव सुनि वह ॥११॥ पुरम्छ खंध अहण विशेवता. इत्ये खयणारे ताल । मावे भारम परिपारि वय नवी. गृहतां समिति प्रकाश ॥१२॥ याधक मान नहेंच पणे तते. साधक जे गतराग ! पुरव गुण रक्षक पोषक पणै, नीपने तब जिन मास ॥१३॥

कर्षात्—"मान बाहिसा "—जान-गुण रक्षण के क्रिय, "द्रव्य-महिसा " प्राण-मान्ने शावरपत्र हैं । छोटे चोत्तींकी रक्षा के क्रिय राजोहरण, गुस्तविका आवश्यक है । इसीमकार मोध सावन में जान और ज्ञान के क्रिय स्वाच्याय जीर स्वाच्याय के छिए आहार। बौर आहार को वयणा पूर्वक प्रहण करे तथा इसके क्रिय पात्रों की आवश्यकता होती है ।

वाष्ट्रक व श्रुवा नातारी को श्रुनि के तक रहेनेचे दुवंन्छा (धूणा) हो सकती है व्यतः इवके निवारण के विध्य, जनसम्पर्क में रहने वाने श्रुनि के व्यिप जोलपदा श्रूवण करने का विचान किया गया है। मण्टराप्टि योर सीतादियें ज्यान में विचकता-चित्त विवेपता होती है जस- समाधि के िएए इन्डल-बोहने

इन्स्याद है। नहीं की सहाई के द्वार के लिए दंव रखे व छोटे जीव तथा पूछ इत्यादि को दूर करने के लिए स्वोहरण रखे। शुनि बतना थे पीर्मालक वस्तुलों को उठावें न रसखे। माय से व्यव्य परिणितियों की सावधानी से मंत्रणणा इन्ता रहे। नावक भावों को देष-रहित हो, छोड़ें तथा सावक इन्हरणों को रागासित हो, अहण करें।

पींचनी समिति "विमेशनिक्ता" है । यह मरुमून तथा जायिक व व्यवस्य आया हुआ अहत, हुटे पूरे सेक्य के उपकारण आदि को अब्द तथा प्रकार रवानों में निसर्धन कर दिये काने स्तर है। शोनर देवचनश्यो ब्हरते हैं कि कारि है। वहां मरु मी जरून होता हो है। उससे किसी प्राणी का नुकरान न हो जह स्थान में विवर्धन कर देना आहिए। संस्यम के बायक, आपन विरायक उपक्षि आहीर व शिष्यादि को जुनि छोड़ हैं। श्रीमर कृत्वे हैं —

" संयम बावक जात्मविरावनारे, जाजावातक जानि । वर्षाच अरान शिक्यांवि परदेव रे आवति सामधिस्राति ॥ "

... सीनों गुरियों में नन, वचन, काथ की चयकता को ओड़ काथा में मन रियर काले का विधास है। मन से पने, खुद प्यान प्लावे। जाते ओर रीट प्यान ओख दे। वचन में मीन रहे स्वा रचाप्याय करे। काथ से रियर नहीं यहि चयखता है तो वह बंबन है। यचक शाव बाध्य का मूछ है।

, अन्त की कुछसहूप दालमें मुनियों के गुणो की स्तवना की गई है ।

प्रभंतना-सती डो सम्बायमें यो व्यायाध्यक नात्रका निक्कण बचा ही सुन्दर हुआ है। राज-इमारी "प्रभंतना " हजार सांख्यों के साथ स्थवेश मंदर वा रही है। राख्ते में साथों मंदर मिळता है। वे राज्युमारी को संसार क्षेत्रका का वर्गन कर उसे चर्च में ये उपम करनेज़ी प्रेरणा देती हैं। प्रभंतना को उन सांध्यवों के कमन की शास्त्रक्रिका प्रतीत हो चाती है, पर उसका सखी-ससुराय वर्ष स्थवेश मंदर में बाकर पूर्व-निधिय तथा वर्गन की इन्छा पूरी करने को कहा कर किर पर्य-पायमा में रूप वाने को कहता है तब प्रभंतमाने वो कहा उसे कवि स्थवे फहता है कि " चर्म प्रमम करनी सत्तर, देनकप्रनी बागी रे जो।" साची-ससुराय भी उसके विचारों को पुष्टि करता हुआ प्रमान करनी सत्तर, देनकप्रनी बागी रे जो।" साची-ससुराय भी उसके विचारों को पुष्टि करता हुआ स्वाकुतारीत करता है के प्रथम जोगों में कंतकर किर सर्थ-बारावना करता यह उसी प्रकार है वैसा कि पहिले जानबुक्कर कीकर में क्या होना कीर फिर स्वान करना । उत्तम पुरशे का अपवार मही है कि पहिले मन्दा हो नहीं होना—

" बारहोने विक्र घोषड़ों रे कन्या, यह व शिक्कार । रतन-क्यी साधव करोरे बन्या, मोहाधीवता धाररें । सुव्याती कन्या॥ " साध्यां तथकुमारी को बीर उपरेक्ष करती है कि गाता-पितार्टि कुटुम्न तथा सांसारिक क्लुप्टें तम कम-मंगुर है। यह कि हो जाते हैं और किन मन्तु । यह येग न पराया ह्यादीर तम बारोपित-क्रीयल-मानी हुई बार्ट हैं। पोराणिक प्रशारों की मोहस्ता में पहना-मुक हैं। प्रराक्त- जड रूप है और हमारी आत्मा-बैतन्य-न्वमानी है। इस तरह के प्रमेद प्रयट होने पर आत्म-ज्ञान को कोन रोक सकता है:----

" पुर्शक ने पर बीव बीरे जन्मा, कीनो सेद विद्यान "
बावकता दूरे ठठो रे जन्मा, दिव कुण रोके झानरे ! सुरमानी कन्मा ॥
दून अमून्य उपरेशों को पुनकर राजकुमारी प्रमंत्रना नमस्त्रत हुई और आस्मा व संसार तथा उसको तथा पौर्माक्ति बसुओं ही क्षण-भंगुरता ॥ विचार काने ग्यो। विचार की तम्मयता में उसके करोंकी निर्वेश होने हमी। अपनी ध्यानावरणा में उसे अपना आस्म-बोप मान होने हमा कीर वह बीच ठठी। उसे किसे के सन्दों में सुनिये—

> " तब प्रयंतना चिम्तवे रे सन्या, त्ं हे सवादि सवन्त, कत्तां मोका तत्त्वनोरे सन्या, सहस सहस्त महत्त्व रे॥ "

इस प्रकार उसे भाष्यासिक ध्यान करते हुवे उसे कैक्टब ज्ञान हो गया ।

स्वसृङ्क्षमाल धुनि के सन्त्याय में क्रणाविक-स्वका मबाह अच्छे देवसे किया है । मज्युकुमाल पुनित्तम के क्षाहित क्ष्यु-भारत थे । मारत का उन पर क्षावम क्लेह था । सम्वान
नेमिन्तम के द्वारिका-धुरी के उद्यान में पदाले पर श्रीकुण के साथ कुमार मी प्रसुरकीन करने गये ।
वहाँ प्रसु ने देवलम में क्षान्याय-उत्तका निकरण क्षिया कि सम्बन्ध दर्शन, ज्ञान और नारिष्ठ ही
वास्तिक स्राल की शान है जोर खुद-जाविकक मान द्वारा ही ये त्रय क्ष्य का काल देवियकाम हो उठते है । परपरिणित संत्रीम भाव है । ये खुद स्वमाद नहीं, विभाव कबहवा है । कमंदि
उत्तिष में वापना स्वमानत निक्ष है। ऐसी थडा पूर्वक जाला में स्विर हाने से हुद स्वनाम प्रकृद
होता है ।

ममु के बचन सुनकर गबसुकुशान सचग हो वाता है और विचारने जगता है। विसे स्रोमद कहते है:---

> " देहादिक प मुख मुणमाहि, तो किम रहेतुं मुझ प माहि । जेदशी वंघावे निज तस्त्र, तेहनो संग क्रे कुण सस्त्र ॥ "

गा आइर दुनगर बननी माता श्री देवकी से बहते हैं कि मां 1 म्यु देवला बड़ा ही सुन्दर हैं!! सुनक्तर माता प्रसन्न होती हैं। पर बन कुमार मन्यपुक्रमाल माता से मानान के पास लगें दीक्षा केने को कहते हैं तो माता का हदय हुक-हुक हो जाता है। वे कुमार को संयम की कठोता, बनला कर कुमार का मन संयम की महाता कर काम चाहती हैं तब कुमार के बुंह से जो उदगार निकटने हैं उसे श्रीमद के कन्दीमें पाठक! सुनिये! जीर देखिए इनकी मार्थिकता---

" माताजी निज घर आंगणे जी, वालक रमें निरवोह रें! वेम सुद्र आतमधर्म में, रमण करंता किसी बीहरे॥" और साथ ही साथ कुमार माता से बेसे बचन कहते हैं कि जिन्हें सुनकर देवकी विवश् हो चुर रह जाती है ।

> "मात तुमें आविका नेमिनी, तुमें पम न कहाय रे। मोक्ष-सुख हेतु संयम तची, किस करो मात! बन्तरायरे॥

" नेनिशी कोई अधिको हुनै तो मानिये तास समस्र रे। माताओं कई नहीं सास्त्रिये, सोह रेसंयम में मत्र रे॥ "

दीचा केते ही कुमार की मोख-साधन की उसकृष्ठका देखते ही वक्ती है। प्रसुक्ते सिदि पाने का शीज मार्ग बतवाने का वक्तुंघ करते हैं। प्रसु ने कहा कि व्याज-तथ्य में रिश्त हो जाओ, तदर-क्षमें के मोगों को सरमाद प्रकृष्ठ सहन करें। एक राजि को अंतिया सारण कर आजमादों में पीरत के साथ सक्षान हो सालों।

रास्कुमार समझन-भूमि में बाकर त्यान में छोन हो बाते हैं। "सोसिक बाक्षण" जो राजकुमारका सदुर था-जबर से आ निष्ठण। बननो पुत्री वे कुमार विवाह न कर दुनि वन नाये थे इससे वह-कुमार को शुनि-बेश में त्यानात्व देखका-कोषसे बच उठा बीर दुनि के मस्तक पर विद्या पाठ बनाकर, उसके भोतर कालि प्रत्यांकत कर दो। सफक बच सहा है-उस समय दुनि विक्तन करते है-वह अपूर्व है। साठक उसे जीवर के इस यद हारा सर्वे:—

" वृहत-धर्म ते दाह जे अफ्रियी रे, हुं तो परम सदाह समाह रे। जे दाहे ते तो साहरो घन नधी रे, अक्षयबिनमय तस्य प्रवाह रे॥ "

इंग्ड

हेसकड़े उद्गार---

रेपबन्त्रको पर पुष्पावित्त, जो पहिरे अधिका "कारर"।
महकत आरम-द्वागक, निरमक हो छिवपुर-कार।
मध्य "स्वमर" अति छुक्ष ग्रेप, चल स्व सतिरोत्ती भारत पंडामर अति छुक्ष ग्रेप, चल स्व सतिरोत्ती भारित-पीत अतिकाय छाँडि पुराकर-स्व भोको ॥ पान करत विद् बात उष्टि तत-का सुवि विस्ताय। मोहन ग्रीति अनुष कस, निज-वर जात समाय।

તર્ણી મુખી સી પરિવર્ષો રે, ચાર મુણે સુરગીત; તેહ્રી રાગે અતિ ઘણે રે, ધર્મ સુરઘાની રીત રે. પાણી. [સ્ત્રાહ્તના સરકા માનની સન્નકાન] [ધી વર્સ્સવસ્ત્ર] श्रीयशोविजय उपाध्याय कृत तत्त्वार्यमीत के विवेचक श्रीमद् ज्ञानसारची

[डेबर:-धीयुत संवरठाल नाहटा]

द्याप्याय यशोषिकवजी सरुद्ध्यों और कठरद्ध्यों शती के जैव शासन के तेकली नहान ये | उनके जैसी गाण्यस्य प्रतिया किरक ही दृष्टिगोषर होती है | वाक्ते साहित्य निर्माण मी बहुत अधिक रूप में किया है । संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी और गुक्साती, चारों शायाओं में आपकी केखनी चल्ली । ग्याय और कैन ताक्कान पर तो जापका केखन बहुत ही प्रशस्त हुआ है ऐसे महादिश्चान का स्ट्रीत-मेदिर प्रनवाया गया है, यह जैन समाव केलिए बहुत ही गीरव की वात है । महापुरुणे की हतियों हो हमें एय-प्रदर्शन करती हैं और उनके सादर्श चरित बढ़े प्रेरणाहायक होते हैं !

ज्यान्यायां के साहित्य वर दियात करने पर वे पिछले जीवन में जाप्यारमासिद्धस विशेष हो गए प्रतीत होते हैं। समन है शीमद जानंत्यनज्ञी के मिछल का प्रमाव मी इसमें बहुत कुछ प्रत्यात में हिस्से वहुत कुछ प्रत्यात में हिस्से वहुत कुछ प्रत्यात में हिस्से वहुत कुछ प्रत्यात कर जानंत्र प्रवाद में हानकार, जाप्यारमास वादि श्रंप तथा भाषाम समतावतक, समाधिशतक पर जादि उसके उज्जवक उद्यहरण हैं। बेत है कि ऐसे महापुरुष को जनेक रचनाएँ मिसत् २५० वर्ष चैसे थेड़े काल में ही छह हो वह । प्रत्यात्वों का प्रचार हुज्या हो नहीं तिह होता है। एक प्रति हो मिछले वे इसके उज्जवन किया है। इसके वह बात चौर मो प्रथ होती है। इसके काल वात में मा प्रवाद होता है। उसके काल मान किया होता है। हा होती है। वहीं के ज्ञान-मण्डारों में उपाप्यायवानों के कुछ प्रतिव सेतो को छोड़ कर कांप्रकांश प्रदेश कालों थी, उसमें मफरा वात होता गया प्रतीक्ष होता है। उत्याव्यात्वान में वे मिलले होता गया प्रतीक्ष होता है। उत्याव्यात्वान के बाद श्रीमर देवचंद्र श्री में वेन तथान मारे व सुकतान में विशेषत दिग्यर जन्याविषक प्रेशों से महस्तित हुआ और सुवसर में वेन तथान मारे व सुकतान में विशेषत दिग्यर जन्याविषक प्रयो से महस्तित हुआ और सुवसर में विशेषत विशे

उनीमनी शतान्दी ये एक अध्यानिक महायुरुष का हम फिर दरीन पाते हैं । वे हैं खरतर-गर्धाय योगिशन औपर ज्ञानमारजो । आनंदवनजो को स्वनाओं से अपनका अगाध प्रेम था । उस पर जैसा जिस्त-मनन व्यापने किया पेसा संसम्तरः और जिसीन नहीं किया। व्यापके आनंदयन जैसीसी, बरहाबबोब और कुछ पदों पर प्राप्त विवेचन व्यापके सार्थिक है। उपाध्याय यशीविष्यकी के कुछ पद, पींकांग्रं कापने इन विवेचनों में तथा वन्यत्र मों उद्युत की है। अवित्ताय स्तरन के सालावरोप में उपाध्यायांकी के कुछ नाम सिक्त ने विवेचनार्दि में 'व्यवस्य वार्षि ने प्राप्त कुछनाव स्तवन के विवेचनार्दि में 'व्यवस्य वार्षि नह मन उत्य 'यद की पींकांग्रं उद्यत्त की ही पर वहाँ व्यापने इस पद को आनन्द-वर्षों का माना है उपाध्यायांकी के तथार्थ गीत पर तो व्यापने वन्छा विवेचन किया है, जिसे प्रकाशित किया वा सहा है।इससे पूर्व शीनद् शानसारांनी का संविद्य वीवन-परिचय दिया वा रहा है।

श्रीपद् ज्ञानसार्जी का संसिप्त जीवन-परिचय

ज्ञण्यासर्वं श्वाव्योमें श्रीवर द्वानवारची के नायसे एक स्तेताचर चैन यदि प्रतिमान्त्रपणन, कवि मत्त्र योगी एक्स राव्यान्त्र महापुरुष हो अवे हैं। उनका कन्य सं. १८०१ में बीफानेत्र राज्यांकीत् चांगळ के समीवक्ती चैन्नकैसल में हुन्य था। उनके पिताका नाय जुरपर्यद्वी सांत ? और माता क्षा नाम क्षीनदेवी था। उनकी स्वत्र माता क्षा नाम क्षीनदेवी था। उनकी स्वत्र प्रसिद्ध हहै।

सं० १८१२ में वारवाड़ में शीका बुष्काछ पढ़ा था। कुस समय से यह लारताच्छ के जानामें भी विज्ञानस्त्रि वी भी छेना में रहते को ये और उन्होंके त्यांत्रवात में उनका विधाययत हुआ। सं. १८११ में उन्हें होआ के मोन्य कान्यत पादस्थ्य में निती साह खुक्खा ८ को उक्त मी ट्यमी मे पति-शीका दी। होआ के कान्यत उनका नाल 'कुमनसर' रक्ता चीर अपने शिव्य भी स्वयंत्र को के शिव्य कर वे प्रिस्त किया। से १८२९ तक वे अपने गुरु वो के साथ भी जिल-कान्यत्त वी को छेना में हो रहे। हुछी बीच में इनके गुरु थी सम्बंदनी का रस्तेशास हो गया। सं. १८२९ के बाविन कृष्णा १० को गुड़ा में भी प्याची भी स्वर्ग सिपोर। इनके पद्मात्त है गया। सं. १८२६ में स्ति के शिव्य अध्याप को प्रकाश कान्य को स्वर्ग से प्रवित्त कर राज्यमंत्री का स्वरंत के शिव्य अध्याप को साम कान्य कान्

सं० ९८१८ में बब ने वनपुर में ये, तन्त्राजीन आचार्य श्री बितर्चरस्रितों ने इन्हें नहीं से निहार कर महाचन टोड़ी वानेका आदेश दिया । उनके आदेशानुसार इन्होंने पूर्व देश की और विहार-कर सं. १८१९ का चातुमंत्र महाचनटोड़ी में किया । वहाँ से रीय सहित निहार कर श्री सम्मेत-शिखर तीर्थ की बाता की । सं. १८५०-५१ के चातुमांत्र व्यवीमांत्र आदि ये करके सं. १८५१ माय छुक्ज ९ को हितीय बार क्षो सम्मेव-शिव्स को बाज की । वहाँ से वापस पश्चिम को जोर विद्वार करते हुए सं. १८५२ का चातुर्मांस संभवतः दिक्ली में किया । वहाँ से लीटते हुए सं. १८५२ में चक्षुर पर्वारे । पूर्व देश के नाना अनुषयों का सबीव वर्णन व्यापने "भूरव देश वर्णन"में किया है।

कहा जाता है कि जिस समय जाप जयपुर पत्रारे ये इस समय के महाराजा का यह हीति वीमारी के कारण विनंदित सुंख रहा था । रोग-अविकार के अनेक उपयार किए गए किन्तु कोई मह न निका, तब किसी राज्यांकिकारि राज्यांकु इसरतर प्रकीय यदि श्री की बाद दिवाई बीर यह भी बहा गया कि के राज्य के दिए हुए कई गाँवी की उपय के दे हैं। असर उनसे हाथीकी विकास के किए जनसे बहारी हैं। विकास के दिए हुए कई गाँवी की उपय के दे हैं। असर उनसे हाथीकी विकास कर कर विकास के स्वाधिक वी को पत्रा पत्र के स्वधित हो दे वें विवित्त हो दे के वोर हम कार्य के उपयुक्त किसी चतुर व्यक्ति की सोज में केगी। उन्हें श्री श्रावसार नो का रूपरण हुआ जी हुए क्यांने कार्य कर विवास के स्वधान कर कर कर के स्वधान कर के स्वधान कर के स्वधान कर के स्वधान कर स्वधान स्वधा

इस परना है महाराजा मृतार्थिह्यों चमल्डल होकर श्रीमद् के सब्युणों के प्रति अहा रखने छम गए । श्रीमद् भी प्रायः राजसमा में जाया करते थे । रायण्डीय विहानेशि वि

साधामह कादि कारणीय सं. १८५२ तह के १० चातुर्मास कायुर में किए। वहीं पर 'संबोध-अध्योधारे आदि ९ कवियों रचीं । उसके बाद कृष्णामु गए । सं० १८६३ सं. १८६८ तह के ६ चातुर्मात कुष्णाक्ष्मे किए । कृष्णाम् के राजा भी इसका बहुत समान करते थे । मही औकर प्रामः क्षाध्यास-चिक्का किया कहीं । इसका अध्यास असुनम्ब बहुत बड़ा चढा था । वहीं औमर में आनंदरन की के गूढ स्टरमक २२ तोक्ष्मों के किया । तिक स्तवनों पर सिवाद वालोक्सासक 'बालकोय' यनकर स १८६६ जाव कुक्का १९ को संपूर्ण हिला । जिन स्तवनों पर बहु सं. १८९६ के अध्यक्तक प्रतास करते हम हम किया भी किया । जिन स्तवनों पर बहु सं. १८९६ के अध्यक्तक प्रतास करते करते हम किया । किया पालाकोयां में इसका वाल्यास मनुसन स्वत्स सं सक्का हम हम किया । स्वत्य चालाकोयां में इसका वाल्यास मनुसन स्वत्य सं स्वत्य करता हम किया । स्वत्य चालाकोयां में इसका वाल्यास मनुसन स्वत्य सं स्वत्य करता हो । कुण्यास में इनके वाल्यास स्वत्य सं सक्का है। कुण्यास में इनके वाल्यास स्वत्य सं संवत्य सं सं संवत्य सं सं संवत्य सं संवत्य सं सं संवत्य सं सं संवत्य सं संवत्य सं संवत्य सं संवत्य सं संवत्य संवत्य सं संवत्य सं संवत्य संवत्य सं संवत्य सं संवत्य सं संवत्य संवत्य सं संवत्य सं संवत्य संवत्य सं संवत्य संवत्य संवत्य सं संवत्य संवत्य सं संवत्य संवत्य सं संवत्य सं

सं॰ १८६९ में वहा से विहार कर ऋतुंबय तीर्थ पत्रारे । फ्रान्गुन कृष्णा १४ को यात्रा कर

यामस बीफानेर आपे ब्रह्मतस्या के कारण उन्होंने होव धीवन वहीं निवाया ! बीकांतर में उनका प्रसास बददा स्था । उनका जीवन भी शस्य शाविनक और आप्यायिक या । अनेक लोक-प्रवेचों में भाग केते हुए भी वह उदाक्षीन एवं निर्केष स्हते थे ।

इन दिनों का उन्होंने सर्वेशा त्याग कर दिया था बोर एकांवरास उनकी विशेष प्रिय था। बीकानेर के गोरा। त्याचा के बाहर बाला समझान (टटों की शाला) ही उनकी त्योग्सी थी। इन्हों हैं कि पास्त्रें वाथ (देवता) उनके प्रत्यक्ष थे। वे साय-समय ॥॥ शांत्र में प्रकट हीकर माना विश्र शानगोड़ी एवं मुक-प्रविध्य-संबंधी बातें किया इनते थे।

महात्या सुरुर्तिवृद्धयों को इन पर अर्थात थक्ति थी। वे खर्च इनके दर्शनाई अनेक बार पणारते और पत्र-व्यवहार वागवर होता रहता। महाराखा के विषे पण्यीत पत्र हतारे अन्वेषण में भागे हैं। उन खास कक्कों को पढ़ने से ओनर के प्रति बहाराखा का विवय, पृथ्यमाय, वाउळवरा, खानरच प्रक्ति, रुळप्पर्शी हार्दिकमाय और जनेक प्रैतिहासिक रहत्यों की बावकारी होती है। बोका-नेर में रहकर उन्होंने बहुत से भंबों की रचना की। यहा की पहाँचलों के बहुत से स्वारक अब भी विधानन है पूच आएसे केंग्रंप रहानेचाले जनेक चरक्कानिक प्रसंग्र सुनने में जाते हैं।

सं. १८८९ में आविन और सर्विधीर्व के बीच ९८ वर्षकी तीर्वालु पूरी कर श्रीसद ज्ञान-सारवी त्यर्ग सिधापे । स्वयं ही अपनी जालु के संबंध में 'बाइवेनाय-स्वयन ' में कहा है कि —

> साठी बुच धाठी एक कहि है असिविश्वली खोकोचि कही। मैं दो बढार्यु जुफर झो ', मो में बुद्धि कही कहां से रही ॥ श्रीकीराय कही कही बेर आई।

खनका अफ़िसंस्कार वर्तमान इंखेक्स वार्यनाथनी के मदिर के पीछे हुआ मा । उस स्थान पर ब्याज मी एक समाधि-मंदिर विषमान है, उसमें अदेश करते ही सामने के एक बाड़े में उनकी बरणपादुकार्स प्रतिष्ठित हैं, जिन वर निम्मीण केस उन्होंगें हैं.—

सं. १९०२ वर्ष मार्ग सुदी ६ पं० प्र+श्चानसारजी पादु....

श्री झानसाराची के इरामुख (हर्मेन्दर), खुर्नवंद (श्रमानंदर), खरामुख (मुसरागर) गामक तीन शिष्य ये, मिनामें-अधम दोनों की दीखा सं. १८५६ से यूर्व चीर दर्ताम को सं. १८६७ से पूर्व हो चूको श्री। इनमें से झानन्दर जीर सदामुख सं. १८९८ से तक विध्यान थे। एकशर सुवर्चदवी को मरणांत जनरूप में वी गीड़ी पार्ट्यमु की कृपा से शांति हुई थी, विसदा उद्येख श्रीमद ने तक जपने गीड़ी पार्ट्यम-तवन में किया है।

इन तीनों हिम्पों के अतिरिक्त इनके क्षिय-प्रशिष्यों में ये चतुर्धन, पैरलों, कीरणचंद, स्वत्रमन भार्षि का भी उद्देश प्रया वाता हैं । इन में से चतुर्धुनवी के क्षिया चौरकों ये जिनका देहात सं. १९५५ में हुना था। वस नहीं से उनको संतरि विच्छित हुईं । श्रीनर् का एक चित्र हुमारे 'ऐतिहासिक जैनकान्य संख्य' में प्रकाशित है, और भी कितने ही चित्र उपकृष्य हैं। श्रीमद के बाह्य नेष-सूत्रा के संबंध में एक तात्कारीन प्रधा महत्वपूर्ण है अत. तस प्रथम अस्पनक उदरण नीचे हिंचा बाह्य है.—

कुं नत्वा श्री बाना ची साहियां सी वन्यता १०८ वार रिखड़े की। अपके गुणग्रम बांद करता हुं । किसी ठाव(क) हुं वहीं कुटकुल क्योकर हूँगा । सरण ठी व्यावन, इहां कुछु नहीं हुं कुमाया, एक आपके दरीन ठी पांचा वाकी जनम के समाया ।

अब वह युनियुद्धा कान पर चरमा बोबा की पर हस्त में तमालू ठव्यो, ट्रमक द्वेमक चारू, हे बचनामृत बस्ताविक अनेक आनन्दकरी भाववयो माधुरी सुरत कब देखूँगा। बाया अब कहा इर्रोन पाकंगा, को है पावा इस अन्य में और तो कहु नहीं के कमाया एक यही दकीन अर्ख पाया, इस प्यान से जनम जनम हा पाप बमाया, इतना तो खून ही पुष्प कमाया आप प्यान में सुद्ध निर्देशों को रखोगे तो में प्रन्य क्या कहाया, क्षित्वाय इसके और कुछ है नहीं।

एत्र दाशकी श्री १०८ ज्ञानसारको महाराज के चरणों में ।

श्रीनद ने अपना किंचित परिचय अपनी वहत्तरी के परवे पतर्मे दिया है:---साधा मार्च विरुचे खेळ बखेळा । लोहं निहाचे खेळा । सा० सा इसरे कह जात न पांता पर्व मेरा वाचारा। महिरा मांस विवर्षित जो कल. उन घर में वैसारा ।श सा० वर्जित वस्त विज्ञा जो देवे. सो सबही हम सावे । इन्हों वा फास अकरापित. घोषण जल सब वीते ।श सा० पश्चिममा पांच नहीं छाइक. सामाविक के वैसे । साध नहीं बैन के जिन्हे, जिन घर विन नहीं पैसे ।३। ला० बादक साध नहीं को साधवी, नहीं हमरे धावकारी । सुधी श्रद्धा जिन संबंधी, सो गुरु सोई गुरुणी ।श्र साव नहीं,हमरे कोई गच्छ विचारा, वच्छवासी नहीं निस्ते। गच्छनास एतागर सागर, इनके महनिश बन्दे १५ सा॰ धापक उत्थापक जिन वादी. इवसे रीज न भीजे । न मिलजो न निन्दन वंदन, न हित सहित घरी है। है। सा० म हमरे इन रो वाद स्थल, बरचा में नहीं सीजें। किया रुचि किया न रागी, इस किरिया न पतोचें १९१ सा० किरिया वढ़ के पान समाना स्वतारक जिन मासी । सोई अवंचक वंचक सें वो, चटगवि कारण दासी ।८। सा० पैंकिरियाकारक कुंदेचें आतम अति ही ही है। पंचम काछे तैन उद्दीपन, यह अंग श्री दीसे १५ सा० सक्नच्छ नायक नायक मेरे, इम हैं सब के दासा । पै आखाप संखाप न किपासुं, नहीं कोई हरख उदासा ।१०। सा०

प्षक्रमया पोखा न करावे, करता देव्या राजी । प्रवासों व्यास्थान न आवड़, आवड़ बी न विरासी ।१११ सा० मी हमरी कोट करें निल्ता, कियंत वासरस वाथे । फिर मनमें बच रीति विचारों जब जति बी प्रवासी ।१३। सा० कोची मानी मानी होती, राजी हेपी चौदी । सायुवनानों केय व देश, व व्यनिवेदी जपनोधी ।१९॥ सा० १ हमरी हम खर्च मानी मानी मानी मानी स्वासी हम सायुवना एक स्वासी हम सायुवना साथी हम सायुवना सायुवना साथी हम सायुवना सायुवना साथी हम सायुवना सायुवना साथी हम सायुवना साथा सायुवना साथी हम सायुवना साथी हम सायुवना सायुवना साथी हम सायुवना सायुवना साथी हम सायुवना सायुवना साथी हम सायुवना साथी हम सायुवना सायु

उन्होंने इदावस्था में गच्छ परंपादि से बळग होन्छर एकाकी रहने और विहार करने का जल्डेख 'खानंदसन चौबीसी बालसबोय' से इस प्रकार किया है ---

कि वे ए० श्लानसार प्रथम महासक इतरासण्ड संप्रदायी बृहदयोम्मुलिमे सर्वगच्छ एएंपरा संबंधी इटवाद रचेच्छाचे मुकी एकाकी निकारणे कुळ्यावे सं. १८६६ वादीसीनुं कर्य किन्ह्युं ।

यचपि ओमर का अनुभव एवं आन बहुत वदा—बदा था, फिर भी उन्होंने कई मंचों में मंद—बुद्धि आदि छन्दों हारा अपना परिचव देकर विनन्नता अवश्वित की है। दैवचंत्रजो कृत 'साञ्चयद सन्त्राय के बाह्यकोष ' में किवते हैं---

हुं महा तिवुँदि को वज्ञद्रप्त हुं जैन ऐ जिन्दो हुं म्हारो माचणो व्यक्ति अल्प छे । सन्साय कर्ताना माचणो मोटो छे ।

हसी प्रकार 'चीकीसी बालक्योच' कादि में भी अपनी रुखुता स्वक्त की है । 'आहमनिद्या' प्रेष तो उनकी विनक्षता का प्रतीक है ।

वा-पास-पामना और तवजान के वांतिरक वैद्दक में भी श्रीवर की बच्छा गांव थी। केवत-कड़ा और तक्षंत्रंथी सामग्री के विभाग में यह वाहितीय थे। उनके बनाए हुए पुढ़े, जाटिये, पहां आदि बाब भी नामांडित वस्तुव्यों में हैं, त्वर की सबव्दी बोर सुवरता की सामग्री में दूसरे नहीं वह सकते हैं। केवतन्त्रे को सामग्री में दूसरे नहीं वह सकते हैं। केवतन्त्रे को भी और और डिप्ट वही बनोह थी। उनकी हरूव-विचि हमारे सिंह में पर्याह है, दिन में से एक पत्र का कोटो हमारे 'ऐतिहासिक जैन काम्मर्काट 'में अकावित है। वह अनेक कुत्ररों में निद्गण पे, यह बाह सर्व 'पीसी' में छिवते हैं—

हुक्त केता हाथे कीया ने पण उदय उपाये सीया।

बस रुपवायों बस उदय थी, मंद रोग ते मंदोहय थी 11%। (१२ वा सर्वन) इसके संबंध में उनके गुण-कर्णनायक फार्चों में बन्य मर्कों ने थी कहा है कि: — इमें हिमकर्मा ही हुन्य हवार जांडे वैंचन में बान सन न्योतिष मंत्र लग ही ॥

(नवस्ताय इत गुणवर्णन)

उन्होंने बई विस्थात विद्यानों और कियों की कृतियों पर विश्वद क्य व वनिनहाँ हिसी है, जिनसे उनके स्थव क्क्सूल बोर निक्त समाजेचक होने का परिचय मिठता है। श्रीमद मान्द्र धन बो को चौबीसी के बाजवानोत में श्री झानविमन्द्रस्थितों को स्तृत बाई हाथों लिया है, जैर वर्ड स्थानों में उनके झाशवयोध की कड़ी समाजेचना की है। जॉन में उन्होंने स्थिता है कि:—

" ज्ञानिवनस्वित् सहापंदित हुवा, तेव ए उपनोगी डॉस्ल प्रम्नुंनी हुंद तो तेव तो समयं अर्थ फ्री सहना पण तेव ए तो वर्ष इस्ते विचारणा स्वयन्त न्यून व इसी मैं में ज्ञानसार मारी वृद्धि सनुतिर सं. १८२९ थी विचारते सं १८६६ श्री हुन्यान मन्ये ट्वो हिस्त्वी पा में इता सासं विचार विचारता हो सो विद्धी अर्थ तेवश्ची मोटी पंदित विचार विचार विचारता हो सो विद्धी अर्थ तेवश्ची मोटी पंदित विचार विचार विचार विचारता हो सो विद्धी अर्थ तेवश्ची मोटी पंदित विचार विचार

इसी प्रकार तथा वनस्त्रव के बाते आनंदरनाची बैंगे बहायुरुवों पर गी एक जगा कुछ साठोचना की हैं। शाय्याल-अनुभवी ओगर देवचंडवों की दो हांतवों पर उन्होंने शाठावचीय रंच। उनमें भी कई स्थानों में उनकी लिख्द साथायेचना की है। 'साचु सम्बाब बाठावचीय' में तो कई शार्ते बड़ी हो ननोसंक्क जौर सहस्थानवी कह बाजी है। उपयोगी होने से उनके कुछ अवतरण यहीं देते हैं:—

ध्रुव छैं ए तो कथन क्षाविक भाने छै परिक्षायिक साथे ब्यायस विच वे क्षिद्ध मां तो अमेदो-पचारी पूर्ण छै ए विरोधाभास छै.

આ કરેલ એમને કપાંધી ગમી દૃત્તે કે આજે આ કહેલા ગુજરાવમાં તો જાણી તથી. વળી આ તખનામાં અનેનિકાસિક પ્લાનો અન્ત વધુ છે. જેવી આને સપૂર્ણ પ્રાથાણિક કહી ન સકાય. સાંધાર

बैनर्नरजी ने एक≉ पूर्व नुं ज्ञान हहूं तेथी शदर शदरिया, ब्रोहराविचय पन्यास ते छटकाछा ∭४ नै बागछ अपै छिस्सुं छे ते अक्षर प्रमाणे अपै छिसीझ किहां सरस्तो अपै दीवे ते माहरो दूगण न कादरयों अक्सर विरुद्ध अपै साहरो दूगण सही।

अदारहर्षी काण्यों मे मोहन-बिचय जात लेकप्रिय कवि हुए हैं उनके 'वंदरास'का प्रचार बहुत बोरों से था। उस पर दोहों में बो सुंदर और सचीन समालेचना की है, वह समालोचना-पहति का एक अच्छा उन्नाहरण है।

इस प्रेय का विशेष परिचय आगे दिया जायगा । कविवर बनारसीदासणी के 'समयसार' की भी कुछ जाछोचना 'जामाप्रबोध–छणीसी' में की है ।

श्रीमद मे सन्दर्श राताच्यों के हेणाई के सर्थ योगिएक आनंदरपना की यौगीतों जीर बहुयरी पदों का फितन अपनी गोमनावस्था हो ग्राहंन कर खेतिमावस्था पर्वत किया था। बतः उनके जीवन पर आनंदरपनां के बनुभवों को ग्रहरों क्षण योक्षत हो गई थी। प्रान्तपनां के बद कर्ने लिति यो यो उनके कुंचे चुने के उद्धरण 'जीवीती-माठावनोध,' 'आध्यापगोता पाठावयोग ' जीर 'साह सस्वाय बालाजांध' जादि में विष् हैं। श्रीमद के बहुतारी (उन्हेगादि एतं पर गोगिराव जानंदरपनां के बत्ते का प्रमाव योग्नुक त्यष्ट हैं। इसीकिए कई व्यवस्थों ने उन्हें 'उनु आनंदरपन' विशेष्ण के संवीधित किया है।

श्रीमद् के जीवन-विश्त की बहुत वड़ी सामग्री हमने संग्रह की है । परंतु विस्तार-मय से बहुत-ही संक्षेप रूप से यह निवंध किसा गया है ।

⁺ ગાવા પ્રસાગ અન્ય રહ્યો અધ્યાતમધાળી આતાલન સચિ ળન્યાતા ઉદલેખ મલે છે. સંપા૦

क्पाच्याय श्रीमदाशोविजय ग्रीफत श्रीषद् ज्ञानसारगणिकृत वाळाववोध युक्तम् श्री तत्त्वार्थे गीतम

[राग-वसन्त गुष्टयस्हार विश्वित]

जैन कहीं क्युं होने परवयुक, जगतवुक, जै० सुरु उपदेश विना अग मृदा, दरसण जैन विगोने ॥ प० । जै० ॥१॥

्ण तक्न में दोज नो सरकावण है । अहाबान क्षद जैन दर्शन ने लोहततांकरी शिव्य नी प्रश्न है । मो परस्पुरु । मो नगतपुरु । विद्वां युरु शस्त्र मूं रुक्क श्वासदेशसो सुरह. श्वद सिक्षा-तातु ताई जैन दर्शन ना उपदेश-उपदेश दातां के युरु स्ट्वीं । ते बाचार्य । में परमधारों पुरुष परस्पुर । उक्क गुरु परमेगर परमामा केक्फ्ज़ान दर्शनी थी पृष्ठै क्षे-इदीनी लामी जैन वर्षु होने । नाम जैन दर्शन सम्पूर्ण सिद्ध ब्युं कुर हुवें !

गुरु उपसेश बिना नाम गुरुमा उपसेश नै नवारी वन पूरा झगब मोळा प्राणी जैन दर्शन में बिगोर्ड रखा छै, जैन दर्शन में निन्दा करानी रखा छै। पर गुरु केशना एक छै हे निरमायी, निरस्ती, निर्मन्दी गिगीत हटमादी, निर्मेत करोच्च कट्टियत प्रश्नमी, खुद ताचीपदेशी, स्वानुस्सार वचना, पहुंच गुगेना उपदेश निमा मैमीग्रसमा वे जैन वरीन में तुन्छ बुद्धि सूद सिंखवारी, जिनमेदकारी प्राणी। जैन दर्शन मुंखर्सन अप(ग)द्रनयो नी रहस्य बणवाणता विरद्ध सामण इसता जैन मै बिगोई रखा छै।

कहित कुपानिधि स(म)नछ बीछै, करम मैछ नै घोदै ।

बहुर पाप मछ अंग न घारे, शृद्धस्य निज जोचे ॥ प० । जै० ॥२॥

साहेद नाम पहुने अब इत्तै वही ह्यानिय ह्याना निवान, परमेबर पहुने इही-उपदेश हैं। अही का उपांचेद देवागुनिय अपनो ! वे बैन दर्गन में बुद कोग्रस्ताना वाहि, ते प्रथम धीती सम धाग देने सिंह के सम पारणांची पणा ने समस्य कहा तेयां बीके नाम बाक रहे। पहाने अप्य मत्वादियें तैनती डीफिकागड़ काश्यों कोई अपन संवंती जैन रियों हो लिए पोदी जो समस्य प्रश्न निवां प्रभाग कर्म-जानस्त्य-विवादि सहस्रिक ने पानी नाम ज्याना नै उद्दार्श करें रहाने व्यावन थे। अपनों इमें इस कर ने पुराने संवंत्र शिक्तें हो। वेद्धों वयों व्यावम बहुर नाम फेर पार-पारणांचित हों सर्व नेत्र ने वे व्यावन काश्याद में स्ववंत्री थे को में नाम जाना स्वरूप बोंग में ते मैजरें न वारें न म स्वादी पराने करानी संवंत्र भीता काश्याद को स्वादी की स्वादी काश्याद काश्याद की स्वादी काश्याद करानी स्वादी की स्वप करतो छतो जुद्ध निर्मेश कमें रच सहित निचक्तम पोतानी अक्षेत्र, अमेव, अनंतज्ञान अनंत दर्शनमधी आत्म स्वह्म ने बोदों नाम स्वह्म प्रत्यक्षकरें, नाम साझान्कार करें, पतने स्वहम प्रकट करें

> स्याद्वाद पूरण जो जाने, नय समित जस वाचा ! सुण परवाय द्रव्य जो चुंब, सोई जैन है साचा ॥ प० । जै० ॥३॥

फिरो ने आभा बेहवी बयी ल्याहाद नाम स्वाद पुरस्तर नाम क्वंबिद बाद कपने सहित तैन दर्शन में यो बाये विका बोळले। एउठे ल्यादरित, त्यादनारित त्यादरितनारित हमादि ना सर्व वर्शन होता के क्वंबित क्वंबित क्वंबित क्वंबित क्वंबित हमादि ना सर्व वर्शन होता के क्वंबित क्वंबित क्वंबित क्वंबित क्वंबित हमादि ना मामभी बात कर्या क्वंबित क्वंबित क्वंबित क्वंबित क्वंबित होता वे नित्यवादां न हुवै। एवंदी बयो क्वंबित हमा क्वंबित क्वंबित क्वंबित क्वंबित होता वे नित्यवादां न हुवै। एवंदी बयो क्वंबित हमा क्वंबित क्वंबत क्वंबित क्वंबत क्वंबित क्वंबत क्वंबित क्वंबत क्वंवत क्वंबत क्वंबत क्वंबत क्वंबत क्वंवत क्व

> किरिया मृदमती से अज्ञानी, साँछै नास अपूरी । कैन दशा उन शंरों नांदी, कहैं सो सम दी हती ॥ १० । सै० ॥ ॥॥

सर्व पंस्ती महात्मस्वी वाणे वहं कंबारी है पंस्ती उठतों ने पाळकंडळ जीही हुने तेशी उंजी रास्पी पा था मुस्त नी छकड़ी साही पाछा उथाने संजयाण एक पंस्ती निपालों मुखे छकड़ी छेड़े ने विम नी तिम फिरो वैसी वाणे प्र एक्टरों कंचक किया वाणोच्यो । तेशी तेशीना कमन में न प्रवर्तायों। कोई बाई इंग कडिस्पो तेखों हो सिहान्त वाणे हैं। तो तेशों नो कमन को न मानवी ? तिहां छिस्तुं—तेशो पोताया माम संवर्धों कपन सिहान्त वाणों हैं। तो तेशों नो कमन को न मानवी ? तिहां छिस्तुं—तेशो पोताया माम संवर्धों कपन सिहान्त के माम सिहान्त में माम वर्षों सिहान्त के माम सिहान्त में माम वर्षों सिहान्त के माम सिहान्त में माम वर्षों सिहान्त के सिहान्त के माम सिहान्त में माम वर्षों सिहान्त के सिहान्त के स्वान माम वर्षों सिहान्त के सिहान्त के सिहान्त में माम सिहान्त सिहान्त में माम सिहान्त सिहान्त में माम सिहान्त में माम सिहान्त सिहान्त सिहान्त में माम सिहान्त में माम सिहान्त में माम सिहान्त सिहान्त सिहान्त में माम सिहान्त सिह

पर परणित अपणी कर मानै, किरिया मस्य गहेळी । छनकुं कही जैन क्यं कहियै, सो मुस्स में पहिछी ॥ प० । जै० ॥५॥

परं दीखता ती ते--() वी दाँखे । परं ते पोठ केहवी छै परपरिणित नाम आध्यिक स्वरूप यी मित्र तेथी पर जह तेथी संबंधित कुमल्बावि पर्रागरी पर्गाम्यी छती बड़ संबंधि शरीर **फा**म भोगाविक नै नशक्तों छत्तौ उद्धत प्रक्तना वै प्रवर्ततों, यन में च्छनो निवारतों " जो सत ताजा तो कंगाळ ही सवा ¹⁹ तेथी ए सहस्य प्रकारी ए शरीर करही रहिस्ये ती किया वर्म निभारये । परं पहुंची नथी कामलो किया कह धर्मों छै आत्मा नौ धर्म क्यों । क्रिया नै आत्मधर्मी पर्णी सानती दिन रात्र किया ग्रन्य ध्यानै प्रवर्षक्षे अन्य ज्ञानवान अल्पक्रिया को तो देखा नै पहुंच तो न विचारै परमेश्वरे-किरियाध्रहपत्रसमा नाम किया स्वतारफ छै। ते पिण वेचक कियान छे तो ते किमे र विचारे ! कियाना गर्व अहंकार में गहेली उन्मत गर्ड रही है। उनके नाम तेहवा किया हुनी नै पत्तके निकेश्य किया नै परमेश्वर आप ही सिद्ध साधन न कहाँ, नै निना जान हुएँ परम साहिक पारणामिक परमेकर तूं बैठ दर्शन किम वाण्यो बाय । तेथी रुकंत किया रुवी नै जैन दर्शनी क्यूं कहिंपे क्यूं इन कही चाय नाम ते बैनी नहीं। कुर्य-"एमेते होह भिष्ठते " इति जिन बचन प्रामाण्यात् । "एतकै तेहवा नै वैन दर्शनी न षहाय दिन तिहा हिन्दूं वैन दर्शनतूं हरवुं महाप्राह अमार्ड अममत्वी, निर्मत हठनादी, जात्म गवेषी, परमव थी समनान, श्रहावान, तत्वरुची पहचापी चैन दर्शन छसाय में चे अपश्वित, मायाची, समत्वी, हडमाही, आत्म स्वरूप नी श्रवाण मन भय थी निडर, अश्रद्धी, तत्वातस्य नौ स्वयंत्री, वह मधी क्रियावादी छतौ. सर्व छोक्र समक्षे एहचूं कहै जैन संपूर्ण अस में छै ते मुखों में पहिछा अप्रवासी।

> वैन भाव सब झानी मांहें, जिल साधन सरहियें भेख देख संका नहिं कींजे, भाव उदासी रहियें ॥ ५० ४ कें० ॥६॥

पृद्धूं बग गुरे उपदिस्यां उतां तत्व नेविष्ण प्रसेषस्यां किती प्रस्व वृज्यों त्वांनी महाजियावात् देखी बमें इस आएं ए कहें ते सार्चू। वे टेन देखनां बमें बाव्यूं ए साचु नयी, मुर्रवात् वैन द्वीत है, ने आए फरमायी देवा तो कहवी न मानवी, देखना ने बैन दर्शनों न कहिवाया तो कुरमावी नी स्मागों बैनी केने कहिये ! पहुंचू पुक्का परिष्या मुंचवन। बैन तूं मान उठतां पण् सर्वेताम सरते ग्यासि में के कुनं ! बैन तो पारणायिक वर्ष के ने बरणान ने त्वाय छुद्ध परणाय में हीन तिव साधन नाम मुक्ति जूं कारण सरवाहेंबे सर्वाहणाराखींबे। एकके " छुद्ध मान एव सुक्ति कारणां स्थाद" यथा—

⊸ः बोहरः ः—

ममुकारकी बत नहीं, करनी कृर माहार । भाष श्रुष ते सित्र है, कृरमह अध्यार ॥१॥ भाष श्रुपता जी नर्बुतो कहा किया की चार इह एहार मुनते वर्जी, हत्या कीनी ध्यार ॥२॥ (एव नहींक)

िस्ती बगतपुर प्रभा पूछमा वाष्टा जारुवाची में बैन दरीन में बगते परिनाह करवा हार्ण कहे तमें मार्ट भेष ओहो श्रंहकोती देखोनें कंडा नाम मन धंनवी पहनी मरम न कीचे गाम न कीचों के सरमेवार्स ए मेन हो कि परिनाह मार्ट भेष नाम न कीचों नाम न कीचों के सरमेवार्स ए मेन हो कि परिनाह मार्ट में परिनाह के बार के वीच गोमित कि परिनाह के प्रमाण वाहें, स्वरूप पुणाति सम्बाद ए प्रमाण वाहें, स्वरूप में प्रमाण वाहें में सिरी महारामकों, वाहों मन दसमें नोई में ते विषे श्राचिनी रहंडा न कीच्यों एवं ते तेनी विषे श्राचिनी रहंडा न कीच्यों पहने तेनी वे विषे श्राचिनी रहंडा न कीचों उद्युक्त भा में देखी में ते तेनी वे कोची उद्युक्त भा सिरीन एकोचे तेने में देखी में सराम मंडे न रहिने नाम न प्रमाण कीचे में कीची हैं नाम न प्रमाण होते हो हो में स्वरूप में मार्ट में न प्रमाण कीचें में स्वरूप में मार्ट में मार्ट में मार्ट में मार्ट में मार्ट मार्ट

हान सकल नय साधन साच्यों, किस्या हान की दासी। किस्या करत घरत है समता, एही गलै में फासी।। ५०। जै०।।।।।

फिरो कोई कहिली अवस्क कियाकारे हुनै तो पिण नाणी. सालेसस्त एक में के इसेतां निर्वेश करें तेवल क्रमें दृष्टिया नरकनी तीन नेदना खहितों. नारकी एक कोड़ सरस में निर्वराये। तेवी द्वार संक्रक नयबान में सरस्त नाम सांते ही नक्कर साल्येन कागी साल्यों एतळे साल्य सावन मने बात में सर्व नये सालो ने खोगों नाम सात नय क्रम साथन कागी अनक्कर कार्य रहर कांत्रे ती ज्ञाननो केहबीक मुख्यता बणाय ते निब्हूं-ए सन नय सम्पत जान एक दिसा नै थापीजे ने एक दिखारें किया थापी जोहेंये, तहुयें जान आगट किया केचीक चणाय । ज्ञान राजा शय दांसे नै किया दासी बांदी प्राय निवार वायें ।

यथा दोहाः सदोक्ति ---

पूर्व कोड देयोवता, किया कठिन जिन कीन । कुरुड़ बकुरड़ नरकगिंद अशुद्ध आय में छीन ॥१॥

शान सूर्य प्राय, किया लजुआ प्राय । इति सर्टक । एड्बी । किया मैं करत नाम करें आदर् पर स्पे कास्ये किया ने आदरें ते कियुं—सरक है मनता नाम नता ने वारमं छता ने मनता सी ! सुन्न मैं कोंक कियाचान देखी में परंतुं नत में वाज्यें । वो आधीमा रिपा परंतुं व किसे हैं । याम "य विवासन् सा प्रेस का मनता ना वारमा । वा ए नतमं महा क्रियाचान एकी छैं । वा स्थी पणा प्राणी सुन्न ने एक्सने वा मारा मत वे रणा अवस्ये ते आहरा या पाणा, कामम, पाटा, पादा प्रदुत्व यो अधिनाम सामी । स्ट्रम एड्वी दिसा नो प्रवर्तन तेने तल्लुदिये विचारी ने वोहरे तो गर्छे में नाम अध्य स्वरूप रूप प्रयासनो । तथी वे सुद्ध अद्युप्त ते । तथी ने सीसी दुष्ट छैं । विचा के प्रयासनो में पर्छ वे सुद्ध अद्युप्त तो तथा के सीसी दुष्ट छैं । विचा के प्रयासनो में सीसी प्राप्त छैं । विचा का प्राप्त का साम का साम

अब खग आवे नहीं प्रच काम । तव खग कप्र किया सब निष्फल, ज्यों गगवे विज्ञान ॥ "

पुतः एकोनी व उक्तिः---"बाहर कृष्ट भी छत्ं चढत्ं, ते तौ बड़ वौ शाव" इति सटेक

किया विना ज्ञान नर्दि कवहु, किया क्वान दिन नांही।

किया झान दोक मिरुव रहित हैं, वर्षु जरूर सम्रुव माही स प० | जै० ॥८॥ एती किया नी कथन क्यों ते वर्ष वंचक क्रिया नी कथन क्यों। वीचूं परनेबर भाषित ' साराधानुनाई ती नचन कै-'बात कियान्यां मोड.'' ना इंच्छा झानथी, इंच्छी क्रिया थी रिण मोझ न क्युं । क्यं नाम किम विहां लिखूं, पहन्तुं परनेबर नूं क्युं वचन कै-'एगंते होई निच्छत्ं'' पुत: याथां;—

माणेण जाणप मावं, वंसणेण च सङ्ह चारितेण मणुशाई, तनेण परिसिच्यड »

पुनः गाथा –

ह्यं नाणं किया हीणं, ह्या अञ्चाणिणो किया । पासंतो पंगुलो दृह्हो, घावमाणोय अधस्त्रो ॥१॥ संजोध सिन्धी व्यक्ति वर्षती, वहु पराचकेन रहो पवाई । संजोग पंत्रुप वर्ष समेचा, तैनं परचा नगरे पविद्वा ॥१॥ तेनी क्रिया विना नाम क्रिया मैं वयाने ज्ञान नौ ज्ञान ने व्यानें क्रिया नौ अनाव यथा— आनंद्यनमृत्युक्तिः—

> शान वरी करी संजम किरिया न फिरावी मन शाम । चिदानंद धन सुजस विकासी प्रगटै जातमराम ४१॥

देयो ज्ञान किया नो बोबो हैं। वे कारणे किया में ज्ञान य होन, नम किया अवर्षनकरम श्वान विशेष विभागकर बंधा ज्ञान क्यानं—" विशेषानकोंनो ज्ञानं " तेवी व सूनो मा पह्मचू कथन है—" पदमे माण तथ्ये पत्ति "—" कारण थी अथम व्यान्त्य एके उत्तर्ति माण क्रिया तेथी। पदनी संजोग सिवता है। यहां क्यान क्याने हों हो की क्याने क्

> क्रिया गगनता पाहिर दीसे, ज्ञान भवत जस भाजे । सदग्रह सीख सुनै नहिं क्वहू, सो जन जन सुं काले ॥ ५०। फै० ॥९॥

से वे बाहमार्यी नवी काल खाहल प्रह्मार्थी नथी । वे से ही किया नगनवा नाम हिमा
प्रविचानी सगनवा। वहानारी हुएँ नाम एकत दिन्ताने किया पर्वतेवानी सहा छोंकिक नै
विसे पाएंची जरूदा दिलावनी काली हुंसी सार पार्टी क्रम्य सेवी छे किया कियानी सपनवा। दिला साननी मांक छुवे में एकंठ किया नवंध हुने। वस नाम चेहने न हुने एकडे साननी मीका सानी नाम मेंकारी है। वा सान वे बाहनकर्तर केनी सानी हुने केनी मीका सहसानता कहायां सम् हुने से सामी नाम नेकारी हुने एकडे बाथ किमानिय छै। तेथी विस्तावान यो तो प्रतानों सम हुने में सामानानी मोंक कोई कुट सेवा केनी मन मांचे नेवाली रहे जम तेथी सह नाम हुनों भी क्रम मुंदी हुने सामानानी मोंक कोई कुट सेवा केनी पिन्न कार्य नेवाली रहे जम हुनों भी क्रम मुंदी हुने सामानानी मोंक कोई कुट सेवा केनी एक प्रतानी कार सामी नेवाली सेवा मुंदी हुने सामानानी मोंक कोई कुट सेवा केनी पिन्न कार्य कार्य कार्य हुनों में सामाना पहुंचा सुदों ना जमेरेश एसर विवासका कियां कोई कोई कोई के स्वाध हुनों में सामाना कार्य हुनों हुने सामाना कार्य में सामाना कहा में केना कार्य कार्य हुनों हुने सामाना कार्य हुनों में कार्य कार्य हुनों ने के प्रतान पहुंचा सामाना कार्य हुनों ने सामाना करूदों हुने हुनों ने सामाना कर्य हुनों ने सामाना कर्य हुनों ने कार्य पहुंचा ने सामाना कर्य हुनों ने सामाना कर्य हुनों ने सामाना कर्य हुने हुनों ने सामाना कर्य हुनों ने सामाना कर्य हुनों ने सामाना साम हुन्य हुनों ने सामाना कर्य हुनों ने सामाना कर्य हुनों ने सामाना साम हुन्य हुनों ने सामाना कर्य हुने हुनों ने सामाना कर्य हुने हुनों ने सामाना हुने हुने हुनों ने सामाना साम हुन्य हुनों ने सामाना हुने हुने हुनों ने सामाना हुने हुने हुनों ने सामाना सामाना हुने हुने हुनों ने सामाना सामाना हुने हुने हुनों ने सामाना सामाना हुने सामाना सामाना हुने सामाना सामाना हुने सामाना सामाना हुने सामाना सामाना सामाना सामाना हुने सामाना सामाना हुने सामाना सामाना हुने सामाना सामाना सामाना हुने सामाना साम एजोओं बात इतवां बारों एवं दवयी जारते एजो हूं एकान्ती तेथी एक नगराठ मारो पत्र न फेन्सलें। दांचे छोड़ मुझते वितवहावादी इन्हिंग्य ते कारणे तेजीने बारगार्ग सामा शावता चीड़ने ते मुझी ने छावती बीजे बार्च बाय ते जाशी मिलें व नहीं।

> तन्त्रमुद्धि जिनकी परिषत है, सकल सूत्र की कूंची। जग जस बाद वहें उनहीं की जैन दसा 'जस' ऊंची ॥ ए. । जै० ॥१०॥

हिने ग्रह प्रश्तिकनं कबन कहै-सलवदि तस्त जन्दै आसतस्य पामवानी बुद्धि नाम मति कै नाम बढ़ि नै विषे एज ऋची के नाम जह रहि में सब दिन तमी रही के तेथी निरर्थक बात केण कही तेनी हाकारी हुं। न दें कोईनी किन्ने नेवा करी विण सामी दृष्ट ही न दें | किणै अदया नी बात उचेरी हो हेने कान ही न हैं। किणे सतमप्रस्तनी बात उद्देशि हो हर वा न कहैं। विकया मात्र पोते न करे बीजे बात विकथा नो उतीरों सौ तिहां दो करी. बाय 1 पोतानो नेवा वा प्रशंसा करी तिहाँ हुएँ, विवाद मन में ही न ल्यादे । एकंड खारम तत्त्व गवेक्नानी दुद्धि परणमी नै रही के तेनै निसे तदाकार थई रहाँ के परं ते तत्त्ववृद्धि बेहवीक के सकळ समस्त नाम परमेश्वर भाषित सूत्र सागमकी नाम तेओ सर्वेनी कुंची है । एउटे सर्व सूत्र सूत्र ताला खोलवारी कुंची प्राय छै नाम सबै सुत्रो नौ ए रहस्य है-वे प्राणी तत्ववहि परणस्यौ तिजै खिर सापित सुत्रो नौ रहस्य पान्यों। एतके जेनमं रहन्य ए हैं—आस्म हित संगी ग्रवर्चे नाम कवाय श्री निवर्ची पदगरायी उपराठी छे तो भारम तत्व गवेषणा करें उनहीं को नाम तेनो बग, नाम स्वर्ग पृत्य पाताछ रूप जगत नै विसे जसनाव कथत वये फैंडे । कोई पूछे जगत नै विसे देनी जसवाद नश्च कर वये तिहां छिल्'-जैन दसा नाम बैन धर्मनी दसा प्रवर्ततां वस नाम जसविवय उपाध्याय वहे है तेउनै बैन दर्शननी दशा ऊंची नाम सर्वोत्कृष्ट के तेथी बग बसवाद क्यें । वा जस जैन दसा ऊंची जस नाम जे भव्यप्राणी ने जैन दर्शननी दशा प्रवर्तना कंची नाम मर्च भी क्यती के तेनी क्रमत ने विषे जसगार ससरी कथन रही नाम फैले ! इति !

॥ इति तस्वार्थ गीतम ॥

5

સાલું 'ધ્યાયા તે દુ:ખ લક્ષ્મ, નિગવશ તે સુખ લહિએ; અ દર્પે આતમ્યુષ્ટ મળે, કહે, સુખ તે કૃષ્ણ કેફિએ રેં! લઇ નાગત સુખ પાચર નવિ નાલું, વલ્લાના સુખ તે કૃષ્ણરેં! અતુભાવ વિદ્યુ તિમ 'ધાનતાલું સુખ, કૃષ્ણ નાલું નત્મારીરેં! લઇ આ દાદિ આપાર દિ

पू० (पाध्याय श्री भैद्यविकवक्ष गुक्ति। अर्हदगीता

[લેખક : પૂ. પંત્યાસ શ્રી રમણિકવિજવજી મહારાજ. અમદાવાદ]

વીતરાગદેવ શ્રીમહાનીર-વર્ધમાનસ્વાચીના શાસનનાં પગીસો વર્ષ દરમિયાન દરેક શતાપ્ક્રીમાં સંખ્યાળેધ વિદાન જૈનાચાર્યો અને સુનિયુંત્રનો થતા સ્થા છે તે પૈકી અહારમી સદીમાં જે અનેક જૈન વિદાન સુનિયુત્રરા સ્થા છે તેમાં ⊕ચડેકાંડિના વિદાન અને સફાકવિ • તરીકે જયાંચાય શ્રીચેશિકિત્યજી મહારાખતું વિદિશ સ્થાન છે.

ઉપાધ્યાય શ્રીમેશનિવનથછ વ્યાપ્રસિદ મેળના ક્ષત્રાહ્યું મહિલાયક વ્યાદ્ધાર ક્ષેત્રી વિજયન ક્ષત્રાહ્યું પંતિ શ્રીકૃપાવિવન્યણ શ્રીફીપાવિવન્યણને મહારા ક્ષ્યાં કે. તેમના ક્ષત્રાહ્યું પંતિ શ્રીકૃપાવિવન્યણ મહારાન્ય કરતા. ત્યાપ્રસ્ત્રાને આપ્યાપ્ત્રામાં ક્ષ્યાને ક્ષ્યાને ક્ષ્યાપ્ત્રામાં પદ્યાંથી અર્જુદ્ધ કર્તા હતા. આડતી ડૂંઈ હતીકત શ્રીમેશવિવન્યો પાધ્યાન કર્યો પોત રહેતા શ્રીમાં પ્રાપ્તિઓમાં આવે છે તેમાં એમ વ્યાપ્ય છે કે તેમાં શ્રીવિવન્ય પ્રાપ્તિઓમાં આવે છે તેમાં અપ્ત વ્યાપ્ય છે કે તેમાં શ્રીવિવન્ય પ્રાપ્તિઓમાં આવે લિવાના હતા.

થ્યાને પ્રાપ્ત થયી તેમની કૃતિએ એવાં તેમનું પોહિલ મસાધારણ મને સાહિસમી વિવિધ ક્રિયામાં આપીને રહેલું હતું. તેમણે વ્યાકસ્થ, કાવ્ય છંદ, ન્યાયકદાંન, કશાસાહિસ, ત્રમાતિય, સામૃદ્રિક, મંત્ર, મંત્ર, અધ્યાસ્ત્ર ગાહિ મનેક વિચયતા શૈયાની સ્થતા કરી છે.

સમાયાત્મનિવાર ત્રણ લોગની સ્વના તેમણે કરી છે. (૧) આતુલપ્રસાદ, (૨) ધાલોગોધ અને (૩) અર્લ્ડકુંબીલા. આ ત્રણ લોગો પૈકી અર્લ્ડકુંબીલાના પરિચલ અર્હી આપીએ કોંગે,

ખ્રાહ્મન્ન પરંપરામાં ગીતા શ્રેષ્ઠ મુખ્યસ્થિ છે, જે મહાવારતના એક લાગ છે. ગીતામાં શ્રહાર અધ્યાયો છે અને તેનુ ખીત્નું નામ ગ્રહ્મવિદ્યાન્ત્રિયક યોખશાસ્ત્ર છે. ("ગ્રહ્મ-વિદ્યાર્થા યોમગાસ્ત્રે ગ્રીજ્વ્યાનું નદંવારે") શ્રીતા લાસ્ત્રીય સાહિત્યનું ઉત્તમ ગ્રંથરતન છે, એવા તમામ પંતિતોના સત્ત છે.

જેનેતર પરંપરામાં એ એ સાહિત્ય વિશિષ્ટ સુપ્રેમિક અને આલ્મણોધન આદિ માટે ઉપયોગી હોય તેના અનુકત્ત્વકૂરો તે તે સાહિત્યના લેશ અલ્યાસથી એનાચારોોએ પણ એવું અને એ જ નામનુ સાહિત્ય સ્વવાનો પ્રયત્ન કરેશ છે અને એવા પ્રયત્નો હાંસ તેઓ સાક્ષર અને સાસાત્ય જનતા સુધી પોલાનો ધર્મપાંદ્રેસ પહેલાંહી શકળા છે. આ ક્રાતના રપષ્ટ શખલા એવો હોય તો 'વસુદેવ હિંહી' નામના ગ્રંથ અતાવી શકાય. આ ગ્રંથના ખીજ સથવા મધ્યમ ખંડમાં તેની સ્થનાનું કારણ જ્યાવતાં ગ્રંથકરે આ જ' હકીકત લખી છે.

સ્તા ઉપરાંત એવાં અનુકસ્ત્રોની સમાનવા સારૂ આચાર્ય શ્રીક્ષરિક્ષરપૂરિ આદિએ રચેલા ધર્માંબેંદ્ર, લલિવિસ્તરાર ગાહિ ગેંગ્રેક, તથા મેશકૂતનાં અનુકસ્ત્રો, અને સ્વાક્ષસ્ત્ર વગેરેની પાદપૂર્વિ જેવા ગેંગ્રેક જે જેને કલિઓએ રચેલાં છે તે પણ બ્રાફ્યાર્થ શકાય.

ઉપાધ્યાય શ્રીમેવવિજ્યજી પણ આ અતની પાતાની પૂર્વ શરૂપર પરાને અનુસરીને કેવળ આત્મશોધન દરિયો આ અહેંદુગીતા સ્થવાને પ્રેસવ છે. તેમણે અહેંદુગીતા–તત્ત્વગીતા થાયવા ભાગવદગીતા એ ત્રણ નામા જા ગંચનાં આપ્યાં છે અહેદગીતામાં છત્રીસ અધ્યાયે! જે કહે કહેલી ગીતા કરતાં ભયમાં છે. જેમ શ્રીકૃષ્ણવાળી ગીતામાં શીલગવાન ઉવાચ તથા શ્રીઅર્જન ઉપાય છે વાક્યો આપેલાં કે તેમ આમાં શ્રીસમદાન હવાલ અને श्रीवर्श्वनने अध्ये श्रीगौतम उवाच के वाङको हरेड कथायना प्रारंक्सां भुडेतां छे. गीताभां જેમ શ્રીકરમ માટે ભગવાન શબ્દની ચેલ્યના છે, તેમ અદે દગીતામાં શ્રીમદાવીરસ્વામી માટે ભગવાન શહરની ઘટના છે. શ્રીકૃષ્ણવાળી ગીલામાં જેમ પછનાર ગર્ભુન શ્રીકૃષ્ણના પરમમિત્ર છે તેમ પ્રસ્તુત ગીતામાં શ્રીઇ-ડબ્યુતિગોતમ શ્રીમહાવીરના મુખ્ય અને પ્રિયશિય છે. વ્યા જીતિ અધ્યાયામાં ત્રાનસાધન તથા ક્રિયાસાધન એવા આધ્યાત્મિક વિષયાની ચર્ચા છે. એ ચર્ચા કરતાં પ્રસંગાયાન જિલ્લા જ્ઞામિત સમત્વ્ય અને ખાસ કરીને વેદાંતના समन्वय तथा व्य तमा सिद्धं के वाडकनी विविध रीते समञ्जूषी आपेशी है. तेम क ત્યોતિય, સાસર્કિક, તિશિવિધાર, ભાસવે કને લગતા વિચાર, નવાતું નિરપણ વગેરે વિવિધ વિષયાની સર્થા આ ગીતામાં કરી છે. આ લધા વિષયાના વિસ્તત પરિચય ન આપતાં માત્ર માંગ્રેપથી ગ્રંથની ખાસ વિશેષતા અને એમાં નિરૂપેલી ખાસ ખાસ બાબતા અહીં જ્ઞાવવાની ધારણા છે.

ૠરવેદના પ્રત્યેક મંત્રને મથાળે તે મત્રના ત્રાપિ, છંદ વચેરે જેમ ગતાવેદા છે. તેમ આ માર્કદુગીતાના પ્રારંભમા જણાવેદાં છે કે² અહેદુગીતાના ત્રાપિ ગૌતમ છે, છંદ અનુષ્ટુપ્

૧ ભૂંગા વસુરેવહિંતી મધ્યમ ખા માતુ પહેલુ

તેમાં જે શહેંજા છે હૈના સાર એ છે કે—નાલકાળ, નાફ્યરાબ, રાય, રાવણ, લખાંખના, ફીરલ-પાંડેલ વરેરેલી કામકામાંગાલ લોકો પ્રીતિ રાખે છે, એટલે ધર્યા ક્યાંગોને સાંસ્થાને પણ લેકો તેમાં ગંધિ રાખતા વર્ષી ગાટે કામકામાંગોમાં રસ ધરાનાવ લોકો માટે હુંવાર ક્યાંને બહાને ધર્મને સનાબવવાની શહેંલી આ ગુગારમાંગન ક્યાને લખાંમાં આવે છે કામકામાંગા સ્ત્ર ધરાનાર લોકો પૃષ્ઠ છે કે ઉત્તર કામગેપને કેવી તેની એવાની સકાલ રે હોને લાવર ગુજારામાંના આ ક્યાર્યા આપવામાં આવે છે અને તે એ છે કે "ઉત્તમ અંતિર આપરાલાંથી લાવા કામગોમાં એવાની લાકાય છે."

३ ॐ भस्य श्री वर्ष्ट्रशीकारकारतामार्गावानकारता सक्तवासार्वस्थातर श्रीवीवन ऋषिः, भनुष्यु स्टर, श्रीसंख्या वितः परणात्मा देशता, वारिऽति तृत्ववे तत्तः कर्षः अक्तुस्ता तथा, इति वीवाय, वेतालाऽऽप्रसम्प्रस्थाता यद पैराप श्रासस्ते इति प्रविक, व्यक्तवोऽती कक्त्युस्ता विवायत् स्वयुत्तन्त्रस्य इति प्रीकस्य ३ [वर्षद्वितीय स्त्र १]

है, देवसर्थंत्र किन प्रशास्त्र हि "प्राप्तेत्रिय सुमने बत्ता कार्यः" हिनाहि, जा शीरातुं शीर है "येत नात्मा जात्मनि जनस्वाता" ईत्याहि जा श्रीरानी शक्ति है ज्ये "असुकोऽपिकामसुक" इंत्याहि, जा शीराति, डीवक्ष है, ज्या उपशंत हैऽहै।हो वैदिक भंतरी पेट वपद, स्वचा, स्वाहा वजेरे संजाक्षरोती प्रशील उपाध्याव श्रीसिवविकवरूको करेशे है.

જો કે અર્જદ્વાતા શ્રીસેવવિશ્વાપાધ્યાયે પોતે પોતાની ક્રમ્પનાથી ઉપતવેશી છે તે રવેલી છે. કતાં તેમણે નમભાવે પોતાની જ્ઞા રવનાને શ્રીગ્રેાતમસ્વામીના ગ્રુપમાં પ્રશરૂપે અને શ્રીપતાની સ્વાપતા કરવાને કે ગ્રિક્શનાથી ચોલ્બતા કરી ક્રિ. જેન પરંપશમાં ઘણા એવા પ્રાચીન-અસાને પોતાની સ્વાનોને શ્રીપતાની અપતાને સ્વાપતાને પતાને સ્વાપતાને સ્વાપતાને સ્વાપતાને પતાને સ્વાપતાને સામાને સ્વાપતાને સામાને સ્વાપતાને સ્વાપતાને સ્વાપતાને સ્વાપતાને સ્વાપતાને સામાને સ્વાપતાને સ

ઉ. શ્રીમેદ્દવિજયજી પાતાની આ રચના વિવે કહે છે કે-

अधिरेण विशेषिता अगवता श्रीगीतमाय स्वयं, सुरेण प्रथितेन्द्रभृतितृतिना चा हादश्यांचां गरात् । श्रीतास्त्रवर्षाण्यो अगवतां पर्दाश्यरच्याचात्, मातस्त्वां मनसा व्याम्मियवद्गतिः भवदित्वीम् । ११॥ व्याप्तिकत्वाप्ति । व्याप्तिकत्वाप्ति । व्याप्ति । व्याप्ति ।

સર્થાત—સમજાત, શ્રીસહાનીર ધોત ગ્રેતામત કરીસ અધ્યાયનાથી અને અદેતાસત રસને નરસાવનારો અર્ક્કુગીતા અથ્યા ભાગવદ્ગીતા કરેલી છે અને શ્રીદદસ્તૃતિસૃતિએ તેને ક્ષકાંગીમાં રારક્ષ્યે ગૃથેલી છે. આત્કું લખ્યા પછી ગીતાને સાતા કહીતે તેઓ એ તેનું ધ્યાત ધરેલ છે. ઉપર વ્યાગેલ શ્લીકને અંતે ભેગ વ્યાવ્યું છે કે—

" इति परसमयमार्गपदत्या शास्त्रश्रासुतदेवतावतारः । "

એ પ્રમાણે પરસવની પહોર્તિને અવલોબીને શાસ્ત્રધ્યાર્ય શુવદેષવાનો અવવાર શ્યો સમજવા.

આમાં કુલ કલીસ અધ્યાયે છે તેમાં ચૌદથી રોળ અધ્યાયેતે ધ્રદ્ધકંઠ નામ આપેલ છે અને સત્તરથી કલીસ અધ્યાયેતે કંગડાંઠ નામ આપેલ છે પહેલાના એકથી તેર અધ્યાયેતે માત્ર સામાન્ય અધ્યાય નામ આપેલ છે.

સ્મા ગીતામાં જે ખાસ આખતો છે તે ગા પ્રસાશે છે. વેલા અધ્યાબત ૧૯મા *સાંકમાં જણાવેલું છે કે ક્રેમાં અપેક્ષાએ આશલ પણ સંવર થઈ જાય છે. અને ફ્રોઈ અપેક્ષાએ સંવર પણ ગાલવ શર્મ જાય છે.

> " संवरः स्वादाधवोऽपि संबरोऽज्याद्यवाय ते । इत्तरक्षतन्त्रतं चैतन्तिस्था सम्वक्षतादिवत् " ॥१९॥

પ્રાયક્ષરે જા વિવેશનમાં પ્રધાનપશે વિવેકને સુખ્ય સ્થાન જાપેલું છે અર્થાત વિવેક વચરનો સંવર તે ગાકાવ થાય છે અને વિવેક્સુકત ગાકાવ પણ સંવર થઈ જય છે. એમ એમલું કહેવાનું છે. એમનું ગા કથત જૈન સિલ્લાંતથી સર્વજા જાવિરૃદ્ધ છે એ પ્રત્યેક વિવેકીની સમજમાં ગાયે તેલુ છે

છક્ષ અધ્યાયના પંદરમા શ્લાકમાં ધર્મને અમૃતર્ય કહેલ છે.

" शतं विश्वयते द्वानं दर्शनं पित्तवारणम् । इत्तनाशाय चरणं धर्मस्तेनामृतायते " ॥१५॥

સ્મા હંકીકલને સમલ્યવતા તેઓ કહે છે કે—ગ્રાન વાલ દોય છતે છે, દર્શન પિતઃ ' દોયને નિવારે છે, ને ચારિત્ર કફે દોયના નાશ કરે છે. આમ છે માટે ધર્મ અમૃતરૂપ છે.

આ સ્થળે ગ્રેપકારે સાન-હર્યાં--ચારિતને વાત-પિત-ક્ષેતા નિવારક કહેલા છે. એ ક્ષેત્રીકત વધારે વિચારતાં ખરેખર સાથ બ્લાય છે; કેચકે વાત પ્રકૃતિવાલા પ્રાણીસાં સાન ગ્રોધું હોય છે, જેમ જેમ બુહિસાિત વધારી લાય છે તેમ તેમ વાત પ્રકૃતિ સાંદ પ્રતા તેમ કે પ્રાણીમાં ક્ષેમ ત્યાં ગ્રોધાર્થ ક્ષ્માં અમે રિપ્ત ખતની પ્રકૃતિ કામસ્ત સરખી છે. સમ્મા કર્મથી પિત મંદ પડે છે એક ક્ષ્માં અને પિત અનેની પ્રકૃતિ કામસ્ત સરખી છે. સામ્યા કર્માં ક્ષિપ્ત કર્મ પ્રકૃતિ કામસા સ્થા છે. સારિતમાં ક્ષિપ્તનક પ્રકૃતિ કે કેશ મંદ્રમાર્થું અને અંદ્રે અમાના વચ્ચ છે. સારિતમાં ક્ષ્મિપ્તક પ્રકૃતિ કેમેડે ચારિતમાં ક્ષ્માપ્ત કર્મ છે. અને એમ ચાય છે એથી તેના પ્રાણીની જડતાવર્યક ક્ષ્મપ્રકૃતિ મંદ્ર પડી લવ્ય ક્ષે આ રીતે ચંચકાર પ્રામાર્ધ પ્રચૂ ચાયું અને વાતાંક શ્રદ્ધ કેમ તેના પરસ્પર એ સાંભ્ય બતાવે છે તે એમફે પીતાના અહુલવળી ગેમાઓ છે સે કે આ વાત અફ વર્ષના શ્રોપાં વાંચી નથી તેમ સાંભાગી નથી એટલે દ્યાંચાયછની આ વાત ત્રફન નનીન હળવી હાલે છે છતાં એ પુરંપુરી સાથ

અધ્યાચ ૧૪ વૈદ્યાક દ્વી ૮માં ઉપર કહેલી વાવતું ફરીથી નિર્પણ કરે છે તે તેઓ લખે છે કે—

> " शानावरणसंश्रेयो वातः विवानवादिनाम् । पिचमायुः वियतेवर्वियं नामकर्मे कफालकम् ॥६॥ रक्तारिषयेन पिचेन मोद्दम्हत्ववीर्पिकाः । दर्शनावरं परकक्तावर्षसम्बद्धम् ।॥। वचदिकादवं वेशं नोवं पिचक्तालकम् । कन्दरायः सचियातावरेषं विश्वतिकारकम् "॥८॥

રોહાંતિકાના મતે ફાનાવરસુ એ વાત તેણ છે, આયુઅરિયતિયું નામ પિતારાય છે, તામકર્યા કરફાય છે. જેમાં લાહિયું અધિકપસું છે તેની પિત્ત પ્રકૃતિથી બધીરે સાહપકૃતિઓ હદ્દસયે છે. લાહી અને કરના મિકાલ રૂપ કર્યાત્રાયસ્ય છે. અને તે તે વિકારોથી થતાર્ સખદઃખતું વેઠન વેઠનીય છે. ગ્રેત્રકર્યા પિત્ત-કરફાય છે. વાત-પિત્ત-કર્યુના સાંદ્રપાતરૂપ અંવસથકમેં આ ત્રણેની વિબૂતિનું કારણું અને છે. તેથી મનના તમાગ શાનાને મેં છોરાબર સમછને ઉપર કહેલા છે. એ આદા તેમ જ આંતર હેતુકારા પ્રયત્ન પૂર્વક મન વશ કરવા આત્માર્થી પુરુષે પ્રયત્ન કરવા એક્કેંગે.

ઉપરના ક્ષ્યનમાં દ પ્રીમેઘલિબ્લાએ ગ્રાનસભૂચિ આદિ કર્યાં અને વાત-પિત-કૃદ્ વગેરે દોષો એ એ વચ્ચે એ બાવના સંબંધ અવાએ! છે તે એક અગ્રુલપૂર્વ છે હતાં ગંભીર રીતે વિચારતાં એમતું એ ક્ષ્યન કેંદર્પ પણ અનુસવી ગ્રામી, આત્માર્થીની કરોડીમાંથી પાર શર્ચ શકે તેનું છે. તેમની લખેલી આ ક્રંકીન્ડથી રપ્ય બ્લાય છે કે આધ્યાત્મિક શુંહિ પ્રાપ્ત કરનાર વિચાર્સએ કેંદ્રને શત્મુલત્ ન સમ્મત્રતાં તેના આરોચ્યની, સંવચની આગ્રામામાં ઉપયોગિતા શાય તેની રીતે સાવધાની પૂર્વ કરકાર શેવી એક એ. વાત-પિત-કૃદ્દથી પરસ્પરની વિચારતા ટાળવી બરૂરી છે, અને એમ કરવા માટે આઢારશુંહિ પર વિશેષ આન રાખવાની બરૂર છે. તેમના કરેલાનું તાત્યાં એમ લાગે છે કે આત્માની સ્વસ્થતા મનતા આરોચ્ય પર સ્થેલી છે અને તે આરોગ્ય કેંદ્રના આરોચ્યને ચયલોથીને સ્થેલ છે.

મ્યાકમાં ઋધ્યાયના એાગણીસમાં શ્લીકમાં શૌથ વિશે જ્લાવતાં તે**લે**! ક**હે કે** ટે—

" शौधं च द्रश्यभाषाम्यां वर्षाहेता स्मृतम् । जस्वाध्यावं निगदता वृशघौदारिकोङ्गवम् " ॥१९॥

સ્મર્ત-ત ભાગવાને દશ પ્રકારના વ્યવસ્થાયને લાવાવેલા છે ચોથી ચો લાગવાને દ્રશ્યોપ્ર મને લાવશીય અનેને સ્વીકારેલા છે. એકલે કંબ્યશીય થાને લાવશીય ચી લાનોનું સાપેસ-પણ જેને શાસનમાં જજાએ ચોહું મૂલ નથી. કંબ્યશીય એટલે પાણી, સાર્ટ ચારિ ક્રાર ભાગ્ન શહિ અને સાલશીય એટલે ચાન-વિચાયના લાગ અંતરશીહ.

પ્રદ્રાકાંડના પંદરમા અધ્યાયના પંદરમા શ્લાકમાં ઉપાધ્યાયછ કહે છે કે—

" वैका अपि इच्यमेर्क प्रपक्त जनती तके । धर्मोऽसमोऽस्तिकायो वा तथेरचं अञ्चले मतस " ॥१५॥

સાપૈક્ષપદ્ધ વિચારતાં જૈન સમાત કરવાલા અને વેડાના સમાત જાણવાદ અને એક સરખા છે. આમ કહીને તેઓ વેડાના અને જૈન દર્શયના મસ્ત્રપ્ય સમત્વ્ય કરે 🖺 તેઓ એકબીઅના પાંતનમંત્રન વિવાદમાં ન પક્ષતાં તે એ વચ્ચેની સંગતિ અતાવે છે. એ સંગતિ હાશ તેમના પાતાના માનસિક હહાર આશાવાં પ્રદર્શન આપાળાય શર્મ અપ છે.

કેમ કાંડના વહારમા અધ્યાયના શ્લાક સાલમામાં તેા સ્પષ્ટ કહે છે કે---

" द्रव्यक्षेत्रकारुमाचाऽपेसया बहुधा स्थितिः ॥ आचाराणां दश्यतेऽसी न वातस्तव सावरः " ७७॥

આચારાની ક્ષિતાતાને, વિવિધ ક્ષિયાએની ક્ષિત્રતાઓને, વિવિધ પ્રકારના અનુષ્ટાન ક્ષિપ્રતાઓને વિદેશ સ્થાન ઋષવાતું નથી અને તે બાળત વાદવિવાદ કરવો ફબ્રિત નથી. આચાર-ક્રિયા અને બહુકાનની જે લિકાલાં જલાય છે તે ક્લ્ય-ફોલ-કાલ-લાવની અપેક્ષાએ દેખ ય છે, એટલે દેઈ પશ્ચ આત્માર્થી પોલાની આત્મગુર્હિને છે.હીતે તેના નાદવિવાદમાં તે લતે આદર પાત્ર નથી તેઓ આ હકાર વિચાર તેમના પોલાના સમયમાં છપ્પોબી હતો એટલું જ નહિ પરંતુ અત્યારે પશ્ચ એ વિચાર આપણા સી માટે એટલા જ લપ્પોળી છે. એટલે જ લપ્પોળી છે. એટલે સ્તૃત્મ વધેલા વિચારને અવલાંથીને આપણું જ્યાં અને એટલી સ્ત્રપ્યવૃત્તિ કરીએ તો સર્વ કેપાંદુ એપલ છે.

ઉપાધ્યાયજીએ ૧૯ મા અધ્યાયના ⁹ક્ષાક ૧૧–૧૨ માં ઉપનિધદ્રના એ સુંદર વાકપતું વિવેચન કરેલું છે. એ વાકચ અપ ક્રે—

⁼ आस्मा वा अहो श्रोतव्यः मन्तन्यो निविध्यासितस्यः "

એતું જૈન દરિએ વિવેચન કરતાં સવસુ કૈરને કહેતું, સનત કૈરને કહેતું અને નિક્તિ ધ્યાસન કૈરને કહેતું એ સંબંધી એમણે વસું સુંદર વિવેચત કરેલું છે—

> " प्रोतस्प्रभाषि मन्तव्यः साझारकार्यम् मावनैः । चीयो मायाविनिर्मुकः स एव परमेन्दरः ॥११॥ प्रोतस्पोऽप्यपनैरेप मन्तव्यो मावनादिना । विविध्यास्त्रमस्त्रेच साझारकाराय वायते "॥१२॥

કર્યકાંઠ રૂપ રાગ સા અધ્યાગના ૧૫ માં 'વેશકમાં ઉપાધ્યાયાનુદ્રો ખુદુ ઉતારવાવથી 'તિન' અને 'શિય'ની એકતાનું સમય'ન કહ્યું છે ગ્રા સમય'ન કરવાની તેમણી શૈકી સોક્સમ અનોખી છે. તેઓ કહે છે કે—

> " एवं त्रितः शिनो नान्यो नाम्य तुस्येऽत्र मात्रया । स्थानावियोगादाशयोर्नवयो श्रेक्यभावत् " ॥१५॥

સ્પર્શીત — જિનોનો 'જ' અને 'કે' તથા શિવના 'શ' અને 'કે' બન્ને કું તાલુકાત છે તથા જિન્નો 'ન' અને શિવના 'વ' અનેલું હતાસ્થાત સરખું છે અથવા સ્મૃત્યું અનુતારિકાલું સ્પાન પણ સરખું છે આ રીતે 'જિન' અને 'શિવ' અનેને સ્થાર્થ સરખો અને સમ્માન્ય અને 'સ્મૃત' અને તરખા છે માટે 'જિન' અને 'શિવ' વચ્ચે કોઈ અતીને સમ્માન્યનો નથી. તેમની સરખામાની તાન નથી ઢળવી છે અને કોઈ પશુ વાંચનાને સમૃત્ય પેશ કરે તેથી છે.

આજ અધ્યાયના ૧૮ મા ⁹લોકમાં તેથા ⁹લેતામગતની પેઠે કિંગડમર સુનિની પણ પવિતતાને માને છે અને માનવાની આપણને સ્છુતા કરે છે. તેઓ કહે છે કે આર્ફાઉંગ ગૌહુ છે. ત્યાં પવિતતા છે ત્યા વાસ્તવિક રીતે સુનિપહું છે ને તે વંદનીય પણ છે.

> " व्वेताम्बरघरः सीम्यः शुद्धः कश्चित्रिरम्बरः । कारुण्यपुष्पः सम्बुद्धः शन्तः क्षान्तः शिवो सुनिः " ॥१८॥

નવમા અધ્યાસના શ્લાક ૧૩ ને ૧૪ માં તેઓ જ્યાવે છે કે — જેઓ ચોમ માને છે કે લક્ષ્મી અને સારવલીને વેર છે તે વાત તક્ષ્ય ગોઠી છે, કારણ કે ગ્રાનધર્મને ધારણ કરનાર પુરૂપને જ લક્ષ્મી વશ ચાય છે, કેમાકે ગ્રાની નિષ્પાય હોય છે અને નિષ્પાય હોયાંથી ગ્રાની પુરુષાત્તમગુષ ચાય છે તેથી એવા પુરુષાત્તમગરુષ સારવલી–સંપન્ન ગ્રાનીને લક્ષ્મી જરૂર વરે છે, એટલે કેઇ રીતે લક્ષ્મીને અને સારવલીને વેર છે તે માનનુ ગરાબર નથી.

> " वेरं उरुम्याः सरस्वत्या नैतत् प्रामाणिकं चका । श्रानकर्मपृतो चरुया उद्यागि अस्त्रामिणी ॥१३॥ श्राको पापाद् विरक्तिमाग् यः स वै वुरुषोत्तमः । तस्यैय चहुआ उद्योग सरस्वयेव वेर्डमाकु " ॥१४॥

ગ્રા રીતે પ્રસ્તુત અહેંદ્રગીતામાં આપેલી હંકીકતોનું સંક્ષિપ્ત દિખશ'ન વાંચનાવને આકપ'ક શાય એવી રીતે અહીં જણાવેલું છે.

છેલ્લા છત્રીસમા અધ્યાયના શ્લાક ૨૦ માં તેઓએ પાતાનું નામ સ્થવેલ છે---

" इंदोबिशारदैरेवद्धि शिक्शमेंचे । धर्मस्तरमाम्नित्यप्तक शीमेघविजयोदयः " ॥२०॥

સ્મા પુસ્તક સૂહ્યું ધૂળીયા (પશ્ચિમ ખાનદેશ)થી પ્લાકારે છપાયેલ છે. તે કે છપાઇ સારી છતાં તેમાં જાશુલિંગા ઘણી વહી વચેલી છે. કાઇ વિવેકી પિલાન આ ગંધને સારી રીતે શબ્દ કરીને પુતઃ સંખાઉત કરે તથા તેતું ચાલ લાયામાં વિવેચન કરે તેા આ પુસ્તક ઘર્યું જ ઉપયોગી થાય તેમ છે.

냚

शानदर्शनचारिनैरासेन्सं क्याते यदा । कर्माण कुपिताबीय संबन्त्यासु तदा पृथकः ॥१७५॥ अवर्थ-अन्धरे कात्या सम्भाग तान्, हर्गन कर्ने आस्त्रिनी साथे जेताने भागे के लारे हर्गों कर्त्ने आपस्थान वस्य देख तेम, तेनायी ग्रीव श्रुत्त भरे हे. जन्मात्यकार] હીરકલશકૃત

'પંચાખ્યાન'–ગત 'ભક–નાલિકેર કથા'

[સંપાદક : ઢૉ૦ શ્રીયુત સાંગીક્ષાલ જ સાંડેસરા]

સને ૧૯૪૦-૪૮ માં ગ્રુપ્યાવી સાહિલ પરિલ માટે હું 'પંચવંત' 'તું સંપાદન અને ખતુવાદ કરતો હતો. (સે ગ્રંથર્પે ૧૯૪૯ માં જકાર પદેશ છે.) લારે પાત્રચુના શ્રં કેમ-ચાંકાયાં" શાનમંદિરમાંથી (કરતાંગત નં. ૧૮૦૦) પૂંગ સુનિ શ્રીપુર્યુંવિત્યણ સહાયતા સૌજ્યમાં આ નાનકાડ ક્યાનકની એક પાનાની હેતતાંત સવી હતી. 'પંચવંત' ની તમામ પ્રાચીન પાત્ર પરંપત્ર સાથેના દ્વાલનાત્મા અભ્યાય કચલના ચાલે ઉદ્દેશ હોઈ તે સાથે સંખંધ ધાતવા આ કચાનકની નક્ષ્ય પશુ તે સમયે મેં કરી હીધી હતી.

' આત્મવાં'ના ત્યાર કરીને પરવાં'માં હવેલા પ્રીતિ રાખે છે તેથા પાછળથી પરતાય છે'— એ સુરતું પ્રતિપાદન કરવા માટે આ કચાનક રચાયું છે એના કર્તા કેવિ હીટકદા સં. ૧૬૩૬ માં 'સિ'હોયન ગરીસી' રચનાર તરીકે પ્રસિદ્ધ છે. એટલે આ કચાનક પણ તે અરસામાં રચાયું હશે. એની પુષ્પિપ્તમાં જ્યાબ્યું છે તે પ્રમાણે, હીરકદાશીય્ય હૈમાયું ક સુનિતા શિષ્ય આયું લિંજને સં. ૧૬૫૯ માં એની નકદા કરેલી છે એ તોષપાલ છે.

33 કેઠીમાં રવાયેલી ગા કથાની ગુજરાતી ભાષા ઉપર માસ્વાહીની સારી અધર દેખાય છે. ક્યાસાહિત્યના અને પ્રાપ્ત કરીને 'પ'ચવંત્ર'ના અલ્યાસીઓને તે ઉપયોગી થાય એ આદ્યયંધી તેનું 'પ્રકાશન અહીં કર્યું' છે,

મૂલકૃતિ

lt ईo II बीहर्षप्रमुगणिगुरुम्यो नमः ॥ धरि ४६।

સમસ્થિ સસ્થતિ કવિ કહેઈ, સંપદ સારઇ દોન્ડ દારેતા કહારી તોહ ધના શહે મુટાં એ ગ્યાંન. થાડાઇ ધન વિસ્તાર ગઢ જે મંદઇ નસ્નારિ: તે અગલાં નાલેર જિલેં. પાલિયાથી સંસારિ ş જિમ કિશાદી વનિ કિશા સરહિ ગઇ તરવર તસ પાસ; વાસ વસઇ તિહાં પંષીયા જહ જહારની આસ. 3 કિશક્ષી અવસરિ તિથિ વનહિ મેવ પરાલવતીય-શાહાઇ જલિ પંધી સહું ઉપરી ગયા પર હીવ × મગલઉ ઇંગ ખગલી સહિત વડપથિ વ્યાપઇ રાત્રિક કરિ સંતેષ રહિયદ તાઇ સાધ્યા સરનાઇ હોશિ. થ એક દિવસિ એ કિશિ સમઇ ગઇલે સસ્વર પાસ રેપાઇ જલ વિષ્ટ પંપીયા શહિયા **લ**ઇ ગયાસિ ŧ ે ગમાહિલ મિલિયા સાથી. ચીં તિલ સંયાયા કાર્જિક 'तेढी सरवर आपक्षमं कह सत्रवावड आक.' G રેપીય ધરાતી પ્રિય અવાઇ, 'સ કરિસિ કહી માંમ: શાહિક જાર આપણ સરદં સીઝઇ દેઇ ન કામ. કિસી કિયા વસ્તે લાણી, વહેં તુવ યાલે પિક એ પંધી શતના સહેસ વહિ જાસિ પરપંડિ. **શારી સત્રતિ ઇમાં તાલી, ચીહોની હ્રયાં પે**રટ: છતા અદ્યુપ્ત્રકો લાહરા સવિ શુધ્યુ લ્હસિ લાટ. ૧૦ આપણ બિહનાઇ જલ વિના રહેશ નહી હ્રંથઇ એવિ: तिकि अर्थि अर्थ की की वार्थि हैकि. ઠાહ્યાં સીંગ દીયાર્ટ કેસી: લાગતિ હવાર્ટ ધરસારિ: ધરિની ત્રેવડ ગાહિરી ન રહેઇ માંગ લિગાર. Buine સિવાઇ ઇસઈ કિરતા લાક મત્રારિ: જેતા મુહ્યાર્ટ પંચાયત તેના પાઉ પસારિ सिंहा अवसह अवसी वयाह जातर हिया उच्छारिह 'વિલ વિલે જાવસર દોહિલા, કુલ આવા કિયા માંહિ? વાઉ વકાવશિ આવિયા આ કસીએ જિમ ગંગ તિકીના લાગતા વિસ્થાં, પછઇ હેરવાં ઇયાં સંત્રિ.' ૧૫

а

નારી ગાલક તાઉ વચારા, 'એડ કવાર! કહા સંગ! એ તરમા લાસી વહિયા. તઉં તઉ ગ્રહ્મ અંગ ૧૬ તો નઈ વહિસી કુસ લિયા કે એ વસ વસરા જીવ; કુલ કાઈ થાર**6 કુલલ6, જે ફિરિસી યર**કીવ? કલિકાલ માહિ ત્રણ કીયઉ કેટઇ ન માનઇ અંસ: તિશિ કારશિ તું પ્રીતમા જઇ જાઇને વન ગંસ. ચાર દેવિન મામહાલ લાસલ. તિમ તહેં આપલ શર્ષિ: कापन मध्यम वत विवास साया सारबंह वास. રમિશ્રિ વયક્ષિ અવિશ્રિક સવે જ્ઞિડી કહેઇ અગ્રાસિક 'આજ ઇંગ્રઇ સરિ જલ પીચક, પરક સ્હારી આસ' પંષી વાંછિ સહી કરી જેવરિયા સરવીર; એકિશિ એકિશિ ચાંચ કરિ પીછઉં સિગલઈ નીર. યંખી હહિયા નીર પી. ગાહી ગત્રહી તાંમ: ' પ્રીતમ, જલ વિજ્ઞ હિવ ઇંઢાં કિલ પરિ કિસિસ વિશામ? વરિજિક ન રહિંક માંહરક, પરચી જલની આશિ: an હિલ કિરિ પસ્ટીવડે પર પંવિષા સાં સાથિ. હે તુરુ પર્કિન છે! હિંસિક, પાલસિ પ્રિયનલ ધમ્મે: બિઝદ રહિ ઇસિ આપાલ, તિવિયક લાલઇ કરમાં! નારિ વચારા અમ જીહીયઉ તરુજ્યા કેરી લારિ: ખુઠ કિમ વસ્ત્રો મિલઈ વડપણ કેરઈ શારિ? પરપાંધી પરવાંડ ગ્યા હોવાદા કેરઇ હોરિક મ.......મટ.......સ....ત. [‡] ત્યાપ્યક ત્રિયા અધાર. નીર વિજોગઇ નાલીયરિ કેવી ચંચ વસાઇ: પછિવાવઇ ધધશિ સિરિ ગાલઇ અગલી તાેઇ. 'આપણ વરસ તિછ જિકા જે પરવરએ પ્રીવિંદ ધરતા તે પ્રીતાે પસ્ત્ર પછિતાસિ ગઢ ચી'તિ.'x ૨૮ સંભવી અમ અમલી વયસ પછિવાસઉ ઇંઠ ક્ષેત્રિક: માઉ પરિ પરસવિ ત્રયક, તવ કવિ કહિક સિલાક. ૨૯ न्मातम वित्त अक्षान्यता हे तर गढ़ विस्तारः કરતા. તે પછિતાઇ જિમ નાલિકર ભગ વારિ. ૩૦

[•] आ पंतिम भूगमा देश्यात अक्षरे। वासी ज्ञतता वर्षी,

८ २५ १०० तुन प्रताल ब्राह्मियास पाछन्ती जीव्य शहरू विदेश स्ट सरुत 'दीह सभी हैं। ब्रह्मिय पहिल्ला पहार्चेतु वे वर्ग 1 वे वर्ग प्रक्रम कृतित जिल्हेष्ट कही तथा ॥

यतः पंचाच्याचे प्रजीक आरमिवर्ते व आनामि करोति बहुविस्तरा । ते तरा निवर्त्व यान्ति नारुकेर क्यो क्या ॥ ३१ छेठ न शील्पं पारुकी आपकु सक्षति प्रसाधं, प्रस्त अरीक्षणं व्यक्तिनेत्रमं झान सीव तप कार्म, ३२ धेषु परि कांब्री सुग्रमु नर पंचाध्यांनी यार्म, धीरहेक्षस्त अर्थे हित्क ताब्री आपक बृरि पुकार्म, ३३

हति पेचाय्यान कवानकं ॥ संबद् १६२९ वर्षे माह बदि १३ दिने ओआगपुरे महाराजाधराज श्रीराहर्तिह्वाविजयराज्ये अनुहरस्वरत्यनाण्डे महारक श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्रीलाणंबदस्रीविजय-राज्ये ॥ पं. ह्वेंग्रमुनाणिः ताण्डम्य पं. ह्वीरचन्नसमुनि ताण्डम्य प. हेमाणंबस्यनि सच्छम्य विनेय चेकां आणंब्रीविवयनिवर्तः ॥ श्रीरस्तु ॥

— : निकेश – व्यवसार : —

વહ સખ ખાણી તજ વાણી પરિવામ રે. જેલ છોક તય પશ્ચ. ભૂલા રે ભૂલા રે, તે પ્રાણી રાવડે રે. મેં મૃતિ માહે એક જ નિશ્ચયનય આદર્યા રે, કે એક જ વ્યવહાર: શૈક્ષા રે શેલા રે. વજ કરણાએ ઓળખ્યા રે. 3 शिभिक्षा वाह्यक पुरुष ताबी धरे ते क्या रे, निश्चयनय-व्यवहारः મિલિયા રે મિલિયા રે. ઉપગારી નવિ જાળામાં રે. ખહલા પણ રતન કર્શા જે એક્લાંરે તે માલા ન કહાય: માલા કે માલા કે. એક સત્રે તે સાંકલ્યા કે. તિમ એકાકીનય સવલા બિધ્યામતિ રે મિલિયા તે સમક્તિકપ: स्टीओ हे स्टीओ हे लाडीओ सभ्यति सभ्यति है. દેાય પંખ વિભ પંજી જિંબ નવિ ચલી સકે રે. જિમ રથ વિક્ દેશ ચક્ક ન ચલે રે ન ગલે રે, તિએ શાસનનય બિહે વિના રે. શુદ્ધ અશુદ્ધષ્ણ પણ સરખું કે બેઉને રે, નિજ નિજ વિધે શુદ્ધ: ભાષા રે ભાષા રે. પર વિષે અવિશક્તા રે. નિશ્ચયત્ત્વ પરિણામપણાએ છે વડા રે, તેહવા નહી વ્યવહાર ભાખેરે ભાખેરે, ક્રોઇક ઇંગ તે નવિ ઘટે રે. िनि० व्यव वर्षित सीमध्य स्तवत श्री, यशेरविक्रवक 1

શ્રીમદ્ હેમચક્રસચાર્યજીકૃત સંસ્કૃત ત્રિપષ્ટિશહાકા પુરુષચરિત મહાકાચ્ચના પ્રથમપર્વના પ્રથમસર્ગનં

સમાજદર્શન

[લેખક—પ્રેા. શ્રીકૃત જયન્ત પ્રે. ઢાકર એસ.એ ક્રોવિદ અભ્યવેદ્ધક, મુદ્રિત વિશાળ, પ્રાચ્ચ વિશામન્દિર, વહેદરા]

શ્રીશ્રેશિન્જવાળી યાંત્ર શાહક પૂર્વે થયેલા શ્રીક્રેમ્ચન્દ્રાત્રાથે પણ એક મહાશુંજરાતી હતા. આકરણ, કાન્ય, છત્ત્રણ યોલ, પર્ય તેમ જ કેશ જેવાં શાસ્ત્રોના અતિઆકરણીય પ્રશ્ની રચાવત શ્રીક્રેમઅન્દ્રસ્ત્રાથે કેશિકાલસર્વે પત્રું ભેટુક શાધ્ય કેશી ચાવત શ્રીક્રેમઅન્દ્રસ્ત્રાથે કેશિકાલસર્વે પત્રું લિકાસ સ્ત્રામન્ય કરી ચાપૂર્વા પિકાસ છે. તેમની સરળ અને પ્રવાશે કેશીએ તેમની કુલોઓને વિશેષ શ્રેષ્ક્રેસપ્ત્ર અનાવી છે તેમાં શ્રે ' चित्रसिक्श અલ્લો પ્રાથમ અને લાવ પાઢ છે. દું કર્યા એક લાવ પાઢ છે. દું કર્યા એક લાવ પાઢ છે. દું કર્યા એ વાગ પાઢ પ્રાથમ અને સ્ત્રામના સ્રામના સ્ત્રામના સ્રામના સ્ત્રામના સ્રામના સ્ત્રામના સ

સ્માર્થી ભાજના અવસરે શ્રીક્રેમચન્દ્રાચાર્યના ગ્રન્થ વિષે જે કાંઈ કહેતું તે ભર્યાને નહીં રાક્ષાય

તેમતું 'त्रियष्टिच्छाकामुख्यस्वित्तमहाकाव्य' તેના લાંભા નામને અનુરૂપ આધારે 3૫૦૦૦ 'લ્લાકના વિસ્તાર ધરાવતું હોઈ હદા પર્યમાં બહેંચાઈને બાફુ 'મહાભારત'ની રપમાં કરે છે. ૫૦૪૧ 'લ્લાકોના * અનેલા તેના પ્રથમ પર્યમાં પ્રથમ તીધ"કર શીલ્યબાઈય તથા તેમના લીક્કિ દહિએ પુત્ર શ્રીલારત્વાકારતીના વર્ગતો સ્થમ્યા છે. તેના કુલ ॥ સચ્ચેમાંથી ૯૧૧ 'લ્લાકામાલુના પહેલ સચ્ચેમાં શ્રીઆદીયરના જીવના લખ્ય ભત્યા પર્જાનં અધિવાર પૂર્વજ-મેતૃત વર્ષુ'ન છે. તેની વિલતમાં નહીં ઉત્તરતાં એ પ્રથમ સમ'માંથી સમકાલીન સમાગતાં દર્શન જેવાં હું કરી શક્યો છું તેનાં અત્યને કરાવવાના માં એક

આ લેખ માટે પ્રચાલવાત પ્રત્ય તરીકે થી જેન-આદ્યાનન સલા, લાવનગ તસ્થી ઇ.સ.
 ૧૯૩૬ માં પ્રસ્ટ થયેલ અને યુનિથી ચરાવૃદ્ધિત્વાદએ સંપાદિત કરેલ પ્રવસ પૂર્વનો ત્યોકાર કર્યો છે

" એ કે સમકાલીન સગાજનું નિરૂપણ કરવાના લ-લકારના હતુ નથી જ. જે પુરાણ કાળની કચા કહે છે, તેનું હુલ્લું ચિત્ર કેરતાનું આમાં અભિગ્રેત છે. કેમકે પરાષ્ટ્રની સાલી આવતી પ્રસાલિકાઓનાં પણ વિશ્વતો આપતાં આ લસ્ત્રમાંથી સામાબિક સ્થિતિ વિપે જે કોઇ લલ્લુ શકાર તે હવે લગ્ન લગ્ન સમયને જ લાશુ પહે છે, તેમ સાનનું ઉગ્નિત નથી. અલ્લસ્ત્ર જે વિશ્વતો અંધાર્સ રોધી છે, તે પરાપ્ટ્રની સાલી આવતી તેમના સમય સુધીમાં કેત્રલી વિકાસ પામી મુદી હતી એને સ્થષ્ટ ખ્યાલ આવી શકારે પ્રસા

કર્વા પૈાલાના સમયથી લાંત લાંતા સમયના સમાજનું વિત્ર દેશનાં દરેક રચચિતા ઉપર કાલના પ્રયાહના પ્રાથાલનો પ્રશાય પરવા વિત્રાય સહેત નથી; અને તેથી કિંદીનાળા ઘતામાં મુકેલા દીપકના પ્રકાશનાં કિલ્લા જેમ ક્લિકોમાંથી ઢાકિયાં કરે, તેમ આ મહદ મન્યામાંથી હપમાંઓ, ક્લોશાઓ વચેરના ચમતકારીને એર સમકાલીન સમાજના ચિત્રની જે રેખાઓ લખ્સી આવે છે તેનું નિરૂપણ કરવાનું આ એક દ્વારાહ્યા ⊪

પરાપૂર્વથી ગાલી આવતી વર્ષું અવસ્થા તે સમયે પણ હતી. લાકાશ સફથી ક્ષેણ મણાતો (૩૧૩) ક્ષબ્રિય સ્થાક રાજા હતો. વૈશ્યો વાલિજ્ય તારા પુથ્યત્વ ધન પ્રાપ્ત કરતા. (૩૬) અને શૂકી સેવક હતા. ધનસાર્થપાક્તુ ચરિત તલકાલીન વાલિજ્યરીતિના સુનાર પ્રમાસ આપે છે.

વાહનન્યવહોરની આળળા જેવી સરળતા તે જમાનામાં ન હેાવાથી વસ્તુઓના ખરીદ — તેવાલુ મરી 'પ્રગસ્ત જ જતું પડતું. આ માટે જનાર કેપી દાંદી પિટાવી સાદ પરાવતો કે જેને સાથે જતું હેમ્ય તે તૈયાર વર્ધ લગ્ય (૪૫-૬). આમ એક વિદ્યાભ સંદ-સફુલાયમાં ભધા નીકળતા, કુલકરીઓ પ્રસ્થાનસમયે મંબલવિધ કરતી (૪૯). શો.સ્સાર આરફોના બધા નીકળતા, કુલકરીઓ પ્રસ્થાનસમયે મંબલવિધ કરતી (૪૯). શો.સ્સાર્થી ફૂર જ રહેતા. (૪૮,૧૫,૭૬). ક્ષાર્ટા છેન્ય ક્લિંક પ્રાથમિત્રીએ આ જેવી સમૃદ્ધ કાફસાર્થી ફૂર જ રહેતા. (૪૮,૧૫,૭૬). ક્ષાર્ટા એક્સાર્થી ક્લેપ્ટ અને આપણી માટે અમને આપણી પર્યાભ લગ્ય સ્થાર્થીઓ વધા પ્રસ્થાન પરતા (૫૨૦) અને સાધ્ય વખત તો વધારે પડતા (૫૨૦ લીધ લાલ કરેવાં પ્રાથમિત્ર હાલ પડતા (૧૨૦ લીધ લાલ કરેવાં પ્રાથમિત્ર કર્યાલા (૧૬૮).

આવી લાંબી સફરોમાં પશુ સર્વ પ્રકારની આવતક-પ્રમાદની સામગ્રી સાથે જ રહેતી, અને પરિશામ ગાડાં તે જાણે ચાલતાં ઘર અની જતા:—

> " यूनामन्तर्निविद्यानां, राजकीदानियन्यनम् । जङ्गमानीव वेरमानि, छक्तदानि चकासिरे " (६६)

ઘણી લાંત્રી ગ્રુસાકરી હોવાથી બુદી બુદી ચદુાંગોના સામના લોકોને કરવા પડતા જ્યારે વરસાદ મૂળ પડતા લાગતા લાવે જંગલમાં જ પડાવ નાખવા પડતા (૧૦૦) આમ ધણા દિવસો વીતી જતા અને તેથી એવા પણ પ્રસંગા આવતા કે પાતાની પારોતું પાથેય ખૂર્રી પડતાં લેકોને કુચેલ તાપસોની માકુક કન્કમૂળ માટે લટકલુ પડતું (૧૦૪).

શત્ત્વ ઋતુના પ્રાત્રંભ થતાં ચેડવ્ય સમયની વેષાણા મંગલપાઠક કરે એટલે ફરી સંધ સાલી નીકળતા (૨૦૫–૨૧૮).

ઉદ્દિષ્ટ સ્થાને પહોંચી પાતાના માલ વેચી નવા માલ ખરીદી શ્રેન્ડીના સંઘ પાછા ફરતા (૨૨૪)

ખેતી (૨૯૭, ૨૨૮) ઉપયાંત પશુપાલનના ધંધા પણ તે સમયે શાલતા હતા (૨૧૯). ગામના શુપ્રમાંથી બનાવેલ ગેરફું બનાચા વાલ ચોલાબિયા વમાતતા ચેરતી અપેશું ધણ કોર્યું અની લાખ્યું (૨૧૯) બામાંનાનાં ધંધાના હલીય પણ મહીં મળે છે (પળ્ય). વળી તહતે પીસીને તેલ કાલવાનાં યંત્ર પણ તે સમયે હતાં (૫૬૩). પોલીન પાંત્ર તે પાંત્ર માર્ચ વાલતાં (૫૦૧). ગરીએ પર્યં તપાર્ટસમાંથી લાકતાના ભાસ ભાષી લાગે વેચતા (૧૪૦૯). પણ તેમાં સાધ્યોનોના નિર્દેશ પણ મળે છે (૫૬૫).

વધું અવસ્થાની માફેક વાપ્રસન્યવસ્થા પણ હશે, હોકે તેનાં રુપણ પ્રમાણ મળતાં નથી. રાજા રવહેરતે પુગના રાજ્યાલિયેક કરી સંસારમાંથી નિવૃત્તિ લઈ પ્રવજ્યા સ્વીકારતોને (૨૮૮, ૨૭૪) એવે વીજા વર્ગોમાં પણ હોઈ શકે.

ધમાંચાર્યો શિષ્ય-સુનિએંથી પશ્ચિત થઈ વિકાર કરતા. વેપાર થાર્યો જતા સંધની સાથે ઘણીનાર તેઓ તોડાતા. (પદ), અને સાથેવાહ તેમ જ અન્ય જેના તેમને સર્ય મકારનુ રહ્યા તેમાં પોષ્યા આપીને કૃત્યુનલતા અનુસવતતા (૧૨–૨, ૧૩૧–૨) કોઈ પશ્ચ સંધોગ્રામાં તેઓ પોષ્યાનાના ને તેના અન્યસ્થ કરતા (૧૦). વર્ષો જેની સુરદેવીઓને કાર્યો સ્વામાં સંધ સાથે પાલન નાખના પદોતા ત્યારે પશ્ચ તેઓ હમેશ મુન્ન ધાના, મીન કાર્યાત્સાં, આગમ--પક્ષન, નાચના, ભૂનિપ્રમાન્યના, નંદતા, પર્યાં કહ્યા વર્ષેર કાર્યા ક્ષ્મમાં માન્ય નંદતા (૧૨૨–૪). આવે વખતે તેઓ નિર્ભતા સર્ચા પ્રશાસના અચ્ચાદનનાના અને અને ઘાસની બ્રિતાનાળી સ્રોતિનાનાલ ઉદ્યત-સ્થાપ્રસ્થાનાં સર્વેતા (૧૦,૨ ૧૧૮)

આ ગામારી પ્રસંગે પ્રસંગે પ્રસંગે, ધાતોના ધર્મ સમાછ, ધર્મ દેશનાએન ગામતા, જેમાં ધર્મના સૂત્ર સ્વરૂપ વિષે, તેના પ્રકાર વિષે, અને તેના અનુસાન વિષે કોધ આપતા (૧૪૫-૨૦૧). પ્રસંગોપાત ઉઠાહસો, ગાપી તેઓ ઉપદેશ આપતા અને કોતાએ ઉપર તેની લીંડી જાવર ગતી, તેમને દ્વાપ સહન કરવાની પ્રેરણા અને પ્રાથનના સ્વીકારના ઉત્તેજના મામતી (૫૬૧-૫૯૩).

સંઘની સાથે જવા ગાગાયોં વિક્ટ સ્તો વટાની સંવર્ગ છૂકા પડી વિદ્વાર કરી જવા (૨૨૨)

રાજસભામાં પણ ધર્મ અને તત્ત્વગ્રાન ઉપર વાદવિવાદ થતો. રાહ્મને મર્સ્ટીએ દુશ્યાસ્ત્રિય સામે ચેવવતા પણ ખરા ((૨૮૫-૩૨૯)ગાર્વાક્રમત, ભોહંમત તથા માયાવાદનાં તિરૂપણ અને નિસ્તન ગા સર્ગામાં ગાવે છે, ગા વિષય એક સ્વવત્રન ક્ષેપ્ર માગી ક્ષેતો હાવાથી અહીં તેને: વિચાર નહીં કરીએ.

સંયુક્ત મુક્કમમાં સુખ્ય પુરૂષ કહુંળના વહેર હેતો. લાજ કાઢવાના વિવાજ વિષે કોઈ સ્પષ્ટ પ્રમાણ મળતું નથી, પરંતુ જીતિ, સ્થાન કાંઇક નીચું હતું (૭૯૬) લક્ષની પ્રથા વિષે ખાસ માહિતી ત્રાવાદી નથી આ પાર્ધાના સ્થોપોમાં વિસ્તૃત લક્ષ્યભૂને આવે છે, જે ખહુ સ્થાપ પ્રથા છે. પરંતુ તે ગા નિળ-મની મર્યોદાની બહાર હેાવાથી તેને સ્પર્શયું અહીં લિશ્ત નથી.

છેડકરાના પરાક્રમથી અગર થીછ કેાઈ રીતે છેાકરીને તે ગમી જતા ત્યારે—

" अस्वातन्त्रयं इस्स्तीमां, बसों नैसर्गिको यतः "

એ સુત્રને અનુસરી પોતાની સખી કાચ તે પિતાને વિનોત કરતી (१८४). અને પિતા શેલ્યતા ક્રોલ તો વિરોધ કરતા નહીં ને તેવાં ક્લા કરી આપતા (૧૮૫).

ક્ષ્મા પરશ્રીને પતિને ઘેર જવી (૬૮૮) નવલુગલ સિત ને શૌમ વસ્ત્રો પહેરી ઘેર જત (૬૮૮).

ભાળલમો તે કાળ નહીં થતાં હાથ તેમ તો નહીં જ. ૨૪૪મા શ્લાકમાં પિતાના આદેશથી અહાળલ પર્સ્થે છે, અને ૨૪૫મા શ્લાકમાં કર્લું છે કે:—

" रतिलीलाधनं सोऽय, बीवनं प्रत्यपच्च "

જો કે આ પહેલાં તેણે અધી કળાંગા હરતાવત કરી લીધી હતી (૨૪૩), એટલે પાસ્તુવાને ગ્રેપ્સ ઉચ્ચર દર્શ હશે છતાં આ કચન અપાન વચનાં લગ્નો તરફ અંગુર્લિનિકેશ કરે છે એમ કહી શકાય.

સ્ત્રીઓ છૂટથી હરીકૂરી શકતી હશે. કેમ કે વાલિત્યાર્થે વિચરતા શ્રંઘમાં પાતાનો શંબંધીઓ સારે લક્ષી ઋગિએ જવી (૮૭–૮) - શ્રીએના વાપને લીધે માર્ગની સરિવા-સામાં પુરતી અને નલિતીનાલ ગળા ઉપર ધારણ કરી કંડક કરવાના પ્રયત્ન કરવી.

પુત્રીતે! જન્મ છે દુષ્કર્માંયુ કેશ શેખાતું (૫૩૪) એક સ્થળે તેને ખસના ફેપ્ડશા સાથે સરમાવી છે (૫૧૩). તેના લકેરમાં મણ ગરીબ લોકો તો છેદરકારી જ રાખતા (૫૪૨).

' પહેરવેશમાં સામાન્ય વસ્તો ઉપયાંત હિન્ય વસ્ત્રોનો નિર્દેશ મળે છે, એનો દેષાંગવા-સસ્ અશ્વા તો દેવકૂચ વસ્ત્ર તરીકે ઉલ્લેખ છે (૪૦). થબિંક શીબંતોને ત્યાં તો એના હમલા હતા (૪૦). હૈંચાનુ સુધીના અૂટ અત્રય ચીલ્લ(શૉचक)તો થયુ સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ છે:

" अध्यस्यका माञातुसंज्यानयकरेयः । बायुक्तमोचक रूप, प्रचचाल शर्वः शर्वः ग्रः (८६) स्थार्था २५४ शत्र छे हे मोचकने वीपे अति धीर्या ५डी क्यी हती. કેપૂર, વ્યવસુ, કંસ્તુરી, વાતન અને લનસાર ગંગલેય માટે વધરાતાં (કંપર, કંપર, આત્માણોમાં — પત્રમાં સ્તલ્કદેક, કેઠ પર કતિસુર, હાંચમાં કંડલુ, બાહુ ઉપર વ્યંત્રફંડાં), ક્ષતી ઉપર હારવરિ, મળામાં ત્રૈવેશક વ્યવસા "નેકલેશ", કોને કુંડળ અને સંસ્તક ઉપર ફુલહાર તેમ જ કિરીટ પહેરવામાં આવતાં (૪૬૫-૬).

સુવા માટે તુલકાયા વ્યાગર ફર્મા ગાલલો વખતામાં (૪૧૩). દોલા વ્યાગર હીંચકા પણ એક મન બહલાવવાતુ સાધન હતું (૧૦૬) સુન્દર ક્રીહાયવંદી, સરિતાઓ, વાપીઓ, ફીર્ચિકાઓ અને ઉપવેતા તેમ જ ઉદ્યાના જેવાં વ્યાન-પ્રસાદનાં સ્થાના પણ મુખ્ય હતાં (૧૧૩). સુપ્રમા પણ પ્રવર્વથી (૧૭૪).

વારાંગતાઓનુ પ્રમાણ પણ કોઈ નાનુ ન હતું. ચામર, કર્યણ અને પંખા જેવાં સાધના વહે સહ્મ (અથવા ખીતા એવા શ્રીમતા મનુષ્યા)ની સેવામાં વારાંચનાઓ રહેલી(૪૮૮)-

पोत अथना केडी (५८१) तथा सरण्ड अथना सरापर (३९८) पश्च हेता. होडी तेमां विश्री सब्देशभाद्र पाट हरता होडी.

કાચા સ્તરનાળા ખાઠલા ઉપર બેસાડી નીચે પાડવાની મશકરી પછ થતી (૫૫૬).

કપિકચ્છુ ફક્ષનો રચ્યો થતાં ખૂબ ખૂબથી ચાલ્યા કરે છે અને કયાંય ચેત પક્તું તથી, ચેતું આજે પશું અનુસવાય છે. દેત્યીક વાર સામાને "લંચા-નીચા કરવા", સામ તેમજ તરમા મિધ્યું ખુલશી જેવાં સ્થળોએ આને વેરીને ફૂર પ્રશસ્ત્રી કરવામાં આવે છે. તે વખતે પશ્ચ તેવી પ્રસ્ત્રી કરવામાં આવતી (પ૮૮).

અનાં જના હમલા તથા ગુણોનો હત્યેખ પણ મળી આવે છે (૪૦) અનાં જ કેઠી-એમમં સરતા (૮૬૪). પછી કેવી (પ૮) ઉપયાંત પડવ રચામાક, નીવાર, વાહક(ચીશકું), કુલલ કારકી, એર) વગેરે પણ પુષ્પળ પ્રમાણમાં મળતાં (૨૧૧) કેરતીનાં તો ન હતી (૨૧૨) ઉત્લય પ્રસંગે ચોલકાહિ બિટ પણ આરોગાતાં (૫૪૪) ગેલા, લોદ ત્યાં પાણીના પ્રિપ્યકૃષાંથી મદદકિલ ઉત્તર સાથ છે એયુ વિધાન છે (૩૩૨), દૂધ, મધ તથા થીનો પણ હૃદ્યી ઉપયોગ સેતા (૮૬૯–૭૦) લીજેસા લીનો પણ હત્યેખ મળે છે (૧૩૮).

ખારાકના સાર પ્રકાર એક સ્થળે ગણાવ્યા છે: અરાત, પાત, ખાદ્ય(ફળાદિ) અતે સ્વાદ(સુખવાસાદિ) (૪૫૬). કેડવી તુંગહીતા ઉલ્લેખ પણ એક સ્થળે મળે છે (૫૯૭)

તે સમયે માંસાહાર પણ થતા હતા (૫૭૧–૩, ૫૭૭) માંસ રાંધીને ખાતા, તેમ જ મસા ગાળીને લેતા. પણ તેવા ક્ષાકેત હેલકા ગણાતા હશે.

ચાર-વ્યાગના લય રહેતા (૪૮, ૭૭). સુધાકરી તો પત્રસ્તે જ કરવાની હોવાથી ગ્રાસ પ્રમાણમાં રમુકોની વ્યવસ્થા રાખની પડતી. લસ્ચક વસ્તીવાળા શહેરમાં નાનાં ગ્રામાં કરતાં ચારી-વંદના લય ગ્રાક્ષેત્ર સ્કેતો (૨૬૪). પરસ્ત્રીગમન મેં થીંને દેશ હતા (પ૮૦). આ અને શુના માટે શુનેગારોને પકલામાં આવતા (પ૮૦). કેફોએોને એક પહેરાવલામાં આવતા (પર૩). લાંચ-દ્રશલત અને ચીના વિત્તર્મથી ઉલ્લા થતા દોશે તે સમયે પણ પ્રવલિત હતા (૭૧૨-૪). સલ્લ્યુલ તત્મના લાલામાં ફ્લાઇને પ્રત્યાં પૈક્ષા સેવી તેને છેટે છે અને રાત્રે સુદ્રોકાં પૈતાનાં મા—ભાપને વિલ્લુપ આપી મુંઆવી માટે છે (૭૧૨-૪). તત્મએ ઉપરાંત થીના કાંમાં પણ આવે અનેક પ્રકારના સહે હઠો 'જ્ઞાવરૂપસ્ત્રિયાસનો માત્રે પણ આવે અનેક પ્રકારના સહે હઠો 'જ્ઞાવરૂપસ્ત્રિયાસનો માત્ર

" पुत्रादिष घनमानां मीतिः, सर्वत्रेषा बिहिता रीतिः " ॥

દ્યુત વિષે કાેઈ માહિલી અહીં સગલી નથી, પણ પછીના સર્પોમાં આવે છે. વારો-ગનાથો વિષે તો આગળ કહેવાઈ ત્રયુ છે. તેમના ધરા રીતસર ચાલતા (૭૩૯).

આ ખર્ધા કુપણા સવૈકાલસામાન્ય દેવવાથી એસાં કાંઈ જ વિશિષ્ટતા તથી.

ટેડલાક રોગા અને તેના ઉપચાંચ વિષે પણ કેટલીક માહિતી મળે છે. સામાન્ય જવર ઉપયંત પાના-એટલે ખસ-ના લલ્લેખ અંગે છે તે પાલુવાથી વધ્યા કરે છે એતું એક વિમાન છે (૨૯૮) વળી ખીત્રા એક સ્થારે કહે છે કે, જેમ પામાના પિડક-એટલે કે ખસતા ફેડલા એક ખીતાની નીચે લત્મા લયા જ કરે તેમ ઉપલબ્ધ પુત્રીઓ જન્મી (પાત્ર), આપી રજ્ય આપ છે કે આ રાગ લેખી ઉપાર્તા.

જન્મથી અન્ય, અધિર, પંચુ અને કુલીના સામાન્ય ઉલ્લેખ છે (૫૦૯). કુમિકુલ એટલે જન્મચોલી ફેલાતો કેલ કુલાયે અપથ્ય પોષાક દેવાથી થતા (૫૩૪) દેવના નિવાયનુ માટે લક્ષ્યાક તેલ, એટલિપ્યન્તન અને સ્લાક્સ્થલ એ ત્રસુતો પ્રયોગ સ્થાન્યો છે (૫૪૬). તે લક્ષ્યાક વેલ કેલાદામાં આ ઉપયારના પ્રયોગ બલાવ્યા છે (૫૬૧–૫૬), જે સફ્ષ્યમાં નીચે પ્રમાણે છે:—

આજે કેક્કો રોગ વિશેષ ફેશાંડો માત્ર્ય પક્ષ્યો છે, અને તેનો સામના પણ આગળ વર્ષેક્ષા વિજ્ઞાનની મહદ વડે પાચાળ પહિલાંથે ચઈ વહે છે. અને તે એવી કેટલીયે ઓપિએસ, આપણે પિછાની શકતા ન હેતાથી અધારામાં અહનાઇ લઈ છે. તે એ લપી પ્રાપ્ત થાય તો આયુર્વેદ સામન-સામાનની ઉત્તમ તેવા બનાવી શકે. તેથી મુશ વૈવમહાયયેલું આન વસ્કુ દેશવાની ઇચ્છા થાય છે. સાહિત્યાહિ ફેગોમાં તરીયાન માત્ર એ ઘટું સાધું છે અને જૂના જવાનાથી ઉપર તેથી ખુદુ પ્રકાશ પઢી શકે છું પણ માનવસ્કાલાની સાથે તેવાના સામન્સસ્કાલાની સાથે ત્યાન આવતા આપ્યાના છે. સામને સામના સામન્સસ્કાલા કરતાં સાથે ત્યાન આવતાં આવતાં હતાં આયુર્વેદના ફેગ્સમાં સાચેપ્યનની આવતાં આપ્યાનસ્કાલા છે, અને તેથી આયુર્વેદની ઉપયોગિતાનું મૂલ્ય આપ્યાં આહતું તે લયં કર શહુ વાદ્યારે.

સૂચ્છિ'ની મૂચ્છાં વાળવા સાટે કપાળે તેમ જ છાતીમાં ચન્દ્રનના લેપ કરવામાં આવતા એવં પક્ષ બાલવા મળે છે. (૬૩૬).

धीले कों। સ્થળ જાણાંત્ર આધુરો'ક અને जीवधियोजा स्वाह (रस), શક્તિ (पीपे) તેમ જ અસર (विपाक)ના ज्ञानना पक्ष 8क्टोण મળે છे:—

> " विदःश्रकारायुर्वेदं, जीवानन्दोऽपि पैतृकम् । अधारुमोपश्रीक्षापि, रख-चोर्य-विपाकतः " (अक्)

અને આજે વૈદ્ય-કાેક્ટરામાં જે શાયનીય સ્થિતિ પ્રચલિત છે તેવી આજથી ૮૦૦ વર્ષ પૃથે પણ હતો તેની પ્રતીતિ કરાવનાર એક સ્કુટ કટાશ તેમને માટે અતિ મનનીય છે:—

> " सदा संस्तुतमब्यार्तमिए प्रार्थकमप्यहो ? वेस्या इव बिना इब्यं, वृयं नाऽस्थापि पत्त्यय ^{व (७३८)}

લ્તુતપ્રેત વિષેની સાત્યતા આજના જેવી જ ત્યારે પણ હોતી મત્રતા પ્રભાવથી ભૂત-પ્રેતને ફૂર કરતા (પ૮૫). હ્યારે કેઇ રાગ ઔષધિઓને ન ગલુકારે ત્યારે આધિકૈનિક ક્રેપની શકાર્યા મન્તતત્વાદિના ઉપચાર ચેંક્લતો (૨૪૦).

દલ્લક નામના રાજા પાતાના ખનનામાં ગલ્લર શકે તેનુ રક્ષણ કરે છે (૪૩૫). પરાષ્ટ્રવંધી ગાલી ગાવતી = ક્ષતિ તેની શતિ " તથા ક્ષ્યુલ*માંના ખનનારકાક નાગેની માન્યતાના, એ ક્ષયંત્ર શોલક છે.

કાંડિવેધસ્ત્રથી લાંછું મુ-વર્ષું અનું એવું પણ સ્પષ્ટ ક્ષ્યન છે (૮૪૪). એ એક જાતની પોલિસ હશે ⁸

કાઈ પણ બાબવની અહેરાત કરવી હોય તો ત્રિપ્ટિય એટલે દાંડી પિટાવી સાદ પદાવવામાં આવતો (૪૫). આવા સાદ પાઠનારને " આકારક નર" કહેતા (૫•). આજે પણ આ પ્રથા પ્રચારત છે.

મહિયા ઉપર પાણીની પળાલા મૂકી ફેરવવાના સ્વાજ, આજની માફક, ત્યારે પધ હતા (૭૦).

ભાહ સ્ત્રુપા જેવા માણવસ્તભ્લોમાં જૈન તીર્થ કરાનાં અસ્થિ રક્ષાતાં (૪૯૭).

ગુલામીની મથા તે સમયે પ્રચલિત હેતી અને ઝુલામોની દ્યાલબક સ્થિતિત ખ્યાન એક જ ⁸લાક સમસ રીતે કરે છે :—

> " मुल्यकीतास्य ताऽयन्ते, केचिदभ्वतरा इव । स्रतिमारेण वाध्यन्तेऽनुमान्यन्ते तुषाविकम् " (५८२)

સુગાડિ ક્રિયાઓ પચ્ચર ઉપર કરવાની રીતિના હલ્લેખ પણ એક જગાએ મળે છે (૩૨૬). કપકોને પચ્ચર ઉપર ઝીકીને ચાવાની પ્રથા તરફ પણ એક વ્લાક ધ્યાન દોર્ષ છે (૫૬૪).

રાજસભાગા ભગતો તેમાં મળેલા લોકોની નંજર ચાલા ઉપર જ કેન્દ્રિત ઘલી (૨૮૫-૬), તારપશાસમાંના વધુંબ સાથે ગ્યા કથત સુચાંવત છે એમ એક વિદ્રાન બેન્ને જણાવ્યું છે, સમા સમામાં લાલાં પશ-પશ્ચીઓનાં નામ ગ્યાંવે છે. તેમાંના કેટલાક નીચે પ્રમાણે છે.—

જળાવરાને ખાઈ જનાર એક (પછ્ય); વિનિધિ, શુક, કરેલ અને ચટકા (ચક્લી)ને ખાઈ જનારા રવેન, શિયાન અને ગુધ (પછ્ય); ઉપરાંત અલક્ષ્મ (રહ્ય), હંમ (૨૮૧) વચેરેનો કલ્સેમ છે. હત્વર (૩૦૧), બિલાવી (૩૧૩-૪), દ્વારા (૩૧૨), વિશાળ (૩૮૬), મીન (૩૮૬), તથા આહનાકુંઘ-રોનાદિ ચેનિએ નિષે પ્રત્ય આવા માંગે છે (૩૧૪). એક સ્પર્યે લધિ (૫૩ લિક્ટ) (વચરેવિલા) વસ્તુને માત્ર ફેલ્લી આપ છે તોલું ક્યન માંચે છે (૫૩૫). લાયક અપણ લાયકીની નિક્કિપ્રતા આ પ્રયાણે સ્ત્યુ કરી છે:—

वथा क्ष्मापातग्रद्भवेकाङ्ग्रिचा नृत्यति स्वकः " (३८६)

સામાત્ય હાથી ઉપરાંત અન્યત્રભ (૮૯૮)ના ઉલ્લેખ પશુ છે, જેની અન્યત્રલથી સામાત્ય દ્વાર્થીએ તાસી લાય છે. હાથીને "માકલ" તામના તાલ આવે ત્યારે તેને ક્યાંય મેન પર્ધુ તથી (૧૧૩). જેની દરિ પાતાં જ વિલ્લી કારીલા અસર થાય તેવા દબ્લિય માર્પ (૧૯૧) કેવતાઓના ઇલ્લેશિલી નિર્વિષ લવી લવી (૭૦૧). ચીલ કેટલીક પ્રાસ્થ્રીએ: વિદ્યે આપણે આલળ તેને ત્રવા હાથેએ.

હવે શિક્પાર્કિ કળાંભોના વિચાર કરીએ. દેર ગ્રામ બહાર ધર્મશાળાઓ હતી (૧૫૦). આવતી અંદર તેમ જ અહાર ઉભાગો હતી (૩૪૩, ૭૬૧). ઉદ્યારીમાં પાણીની મીડે રા પ્રયામાં આવતી (૭૬૧), જેથી સહેલાંચી સ્વર્ધત્ર પાણી પાઈ શકાય. વાળી આવતી તિરીક સાથામાં આવતો કરી કોઈ નવી વાત નથી. પેટા શેડા સ્વેપસ્થિયાંથી નાની નંદીર મારસ્થ્ર તાલાંસ્થ્રાનું જ્વીતને તે સ્વર્ય પણ પાણી પાયામાં આવતું (૪૩, ૨૯૨). બાંધેશ સ્તાસો પણ ઘણા હતા (૩૪૩). વાત, કૃતા વચેરે ઉપરાંત પરચા પણ દેર દેર હતી ત્યાં શકેલા તે તાત્રથી ભાવાં થયેલા ચાત્રિકે શાન્તિ ચેલવી શકતા (૮૨). મન્દિરેનની દેવારે ઉપરાંત પરચા પણ દેવારો હતા (૨૪). મન્દિરેનની દેવારે ઉપરાંત પરચા પણ દેવારો હતા (૨૪). મન્દિરેનની દેવારે ઉપરાંત આવે શકતા (૨૪). મન્દિરેનની દેવારે ઉપરાંત આવે શકતા (૨૪). મન્દિરેનની દેવારે કરતા સ્તારક કેતારણી કરવામાં આવતી, જે શિક્પનો એક મુંદર તેમૂરો. અદ્યુપ (૩૪૩).

સંખીતકળા પણ સારા પ્રયાણમાં વિકરોલી હતી (૨૮૨). મૃદંગ (૩૪૪) ઉપરાંત વિખ્यित (૪૫) અને ફત્ફબિ (૨૭૧,૪૬૮)ના ઉલ્લેખો વારંવાર આવે છે. મંગળ પ્રસંગે ફત્ફબિ વગાડવામાં આવતા (૨૭૨). પ્રસ્થાન-સમયે લેરી કુંકવાનો વિવાળ હતો (૫૦,૨૧૮).

ગોવાબિયા ગોધ્યુંગ વગાઠતા જેથી ગાયોનાં દું કે હેમાં થતાં (૨૧૯). વેક્ષુ-વીદ્યા જેવાં વાલો પણ ઢીક પ્રચારમાં હતાં (૩૪૪). ગીત તેમ જ નૃત્ય ગેહેક સાધના લેખાતાં (૩૦૫). સંગીતકોવિદોનો એક આખો વર્ગ હતો, જે ચતુવિધિ આતોદામાં ચતુર ગણતો (૪૮૯). પહુર, પ્રધ્યમ અને ગાન્ધાર એ ગ્રાપ્ત્રથથી ગીત વધારે મહુર બનતું (૪૯૬).

ચિત્રક્રળાના શિક્ષણ અર્થે પણ રીતસર વિત્રશાકાઓ ચાલવી (૩૪૩). શ્રીમતીના અનેક જન્મોનો વૃત્તાન્ત પહિરતોએ પટ ઉપર આશેખ્યો હતા (६૪૮). તે આખા પ્રક્ષંપ ચિત્રક્રળાની ઉત્રતિ સ્થયે છે. કાળા, ધોળા, પીળા જુઇ, લાલ વગેરે રેગા પૂરી ચિત્રને ફુળકું બનાવવામાં આવતું (६૫૪). આવી કલાકું બહેરમાં પ્રક્ષાંન પછુ થતું (६૫૦), અને તેની ક્લર કરનારા કુળા કલાવિદો પણ હતા (૬૫૩).

નેપથ્થકર્મ, તટ અને વિનટનના કરશેમાં સ્પષ્ટ કરે છે કે તે જમાનામાં નાટપકળા પણ મુખ્યવસ્થિત રૂપે પ્રસરેલી હતી (૮૨૯).

પલાશ, તાલ, હિન્તાલ, નલિની અને ફક્લીનાં હલસાંથી પંષા બનાવવામાં આવતા (૮૯), અને મારનાં પીંછાંની છતીઓ અનતી (૬૬).

આ માહિતી તો માત્ર પ્રથમ પર્વના પ્રથમ સર્વમાંથી જ શેવતી છે, અને તે પશ્ અપૂરી. ત્યારે દશ પર્વના તે મહાલંગોના સર્વાલ અભ્યાસ કરી પ્રથકરણ કરવામાં આવે તો તલાલીન સંસ્કૃતિ ઉપર કેટલા થયા પ્રકાશ પડે તેના ખ્યાલ હે આ અદપ પ્રયત્નથી આવી શકશે તો ફતાર્થેલ સપાશે.

સમાજ-સંસ્કૃતિ ઉપરાંત ખીછ દક્ષ્મિએ પણ સમસ્ત શંધનો સરીક્ષાપૃત્ર'ક બન્માસ થયો જરૂરી છે અને તે કાર્ય' કેટલાક સમયથી મેં 'સીકારેલ છે. આજે જે શેડડી વાનમાં માત્ર જેવા અલ્લખ્ય આ વિક્રાનાની સંસદ સમક્ષ પીરસી શક્યો છે, તેના સાથા થશ્ર આવા મઠક વિષયમાં પ્રવેશ કરવનાર માત્ર સુદુ શ્રી રિસિકલાઈ પરીખને ભ્રમ છે. આ માટે તેમના જેટલા બાલાર માત્રું તેટલા ઓછા છે. આ નિલ્યં પ્રમાં તેનો શ્રેય તે તેમનાં જે સારું તત્નો શ્રેય તે તેમનાં છે અને જે સર્વિઓ વ્યાપ્ય તે મારી છે. તેઓશીની પ્રેસ્તા અને અન્ય યુલેપ્ઝકોની સ્ટાપ્ય ભાગી સ્ટાપ્ય તે મારી છે. તેઓશીની પ્રેસ્તા અને તર, પ્રહાય માર્ચ લાગી સર્ક સ્થળી નક્ષ્ય પ્રાર્થના અને ૧૬ પ્રહા સાથે વિસ્તીરા

અહિંસાધર્મ અને તેના સંસ્કૃતિના–

વિકાસક્રમમાં ઉપયોગ

[લેખક: શ્રીકૃત પ્રહ્લાદ વન્દરોખર દિવાના એમ ગે, એદ એદ એમ, ફુબઇ]

- 1. અહિંસા ધર્મ એટલે શું ?
- ર. તે ધર્મની શાધ કાહે કીધી હતી?
- ર. થાર્યસંસ્કૃતિમાં તેત્ર સ્થાન.
- ૪. હિન્દા જૈન અને લોહ ધર્મામાં તેન સ્થાન.
 - प. अध्यय कामा है तेया उसवेगा प्रकार.
- મહારાજ કું-મારપાળના રાજશાસનમાં તેના વધેલા વ્યસ્ત.

૭. પરરાષ્ટ્રશાસનમાંથી મુક્તિ ગેળવવામાં મહાત્યા સાંધીએ તેના કરેશ ઉપયોગ મને તેની માનવસંસ્કૃતિ ઉપર થયેલી અસર.

૮. વ્યાધુનિક સંસ્કૃતિમાં તેનું સ્થાન.

૧. અહિંસા ધર્મ એટલે શું ? ' અહિંસા ' મન્દ સભાવવાસ છે. એવા મન્દ્રોને પ્રયોગ ક

' જ્યાર્તિ સાં' શાન જાલાવાયાલ છે. ભેવા શાન્તોનો પ્રયોગ કરવાની કવારે ૧૦૧૧ પૂર્વ છે કે ત્યારે તેવી ક્ષેત્રદેશ લાવ સિન્દ વ્યવસ નિર્દેશાલાક દ્વારા ભે શાન જ તેવી સ્વારે છે કે, ત્યારે પદ્મ ભેના પ્રથમ પ્રવેશા થયો હતે લારે પહેલાંના કાળમાં (ફિ.સા' ક્ષેત્રદે લેક કરવી અગર સારસું વાગર ચારી નાપાનું ભે પ્રવિત ભાગર નિર્દેશન અવ'યાંથો શાન્ત સંસ્તુત લાધામાં પ્રસ્તિત દ્વારો તે એક એ અને તેવી જ તે લાયાથી પહિલિત સામાન્ય જનતા પદ્મ તેને અર્થ વિના પ્રથને સમન્ય દેશની હેલી એક એ. તેથી લક્તરો લાય સાંભળનારના હુંધમાં દિવસ કરી પ્રકાર તે માટે પીતિ કેશાં જેલા તે બહુંદા અર્થવાયાલ હતો તેને કેશ્કે એ નવ તાલુગ સમાન્ય અન્યાં તેનો પ્રયોગ કરીને પાર્વેશ ભાગવાલ અર્થે સમન્ય વવા પ્રાંત્રમો હતો. તે સમન્ય વાર્તી લેશ તે તે કેશાં જેલા અર્થા સ્વારેશ પ્રદેશ છે તે હતો પંચારે શાન અનેક ભરીમાં વરસાય છે, તેવાના જેલે કામ અર્થ લે પ્રેસ્ટો કે તે આ પાય છે કે 'હિસા સ્વાર્ટન લેશિ સામ્ય' કે તેથી " ભાગતાવાની સામ' એ સમાન્ય ના

ર. એ ધર્મની શાધ કેલો કીધી હતી ?

આવે ત્વિસ ઘડીને મહાવબાતિના એક વિશિષ્ટ સમૃહના જાયરણ માટેના નિયમામાં તેને સ્થાન બાપનાર ક્ષેપ્ર મહાન વ્યક્તિ હાવી લોકીએ એ તો સહેજ સમજી શકાય એવી બાબત છે કારણ કે આપણે તેકીએ છીએ તે ઉપર વિચાર કરતાં લાગે છે કે વિચમાં અનેક નાના માત્ર કરતાં, લાગે બાબત છે કારણ કે આપણે તેકીએ છીએ તે ઉપર વિચાર કરતાં લાગે છે કે વિચમાં અનેક નાના માત્ર કરતાં, લાગે એ આપી લેવા માટે સ્વાલાવિક પ્રેરણ શાય છે અને તે પેલગવા બવાં તેઓ એક બીબ સાથે સંબંધમાં આવે છે છેટલું જ નહીં પરંતું તેમને પરસ્પર કહે હાં ત્યાના પ્રસ્તું એ છે અને આપણે જે વિદેશ બાબતા છે છે તે જાદમાં બાબતા છે છે તે જાદમાં બાબતા છે છે તે જાદમાં પરંતું તેમને પરસ્પર કહે શ્રમાના પ્રસ્તું આ એ છે અને આપણે જે વિદેશ બાબતા છે છે તે જાદમાં બાબતા એક પરંતું તેમને પરસ્પર કહે શ્રમાના પ્રસ્તું આપી છે છે તે છે. આપણે કે કેશ, પાત્રના માત્ર કેશ કેશ, પાત્ર પ્રમાણ વર્તીને પણ પ્રાંતીને ખાવ છે માત્ર પાત્ર છે, વાલ અને સ્તિહ ઘેટાં, બાના, ત્રાય, બાળક કે સેસ, પાત્રને પાત્ર છે, વાલ અને સિંહ ઘેટાં, બાના, ત્રાય લાગે મહુઆપણો ખેતી કરીને આ માત્ર ઉપર પાત્રનો તર્વાં હતી. તે શિપ્યન કરે છે ત્યાં લાગે અરાવાં શાય્યને હતાં હતો. તે શિપ્યન કરે હતાં હતી. તે શિપ્યન કરે હતાં હતો. તે પ્રાપ્યાને હતાં માત્ર હતાં હતાં હતાં છે હતાં ધાત્ર, ફેલ અને અરાવ્યતિ માંસ—મચ્ચી ખાતાર પ્રત્યોની ધાંપ્યા તે તે ખાનારાઓની સંખ્યા કરતાં હિલ સિવાય પૂર્વી ઉપરાત્ર કરેક કંદમાં વધારે દિ

એવી બ્લિક્ત કેલ્લું હશે તે વિષે યુરાલા સાહિત્યમાંથી શોધવાં જ્યાય છે કે તે માંખ્યશાસનાં સુખ્ય તત્વો શોધી કાઠનાર ખતે તત્ત્વાન પ્રાપ્ત કરીને બત્મમરણ ખતે ગ્રાપિ, બાધિ ખતે ઉપાધિથી છવતે સાક્ષ કેલાવવાના માર્ગ શોધી આપના લગવન કરિતાનું તે હતા. ' લીગલ સાચવરીતા માં એનને સિત્તીમાં સુખ્ય અને અથીત જે તે વર્ષના મામુલોમાં પરમાતાના લિક્સિત તરીકે ઓલ કરેસા છે, ' લીગફ્લામાવત પ્રસ્તા 'માં એને લગવાન અક્ષરાણના અવતાર તરીકે ઓલખાવેલા છે. ' વિપશ્ચિતાકન પ્રસ્તા 'માં એને લગવાન અક્ષરાણના અવતાર તરીકે ઓલખાવેલા છે. ' વિપશ્ચિતાકન પ્રસ્તા મામે ત્યાં મામુલેન-કૃષ્ણ ચરિત્ર છે, તેમાં લાતકીખંદના સન્ય પ્રવત્તાલ અને તેતા શરૂ કર્મિક સાચેતા પ્રસંત્રનું વર્ષને છે તેમાં 'વેપાસુપોન વિષ્યો' સપ્તિસ્થાન ક્લિયાલયન તરીકે પ્રયત્તાલને આવાનાએ છે.

'શ્રીમદ્ ભાગવતપુત્રહ્યું'માં એના માલાપતાં હત્રશ્રી માંદીને એ પોતાની માતા દેવહર્તિને એષ આપીને પ્રાણટીની દિશા (અબ્રિકેસ ોમાં સિધાવ્યા ત્યાં માંધીને પ્રતાન્ત

૧ શ્વેતાલત રાષ્ટ્રિયા પાર.

र. ■ भी २०.२६ श्रीमह सामस्त ३२४१८मां ५स जेते सिद्धगणापीस: तरीह स्रीणभावेस 🛚

a જાય યુ 3૨૪૨

x 82 2 3 4 610.

છે. ' તે ઉપરથી જ્યાય છે કે એની સાતા દેજાતિ સ્વયંજ્યનુની પુત્રી અને ઉત્તાનપાદ તયા પ્રિયતની અહેન થતી હતી. વળી, તેમાં જ એકબીજા આગળના સ્કંપમાં પ્રિયમતના નંધા વર્ષન છે, ' તેમાં જ્યાયનું છે કે, પ્રિયમતના એક છોદરાહું નામ આગ્રીય હતું, તેને નાનિ નાંધે પુત્ર થયો. હતું, તેને નાનિ નાંધે પુત્ર થયો. હતું, તેને નાંધ નાંધ પુત્ર થયો. હતું, તેને અધ્યા પુત્ર એ અલ્વાર્થ લેક્ટ તેની સ્ત્રી જન્મતી તેની સ્તર નાંધે પુત્ર થયો. હતા. તે બધા પુત્રોમાં સૌથી મોટો. હતો, મહાંચીળી હતો, તેનામાં એટલા એક સુધ્યો. હતા કે તે ઉપરથી આ વર્ષને 'ભારત' નામ આપવામાં આવ્યું છે, તથા એ ભરત વિશ્વરૂપની કન્યા પંત્રખ્યા સાથે પરસ્ત્રી હતો તેથી તેને પાંચ પુત્રો થયા હતા તેમાં સૌથી મોટાનું નામ સુમતિ હતું. આ ઉપરથી એમ જ્યાય છે લખવાન કપિલ સુનિ વ્યવસ્થવેના દાદા સ્માનીમાની ફાંડન છોમરા થતા હતા અને તેથી જ તે ત્રવ્યક્રત્રની છે પૈઢી આપળ જન્મમાં હતા.

3. આર્ય સંસ્કૃતિમાં તેનું સ્થાન

प्त का पु 3२१ थी ३३ सभी १ तेन ४१-१५ सभी ७ स्त्री ४.८३ ८ रुपोद्धानिभाजम् । स्त्र स्त्री ३१० ॥ १८ स्वितियोधानिक्षिः ॥ स्वेत ३३१ ॥ १०. स्वात्तास्तर्यनास्त्रा विद्य । स्वेत ३३१ ॥ ११ नियम्पार्य स्वात्तास्त्रा स्त्री स्वात्तास्त्रा ॥ तेन ३३१ ॥ ११ सेम्बा-स्मात्रा तोन ३३६ ॥

એટલે અહિંસા જે વધા પૈકી એક છે તે સાંખ્યપક્રિયા પ્રમાણે આવશ્યક છે એમ કરે છે. માંખ્યકારિકા.-ર માં ચત્રમાત્રાદિ વૈદિક કર્યા કરતાં ત્રાનમાર્ગ શ્રેષ્ઠ છે. તેતા વિચાર કરેલા છે અને તે ઉપર ઢીકા કરતાં ઢીકાકારે વૈદિક કર્મમાં હિંસા કરવી પડે છે અને તે હિંસા ત કરવી એ વિધિવાધ્યાન હ્રદ્ધાંદ્રન સાથ છે એ આગતના વિસાર કરે 🛦 વળી કારિકા.-XX मां क्रंड के हे धर्मांथी खिल्हींग्रसन अने अधर्मांथी अधिश्रसन, जानधी मेहस अने અત્રાનથી ખન્ધ પ્રાપ્ત ચાય છે અને કારિકા-૪૫ માં કહ્યું છે કે વૈસચ્યથી પ્રકૃતિહય, અને રબેગ્રાલબન્ય સમર્થી સંસારની એટલે કે હૃજ્યની વૃદ્ધિ થાય છે. કારિકા–૪૮ માં અજ્ઞાનના યાંચ પ્રકાશ જે સમ્યવ્હાનમાં અત્વરાયક્રય છે તેના વિચાર કર્યો છે. કારિકા-૫૭ માં કહ્ય છે કે જેમ વાછરહાની વિવૃદ્ધિ માટે અત્રહધની પ્રવૃત્તિ થાય છે તેમ પુરુષના માસને માટે પ્રધાનની પ્રવૃત્તિ થાય છે. અને કારિકા–પેલ્સાં કહ્યું છે કે જેમ કૈર્ણ તત્વ કરનારી સ્ત્રી પાતાના દેખાય પ્રેક્ષકવર્ષ આગળ કરીને નૃત્ય કરત અધ કરે છે તેમ પ્રકૃતિ પુરુષતે પાતાનું સ્વરૂપ દેખાહીને અદશ્ય થાય છે. એ ઉપરથી જણાય છે કે તે રાંચ પ્રમાણે પણ के जानधी प्रस्थने भाक्ष भने के ते विज्ञानसङ्ख्य क के अने ते क्यारे पेहा थाय के है ન્યારે પ્રકૃતિના સત્ત્વગ્રાજમાં રહેલા ધર્માના પ્રસ્થાર્થથી ઉપયોગ થાય ત્યારે. ઐઠલં ખરં ઠે એમાં સ્પષ્ટપછે અહિંસાદિ યેમાને વિવેચન ક્રાેક જ્વાએ આવત નથી. પણ તેને કારણ એ છે કે એ લંધ સિલાન્વનું ત્યાયની પહોંતથી યુક્તિપર:સર પ્રતિપાદન કરવા માટેના છે, નિઃશ્રેયસના માર્ગમાં સસકાર્ય કેવી રીતે પ્રયાસ કરત તે માટેના નથી. તે માટે તેા કાઇ સાંખ્યાચાર્યનાં ચરકાની સેવા જ કરવાની હતી. સાંખ્યાચારીનાં શાં શાં શસ્ત્રોય હતાં તે ભાવવા માટે 'ભાગવવપુરાથ' વગેરે ગાંધોના અલ્યાસ કરવા પહેતા.

તે ઉપરાંત એ પણ વિગાર કરવાના છે કે લા ગાંગ કોઇ હપર કહેલા વિજ્વાના ભવતારરૂપી કપિશુનિના અગર તેના પાતાના શિગ્યના રહેલા નથી. તે પૈકી સાંખ્યાસુના કર્યો કપિશ હેલ્લ તેમ પાત્ર કરવાર વારસ્પરી કરવાર કરવાર કરવાર કરવાર કરવાર કરવાર કરવાર કરવાર કરવાર વારસ્પરી કરવાર કરા કરવાર કરાય કરવાર કરાયા કરવાર કરાયા કરાય કરાય કરાય કરાય કરાય કરવાર કરાય કરાય કરવાર કરવા

१५ टी स्टरेश किरलु हा आर्थ्य १६ व्या स अन्य ४७ मा ३१ १७, अ. चे. १०,१२९ १८ विरूपमार्के मोमस्य वर्षामान्यः प्रतिका । आ. स. अ. ४७ मा ऱ्य.

માવતા 'યો प्रद्याणं निद्यावि वृर्व यो वै वेदांख प्रदिणोति तस्मा' એ મંત્ર ટાંકીને કહે કે 'क्रिकोध्यक' એ પુસાલુ વચન ઉપરથી કપિલ હિસ્ત્યગલ'ના નિર્દેશ ત્યાં કરેશા છે. વળી તે પુસાલુ વચન જેમાં કપિલ લગવાનને વિચ્છુનો અંશ, સર્વસ્નુતાત્મા કપિલાંક સ્વરૂપ ધારલુ કનનાર અને સમસ્ત જ્વાતના હિતને માટે પરમજ્ઞાન કૃત્યુપમાં પ્રવર્તાનનાર, વખેરે તરીકે વર્ણુપ્તા છે તે ટાંકીને લખે છે:—

र्गत परमर्पिः प्रसिद्धः × × × स यब वा कपिङः प्रसिद्धोऽत्रे सृष्टिकाले यो हानै-र्धनंत्रानवेराग्येथवें विक्रांति वकार कावमानं च पश्चेवपश्चवित्वर्षः । १८०

આ પ્રમાણે તે મહીવે સાંખ્યમાત્રીના જ નહીં પરંતુ રોગ્ર માર્ગના પણ પ્રવર્તક હતા, મતરાબ કે, 'સાંખ્યયોગ'ના પ્રવર્તક હતા. તેમતુ રહેલું 'શાંખ્યયોગશાસ' અત્યારે મળી શાકતું નશી પરંતુ 'પાતંજલયોગશાસ' સુખ્યત્વે કરીને તેને જ આધારે સ્થાયેલું છે એમ વાચસ્પતિની ઢીકા ઉપસ્થી જસાય છે.

એ મૃતિ મૃષ્ટિના આદિકાળમાં થઈ ત્રયેલા તેથી ઉપનિષદકાળમાં થઈ ત્રયક્ષા ૠષિએ! તેશે પ્રવર્તાવેદા યેલ્લને 'સાંખ્યયેલા' 'ઋધ્યાત્મયેલા,' વચેરે નામથી ઐલ્લાખતા, શ્રેતા-શ્વાદાપનિયત '૧.૩માં 'ધ્યાનથાત્ર' તે દેવની અત્યાદિવના સાક્ષતકાર કરવાના માધન તરીકે ૧, ૧૩માં તે 'સાંખ્યવીળ 'ને જગતની ઉત્પત્તિન કારણ, નિત્યામાંનિત્ય. ચેતનામાં रेतन, अनेक व्यक्तिकोनी ध्वेक परी करनार हेवन ज्ञान धवाना साधन तरीहे कीलाणा-વેલા છે. અને ૧, ૧૦માં તેના અભિધ્યાન, યોજન અને તત્ત્વભાવને વિધામામાની નિવત્તિ કરવાનાં સાધન જલાવ્યાં છે. ' કંદોપનિયત્'- ૧. ૩. ૧૨.માં તે જ દેવને ચોળખવા માટેના ' ભાષાત્મયોગ ' નામના સાધન તરીકે એાળખાબ્યા છે. 'સુંડકાપનિયત ' ૩ ૨ ૬. માં તેના મુખ્ય લક્ષણ 'સંત્યાસયોગ'ના ઉલ્લેખ છે. 'સંત્યાસયોગ' એ શખ 'સંત્યાસ માતે 'મારા' એ શબ્દોના સમાસથી થયેલા કે અને તેમાં 'સંત્યાસ' એ શબ્દ 'સમત્તા---યાસ: ' (અધી તરકથી ત્યાગ) એટલે કે આદ્રા તેમજ આન્તરત્યાંગ અને વિદેષે કરીને વર્ષાશ્રમ ધર્મ પ્રમાણે કર્તાવ્ય શાસાવિહિત કર્મના ત્યાગ એ અર્થમાં વપસંઘલા જોવામાં આવે છે. આ ઉપરથી જસાય છે કે સાંખ્યયોગ યાને ફાનવાગ તેના અસલ સ્વક્રમમાં મજકર ઉપનિષદ્દેશની રચતા અર્ક તે પહેલાંથી વેદકાળના ત્રાપિસનિષ્યામાં પ્રચલિત હતો અને તેના કપયાગ તત્ત્વત્રાનના સાધન વરીકે થતા હતા. તેને અંગે અહિસા, સત્યભાષા अस्तेय, प्रकाश्य अने अपस्थिद के बसा पणाता होता लोई के. अरख है हहयशदि सिवाय તત્વનાનના હદય થઈ શકે નહીં એ આમતના નિક્ષ્ય થઈ નયેલા હતા. એ હમા પૈકા મહિંસાના સંજન્ધ મન અને શરીર અન્ને સાથે હતા કારણકે મનથી, વાચાર્થી કે કમ'થી ક્રાઈ ઇતિર પ્રાણીને હિંસા કરવાથી મનમાં રાગદેવની વૃદ્ધિ થાય છે અને હિંસા કરીને પ્રાપ્ત રાતા માંસાહારથી સરીરને પાયલ કર્યાંથી મતુષ્ય દેદયમાં પશુના સંદેશની વૃદ્ધિ થાય છે.

૧૯ આ સંગ્ર ૪૭ યા કર–કરા

એ ઉપનિષદો સ્થામાં ત્યાં હગીમાં 'ચોઝ સત્ત 'માં ઉપદા પાંચ યમા પાળવાની આવ સપદતાનુ પ્રતિપાદન કીધેલું છે તેલું નિશ્ચિતપણે અને સર્વમાન્યપણે દેવેલું નહીં હોય એમ જણાય છે. પરંતું સૈત્રાયદ્ભાપનિષદ'ના રાત્ત્ર પાહેકમાં પ્રકૃતિના સ્ત્રોસુણ અને તમારાણોના અભિન્નાવથી જે પરિભાષા છત્રને સહત કરવાં પડે છે તેલું વિવેચન છે; તેમાં સ્ત્રેસુણના અભિન્નાવથી સત્તાં પરિભાષામાં 'હિંસા'ના હત્યોખ છે.રેજ

શ્રીમદ ભાગવદગીતા ' જે કાળે એ સ્થાઈ હતી તે કાળમાં, નાણીતા જ્ઞાન, ઉપાસના અને ક્રમ માર્ગોના સરાત્વર સાધવા સાટે સ્ટાયલી હશે છે સ્પર છે. તેથી તેના ઉપાસના-ષટક પૈકી ૧૦મા અધ્યાયમાં વિભતિયોગ જે ઉપાસનાના એક માર્ગ હતા. તેનું પ્રતિપાદન છે. તેમાં વામકેવ કિવા આદિદેવથી પથક કેટલાક ઉપાસનામાં ઉપકારક ભાવા જજ્ઞાવ્યા છે. તેમાં 'અહિંસા ' આવી ભાષ છે. રેર તેમાં જ ત્રાનઘટક પૈદી ૧૩મા અધ્યાયમાં " ત્રાન "નાં લકાથા ગણવ્યાં છે. તેમાં પછ અહિંસાના સમાવેશ કીધેલા છે.²² તેમાંથી વળી આગળ જતાં ૧૬મા અધ્યાયમાં "અભિનાત" એન્ટ્રી કે ઉત્તમ આમાં ન-મેલા મતમ્યમાં જે રેવી સંપતના વ્યાવિર્સાવ થાય છે તેનાં લક્ષણામાં સત્ય. વ્યક્રીય ઈન્યાદિ સાથે વ્યક્તિમાના ઉલ્લેખ B. રવ Baટે ૧૭મા અધ્યાયમાં સાત્ત્વિક, રાજસિક અને લાયસિક તપ ઉપરાંત શારીરિક વાચિક અને માનસિક તપનાં લક્ષણાનું પ્રતિપાદન છે તે પૈદ્રી શારીરિક તપનાં લક્ષણામાં દેવાદિતાં પજન, શૌચ, આજંવ અને કહ્યાસથે ઉપસંત અહિંસાના ઉલ્લેખ છે. આ ઉપરથી એમ લાગે છે કે અહિંસા ધર્મ તે કાળના ઉપાસના (જેમાં વેદ્ય માણ'ના સમાવેશ થતો હતા) અને જ્ઞાન માર્ગોના અનયાયોએએ સર્વજા સ્વીકાર કરી હીધેસા હતા. ગીતાના કર્મ ષડકમાં 'અહિંસા' શબ્દ જ કાઈ દેકાલે વયસવલા કેખાતા નથી. તે ઉપરથી કમ'માર્ગીએએ તે માન્ય કોંધેલા નહીં એમ માની શકાય. વિશેષ, તેમાં એ કર્મ'યાગતું પ્રતિપાદન છે અને આપી ગીલાના ઉપક્રમ અને ઉપરાંહાર અર્લ્યું નને કર્મમાં પ્રકૃત કરવા પ્રત્યે 💣 છે એ દેખીત છે. તે ઉપરથી અને ને હિંસા કરવી પડે તો તે ને વર્ણાશ્રમ ધર્મથી સમ્મત હોય તા, અહંકારણહિયી નહીં પરંતુ અનિવાર્થ કર્લાવ્ય તરીકે. અને ચાલ્યા અકર્લા છે. ગ્રહ્યોની પ્રવૃત્તિ સ્થાભાવિક રીતે જ રાશે! પ્રત્યે થાય, એમાં કે કર્મ માત્ર પ્રકૃતિના ધર્મ તે, આત્માના અગર પ્રકૃષના નથી. એમ સમજને કરવામાં આવે તા તેથી થતાં વિષરીત પરિણામ ક્ષાેગવવાં પડતાં તથી એ પ્રમાણે ઉપદેશ છે. તે ઉપરથી એમ કલિવ ચાય છે કે બ્યાસમૃતિના અભિપ્રાય એવા હતા કે હિંસામાં દોવતા છે જ પરંતુ જવાતનું તત્વ જ એવા પ્રકારનું છે કે જે સમાજમાં રહીને મહસ્થી છવન ગાળે છે તેને હાથે કેલર્કને કાઈ કારણે થાડે વણે અપ્રે હિંસા થયા વગર રહેવી નથી. તેથી જ તેણે કર્માંથાગના સિલાન્વ પ્રતિપાદન કરીને એટલી મર્યાંદા ખાંધી આપી કે વર્શાદ્રમ ધર્મનું પાલન કરતાં જો તે શઈ જાય તેર તે અનિવાર્ય છે. પરંતુ તે શાય એવા કાર્યમાં પ્રવૃત્ત થતાં વહેલાં આત્માનું સ્વરૂપ એક્કાપીને નિસ્કંકારપોર્ તે કાર્ય કરતું; વળી એને એમ પણ લાગ્યુ છેલું એકએ કે લધા ગૃહસ્થીઓ એવી જ્ઞાન

રત. મે લ 3,4 રય. લ ગી ૧૦૫ રર. વેજ, ૧૩૫, રઢ, તેજ, ૧૬.૨.

ણું હિંકળવીને નિસ્કાંકારમાટું પ્રશ્નુતિમાર છવન ગાળી શકે નહીં તેથી તેશે ખીસે એવો તોડ કાદવી હતો કે તેવા સનુષ્યોભે પાતાનું છવન પરનાતમાને આપીન છે અને તે જ અત્વર્યામી તરીકે ફંદવામાં પ્રેરણા કરે છે તેથી જે કાંઈ કરીએ તે તેની ઉપાસના જ શેં એમ સમછને અત્રર તે પશ્ચ જેનાથી ન અને તેશે ફેકાઈ પશ્ચુ કાર્ય કરીને તેશું ફેળ તેને અપ્રેલુ કરવું એટલે તેના સુભૂતેપથી મનુષ્ય અહિદા રહે છે.

મહાભારત અને સમાચલની સનાવન ધર્મના સાહિત્વમાં ઇવિહાસ છત્થા તથીકે રાજના શાય છે. તે પૈકી ગમાયલ દાશસ્થી ગમસત્કના કાળની સંસ્તરિત અને સહાભારત પાંડવ-કોરવાના તે પછીના કાળની સંસ્કૃતિક ચિત્ર જાહેએ છે હોર્ક હ્યાયા અને કોલીની દર્શિએ મહાભારત વધારે પ્રાચીન છે. પાંડવ-કૌરવોના કાળની સંસ્કૃતિનું ઘડતર ચાજવામાં શ્રી કેપ્ણ અને શ્રી વેક્સ્પાસ (અધાન્તરતમસ, તે વેદકાળના અન્તિમ લાગમાં ઘઈ ગયેલા એક સવિ) એ એએ મુખ્ય ભાગ લજ્જેયાં હતા. તે પૈકી શ્રી કલો પાતાના નિસ્તાશી. સનાતન વર્ષાદામ ધર્મને અનસરીને યાજેશા, જીવનથી કમેંચાળના વ્યાવહારિક સ્વકપત દાયાત પર પાડ્ય હતાં. તેથી તે કાળના ધર્મિષ્ટ અને શિષ્ટ પ્રક્રવા અને સ્થીઓ તેને પર ગ્રહ્મના સાક્ષાત અવતાર તરીકે માનતા હતા અને પાતાની સમાજમાંની સ્થિતિને મધ-ખેસતી આવે તેવી રીતે તેની સલાહને માન આપીને તેણે કર્મપાંચના સિહાન્તને પાતાના છવનમાં ઉતારતા હતા. તેમના કોટમ્બિક અને સામાછક છવનાના વૃત્તાન્તદ્વારા સામાન્ય જનતા, જેને વેકના ગુઢાર્થ સમજાય નહીં તેમના હિતાર્થ, શ્રી વેકબ્યાસે તે ચાંગત શાસ્ત્રીય રીતે પ્રતિપાદન તે કાળના સ્ત્રીપુરુધા સમજી શકે તેવી સાદી અને સરળ ભાષામાં શ્રીમદ-સગવડ ગીતામાં કર્યું હતું અને તેના વ્યવહારમાં કેવી રીતે અમલ થઈ શકે તેના દર્શન્ત રૂપે 'લારત' જેમાં ગીતાના સમાવેશ કર્યો હતા તે સ્વીને તેના પ્રચાર પાતાના શિષ્ય પ્રશિષ્યા હાસ કરાવ્યા હતા એ વ્યાસ એક્ટ્રે અમાન્વરવાસસ ઋડચ્યેકના મન્યદ્રણ પૈક્રી એક છે અને પાંડવેશના પ્રશાહિત ધારમગ્રાધિ, એકથીલા અવલ્લા દેવલા જેતે' નામ શ્રી કચ્છાના ભારતીમાં ગીતામાં આવે છે. રે૪ તેના ભાઈ થતા હતા આર્થી એ સિદ્ધ થાય છે કે વૈદ્રિક કાળના અન્ત અને પૌરાશિકકાળના આરમ્ભની સંધિના કાળ અથવા બીજા શાહોમાં પ્રતિએ તે! હાપર અને કહિલુંગાની સંધિના કાળ તે જ પાંદવ-કારવાના સહતા અને કબ્ય-ભારત અને વેક્સ્યાસ મનિના જવનના કાળ હતા ઉપર કહ્યું તે પ્રસાણ સાંખ્યયોન છે ઘણા પ્રાચીન કાળથી પ્રચલિત હતો અને કર્મચાળના અનુગર્યાઓ વરીકે રાજ જનક વગેરેનાં ક્ષ્રાન્વ^{રપ} અને તેના પ્વે^રવિહાસની ઉપરેખા ગીવામાં આપ્યાં હોવાથી ^{રક} તે પશ वैदिश्शालमां प्रचित्त होवे। कोई को क्षेत्र भानवाने अरुष है. ते पैडी सांभ्ययोश को ત્રેષ્ક્રમાં મા એટલે નિવૃત્તિ માર્ગ હતા અને કમંચાત્ર પ્રવૃત્તિમાત્ર હતા. તેમાંથી પહેલા માર્ગના અનુયાયિએ એટલે કે ગ્રાનીએ અને ઉપાસકા (જેમાં વાગીઓના સમાવેશ થતા

२४. श्रा श्री १०१३. २५. केश. ३२० २६. तेज. ४.१३.

હતો) એ અહિલા ધરાને પાવપાતાના સિલા-તોમાં સમાવી દીધા હતો અને તેતુ કહત્યણે પાલન કરતા હતા અને નિર્ભળ કર્યમાબિએા, એને ગીતામા "અવિપક્ષિતો", "કામ વાકરતો", "કામ ત્યાં હતો અને નિર્ભળ કર્યમાબિએા, એને ગીતામા "અવિપક્ષિતો", "કામ કામો", "વેરે નિશેષણા હગાહીને હતાક તરહના માણેલા છે. તેઓએ તેને માન્ય કોધો. "વેરે કેશી કૃષ્યાના કામ લેથી આ હંકીકત હતી તથીપ કર્યાપી કામેયાઓ સિહાન એમણે પીતે તેને સ્થાપતા હોંધો હતો. તેનો તેને પ્રાનસ્તા કોધો હતો. એમ એ ગીતાના ચોલા અધ્યાયમાં લાયેલું છે તે જ્યારી તથા કી શા કરાવારી હતો. એમ એ ગીતાના ચોલા અધ્યાયમાં લાયેલું છે તે જ્યારી તથા કી શા કરાવારી હતો. તેને અપરથી માર્ગ અપલિત હતા તથા તે પૈકી મહત્વિમાર્ગ, એ કાલકોમ કૃષ્ય કર્યો હતો તે તેને, સમાવાન નારચારો શ્રી કૃષ્યાર્થી અપલિત હતા તથા તે પૈકી મહત્વિમાર્ગ, એ કાલકોમ કૃષ્ય કર્યો હતો તે ઉપરથી લાગે કે કે જ્યાર કહ્યું છે તે પ્રમાણે માર્ગ અપને તામ આ વિવિધ્ધન વાલુ જ્યા હતો કર્યો હતો અપલી માર્ગ હતા કર્યો હતો માર્ગ હતા હતા હતા તે માર્ગ હતા હતા સાથે કર્યો હતો તે અપશ્રી અપલી માર્ગ હતા સાથે કર્યો હતો તે અપશ્રી હતા કર્યો હતા કર્યો હતા અમે તામ હતા સાથે કર્યો હતો તેના અનુવાધિઓમાંથી પણ સચિલ અને તરફ સિલાયના લાગું કેટ કે ક્ષામ કર્યો હતો અપલી અને રહ્યે હીડો એમ આ હતા કર્યો હતા અમે પાળતા હતી. તેની જ અપલયમા પાછળથી અમે પાછી ચાલુ કરી હતો સેમ આ ઉપસ્થી જણા છે.

૪. હિન્દુ, જૈન અને બાહ્ય ધર્મોમાં તેતું સ્થાન

જ્યારે જ્યારે મહાભારત કુઢ પછી કેટલેક કાળે વધુકિયમ વ્યવસ્થા, જે કિવિજન્સ થઈ ગયેલી હતી, તેને મુનઃ સ્થાપિલ કરીને ચત્રવાચાદિ કિયા કરીથી ચાકુ શાય તેની પ્રાપ્તના કરી ત્યારે જેનાના ૨૨ મા લીધે કર અસ્ટિનેમિ જીવતા હતા. તે શ્રીકૃષ્ણના કાક સસુદ વિજયના કુત્ર હતા અને દ્વારકામાં શ્રી કૃષ્ણની દેખરેખ નીચે જ સ્ટ્રીને તે વિશાસ્ત્રાસ

२७ तेल. २.४२-४४, ६२०-२१.

કરતા હતા. તેની ઉંમર વ્યારારે ૧૬ વર્ષની થઈ ત્યારે તેના લક્ષ્મની અવસ્થા તેના કુડુમ્મી-જનાએ કરી હતી. પરંતુ તે પોતાના લક્ષને અંગે પછા હિંસા થયાની છે તે બાણીને ચસુષ્ટ દેશયી પાછા કર્યો હતા અને પછી એક વર્ષ હતો માળીને એવાના એવાને તેણે પ્રતિપત્ત વર્ષાકાર્યો હતો. તે પત્રેમાં હિંહા સર્વેશ વ્યવ્ય હતી. તેની જ હીશ તેણે પાછળથી શક્ય ક્ષત્રીયો તથા વેશોને આપીને નિસૃત્તિ માર્ચની પ્રસ્થાલિકાને વ્યાળળ ચલાની હતી એમ ઉત્તરાધ્યયન સ્ત્ર, હિલ્પેશ-વરિલ, ત્રિયાદી શલાકા પુરુષ્યાદિત એવેર એન શ્રન્સો ઉપસ્થી જણાય છે.

ભાડ ધર્મ પણ ખહાના નિર્વાદ પછી આશરે ૧૦૦ વર્ષ લગી આય'ધર્મમાંના નિવૃત્તિ માર્ગના એકપંચ તરીકે રહ્યો હતા. તેમાં પછ અહિંસાધર્મ ઉપર ખાસ લાર Haqini आवते। देते। अस त्रिपिटक व्यवक क्षाओं क्येर ઉपरथी क्षाय के, परंत तेमां પ્રાથમિત્ર ઉપર દેવા રાખી તેનાં દાજાનું નિવારણ કરવા માટે અનતા ઈલાજ કરવા ઉપર વિશેષ સાર મકેલા છે અને જૈન ધર્મમાં ક્રાઈ પણ છવા પછી સહે તે ગમે તેટલા સલ્મ અને નિરિતિય હોય. જેવા કે માંક્ર અથવા મચ્છર. તેને પણ લાનથી ન મારવા ઉપર વિશેષ ભાર સફેલ્સ છે. આથી અન્તે ધર્મના યતિએના ધર્મો વચ્ચે તેોધવા લાયક ગાતર અસલથી જ છે અને તે એકે કેંદ્ર અન્દ્ર લગ્નવાનના જીવનકાળથી જ બોન્દ્ર ચતિએકને અપ્રક મર્યાંદા સહિત માંસાહાર કરવાની છટ હતી અને તે મર્યાંદા છેવી હવી કે કાઈ બીહ રહિ હાઈ ગઢસ્થીને સાં લિક્ષા માટે હવે તેા તેલે તેને ચ્યાગળથી પાળર ન આપવી કે હંતે માટે તમારે ત્યાં આવવાના છે. તેનું કારણ એ કે અહલાવવાને પાતાના કાળની સમાજક સ્થિતિના વિચાર કરીને એવા તાહ કાહી આપ્યા હતા કે હો કાઈ ચતિને માટે બિક્ષા તૈયાર કરવા માટે જ કોઈ પ્રાહ્મીની હિંસા થઈ ન હોય તે માંસમિત્રિત અલ તેને ત્યાંથી લઈને ખાવામાં કોષ નથી. એથી ભલડ જૈન સાધુએ માટે એટલા કરક નિયમ છે કે કાંદ્રા, લસજ્ઞ, ગાનવ, બટાટા વગેરેના જે સ્સાઈમાં વપરાશ થયા હેલ્ય તેવી સ્સાઇમાંથી आपेशी किसा बर्ध ने ते आरोजनी नहीं. तेटवा क इंटर नियम आक्रक क्षत्रियमांथी यति થયેલા પક્ષ પાળે છે. અને ગૃહસ્થીઓ પૈકી વૈષ્કવો પાળે છે.

૫. સમાર્ અરોાકે તેના કરાવેલા પ્રચાર

એ ગૈતિહાસિક ઘટના લાલીવી છે કે સસાટ અગ્રોકના સેન્ટે કેલિંગ કેશ છતા પછી ત્યાંની વસવી પ્રાથના લાગલા એક લાખ સાલુકોની કરાક કરી નાંખી હતી. એ વાત તેના લાલુવામાં આવી ત્યારે તેને લાલું હૃત્ય થયુ હતું અને છેવટે તેણે નિશ્ચલ કીધા હતો. કે ક્રેમાં પણ પ્રદેશ છતી લેવા માટે હવે પછી સૈન્ય શેકાકલ નહી. તેમ જ તેણે ધાર્માત્રું માત્ર તહી. તેમ જ તેણે ધાર્માત્રું આતા લાકેલ રાત્માં કરવાનો પણ નિશ્ચલ કીધા હતો અને પોલાના અચલકારોને તે આટે સખત લાકેલ આપી હતી એટલ જ નહીં પરંતું લોકાંધાના લાદ્યાં અપ્યોગ્ધાને કેલ્ક છે? સ્વચ્ચો લાગ્યા કરાવી તે ઉપર અને કેલાફે પ્રેમાફે મિલ્લિકનો ઉપરાંત હોલ્લાનો તે સમસ્યાં પ્રથવિત પાલીસાયામાં કોતરાવ્યા હતા. તેમ જ ભારતની ખહારના જે જે દેશા સાથે એને ગજરીય સમ્ખન્ય હેતા તે તે રેગામાં ધરમપ્રચારકા ગ્રેપકાનિ તે સિદ્ધાનોથી હિન્દની હતરે, દક્ષિણ અને પશ્ચિમે આવેલા દેશાની ત્રજાઓને જાણીલા કર્યાં હતા. તેમાંથી સિલાન જેવા દેટલાક દેશના રાજ-છો છે છે હા હા મેરે ગુજરામાં તુરીકે સ્વીકાર્યો હતો. આથી અહિંસા ધર્મ તેના સમયથી ભારતમાં સર્વત્ર અને તેની આસપાસના કેટલાક દેશામાં પળાતા થયા હતા. આ સિવાય જગતના ઇતિહાસમાં પહેલી જ વાર તેણે મનવ્યા તથા પશુચાનાં શારીરિક વ્યાધિયાના ઉપરાર કરવાની સગવડ કરી આપવા માટે ઠેક્કેકાણે દવાખાનાંએ! ખાદયાં હતાં અને તેમાં આયુર્વે દેશાસાથી નિષ્ણાત વૈદ્યોની નિમલંકા કરી હતી. આની અસર એટલી કાયમની થઈ હતી કે એના મરણ પછી એને સામ્રાહ્ય હિત્દમાંના અને હિત્દ બહારના કેટલાક રાજસીએ કીધેલાં આક્રમણેથી તરીને અગધન નાનું રાજ્ય જ આર્યવંશીએ ને કબજે રહ્ય હતું તેં પ્રથ હિત્ક બદારના આક્રમણ કરનારાઓ પૈકી જે કેટલાક ભૅક્ટીઅન ગ્રીક અને શક રાજાઓએ હિનમાંના કેટલાક પ્રાન્તા છતી લઇ ને પાતાનાં સ્વતંત્ર રાજ્ય સ્થાપ્યાં હતાં તે પૈકી કેટલાકે ભીડધર્મના સ્વીધાર કરી અને કેટલાકે ભાગવતઘર્મ સ્વીધારીને તેને સન્યધર્મ તરીકે માન્ય રાખ્યા હતા એટલું જ નહીં પરંતુ તેના ઉત્તર-પૂર્વના કેટલાક દેશામાં ફેલાવા કરવામાં પણ રાજ્ય તરફથી જોઇની મદદ કરી હતી, આ અનાવા ઇસવીસનની યુવે'ના અને પછીના क्री के अतहामां क्रमेखा हता.

કુમારપાળના રાજ્ય શાસનમાં તેના થયેલા સમલ

ધતિ' રાખ્યી વ્યાજના ગારજ નહિં પણ સાચા ત્યાંથી સાધુંએક સમન્યવા. સંપાo

છે^{રે}કે જૈનાના વ્યાદિ વીર્થંકર ગદલસદેવ લગવાન વાસદેવનાે વ્યવસાર હતા. તેને ૧૦૦ છે!કરા હતા. તે પૈકી ભારત જે સૌથી મોટો હતો તેને શારત અને બીજ ૯૯ વચ્ચે કશાવર્ત, ઇશાવર્ત, પ્રહ્માવર્ત, સલચ, કેતુ, શ્વદ્રસેન, ઇન્દ્રસ્યુક, વિદર્શ, અને ફીડક એ પ્રદેશા વહે એ આપી તેમને યથાયોગ્ય ઉપદેશ આપી પાતે પ્રહાવત માં પ્રયાસ કીઇ હતું. ત્યાં રહેતા પ્રદ્રાર્થિ પ્રવરસભાના પ્રભાજનાને ભક્તિ ગ્રાન અને વૈરાગ્યના ગાધ આપીને ત્યાંથી અવધતના વેષમાં મીન ધારણ કરીને આગળ પ્રવાસ કર્યું હતું. જતાં જતાં તેણે ખનેક શહેર, ગ્રામ, વન વબેરમાં વાસ કર્યો હતો અને નાના તરેહના યોગના આગરણથી તેશે કેવલ્યપદ પ્રાપ્ત કર્યું હતું. તેથી તેને અનેક યાત્રસિદ્ધિઓ પ્રાપ્ત થઈ હતી પરંત તેની શકાચર્યા કેર્કા ગડની અસરથી માણસ દેહવાન સુલીને ઉત્મત બનીને શટકતો કરે તેના જેવી હતી. આવી દશામાં તે દક્ષિણ ક્યાંટકના કેંક, વેંક અને ક્રેટક તરીકે એાળખાતા ભાગેલમાં ગયા હતા ત્યાં તે કેટકાચલના ઉપવનમાં મ્હેર્લમાં પશ્ચરા રાખીને ભડકુપા કરતા હતા. તેવામાં તે ઉપયનમાં એક વખતે વાંસના ઝાઢામાંથી અતિશય વેળવાળા પવનથી ઘર્ષણ હતાં હાવાનળ પ્રકટયા હતા અને તેમાં તેનું શરીર લસ્મીભૂત થઈ ગ્રહ હતું, આ પછી એવી ભવિષ્યવાણી છે કે તેના બાદ્યાચરણને ધર્મ સમજીને તે પ્રદેશના अपर्दंत नामने। शब्द तेने। प्रधार इस्टे तेथी हिल्डाणमां वैष्यव्यक्षिनी नाश वर्ध ने पाण द ધર્મ પ્રવર્તશે. ઋપલદેવના ત્યાં ગયાની હંડીક્તમાં તથ્ય દેશ્ય કે ન દેશ્ય તો પણ કશિય કર્ણાટકમાં જૈત ધર્મની શરૂઆત તે કળિકાળમાં ચવાની લવિષ્યવાથી છે. તે ઉપરથી x-પમાં મેકામાં તેની શરૂઆત ઉત્તરમાંથી નાસી આવેલા જેનાના વસવાટથી થઈ દેહય છે આ ઉપરથી શક્ય લાગે છે. એ હઠીકતમાં જ્લાવેલ ગઢાંત નામના સભ વિધે ઐતિહાસિક પ્રાચા મળે છે કે કેમ તે કહી શકાય એમ નથી.

જૈન ધર્મના પશ્ચિ પ્રાપ્તિ (ળહાર સિવાય પાલીવાયા પાસે શર્યું જ્ય, ભૂનાગઢ પાસે ગિરનાર, અને આખુ પર્યંત ઉપર દેશવાઢામાં છે. તેથી સોરસપ્ટ્ર ગુજરાત અને સ્જુપતાનામાં જૈન ધર્મના પ્રત્યાર હમાવું ભિવામાં આવે છે. તેથી સગ્યાત સ્થારથી થઈ હશે તે શાક્ષ્ય કહેતું શય્ય નથી. અલ્વાપ્ત તે લોકોની માન્યતા પ્રસાદ્યે અને છ થી ૧૦ માં દેશમાં સ્થાયલા મન્યા ઉપરથી તો જ્યાય છે કે લીકાયલાદેવ પણ સારપ્ટ્રમાં અભ્યા હતા મન્યે શ્રીસાફિટેનીએ બિરનાર ઉપર વાલ કર્યો અને તે દેશને મોઠ શિયમાં આ હતા પર્યું શ્રીતિહાસિટ દેશિએ ભેતાં વહલ્યીય શર્યો અને તે દેશને મોઠ શિયમાં અર્ધ હતી ત્યારથી તે સારપ્ટ્ર અને ગુજરાતમાં એન પર્યુંના પાર્ચે અને એનોની કારપની વસ્તી હાવી સોઈએ સે શાક્ષ્ય છે. વસ્તુયાળ અને તેજપાળના ભાવાથી તો તેને સન્યાયલ પણ સારો પ્રત્યો હતી. પર હ જૈન ધર્મના સિહાન્તની અરસ્ટ ગુજરાત અને સ્જુપતા તાલ સારા સારો પ્રસ્તા સીદ દીના ફાળમાં સોટલે કે ૧૨–૧૩ માં સેકામાં અન્યુ હતું. તેનું કારયું એ હતે કે તે નાનએ સીદ દીના ફાળમાં એટલે કે ૧૨–૧૩ માં સેકામાં અન્યુ હતું. તેનું કારયું એ હતે કે તે તે તેન

રહ, લા. યુ પ ૪ ૮-૧૯; ૫ પારેલ-૩૫, ક ૧-૧૫.

શ્રીકેમચ શ્રાચાર્યના ગાહ સહવાયાને લીધે જેન ધર્મ સ્વીકાર્યો હતો અને તેની જ સલાહને સાન આપી પોતાના તત્ત્વમાં છવહિંસા થતી અટકાવળ શાટે ચેલ્ય હુંકથા કાઠળ હતા. તે અસર હછ સુધી રહી છે તે એ ઉપસ્થી જણાય છે કે માત્ર શ્રીહ, કોળી, માછી વગેરે હલી વર્ષું વિવાય ગુજરાત અને સારુપૂર્યા સર્વત્ર માંસાહારી હિન્દુંઓ જોવામાં આવતા નથી.

૭, પરરાષ્ટ્ર શાસનમાંથી સુક્રિત મેળવવામાં મહાત્મા ગાંધીએ તેના કરેલા ઉપયોગ

એ હિન્દ્રઓમાં વિવેકાની વર્ણ ફ્રાંતિએ છે તેમાં કેટલાક જૈનધર્મ પાળે છે અને કેટલાક વૈષ્ણવધર્મ યાળે છે અને તેસની વચ્ચે કન્યા વ્યવહાર પણ ચાલુ છે. આવાં છે વશ્ચિક કુડુમ્બ વચ્ચે સૌરાષ્ટ્રમાં લગ્ન સમ્બન્ધ વ્યક્ષયેલા. તેના પરિશ્વામ તરીકે મહાત્મા માંથી તરીકે વિશ્વખ્યાતા પામેલા, માહનદાસ કરસચંદ માંધીના જન્મ થયા હતા. ખાથી એના જન્મથી જ એના મત ઉપર વેખ્સવ તેમજ જૈન ધર્મ પ્રમાણેના આચારની છાપ પડેન્ની. એમના વૈષ્ણવર્ષિતા સીરાષ્ટ્રના એક દેશી સન્યના કારલારી હોવાથી પૈસે ૮કે મુખી હતા. તેથી મોહનદાસ નાની ઉમરમાં જ વિદ્યારમાસ સાટે ઇંગ્લાંડ જઈ શક્યા હતા. ત્યાં રહ્માથી પાર્સ્થાત્ય સંસ્કૃતિના પાસ એમને શરૂઆતમાં શેહેર ઘણા તો લાગ્યા જ હેતા પરતુ હોડે તે સ્વતન્ત્ર દેશના વાતાવરણમાં રહ્યાથી એમના હૃદયમાં સ્વમાન અને સ્વદેશાલિમાનની વૃત્તિએ။ પણ લાગૃત થઈ હતી. તેથી ત્યારે એ ઇંગ્લાંડથી પાછા કર્યા ત્યારથી જ અની શકે લેટલી દેશની સેવા કરવાની એને ઉમેહ હવી. આથી ઍરિસ્ટર તરીકેના ધધા કરવા માટે દક્ષિણ અવાસિંદ ગયા પછી ચેહા જ વખતમાં તે દેશમાં વસતા હિન્કીએાને યુરાપીઅના પાતાનાથી હલકી જાતિના ગણીને તેમનું સ્વમાન ઘવાય એવી તેમની પ્રત્યે વર્તાક્ષક ચલાવતા એઈને એમણે તેમને કેઇ પણ સુધરેલા દેશના નાગરિકને દ્વાના ત્વેઈ એ તેવા હક્ક અપાવના સાટેની શક્ત ચલાવવાનું બીઠું તેથે ઝઠપ્યું હતું અતે તે ઉપાહી હતી. તે માટે જે રીત એમણે સ્વીકારી હતી તેનું મુખ્ય લક્ષણ અહિંસકવર્તન હતું. એટલે કે એમણે ઉભા કરેલા સ્વયંસેવક દળના સભ્યાને એમણે સમજની કીધુ હતું કે આપણે યુરોપીઅના સામે અળજબરીથી કૂલી શકીએ તેડલું આપણી ધારો સાધત નથી તથાપિતે કારણે લહત ન ઉપાહની એ પણ ઠીક નથી સાટે આપણે સારા મા કર્યા સિવાય પરંત નિશ્ચયપૂર્વ'ક તેમના અન્યાચીપણા સામે અંડ ઉઠાવવું અને તેને લીધે જે દુઃખ સહન કરવાં પઢે તે મૂંગે મોટે સહન કરી લેવાં. પરંત કાયર થઈને લડત છેડી દેવી નહીં. તે પ્રસાણે ૧-૭ વર્ષ લડત ચલાવીને તેણે જનરક સ્મૃદ્ધનો સરકાર પાસેથી ત્યાંના નાગરિકાને કેટલાક માનવવ્યતિના હસ્કો ચાપવાના કરાર કરાવ્યા હતા. મને તેને અનુસરીને પછી ત્યાંની સરકારે કાયદામાં ચ્રાત્ર્ય સુધારા કર્યા હતા. તે સને ૧૯૧૪ માં કર્યા પછી તે ઇગ્લાંડ ગયા હતા ને ત્યાં રહેતા હતા, તેવામાં પ્રથમ વિશ્વ વિગ્રહ શરૂ ઘયો. હતો. તેમા મદદ કરવા માટે હિન્દી સ્વયસેવકોનું દળ ઉદ્યું કરવાની તેણે તૈયારી કરવા માહી હતી. પરંતુ કેટલાક સલાહકારોની સલાહને માન્ય સખી તે સને ૧૯૧૫માં હિન્દમાં

આવીને વસ્યા હતા અને તે કાળની હિન્દની સજકીય પરિસ્થિતિના ખરાબર અભ્યાસ કરી અમદાવાદમાં સત્યાગહાગ્રમ કાઢી સત્યાગઢીઓની એક ડુકરી તૈયાર કીધી હતી. તેને પ્રસંગ આવતાં ભારહાતી, ચ'પારશ્ય વગેરે સ્થળે ઉપયોગમાં આહી તેથે ખાત્રી કરી લીધી હતી કે હિન્દની બ્રિટિશ સરકાર સામે માશ ઉચકવાનો પ્રસંગ આવે તો તે ઉપયોગી થઈ પઠે એમ છે. છેવટે સને ૧૯૧૯ની સાલમાં વિશ્વયુદ્ધનો અંત માન્યા પછી તેમાં ભાગ હૈનારા કેટલાક પત્નાથી યુવાના ઉપર જલીયાંવાળા થાગ અમતસરમાં, એક ક્ષરકરી હકડીએ દરવાલા ગયા કરી ગાળીવાર કરી અનેકના લાન લીધા હતા તે ઉપરથી मेना फ्रिटिश सरक्षरना न्यसीपमा विधेना विधास उडी गया हता तेथी तेले दिन्ता મહામલામાં કરાવ પસાર કરાવીને સત્યાગઢની લડત ચેરકાયદે મીઠ પકવવા માટે અમારાવાદથી દાંડી સુધી પગપાળા પાતાની ડુકઠી સાથે કુચ શરૂ કરી હેતી ત્યારથી તે સને ૧૯૪૨ મુધી એવા અનેક પ્રસંગ અન્યા હતા. કે જે વખતે તેને અમેજ સરકાર સામે હડાં પડ્ય હતાં અને તેમાં દેશમાંના અનેક સ્કીપ્રરૂપોએ તેને મદદ આપી હતી અને અનેક દુઃખ સહન કર્યા હતાં. છેવડે અને ૧૯૪૨ થી ૧૯૪૪–૪૫ મુધી કારાવાસની યાતના સહન કરી હતી અને તેને અતે હિન્દને સ્વાતન્ગ્ય ગાપવાનું વચન મેળન્યુ હતું વને એમણે ધાર્યા પ્રમાણે સમસ્ત બ્રિટિશ હિન્દની રાજ્યસત્તા તેં! જે કે મહાસભાના કાર્યકર્તાઓના ઢાથમાં સાંખવી શક્યા નહેતા તેમજ તેને વદ્યા માટા લાગ સોંપાવી શક્રમાં હતા. આ ક્ષેષ્ટ પરિષ્ઠામ મેળવવામાં ખેમની અહિંસક લઠત લઠવાની નીતિ માટે લાગે મહતરમ થઈ હતો. આ પ્રમાણે અહિંસાધર્મ જેના ગારબથી તે એમના કાળ સુધી આધ્યાત્મિક ઉદ્યાંતિ મેળવવામાં માત્ર વ્યક્તિગત અને સામાછક છવનમાં સુધારા કરવામાં ઉપયોગ થતો હતો, જેના સામાન્ય સમૂહમાં પ્રચાર અશોક અને કુમારપાળ જેવા શાન્યસત્તાના ઉપયોગ કરીને કરી શક્યા હતા તેના ઉપયોગ એમણે પાતાના આધ્યાત્મિક ણળને આધારે જનસમૂહ ઉપર એક મહાન કામુ મેળવી એક મહાન પરદીય રાષ્ટ્રના પ્રતિનિધિએ સાથે ગડ ઉઠાવવામાં કર્યો હતા. તેવી આન્તરરાષ્ટ્રીય અગ્નર એ ઘર્ષ છે કે તે ધારણ ઉપર રાજકીય લઠત વણા દેશામાં થઈ ગાઈ છે અને હજી પણ થાય છે. આ પ્રમાણે એમણે અહિંસા ધર્મના ઉપયોગ એક સંષ્ટ્રની પરક્રીયરાષ્ટ્ર સાયેની રાજકીય લઢતના શ્રેત્રમાં કરીને તેનું ક્ષેત્ર વિશાળ અનાવ્ય હતાં.

૮. આધુનિક સંસ્કૃતિમાં લેવું સ્થાન

સને ૧૯૭૯ થી ૧૯૪૫ સુધી બીલા વિશ્વકુર્તને લીધે યુરેપ, ગેશિયા અને આફ્રિકામાંના કેટલાક કેશાનાં ગેટલી ચેઠી મહુષ્યત્વી રાંખ્યા અને ગેટલી વ્યવહારેપણેની સામગંતિ નાશ થયા હતા અને વિશેષ કરીને લાયખાંના હિરોહિમા અને નાગાસીક શહેરો ઉપર વ્યવિભ લસ્ટરે મ્લ્યુલેલ્ય નાંખ્યા હતા તેને લીધે એટલું તાહ્યલિક તુરકામ તે શહેરોની નિર્દેષ વસ્તીને પણ થયું હતું અને તેના રેશીન-એક્ટીન ત્રિયેશની વસર એટલી ગિસ્સ્થાયી નિર્દેશ કે તૈયી આપ્યા નગતમાં લોકમત બંધાઈ ગયા છે કે ક્રેઈ થયુ છે રાષ્ટ્ર વચ્ચે ક્રેઇ થયુ કારણે ૮ ટે. હશે થયા તો તેના નિકાલ સુદ્ધ કર્યાથી નહીં, પરંતુ લખે ત્યાં સુધી પ્રતિનિધિઓ મારસ્તે વાડાયાડ કરીને અને તેમાં સફળતા ન માંગે તો ક્રેઇઈ તડરજ રાષ્ટ્રની મચ્ચરાયી કરી એક એ અને એક્ટો અપાય અને ૯ક છે કે તેની અતર સુધરેલા બ્વરિયત રાખ્યોના મરસાર કરનારા સત્તાલુકા મંડેશ અને અક્કિએ હપર થયુ થયે. છે તેને હોયે અમેરિકામાં તેનાં લખવાલા પય—દ- રાષ્ટ્રોની સત્યાલ તરફથી એક સચુક્ત પ્રષ્ટુંની સત્યા (યુનાઈ ટેક નેશન્સ એક એક એને પ્રાપ્તાના નિફાદમાર્પ્રતિનિધિ માર્થર એને રાષ્ટ્રની સરકાર સલ્ય તરીકે અનેક્રિયા) ઉચી કરનામાં આવી છે. અને તેમાં એક શરતો એને છે જે માર્પ્યુની સરકાર સલ્ય તરીકે અનેક્રિયા છે કે જે પ્રાપ્તા માર્પ્ય સરકાર સહી કરના પડે છે કે જેમાં એક શરત એનો છે કે અમાર્ માર્પ્ય માર્પ્ય પડે છે કે જેમાં એક શરત એનો છે કે અમાર્ માર્પ્ય વર્ષા સર્ધા સ્પાપ્તા માર્પ્ય તે તે કોઈ તરકાયમાપ્યુના પ્રતિનિધિને મધ્યમા લખતા સુધી વાડાયાડથે અને તમાં સફળતા ન મળે તો કોઈ તરકાયમાપ્યુના પ્રતિનિધિને મધ્યમા ચરાય કરશે અને તેમાં સફળતા ન મળે તો કોઈ તરકાયમાપ્યુના પ્રતિનિધિને મધ્યમા ચરાય અરકે સ્પાપ્તા સ્થાપ્તા તે મળે તો સ્ટેઇ સ્ટેડ સ્થાને તેનો નિકાલ કહી આપના ચરાય કરશે. કરશે સરકાર સરકાર સરકાર તેની કરાય સરકાર તેની કરશે સરકાર સરકાર સરકાર સરકાર સરકાર સરકાર સરકાર તેની કરાય સરકાર સરકાર

સ્પાને લીધે ભૂનાં નાનાં રાષ્ટ્રો વ^{ચ્ચે} સ્વતન્ત્રપણે સુહો થતાં તો લગલગ અટકી જ મમાં છે એમ કહીએ તો કાંઇ બોર્ડ નથી. પરત ૧૬ માથી ૧૯ મા સૈકા લગીમાં જે જે રાષ્ટ્રાપીયન રાષ્ટ્રોએ એક્ષિયા અને આસ્ક્રિકાના કેટલાક દેશામાં ત્યાંના લોકોને કળાવીને અગર કાસલાવીને પાતાની રાજ્યસત્તા જમાવી હતી તેમની સાથે એવા કાઈ દેશના સસ્ટીયપક્ષને જ્યારે તકરાર પડે છે ત્યારે સુદ્ધ ચવાના પ્રસાચ ઉભા નથી થતા એમ નથી. તેમ એવા કાઈસ્થાનિક પક્ષને <u>યુદ્ધ શરૂ</u> કરવામાં તથા તે ગાલ રાખવામાં માઢી પાલ્ધાત્ય રાષ્ટ્રી શસારજામ, નેતાગિરિ વગેરે પ્રસ પાડવારૂપી મદદ નથી કરતા એમ પણ નથી. ત્રીજું, આજે જગતમાંના બે મહાભળવાન સખ્ટેં, અમેરિકાના સંગ્રુક્ત રખ્ટેં અને રૂસની નેતાગિરિ નીચેના રાષ્ટ્રસમહ, હુછ એ સાન્યતાને વળગી સ્ત્રાં છે કે વિશ્વયુદ્ધ કાઢી નીઠળત અટકાવવાના એ જ રસ્તો છે કે તેવું મુદ્ધ સામા પક્ષ કરવા માટે કેટલી તૈયારી કરે છે તે ભાગતમાં તકેકારી રાખ્યા કરવી અને તેને પ્રસાગ આવતાં કાળી કઈ શકાય તેટલી લક્ષ્મરી. નીકા અને હવાઈકબાની તૈયારી પોતે ગામવી. આથી તેમની વચ્ચે લસ્કરા તૈયાર કરવાની અને તેમને માટે શસ્ત્રસામગ્રી તૈયાર કરવાની ક્રોસાતોશી ચાલી રહી કે અને વખતોવખત ઘરકાઘરકી થયા કરે છે. વળી હાલ એકાદમાસથી કેરિયમનાં સુદ્ધ બધ કરાવવા માટે સગ્રુકતા અમેરિકન રાજ્યોના પ્રમુખે નવી નીતિ અખત્યાર કરી છે. તેથી ચેશિઆમાં વિધ્યુદ્ધ ફાટી નીકળવાના સભવ વધ્યા છે –ચાય, છેલ્લામ છેલ્લું છ. ૨૨ કેપુઆરી ૧૯૫૩ ને દિવસે સર એલેક્ઝાન્ડર કલટરવાકે નવી દિલ્હીમાં આવેલી ઈન્ટરનેશનશ લાં એસોસીએશનના વાર્ષિ'ક મેળાવતામાં ભાષણ કરવી વખતે કહ્યું હતું કે જે આપણને કાઈ પુછે કે તમે કેવી દુનિઆમાં વસવાનુ પસંદ કરો તો આપણે સૌથી પહેલું એમ જ કહીએ કે જેમાં લળ અત્રર સત્તાને અદલે ધર્મનું રાજ્ય ચાલતું દેશય તેવી જ દનિયા આપણને પસંદ પદે. એવાં લાયદ્રો તો અવારતવાર થયુ જ કરે છે. પરંતુ વૈમનસ્થતાં કારણે, જેનાં કે હ્રિણ આદિકારની સરકારની ઐપરિપાની નીતિ, હજ જેમના તેમ છે. તેમને નાબુદ કરવા માટે સરકારની સફાય પગલાં લેવાનાં નથી અને કાઈ પણ મુખ્ય તે સફાય પાતાની સ્વાત વાત આવેલા કાર્ય પણ અંદ રાયાના સફાય પાતાની સ્વાત વાત આવેલા અને કાઈ પણ મુખ્ય તે સફાય પાતાની સફાય એમ એક કે કરેક સત્તાપારીને એમ લાવે છે કે દે જીવનમાં અહિં સા પાત્રી સાથ્ય એમ છે કે દરેક સત્તાપારીને એમ લાવે છે કે દે જીવનમાં તેને કાયમનું સ્થાત નહીં આપવારી એમ છે કે દરેક સત્તાપારીને એમ લાવે છે કે દે જીવનમાં તેને કાયમનું સ્થાત નહીં આપવારી અમે છે કે દરેક સત્તાપારીને એમ લાવે છે કે દે જીવનમાં તેને કાયમનું સ્થાત નહીં આપવારી માને પાત્રી તે ખરૂર સેહ, વહેલું પણ ત્રીલું વિધારની સફાય અને તે ઘરો તે ખરૂર સહય નહીં આપવારી અને સત્તા ઉપર વિવાસ રાખનાર સફાય જેવા કરતી પાત્રી પાત્રી સાથ્ય હતા સફાતિની સ્થાપાય કરતી સાથ્ય લાખ્ય જ હતું કે આધાર્તિમાં લત્યો પાત્ર સ્થાય હતા સફાતિની સ્થાપાય કરતી સાથ્ય અમારે અસ્ત છે તેના કરતાં ત્રીલા લાખતી જ અવશિષ્ઠ સંદેશે. હજી તો આપા પ્રજન્મ કરે છે, તેમાંથે કરતો કરતો નીલા લાખતી જ અવશિષ્ઠ સંદેશે. હજી તો આપાય વિધ્ય અથે ઉપર છે, તેની વાતિ કર્શક કરતી નીલા કરતી સફાત નથી, શું થાય છે તે કાળે જીવને એશે અને તે પછીના જ ખાનામાં માલુશે તેના ઇતિહારથી લાણ્યો. લાણ છે તે કાળે છતારે એશે અને તે પછીના જ ખાનામાં માલુશે તેના ઇતિહારથી લાણ્યો. લાણ છે તે કાળે છતારે તેને તે પછીના જ ખાનામાં માલુશે તેના ઇતિહારથી લાણ્યો.



મખતા વિરુ-મૂખ શાકિની, નિર્મખતા સુખ મુણ મખતા શિવ-મતિકૃત હૈ, નિર્મખતા અનુકૃત મખતા-વિષ મૂકિત લધે, અંતરેય શુધુ-દુંક; જો ભાગ-નિરાગતો, લખત અમૃતકે શુંક ક ક માટે નિજ લાળા સિલિત, શુષ્ક હાઠ નહેં થા, તેરે રાથે વિષયો, જદ નિજ રૂચિ અનુઆત. સ્થતાલન) • [દવા શાયોલબ્લ્ય્સ્ટ

[•] ગ્રોલ્ટ ગોપીઝએ રસ્ત્ર પૈતાની વ્યક્તિ આવે પાર્વિક પ્રેટિની નહીં પણ સ્વત્રમાં પ્રેટિનો કહી છે, એટલે કપ્તરી હકીલ એ વ્યક્તિયાં આવેલાં અને તેમની સમ્વત્રમાં પ્રાંકિત એ વ્યક્તિયાં પર ફેવાઈ માને તેમની સમ્વત્રમાં પ્રાંકિત એક પ્રાંકિત સ્વાર્ટિક લોક પાકિન્ટેશન શ્રાન્ટ માં પ્રાંકિત સ્વાર્ટિક સ્વાર્ટિક

જ્ઞાનદૃષ્ટિ અને માહદૃષ્ટિ

મેતન ? માનકી દૃષ્ટિ નિહાલા. મેતન !
માહકિક કેમ સા આઉંગે, હોત મહામતવાલા. મેતન—!
માહ-દૃષ્ટિ અતિ મધ્ય કરાહે, લાવ લાવ વાનર ચાલા,
માગ-વિચાગ શવાનક લાગત, પાવત નાહિ વિચાલા. મેતન—!
માહકિક કામરુનર કર્યો, કરે અકારન કામ,
રુન મેકાન લેરે નહીં અસ્તિ;, સુરેલી જિઉ પાલા. ચેતન—3
માહકિક જન જનકે પરસા, હીન અનાચ દુષ્પાલા,
માગે લીખ ફિર પરિવાસિક, કહેં 'સુષ્ફ' 'કેઇ પાલા. ચેતન—8
માહકિક મક-મસિ માતી, તાકે હોત ઉપયો,
પર-અવગુન રાવે સો અહનિકિ, કામ અદ્યવિ કર્યો કરી. ચેતન—પ
માતકિકમાં કામ ન એતે, કહેંદ માન અલ્લુઆલી,
સ્લિકાન્ડ લગ 'સુષ્ક્ય' વચન રહે સમ્લખ હાય પ્રપાલી. ચેતન—ને

પૂ, ઉ. શ્રીયશાવિજય ગુરુમંદિર પ્રતિષ્ઠા ^{અરુ}

'શ્રીમદ્ યશાવિજયસારસ્વતસત્ર'ના હેવાલ

હવે અહીં થી જે હેવાલ કે હતીકતો પ્રયત્મ થય છે, તે ઉલાયકાર્યકું' બીજ ક્યાં ક્યારે રેમાયાં, તે અંગે શું શું પ્રયુત્તિઓ સંએકી, અને શે વસ્તને અગે તેલું કેલું 'ફળ આવાં, તેનો સળખે હોગ્રાહ્ય પ્રયત્ન અને બીજી વખતે આવી તે કહીકતો જે લક્ષ્ય જ સરળાવી કોઈ પણ ઉજ્યલ્લો કરવી હોય ત્યારે, આવી રોધો તે હહીકતો જે જ જ સરળાવી ઉપયોગમાં લક્ષ્ય ક્ષ્યાન વળી આવા કંતિકાશ અભ્યન્ય થય તો લકાતે ચારે સચ્ચામાં રહે. જાણકાર અને નહીં આવકાર બનેને એક જ સ્થળે જે પૂર્વ સળગ્ય સામગ્રી અલુવાની મલી જાય. આવી અનેક સ્મજનોની વિન તિથી આપો હેવાલ અહીં રજૂ કરવામાં આવે છે. આ દ્યાલની એક્કી વર્ષી હોઈનો ફળાઈ અનેક સ્થળના લક્કી લક્ષા સ્થાનોના પ્રયોગ્ધ પ્રયત્ન હાલનપર, વડાણ વગેરે અનેક સ્થળના લક્કી લક્ષા સામગ્યોના પ્રયોગ્ધ પ્રયત્ન હવી. એમાં ખાસ કરીને સહુથી વધુ સ્માહેલી લક્ષાના અને પ્રયત્ન પ્રયાભ હવી હકી લક્ષાના સ્માર્થન પ્રયાભ હવી હકી લક્ષા લાયાઓના પ્રયોગ્ધ પ્રયત્ન હથી હવી. એમાં ખાસ કરીને સહુથી વધુ સ્માહેલી લક્ષાના તેના હવાનો પ્રયત્ન પ્રયત્ન સ્માર્થના સ્માર્થન સુખ સુખી હકી સ્માર્થના પ્રયત્ન કરી છે.

સંપાદકઃ—નાગકુમાર ના. મકાતી જસુસાઇ મ. જૈન યત્રીઓ, સૂતપુર્વ સત્રસમિતિ વડોદરા તોધા — મું ઉપાધ્યાયછ મહારાત્ર ચીમદ્દ ૧૦૦૮ વરેશિવિશ્યાછ મધારાતના ગુરુપેરિયો છણીં ફાર કરવાના પાત્રી મુંભાંમાં રીખાયે, ગીકાંદર કહીંગે ડો. છે કંઇ બન્યું હતો ભૂમિકા ગુંબાં વચરમાં જ સ્થાઈ હતો. ગ્રે ભૂમિકા કેવી. રીટે. દીવાર ચેઇ હતો, તેનો ત્રાનુ માટે તે વખતે બાદાર પહેલ શાહિતનો અત્રે રહ્યુ કરીએ છીએ.

પરમપ્રભાવકર્યભેગોપાર્યનાથાય નગ: > તીર્યપ્તરમગ્રીઆદીધરાય નગ: જૈન શાસનના મહાન ભ્યોતિર્ધર, સક્કારાએ પારંગત મહોપાંધ્યાય ૧૦૦૮

શ્રીમદ્ યશાવિજયજ મહારાજના

—ગુણાતુવાદ મહોત્સવ— [તિથિ-માધ્યાર સંદિ ૧૦-૧૧, તારીખ ૧૯-૨૦ સ્વળ-ભાયખલા]

વિતિ સાથે જહાવવાનું કે જેન્સાસનના પરચવામાલ, તેરેકોર સચીના રિયતા, માસામારહુ દાર્ચનિક વિદાન, પાર્ટ્સના સમન્વસામાલ, ન્યાય, સાહિત, છેર, અર કાર, અપ્યારન, યોગ, આત્માર, ત્યાન, લક્લિયોન, કર્યોસ, સાન્યોમ, સાર્દાસનો પ્રતૃ સ્વતન અને માર્યતન, પ્રમાણ—નવાદ ઇનાદિ અનેકલિ વિવેશ હવા સફત, શાનુ લાલમાં, વિગ્રુસ સાહિત માર્યતન, પ્રમાણ—નવાદ ઇનાદિ અનેકલિ વિવેશ હવા સફત, શાનું લાલમાં, વિગ્રુસ સાહિત માર્યતા કેશ જ વિચોને તકાલીન લેકાલાયમાં હતાદીને સુધ કાલ્યોની હારમાં પર્ય સ્વર્ધ પૂર્ણમાં કરી જળાર, પરંત્ર પૂશા સ્વર્ધિક સાહિત નાયાવિદાદ ત્યામાત્રમાં 'સાફેપાય્યાય ૧૦૦૮ બીમક પરીક્ષિતભ્યાછ સાફારાજ સાફિપ્તનો પુત્રાનુવાદ સહિતમાં 'પૃત્યપાદ પરંત્ર હારાક સ્વર્ધાયાય ૧૦૮ બી વિજય પ્રતાપસ્તિ વેશન્ટ માફારાજ તથા પરમયુન્ય સાકિત્યરિક પ્રતિતા શ્રી પ્રયોદિત્યવ્યા સાફારાજી તાલમાં સામ્યા પ્રમાણ સ્વર્ધ ક્ષ્માં સ્વર્ધ કર્યાયા પરંત્ર પ્રતિકાર્ય કર્યાયા પરમાના સાકિત્યરિક પ્રતિતા શ્રી પ્રયોદી વિજયા સાફારાહાદી પ્રવાદમાં સાહત્ય સ્વર્ધ કરવાયા માર્ચ કે

— કાર્ય⁸કરા —

માગરાર સુદ્રિ બીજી કરાય, મંગળવાર તા. ૧૯–૧૨–૫૦

સવારના ૯ થી ૧ભા : સંગીતમાં મંગલગારણ તથા તેમાંથીના છવન કપર સુદ્ધ સુદ્ધ નિર્દાન વકતામાનું ગુણકાર્યન.

» વ્યક્તિ મે વાત્રે ચોંઘર સ્ક્રેલિવ્યાછ પ્રકારત કૃત નવપંડછની મૃત્ય (ત્રેતીસા જૈન પાર્કપાલ) રેક શ્રીતિકર દાયછ ધારતી તથા ત્રેતતાલ દરમેવિક્ટસ તથા થી જાણ સાલકી એન્ડ સન્ય તરફથી વધા દાધ્યાંથી લાગ્રાન્થાયા ચાનડો.

રાતના છા વારે : ઉત્તાપાલથી રિસ્પિત 'સાહિત' પ્રદર્શન' તથા વેગાથીની લગ્ય છતી તથા વેગામીના વિલ્લિજીનન પ્રદાસોના ગ્યામ'ક વિરો ભારત વેગાયીની જ બનાવેલાં તેમારેના પોતુ થી. નાતુલાઈની ચંચી તથા રેઠ ગેતરીયા ત્રેન પાદેશાળાના પાળીક 'સાર્ચિ લાગાસ્યું' કેણે અને વેગોપીના નામની ધૂંબ નાયાયો અને બન્દેનીનો ચાળાને કાર્ય'કા

માગસર સાંદિ ૧૧. ને છાવવાર તા. ૨૦-૨૨- ૫૦

સવારના કથી ૧૧: સગીતર્મા મગલાગરણ ૫૦ મહારાજ્યીન 'સજસવેલી ભાસ'ન विवेधन साथे वायन तथा पत्न्य अडेदेवे। तथा अन्य वस्ताक्रेः तेमना अवन अने इवन स्पर विवेचन क्षत्रे अन्य अक्रवीते। साग्ने विदायशीत

વાગે : વાટકપરના આત્માન દ જૈન મ કળનું 'સત્રિ જણસ્યા ' અને તેઓથીના गतना १९११ નામની ધન

તા આપણા ગાસનના એ ગઢાન ઉપકાસ સદધક્રેલની કલ્યાજકારી ઉજવણીમાં દરેક હૈત मार्थ के करेतीले अध्यक्ष दावरों आपवा आव्यदक्षरी खगारी विनति है

લિ મેવો! -- કેતેહર્સ સ્વેરસાઇ વીરચંદ નાગછ, દીપચંદ મચનલાલ શાહ

श्रीक्षीत्र । अष्यानुबाद समिति ૯ મંત્રીઓ, શ્રી ભારતીય જૈત સ્વય'સેવક **२** ६४.८ वर्षकान शह પરિષક

ત્રનમાર્ધ સવાળચંદ કાપડીઆ दीपयह अभनवास कार गुम्भावास सक्रमधास

૧૦ સખ્ય મંત્રો, શ્રી સંબર્ધ જૈન સ્વયંસેવક ૧ માંત્રીઓ. શ્રી યક્ષાવિજયજ જૈન સરકળ अ,१६० ખાહ્ય ક છે. દેશી, સલીદાસ દરજીવન વીરચંદ નાચછલાઈ. યનસખવાલ ર મ'ત્રીએર, મહેવા વસાવૃદ્ધિ જૈન બાલાશ્રમ हेसब ६ दीससास भीभय इ

ચીનલાઈ લાલબાઇ રેઠ, જાઇચક નગીનભાઈ હવેરી, ધીરુજશાલ છવાલુલાલ ૧૧ મ ત્રીઓ, જેન શિક્ષણ સંઘ માહનલાવ હી ચાહસી. વાડીશાસ ध्ययह मालेक्ष्यह शाह

रेक्स्सी, अन्तिश्रस अभ्यक्षस बाद 3 મંત્રીએ: એ સિહ્સેલ જૈન ખાલાક્ષમ ૧૨ યત્રીઓ. આત્માન દ જૈન સભા शांतिक्षात जेन शह. वडवरवाब

તેમચદ શક ભીખાલાલ કપસ્ચ ક સાલ*દી* મ'ત્રીએા. શ્રી કેસરીયાછ જૈન સુરકળ ૧૩ મંત્રી, ભાયખલા શેઠ માતીશા જૈન મીબાસવાદ લોક્ચદ દેશી યા કેશાળા મળત્રચંદ્ર કેશવલાલ મોદી श्रातिसाथ समनसास श्राद

પ મંત્રીઓ, જૈન શ્વે૦ એન્યકેશન ધાર્ટ 1૪ સંત્રો. અયોધ્વાતીથી છશી હાર કસીડી મશ્ચિલાલ માહનવાલ પાદરાકર અને સાળવા સેવાડ છક્કોલારકસીડી भग्रणहास सस्त्रमाह अंतिवास क्षेत्र मसी, दकारी सन शक्षा मध द ચ દલાલ વંત્રીનદાસ ભાખરીઆ ૧૫ શ્રી ચેડીજી જૈન મિત્રમંડળ

દ મ'ત્રીએા. શ્રી અધ્યાત્મ જ્ઞાનપ્રસારક મ'ડળ **કાલીદાસ હરજીવન, મહિલાલ દલ**ભાજી श्रतिसास भगनवात बाद ૧૬ મંત્રીએ શ્રી યેવારી વીશાશ્રીમાલી ઉપયંદ પત્રાસાંસ ભાદસાંમી માતિ

૭ મત્રીએ શ્રી વીસ્તત્વ પ્રકાશક ગ્રવીજાગ કમાણેક્ચદ, રાયગ દમમનલાલ <mark>ક</mark> દીમલાલ મળાચદ શાદ ૧૭ મંત્રીએક શ્રી ધાઘારી જૈન મિત્રમંડળ ૮ મુખ્ય મત્રી, શ્રી ગાહનલાલછ જૈન સે૦ ય મળકાસ લલ્લમાર્ક વડીમાળી साधवेजी

૧૮ મંત્રી, શ્રી ગાહીજી ગાનસમિતિ માહનવાલ દીપગદ ચાંક્સી માહતાલ સલાભગાદ હવેરી 11. 6-92-40

नेरंध-'केन' पत्रकां बुख्यतुत्राह केसच अन्यत्र कियाय, ते काटे करेबी विनंतिने। क्तारे।

સ્વ∘ ઉપાધ્યાય શ્રીમદ્ યશોવિજય મહારાજનો " ગુણાનુવાદ મહોત્સવ " ઉજવવા

-લાહેર વિનંતિ-

પ્યાપ સાસનમસાયક, ખાત લાકિક, પરંપ અધ્યાપથી-વાયવેલા, જેને શાસન અને તેની દાર્દાનિક વિદાન, લાકરણ, ત્યાર, સાસિન લધા કર્મનાં આવ્યાં વિદાન હાલકરણ, ત્યાર, સાસિન લધા કર્મનાં સાસે તેના આપણે વિદ્યુલ લાકરણ, ત્યાર, સાસિન લધા કર્મનાં સાસે તેના તથા સંવધન હાલાં વિદ્યુલ લાકરણ, ત્યાર, ત્યાર સ્વાપ્ત કર્મનાં, ત્યાર તેના વર્ષાને સામે ત્યાર સામિત વર્ષા વિદાન સામે ત્યાર તેના વર્ષાને અને સામે સામાં વર્ષાને વર્ષાને લાધા લાધા ત્યાર કર્મનાં સામાં ત્યાર સામાં ત્યાર સામે વર્ષાને વર્ષાને લાધા સામે ત્યાર સામે ત્યાર સામે ત્યાર સામાં આ અને સામે લિકાન અને અવિદાનને લાગ સામે ત્યાર સામે ત્યાર તેના સામા ભાગ ત્યાર સામે ત્યાર સામે ત્યાર સામે ત્યાર સામે ત્યાર સામે ત્યાર સામે ત્યાર તેના સામે ત્યાર સામે ત્યાર સામે ત્યાર તેના સામે ત્યાર સામે ત્યાર તેના સામે ત્યાર માં ત્યાર સામે સામે ત્યાર સામે ત્યાર માં ત્યાર મામા ત્યાર માં ત્યાર માં ત્યાર મામ ત

30 મહાપુષ્ટવનો ' મુંજુલાનુવાદ મહેત્સવ ' લખ્ય રીટે લેમ્પવાનો, શુંખાઇના તૈનોએ નિવૃષ્ધ કર્યો છે. સાસના હેમલા આપણા આ સમાર્થ 'પીર પુષ્પ વારે વ્યાપણો વીડી લાસીન વૃત્તિ થઈ હૈ-પોતુવાડિ, સમાત્ર કોશકાસાર્થન્સ લાવવાં બી હેમવાં હત્યાં એ આવાલ નવા વાન્યું કૃષ્યી વીરસીન્ મુશ્ક પ્રમાણને સમાપ્ય કોશ માર્ચ હતું લક્ષ્યું આ મહાપુષ્ટને સમાપ્ય તે લક્ષ્ય લેશ, માટે કે મહાપુષ્ટન કે, પણ પામ પીડો કોવાથી હતા તો તેને ત્રીની સમાપ્ય વધુમાં વધુ નાલું નાલું ત્રાં લાયું કે માટે કે માર્ચ પ્રમાય પીડો કોવાથી હતા તો તેને ત્રીની સમાપ્ય વધુમાં વધુ નાલું નાલું તે કર્યા કર્યા માટે કે માર્ચ માર્ચ મોડે કે પર કેને તે ત્રીનો 'કે બાનાવાદ મહેતાને કે નિકોને હૈન્હ માટે કે ટે કે કર્યા લેશ

અર્થાત તેઓર્મીના ગુણાતુંવાદ, ઉપરાંત તેમની સામિત્યક ત્રવૃત્તિ, વાર્યન્દ ફાર્નો પાસના ઉપર નિવેરનો સાથ, તામનને આર્નિજી દકારવા માટે છવતાં પર્યોપકાને કેમ્પ્યોપના કરી તે, તામ ખાદ કરીને તો તેમના સામિત્યનો માળવાત સામાજ કેમ તરતો શાય અને તેમના ગામન સામિત્યનો માળવ વધુમાં વધુ કેમ ધાયું તે માટે શે શું કરતું ભોઈ છે, તે માટે ત્યા સાધિક સંક્રેપને કરવા. અને એ માટે અનાત બધું કર્યા પરમ્યુલન આપાર્થ કેંગ, સુનિવરા અને તેમતા અને સામક નિત તે છે. જનતાં બધું કરવામાં શેકું રીક્ષુ ધધું છે, હવાં જૈનલ શેત તેમાં કેમાં કર્યા સમયો, નચો નવાં બિલાવતી લેવા ત્યા ત્યાં પરંપુત્ર તેઓ આ લોક હતા કરતી

હિંતમ કાર્યો કે હત્યની ? જેન ૧૨ પશામાં અર્તા આવ્યું કે તેમ, આ પણા ત્રસાયાએ આ મહાપુશ્વના જન્મોથા કાં વચારેવાદ સુધીના સાલવારી મળી આવી કે ૧૨ંદુ ક્લાંએ સક્ષ્ય પ્રયત્નો છતી. તેક પણ પ્રશ્નેમાં ચાલધ નિર્ધિ તથી મળી ત્યારે શું કહ્યું ? ત્રેહતે સ્ત્રીસાર્ધ ક્લાંચીના ક્રમાર્ધિયામાં કાલધારે પછી તે વધે (૧૯૧૫માં) ત્રેસીબીની વાલ્યુ પાકલતાં પ્રતિપા આવશર શુંદિ ૧૬ (ત્રેન ત્રેમારી)ના દિવસે ધેવે હોવાર્ધ કાલ હુવત માટે તે જ વિલ્લા ક્રિત્યાર્થ વિલ્લા કે વ્યામાં ત્રમામાં જ યુ પૂત્વવાદા આપ્યાં મામાત્રજ શ્રીધાર્ધ વિલ્લા મામાર્થણીયાલ્યું આક્રામાં ભાગમાન્ય કિલ્યામાં વસ્ત્રમાન્ય ઉપાધાલા શ્રીધાર્થ વિલ્લા માનાજ તર્મા પ્રયત્ન ક્રાનિક વિલ્લા ક્રિત્યામાં ભાગમાન્યલની પ્રિયામાં મારે ૧૬ ૧૬ તર્મના

દિવસે ભવ્ય ઉજવણી કરવાના નિર્જુવ કર્યો છે —શીધદાત્રિજવાજ ગ્રાસાતવાદ મહેત્સવ સમિતિ તસ્કર્યા

ઢે ગ્રેહ્મીજ જૈનકપાલ્રય પાયધુની સુબર્ધ માત્ર સુદિ ખીજ ૨૦૦૭ - તા. ૧૧–૧૨–૫૦ સેક્કેડી કૃતાહચંદ ઝવેરભાઇ વીરચંદ નાગછ દીપચંદ મગનલાલ શાહ [જૈનપત્રના તા ૩૦-૧૨-૧૯૫૦ના ઉતારા]

મુંબઈમાં ભારે ઠાઠથી ઉજવાએલા સ્વ. મહાેપાધ્યાય

શ્રીમદ્ યશાવિજયજના ગુષાનુવાદ મહાત્સવ

સુંખર્ય લાયપથા કે તમે ૧૧૦ પુરવાતાઓ ખંગે મહિનાના ક્ષીત શર્વાતાલ્ય કરતી અહતાહારી આપ્રમાન કરી જ્ઞા છે, તાં ભાગમ નિશામ ગાળમાં નામાંગાર્ય નાર્યાતાલાદ, રિલાસ્ટાપના છેશા ત્યોતિવેદ તે અન્દોત શાસનાત્રાલાત મહેરાયોથાય ચીમાર સ્ટેશન્ટિલ્લાઝ મહારાઓ ગ્રાફાન્ટલાક મહેરાલ્ય સ્ટે કેન્પ્રાંડાન્ટેક કરળમાંત્રે પણ

રૂપે નિર્મિત્તે મૂન્ય ચહારાજમીની પ્રેરવાલી જાણાંત્ર મહત્વેલની મુલાનુંવાદ લાંધિનિ નિયાણી તે પ્રમીતાના સેક્સિટી થી ક્લેક્સ લાલાંતું. ગાં વીરચ લાલાંતી સહિયા દાહતની સહિયી મીખતુની જીજવણી માટે જાહેર નિર્માત ખારા પાત્રી બાદ મુખલી જીજવણી લાંદેની વ્યાપ ત્રણ પત્રિકાં મુખલી ત્રણાંતી જ્યાર સરેપારોના તરફથી બહાર પાત્રાવાની વ્યાપી, તે મુજબ માત્રવાર સહિ ૧૦, ૧૧ એ વિલસ્તી જીજવણી વાસ રીવે શકે તે મારા મે અમેરેપાની મહતા દાવેલની સ્વાપન લોકો, જ્યાન પાતાકરી લાગમાંત્રીએ કહે મો

આ પ્રસારે રહ જમાંવાલા ગહારાજ વિરક્ષિત લખ્ય મંદીતું છે. વિશાળ રવાર્ય્ય શાહિત પ્રયાંત-આર્મક રીતે વ્યાપ્યાત મેળવાં હત્ય દેખાને કરના પૂર્વક શાકલવાયા આવ્યું હતું વચ્ચાલે કરોહથી આદેવી સ્વર્યસની સુરુ વિશાળ પ્રતિકૃતિ તેમ જ મારે વાલુ તેમના માને, ગાંદન તમામ, માને, તેમ જ સ્વર્યસના હત્યાદ્વીની અર્થ સાથે વળેલા 'વેશાના એડીની હરસ્યાળ સેઠનવામાં આવી હતી જે અફેડિક દ્વારાસ્ત્રેને કહ્યાં રહી હતી ફોર એડીમાં હત્યાલય પ્રયાને વારા વીતાની પૂર્વ હતી.

દ્વાપના લિલો યુંગ અગારે ચીજિન્દભાગદીય્લાઇ તથા યુંગ ઉપાંચાયછ શીધાં વિભવ્ય ક્વાપન તથા યુંગ ક્ષેત્રણે ભાગ કરાયત તથા આવલાની ચીજવાન વિભવ્ય આપણી પૂર પંચાય આવલ સ્થાય હોય હોય તથા યુંગ કર્યો કર્યો કર્યો હોય તથા ત્યાં કર્યા કર્યો કર્યો કર્યો કર્યો કર્યો કર્યો કર્યા કર્યો ક

્યારમાં સાધાના વકારોમાંથી પીકા ફેન્દેન્યલ્લાઈએ થી સ્વર્યસ્થત જીવને સાંત તરીક તે પશુ-હતું શ્રીવન પાસ્તાકરે સ્વર્યસ્થને તેને સાકતના એક સાત પ્રષ્ટા ને સાહિત્યક્ષ તરીકે એન્પપણી તેમતા વાસ્તાને તળવાના મેરેક્સ અપીલ કડી, ત્રોકાઈવોનું તેલનું સ્વાસક ચર્ચુ થાય તે શકે. પૂત્ર સરકાતન્યોને ત્યા પાસ કરે મહારાખ ચોક્કોલિવ્યલ્કો નિનાર્ટિક કરવી સ્વર્યસ્થનો યુંજરી ને અંધણે તે અપીસવાનું મામીમન કરી લાલ આપી II તેને લાલ દોક વખતે થયે તે કેઠી સ્વર્યસ્થના સાહિતનો ઉદ્યાર

કરવાને જણાવ્ય હત. શ્રીયત ચંદ્રવાદ વર્ષમાન શાહે પણ ઉપાંચાયજીને સદર શળ્ટોમાં અંજરિ આપી. આપણે શાસનના મહાન પ્રકાના કીંગતી વાસ્તાને જાળવવા જણાવ્ય ને આવા પ્રસગેની ઉપયોગિતા જ્યાની શેર જીવતસાલ પ્રતાપસીએ બેલતાં તેઓથીએ બાલ્યાવરથામાં લોધેલી દીણાથી કેના પ્રસાનિક પુરૂષ નીવડવા તે જણાવી. તેમના જીવનમાંથી એક લેવાની જેરદાર સ્થાના કરી શ્રી સપ્રતહાલ સગયદ શાહે સ્વ ના જીવન પ્રસામા કહ્યા પહિલ થી પ્રામાદસ એચરદારો સ્વર્ગ રહ્યને અને તેમની સાસનસેવાને અજલિ आपी कैनमाधकोने तेवना साहित्यना अध्यासी जनवानी संधना हरी. जाह वी धीरकशास ट्रेडरसी શાહે તેમનં જવનચરિત્ર તૈયાર કરવાની સચના કરી. બાદ ચહારાજ શ્રીયક્ષેત્રિજયજીએ જણાવ્ય કે ઘણા વરસોથી મારા અતરમાં શાસનના એક અલોદ પ્રભાવક મહિવેથી સમાજનો મોટા ભાગ અધાળવા રહ્યા કરે તે પરિસ્થિતિ સાલતી હતી અને તે દૂર કરવાનો મનેકરથ લોડે વસે અરો આજે સફળ થયા કે તેવી આનંદ થાય છે સ્વર્ગસ્થ માટે બંને પ્રકારના સ્મારકની જરૂર છે સ્થાવર અને જંગચ ક્રમાઈમાં ધર્મ-શ્રદ્ધાળ સર્થે ૨૫ વસ્સ પહેલાંની દર્દશાને નાગાદ કરી આજે તે રથળને ભગ્ય ખનાવી, સ્વર્ગરથની સુદ્ધ કેરી ખનાવી છે. પરત મે જ્યારે પ્રથમ એકં ત્યારે જૈનહાસનમાં તેનું અતિ હચ્ચરથાન જેતાં માટેલું જ સ્થારક વહા જ અપૂર્ણ લાગેલ, હવે તે પુરુષને અંજે તે રીતે ત્યાં અલ્ય સ્થારક ખઢ કરત જોઇએ આવા રમારકા એ આધ્યાત્મિક પ્રેરશાનાં હ મેકા પ્રતીક વનતા આવ્યા છે તે આવાલગાયાલ માટે તે પ્રથમ તે યત જ જોઈએ. ખીજા કાર્ય તેમને જીવનચર્તિ જે છૂટ છવાલ પાર્ચ છે તેને યણ સાંકળવાનું છે વળા, સત્ય અર્ધ સત્ય હઠીકતાથી ઘણાં અર્ભાજ પરા પણ ચઠવાં છે તેની સાક્ષ્યુકી કરવાની છે, તથા અસ્યામપૂર્ણ ઘણી થશી ભાગતા તારવવાની અગભતા જણાવીને સ્વર્ગ રહ્યની શાહિત સાધનાની પસ્તોન્ત અભ્યાસપૂર્વ દે એક જ સરખી પહેરિએ પુનર્સદ્રશ કરાવી. જૈન જૈનેતરામાં પહેલ્યાકવાની. મુજરાતી સાહિત્યને જૈનેતના ઘરે ઘરે કરત કરવાની જૈયવે(ગેતા દર્શની હતી હેલ્ટે કેદ બાલ્ય દલાઇ તવેરીએ વકતાઓની અધીકાને ધ્યાનમાં લઇ તે રમારક માટે એક સમિત નીમવાન જણાવતાં એક રસાયક સમિતિ નીમાથી, ને યુ મહારાજમાના ઉપદેશથી રમારક કૃડમાં ઉદાર ગૃહરવાળો સારી રહેલ લખાની હતી. યુ અન્નચાર્યંત્રીએ એ સબ્દો કરી સભાને ઉત્તેજિત કરી, બાદ પૂત્ર્ય ઉપાધ્યાયછ મહારાજે જૈનકાસનમાં ઉધાં આયપદન સ્થાન અને તેની આરાધનાથી થતી માલિયોજની માર્તિ ઉપર સાર પ્રકાશ પાથમાં ખાદ સલાની પહોડતે શા

અમરાર સંદિ ૧૧ ના લિવસે ગરાગર નવ વારતા કાર્યક્રમ સ્થ થયો અળીનું સૂર વધા દાનપૂરન ઘડું તથા સમક્ષ સર્થ પ્રમુંના કહ્યું બાદ ખૂનન સ્કૃરિયાની વ્યવ્યક્ષતામાં કાર્યક્રમ રહ્ય થયો. સ.પીત સાથે પ્રાર્થન વધા બાદ વતામોનામાં પાલીલાયુકાર થી નીકનાવાલ તથા થીવત કરેરી લાવવા રહ્યા કૃષ્ટિ, કહ્યુસાર્થ ક્ષ્મપાલ કલાલ વચેરોએ સ્વર્યસ્થાના સાથાના સાથા સાથા પ્રસારના વધાની પ્રેમણાથી સુનાંની પ્રભાત સેક સ્થાત પ્રસ્તી દરમતાં વારતા ભાગ સાથા સાથાનો તે તલા વ્યાવલ ભાગ કરે હતો.

ત્ર-મોના બિલબિલ ભ્રમાર્થા અનુવારો કરાવી તેમેશીના સાહિતનો પ્રમાર કરે તો ફાંજઈ એટલે કે પ્રુપાર્ટની કોઈ પણ પ્રકાશક સરેવા ધન્ય તે અવર બની બલે શુંજઈ પહેલ કરે, નાકી કરે, તો દસ વરસમાં ઘણું કરી બ્લાવશે. તે સ્થિત્ય સીવાદ ક્ષેત્રવાદભાર્ય વહારાજ ચાટે ઘણુ કરવાનું છે છતાં તે અને તો ક ઈક શયું છે, પણ અગાઉ કરેશી ચીવાદ ક્ષીત્રવાદભાર વાયું રપાદરત્યાં ભાળતા સુત્ર- ઘણાઈ ન જળ, માટે શીવુત ભાઈવેદ-ભાઈ વગેરેને સ્થાના કરે છું તે ઉપાંખાજી છતાં આ તેના પ્રવાસની જ્યાનાદારી આપણી સહીધારી શાર્ધિક છીએ તેને પ્રયાસ આપું છું, અને થી વિશ્વાદેશ મહારાજના છળનવરિતને મૂર્જર અનુવાદ તૈયાર કરવાની સ્થાના થતાં તેને પણ નિયાદે વરેશાં

ભાદ અપક્ષાનંથી યૂ આવ્યાવેદેવે પૈલાના જ્યુષ્ણાની કેટલીક હઠીકત જ્યુપની તેમાંથીની પાકુસંપાને લાકાર્યા અપક્ષાનંથી યૂ આવ્યાવેદેવે પૈલાના જ્યુપના હતી તેને તેમ લાકાર્યા હતમાનના પાકું અદ્દારાજને તેમના મન્યા પત્રન્તે કેવા પાકુંવા હતો તેની લાદ જામી ઉપન્યાલકના હતમાનના પાકું જાતને તેમના મન્યા પત્રને કેવા પાકુંવા હતો તેની લાદ હતી હતો. પ્રતિપાત્રકાર ન્યાયના પાનાં કેવી રીતે અન્ય તેની વિકાર હઠીકત હતું, અન્ય કર્યાનના કાર તિરા કર્યા હતો હતો. પ્રતિપાત્રકાર ન્યાયના પાનાં કેવી રીતે અન્ય તેની વિકાર કરીકત હતું, અન્ય કર્યાનના કર્યા કરીકો તે તેમ અલત માન્યતાં કોવું હતું કે તે કાચ તેઓપીએ ગરા ગર પાર પાત્રવું હતું કે એકામના અને તેમના જ નાલાકાર્યા બહે. એકા પ્રતિન વર્ચા પત્રનેની લાદન અને તેમના જ નાલાકાર્યા બહે. એકા પ્રતિન લાદન વર્ચા પત્રનેની લાદન તેમને તેમના જ નાલાકાર્યા હતું તે તેમને આપગ્રના હતા લાદન વર્ચાન પત્રનેની ભાગ તેમને સ્ત્રન લાદન તેમને તેમને તેમને સ્ત્રન લાદન સહિત લાદન સહિત લાદન સ્ત્રન લાદન સહિત લાદન સ્ત્રન સહિત લાદન સ્ત્રન સહિત લાદન સ્ત્રન સહિત લાદન સહિત લાદન સહિત લાદન સ્ત્રન લાદન સ્ત્રન સહિત લાદન સ્ત્રન સહિત લાદન સ્ત્રન સહિત લાદન તેન લાદન સહિત સહિત લાદન સહિત લાદન સહિત લાદન સહિત લાદન સહિત લા

ઉંચાં ખાયકનું સાહિલ પ્રકાર્યન સંભિગ સુધી કર્યાં તાર્થે સખવાર્યા ખાવ્યું છે દાગે મધારે રત, શ્રીકાર્ય સ્પેતિલ્પાલ્યાન નવાલ પૂખ લાગ્નીલ વચેલા થી કેપે-વિલ્મી લક્ષ્યાંથી શરે રત બન્યામી હતી. તાતના ખેતે દિલ્સોએ સ્પેતિલ્માસનું લાગના ને ધૂન ત્યારી હતી સુખ્યવેલીના આધારે કહેવાએશું સ્વર્ધમાનું વિભાગ લ્યાન આગામી અ.કે.

*

क्षतित प्रश्न क्षेत्र अहेताथ ! शुवीन्यव्यक्षतिकहैं, समर्थेऽश्चितसमावे । वेदे जजादिना श्रीच-धमा मुक्त्य हात्रणः ॥ यः स्तात्वा समराकुष्ये, वित्या क्षमराजं मराम् ॥ कृत्यं शाहि मार्थेक्षत्रे, सोऽन्तरात्वा परः शुवि ॥ ७५. अस्तातिकत्यः] (अस्ता મુખાંમાં ત્યાયવિશાસ, ત્યાયાયાર્થ મહેલાંખાય ૧૦૦૮ શ્રીમદ્ યરીદાંવભ્યછ 'ગુણાનું લાદ યહેતસવ' સમારસ વખતે સંગીતના કાર્યક્રમમાં શ્રી. મણલાલ મેલનલાલ પાદસક્રમૃત જે ગીતો ગયામાં હતાં તે અત્ર પ્રચાદ કર્યો છે. સેં. [તા. ૧૯–૧૯–૧૨-૫૭]

(8)

—प्रश्च २भरणु भ'ग**ः—** (सम्प्रश्च जन्म)

मोति किस्सवा I

શાનકો નવેત જવાંગા ! ઉત્તવ સુધશ સુધા ! નવેતિ— દાહતેલ દેવિંગા પ્રાથમ, ત્યાં પ્રધા ! નવેતિ— દાહતેલ દેવિંગા પ્રાથમ દેવા પ્રધા પ્રાથમ પાત્રા—તાત. તેત્ર પ્રકાર તેત્ર પ્રાથમ દેવાદ જાવદાય ! હતો દ્વાર તેત્ર પ્રયાસ તેત્ર તેમ ઉત્તવા !—આત. કુઠ હત્વતે તાર વચાક, વીઠર હેમ ઉત્તવા !—આત. ત્રેઠ પ્રધા પ્રાથમ !—આત. ત્રાંદ પ્રસ્તુ મહિ લ સ્થ—પોલે સાદ સાથમ !—તાત. ત્રાંદ પ્રસ્તુ મહિ લાલ સ્થામ પ્રાથમ !—તાત.

(१)

—५२भ ज्ञानभृति^६ छ—

મુશ્ય શાનભૂતિ છે.

આવળ ગાતભોગી છે, નિગન દ ગોગી છે.

ભવતી છેમન તેમીતિ છે બન્યતા ત્રો હોંગી છે.—પુરસ.

પાંચ પ્લાસ્ત સમાગ, રન-પાંચ લા પ્રતિપાળ !

આપના બેનીત રખતાળ ! ઉપાંચાય ઘરા : છે.—પુરસ

નાયવિરાદ ર મહતા, સાધ્ય નળ સુલાં અલુ !

દેવને અંધાયત હાલુ ! અલફ તુલ અંત નાલુ !—પુરસ

સાર લુલાન છે, પણ પૂત્ર સાખન છે.

રસાય વિરાસ છે સાધ્યા-મહિનુ હિલ છે.—પુરસ

(٤)

—સ્વાગત—

(आश्र-भीवृत्त्व)

સત સુત્રન નરનાર, પ્રકાર કવિ પહિત અમદાર!

રાજવાર્દસ સમાનસસરના, તાન મોલી ચરનાર (પ્રેમમાર્ત વધુ લગના ત્યા, ધર્મ-સચરક સહાર !-- પધારા, સ્માગલ્યા સ્થાતરથી કાતથી, કન્નત ત્રિતિ વસનાર! क्क्षेकिम जनवत अवेतसर, सा अध्यास पीनार !--पधारे। **ધર્મ** સમગ્ર રસરાજે ખેલી, શાનપરમ-પીનાર l her her રસતરરથી પીએ, છેઠી હાથ સિતાર !-પધારા. ત્રાત સ્થાયતના પીનાર્ગે. ભાવ લખ નરનાર ! અબેદ થઈએ આવે બાંદ, કરી કરી કર્યા મળનાર ધ-પધારા મહાકૃતિ પક્તિ વાદીવિજોતા. યોગી ત્યાય વ્યવતાર ! हणाध्याव वसविकव स्वयोत्सव, स्वायणवाने दार !—पधारा. ત્રિવીસીના મરવા માયક, ગૃલ્^{પ્}રીના **અવ**તાર દ મહારા દ આવેખા ભારકર, શાસન નવ તળકાર !--પધારા. કરામ લાત્વર્થી મગશિર સોપ્રે. ચાલે પક્ષેર સ્કવાર ! अताप क्षेत्र करे। चल व्यक्ति क्ष्म ज्यानी संस्थार !- प्रवारे. મેવિ તત્વનાની ચાંગી કે, હશે લહિત આચાર! સ્વાગત મહિસવ માહસવીનાં લ્યા શાસન શક્યાર !--- પધારા.

श्री शारहा-श्रेपद्देवया स्यवनाष्टर (४)

(અથ્યક્ષ) વિતા સાર ! કુતોપીમારવરી! ખોલા વ્યાગ્યાલિત તુ શા વહારતી!—વંદન પણ પ્રેમ રેસતી, કિલ્મ શકુ કેસતી! પુરવર્ષામાં લાદત વર્કને સુકલતી!—વંદન મીતમ રેસ્તુ વાલ્કો, વીસા બન્યવતી! વસ્ત્રી! સારી રહ્યુંએ રસ્તરતી!—વંદન કરિતા સુકતા, પ્રેસ્તિક રીસ્ત્રી! મુંદ તત્વાલા રીસા સ્વત્યતી!—વંદન શાસન પ્રસ્તુ વીર શા તું કિલ્મ સી! વિતર્ધ સુધ પાત્રે હવે રી! બળા વસી!—વંદન ક્ષિમાં પાત્રજ બનાત તમેના રેસા! કુત્રે સુધે સો શરી સુધ પ્રસ્તાની!—વંદન તેના ધર્મ-તેના વિશ્વ - ક્ષ્માલામાં ક્ષિત્રી સુધ્યમાં પ્રાફિયમી! પેલાની!—વંદન તેના ધર્મ-તેના વિશ્વ - ક્ષ્માલામાં ક્ષાલિત સુધ્યમાં પ્રાફિયમી! પેલાની!—વંદન (૫) —અયશ ગેદ્ય—

—शुवस मध— (२१५-हर्गा. तात जितात)

સુવશ રહ મેવન કે હમ ગાર—સુવશ.

हा हा वांबान वांबाहा, जीवन सुरा विशेष-पुरा पोवा कार प्यापन वांबाह, वांबाहा होने हैं:-सुरा १४००ी सुरा वांचा तोंबाह, अला को कोर-सुरा काल कर शहा पर वांके, तेरी यह वांका-सुरा भी बात ग्राम पर वांबाहा है, जरूर माबि हर कोर-सुरा भी बात ग्राम वांबाहा हैं, जरूर माबि हर कोर-सुरा

(9)

—વિદ્યાશાળામાં લહેલી સાચી આવિકાની લાવના—

મારે ઘણું છે સાલુકાથી આવિકારે લોલ, જેના વિવે વલવ કાલુ સાત જો; છતું સાનું છતા—પણને કાફે રે લોલ, હિના અત્યાર તતા ધર્મ પ્રાણુ જો, માન સુધ પ્રદેશો માર્જન કરે લોલ, હિનો અત્યાર તતા ધર્મ પ્રાણુ જો, — અંદરે કાં, ના પ્રકૃત કું ધર્મ જતા પ્રાણુંથી રે લોલ, તેને પ્રકૃત્યું જેને ધર્મ લાણું જો, — અંદરે કાં, ના પ્રકૃત કું ધર્મ જતા પ્રાણુંથી રે લોલ, કે સુધા ફ્રું થીન સાસપાર જો; ત્રદ્ધા ચારિત દેવો કોલ્યા આવી રે લોલ, કેલ પર્ય-પ્રેમશાલ-એક તર જો — મહારે કાં, સાસપાર્થ તત્રવાલન મોકારી રે લોલ, ત્રદ્ધા પામી તાલ્યો સાર જો — મહારે તેને પર્યુપ્ય દિવા લોકોલ્યા રે લોલ, ત્રદ્ધા પ્રતાપો લાખી છો. અને ત્રાને પ્રમાન પ્રકૃત કિના સાલાનો દે લોલ, ત્રદ્ધા પ્રદાપો લાખી છો. અને માને દે

> (૭) —વિદાય—

(भाभवक सहिता)

લાકિવા એ વીશનના થી વ્યાવની, વાગ ચાનલાક રાજ્યાર્ક સ્થાળનો; પંધારીમાં થી મહેલાવિજાય ગુણકરિયા, ક્ષાવલા શરા-વિકારિયો દરમાર એ —સાદીધા. આત્મા આપણ સ્વારાય રસાદાવ્યી, નિજાનકાર રસાદા કરવા પાર છે, પીધી પાર્ધા દિવન આપણ સાધાર્તી, હેલ કરેલા વિસારો! પરેદાન એ—તાદીધા. સાર્કાર્ડિય વિશાસરારી આપ હો, ચાલક ગ્રુપ્તર નવનાયુંત અધિમાર એ-વાદીધા. પંચીપાય ત્રીખા એને નિજાનો, સામા દિવાન-હાલી એ વિશાય એ—સાદીધા. પંચીપાયની સુપદ્ધા વ્યાપ્ય તરેલો, આવ્યા સ્તાલીન નશાય મહેખાન એ! દેશાયાની દ્વારાય પાય સ્ટાપ્યો, સિદ્ધાર રસા દિવાને આપ વિદાયઓ—સાદીધા. નાધ-'જેન' પત્રમાં ગુણાતુવાદ ઉત્સસ અગે પ્રગઢ ધંગેલી લંગી નોંધના ઉતારા

ઉપાધ્યાયજનું સમારક

. જૈન સરફતિના ઢેલ્લા મહાન ન્યોતિર્ધર ઉપાધ્યાલથી યશોલિજનજી મહાસંજવો સંચાનવાદ મહાત્રથ મત મીન એક્સરમાના દિવસે સંજાઈખાતે સંદર રીતે ઉદ્ભવવામાં આવ્યા

સર્વ અમેતે રમાર્ટ્યું તેઓશીનું શાહિતરાવર્તન એ એન્સર્યુંતિના ચહારાથા વારસાતું એક અપૂર્વ અંગ છે, બાળ દબ્ધી મહિતિ વિદ્વારને સુત્રે તેથી તેઓશીની અનેક કૃતિએ છે અને સ્ત્રી કોઈ તેઓશીની ત્રાત્માંત્રોના લાભ લઇ હો તે માટે તેઓશીએ શરસુત, આૂત, ગુળતાની અને કૃત્વિતા ત્રાત્વના આપણા પણ શાહિત્ય લખ્યું છે. તેઓશીની અપૂર્વ શાહિત્યક્રેશનો વારતાવર ખ્યાલ આપણા વિદ્વાર્થમાં પણ એઈએ તેઓ પ્રમાણના નથી આગ્ર અનાત તો તેઓશીની શાહિત્ય-તેવાથી લાગ્યો અપિમિત હશે

જૈન સસ્કૃતિના એક સહાન જ્યોતિયરથી જૈન સમાજ પણ પૂર્ણ પશ્ચિત ન ક્રેમ તે આપણા માટે અમાગ્ય પ્રશામ

શું ખાઇ ડૉ ખારી ગળારતી વિશ્લેલને ળદાર લાવવા માટે દુખ્યાદ કર્યોં છે તે ખરેખર અધિતાનનો વિલય છે. મુખ્યત્વી આ મહિલાન કે દિવાનો માત્ર અધ્યક્ષે ળળી ન રહે પરંતુ તેમાંથી કર્યક અધિત પરિસુષ્ય ભારે તે માટે મોહિલાન ક્રિમિટિંગ ગોક સમિતિ નિયુક્ત કરી જે સ્પનાલક સર્યની શરૂમાત કરી છે તે ખરેખર અધિતાનીય છે.

ગ્યા પ્રતિકિંગ શુપાપાથાએ માંગ ત્રણ શેલના કરી છે ગતે સરજાવાર્યા કરી છે નથી તેમાંથી સ્વર્ગવાસ પામા હવા તરી સુધીમાં કાંગલુદ્ધ સ્વારાત સાથે સ્વારોત તેમાંથ થીમાં વસેનિબચછ મહારાબ્યુ સર્વાત્ર સુદ્દ મેં સ્વારા ત્રાની તેમાં કરવાની તર્જાવ સીધે અને વસુર્વા ત્રીક ચીલનામાં ઉપાપમાંથાની સર્જ ફેન્સિંગ ગ્રુક સ્વારામાં પ્રત્યા સ્વારાની પણ નિર્ભુવ સીધે છ

સું મહિતા માર તિલ્લું મેને ગામો ગામકારીએ છોએ અને દર્મિઓએ છોએ કે લોકોનું રમારક કે જ્યાં પાયછનું કરવાન-મંદિર તૈયદ કરિતે ત્રિકિટ સેવી તા રહે, જ્યાં પાયછનો વાસ્તારિક પરિવાર તો તેઓના મીતી આપાલ માહિત્યાને પણ પ્રેક્ષણ કરે તેઓમીનું ત્યારા સાહિત્ય તો માન્ય જે જયાવખ તમી પ્રાપ્ત પણ કર્મો છે, પરંતુ આ કાર્ય એક્સફ બનીરલ અને વિશાળ છે કે તે માર્ટ સ્ટ્રપાલ્યમાં પરેસ પ્રમાસી બાદ તેથી આ માટે તો સાસાકારિક કારાય, પૂર્વ જ્યારા અને લીટી ચોલત્તા પૂર્વ કરો માર્ટ સ્ટ્રપાલ માન્ય પ્રમાસી બાદ તેથી આ વારોનો પ્રાપ્ત વિચાર કરે અને પોલે કરૂ કરેલ મહત્તનું કાર્ય મદાવૃત્તિ પાર્ય પાત્રામી સફ્યાનો પ્રાપ્ત કરે તેમ અગો ઇચ્છાંએ છોએ

યુંબર્ડખાતે લગ્નવાએલ આ યોકાત્મના ગ્રાહ્મકાત લગાંખાયલ્ક થર્ય વિશ્વના સંદરાંતના વિદાન દિવ્યતન શ્રીતે સહાલભાષી સ્વોલિબ્લાજ અહાલભાને અંગો ખા તો વર્ષી હતા નથી. તેમોથી મહેલના જ 8 અને ઉપાપાયલીનું સ્વર્ગનાત પશુ હોલાંત્રી તેમાં અદેશત્વર સચ્ચના લાયસુમાં તેમોણોએ સ્તુષ્ટ કે તેમ લાયાનાર્ટન અને કશક કરી શુલ્લાની તમા તેમોથીના દિવસા વધ્ય ત્રમારી ભળી હતો. અને એ સારનાર્ટન આજે સર્જ સ્વાય પાસ કોઈ તેમાં માનત પામે છે. અને સમીસાય આપણે ઇચ્છીએ હીએ કે પોતાનું કિલ વર્ષું ત્રને પાસ પાત્રામાં તેઓથી પૂર્ણ સહકાર આપલા રહે

31

નોંધ—4બ્રાઈમાં ગુરુમદિસ્તા ખાતસહતાં અગ્રે તીકલેલી આમંત્રણ પશ્ચિકા

॥ ॐ अई ॥ सक्छानिवसंपचाय श्रीगीतमस्वामिने नमः न्यायविद्यारद न्यायानार्यं महोपाच्याय श्रीवस्रोवित्रयज्ञी सद्गुरुग्यो नमः

મહાયાં વાય શ્રીમદ યરોહંવજવછ-પાદુકા ગુરુમહિના ખાત કિયાના પ્રસંગ અમા મંત્રાએ – પત્રિકા

मझाङतिमिरान्धानां शानाञ्चनग्रजानया । नेत्रमुनीमिकतं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

સ્વસ્તિથી પ્રાર્થ પ્રિંગ પ્રભુમ્ય થી ધર્મસ્થાન વિષ્ધિ તત્ર ત્રીમૃતિ નગરે પ્રણપ્રભાવક ધર્માત્રાધક શિક્ષિય આદિ સંત સગસ્ત ચેમ્બ દર્ભાવતી (અમે ઈ) થી લી. શ્રી વિખયોલસ્ટ જૈન સ ન સમસ્તના સમકુમાન પ્રભુમાન પ્રાથમ વાંચતાજી.

તેતું ખાતપુર્કા સ. ૨૦૦૦ના ત્રાવણ શુ ૧૩ શુધવારે સવારના મુંગઇ (વાદદોપર) નિવાસી કાનવીર રીઠે કો વાદીલાલ ચત્રભુજ ગાંધીના રાત્ર કરતે યોજનામાં આવ્યું છે

ગા પ્રશ્ન ગે જાગ પંચાલાથી ગી શાસલા પાર્વેનાથ તથા શી લોક્સ પાર્વેનાથ આદિ છ તિન ઘરિતના દર્શન પ્લન્નનો તથા જત નિશાન્યત ત્રાસ્ત્રિવાસ્ટ કરિતન પિત્યાથી આપાર્યાર્થ મહારાજ ગીલિન્ગ અમૃતસ્ત્રિવિસ્ટ તથા પૂ પં. શી સર્ચાન્યકારી પંચાયોન શાહિતાથાં આ દર્શન-વેલન જને તિન શાસતના વેલકાની શવાન સર્ચાન તથા, પ્રાથતિની શાહિત્યાના સર્ચાન શાહતાના આ પ્લાયન સર્ચાન તથા, પ્રાથતિની શાહિત્યા સાથતા ગીહત્યાના શાહતાના ૧૧ ના લઈ નહેનનો શાલ પાસ

ખાત મુદ્દર્તની કીવા કાવવા માટે અહીંના વહની શ્રી **છવામુલાલ ચુનીલાલ** વડેાસપી પંચારો

C/o રીઠ દેવસ'લ ધરમચ'લ ની પેટી દે શ્રીમાળીતગા, હથેશર્સ. ક્રીફી

હી સંપ્સેન્દા, શ્રી વિજયદેવસ્ટ્રજેનસંઘ, ડ્રમાર્ધ, ઉ. શ્રી સ્ટ્રાવિજયાષ્ટ્રસ્તાસ્ટ્રસસ્ત્રિત, સંબર્ધ

'મુંબઈ સમાચાર' કેનિક ધ્વને તા રહ-(-પર ના ઉતારો —તાર્કિક શરોમાણિ શ્રીમદ્દ થશોવિજયછ—

હંમાઈમાં તેમના સ્માસના મંગળવિધ

ક્રમાઈ, તા ૨૦ મી આંગસ્ટ

卐

ગ્યાબથી ત્રવારો વસ્ત ઉપર તેને ધર્મના ક્રિક્શા ચકાન લાકિક દિરાચીલું રીક્ષેડ સન્દોના પ્રાથિતા, ક્લ્લે દર્શનના નિષ્યુત, નેચાનાવાં, નાયવિદ્યારક્ ચીચક પરીક્લિબાઇ એંગ ક્લીકે ક્લારે પ્લાંગાસ પરેસા અને ત્યાં તેમના સમાચિ સ્થશે તેમની પાદુકા અને સુર ચર્લિક ભાવામાં આવેલું, પરંતુ તે તેમાંભીન ક્લારે તેનું ન વતું તેમાં તેમાંથીને ભાગુણ હલ્લ રચારક ચાલ તેવી પ્રયાગ કર્મના કેની તેમાંથિલ્બાઇ એંગો ઓર્કના વસ્તી છે તેમાંથીને લન્ગીલી અને તે યૂલ્ય રાદેવાં આગળ વ્યક્ત કરતી તેમાંથીએ વાર્યાય લીધી હતે.

ર્જેન ધર્યના છેલા મહાન જ્યાંએ ત્યોતિર્વરની ચહાનતાને જૈન વચાબ સારી રીતે ત્રણતો વામ રીતો, હાંગ વખતની હાનાનો ગાલુ સાવવાં થી સુખઈ લકાયમાં પ્રકારો તેઓકોનો છે દિવસને 'શુભ્રાહવાદ મહોત્મવાં' પત્રમે પૂચન આવાર્ય થી વિભય પ્રતાપાદનિવાર, પૂત્રનપાર આધાર્ય' દ્યા ત્રભ્ય વર્ષ-પોર્ટ્સિક્ટ પૂત્રને સુખિશે સોલિબ્લાઝની હાન્યોલ લક્તનાવાં લાખી લાત્ત રાત્ત રહ્યાં પ્રસ્થા હતા.

વેતું ખાતઘૂરતે ભાગવુ સુદ તેરસની સવારે શેદ વાદીકાલ વાહુલું એ લણી જ ધામધૂમથી વિદાન কૈનાવાર્ષ શોમાન્ સ્થમતદરિવરછ તથા મહારાજની ફ્રદયરિવર્જ્યની હાલ્વીમાં હત્વેશ માહ્યુરોની માનવ તેરતી વચ્ચે વાલતે સાજતે કહ્યું હતું.

નાહેર થંગેલી સંખાવતા

તે પ્રસાગે જાહેર સલ્લા ચોલનામાં આવી હતી. શેંદ વાદીલાઈએ તે શુલ ઝલાએ ગુધ મેડિના કાર્યમાં ફા ૨૫૦૧ તો રાખ તાલ અન્ય બિગાની રહ્યા લવા થી હશે છેન સાથ લસ્ફ્યી સારી રક્ષ્મો સેટ કરવાર્ય આવી હતી. તથા અન્ય લખાવતો પણ વાઈ હતી

> क्षणः मृताविना सत्तः, क्रियावामिए छिप्यते । सावना शानसम्पन्नो - निष्क्रियोऽपि न छिप्यते ॥ सम्पर्क निर्मेशं वेट - मिति हैतं यदा यतम ।

समर्छ निर्मेछ चेह - मिति हेते यदा गतम् । श्रद्धेतं निर्मेछं अह्म, तदेकमवशिष्यते ॥ ६. अस्त्रोदिक्षण्यः । [अध्यक्षेत्रपित्र

卐

તે!ધા—મીજ વર્ષે મુંળકમાં ઉજવાએલા ગુણાતુવાદ મહાત્સવની **આ**મંત્રણ પત્રિકા

જૈન શાસનના મહાન જ્યોતિર્ધ'ર, સક્લશાસ પારગત મહેાપાધ્યાય ૧૦૦૮

શ્રીમદ્ યશોવિજયજી મહારાજના

-: ગુણાનુવાદ ઉત્સવ :-

[તિથિ-માગસર સુદિ ૧૧ રવિવાર-માડીજી જૈન ઉપાશ્રય]

__K\$¹%16___

ભાગરાર સુદિ અગીયારસ રવિવાર તા. ૧**૦-**૧૨-૫૧

સ્વારે ૯ વાગે:-માત્રફ વરોલિજવાછ મહત્વાજના તથા ઓર્મક્ષપેઈન્ટ કરાંગેના લખ્ય ફેટાંતો અનાવસ્થુ તથા અર્ચન નિર્ધા.

ભાગાંગોનું ગગલાગરણ, ત્યારબાદ ભુદા ભુદા નિદાન વકતાંગોનું ગુણાંનેન રાતના ૮ વાગે:-જેમાંગ્રવમાં જ સ્વર્વત્રમના ગનાવેલાં સ્તરનો-પદે દાણ સર્વિ લગરણ શ્રી નાનુસાર્કની ગાળી તથા સગીતકાર ગ્રી મહિલાલ સમીતના સામ સાથે લક્ષિત્રસાર પૂર્વક કરશે.

તા આપણા શાસનના મહાન શ્રિપકારી સદ્યુર્ટેવની શૈજવણીમાં દરેક જેન ભાઈએ અને ગ્હેનોને અવસ્ય હાજરી આપવા આગઢલાની વિનતિ છે.

> લી. સધ સેવંદા શ્રી યજ્ઞાવિજયજી રમારક સમિતિના ×નોનો

ગાહીજી જૈન ઉપાગલ પાયધુની–સુંબર્ધા તા. હ–૧૨–૫૧ મુલગ'દ વાડીલાલ દાહતરામ ફેરોફ્રગ'દ મેવેરસાઈ વીરચ'દ નાગજસાછ ત્રીધા—અદ્ભી થી બી વર્ષાજિયલ સારસ્વત સમગ્ર વિસ્તૃત કેવાક; તે પ્રસાગ સુવિત રૂપે બધાર પહેલા તે રફ ધાલ છે, થા હેવાલ ભાગવાનું કારણ, ગ્યા એક પ્રધાંગ પ્રેસ્ક સ્તર કર્યા એતિકાસિક હતો. ભાગા ખાતી કાશ્મર થાર તે ભવિષ્યામાં અનેકને પ્રેમણાને કારણ અને કાશા એ તે સાહિત્ય ભારા પહેલું તે કમાક જ ભાગે મુક્તામાં બાલ્યું છે. સંપા

बयन्त वीतरागाः

યત્રિકા ન'. ૧

શ્રી. <mark>યશોવિજય સારસ્વત સત્</mark>ર

સ્થળ; ડલાેઈ-ગૂજરાત

શીમાન/**શીમતી**

સ્વિકાલ સર્વાંત્ર શ્રોગફ હેમવાંદાગાર્ય મહારાજ પછી જેન સમાજે વિદ્વાલ સાહિતાના સર્જનાતર મન્ને નંત્ર્ય ત્યાલના પ્રાપર વિદાન વરીકે, લીલ્લ ન્યોલિયરની શુજરાતને રોટ સ્વાંપી છે.

તેઓશીનું રુવાંપાસન વિ. સં. ૧૭૪૩ માં (દાશોવાતી) દેવોાઈ (છલ્લા વરાફવ) ગુકામે શચેલું, ત્યાં તેમની પ્રતિત પાદુકા. સંવત ૧૭૪૧ થી વિદ્યાન ાં તે પાદુકા-શ્વારે નૃતન શુરુત્ર દિરાના કરવામાં ચાવી છે. તેની પ્રતિકાના શુક્ષ પ્રસંગે સં. ૨૦૦૯ ના કાચણ વિદે સાતમ-ચાર્તમ તા. ૭–૮, ૩–૫૩ ના રાજ " શ્રીષશોવિજયછ સારસ્વત સત્ર" રૂપે એક સહિત્યવની પોજના કરવામાં ચાવી છે.

અમ પ્રસંગે ભારતવર્ષના અને ખાસ કરીને વૃદ્ધાર્ટ્ ાજવાતના વિદ્વાના એક્ત્ર મણે અને પરસ્પર સભ્યળુ ગ્રાન ગેમાર્ધ કરે એવી સચિતિની હાર્દિક ઇચ્છા છે.

આ સારવત સત્રમાં હાંબર રહેવા તેર જ ગા પ્રસંગને ગતુરૂપ એક નિગધ માક્રવના ગામશ્રીને તસ વિનંતિ છે.

આ નિગંધા ચાત્ર્ય સમયે પુસ્તકાકાર પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવશે.

निवाधाना विका पर्याद करना माटे केंद्र सची का साथै असे मेहदर्श है. तेमांथी आपनी पसंदर्शना अथवा तेने काता है प्रसंबने अनुउप श्रील है। विषय उपर आप માહામાં માહા ફેબ્રુઆરીની આગર સુધીમાં આપતું લખાશ અવસ્ય માહલી આક્ષારી કરશો.

મહાપાધ્યાય શ્રીપ્રદ યશાવિજ્યજનાં જીવન અને કાર્યની ટુંડી રૂપરેખા આપને અતતી ત્વરાએ સેક્સવાસાં આવેલે.

महोत्सवनी आसंत्रक पत्रिक्ष क्यासमये सेक्सावारी.

નિકેલ્લે ---

साक्ष्मं द सम्बदान मांधी નાગકમાર ના મકાવી

માત્રીલાલ જે. સાંડેસરા જરાસાર્ધ માં જુવ भागा भंभीओह-श्री वशाविकय सास्त्रवत सत्र समिति

મસતા:--રેપ્પેક્રેને વિનતિ છે કે લેખા ગને ત્યાં સુધી ઉદ્યાધ્યાયછનાં છવન અને કદન અગે તથા મચીમા આપેલી તેઓલીની સાથે નિકટ સંગધ ધરાવતી ખાગતો ઉપર લખવા.

તિમાના મેમલવાને દેશાયા-વારીલ નાગકમાર **નાવેલ્લાલ મકાની** દે. આગાઝપરા, **હાર્યો**પેલ, म बढ़ाहरा (गलराय)

ક્રી પરેપવિજય સાસ્સ્વત સત્ર સમિતિ

வால் நிர்த்தில் நால் நால કાજન્સીલગ, ક્લેક્ક માનિસિયાલીડી મત્રી, શેંદ્ર દેવચાદ ધરચવાદ પેટી, ડક્સાઇ મત્રતલાલ ગીરખરાં કર શાલા આદિત્યવાલ

પ્રમુખ, ક્યારાથ સાહિત્ય સલા, હંભેઇ ચારતાલ હિંમતલાલ શાહ

તાયાવિકારી, સ્થારક સચિતિ, હંભાઇ ANTHORN ANDION BUS કાર્યાધિકારી સ્મારત સમિતિ, હંભાઇ શાહિયાસ મૃદ્ધિસાસ કામ

ઉપપ્રમુખ, ગ્રી ય. જે. મેવાસદન, કંસોઇ સ્ક્રમીનાંધ બદરીનાંધ શાસ્ત્રો, તા, મે, ચિતાર્સ) નિરત મુખ્યમધ્યાપક, રાજકીય સરકત

महाविद्यावन, पडाहरा પ્રેર કેશવલાલ હી મતલાલ પ્રવલર ગ્રેગ એ. અર્થ હાદન અને ઇતિહાસ, યુનીવરસિટિ વડાદરા ઉમાકાન્દ્ર પ્રેમાનંદ શાહ ગેમ. એ. વડેલમા

પ્રતિત લાલચંડ ભગવાનદાસ ગાંધી श्रतपूर्व क्रेन पहिता आन्य विद्यामहिरा વડેલ્સ

હો. ભોગોલાલ જે. સાંદેસરા ગેમ એ, પોએપ હો અધ્યક્ષ, સવસતી વિશાય, શ્રી મહારાજ सवाध्याव विश्वविद्यायय, वडेह्रश

and remain airfeith

अर्थोधिश्वरी, वी अस्तिस्थव क्रेन मेहिन તાનમંદિર, વડેપ્ટરા મંત્રી, શ્રી વડેદસ પાંજસંપાળ સસ્યા. વડેદસ્સ

નાગકુમાર નાધાલાલ સહાતી છી. એ: એવરેવ, બી. ज्जासाह अभ्यष्टाह यूप

કાર્શન્સીવર, ડક્ષાઈ મ્યુનિસપાદીટી

-- તિળધા લાખવા આંગે વિષયસસ્થિ--

શ્રી યરો(વિજયછ મ નું છવન અને તેસની કૃતિએ)

17

पश्चिम व्यते छक्षीक्षरा

ना संग्रेअधीर विदाते। अने तेमनी प्रतिक्रे। ą ь ता सभवतं अकरात a ની શર્સનિક વિદ્વા v ų ર્તાઅધ્યાત્મ અને યોગ . अवधानकार तरीहे तहा कान्य अवधानकारे। ŧ .. ન મુજર સાહિત્ય La . भदाराज्य अने तेमना निषक्षे (न्याय निसारह, न्यायायार्थ, वासक-क्षणाच्या Ł 11 ના સરુળ કુંચ્યા દેશી પદ્યવિભવજીવ્યાદિ ! è ** ના દીકાસક. વિદાસક, અને મૂન્યો (સીનયવિજયછ, શ્રીવિજયદેવમદિલ 9 0 व्याने अविकथ्यावसारिक कोरे] ना कियो अने अधातुराभीको [श्री तत्त्विकय, श्री भावविकय, श्री श्रीन्त-29 12 [पक्षक वंग्रे] ના પ્રશ્ના મિલ્લિ અમુલ્લિ, પ્રાપ્ય, અધ્યુપ, સ્વતંત્ર રચનાએ અને ડીમએ 92 स रक्त-प्राक्त व्यने सक्त्रभाषार्था] ની સ્થતાઓમાં મળતાં પ્રમાણ પ્રશ્નેર્લા અને મયક્ષરાતાં તામતે: પરિચય 42 5\$ 44 ની જન્મભામ અને દીકાશિય કિન્દ્રોહ અને પાસ્થી 41 ની વિકાસીએ [કાશી-આગા] 94 Ω 9.5 नी विद्वारभूति [पाठवरी अधी वर्गरे] 58 ورو ની સ્વર્ભવાસ અગ્રિ દિર્શાવતી-ડબોર્ઇ ો 33 ના સપક્રમાં આવેલા તાર્કિક વિદાનો 14 • ना काशीना विद्यालयासयां अर्थसहायक रेड धनक रहा है। इता है 94 ... ₹. कार्त तथ्य न्याय 53 અતે શ્રી આન દધનછ ₹9 .. વ્યતે મી હેમરાદ્રાચાર્ય છ રર 12 कार्त भी विश्वस्थारिक ₹a 38 कप श्री मिस्त्रेन दिवाप्ररक्ष 18 n ş٧ अते श्री अञ्चनाहिक यहा अन्य पाहि^{*}हें। 3 6 विधेनी क्षित्रतीकी। તો જૈન સાધ ઉપરતે! ઉપકાર અને તેમના કાર્યની યત્રેસો અસર 219 12 37 नी अन्म साव तथा तिथि, अते दीक्षा, न्याप विश्वारह-विश्वारमाथ वर्शेष्ठ घड 19 अद्यान अपने रवर्गन्याननी तिथि अर्ध ! નાં રચેલાં સેક્ડો ત્રથા અપ્રાપ્ય કેસ વર્ત્યાં ટ 26 22 नी ज्याबार्यपदनी परिभूक्ष येजनत छता ते हेम न वर्ष शकी तेना आस्त्रे। 30 નાં પોતાના જ હસ્તાકારથી લખેલી પ્રતિએ તેમજ અન્ય લેખકા દારા લખાએકો a٩ 52 કૃતિએક કવા કર્યા છે તે અને તેના પત્ચિય 'શ્રતકેવળા' જેવા ચહાઉપમાં, તેમ જ 'વધુકરિલાદ' ભીજા હેમચંદ્ર, તરીકે 35 'n प्रश्न साथा तेनां शरको ना प्लेकांचा वर्तता सभाविरतपना आयीन-व्यवीयीन स्थणनेतत्त्वा सीत तथाएं ने। 56

ની પાદકારવાપન સમિ પ્રથમથી શે આજ હતી? 34

ते वर्ति करे सर्ति प्रजना विकेषीका, शंतर वश्का-संप्रदायोने प्रधारता विक्षेपीका aΝ તરકથી રહત કરવે મહેલે ખરે ?

ની પાદકા ઉપર ૧૭૪૧ની સાલમાં અબદાવાદમાં પ્રતિક્ષ કર્યોત લખ્યું છે તે તે 36 . પ્રતિકા કેમ્પ્રે કરેલી ^{કે} કેમ્પ્ર્યુ કેમ્પ્યુ હાજર હતા ^{કે} પાદકાને ક્ષ્માઈ કેપારે ને કેની રીતે લાવવામાં આવી ! અને ક્લોઇમાં કાશી હાજરીમાં પ્રતિગ્રદિ કાર્યો ધ્યોલાં !

अधीओं डेस्टा वर्षों रहा ! ते अने त्यानी अवित्रोत्रो RIS

नी स्वर्गीमस्त्र तिथिजे स्वप्साधी 'न्यावध्वनि' अमरे **व** जेरवे शं है 3/

તી મામ-સાહિત્યકૃતિએ અને તેએક્શ્રીના આડર્શના પ્રચાર માટે શે કરવે જોઈએ? 36 पुण शुष्टिया

ना नाभ साथे सञ्जानोही संस्थान्त्रोनो पश्चिय, तथा देशनी सहित इतिनी Υa .. इंदि हेर्छ अपायी वजेरे

તી સમસ્વતી સાધના અને 'છે["] પડતા કરેલા **ઉપયોગ** 44

ના નય-નિરોય-તર્ક-પ્રમાણને સાધા મીવાદની વિશેષતાઓ ΑŞ

ની નવ્યત્યાયની વિક્લાર્થી જૈન સિદ્ધાન્તો તે માન્યતાઓમાં શં નવીનતા પ્રગડી **¥**3

ના જીવન અને સાદિત્યક વિશ્વમાં આજ સંધીમાં ક્યા ક્યા વિદાને કર્યા કર્યા ٧¥ 13

विकेशन स्थि हे वे ર્વા કર્યાની **અવશિષ્ટ રહેતી આવતા (પ**રા-સ્તવનો સત્તકાઓ ખનાસ્સીકાસ, VΨ 35 તાનવાદ કિયાવાદ લક્તિવાદ ક્રાન્તિકારી વ્યક્તિત. સાથાદેશી, પ્રન્થનામ કરણ रक्ष्य, अन्य स्थला इष्ट, जनुस्तव शुं ध्व वे वे, वचेरे)

અન્ય વિષય સચી

૧ આજના સંતંત વિષયાં શાંતિ સ્થાપવામાં જેની અહિંસા કેવી રીતે સફળ અને ઉપયોગી થાય !

૨ મહારાજ કરી કુમારવાળની વ્યક્તિસાના પ્રસાવ દેવતા દેશા. પર પહેલો અને તેવી શં લાકો થયેલા

ર સ્માદવાદની બાખ્યા અને તેના છવનના વ્યવદારામાં શા ઉપયોગ

૪ ભારતીય દર્શનાર્ધા નવ્યત્વામના પ્રારક્ષ કયારથી થયો ! અને પ્રાચીન ન્યાય અને નવ્યત્વાય वन्येतं अतर अने निरोमताओ।

૫ શ્રી સિંહસેન દિવાકરછ, શ્રી દરિસદસરિક્ષ શ્રી હેમ્પ્યંદાયાર્થંછ, શ્રી વર્શોવિસ્પછ વચ્ચેનું સામ્ય, प्रतीकी पश्चिम करते दीनधर्मनी तेमती सेवाकी

દ જૈતઘર દેવી મહતવા તેના સિદાનો અને તેની પ્રાચીનતા

૭ ગ્રી દ્વેમચદ્રાચાર્યં છતું છવન અને કવન

શ્રી સિદલેમ વ્યાક્તણ ને હેમકાવની વિગતાઓ

ंट क्या<u>रा</u>त्र श्री कीस्सरियरङ ने समाद कान्यर

ળુકુદ ગુજરાતમાં જૈનધર્મ અને તેનુ હિલ્પ સ્થાપન

૧૧ ખલ્દ ગુઝરાનના ગળએા, મંત્રીએા, આવાર્યો અને તેમનું કાર્ય

૧૨ પડદ ગુજરાતમાં જેન વર્મોંગોની સખ્યા અને તેમના અહિંસક છવનની અન્ય ધર્મોંએ ઉપર અસ્ટ

13 ભારતવર્ષના ઉત્કર્વમાં જેન મનિઓ અને ગરવેથોનો કર્યો

૧૪ ગુજરાતીઓ પ્રાક્ત-સરકૃત ભાષામાં ક્યા કથા ગ્રન્થા રચ્યા છે

૧૫ જૈન સિદ્ધન્તો તેના ઉપદેશ અને જૈન સસ્ટીતના પ્રચાર માટે શું હવું જોઈએ.

નોંધ-સત્ર પ્રસંગ્રે જેન સંઘને પ્રાક્ષ્યાવાયેલી કરીવીની તક્ય

यस्त्रस्रविधानिधानाय श्रीयते गौतववणाञ्चान त्या : ॥ वासकशिरोमणिश्रीमदयशोविश्रयसीयणिगरुग्योनमः ।

महाप्रभावक-पुरुषादानीय श्रीकोदणपार्थनाश्रास बागेतमः ॥

ન્યાયાચાર્ય ન્યાયવિશારદ મહો યાધ્યાય યૂબ્ય ૧૦૦૮ શ્રીમદ્ યશાવિજયજીપાણવરની સર્તિના પ્રતિષ્યમહાત્સવ નિમિત્ત મ હલાઈ } શ્રીસંથ–અમંત્રણ પત્રિકા { ગજરાત ॐ ममः परमातम्ह-निधानाय महस्विने । इमीवतीपुरोक्त-पार्थनायाय ताथिने ॥१॥ 🕊

भर्रद्वमुत्रप्रसत गणबररचितं द्वाक्शाङ्गविशाल चित्रे वहर्धरान्त मनिरामध्यमेशांरित सदिवदि । मोक्षाभद्रारमत मतन्त्ररक्ष्मक डेक्सवप्रदीय, भच्या नित्य प्रपर्धे अतमहमखिलं सर्वेत्रोकेस्थारसा १।। न्याचे गौतम एर कोऽपि अपशुग वैशेषिके वहींने. बान्दे राम्बिनरेव व समस्वत् सीमांसके वैभिनि, । स्यादादे व वहीयबद्धिरमका वैद्यार्गिकी स गढ. न्यायानार्थं 'बसो' वर्ति सुनिमहोपाध्याय पाद सम् ॥१॥

સ્વરિત શ્રી પાર્ચિકન પ્રશાસ અક્ષાસભરથાને જિન્સેનોપાગચાદિ ધર્મસ્થાન વિસ્થિત नगरे देवमञ्जानिकारक पुन्यप्रभावक प्रयारमेप्रियक्षय वस्यारक अक्षस प्रम् सह्यवक श्रीहित्यम श्रीयान वजेरे श्रीभक्ष समस्त क्रीय

ડાંમાં પ્રશ્રી લિક શ્રી વિજયદેવસરિ જૈન સંઘ સમસ્તના સવકપાન પ્રકાર સાથે જયજિતેન્દ્ર વાંચરાે.છ. અહિ દેવગુરુમાંથી આનંદ મગલ વર્તાય છે, આપ શ્રીસથના ક્રેશક સમાચાર ઈન્કીએ કોંગ્રે

વિ વિ સાથે સદર્ય જ્યાવવાનું જે—ગઠાયભાવક વ્યર્વપથાસને નિસજયાન શ્રી શ્રીહશ્વ-પા**ર્યાનાશ**, કરિ સામલાપાર્થનાથ, શ્રી પ્રમાટપ્રભાવક પાર્યાનાથ શ્રી અહીંચર ત્રસ વગેરે અતિ પ્રાચીન-પરમાન કદાયક દેવાધિક્ષ-થી જિનેશર લગવતની પ્રતિયાઓથી વ્યવસ્ત, મગનસ ખી-શિખર-મધી. શિક્પ અને કળાના લખ્ય નવાના સમાન અનેક જિન ગદિરા અદિ દોવાથી અમાર **ડા**મેડ શકેર (દર્ભાવતી નગતો) તીર્વભૂમિ જેલુ પવિત્ર સ્થાન મસાય છે વિ. સ. ૧૭૪૩માં અદિ દ્રભોઇમાં સ્વર્ગાસ્ય થયેલા, જૈન સલના પરંચ ઉપકારી, ચહારાજરાતના મહાન લ્લોતિર્ધર પૂજ્ય મહોણાંચાયછ શ્રીમદ યરોાવિજવાજી મહારાજના પવિત્ર ચરલ પદુકાવાળા રજૂલ (સંચાધિસ્થળ) તું વિ. સ ૧૫૪૫ થી વિશ્વમાનપછ થતા, ત રથકા કાઈ ક્રાઈવાર 'ન્યાય'ર્વાન ' પ્રયત થતા ક્રોવાથી તેર જ म्यांभात्मिक वातःवर्धा गाटे जन्यस स्वत्र जनवाने अने मा तीर्वक्षित्रनी संदत्तामा भूभ पृद्धि શર્ધ છે. અને તેથી જ લગભા ઘણા ગરા આગાર્ય ચઢાવ્યદિ મૂહ્ય સુનિવસ આ પવિત્ર સચિના દર્શત-સ્પર્શન માટે આજ સધીમાં પધાર્યા છે. કાળકોને આ સમાધિસ્થળ (ત્યુલ) છછાં થતાં-પત્મપાદ, શાસન પ્રભાવક, શહપ્રસ્પક, આવાર્ષ મહારાજ ૧૦૦૮ શ્રીમાન વિજય માહનસરી ધરજ મહારાજના પદ્દાલકાર, યુન્યપ્રવર, પ્રાતસ્થાસથીય વ્યાચાર્ય સહારાજ ૧૦૦૮ શ્રીમાન વિજય-પ્રતાપસરી શ્વરજી મહારાજ, તથા તેમના જિલ્લાન વિદેશ તાનિક વ્યાપ્યતા, પરમયુન્ય

વળી અર મંત્રલ પ્રસાવ સાથે લીધુત પાતાચદ વાપુલાત વડ્ડળવાળાની સુપુત્રી ખાદકુમારિકા જાસદ ખહેત પવિત્ર સાવતાની હોક્કા પ્રસાથક કરવાના છે.

—ઃ જેનાં શુભ સહતાં આ પ્રમાણે છે :—

ફાંગણ વિકે ર સાંભવાર તા ૧-૩-૫૩ પૂન્ય જાવાર્ય થી વિજયાલપદ્ધીયરછ તથા પૂન્ય ભાવાર્ય થી આફ્રેક્સાયરદ્ધીયરછ માર્ક ગ્રાંત્વરોનો મેરેલ પક્ષેતલ્વ અને પ્રતા માર્થિયેક, ત્રેલ ૪ પ્રતા

" ૫ બ્રુફ્લાર તા ૫-૩-૫૩ સવરે જાસુલ્લ્હેનની દીક્ષાના નરમોડા તથા દીક્ષાની મગલ કિયા અને ભપેલ પ્રજા.

જ્યાર જ કરાયા કે ક્ષેત્ર કર્યા ક ક્ષેત્ર કર્યા ક ક્ષ્મ કર્યા કરા કર્યા કરા કર્યા કરા કર્યા કર્યા કરા કરા કર્યા કરા કરા કર્યા કર્યા કર્યા કરા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કરા કર્યા કરા કર્યા કર્યા કરા કર્યા કરા કર્યા કરા કરા કર્યા કરા કર્યા કરા કર્યા કરા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કરા કરા કરા કર્યા કરા કરા કર્યા કરા કર્યા કરા કરા કરા કર્યા કર્યા કરા કરા ક

" " ક શનિવાર તા. હ-3-પ3 સારો ૮-૩૦ સાથે યૂ ઉપાપાલકની સર્તિ તથા પાલ્ટડા કળા વરેરેના. અભિષેક અને નિજવાદ્વર્શ પ્રતિકાર-તથા ત્યોરે ૧-૩૦ લ્લપો ' ગ્રીસ્ટામાનિયમ સાસ્ટરતાસ્તર ' (તાન વગ)ડું હસ્યાત- હપ્યત સ્થાપે ન સ્થે ' ૨૧૬ ' દીપદેતી હવ્ય વૈષ્ણિત્ય.

" " (સેવિવાર તા. ૮-૩-૫૩ જ્ઞતના બીજા લિસનો: બાર્યનો કાર્યક્રમ—જેન —જેતેવર વિદ્યાના પ્રવચતા અને નિગધ તે ઉપરાંત કમેશા લાવ્ય અગરવાના, સંગે લાવના તથા બહેનોની ધર્યગીદા રાખવામાં આવશે પુષ્ય-લાવના સાટે અર્થિતા બહીતા સ્પેશિક્સ થીયુલ સુલક્ષ્માઈ મુન્લિયા તથા મારુર મુંદરલાય સુલક્ષ્માઈ ઉપરાંત સુલકાર પ્રભુલાિવામાં સ્થા યોધુન ગોહનલાલ પાનાવદ સંતવાલા તથા પાસા તેને મારીત સંગા પણ આવનાર છે.

વિધિ-વિધાન માટે ધર્માં જાલાણું શેષિકાનાં ભાલાલાઇ ઉત્તમનાદ દુસ્તવાલા તથા અને પ્રદેશ મા ચોલાલા ચાર પ્રસ્તાના તથા અને પ્રદેશ છે. આ ચોલાલા ચાર પ્રસ્તાના કુનિયાલ આનનાર છે આ ચોલાલા ચાર પ્રક્રિયાની સ્થનાર તેવા જ તેઓવી તથા મા હતાલિયાત તથા સુંદિત દુનિરાદું તથા પ્ર દુ જ્યાં પાયછની સ્વાફસ્તાસાફારી પ્રતિઓનું તથા તેને સ્થાપલ અને શિલ્પકાલાનું સુંદર ' સાહિત્ય પ્રક્રીરને ' પણ ચોલાવાલાં આવતા છે

વળી આ શુષ પ્રસારે અધારી આકાલભી કિનોનો રવીકાર કરી યૂ આયાર્ય શે તિન્ન પ્રનાયસ્થિત્યક મહારાન, યૂ આવાર્ય શે સાફેક્શાસ્તર્ર પ્રકારાન, યૂ આવાર્ય શે સાફેક્શાસ્તર્ર પ્રકારાન, યૂ આવાર્ય શે તિન્ય વર્ષસ્થિત્ર અહિરાન, પ્રસારમાં કૃતિકો અનિ અનાર્ત નિત્યલ્ય અરાગત, સુવિકો અનિકિત્યલ્ય કૃતિશે વાયરસ્તિતિત્યલ્ય, કૃતિકો આને લિન્યલ્ય કૃતિશે નાયરસ્તિતિત્યલ્ય, કૃતિકો અનાર્તિ વિભાગ સર્વેક સિલ્ય-પ્રતિમોત્તા ચંદ્રા સાથે અદિ પ્રધારાના છે. આપને પણ અનારી આદ્યાલા અહિંત છે કે—આ શુલ પ્રસારે વાય પંચાર શાસને શિલ્ય કિત કરોક અહિં આવાર્યો અહિંત લાભ વિનાર્યો, ચોંદ્રમાર્તિક ત્યાદ્ર સાસને શિલ્ય કિત કરોક અહિં આવાર્યો અહિંતા લાભ વિનાર્યો, ચોંદ્રમાર્તિક ત્યાદ્ર સાસને શિલ્ય લાભ પ્રદેશ સામને સ્વારાય કિત સામને કૃતિ કરોક લાભ કૃત્ય લાભ પ્રદેશ સામને સ્વારાય કૃતિ કરોક લાભ પ્રદેશ લાભ પ્રદેશ સામને સ્વારાય કૃતિ સામને લાભ પ્રદેશ લાભ પ્રદેશ લાભ પ્રદેશ સ્ત્રીન સર્યાન સ્ત્રેન-નારન, આપ્યામાં ત્રસ્તુનો પણ લાભ પ્રદેશ લાભ પ્રદેશ સ્ત્રીન સર્યન સ્ત્રેન-નારન, આપ્યામાં ત્રસ્તુન લાભ પ્રદેશ લાભ પ્રદેશ લાખ પ્રદેશ સ્ત્રીન સર્યાન સ્ત્રેન-નારન, આપ્યામાં ત્રસ્તુન લાભ પ્રદેશ લાખ પ્રદેશ લાખ

સુ, હેલો ઇ કે શેમાલી વરા **દાંક દ્વાપ**ંક ધરમચંકની પેઢી સંવત ૨૦૦૯, કારલા સ ૧૩ સખ્વાર

લિંદ શ્રી **વિજય દેવસ્**રિ **જેન સંઘનાં** સ્ત્રકૃષાન પ્રકાય વધરોછ

તા. য় ' અક્ષર ચારણી ગામનાર સાધાર્થિ'ક લાઈંગા બેટેલ માટે ફાયજૂ વર્ષે ૧-૫-૮ (ફાક-શીન-વિ?) સાંતિ કરવાની ગમાની લાહના છે. ગાબતાર લાઈંગા-બેટેન્ટેન્ટિલ્લેન્ટ્રે સાથે શાવવા વિન ક્ષિ & તેકારા-વિશ્વાદિતી હતા પ્રવાસભાર સ્ટેક્ટરની રોમન ચોડી લાહિના પોધામાં પ્રદેશનો ક્ષેત્રિક લેવા માટે રેસ્કેની સમાવારી શાંબ ટ્રેડિયોની ચાર-પોચ ચાંક્ર્યોમ સ્ટે છે.

- डीध न डरवा विधे -

જમ લગ સમતા કૃષ્ણું નહિ આવે, જગ લગેં કોંગ વ્યાપક હે અંતર; તભ લગેં લેંગ ન સાહાવે. જગ૦ ૧

ખાજ્ઞાક્રિયા કરે કંપટ કેળવે, ફિર વા અહંત કહાવે, પક્ષપાત કબહે નહિં છાર્ડ, ઉત્તકું કુગતિ બાહાવે. જબાગ્ર

તોંધ : સત્ર પ્રસારે ળહાર પડેશા પોસ્ટરની નક્કા-

श्रीठोडणपार्श्वनायाय समः

4 વેલા ડેમાર્ક 4

જૈન શાસન દીપક, ગૂર્ય કે હિસ, સત્ય વર્ષક, તિમાં વ અને સાથાં સમાહેતાક, જૈન ભગતમાં નવ્ય નાયતા ચીમણેક મહાના, સફન — પ્રાહૃત તેમ જ ગુજે દિશે હોકલાવામાં પણ હમ્પક, સામક સામને વિપુત્ર સાહિત્ય સ્તપુત્ર અનુષ્ય સસ્થાળ પેરતા, 'લાગુહિલ્લા,' અને 'હિતીલ હોમ્પક 'તું ગોત્તરા વિપુત્ર સાહિત્ય સ્તપુત્ર અંધો જેના વિશાના પાંચમાં કંતર વિદ્યાંતા સમાહ જૈન દર્યાને વિજય પ્રાધ્ય કંતર કર્યાના સ્ત્રેન કર્યાને તેમ અંધો એનો વિશાના પાંચમાં કંતરી સ્તરૃષ્ઠિ રાખતા, નિર્મળ શહ્ય અને પાંચન સ્ત્રેન સ્ત્રેન સાંચમાં પ્રતિમાના પૂજ્યમાં, સમ્પર્ણાત્રના આદ્યાલ્ય કર્યા કર્યાના દ્વારાભ્યાં, મહારાવાસ્ત્ર, મહારાવાસ્ત્ર, મહારાવાસ્ત્ર, મહારાવાસ્ત્ર, સ્ત્રેન પ્રતિમાન ત્રફ મહિરાય સ્ત્રાપ્ત સાંચ મારા મારા સફના ત્રફ પ્રદિવા સાંચ ' નામોત્સાસ પ્રસ્ત્રનો લિંદા પરિત્રમાં :—

અવશ્ય હેલાઈ પદ્યારા

સત્રના પ્રસુખ: તકે ત્રીમાંસા ન્યાયરતનાકર દાર્શનિક વિદ્વાન શ્રીમાન્ કથાયંક્રજ પંજનો સાહિત પ્રદર્શનનું કરવાડન : શેક પરસાદભકાસ સુરચંદ ધાત્રધાવાળાના ગુજ હસ્તે થશે.

કાર્યક્રેમ

કાગણ વદિ ૭ શનિવાર, તા. ૭ માર્ચ[°].

સવારે ૧૧—૪૫ કલાકે પ્રતિષ્ઠા.

પ્રતિકાર્કાર્ય પુત્રમાદ વ્યાગમ લીગદ્ નિત્રય પ્રતાપક્ષિત્રજી સહરાજ તથા પૂર આચાર્ય ગીગદ્ માણેક્શાંગર સરીવરજી ગહારાજ, પૂત્રમાદ આચાર્ય ત્રીગદ્ નિત્ર્યવર્યમૃત્રિજી સહારાજ તથા પૂ સહારાજગી પહેલિજગજી વેરીની વ્યાપક્ષતામાં હશે

ભપોરે ? વાગે શ્રી યસાવિજ્યાછ સારસ્વત સત્રતું ઉદ્ધાતન,
 અને સત્રના પ્રસમ્મશ્રે વગેરનાં શાયલ.

કાગણ વદ ૮ રવિવાર, તા. ૮ માર્ચ.

રે. સવારે ૯ કલાકે સંસ્કૃત વિદ્વાનાનાં જેન સંસ્કૃતિને લગતાં પ્રવચના.

ર. ખપારે ર કલાકે નિખધ વાચન વગેરેના ભસ્યક કાર્યક્રમ.

આ સિવાય અન્ય વિરુત્ત કાર્યક્રમ તથા લક્તિરસનો આપ્યાહિયક તાર્યક્રમ વગેરે પ્રસંગ ઉપર સ્થાનિક કહેર દ્રસ્ટો

ત્રીમા**ળા** વસા, **ડભો**ર્સ્ક તિર્ધિફા દ્વર્ષિદ્ધ મં. ૨૦૦૯

民語を投資を対象が対象であって、日

;

н

શ્રી વિજય દેવસૃષ્ટિ જૈન સંઘ

તથા શ્રી 'વરોાવિજયછ સાસ્ત્વત સત્ર' સમિતિ

નોંધ : વ્યક્તિયત ગ્રાહ્કલવામાં આવેલી યુજવાતી, ઇવ્લીણ પૈકી યુજરાતી આમંત્રણ પત્રિકાનો તસૂતો.

श्चयन्त बीतराबाः 1

श्री यद्योविषय सारस्वतसत्र पहोत्सव

निसंत्रण पत्रिका

स्थल : समोई. [न्योदरा बीहो, गूनरात]

रुवाणी तिथि : फानण वृद्धि सातम, आउम. वार : शनि, रवि रुवाणी तरीव : मार्च : सातमी, आउमी,

શીમાન્,

સંત્રમન્ ગૂર્લ્ય સુવિધાં સત્તરમાં લદીના ઉત્તરાર્યમાં વ્યવત્યા વાર્ક્ષાનનેના, સે ત્યાં પ્રથાના, સ્થિતા, ત્યાર, વ્યાસભુ, સાંક્ષિત, વ્યાસણ, કર, કાવ્ય, તર્ક, કિલ્માન, વ્યાસમ, ત્યા, પ્રમાણ, વ્યાસમ, પ્રેત, પ્રમાણા, વ્યાચાર, તત્વનાના, ઉપદેશ કંત્યાક દિવશે ઉપર સંસ્તૃત, પ્રમુત અને સાધ્યાન અતતા પ્રેટ્સનાની વાર્કે લોક લાધ્યા પણ, વિષ્યુ લાહિતનો સ્થાપા પ્રસ્તાર, ત્યાન ત્યાપના વાલ કેન વિદાન, પાત પ્રસ્તા કુનાંથી સાંદ, ત્યાયાવાર્ય, ત્યાન-દિવાસાદ, નિસ્ત્રોન પ્રાપ્ત સત્યાન, હાત્યારિથિ અદ્યોધા થી. ૧૯૦૮ શ્રી પ્રેર્ણા સ્થાપાય સ્થાપા

તે સ્થાપે હાલવાં ભારતમાં નવીન લખ્ય 'લૂઘ'-ગુરુ પહિલી રચના કરવામાં ભારેલી છે. તેની પ્રતિભાત શુલ ભરકારે જિ લા. ૨ નન્દના ક્ષારાન લાલતી કૃષ્ણસાની વિતિ સંત્રવો-અદાગી. તા. ૯-૩-પેડ અને તા. ૮-૭-પેંચને શતે અને ઉલ્લારના જિલ્લોઓ ' કરી પશેલીવિખયછ' સારસ્વત સાર ? શે. એક પ્રતિભાવની વીજના કરાવાં ભારતી છે.

સ્ત્રા સત્તું પ્રભુખાદ સ્ત્રીકારના પંજાન-વાઢેકરના દાર્શનિક વિદ્રાન પંડીતજી શ્રીમાન ક્ષ્યાસ્થ્યાંક્ષ્ટાએ અદ્યત્રનિ આપી છે

મ્મા, પ્રત્યે ભારતવાંના અને ખાસ કરીને ગુજરાતના વિદ્વાનો એક્ટ સાય અને ઉપાંધાય-જના પ્રેરક અને આકર્ત જીવન ઉપર પ્રકાશ ફેંકે તેમ જ પરસ્પર સમ્પય ગ્રાનચોકી કરે મેવી સમિતિની હાર્ડિક ઇન્ઝ છે.

મ્પાપને આ મહેત્સનમાં લાગ લેવા અમાર હલ્યપૂર્વકનું નિયંત્રણ છે.

મ્પાશ છે કે આ ગ્રાનાત્સવ સગગ લહતી ગાપી ગાપ ગમાને ગાલારી કરશા.

જ્જ્ઞો વશાસા (ગ્રે.) [સ્ટેશન અનાર્સ] સુ વસ્ત્રાર્સ શ્રી વિજય દેવાણ દેવન સુધ તરફથી ભાલચંદ જેઠાલાલ પ્રત્યમાં સ્વાપત મહિત

∓ સર્જક્રમ **±**

स्थण : उनेगर्श

સ્થાન : શ્રીસાળી વાગા

तिथि : अगध वहि ७]

િતા. ૭-૩-૫૩ શ તેવાર

ગ્રાપ્ટ અધારતા : ૧ન્-૩૦ શી. ૫--૩૦

૧. સગલાયસમ અને પ્રાથમા

२. श्री व्योविकवळ हान-सादित प्रदर्शनन दिवाटन

क्षा जास्य ह क्रेप्रवास a સ્વાગત પ્રભાગનું ભાવલ,

Y सारस्यत सत्रत श्रिमाटन व्यते प्रस्थन

प अर्रेशः वास्त्रन

વિદક્ષાં દારાંતિક વિદાન શીમાન ६ सत्रनाः अक्षणन व्यापद्यः

ક્શિસ્થંદ્રક (પંતામી)

m तिल्हा वाक्षताहि

સમય રાતના : ૮-૩૦ થી ૧૦-૩૦

? જણીતા સંગીતકારા દારા ઉપાંચાયછનાં પ્રાપ્ત મિક કાલ ગીતા. અને क्याध्यायक रियत आध्यात्मिक बहोती रसल्हाश वजेरै [તા. ૮-૩-૫૩ રવિવાર

સમય સવારના : ૯ થી ૧૨

९ अञ्चलका—आर्थ^रना

તિચિ: કાગ છા વદિ ૮]

ર સત્રના વ્યવસ રહેલા કાર્યક્રમ

a सरक्त विद्वानानी संबा

૪ ઉપાધાયછના છવન ઉપર તથા અહિસા અને સ્વાદવાદ ધર્ય અગે પ્રવચના

તે સરકત ભાષામાં સવાદની ત્રલક

મામ ભાગમાં કે શી ૧-૧૦

. जिल्ला वारानाहि

ર ઉપાધ્યાયજીનાં સાહિત્યના પ્રકાશન અને પ્રયાર અગે વિચાર વિમર્શ

इरावे। अने लाईरावें।

૪. જેપસતાર

५. साक्षार अध्यक्षि वजेरे

 સત્રની પ્રયોવાઢી સમાધ્ય થયા બાદ પુ. જેનાચાર્ય વિજય ધર્મસરિજના સમક્ષ આશીર્વાદ અને ૫૦ મૃતિ શ્રી મસોવિત્રવજીન ઉદયોધન.

શ્રી યશાવિજય સારસ્વત સત્ર સમિતિ

-: mgii :--

ખાલમાં ક એકાલાસ સાલ કાલ-પીલર, આકોર્ડ મ્યુનિક્સાલીની મંત્રી, તેકે દેવાર ધરાવાર પેતી, હેલાક્રંડ મગતલાલ ગીરુનાકંક સાલી કાલિ-વર્જ્ય પ્રમુખ, શાસપા સાહિ-વર્જ્ય, હેલાક્રંડ ચંદ્રલાલ હિંમતલાલ સાલ કાર્યાંધ્રિકારી, સ્મારક સચિતિ, હેલાક્રંડ કાર્યાંધ્રકારી, સ્મારક સચિતિ, હેલાક્રંડ હાલાંધાર્માં નાયાલાલ સાલ હાલાંધ્રકારી, સ્મારક સચિતિ, હેલાક્રંડ લાલ્યાંધ્રકારી, સ્મારક સચિતિ, હેલાક્રંડ લાલ્યાંધ્રકારી, સ્મારક સચિતિ, હેલાક્રંડ

નિવૃત્ત સુખ્ય અધ્યાપક, સંજઈમ સસ્કૃત મહાનિવાલય, વડાકરા પ્રેમ કેશવલાલ કિ મતશાય કામકાર એન એ. અર્થાસાએ એને ઇલંદાસ, મહાનિવાલય, વહેસવિવાનઅસ્ ઉમાતના પ્રેમાત ર શાહ તેમ. મે. વેદારા 'દિલ લાભવાં, સવાનાસા માંગ સ્પારં તેમ પીત્ર, પ્રામ્ય વિલ્લામાં, વંદારા તે. સેમ્પાલન એ સાહેમાં તેમાર પં તેમાત, વ્યાપ્ય, કાળવાં નિયામાં, સો પ્રદારાન સ્પાદવાલ વિલિવાસન, વદારાનું લાભવાં ક તેલાલ સાલ સાચીપાતરી, ત્રો પ્રુપ્તિમાં વર્ષને મોદનાના સાથે તેમાં પ્રતિવાસના સાથે સાથે, ત્રો વહેદરા મોળવવાંથા સચ્ચા, વદારાનુ સાંગ્રી, ત્રો વહેદરા મોળવવાંથા સચ્ચા, વદારાનુ સાંગ્રીનાલ શેક્તિલાલ સામ

ક્ષક-સીવર, હંવાઈ માનિસિયાનીડી

क्रमान्त्र अवस्थात कृष

એલએલ, બ

અતિવાર્ય લ રોગોને કારણે આપ પ્રત્યક્ષ સાથ લઈ શકે. તેમ ન હો તેક આપનો સર્વિદી પણ અમને પ્રેરણા રૂપ ળતરો

સેપનાંચ્યા : ૧. માપ ક્યારે પ્રાણો તેવી અહ મામાંથી કરવા ખાસ વિવૃત્તિ છે ૧. અને ત્યાં સુધી સુંવાર્ત સાધ્ય સાથે લાવવા વિવૃત્તિ . ૧ એટાવ ઉપર સ્વવ તેવાર હામર સુંદેશ.

 લ્લાઇ આવશ માટે વેચાર્ય 'સેન્કના વહેલા પાસેના દિવાચિત્રી, પ્રવાપનગ સ્ટેસનથી તથા સાયગામથી સવાચી માંત્ર સુધી ટ્રેડા મધ્યે છે.

ત્રોધ—દબેલામાં પ્રતિજ્ઞ અને સત્રની સક્લાતા સાટે નિમાણોલી સમિતિછો અને મળ્યોનાં નાંધો

श्री यशे।बिक्रय भारस्वत सत्र तथा प्रतिष्टा निभिन्ते प्राप्तप्रकर स्रांशे निभायेखी समितिनां नामा

૧-સ્વાગત સમિતિ (૧) શેર નગીનદાસ દાસતભાદ

(૨) શેઠ ક્કીરચંદ મગનલાલ

(૩) વરીલ જંગનલાલ કાંગલાલ रि। शास हारासास स्वस मसाह

(પ) શાહ હિંમતલાલ ગાપલાઈ (६) शाब क्रासाझ भागभात्र

(७) शाह अवश्वास गुसामय ह (८) शाद राजधान ३५०२थ'इ

ર-ઉતારા સમિતિ

(१) शाब सं'द्रबाह विश्वभवाह (ર) શાહ ચંપકલાલ ખુશાલવંદ

(૩) શાહ નગીનકાસ કેશવલાલ

(૪) શાહ મહિલાલ ત્રિક્ષાવનદાસ (म) शाद रमहालास यनिसास

3-શ્રીહા સમિતિ

(૧) શાહિતલાલ હિંગતલાલ (ક) જ્યવશાસ દલસમલાણ

(૩) જવાલાલ ગલાવવાંદ

(१) મદ્યજનાર્ધ સુનિલાલ

(૫) ચીમનલાલ માતિલાશ

(૧) નગીનદાસ દ્રાઇતભાઇ

(૭) પ્રશાહ્ય ક સવાનીદાસ (/) અખાલાલ ત્રિભાવનદાસ

x=अ.९७ अजिलि

(૧) શાહ કીકભાઇ સગનલાલ

(૨) શાહ ત્રિકમલાલ સવાઇચ'દ

(3) સાહ ભાઈલાલ ચંદ્રલાલ

(૪) સાહ જવન્તિલાલ ચનિલાલ

(४) शाह य'पडेबाब संबद्धभार्म (६) राह यह्यशास विस्मास

પ-ઉકાળેલા પાણીની સમિતિ शास स्रीअसास मजीमधन

દ-હાવાના પાણીની સમિતિ શાય તાલભાર ગુક્કાલાય

છ-પ્રદેશિય અભિતિ

(૧) મક્તલાલ ક્કોરયાંક

(૨) સમગ્રહાલ નગીનદાસ (૩) રમભલાલ ચ'દલાકા

(૪) રમણશાલ પીતામ્બરદાસ

૮-પૂલ્વ ગ્રતિષ્ઠા કાર્યવાહી સમિતિ

(૧) શાહ ભાલભાઈ ગીરધરલાલ

(५) शाह व्ययनवसस ग्राधाकार्य

(૩) શાહ હીસલાલ ત્રિભાવનદાસ

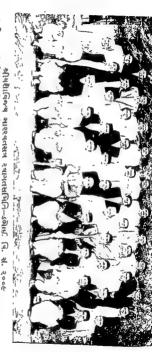
નાણા ખાતું અને હિસાળ ખાતું शाह शहासास नामासास

पूर्व ना कर दार व दोन को ना पेक्स ने प्रदेश हैं कुछ ना दिन कर रहे हैं के स्वारित है के विकास कर कि स्वारित है के वह स्वर्ध है के वह स्वारित है के व

प्रशेष भागने में मुचितिक ही नम्मिक अपना । एन के आजरे, ने भी जात होना कर मार्थ है नम् जित्र मार्थ कर स्थाप के स्थाप के स्थाप कर स्थाप के स्थाप कर स्थाप के स्याप के स्थाप के

स्याप्रविद्यास्य स्यायायाय महोपाऱ्याय श्रीवसोनियकवी सहाराजना हस्सान्तर (अस्तु नामीरास)

[मुनिधी पुष्पविजयजीना संबद्धमानी]



આમરાદ્યાં પુરું કર્યાણ પુષ્ટામું મુખ્યામાં પુષ્ટામું માતા માતા મુખ્યામાં મુખ્યામાં મુખ્યામાં મુખ્યામાં મુખ્યામ

BUBLICH ો. રમેશિક્લાલ ગામ ચિવકાર, प्राप्ताल व्यम भाग्तर, mile of shelpine

ત્રીજી લાઈન : બીજ લાર્કન : શ્રી અમૃતલાલ ડી. સાલ, બી ગકતલાલ અંક નાહ, બી નગીનદાસ અન ગામ, બી ગાલચલ્છ ગામ. એ ઓમ્ઝરલાલ રી ગાલ, થી વાડીલાલ બી એસ. ગાલ, થી સાન્નિલાલ એસ ગાલ, બી પ્રયુરદાસ એન ગાલ, શ્રી, મગતલાલ ડી. રામપુરાવાલા, તાંત, શ્રી. મકતલાલ ટી શાત, ત્રી ઓમ્પઝવલાલ સી ગાત, શ્રી સપકલાલ કે ગાત રાખ, શ્રી રાત્નીલાલ ખી. રાહ્ય, શ્રી ભાકલાલ ગી વસો દર શ્રી મહિલાલ કી

તાંધ-તા. ૨૧-૧-૫આ જેન સાધાહિક પગમાં પ્રતિષ્ઠા અને સંત્રોત્સવ અગે પ્રવહ યોગેશા વિગતવાર વેવાલાના ઉતાસ અર્થોથી શરૂ થાવ છે. સંપાન

ડસાઇના આંગણે, મહાન જ્યાતિર્ધર જૈન-શાસનના પરમત્રબાવક

પૂ. ઉપાધ્યાયછ મહારાજ શ્રીમદ્ યશાવિજયછ મહારાજની મૂર્તિની બવ્ય પ્રતિકા

શ્રીયશાવિજયસારસ્વતસત્ર મહાત્સવની દળદળાભરી અભૃતપૂર્વ ઉજવણી

દેશના ભુદા ભુદા સ્થળાએથી આવેલા વિદ્રાનો અને અન્ય વક્તાએએ આપેલી સાવસરી અલાંજલિએા

પૂ, ઉપાધ્યાયછના મહાન સાહિત્યના સુરણ ગારેની ગયીલને સભામાંથી મળેલા આવસર

પસાર ધર્મેલા અહુવના કરાવેા, દેશભરમાંથી આવેલા અભિનંદનના સંખ્યાળન સંદેશાઓ

શ્રી પશોપિયલ છેન સાહિત પ્રદર્શનના હનારે લેકોએ લીધેલે લાસ આ નિષિત અમાર્થ સબા વસ્ત્રા બુલ કથતના આવેલા સુખદ અંત

ઉપાધ્યાયજી મહારાજની ભવ્ય મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા તથા શ્રીયશાવિજય સારસ્વત સત્ર–પૂર્તિ

સાધાનપતિ રુપણ લગભાન પહલીસું નિર્વાણ થયા લગભાર ગ્રાપ્ટે ગમી લગભ વસ્ત થયા. એમ છતાં એ મહારીસ પ્રશુનું સાધન ગાલ્ય સુધી આવિષ્યભાષ્ટ્રો એ ગાસ્યું છે ગમે હવે પછી લગભગ સાધ ગ્રાપ્ટા હતર વસ્ત સુધી અવિષ્યભાષ્ટ્રો ગાલશે તે સાસનમાં થયેલા તે ઘનાગ ત્યાંથી વૈરાણી તે ગીતાપ્રે આયાર્થ-લપાંચાયાદિ મહાસુધોને ગાલશે છે

ક્ષમથુ રાગાન મહાવીતેલના શાસનામ સિલ્કોન નિયકરણ મી બિનાર માણે, મી હ્રિસ્સિકિશ, ની હ્રેસ્થ સ્ટ્રિજિ મી હીસ્સરિજ મારિ મનેક સહાપુરોધ થયા છે, એને નેન સમાજ માળા-પી મી પીઅહી છે પણ સત્તમી સદ્યાં પરેવા તેને તામનાસ્થાર ન્યામાનાર્થં નાવવિષ્ઠારત તાર્કિકેરિશેમિયું વાસનોમ્પા સહેવામાં મીમ્યુ પેકોવિજનજ કે તેઓને ત્રણ હ્રિકિશ દ્વાર્થ ક્ષેત્રપાદ, અને કૂર્યાંથી શાસના નિર્ફેટ પ્રાપ્ત થયા હતા તે પ્રત્યોક પુત્રસ્તા માળી તેને સમાજ પૂત્ર જ અપરિચિત છે તો તેનેતર સમાજ મેં મહીના જનને કનાથી કવાંથી પરિચિત હોય કે

વિ. સ. ૨૦૦૭ના માત્રસર સહ ૧૧ ના મગળ ક્લિસે અબુતપૂર્વ જ્રયધાન તપની યાદગાર આસંધના પ્રસારે સંખર્ક ભાગખાલા સાતીસા રોડના ચંડપત્રા હજારા સાલસોની હાજરી વચ્ચે આચાર્પ શ્રી વિજયપ્રતાપસરિક્ષ, ગ્યા શ્રી વિજયધર્મસરિક્ષતી અધ્યક્ષતાર્યા સનિયવર શ્રી યુક્ષેવિજયકાની પ્રેરક્ષાંથી મુંબર્દની ૨૨ સરયાઓના આગળ નીચે જે દિવસતા એ પુત્રવ ઉપાધ્યાયજીના સહાતવાદ ઉત્સવ ઉજવારા ત્યાન્યા એ જૈન જરુરના જ્યાતિર્ધર સદ્ભાષકથના નામચી, કાર્યથી અને છવનથી સમાજ પરિચિત થતા માર્જોર ક્ષપરાંત તેઓશીની સ્વર્ગભત્રિ હેલાઈ મતમે વિદ્યમાન એ સહર્ષિના ચરસપાદકાવાળા રમામતા જીગોદાર કરવા સામધી, તે મહાપદાવત જીવતચરિત્ર તૈવાર કરવા સામધી અને એ મહાત્માત સાહિત પ્રકાશન કરવા સાગાંધી અનેક ગંગલસ્થ વિચારભાઓ શકી યુક્ય મુનિસંતોએ કપદેશ દારા ખૂન પ્રાપ્તાહન આપ્યુ, શ્રીમંત આગેવાનાએ શાસનના એ કપકારી ચઢાપુરૂપના સ્થાગ્ક કરવા માટેતા કપદેશ શ્રીઓ અને તેજ અવસરે લગભ દરોક દળભુ સુંદર કુંદ થતાં શ્રેક જીવતશાસ પ્રતાપસી, રેઠ ભાઈપદ નગીનભાઈ, તેઠ મૂળચાદ વાડીલાલ, ગેઠ સમનલાલ સૂત્રચંદ રેઠ કહેદચાદ હવેરચાદ, સાઢ ધીરુજવાલ દાકરશી. શા. દીપયદ મગનલાલ વિ.ની એક સ્થારક સમિતિ તિમવામાં આવી સ્મારકસમિતિ અતે ડપ્રાર્ધના સાથ નવ્નેના સહકારવી લ્લ્રોોદાર તે લ્લનચરિવ તૈયાર કરવાના નિર્કાય પ્રેમ સ્થમ-સ્તપના કર્સોદારતા નિર્ભય અમલમા પ્રથમ મુકાયા. વિ. સં ૨૦૦૭ ગ્રાવણ સૃદિ ૧૩ના ગુભ દીરતે **ડો**નોઈમાં આચાર્ય ત્રી વ્યયનસરિધરજીની વ્યવસનામાં ઉદારચર્જિત ગેઠ વાડીલાલ સત્રબુ છે. પી. (મંતર્ધ) ઘાડકાપરવાળા પ્રકાળ આત્માના ગુમ હતો ખૂન જ ઉત્સાદ વચ્ચે હિલારોપણન મંત્રન વિધાન થયું. રોડગ્રોએ ર. ૨૫૦૦ ની સખાવન જાદેર કરી અને હેનોઈના ગ્રીસવે પણ લેચના સ્મારક માટે ઘમસત્ર ર. ૨૦૦૦ તી ડીય તે વખતે કરી. સ્થાપત્ય-કળાપ્રેમી મુનિગ્રો વરોવિચ્યઝની સ્થયના મુજય મતેરમ પ્તાન મીઝી ન દ્વાર સુનીનાર સોમપુરાએ તૈયાર કર્યો અને ભવ્ય મકરાણાના આરસને જ ગુરુમદિર મુંદ રીતે તૈયાર થઇ, એ ગુરુમિક્સમાં તેઓગ્રીની સર્વિત નિરાજમાન કરવાના રામ નિર્ણય થયા દિ. સં. २००५ अस्त पदि ५ ने सनियानी यस हीत्या के अवत्रपूर्व आहे नहीं अवार्त आयो



શ્રામશાવિજય સારસ્વતસનેક્ષસ ર પ્રસંગે, યુ ઉપાધ્યાયછ શ્રીયશાવિજયછ અહા-રાજની મૃતિની પ્રતિષ્ઠા નિખિત્તે એક ઉત્સવ પણ રાખવામાં આવેલા, તે પ્રસંગે - બીક્રેએલા વરવોદાનું દત્ય



શ્રીમુર્ગાવિલ્લ સારરાતરાતનું વિ લ રાવ્ય ના સમલ્ વિ છ-૮ તા. ૭-૮/૩/૫૩, રેલ જેપાગ્ના દેશ વાગે હત્વો માલસોની હાજરીમા હદ્યાદ્ય પ્રમુખ તર્દીક પ્લાસ્ત્રા મુખ્ય આવકાં કાર્યોના લગ્ન સૌધુ તે પ્રસ્ત રેખ સ્વસ્થ જાદાયાના હતો હદ્યાદન સ્ત્રુ તેનુ દ્વસ આ જીપીમાં પ્રદેખનાં પ્રસાત હદ્યાદીના હતો હદ્યાદન વાલ્યું કરી રહ્યા છે



સભતું ઉદ્દેશાંઠન થયા ભાદ શ્રીયરોાવિજય સારવસ્ત્રતરાત્રન સમિનિ ર બોર્ઇના સ્વાગત પ્રશુખ શા ભાવસ્ત્ર હેરાલાઈ એ, સત્ર ઉપર પ્યારેશાઓને સ્થાન કાર સ્થાપ્ત સ્વાગન પ્રથમન હેરી રક્ષા છે. ભાવનુમા સનસમિનિના મગીએ! શ્રીનાગદ્રમાર ગકાતી તથા શ્રીજ્યવાદમાં હૈબ ચેડેલા છે



શ્રીમરેશવિલ્વ યાસિન્દરાસ્ત્રની પોલા વ્યિટની મેદકમાં સ્ત્રના વરામલા પ્રદેશન, તર્દ, ત્રીમાસા, ન્યાપત્વાકર, ટાર્કનિક વિદાન શ્રીક્ષ્મસ્ત્રવાછ પત્વધી હત્વારી ત્રાણસોની વિકાળ હાવવીમાં દાઉનિકાસ્ટામ, એરદાર ટેલીમા વિદ્વાપત્વી લાહુષિક પ્રચળ કરી આ છે.

ષ્ઠુનિવર શ્રી યરોાવિજયછની મંગલકામના, અને ' શ્રીયરોાવિજય સાસ્રવત સત્ર 'ની કેંજવણી કરવાના નિર્જુપ

દેવમાં દિયા કે મુક્તા દિરામાં, દેવાધિરેય કે મુક્તેમની માર્તિની પ્રતિકાના પ્રયુ પ્રસાગે મહોત્સવ, પુજા, ભાગી, પ્રભાવતાદિ ક્ષક્તિપ્રધાન કાર્યો તે દરવખતે ચાય છે. અને તે અલગ્ય કરવા મેટલ છે, પરંત આવા શાસનના શાયમાર, ઘર ધર દાર્શનિક વિદાન અને તાર્કિકેટિરેગ્રામિ સ્ક્રાપ્ટળના હાલિત પ્રસારે ત્રાન-गरिवोत्सवनी डेब्यवरी वाब, ते। कैन संभाक छप्तांत कैनेतर संभाकवां के महात्माना छवनने। प्रधाद વધ વિસ્તરવા પાત્રે. એવી શક્ય કાચના સાહિત્યપ્રેત્રી યુનિવર શ્રી વસોવિજવછ, જેએ! શ્રી જન્મે ક્રોપ્રેર્ધના જ છે તેમના હૈયામાં જન્મી વર્ષો થયા ય ઉપાંચાયછને જગતના ચોકમા રજૂ કરી. તેમની મહતા અતે विस्ताते कवात कोरायात थाय काते तेश्वनी कायर साहित्य अविकेती हाल प्रका हारावती रहे की साहे કર્ષક કરવાના સેવેશા અનકાલીન સ્વધાતે પ્રતંત્રપ આપવાની તક જેવી થઈ, વેલ્લોદરીના વડીલ ગુરુદેવા આ. भीमां विक्यप्रतापसंहिक व. तथा जा बीवह विक्यपर्वास्टिकने ते बारे शुक्ष जाराविंद पारव्या अते भन्य क्रेन, क्रेनेतर विद्वान अक्षत्रयो तथा मुहत्योज पद्य जे संदर बावनाने पुन क वधावी सीधी થાન્ય જેત સમગોએ પણ હાર્દિક 21મ આપ્યા પરિસામે ' શ્રી યશોવિકલ સારસ્વત સત્ર ' પ્રતિકા મહોત્સવ સાથે જ ઉજવાનો નિર્દ્યુપ દેવાયા સાથે સાથે સમય લોડો અને અનુકૂળ સાધતાના વ્યક્ષાને. એક તાનુકા સમેતન દારા ૫ કર્યાધાયછની મહાનતા અને તેમના અકરદેહના મુકસામ કરવા અતે તે દારા જાકેર મનતામાં આદેશનો ઉભા કરવા એટલો ટ્રેકી મર્વાદા સત્ર ઉત્સવની નક્કી કરી અને તરત જ અવિધિ-સરતી એક મી.રીંગ વહેલરા શ્રી સહિતકસલ જેન ગાહન શાનગદિર ના પ્રસ્તકાલયના હેલ્લમાં ૫ મનિયો थेरे।बिल्पकर्ती क्रम्प्रधनामां के बवामां ज्ञावी के प्रमंत्रे केन केवेतर विदाने।के दाकरी व्यापी क्रते દેક્ષીક મર્ચા વિચારહ્યાને અને ગગાઉ પાટલમાં શ્રી હૈમસારસ્ત્રત સત્ર ઉભવાએલ ઉપાધ્યાયળ પાસ શ્રી ક્ષેત્રમાં દાચાર્યાં જ એવા મહાન હતા સોવા ગયા પણ હતા એવા સચાન ખ્યાદતે ઉદ્યો કરવા પ્રસ્તાત ઉજવણીને 'શ્રીયશાયિજય સાસ્સ્વત સદ્ય' એવ નાગકરાક કરવામાં આવ્યું, અને તે જ વખતે ચર્ચા-વિચારામાં ખાદ દબોઈ, વડેકારાના જૈન જૈનેતર વિદાના તથા કાર્યકરેની એક સમિતિ નીમાઈ

સત્ર સમિતિના સભ્યાની નાસાવિલ

સાહ ભારત્યાદ એકાલાલ (કાઈ-સોલર એકાં 'સ્તુલિસીવાલીની સત્તો, તેક દેવવદ ઘરાવદાની પેરી, તેલીકી') અમરતાલ ગીસ્ત્વાક માં આવી સાહિત્ય લાભું (અગ્રુપ, વારાવદ સાહિત લાભ-ઓકાં છો, તેલીકાં કેલાલાં (કાળીવાસને, ભારત સત્તિને એકાંછે) રા કાળલાંક ત્યાપાલ દે (કાર્યક્રિક્ટન, ભારતાલ સાલે ત્યાપાલ દે (કાર્યક્રિક્ટન, ભારતાલ સાલે તેવાનો તે કેલાલાં (કાર્યક્રિક્ટન, નેસાર્યક્રા) કેલાલાના હોંગ્યલા કાલસ્તર એમ એ (અપેલાદ અને એ ક્રિક્ટન, સાલિસાલ્ય-નેસારા) કેલાન તો માના દ લાલ (એમ એ વીસાલ) () પૂર્વન, એમ કેલાન સાલિસાલ્ય-નેસારા) કેલાન તો માના દ લાલ (એમ એ વીસાલ) () પૂર્વન, એમ કેલાન સાલિસાલ સાલિસાલ સાલિસાલ સાલે કાલસાલ કેલાન કેલ

વિન તિરૂપે અતેક સ્થળે પાકવેલાં પરિષત્રા

મ્મતે સમિતિના એક લે, ત્રણ ચાર અકવાળા મત્રીએલી સ્દ્રીથી એક પરિપત ત્યાર કરતામાં

આવ્યું અને પૂ લપાંધ્યાયછના છવન અને 'ક્લન 'ક્ષાને તથા તેંગ કર્યન અને તેની' સંસ્કૃતિના વિત્ર ક્ષિત્ર વિશ્લો અને નિગધો તૈયાર કરીને પીડકલાની નિગતિ કરવાથી આવી અને તે પરો સારત અને સારત બારત, સેક્કો વિદ્યાનોને પીડકલાથી આવ્યા અને તેનો ચોતદસ્^{ત્રી} હાર્દિ'ક આવકાર અન્યો. અને અભિત કરના અનેક પેત્રોનો પ્રયક્ષ હજા થયો.

સત્રના ને ઉદ્ઘારનના પ્રસુખ માટેની વરણી

તાર્ક—નાય યોગાંસા-સનાસ-અના ગ્રહુખ માટે દાર્શનિક પં.૫ નાખી શ્રી ધ્યવસ્યદ્રદ્રદ્રોના અને સત્રના ઉદ્દર્યાદન માટે સ્ટ્રનત શ્રેષ્ઠત સુરયદસ્યાઇ જાદામી જન્મના ચિ ગેરીસ્ટર શીમાન પ્રેસત્રધુખસાઇ બદામી (સ્પોલ ક્ષિત્ર કેર્ડ જન્મ સુંબઇ)ના નિર્ણય થયે!

પ્રદર્શન કરવાટન માટે શેક શ્રીપરસાતમકાસની વરણી

ગ્યા પ્રસાગે પૂ જેમાં માલ્ય નિર્ણત વર્ત માત્રમાં પ્રાંખ ગ્રહિત-અફક્તિ સાહિત, તેમ જ દિશ્ય અને સ્થાપન ઉપરાંત વિશ્વસ્થાનું તાનું પ્રસાન ભરવાના તિલું વ થયે. અને સાહિત પ્રકાર્યના જૈવાનન માટે ક્ષેત્રિમાનિયામાં ભર્માતા સામેત્રાસભર કે પુષ્ટોનાનાલસ સ્ટપ્યન્તું નક્કી કરવામાં આવ્યું કેમ ખાલુંથી પ્રતિકા સોક્સન અને બીજી ખાલુંથી અનની જેમ્બ્યાની તીયાંત્રિમાં તામાર, ધપ્યોકાર સરૂ શર્ક ખન્ને પ્રસીધીની ભાષત્રમાં મેનેક્ષાઓ અને પોસ્ટોલ હન્મોની ત્રેમ્બામાં લાશતના નાનાનાતા શરેશ ઉપરાંત માસેનાં પક્ષ વિતેશને સીક્સનાઓ આવ્યા.

બાણીતા જૈનાચાર્યાનાં આગમના ને સુરવાગત

પૂત્રને શાસનંગભાવ સ્થાના ચીમાં જિલ્લેકિક સહીયરછ મહારાબ જા સ્થાન કૃતિ સ્થાન પ્રતિસ્થે ચંદ્રિતિબચ્છ મહારાબ, પૂત્રન આ મી જિલ્લેકિક સહારાબ શરના પ્રેક્ષ પૂત્રન કૃતિસ્થે ચંદ્રિતિબચ્છ મહારાબ દિવરે તિમાન કૃતિ કૃતિ કૃતિસ્થિ ચંદ્રિતિબચ્છ મહારાબ દિવરે તિમાન શુંત્રન કૃતિસ્થે ચંદ્રિતિ સ્થાન સ્ટિક્સ અધ્યાવિકની સ્થાના સ્ટિક્સ સ્થાના અંદ્રેતિ ક્રાના સ્ટિક્સ સ્થાના અંદ્રેતિ ક્રાના સ્ટિક્સ સ્થાના અંદ્રેતિ સ્થાના સ્થાન અને ઉદ્યાના શિલ્મ આ શ્રી પ્રસાન સ્થાન સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્થાન સ્થાન સ્ટિક્સ સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્ટિક્સ સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્ટિક્સ સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્ટિક્સ સ્ટિક્સ સ્ટિક્સ સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ્થાન સ્ટિક્સ સ

ભવ શછુગાર

ડોમોડિયો જેટીના લગભર ૩૦૦ વર છે અને તે ભંધાય એક જ લતાલા હોતાથી તેતું નામ શ્રીમાતીનાનો છે. તે આખો ય શ્રીમાતીનાનો અને તેની આલુગાલના સ્તાઓ ખન્મપત્તાકાનો અને ઉપદેશ એડી, આકર્ષક લવ્ય કબીને વગેરેથી ખૂત રાતુવાસભા આવ્યા, મેનાપા ગુરાવાથી લઈ તોડિત સારોળની ભંદાર હેક પૂ લેખાંખાલના સ્ત્યા સંપીતી રસ્તો અને સ્યૂત્રમાંથા ભરીચો, બને ભલુંએ પતાકાંગાના હોત્યથી રોસીવી નનાવાથી

પૂત્વ ઉપાધ્યાવછનાં છવન દેશ્યા

પુત્ત ઉપાંખાયછની છવા દાવો પણ આ પ્રસંગે લદ્યના ન્યવીતા સ્વાસ્તર નેવિસ્તારી પાસે તાસાંદિસ અમારો તૈયાર સરાયા આવ્યા એક દાવતા યુ ઉપાંખાયણ, તેમના ગ્રાસ્ટ નયિત્યછ સરાત્રાત્ર માટે અમાતાતા ઉપાયશામા હોડ છે. છે. છે લ્યુઝ સુર, યુ યરેલિબ્યઝને ન્યાયસાસના અમાત્ર માટે સાંધી મેહત્યાની ગ્રાસ્ટેન્ટી વિતિક કરે છે અને તે સર્યમાં લક્ષ્યુવનાર બ્રાહ્સ પૃત્તિએ જે કોઈ આપતું પડે તેનો હુંત્ર ખર્ચ કરવાની ઉદાર લાભના બ્રાહ્મ કરે છે તે પ્રસંગ ભાવામાં આવ્યો હતો.

મીજા^{*} દેશ્ય

ભીજ દરવસ કાશી-મંત્રા કિનારે યૂ. સહેલિજવણ, કુતદેવી સરવવતીનું ધ્વાન કરે છે. અને યુપદેવી-સરવતી પ્રસ્તુત્ર ઘઇને વરદાન ગ્રાયે છે તે લાવ રજૂ કરાયે હતો.

ત્રોલું દસ્ય

ત્રીન દરમાં કાશોનાં રેક્સે વિદાન-પ્રતિની સહ્યાર્થ, વાદવિવાદ સારે વિભવ પ્રાપ્ત કરનાર બીચ્યું સ્થાપિલ્યક્ત રેતું ચીવરવા નિકલ સ્થાપતાં તમને દેખાય કે. અને તે દરમ વેદ્ય બ યુ હાયાયાલ્ય - ત્યાપાર્થાં એ કરણાં મહતું તે વતાનાં સાં પ્રયોગ ત્યાપાં લક્તી ન ત્યાપાં હતી. પાતાનાં સાં પ્રયોગ ત્યાપાં લક્તી ન ત્યાપાં હતાં આ દર્માં વધીનાં ત્યાપાં હતાં ત્યાપાં ત્યાપાં હતાં ત્યાપાં હતાં ત્યાપાં હતાં ત્યાપાં હતાં ત્યાપાં ત્યાપાં હતાં ત્યાપાં હતાં ત્યાપાં હતાં ત્યાપાં હતાં ત્યાપાં હતાં ત્યાપાં ત્યાપાં હતાં ત્યાપાં ત્યાપાં હતાં હતાં ત્યાપાં હતાં ત્યાપાં હતાં ત્યાપાં હતાં હતાં ત્યાપાં હતાં ત્યાપાં હતાં ત્યાપાં હતાં ત્યાપાં હતાં ત્યાપાં હતાં હતાં ત્યાપાં હતાં હતા હતા હતા હતા હ

મંગળઅભિષેક વિધિ

ફાયણ વિકેટ ના જ્ઞેજ શે શાયલા પાર્ચનાયજના કેરાવરે ચીધુન વ્યાલ્યક જેડાવાય તરફની ગ્રી ગિરતારજ મહાતીવેના સુંદ પઢ આરસામાં તૈયાર વચેલો, તેના અભિયેતની વિધા શોધુત જીવ્યાબાઈએ પૂત્રન ચાચાર્ય શ્રી આદિ યુનિરાજોની હાજરીયા કરાવી અને પૂત્ર આચી વચેરે ધર્યકારી ઘર્યા.

ગુરુબાર્તિ વગેરેના પવિત્ર અભિષેઠ

ફોરણ વિકે જ ના રોજ લાવારે વાર્લિય રાય સાથે પાદુકાએ વામત્યે વામતો અવાતુ માર્તા તમે પૂત્ર જ્યાંપામ ધર્શાવિજનાલ્યા ગુણુંલાદ આવામાં ચીપ્રતાપકારિજ તથા રાત્ર સિંદિજ આસ્થિ કર્યું, ખપેર મો સામતાલ રેફાર્સ વેક્સિય રતા પાંચાનાલીકોની અભિરોત વરેરે દિવારેના કરવામાં માત્રના ફાય વ પ ના દેશ પાંચાન્ય કરાશ રતા રાત્રે પાદુકાએ વનાતુ વર્તા તમે યુ થી જ્યાંપામાલ્ય અલાબને તરી પૂર્તિ તથા પેમતદ-અલા અને દરેક સરસાલ દાત્ર આવી કરાય સામાં આંદિવાના, જ્યાંત તે કરે દીધા-મું જ્યાંપામાલ્ય ફાર્તિ લાત્રનાર કરાસા લી વર્લ્લાઇ સરતાલા ઓંદિવાના, જ્યાંત તે કરે દીધા-લાઈ વરેરે ઉદાર આત્માંઓએ સાદ્યો લાલ લીધે હતો. આબિકોનિયિ પૂર્ણ વાળ ગાદ શાયલાઇન દેશારે પાસુંત પૂર્વાનાનીની પ્રતિકાર કરવાયાં ચાળી લી અને ખેપીરે પોતરની સંગ્રંગ ભાષકાર્યાદકા ભારત વર્ષેક પરંત્ર કરિયા નિક્ષેત્ર પાતાના ક માધ્યાઈ વહેરતાલા તરફરી વાળ કાર્યાલ પૂત્ર-અલ્પી-પાતાનાન લાવના વર્ષેક પરંત્ર કરીયાં વાલ હતા દરેક પ્રકારે ઓાઇની હેન વનલા લાક્સરેલ લાવ લેતી હતી.

દમદમાભર્યો ભવ્ય વસ્વાડા

ધામણ વર્ષિ ; સારો સ્થ ઇન્ડ્રેપાન્ય ત્રોક સ્વંપની શ્રાણારેલ ગ્રાંટ ચાર્લ, ડોક્રરમાંનું પૂરન ઉપાયાબાઝની હની પધારોલ વિદેકોરીયા, વર્સકાદન દેવાર દોક્ષાથી અગ્રાજનોનની વારી, બીલન પણ અનેક સમિલા, તેનાવાંદીનો લખ્યામ અને વોક્સનું કાર્યક્રિક મોલીકરી એન્ડ વચેરે સામ્કોપી દબદના-કર્યો વસ્ક્રીડો નવલાએ લોગાળીયાયાયાથી નહીતે હત્વર, વોકારીક્ષાઓળ ચર્કને ૧૨ વાયતા કેતરી હતો શકેરના દરેક રસાવેલ તેમાર આવું વાલુના શુકાયો હત્યારે પ્રેશકોથી છેલાઈ ત્રયા હતા વરેશાંત્રમાં મુ આચાર્ય ત્રી ત્રવાપાનું સહારાબ, યુ. આણેલાંદિ અહારાબ, યુ. ત્રીલ્ય જીહારિક, યુ. લેંગ્રવર્પાનું અને યુ. શુંનિ શ્રો સ્ટ્રેશિન્સ્ય વરેદે નિશાસ શ્રીને ત્રાચ સહારા આવેલા સામ્યોના અપના સામ્યોનો અધ્યાસમાં શ્રોથી સ્ટુલ હતું. તે જ પ્રવાણે આદુના સ્થાન પ્રાપ્યા વિશ્વસ સાથ્યો મંત્રવની આસેવાની ત્રીયે ચાલા નારીકાદ પ્રયાસીઓ શ્રોહેના સ્થાઓને ચળવી રહ્યું હતું

શ્રી સિદ્ધચક્રવત્વનું ભવ્ય પૂજન

પપોરે યેતેવાદિતાના પાદુકારવાને તાઢ જેઠાવાલ ખુશાલ લસ્ત્રેથી સિલ્લાક લગવતનું ગઢાપૂજન પગવતમું માન્યુ હતું તે અને નિર્વિષ્ઠ પ્રસત્તા અનાગ અને રગલેરંગી ચોખાવી સીના-માંદિતા વરખ અપે હતું તપાદલનું કોર મંગ્ર થી હતિયાલા લગ્લાકાલ તથા થી શું હતાલ વગેરે લાખે એમે ભાન્યુ હતું પરેતાન સત્ત્વાલાથી આદ્યાલાં એ રિસિલ્લ નિર્ધિત્રમાન સાથે પૂજન સ્થા સર્વાયેક એ ભાગ્ય હતું પરેતાન સત્ત્વાલાથી આદ્યાલાં એ સિલ્લામાં સ્થાન્ય પૂજન અપાયાં કે બન્યાલા સંસ્તાના સામાન્ય ખાનાય ભગ્નીસાલા, સ્થાન્યના થી સુલલ્લામાં લાખી સુલ્લામાં લાખી સર્વાયા પ્રમાન માન્ય સ્થાન્યના થી સુલલ્લામાં લાખી સારે સંગીત હતે. અને હત્યો લાખી પ્રમાનના માં કહી તારે અપાયન સામાન્ય માં કહી તારે ત્યારે માન્ય અપાયના માં કહી તારે ત્યારે આપણ સ્થાન્ય સાથે હતી તારે ત્યારે આપણ લાખી લાખી કર્યા હતી. અને લેવે લાખી વ્યવસ્થાન સ્થાન માં અને ક્લિલ્લ તારેથી તે હિલ્લે સ્થાનિયલ્લમ સ્થાનમાં આપણે હતે.

પ્રમુખાતું આગમન અતે સહાર

જે મારળ કાર્યો માટે મહિનાઓ થયા તૈયારીઓ વાલતો હતી, અને જે મહેતસ્વનને ખૂબ જ ધાર્યકૃષ્ટ તે હત્યાદાર્યી આર મા થયો હતો તે માત્રા કાર્યોના મુખ્યલું દિવસ ફાં વ. છ સનિવારનો હતો. આજે જેન માત્રમાં દીવના દિવા હાર્યો ઉલ્લાદતા હતા અભ્યુંતા કેઠ પ્રુપ્તોલાના મુસ્યદ ધાર્યકાયાશ, પ. મીમાન્ય ઇપ્લયસ્ટિક મા મહિ છતું ફોલારની સાર્ગ તથા માત્રમાં સાર્ચને પ્રમુખ્ય આ તેને આપેલાન કેઠ ઇપ્લસ્તાલ પ્રત્યાપ્તિ તથા કેઠ વાઢીલાલ અલાકુળ તથા ભાગને સાર્ચન પ્રસ્માન્યુપ્યાર્શ આવી પહેલાતા કેમીઇ રેશ્વને દાયતારીની સ્ટારારિયિ થયા ખાદ শીકાતમાં આવતા તેને કરેન્દ્રે સારાયો આપી હતી.

મ્યા પ્રસારે મુયક્રીયો શેંદ કેશવલાલ ક્રીલાય દ, પ્રાણાજ્યનદાસ ગીધી, શાહનકાલ દીપગદ ચાલ્સી, વકસાડવાલા ગહેનાઇ, રેક હીરાભાઇ નગીનદાસ સુરતવાલા, કેક સાંકળવંદ વહીઆવી સરતવાલા, વિ અધ્યયભ્ય મહાતુભાંયા ને કાર્યક્રેટા સાતમની સવારે પધારતાં કાર્યક્રોએ તેમનું પણ સ્વામન કર્યું હતું અને સપના હર્ષમાં શર્રિ સર્છ. આજે પૂ. ઉપાધ્યાયછ ગ્રહાસભની મૃતિને ત્વીન તૈયાર થયેલા સરૂમદિરમાં निराक्ष्मान दरवाने। (अतिकाने।) मणव दिवस हते। समय बता पू. सायार्थ को विकथप्रतापसरिष्ट, પૂ આ. માર્ગુકસાગરસવિછ, પૂ આ વિજયધર્મસરિછ, પૂ આ વિજયજાબુસરિછ, પૂ મુનિથી યરોવિજયડ, સનાવધાની સનિશ્રો જ્યાનદવિજયજી આદિ મનિવરો સાથે વાજરોયાજરે જયનાદો ગળવતા સો ડાઈએ રહેલ પહોંચ્યા. આખો ય તત્રીયા અને વિરાક્ષ સડપ હળરા માયુસોથી ચીકાર લકાઈ ગયા પૂ આચામ[ા]લી તથા પૂ સનિલી વગેરવિજયજીએ ઉપાધ્યામજીનું જેમ સાસનમાં સ રધાન હતું તે ઉપર સંદર ઢખ્ટામાં ખ્યાસ આપ્યા ત્યાદ, મગલ લખ્યતિને નિરાજમાન કરવાની ઉછગમણી તર થઇ. હેવટે ગવર્લમાં વૃત્ત હરમસ્તિ નિનારાયક કરનાર પ્રત્યવાન નેક વાડીલાલ ચત્રજીએ રૂદ ૧૧૧)ના ચડાવામા આડેડ લીધા, બીજ પાદનાએ તથા ધ્વસ્ટક તમત વગેરેના આદેશ પણ અપાના અને શક્ષકોને વંડાનાદા અને ઉપાપ્યાયજીના જવતદોના પ્રચંડ ધોખતાએ વચ્ચે શ્રીમદની ભવ્ય અને મગળ સર્વિની ખૂત જ ડે.કાર્સ્યી ગાલડ કરવામાં આવી. યુ આચાર્ય મહાનકોએ લઘા મુનિનો યતોવિજયજી વિશેર ર્જાનાઓ પત્રસંત એ! અને પ્રસાના લઈ સ્કૂ ક્રાઈ વાલ્યતેમળતે શાધનાજીના દેશસર સામે માં પહેરી છત્તર એવ હતનિકિનાં ત્રેણકારેના સાર-સાહિત-પ્રદર્શનના ઉદ્વારન સમાર મળી આવી

t

મંગલ દીક્ષાવિધિ

બીક જાલ ૧૧મા વાગતાં કું જાસુરુકેનની દક્ષાનો વિધિ યુ ગાં ગીંગા વિન્યામતાસ્ત્રિક મહારાજે કરવ્યાં તે સાંભ્યા ઘણાલાશોક તરીક નહેર કરી, સાંભી પ્રિયલર્શનાથીકના હિલ્યા તરીક નહેર કર્યા અને સેક્કે: ચાલુકોએ વાલક્ષેપ નિધિ કર્યો

મ્મા પ્રમાણે પ્રતિકા અને દીક્ષાના મગલ વિધિ મેક વાચર્તા સમાર થયે. હતે.

જેવી ઘણા કિલ્મણી રાહ એકાતી હતી, સત્ર ત્રેહલે શુર્વ એવી જીવવણી કેમ થતી હતી એનું કેફ જનતાર્ગ કરવાના અનેક તરે એ જીવા કરતું હતું. તે જીવવણી સાતપ શનિયારે બધારના ધા વાંચે રાખા હતી.

સવારના અંદ વામતાં વોદારાનો ગાંદીમાં અનેક વિદાનો, પ્રોફ્લમેંડ જૂન તથા શર્મિકના ગાંધિના વાગીઓ, જ્યાં, તેન-તેન્દ્રેનર, વોદારા કુનિવર્સિંદીના સત્તાવાઓઓના કુમ્પલી ખાવ કરતી ઉપત્યક્ષીયાં હામ તથા મોલા પ્રોફિસ્ટ થી દીતામાં કાલ તથા થી ત્યાન હામ તથા વ્યાવીનાન્કરથી પો. થી કામતર પાત્રી માં ત્રીપ્રોતાલ સાહિક્ટા વરેટ આવી પહોંચ્યા હતા. અને પૂ ઉપાયાવસ્થતી પદુલ તે તતન ક્ષત્ર સિંદુ નિર્દિશ્ય ને પાદ્યક્તના કરી રાસ્તાવીઓના પણ સ્ટેં

સત્રતા લવ્ય પ્રારંભ અને શયુગાર

સ્પત્રો પ્રવલ દેહ વાંચે વતાર હતે. તેન પાંકાળા લાંખી રેરીના રસ્તા અ માજબ લવાનો હતો તેવા ભાગ તાંક જ લવા આવતાં તોખવામાં આવી હતી હતા ભગ પૂર્વ ભાગપાયદાતો અંહલે દેવા ભાગપાયદાતાં આવી હતે. ત્યાર મા કેપણ, હિલોના મને આવાની હતે અને હતે સાર હરાવી સુદ્દેશિયા કરવામાં આવ્યો હતે. ત્યાર મા કેપણ, હિલોના મને આવાની કેપને હતા તેવા માં કેપણ, હિલોના મને આવાનીને હતાસા કોર્યો, ખાબલાકોઓની વાત અને પ્રવેશ અંધાની પાંચ સુધીની કેપણ હતામાં સ્વતા પ્રવેશના કરાવા આવતા પ્રવેશ કેપને બે બન્ય સુધીની પીતા કેપણ હતામાં આવતા પ્રવેશના લેવામાં લેવામાં આવેલા કો સ્ટ્રેકિયલ સામાના લેવામાં કોર્યો અનેતાતું ખાત પેરતા હતા સ્પત્રમાં તાલામાં મહેલા કોર્યા સ્ટ્રેકિયલમાં સામાના વિસ્તામ કોર્યો કોર્યા કોર્યા

ખાંચ હબરની જનતાની હાજરી

શ્રીમદ્ પશિતિજનાજીના મુશ્ય પતીતા સાતાતુ નાગ 'સોલાગરે' ફ્રેપ્યાથી તે નાગના દરવાએ ક્રોપો કરવાએ માગ્યા હતો. અને શાસદુના પિતાના નાગ ઉત્તરથી સ્તરના ગળતા ' નાસપણ '્યંડર એલ ઉપનાય આપવામાં આવ્યું હતું સત્રની છત્ત્વણી સાટે ત્યાં દ્વારા પહોરણમાં પાંત્ર હત્યતની માનવ પેતની મેરી એક તેવા હત્ય માં કંપણ પ્રદેશ સ્ત્રાનું અને તેને, રેક્ષળો અને તુંકાકારી ખાન-પતાસાઓ તથા પૂત્રન ઉપાયનજીના અર્થો હતી સ્તરનું, અદ્ભાત અને તુંકાનની લાધાના બેલાક તેવાં દ્વારા ત્યાં હતી ત્યાં તેવાં તામને તામ ત્યાં હતી. સ્તર્યા આવ્યો હતે. માં કપ્યાને બેલે કે સાંધની હતી સ્તરને તેવાં સ્ત્રાન્ય આવ્યો હતી. સ્તરને તેવે સંદર કુલહતેથી દ્વારાલવામાં આવી હતી હત્યાં દ્વારા સ્ત્રાન્ય સ્ત્રાન સ્ત્રાન્ય સ્ત્રાન સ્ત્રાન્ય સ્ત્રાન્ય સ્ત્રાન્ય સ્ત્રાન્ય સ્ત્રાન્ય સ્ત્રાન્ય સ્ત્રાન્ય સ્ત્રાન્ય સ્ત્રાન સ્ત્રાન સ્ત્રાન સ્ત્રાન સ્ત્રાન સ્ત્રાન સ્ત્રાન સ્ત્રાન્ય સ્ત્રાન સ્ત્રાન સ્ત્રાન્ય સ્ત્રાન સ્ત્રાન્ય સ્ત્રાન સ્ત્રાન સ્ત્રાન સ્ત્રાન સ્ત્રાન સ્ત્રાન સ્ત્રાન સ્ત્રાન્ય સ્ત્રાન સ્ત્રાન્ય સ્ત્રાન સ

શ્રી ગદામીજના હાથે સત્રહું ઉદ્ઘારન અને પ્રેસ પ્રવચન

સ્વાપ્ત પ્રયુખે પોતાનું લાવલું પૂર્વ કરતા મુંતર્કની ઓલોકા કહેની વન્ન થી પ્રસ્તવુખ સુધર્યક ખદાપીતે સ્વતુ ઉદ્દેશકન કરવાની વિત્તર્ભ કરતાં થી વાદગીએ તેનો સ્ત્રીક્ત કરીને, પ્રાયમિક પ્રવચન કરતાં મેલેલી તા માટે સાર્વલ વ્યાલાર માની સુંદર વાદગ્ય અપૂ કરતાં, ઉપાંધાવારની અનેદિક રાતોપાસનાંથી તેમને, એક મહાન તારલી તરીદે શર્વાથીને કેને વાલાએ કેવલ વ્યાલ વાવના ચીકેન ચાલી, અરા આપણ વધી વ્યાધ્યાય પૂર તપારાવાની ખાતાને ફાયતી દેવતું ઉદ્યોધાન હવું હતું થી મોરફને એક મહાન તપારની તરીદે તેમ અ એક સાચા કિમોશકાર અને શુક્રાસભા કરવાય તરીદે તામાનો એકની વિદ્યાલ પશ્ચિતે તપા એક પ્રકાત વિતર્ફને હવિન ચાર્ત્યકારિય પાર્થ કરતાં (શી વાદગીનું લાવલું આપન આપું છે.)

પુણપુણુંથી મળેલા જૈનાયાર્થી, શમણા, વહાપ્રધાન, સબ્દમધ્યારીઓ, અધિકારીઓ, શ્રાફેસરી, વિકાના, શિક્ષિતા અને ભાવિકાના સ*દેશાઓ

ત્યાર મદ જારતના નાગાલિત રાજસર્વવાદીએ, અધિકાદીઓ, યુનિવાદિદેશિઓના પ્રિન્કિયાસે, પ્રીક્ષ્મી, વાલક્ષ્મ-પૈનીસી, કેરીબના પ્રિક્ષિત, જૈનાવાર્થો, જૈન સુનિએ, ક્ષમ્યોઝએ, ક્ષમિત ક્ષેષ્ટીમ-પત્રિએ, લાલસીકારો, અપ્યવાદના તાર્વીઓ જૈન વૃત્તિ, જૈન સંદેશાઓ, જૈનેસર વિદ્વારો વગેર તત્ત્રથી સ્ત્ર ક્ષેપ્ટ સાંગતા કિંજના આવેલા તાર—દવારોના સેક્કો સ દેશાઓનું વાયન થી રાશ્નિનાલ મેન્દિશાલ શાર્ક શ્ર્યું હતુ

જેમાં પંજનના વાલકાત લીમોને સામર, દાવ લાકેલ સાવવંદર હિલી, પં. સુખવાસક, મેં કરારલાઈ હાલાઈ, વી હ્રી સાબંદેત મહેતા, તામના તાલુલાતા, એમ ત્રી તા હાર દિલી, તેર અપલવાલ પ્રાથમિક હેવી, તો ક્ષેત્ર મોને આપલાલ કરેવા, આપ્લાસ હેવી, તો ક્ષેત્ર મોને કર્યાના વખારીયા લગાવાલ મુંત્ર છે, તેર તેરામગા કે માનનાર સાનનાર સાનનાર

ઇનાલાઈ સુંદરીભા વહેદર, સી. દી. સાદ મુંજાં, ટ્રેનોર્ગ્ડ કરેવળ દુંગાં, સાનિવાલ મગલાલ સાદ મુંજાં, રંખણવાલ વસ્તુપલાઇ ફૂંગાં, તો મુજય વાદીલાલ દોલાતાલ મુંજાં, તાદ રમફ્યુલાલ વસ્ત લાલાલ રેલાઇ મુખાં, તા પરવાલ ફ્રેગ્યુલ સાધ્યાં મુખાં, તાદ રમફ્યુલાલ રેલાનાલ પરારાષ્ટ્ર, તાદ સ્વરુલાલ કેલાનાલ પરારાષ્ટ્ર, તાદ સ્વરુલાલ કેલાનાલ પરારાષ્ટ્ર, તાદ સ્વરુલાલ કેલાનાલ પરારાષ્ટ્ર, તાદ સાધ્યાં કેલાનાલ કોલાનાલ મામલાલ, ત્રી પોલિયનન તેમ સંદર્ભાય કાલાનાલ ની સાધ્યાં કેલાનાલ કોલાનાલ ની સ્વરુલાલ કેલાનાલ કોલાનાલ ની સ્વરુલાલ કેલાનાલ કાલાનાલ કાલા

જૈનાયાર્થીમાં આ ત્રી નિખયસભાભાતિક, આ ગી ત્રિબ્યમેપાદીશ; આ ગી વિજયસ્થિતિકા, આ ગી શ્રિસાયલપાસિકા, સુનિશી પુરુપલિબ્યકા, સુનિશી લાડં અધિબ્યકા, સુનિશી રમણિતનિજયકા, દુનિશી કહાંત નિજયકા, ત્રિયુટી, તથા સામાં કાર્યકાના નગેરેલા હતા

सत्रना कन्मताता अनिपर श्रीवरीतिकवरू महाराकते अखिन'इन

ત્યાં માર કરના વિકિત મળી મો નામ્યુઆર માતલીએ રાત્રી ઉત્તરિ દેશ થઈ હે, સ્ટારે, રહેશે તેમાં તેમાં મારાકાર, ત્યાલ દેશો છતા કૃષ્ય કંકિંગ મુખ્ય અને અને એના દિવારોએ નિર્ણ લેખી મારાકાર, ત્યાલ દેશો છતા કૃષ્ય કંકિંગ મુખ્ય આપતા સારે બહાર કંકિંગ બના કંકિંગ તાલુકારી આત્ર કંકિંગ કંકિંગ મારાકાર્યા હતા કે મારાકાર સારે બના કંકિંગ વર્ષાના કંકિંગ મારાકાર્યા હતા કે મારાકાર સાર્યા કે ત્યાં કે તેમાં મારાકાર્યા હતા કર્યા કરવા કે મારા કર્યા કર્યા કે તેમાં મારાકાર કર્યા કે તેમાં મારાકાર કે આવા કે તેમાં મારાકાર કે તેમાં મારાકાર કે તાલુકાર મારાકાર કે તેમાં મારાકાર કરવા કે તેમાં મારાકાર કે તેમા મારાકાર કે તેમાં મારાકાર કે તેમાં મારાકાર કે તેમાં મારાકા કે તેમાં મારાકાર કે તેમાં મારાકાર કે તેમાં મારાકાર કે તેમાં મારાકાર કે

સત્રના પ્રમુખશીની લખાસ્ત

સંવિધિના ગીલા ગાંગી ૧ શી લાભગદ ગાંધીએ સ્ટરના પ્રદાગજ ગાંધી દરખાસ્ત્ર સ્ત્રાં મેંગુંબર્શને, ૧૮ દર્શાનનાં સાત્ર અલ્બાસી, તે નલ્લુલ વિદાન લ્લીકનો પરિષય આપા નાદ, મેંડુંખ સ્વાન સ્લીકારવાની વિન હિ કસ્ત્રા ૧. શીચાન ઇપેકાર્યાક્રળ પલ્લગીએ હેતી સ્લીકાર કર્યો. સ્ટેપ્ પર હાજર દર્શ જણાવ્યું કે ચાપના સહુતો પ્રેમ અને મળતાંતો આજ કરવો ત્યોઈએ, બાકી મારામી વધુ સુધીમ્ય બ્યક્તિને આ રચાન આપ્યું હોત તો મને વધું અનદ શાત, મારા અથવા મહત્વના ભવાય દરિયામાં રચાને આવતાનું સહે કે કે કે કાર્યનો મને દરિયામાં રચાને આતિયાં મારુ હવત નીતાલું છું, પણ વિદ્યાન અદારાજ મી નહીં ભાગા છું પણ વિદ્યાને સહિતાની સાથે સમારા એક મહાસુષ્ટની ગોર્ટવામાં મારા અને તેમને દર્શિયાના તેમાં કે અલ્લેન અને અહિતાની સાથે સાથે એક પ્રદ્યાસભા મોરા અને તેમને દર્શિયાના તેમાં કે સ્થાન કરી તેમને હોય કે અલ્લેન આપના હતા સ્થાન કરી તેમને સાથે સ્થાન સ્થ

નિબંધાની અહેરાત

્યાર ભાદ ૫. મી શાલવાદ ગીંધીએ જેનાચાર્યો, જૈન મુન્દિએ, જૈન માંબીછએ, જૈન કોંગેતર પીંક્રોત સાક્ષર, પ્રોફેસરે અને વિદાનો તરફથી આવેડા લેખો-નિનધાની, લેખોડનો પરિચય સાથે બહેરાત કરી હતી. અને લેખોડનો આબાર માન્યો હતે.

માં. શ્રી દીનુસાઇ પટેલ

્યાર પછી ગયેલા સમાછ મૃતિનિહિંતા પ્રતિમિથિ તરીક આવેલા પ્રોફેસર થી દિવામાં પેટ અને યો ભવત દોકરે પ્રેમ્પન હવું હઈ, જેમાં જૈન સભ્યનિ સ્તિતૃત બાળ્યા અને દેના ઉદ્યાર દિવાનીને અમલી આપી જૈન અને ચેલાં લાઈનના તત્ત્રના વચ્ચે ત્રના છે તે રહ્યું કરી ગતરામું હઈ અને દોઈ પદ્ધ પ્રકાર સાથા માર્જે હોય તે હૈન કે મછી તે સ્ત્રે ને દાર્શનો મળુવાથી કહેવારો હોય.

मा. श्री कवात सहेर

શ્રી જયત કાંકારના ભાગભુનો સાર જે હતો કે છવ વિષે વધુમાં વધુ રયછના અને સદયના કોઈ પથ દર્શનમાં હોય તો તે જૈન દર્શનમાં જ છે.

ર્ગા, શ્રી હીસલાલ કાપડીચા

શ્રી ફીરાતાલ ર કાયદીમાને જણાવ્યું હતું કે-મી સ્ટેગિવન્થજીના આવન પ્રત્યોની રોધ થયો. જોઈએ. જે પ્રત્યો પ્રવાત તેની તે ફરી લખલિત થયા તેઈએ. સરળ ગુજરાલીથી પણ તેમના લખાશું પ્રયુ હવા તેઈએ. શ્રી મેટોવિજન્જીની તાલ્યમાં લાદભાં નહીં માટે વિચર્ધા પ્રસરે તેવા પ્રત્ય તરેવે તેઈએ. હવે મને નહા છે કે મા સમની જીન્યાણીથી સારી ભાગા ત્રવર્ટ ફળી.

પં. શ્રી હ'સરાજ્છ શાસ્ત્રી

ખાસ ૫ ભગવી દેશી આવેલા સારતી હ સરાવળાએ જેનાવાં વિષયમાં થવાની ગયી યોગતા ધરાવે & એ ધર્મને વેન્ન સાંત્રલાધિક ન ભનાવવા ઓઈએ, તે ઉપર શુપ્ત જુદ્રા લખલાએક ટોકીને સ્વાફવાદની સદાદિ કેનવતા આદેલ કરીને પોતાની વાકભાગી સભાગી સ્વાજ ઉપયક્ષ કરી હતી.

માંગના પેલ્યા છ વાગનાં શાસનદેવ અને ઉત્તરખાયલ્ટના જનવાદે વચ્ચે પહેલા દિવસની બેઠક વિસર્જન વર્ષ હતી. તાનના ની યોગીવજવાટના ગ્રાસમિક ગુલુચીલા અને તેવના આપ્યાસ્થિક પદેશની સનીવાડોએને રહ્ય હતાહ કરી હજો.

બીજા સ્વિસની બેઠક

બીળ દિવસનો બેડક નાગલલુ ગામળં ભારે ઉત્સાદ વચ્ચે હરૂ મઈ હતી. સ્વારના સામાન વામનો માનાએના મનગ પોત્સી ત્યેભ દિવસની કાર્યવાહીના પ્રદેશ થયેંદ હતો. વડોક્સણી આવેલી નાગાઓએ સરફેલ તામને કેન્સ વ્યારન ચીલ વરેલું પૂર્વા સભાષા ગળીર હાર્તિ પણાઇ ગઈ હતી.



સત્રમહપમા જપત્થિત થએલી વિશાળ માનવમેટની



સત્રમમેલનની કાર્યવાહી નિહાળના સત્રસમિતિના ખાસ આયત્રણથી પ્રેક્ષક તરીકે હાજરી આપના પધારેલુ યુવ્ય આગાર્યાદિ યુનિરોતુ મડળ

ડાળી ભાજુત્રેથી ઉપરના સાંગે ૧. પૂ. આવારોથી ચાલેક્સાગરસરિટ અઠારાજ જમણી ભાજા, પુ આવતસીવિજાળાતાપરિટ અઠારાજ ડાળીનાવું. તીચેના સાગમા ૧. પૂ. આવાર્ય શ્રીજ્યુરિટ ચઠારાજ હપાળી માદદ પૂ. ગ્રાસર્થ શ્રેલિજન ધર્મસરિટ મહારાજ.



સંત્રની શ્રેફક વખને પ્રવચન કરી રેડ્રેલા એક વિદ્વાન વડતા. આ દરવામાં વિદ્વાનો પ્રોકેસન્ય તે શ્રીમત સકગ્રહરણ નજરે પડે છે



યુ. આચાવેદેવ વગેરે સુનિયહળની અધ્યક્ષતામાં 'શ્રીયકોર્યદ્રવ્યય જૈન સાકિત્ય પ્રદર્શનના કિદ્દવાદનના લવ્ય સમારસ

ષં. શ્રી સલિસપ્રસાદ

ત્યારબાદ વ્યાકસ્ત સહિત્યાયાર્થ શ્રી કાવિકાગસાદ શક્યે ઉપક્રય કરતાં જણાવ્ય હત કે...આએ ડભોઇના આંગણે હેબોઇના જ નહીં હિના ભારતના કતિહાસમાં નેધિયાત્ર અને યાદમાર સમાર*ભ* ઉજવાઇ રહ્યો છે. શીમક યો)વિજયુજીનાં જીવન ઉપર જોઇ એ તેએક પ્રકાશ પડવી. તથી એમની બાદમાર મંતેએ આજે ઉપલબ્ધ તથી એ વધા ખેદના નિયમ છે. વિકટ કાળમાં તેઓથી જન્મ્યા હતા. સાંપ્રદાયિક દંધના દાવાનમાં સમયતા હતા ત્યારે કારી જેવા વિદ્યાધાયમાં જઈ ને તલસ્પર્શી અભ્યાસ કરી પડદા નવેત્તા ખત્યા. તેમ ત્યાયના પ્રદેશના અભ્યાસ કરીને તેમાં પારંતત થયા. તેમન્યાયની ભાષામાં જૈન સિહાતા રથીતે જેન સાહિતને ગ્રાપરે લાવી મુસ્ય અને અનેક્ષનાવાદને સદ્ભય રીતે છણીતે દરેક हर्शनंशरी कोइ नहीं ते थीछ रीते पण व्यनेशन्तराहने। स्वीशर और हो: होश પ્રતિપાદન કરી વ્યત્નેકાન્તવાદની સર્વોષસ્તિ સ્થાપિત કરીતે જૈનધર્યના વિજય વાવટા કરકાવ્યા, તેંગ્રાસીના મન્યાનું વિવેચન તલનાત્મક છે. સેકડા વિદ્વાનાના મહાનુ હેમને પરિશ્રીલન કર્યું હતા, તેમ તેમના કેટલાક પ્રત્યાના અવલાકનથી સાક દેખાય છે અદારેની સદીસી એક તેન વિદાન ત્રક્ષણા (200) મન્યોનું સર્જન કરે એ એન ધર્મ માટે અપર્વ ઘટના છે. હિન્દ લાક્તની લીધ માટે ત્રીસ્વકાર્યો બનાવ हैं. कैन समाल तेमना व्यापाय अन्के। के तानवाधारणी भन्नेर्वायरे सदी रवा के तेते शिंधी धारे तेन અધ્યયન કરાવે અને તેઓશ્રીના અવાધ દાર્શનિક ત્રાનના લાગ્ર લાસ્તના વિદાનીને સંઘે તે માટે જૈન સમાજ ધરસ્વતીને માત્રણ કરે અને લક્ષ્મીને તેની પાછળ ચલાવે ચીચકની વિદ્વાર્થી હ લક્ષા મુખ્ય છ તેમના સાહિત્યના ઉદ્ઘાર અને પ્રચાર માટેનું કાર્ય થાય તે ખૂબ જરી છે

પં. શ્રી પ્રયત્નકાલ શાસી

ચ્યાડક્ષ કથા ગાદ સસ્તૃત સભાની કાર્યપાની કળોઈ નિવાસી વેદાન્તરાણી સાહિત્યસ્થણ મગતદાદ મિરિભારાસના વ્યાપક્ષ પહે લક થઈ હતી

લી શાભીજીને તેના સ્વીકાર કરતા બહારલુ ક્યાં કે—ચાપવી બારતની લીંગ શેપર કોઈ હતા પ્રકારત નિયાર્થના પ્રદાપ થાને છે ત્યારે પ્રકાર વિજ્ઞાસિંગ અવકાર લે છે તે પ્રચાર્થ સાહિત્ય અને સોસ્ટ્રિનિંગ વિનેશા અદેકાવરા, આ પ્રકાન બિલ્લિનો બન્ય લીધો હતો અને બ્લાનના લિપકાર પાટે ચહાન સાહિત્ય સ્પી રીતાના નામ અલગ કરી ગયા

ત્યારમાદ પંક્તિ ભ્રષ્ટાન્ત તાં, એ અનેમન્તવાદ ઉપર સરફતમાં ગ્રવચન કર્યું હતું અને જયતિ શ્રાવિકાના લાખલા આપ્યા હતા

84 સમાજ યુનિનૉર્સેટિંગ પ્રતિનિધિ પ્રે. ગી હરિસ્લાદ અપલાલ ગરેતાએ ધર્મમાં ખાંદ સાતુ શું સ્થાત છે અને તેતું શુ પ્રવેજન છે ! તે જ્યારી ' વ્યક્તિ પરામો ધર્મ'ની સિધ્ધ કરી હતી. પતામાં ધના પ્રાથ્મી વધ ગાટે અન્યિ દર્શાની હતી

ફે. ઇન્દુમતી અને કું, ફેક્ષ્યાદા વગેરે જાફેતેએ શસ્ત્રત લાવા સરળ છે એ વિવય ઉપર સંદર સવાદ જ્યું કર્યો હતો.

मं, श्री क्षत्तारायम् प्रक्र

વ્યારુંજ્યું કાવ્યતીમાં થી વશ્ચારાયાલું પાઠેકે ચીગદું પોકોન્દિલ્વાલ્કનું લગ્કન્યરિંગ વર્લુંવ્યું હતું અને કાર્યામાં કારુકાર્યું કરીને ત્રેમલેલા વિજયોને સાર ચિત્ર રજૂ કરીને, ત્રેન ગ્રુપ્યતાદી વિદાનો કાર્યામાં વિજય મેળરીને સાચવેલી ક્ષાન વ્યક્ષા ત્રાજાની ત્રાપાદ તેમાં લગ્નન પ્રાપ્ય તેમાના લગ્નન પ્રાપ્ય હેવાનો ત્રાપ્ય કર્યો હતો.

ષં, શ્રી અમીસ્યંદ્ર શાસી

શ્રી સહિતાયમાં થી અપીરવક શક્તોએ થીમર ઉપાંચાયછએ સસ્તૃત ભાષાના કરેશા આદરેતે જસારીતે સસ્ત ભાષા શિષદાની માદાયકતા ઉવર સંસ્તૃત ભાષામાં સુદર પ્રકાર પાડવો હતો.

ષ. શ્રી લક્ષ્મીનાથ શાસી

રાજ્યં મ સફત મહાવિશાવય વડેહતાના નિક્રત મુખ્ય અધ્યાવક ભી કો શી લદ્દગીનાય ખરીનાય સામ્રીએ જ્યાપ્યુ હઠ કે એ સમયમાં પ્રજ્ઞાલ પતિકા ઇનેક્સ્ટર્ન નીમોર્સ પૂર્વ રીતે અત્યાસ ક્ષરતા ત હતા તે વખતે તેઓએ શ્રી સ્થોસિત્યાલ્યની અપૂર્વ હાતાકીલ ભોઈ જાનાશ કરાવ્યો. તત્વનાય સામતે મ અમ્યાસ કરી સીમોર્ની શાંહતે નિર્વાર્થ હત્યા ન્યાપના દો ઉપદીત સરી રૂપ્યા એ વખતે મમત્મતન્નીના ક્રાપ્રક્રો હતા તે વખતે પણ સમાધાન દર્ષ્ટિએ ઉત્તમ પ્રત્યો લખ્ય વસ્તુને સામળવતાર એ મહત્વ નિસ્તૃતિ મેટલી મહામનિ આપીએ તેન્દ્રી સોન્કી છે અતિ બાદવ સાથ્ય સફતે મેહલાંની ફ્રોલાંથી વિશેષ સ્થેપાની ખત્રસાર નથી ફ્રુ એલ્ફ્ર કરીલ કે તેમના મરીલન – પ્રસાશન ચાટે ખાસ યોળના યૂપી જર્મી છે.

૫. શ્રી બાહકૃષ્ણ શાસી

શ્રી ભાલકૃષ્ણ શાસ્ત્રીજીએ સંસ્તૃત લાવાને જીવંત લાવા જ્યારી સસ્તૃતિના અભ્યાસ માટે તે ભાષાને રાષ્ટ્રભાષા ખનાવવાની ઇમ્જન વ્યક્ષત કરી હતી

સત્રના પ્રસુખત્રીતું પુના ભાષથ્

મું ખેઈ નિવાસી તેક છબડાયાલ પ્રતાપથી, તેક વાઢીલાલ ચારાવું જ તથા મુંખઈના થી પ્રયમ્ભી ખારાખી તથા તેક પરિસાણ મોક્કિયા હતા. મોક્કિયાની મોક્કિયાની મોક્કિયાની મોક્કિયાની મોક્કિયાની મોક્કિયાની મોક્કિયાની મોક્કિયાની મોક્કિયાની માર્ચિયાની મોક્કિયાની માર્ચિયાની પ્રાપ્ત માર્ચિયાની માર્

ત્યાર પછી તાલાગોએ સસ્તુત ભાષાના વિદ્યાનુ ગીત ત્રાયા નદ્ર પ્રમુખ થી ધારતઘાંતમાઈ ચારુપિએ ઉપલક્ષર કરતા ત્રે-તોના ઘર્ગીનાથા આ રીટા પરસ્તર સસ્તુત સાથે તો આપણી ક્ષ્યુર્તિને ત્રાઓ ત્રાચના પાટે ત્રેનું ત્રાયા કર્યું કરી શકોએ તે પત્રી અનેક્ષતવાની પ્રસાંતા કરી સંસ્તૃત ભાષાને રાષ્ટ્રભાષા વ્યત્તવાઓ ક્ષારોખ કર્યો હતો

મંત્રી શ્રી કાલિકાપ્રસાદછતું શ્રી યરોાવિજવાઇને અભિનંદન

કાર્પ વાહીતી સમાહિતે અને ૫. ગી કાર્યકારમાદે વાહાતો આક્રાર સાતી આવત્તી રિકાળ સાલાને બોલવાની સરફ વિકોતીને જે તેન સર્વા છે તે અલ્પાર્યું છે. આ સારે સ્વાસમિતિ હતા અને આપણી તાર્ચ વિરાપ્ત્યાન મહાત્રન પીલાનીવિત્ત્વારને અહિતાના સદ હ અધિવાદન કર્યું હ કે, જેમણે આ સત્તેને જન્મ આપીને, તેન સદાત પુરુષની મહાનાનો, આપને અને બનાનો પરિત્ય સંપ્રપાની અપૂર્વ પ્રસંગ લોગો કર્યો છે. આંતમાં જેન સિકાંત તેની માન્યતા વચેરેથી જે કંઇ અલુઅલુમા નિપરીત પ્રાલાહે હોય તો સહ વતી ક્ષમા યાગી લઉ છું

મા. શ્રી વિજયપ્રતાપસૃષ્ટિ મહારાજ તથા ગા. શ્રી ધર્મસૃષ્ટિ મહારાજનું મહત્વનું પ્રવચન

ત્યાર માદ થી મકતીએ વિદાતીનો જાસાર માની મૂન્ય અવાર્યથીને એ કન્ટરા સલગાવશ વિનીતે મતો પ્રથમ જ્યા. થી વિજયપ્રતામકારિક્ટએ વિદાતીને પ્રેરવાદય ઉત્તેયન કરે તેવું ટેક પ્રવચન કર્યું થી. ત્યારે માદ આ થી વિજયપ્રતામિક્ટએ ટેક સનનીય પ્રયચન કર્યું હતું (પ્રયચ્ચ આગળ હાયું છે)

તેએ.થીના પ્રવસ્તનો સુરુ છાપ પહીં હતો. સાધાગાર વાળતી સવારનો સમાર લ પૂરા થયો હતો. જ્હારણી આવેલા વિદ્વાનોનો કુલહારથી સહાર કરવામાં આવેલા હતો

ખીજા દિવસની બપારની એક અને સફિય વિચારણા

સંતર્વી મેકેક કર ચાવ તે પહેલાં યુ સુનિયો વર્ષેલિનવાલની હાન્દરીમાં, સાવેલા વિદાનો, સ્થાનિક તથા ન્હારના આપેલાનો તે શીધારોના એક એક ભવેલના દેહ વાર્ય રહ્ય વર્ષ હતી. ઉપાધ્યાયદના સમિત અંગે શુ કરણ તેમીએ તે તથા પ્રાથમિક કેટલીક અન્ય વિચારણાએ પણ કરવામાં આવી હતી. સ્થતિ અંતે કેટલાક કર્યું કરવાનો નિર્ણય લેવાયો હતો.

બીજા હિવસની જવારની છેટક

ભપેરતા અહીં વાબતાં ક્ષત્રને! અધૂરે સ્ફેલો ક્ષયીકળ સચીતસસ્તર થી સુંદરકાલના સંદર સ્વરોધી તારે થયો હતો.

નિગંધ વાચન

પં. થી લાલગંદ માધ્યોએ આવેલા નિબધાયાથી કેટલાક નિબધાના ચંદ્રત્વના લાસોનું વાચન કર્યું ઘઇ તેમાંક નિબધા એટલા કાંદ્ર હતા કે જ્રોતાઓનું એક્લાફ ખાન ખેંગી રહ્યા હતા.

થી. મેહનતામ દાવવ દ ગોડમોગ મુન્શિ વંદોલિવ્યક્ટને લહીવની વર્ષા વરણાવ્યું હતું 'ક યુનકે તે પૈલી જ વાદ મો શુંધ્યકામાર્યુંક, થી શ્રીસાંકિક અસરામ તથા થી અમેલિવ્યક્ક મહારાત માટે કઈ 'મંત્રાનો સ્વીરા મેહ અને લીધા મહારાત પીચલિવ્યક્કાએ જ ગાંધો તેમણે આ આપ્રયુધોના રમારોનો હૈવર સત્યાની પૈસ્કા કરી ત્યારે અમને તશુ વધુ ભૂંત 'અકુલા મળા શ્રદ્ધ હઈ

જૈયાં માર્યક મોટે બે વસ્ત્ર છાર કુવર્કમાં કુકાલું કહ્યાં ત્યાં વખાયા અને તેનુ ફળ ભાગે તેના મળ અને ક્ષારે ક્ષાપણ ક્ષાપણને ક્ષાપણને વારાખો તેમાં કુકાલું કહ્યાં કહ્ય

યા. શ્રી સાંડેસરા

ભાષીતા ત્રાં શી ભાગીલાત સાહિતાએ પ્રત્યત કર્યો રાહ્યાનું લઈ કે ઉત્તર્યતા તોગદ્ વડે. વિષયજી એકલા દાંતી જ ન હતા, પશુ એક સાચા અહતારી લેવ હવા. અન્ય રહ્યા કેકદેવ દ્રેત્યદ્વો લાયાના વિકાસમાં તે વખાતના સમયમાં તેમણે વધ્યો જ ફાંધા આપી છે. ગુઝરાતના એક પ્રખર વિદાનના સ્વક્સ્તાક્ષરે લખાએક ગ્રન્ચ આપ્યે આપણને ગયે તે એક ચહત્વનો બનાવ છે.

શ્રી મફતલાલ પંડિત

એન પ્રાપ્તાદના ચાર રમોતામાં શ્રી સિલ્લોન દિવાકર, શ્રી હેપ્યત્સારિછ, શ્રી હરિસ્ક્રસારિછ અને ચોથા શ્રી ચોરાવિજયછા તેઓ સાત્ર વિદાન ન હતા પક્ષ મહાન તાપદાની હતા.

શ્રો યરો(વિજયજનં પ્રેસ્ક પ્રવચન

ત્યાર નાદ જાનતા રહ્યુખ શી ઇપરચંદ્રજી શાંભીએ સહારાજ થી ઘરેમવિન્યષ્ટને શેહું પ્રત્યન કરવાની મામલસરી વિનિત કરતાં સહારાભથીએ ટૂંકે તે મનતીય પ્રત્યન કર્યું હતું. [પ્રત્યન મહેવાલ પૂર્ણ થયા પછી છાયવામાં આવ્યું છે] મુન્લિયીના પ્રત્યનામાં હેન્દરે જણાવ્યું હતું કે હાલહાદ રહેરના તેને શક્યો થારે તો તેમના મચોતું પ્રસાતન ળહુ સહેલાઈથી લઇ શકે એમ છે. અહીનાં બેંદેલ હાદ હાદ્રા શ્રધના પ્રતિનિધિમાં 'પંચાર' લક્ષી તે એક્કા મોજ' જેની ચારી મા સવતા યોખ લાગે તે જરૂર વધાર્યા હેરી.

મેં જ વખતે સલાવાથી તીચેના સુરત્યોએ અને સરવામાંએ પોતાના તરફેર્યા મોંક મંધની આર્થિક જવાવતારી ત્યા સંખ્રતિ દર્શાને, અલાસ્ત્રવામાં નાળેલી હતેલતો સંતર જવાળ પાત્યો હતો. (1) તેક છજતાવાલ આપત્તી સુંતર્ક, (3) કેક મસ્ત્રોલાબાલ સુરતંદ ધર્મમાં લાધા, (3) તેક વીડાંકાલ વસ્તુલજ ભારોપ્પ, (v) તેક સુલાબપાંદ સુરતાર્ક ભારોપાંપ, (v) તેક હીરાલા નગીતાસ સુરતં, (j) શ્રી મીરાબી તેન વધ હા મી ચીડાનાલાઈ સંભાવ. (e) શ્રી પશ્ચીલભ્ય તેન ત્રાના દરે ઓકાર્ટ

મહારાજમીની અમીદાનો સુરત જવાળ મળતાં આતંદ વ્યક્ત કરીને વ્લ્યુાવ્યું હતું કે ઉપાધ્યાયછ ભાવાન અને તેમનું સાહિત્ય અમર છે અને જૈન સ્રોધ જ્યારી છે.

જૈનાચાર્યાં અને મુનિઓએ લીધેલી પેરક પ્રતિફા

ત્યાર માદ થા. શ્રી વિજય)તાલસ્ટિક, ચા. શ્રી વિજયવર્શમાં સિંક, યુનિથી સ્ટ્રોલિજયક, મુનિશી જયાતાવિજયક, સુનિશી કનક્વિજયક, યુનિથી સ્વાતાં વિજયના, યુનિથી સ્ટ્રોલિયિજયક વગેરેએ એક વર્ષમાં શ્રીસ્થ શ્રામાયકની કોઈ પશ્ચ એક કૃતિની અભ્યાસ કરવાના નિયું વર્ષી અનેક્ષારો કરવામાં આવી હતી. અને આ શ્રી વિજયનાં કોઈ ચાર્ચ માં શ્રી આફ્રેક્શલસ્ત્રિકિએ પોતાના સ્વયુત્તામાં તેઓથીનાં સ્થાન અપ્યત્મ કશવાનો સાધુંચોને આદેશ કરવાની નિન તિ કરી હતી. હવેદલ અનેટાંગોને શ્રામાયકના જયનાંદથી વાચ્યા વેશામાં આવી હતી.

ત્યારંગાંદ રેંદ જીવનાથા ગાળામાં મુન્કર્માળા, કેદ વાતીવાવ વર્ણાંજ તથા રેદ 'રાસેતમ દાર્મ્યદ પાંત્રમાત્રાઓ સાંધી જેમ્ટ ક્ષેત્રોણવાર વ્યાત કરી જીવાવાદાએ અંબરિત આપી, વિદ્યાનેના દાયેશની તેને સંયુત્તિને કેવો જેમ ગાળા શ્રેદે હતે જલ્લાળી, મુંત્રદને અંજાણે ગાહારાનથી પાંધારીને લાલા સ્થારોનો દાગતે તેની લાવાના વ્યાત કરી હતી.

ચહત્વના કરાવા

અનુ એક્કમાં જુદા જુદા કરાવા પણ પસાર કરવામાં આવ્યા હતા. જે ગત્યત્ર આપા છે.

પ્રમુખશ્રીના ઉપસંદ્વાર

છેન્દ્રે છતા પ્રમુખ થી પ્રયત્વહંછને લાયાં હાર કરતાં સારત્વત રુવતે તથા ઉપાધ્યાયછને ભચ મન્ત્રોમાં અંભરિ આપી પોતાના ભાતદ બહત કરી પૂક્ત ગુનિશનોના, વરાશકિતિના, ત્યાપત પદ્ધખને, તથા જુદી ભુદી બહિતનોના વાઘાર ચાન્યો હતા.

એતિસ આશાર

પ્રમુખબીના વિદાયસહાર

અંતે સત્રના પ્રમુખ શે કષ્પણ્યાછના કુલહારથી સહાર કરવાયા ભાગ્યો હતો.

इंशुका मंद्र ब्राएसहर

CI. ૯-૭-૫૭ની રાત્રે આઠ વાંગે ખરેદાડ 'રેડિંગા' જીવર બધુડેતા નિર્દાન ઢોંગ સાંગીસાલ જે. સર્કિસ્તાએ સમની કઅન્વસ્થી અને બોલફ યોલિબપ્લાના લવન અચેના સચાચાર રીધે કર્યાં હતા

યુરુમ દિસ્તા કારોદ્યારન સચાર લ

તો. <-૨-૫૩ની સવારે શો ચોલોલ્મ્બજી સુરુ રિસ્ત હૃદ-શિફ્યાઇન્ડો નિર્ધિ દેદ વાદીશાલ ચાર્યું જેના દુસ હરતે પથે હતો. દેદ જીનાલાઇએ સુરુર્યું તેની તથા થી પુરંપોત્ત પ્રદાસે રુરુપાદુસાની પ્રથમ પૂજા કરી હતી તે પ્રશ્ન છે દા સુરોતાનાદાલ તરાફથી એક હજર રૂપિયાની તથા દેદ જીનાલાઇ તરાફયો દો. પ્રગની જમાવત ઉપાયામજીના સ્થારેક કાર્યોના બોર્ડ જઈ હતી અને સરના બીજા નિર્દેશ કંપમીયાન દો. જીનાલાઇ પ્રતાપત્રી તથા કેર વાહિતાલ ચાઇલીજ તથા દોદ પરસોત વાલસ સર્ચ લ તરાફયી નવાસ્ત્રી સરવાર્ચ આવી હતી ફેરાયફ લદ દુ તથા છતાં જેને દિવસે હંપોઇન્ડાયા લાઈ એ તરફયી સ્થાપ્તિ કર્યાં અને કરવાર્ચ આવી કર્યાં કર્યા કર્યાં કર્યાં

> भ प्रशंक प्रतिवासंभ्य वस्त्री निश्चतांस्तव । तस्त्रानं के वच्छिनः तिल्योकस्वय्पती ॥ ४ ४ सर्वे परस्त्रं दुन्यं स्वेधात्स्त्रगं सुस्त् । पत्तवुक्तं सम्रातेन लक्ष्यं सुबद्धस्त्राः॥ १९७. श्री वश्चितिक्थणः] [ह कि. तथ्य सङ्घः श्रीन.

શ્રી યશાવિજયજી જ્ઞાન–સાહિત્યપ્રદર્શનનું શેઠ પરસાતમ સુરચંદના હસ્તે થયોલું ઉદ્ઘાટન

પૂ . ઉપાધ્યાયછના સ્વહસ્તાક્ષરની બહુસૂલ્યકૃતિઓનું સુવર્ણ રહેારાથી ઘએક્રું પૂજન

હજારા માણસાએ નીહાળેહું પ્રદર્શન

ઉपाध्याय श्री यशोकिलय सारस्ता सत्र अकेतसर निभित्ते केंद्र नानं पश्च विशिष्ट प्रकारन संस પ્રાાન માજવામાં આવ્ય હત જેનું ઉદ્વારન સાતમ શનિવારની સવારે ધર્મપ્રેમી શેંદ પ્રરક્ષાત્તમદાસ સરચંદ્રસાઈ ધ્રાયદાવાળાના રામ દસ્તે કરવામાં આવ્યુ હતા શેક પ્રસ્તોતમ સમ્પર્દ જૈન સાહિત્ય અને તેના પ્રયાર ત્રવા માનતના ખાસ ફરશેખ કરી જેન લાંડારામાં ભારતની લગ્યસંસ્કૃતિ સંધરવામાં જેન સાર્કોએએ ખુબવેલી કોંગતી સેવાને અજલિ ભાષી હતી. તે આવી પ્રદર્શીત વારવાર રોછ પ્રભતે અનેક પ્રકારત હાત આપવાનું સવત કર્યું હતું. તે પ્રકારે સુરુરાતના શ્રિકર રથાપત્યના ઉડા અસ્પાસી સાઇ ઉમામાન્ત પ્રેમાનક શાહ એમ એ એ, જૈન કલા ઉપર ડેકે વિવેચન કરનાં જવાઓ હતું કે " લારતીય अवाना प्रतिदासभा क्रीन सरविनो वाले कर मेटी हावा हे अपने अतिदासिक आण्या सरवी सर्तिसीसी મોંથી પ્રાચીન-મોર્પ જવાનાની એક જૈન કર્તિ જ છે. જૈન સથે ભારતના ક્રાઈ પછ ધર્મ કરતાં વધારે संभागपर्यं येताना आयीन अन्या, हेवालये तथा जिल्या वयेरेनी सायवसी तथा शैतिहासिङ नीये। રાખતા પ્રયાસ કર્યો છે પ્રત્યીન હૈને રથાપન અને કલાના હજ નશા અવધેશે શાધી ઘકાય તેમ છે 'આગળ ચાલનો જસાવ્ય હત કે ખાસ કરીને ભારતની પ્રાચીન નગરી સાંચી (બેલસા નછક)માં જૈન ધર્મની દર્શિએ તેમજ ભારતવર્ષની કલા, ઇતિહાસ વગેરેની દક્ષિએ સસોધન થવાની ખાસ જાર છે વળી માદકામની આવલ્યકના ઉપર ભાર મૂકતાં જવાવ્યું 🚮 કે ગાલી જ ગીછ જરૂર મધ્યકાશીન રાજગતની લાવ્ય નગરી ચંદ્રાવતીના અવગેલાને ગ્રેકગ કરવાની, ગુજરાત ધાઠણ, તેથી જુવું વરલબીપુર, તેથી વળી પથ જુત સિત્રમાલ, મારવાડાં શ્રીચાલપર, ખાદકામની ખાસ જરીઆત મામી લે છે. પ્રાચીન જૈન પ્રતિદાસની ખૂડતી કડીએ મેળવવા માટે આ જવાએ તેમ જ ભાગતો પશ્ચિમભાય સરોધન માગી લે છે भा प्रदर्शनमा शुक्रशतनी आसीन बस्य शिक्ष सैदीना, समय क्रोक्रे मणनाथी वह थेडा व नमूना रथ् કરવાર્મા આવ્યા છે જેયા ખાસકરીને અહેદા અને વસતરાદની ધાત પ્રતિમાઓના મુખ્ય છે.

પ્રદર્શ-વર્ષ ન્યાયાવાર્થ ઉપાપ્યાય થી શક્ષાવિલ્લાઝ ચર્દશાલના પોતાના જ હાથે વધેમા પ્રત્યોની પ્રતો તેમ્જ તેમના પ્રત્યોની પીછ હંતાનીપિત દેશ જ તેમની પ્રક્રિક અને અંગ્રેક્કિ અન્ય ફેરીએ પશુ જુ સ્વાચાં આવેલી કે, એ સ્વાસ્ત્ર હિલ્લાન પ્રદર્શનો પ્રતિકા વ્યક્તિ સ્વાચાલ ક્રેકિસ્સ કૃતિસ શે પ્રયુપવિલ્યા શ્રહ્માં જ્યારની જે, વળી સુનિતી રેપેલિલ્યાઝ (સીક્ષ), પ્રતર્શન થી દોનિવિસ્ત્યાઝ, કૃતિથી હું સહિત્યછ, તેમજ પ્રાપ્ય વિદ્યા ગૃદિર (વડોદરા)ના લગ્ન લાકોગાંથી આ પ્રેતો રજુ કરવામાં ખાર્લ છે ગેલી મજુ કરવામાં પંડિત હામરોર મોંધી, હવા દુર્કાની પ્રોક્ષિતિ કહ્યા હેમ્પર હોંદની છે તેમજ તેકે સ્માલુક્ટ કરવાલું અવારાદક, ગી સુક્રિત કહ્યા તેને પ્રોક્ત તા ગૃદિ વડેના તાત ગદિ વડેતદાના સમતના ફેડ્ટામો, તમા સુનિયો પુખરિત્યાભ્યામાં આવતાં લગ્ન અન્યપ્રેટ, વિનિદિયો, સુર્વાનું—પેમ્પ માર્ત્ર સુરુ સ્ત્રીને તેની વિશિષ્ટ ખૂનિસ્ત્રીનો ખાલ આપવાની સુદ્ધ પ્રયાસ સ્ત્રી હતો શી શ્રેક્ષકાસ ક્ષ્મપ્રે આપો મનાવેલા ખાતે તેને સાહિત પાર્ટિયની માંદીશીના લાવવાન થી મહાવીર સ્વાર્થના છવન ત્રસાગ્રેના આપો મનાવેલા ખાતે તેને સાહિત પાર્ટિયનો માંદીશીના લાવવાન થી મહાવીર સ્વાર્થના છવન ત્રસાગ્રેના આપો મનાવેલા ખાતે તેને સાહિત પાર્ટિયનો માંદ્ર પાત્ર ખેત્રે તેના હતા

કીંમતો પ્રતિઓ ખાસ કાચના કેસીએમાં યુક્લમાં આવી હતી ગ્રહ્માં તેનો લાભ જૈન-જૈનેતરવર્ગ મેદી સખ્યામાં હોંધા હતો.

એક ભાલુ પ્રદર્શનામાં ન્યાયાચાર્ય, નારાવિશાસ્ત પૂ ઉદ્યોખાવ્યા ગીમફ ચંદેલિજવા મહારાજની 8પલબ્ધ સુંદિત પ્રતાસન ને પુત્તાસની તમામ કૃતિઓ ખુલવી કરીને ચૂકવાર્યા આવી હતી જેસલ્પેરમાં ચંદેલી પ્રાચીન કલાકતિઓના પણ નગતા ચુકવાર્યા આવેલા હતા

પ્રદર્શનમાં સારી ગ્રેનો સાગ્રહી પ્રખર સત્તેષ્યક મુનિષ્ટ શ્રી યુપ્પરિબળ્ય મહારાજે ગ્રાપના ઉદારતા ભતાની કર્તી ને હેરેક સત્ત્રા અને મેક્ક્રાવનારને પ્રવચનમાં આભાર ચાનવામાં આવ્યો હતે:

સત્ર પસાર કરેલા ક્સવા

ઠેશવ ૧, જ્યા સગેલન માને છે કે ન્યાયવિશાસ્ત્ર ન્યાયાચાર્ય ચંક્ષેપાયંત્ર્યા શ્રી ચક્રોલિયન્ય મકારાજનું ૧૫૧૬ તીચેલી કીટે થવ જોઈએ

(1) લેકેગ્લીના સન્યોતુ દ્વાલનાતમક અને લાક્કોલ પહોલિંગ તે તે વિવરના યોગ્ય વિહાતો દારા સપાલ કરાવું કરેલું કરે (2) તેમણે જે જે વિવરોના સન્યો સંત્ર્યા તેવે તે વિવરોના તથા કરે તે તત્ત્વન દારાના અભ્યાસ માટે સ્વયુનિત તોકળા કરેલી (2) તેમળ હેલ તે સ્વયોગને તેમાં કરેલા તેમ સ્વયુનિત તોકળા કરેલી (3) તેમળ હેલા તે સાંત્રિક અભ્યાસ-નાર્યુલિ રામાવ્યા (3) તેમાં કરીની અભ્યાસ સ્વયુની આપ્યામ પણાંત્રી, તેમને આપ્યાસના સ્વયુની આપ્યાસના સર્વાલ (4) તેમાં સ્વયુની આપ્યાસના સર્વાલ તેમના સાંત્રક અના પ્રદાર્થ (1) તેમાં લીકીની અભ્યાસને સ્વયાસના સર્વાલ તેમના પ્રદાર્થ આપી સર્વાલ તેમના પ્રદાર્થ આપી સર્વાલ તેમના પ્રદાર્થ સર્વાલ તેમના સાંત્ર સર્વાલ તેમના સર્વાલ તેમના

(જૈન મુનિએ) અને મુહસ્ય વિદ્વાનો હથા જૈન આગેવાનોની એક સમિતિ નીસવામાં આવો છે જેની યાદી આગળ હાપી છે).

સ્પિલ ં ર લાસતવર્ષના અને વિશેશન ગુજરાતના સાંસ્કૃતિક વિકારમાં તેને સાહિતપો દિશાળ કાંચ છે. તે વર્ષિ લક્ષમાં રાખી સફ્યા જાહારાળ કી સમાકભાવ ગાયતાનો પ્રાપ્ય વિદ્યાર્થિક વેઠારામાં તેને પહિલાદા તેને સાહિતાનો ચાહન માટે વર્ષીયો પેલાના કરી હતી, તે લગભગ ખરીશ વર્ષ સુધી ચોલું રહી હાલમાં સાર જાળા કેમાં કરવામાં ગાયો છે. ગા સ્ત્રોયન સહસ્તાના સમાકભાવ સૃધિનિકેટીને આગ્રહપૂર્વક ભલાગણ કરે છે કે જેન સાહિતના સમાદનાં કામ શતુ રહે તે માટે પૂર્વવત્ પોજના ચાલુ રાખવા માટે મટતાં પગલાં તાતાવિક ભરવાની વિનાતિ કરે છે.

કરાય: 3 મુંતર્ક રાત્માર્યા આવેલા તમારા વિદ્યાપીડામાં મોર્ડ ગાંધ સ્ટક્રીઝ વગેરે અને તેની અંતર્ગતમાં ગ્રામ અર્ધગાવાંથી (પ્રાકૃત લાધા)ને પકનપાકનનો ગળેમ સાટે ગાંધ ગેલન જે તે નિર્દાપીકોને ભાગતપુર્વક ભાગમણ કરે છે

દેશવ ; ૪ અર્ધમાગધી ભાષાનું શિક્ષણ રકેલોદારા અપાવવા લગ્રામણ અગેતા.

કરાવ : પ જૈન સમલ્પનાં અર્વચાત્રથી લાગનો પ્રવાર વાવ તે માટે જૈયોને આ સગેશન કાલાપણ કરે છે કે તેમણે પોતાના ભાળકોને આ શાધાનો અભ્યાસ કરવા યોગ્ય ત્રેરણા કરવી અને કરતો પ્રવાધ કરવા

કરાલ : ફ જૈન સાનભાડરાના સચિષત્રા સારુંભ પહોંતથી તૈવાર કરી પ્રસિદ્ધ કરવા આ સમેલન વે તે શાનભાડારાના વ્યવસ્થાપદાને આગ્રહપૂર્વક વિનતિ કરે છે.

કરાવ : ૭ સુંબર્ધામન્ય ગાટે થી મહત્વીર કરવાણુર-જન્ય હિતો દિવસ સરકારે ગેફ્ટેટ તહેવાર તરીટ ભાકેર કરેશો છે. સુલ્કી કચેરીઓઓ તે દિવસે રઆ ત્રખરાચાં આવે છે. વડેક્ટ્સ પ્રાંતમાં વિદ્યુસ હૈંપસંખ્યા છે. તેથી વડેક્ટાની દિવાની કચેરીઓમાં મહત્વાર લગ્ન હિતા દિવસે રાળ પાળવા હતા સત્ત્ર વડેક્ટાનાં ત્રીજ્ટ્રીક્ટ વ્યવત્ત્રે આલહાસુર્યંક વિત્તિ કરે છે.

કરાય : ૮ શો યોલીવિખચ્છ સારત્વત સમતે પોતાતે આંત્રણે આમંત્રી તેની લખ્ય રીતે ઉજવી અતે શ્રી સંધ્યા સંધ સગદુન સાધવા ખદલ હોલાઇના શ્રીસંઘતે હાર્દિક અધિતંદન આપે છે.

સ્કૃપ : ૯ મા રાતના ભવ્યક્તા અને પ્રેરક શાહિલપ્રેયો શુનિશી સ્ફ્રેસિન્લાઇ મહારાત્ર પ્રતે મા સમેતન પીતાનુ સાથુ વ્યક્તા કરે છે અને તેલાના પ્રતિકારક રિલ્મો અને લગ્ન સ્કાર્યો વધ્ધ જેઓલીને તયા તેમને સાધુર્ય સાલ્યક તેઓલીના ક્રારેલો— યૂ આવાર્ય શ્રી વિભયપ્રતાપાર્ટી વધ્ધ સહારાત્ર તથા યૂ. આવાર્ય શ્રી વિભયવર્ષ-દ્વિવાલ સ્ક્રાઇમાને અભિન દત્ત પૂર્વ દત્ત્વના આપે છે.

तींध — ३० वरसता शूना क्योसिसाः क्षेत्रा अध्याना आवेशा सुभाव अन्तना समावारेनी "कृत" प्रतासीन सन्तन

ડેમાર્કનું સુખદ સમધાન

કેવિકોર્ડન વિભયવેલ્લારિ પણ અને સાગર પણ વચ્ચેના દુઃગદ કહેદાનો લાગા વરસે જે સુખદ અંત આવ્યો. તે સંસ્તિપતિ સ્થાનિક તે બહારના લાર્ક અને આતંદ વધો અને યુ ઉપાંધ્યાયછ સ્ટ્રોનિજન્છ સારાજનો પ્રમાલ પ્રગ્રાંતનીય વચ્ચેન, કારણ કે આજ સંધીના અનેક પ્રદાવમાં વધેલા પ્રયત્ને લાગ્ય નહેલા બચ્ચા, તે આજે અની પ્રદા

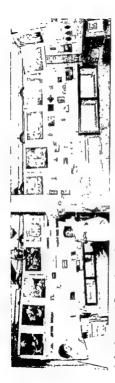


ધામત્રાના મુળકવામાં ગેર પુરનાતમ નુસ્યકે પ્રવ્યોનને ખુલ્લ સુક્ષ્યુ ત્યારે ઋડયાંનલી તત્વીર





સત્રના પ્રમુખ અને સમિતિના સમ્યોની વિનિવધી-સંત્રોહવરના જન્મદાના પ્ર. ગુનિયોધમાહિતપછ પોતાનું વકતવ્ય રજ્યું કરી રક્ષા છે



ડબાઈના મહાપાપ્યાપ શામશાવિજપાછ જૈન હાતમાદિરના ભવ્ય સકામમા પ્રકર્શન સમિતિ તસ્ત્રથી જે ભવ્ય તમ્લીર આ પ્રદેગેતમા પ્ર ઉપાપ્યાયછ ભગવાન શીમદ્ મશાવિજયજી મહારાજના સ્વહસ્તાકારની બવ્યકૃતિમા,

એની પુતાલોમાં તે જ વખતે સત્ર તે પ્રતિક્ર પર આવેલી મુખર્ચના લીધત ત્રિપુડીએ આરમતા લિમી સાગતપમાં જ પોતાના તરફથી નવારપીના અફળી જોતર કરી એડલે સેવાં વધુ આતક પ્રત્યો અપ સત્ર અને પ્રતિક્રાના પ્રત્યો સામાં આવેલાતી આવવાનુ હતા આ દ્વાધાના સુલલ પ્યું ઉપાધ્યા અને પ્રત્યોના સાગલ પર્ધુ કે અને પ્રત્યો સાથે હતી એ માટે સર્ક કોઈ પૂ ઉપાધ્યાયના પ્રવૃપ્તમાનને પ્રત્યો સાથે છે આ સામાં માના સીનેત્વાના ના લાધાલાઈ તથા તોકારાનાના વૈત્ર વાહીલાઈએ પણ ઘણી પ્રસાધી જે તેનત ઉદ્યાની હતી ભારી, પૂત્ય કાર્યોના અમત્રી નિખ્યાલય દિવસી લાધનાતું આ સાર વિ

55

વિતયતું શ્વરૂપ

नैकोन्देऽपि विनीतामां द्यते सुवर्धपिनास् । मैकोक्पेप्रप्यविनीतामां दशकेऽसुवर्धपिनास् ॥ ज्ञानादिनिवयेमेद पृज्यत्वाहिः सुतीदितः । शुक्रस्यं हि सुवापेसं न स्वेच्छामनुषावति ॥

्रशुरूपति विनीतः सन् सम्बनेतास्वरुध्यते । यद्यावत् कृतते वार्षं अदेत स न मादाति ॥

होषाः फिळ तमासीच सीवन्ते विश्ववेत थ । प्रस्तेनांशुज्ञालेच वरणातिक्त्रमण्डलात् ॥ प्रतस्थाप्यतिद्योषाय श्रह्मं वित्ययं विश्वविद्याय व्यापस्यतिद्योषाय श्रह्मं वित्ययं विश्वविद्याया । ययापस्यतिद्योषाय विश्ववायांश्रीयमस्यतिद्यम् ॥ विश्ववेत्र वित्यवे विश्ववायांश्रीयमस्यतिद्यम् ॥ वैरुप्यत्रेसरोज्ञयं सोसमागां विद्युप्यते ॥

ઉપા. શ્રી સ્ટ્રેલિયમથા] [વિત્રસ્કાત્રિ ફિલ્સ

સત્રનાં પ્રમુખનાં ભાષણા તથા પૂ. મહારાજશ્રીનાં પ્રવચના

ં નોંધ : સ્વાગત પ્રસુખ છા. બાલચંદ એકાલાલે આપેલા ભાવભૂનેદ ઉદારો અથ આપવામાં આવ્યો છે.

॥ श्रीकोडणपार्श्वनाथाय समोसमः ॥

સ્વાગત પ્રમુખનું વક્તવ્ય,

શ્રીયશે:વિજય સાસવત સલના પ્રસંભ મહેદર, વિદેવજના, અને અન્ય સંવજના.

શ્રીયશેલિજય સારસ્વલ સ્કામાં લાગ લેવા જાપ તો કૂસ્ટ્રમથી અમારી જા નાનકઠી નગરી હેલોઈમાં પક્ષાર્થો છે, તે ડસ્ટ્રમેં આપને આવકાર આપતાં અને આપતું સ્વાગલ કરતાં મને અલ્વંત આનંદ થાય છે.

અગાર્યું હક્ષાઈ લગલાગ ગીકા હત્વરની વરતી ધરાવતું નાતુ છતાં સેહાંમાશું તાહુકાલું મધક છે. તેને ઇતિહાસ ચોરવરતી છે. તેનું પ્રાચીલ લાગ હતાંવતી હતું. લાટ દેશના પ્રુપ્ય નગરોમાં તેની ગાલુના લતી હતી. પૂર્વે 'હિલ્લુ સુન્યતામાંથી ઉત્તરમાં નગતો ગયુન પૂર્વે કેંદ્રાની પ્રયુપ્ય નગરોમાં તેની ગાલુના લતી હતી. પૂર્વે 'હિલ્લુ સુન્યતામાંથી ઉત્તરમાં નગતો અંધે તેની ભાગતા માર્ચ હતાં હતો. વેચારના માંલ્ય તરીકે તેમ જ ધાર્મિક સંસ્કૃતિની પ્રચલતાને સંધે તેને ભાગતાં સાથે સંસ્કૃતિની પ્રચલતાં સંસ્કૃત માટે નગરની સાથે અનાન સંસ્કૃત માટે નગરની સાથે અનાન સંસ્કૃત માટે નગરની સાથે અનાન સંસ્કૃત માટે નગરની સાથે અનો હતાં સંસ્કૃત નગરની સાથે અને હતાં હતાં તેને અને કહ્યાં સંસ્કૃત માટે હતાં માર્ચ અને હતાં સંસ્કૃતિ સાથે સ્વાપ્ય અને હતાં સંસ્કૃત સાથે અને કહ્યાં સ્વાપ્ય અને હતાં સંસ્કૃતિ સાથે સાથે સ્વાપ્ય અને હતાં તે પૈત્રી લાવે છે. હિલ્લાના તમાત્ર કરવાનાઓ પૈત્ર હીરાના કર્યાં પૈત્ર હીરા સ્ત્રી માર્ચ સ્વાપ્ય અને તે સ્વાપ્ય અને તે સ્ત્રીએ વિશેષ એ મહાન સ્થાપના સ્વાપ્ય કરવાનાઓ પૈત્ર હીરાનો સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સાથે સ્ત્રી સાથે માર્ચ સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સાથે તેને સ્ત્રાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ સ્વાપ્ય સાથ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સાથ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ્ય સ્વાપ સ્વાપ્ય સ્વાપ સ્વ

च्या ઉपरांत व्यर्डीना. व्यतिकृष्य अने इद्यात्यक्ष चयनबृधि कैनमंदिरा, तेमां विराजमान मङ्ग्रिकाचक श्री डोक्क्युपार्थनाथ प्रज्ञ चलेरे मंजदमय क्रचीत्याकः प्रतिमान्ना અને તેને આધારિયક, સંસ્કૃતિ પેપાક શ્લાકાલીન ઇનિકાસ, પ્રતિવર્ણ સંખ્યાંબંધ જેન માર્કિકાને આત્મકત્યાકુતા અગૃતપાનનું ચાર્ચત્ર્રણ આપે છે. અક્ષ્રેસ્ટ્રબનાતના મંત્રીચર તેમ્પાસે તેમ જ સાળવાના અક્ષ્રાસ્ત્રન પેચ્કાસાંક શાહિકારમાં આ રસ્ક્ષ્રીય બિન્માસિક એપોલા; એટલું જ તરિ પંતાની કરિતાસ અગૃત છે તે સમયમાં આ દર્શાનની નગારી સુન્ય-તેમ આ નગાનીનો પ્રાચીન ઇનિકાસ બજાવે છે તે સમયમાં આ દર્શાનની નગારી સુન્ય-તેની પાંચ મહાનાસીઓ પૈકીની એક તમારી તરીકે ત્રાસ્ત્રા ત્રાસ્ત્રુના ચાલુવાઓ આવતી હતી.

આ એ જ મહાનપણી 🎚 કે, જ્યાં — જેવી ગરભીએ. લાધેગામ ગુજરાતેણે હજી ગાય છે તે — લક્ષત કવિ શ્રી દ્વારામ જગ્યા હતા.

આ એ જ પહેતાનારી છે કે જેવી પુરુવાશિયાંથી યૂ પંત્યાસ શ્રી રંપવિજયછ સ. તથા યૂ શ્રી જવ્યવિજયછ સ. તથા યૂ શી અમાવિજયછ સ. અહિં લગલમ ૧૦ સુનિ-મહાભાગે દક્ષિત વર્ષોક દહેતા. અને આજે વ સાધ સાવીજો એક તે લગલમ ૪૦ પુરુવા-ભાગો હિલિ તરીકે વિસ્તાન છે. જાલબા ઉલ્લબ્ધ શુખ્ય પ્રેસ્ક અમારા ઉપકારક, અથામ પરિતાની, સાહિલાંપ્રેની, અવધાનાકર યૂ વિલાલ શુખ્યિત છે. અહીં જ પીરામ્પ્રેસ છે, તેઓ પણ અને સ્ટીકાંઇલ જ છે.

આ છે જ મહાનમારી છે કે ત્યાં, આ સાર એવા શુધ્ધ નામ સાથે ચાંધવાપેલું છે, તે મહાત લુપાયાણ શ્રી સ્ટ્રોશિનિયાઝ વિ. સ. ૧૯૪૩ માં રચ્યાંપાસ પામમાં હતા. સત્તરમી સક્ષીમાં થયેલા પહુદાં'ત્વેતા, ત્યાંયાચાર્ય, ત્યાંપવિશાસ આ 'તાચારબાય' સ્ત્રોલી વિત્તા, ત્યાંપાસ સાહિત્યકાર્યન અને વિત્તેતાનાં દેશાયું છે. તેઓ સ્ત્રી પોતાવી આપ્રતિમ વિત્તા, ત્યાંપાસ સાહિત્યકાર્યન અને વિત્તેતા શાહિયા લક્ષુ શ્રી હસ્થિતશાયા' તમા ગીત શ્રી હેમ્માં દ્રાચાર્ય તરીકે પ્રશાસને પામમાં છે. છેલ્લા મ્યુલો વર્ષમાં તેમના મન્ત્રેતા તાર્ફિક મહાન વિસ્તૃતિ તેન રસાયત્રમાં પ્રક્રો દેખાલી તથી. તેઓશ્રીથે માન્ય ત્યાં ત્યાં છે. તેમ મહાન વિસ્તૃતિ તેન રસાયત્રમાં પ્રક્રો દેખાલી તથી. તેઓશ્રીથે માન્ય દેશામ પ્રસ્તિલ છે ત્યારે દેશાસ સ્ત્રાસ્ત્ર છે અને પ્રાપ્ય છે.

કેલિકાલ સર્વ'ફ શ્રીમદ્ હેમાર્ચ ડાંગાર્થ પછી જૈન સમાજે વિષ્ઠા સાહિતના સર્જનકાર અને નવ્યત્યાયના પ્રખર વિદાન હવીકે ખીજા 'ન્યો.તિર્ધર'ની ગુજરાતને હેટ થાપી છે.

તેઓશીના સ્થાંવાનન વાદ લીકે જ વર્ષે કિ સં. ૧૭૪૫ માં પ્રતિકિત તેમની પાંદુકા મહિ સ્થાપિત એહી કિ. તે પાટ્ટમ સ્થાને તૃતન ગુરુમ સ્થિતી સ્થવા મઈ કે. તેની પ્રતિકાના શુક્ષ દાંકહ્યું, માફી જ વિભાગાન, વર્તપાન કી શરોકોલ્યા સરકારાનની ત્રેમણાથી વસ્તુઓને એપી લાગતા સર્ગ કે સ્ત્યુપ – પ્રતિક્રિત એ તો આપણી પ્રસ્તા – ભાગતાં છું અને પ્રેસ્તુનભાદ પ્રતીક કોલાથી વર્ષની કેન્ય કાર્યા એ એક બાહ્યદાંત કે મંજાતિ કે. તેમની સાથી લાહિત કે માંબલિ તો તેમની વિલેતાને કાર્ય તેની વિલેત પરિષ્દુ ક્ષણ ત્રેઓશીની કૃવિચાનો, તેઓશીનાં સાહિત્યની, તેઓશીના સિહોતાની ચર્યાં થાય અને સાનપોષ્ટિ હાત્ત કોઈ રચાળી યોજના ઘદી કહાય તેમાં રહેલી છે. તે સાવનાનું પરિસામ એ આજનું "સારસ્વત સ્ત્ર" છે.

સારરવત સત્ર એ સંસ્કાર ઉત્સવ છે અને માનવછવનમાં તેની કિંમત ઘણી છે. આવા ઉત્સવ અમારા ગામમાં ઉજવાય છે તેથી અમે ગૌરવ અતુલવીએ છીએ.

શાશન પ્રસાવક પૂ. ગાગાવાં શ્રીમફ વિલ્વમીકેનસ્ટ્રીચરજી મહાશાળના પદ્ધર શિલ્ય પૂ. માચાર્ય શ્રીમફ વિલ્વમાતાપદ્ધીચરજી, તેઓજીના પદ્ધર વિદાન માચાર્ય શ્રીમફ વિલ્વમાર્મસ્ટ્રીચરજી, તથા તેઓજીના શિષ્ય શુનિશ્રી યશાવિલ્વજી મહાશાબ્દો હું અભિ લાહન સહ ચાલાર માતું હું. જેઓએ જૈન ઇતિહાસમાં વાદમાર સહી હ્વય તેવા અનેશ પ્રસંગ તે લાલ અમને અપાબ્ધે ∰

કૂર કૂચ્ચી હરાવલ્લ કરી પ્રધારનાર યુ. આચાર્ય ત્રીલક્ વિજયપ્રતાપસ્ટ્રીયરજી મ તથા પરમપૂત્વ આ. હીમફ વિજયસાઢ્યેક્સ્ટ્રીયરજી મહારાજ તથા પ્રધારેલા યૂ. સાખીજી મહારાતાચાને પણ હું વંદન કહું છું.

ભીજી એક કૂતરાતા સાથે વ્યક્ત કરવી હોઈ એ, તે એ કે એક પિતા પોતાના પુત્ર તારફ જેવો વાલાવ્ય લાલ પરાવે તેવો જ લાલ રત પૂત્ર વ્યાચાર્યા શીમદ્ર વિજયમાહત-સ્તુરિયરજી મહારાજ અમાસ દેગ પ્રત્યે ધરાવતા હતા. ત્યાર લાલ દેગેકાશીના વિશાન અને શાસન પ્રાથાયક શિયા – પ્રદિખી પશ્ચ અમાસા પ્રત્યે તેવો જ લાલ પ્રવાવતા આવ્યા છે. ક્લોપ્ટીના શિક્ષત પુસ્ત્યાતમાં ઓના તેવોટો લાગ તેવેગાશીના આવાવતિ છે. ક્લોપ્ટીનું આપંભિક ખાતું, તેવાસકન સંસ્થા તેવેગ્રાહીની પ્રેરણાનું જ પરિણાસ છે અને પૂત્ર્ય ઉપાયાયજ અસાસબાર્યું જેન સંઘ ઉપરાના અએક ઉપક્ષાસ્તું રહ્યું અલા કરવાની તેવી વધુ વધુમાં પ્રથાસ તેવેગાશીના જ સસ્કાલયનો છે. જે લાત જેન સમાજને લાલીવી છે. અને પૂ ઉપાયા પ્રથાસ તેવેગાશીના જ સસ્કાલયનો છે. જે લાત જેન સમાજને લાલીવી છે. અને પૂ ઉપાયા પ્રથાત અને ઉચ્ચાલી ફાત – ચારિયોલાયનો મહાન પ્રસંત્ર પણ તેવાત જ સર્ગીવય પ્રયત્ને આસારી છે તેથી તેવેગાશીને હું લુદિ લાતા કર્યું યુ પ્રક્રાચીન, તે અમારા સંત્રનો પ્રીવન્ટર સાધુરત મહારાજ શ્રી યશાહિજભાગને વિનાર વિનાંત કરૂ યું કે આપે જે ઉત્સાઢ તે પત્રસાથી કર્યા આદર્શું છે, તે આપના સ્તૃત્રકેલના શુલારીલાંદથી અવશ્ય પૂર્વ કરશે. અને આયારે ખતો સહિકાર જરૂર આપીલાં

બીજી એક વાત કર્ફ કે, આવત્વી પંદર વર્ષ ઉપર અધાને આ મહાપુરુષના સમાધિ રચવાના પુનરોત્કાર કરવાની શ્વાવના તથી, જંગ્રહમાં યુદલા પહેલા સ્થળને શ્રી સથે તતું જીવન આપ્યું અને આજે તો તે રચ્છે, લખ્ય આદિકિત્ય પાદુકા, લગવાન મહાવીરની તિવાલુધીયની લખ્ય ચાદ આપતું રસાલીય જલમકિર, પરાચીવણિવ પૂ ઉપાધ્યાય શ્રીમદ્ શ્રેસીવિજયજીતું રૂઝપાદુકા મંદિર, ક્લોક્કમાં જ રવાર્યવાસી ચપેલ પૂ. આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજયમાં હેન્સ્ટ્રિયિસ્ટાનું શુરુમાં દિર વગેરેથી એક પરસ્ય શાંતિના ધાત્ર રહ્યું આધ્યાત્મિક સ્થાન બની ગયુ છે. બહારના યાત્રાર્થીઓ વ્યાંની પવિત્ર અને આધ્યાત્મિક હવાના ફેકાઈ વુરો જ અનુસવ લઈને સ્થય છે.

આ સ્થાનના યુનરા-હારમાં સ્વ. પારેખ દોક છવાયુલાલ ગુનિલાલ તથા પટેલ શ્રી ચંદ્રલાલ ક્ષિપ્રતાલલ અને તેમના સાચીલારોનો ફાળા મહત્વનો છે. ઉપદેશદારા આવિ'ક સ્ક્રેલ કાવનારા જુદા જુદા પૂર ગુનિરાઓ ને સામીછ મહાચાલનો પણ થાર સામ્યા તેના સંદેતા નથી. હતુ અમાર્યું કાર્ય અપૃતું છે યૂ. ઉપાચ્ચાયછ સાયસ્ત જૈન સંમના હતા, તો ચતુર્વિય જૈન સર્થે જેવો સહકાર આપ્યો છે તેવા. બહરે તેવી વધુ સહકાર આપશે તેવી હું વિનંતિ કર્યું છું.

પૂ. ઉપાધ્યાયભ માત્રણે માટે મહાન છે. તેવો નજીના જ મહાન ઉપાધી છે. લગવાન ઉમારવાતિવાચાની ' કાવણવાંદ કાવવાદેવાંગ વેકાવાં 'તી કરિત પ્રમાણે યૂ ઉપાધ્યા-યજની માસ્ત્રપ્રામિતા કાવણવાં ટેવી મહાન કહતો, કેલ અચાય અને અપૂર શાન, અને કેવી મહુપમ આદિવાશિતા હતી, એ અહીં પાયરેલા વિકાનોના અવનોન્ય ધાનાણો જ. કે તો તેઓને માત્ર શત શત વાંકન કરીને શાસન કેવોને પ્રાર્થના ક્લું કું કે આવા અનેક ઉપાધ્યાયભૂતો સમાન્યપાંથી પાટે અને એન્લાસન અને નજવતી મહાવિત હતાવે.

આ સત્રને હતું એક જ છે કે પ્. ઉપાધ્યાયછ જેવી મહાન વ્યક્તિને ખૂંહકુ ગ્રુજનાત અને લાવત આળખતું આવ, આત્રી ભૂમિકા ગ્યાસત્ર ઊભી કરવા માથે છે. જેવી તેમાંથી લાવિ ક્રાઈ સક્રિય પરિભ્રામા જન્મ પાંચે.

વ્યમારે આંગણે પ્રધારેલા સાન્યનોથી તેવા –લાદિત માટે રવાળવ સમિતિએ ઉચિવ વર્મામ પ્રશ્નંધ કર્યો છે, કર્તા રાતુષ્ય સર્વરાદિતામાન તો નથી જ. ચેમ સમક્ટને અમારી ઉદ્યુપે લાગે તો હકારસાથે શસ્ત્ર ત્રણથા તેવી નમ્ર વિનર્તિ કર્યું છું.

આપ સી વિદ્વાનો એ મહાપુરુષના નામ સાથે એકાએકા ગ્યા સવમાં લાગ કાઈ રહ્યા છે, તો મારી આપ સહુતે વિનતિ છે કે તેમના ગધ્ય રહેલા કાર્યોને વેગ મળે, તેમની ગ્રાન, વિદ્વાદા અને મહાનતાનો ગ્યામ અનતાને લાલ મળે, એવી કેઇ વેશ્યના ઘઠી કાહ્યો તો આ સત્રની ઉત્પાણી સાર્યાંક શકો.

ફેરી એક વાર આપ સૌતુ અંતઃક્તસ્યુપ્વક સ્વાગત કરી વિસ્કું છું.

शिवस्ते सन्तु पन्यानः । ॐ शांतिः

રે શ્રીમાળીવાળા વિસ. ૨૦૦૯, મૃત્ય લ ૭-૮, શ્રાનિ-સર્વિ તા. ૭-૮, ૧૯૧૩ વીરસ. ૨૪૭૯ ખાલચંદ જેઠાલાલ શાહ પ્રમુખ સ્વાચલ સમિતિ, ઢે**સાેઇ.**

શ્રીયશેાવિજયજી સારસ્વત સત્ર ઉદ્ઘાટન પ્રસંગનું વક્તાવ્ય

प्रमोदमासारा गुणैः परेषां, वेषां मितर्मेवति साम्यसिन्धौ । रेतीच्यते तेषु मनः प्रसादो सुणास्तयैते विश्वतीमवन्ति ॥ —श्री पशाविश्यक्ष

િવાત : શ્રી પ્રસત્નમુખ મુસ્વ'દ ભદામી જ. એ: બા એસ્સી, બાર-મેટ-સા. જે પી જજ્જ, સ્પેલીલ કોઈ, પ્રલઈ

સજ્જના અને સજ્ઞારીએા,

"શ્રી ચર્ચાલિજાજી સારવાત સર્વ"ના સમારં અનુ ઉદ્વાટન કરતાં અને ઘણા જ આનંક શાય છે. હું અભારે મારી ચોગ્યતા અચેગ્યતાનો પ્રશ્ન ચચતા નથી. હું માતુ હું કે આ કાર્ય માટે મારા કરતાં વિશેષ લાયક અંબ્રિને સગના સૂત્રધારા જરૂર ચેળવી શકયા હોતા! છતાં પણ તેમણે જે મારા તરફ સફલાય દર્શાવી આ કામ અને સોંપ્યુ છે તે માટે હું તેમના આસારી હું.

ગ્રા સ્થળ (હેલોઇ) છે પૂ શ્રી સ્ટીમિલ્યાઝના છવન પ્રવાસત અંતિમ સ્થાન દોઇ મા સમારંશ મહિં ચોલાય એ સર્વ રીતે ચેડ્ય જ છે. વણા લાંબા કાચે પક્ષુ આ કામ' હોય ધરવામાં માણસુ છે તે ગાટે સમારંશના ચીલજેશ માને આ સનના અન્ય પ્રેરદેશ તેમ જ

પ્રગઢ અપ્રગઢ સવે કાર્યક્રેશને હું મારા હાર્દિક અભિનંદન આયું છું.

પ્રંયુએ! ! શ્રી મહેલા જિલ્લા કે હતા, ક્યારે એમના જન્મ વધે, એમની છવત વર્ષો શ્રી હતી, એમણે સાહિલાએ છું છું કહ્યું, એમના સમયમાં દેશાના અને સ્મંત્રી કેવી પરિસ્થિતિ હતી અને એ પરિસ્થિતિ પત્તે એમોના શું ફાંગો હતો, એઓ ક્યારે કાળધાં પાસ્મા ! વગેરે વિવરણ વિવર્ષન કે વિવરણ કરી હું આપના સમય નહિ લઈ. એ કાર્ય હું અહિં પ્રયોગ્લા વિદ્દાનમાંને તેવું છું. હું ફક્ત ટૂંમાં એહન કહ્યું કે એમની કોશાં અલે અહિં કે એમની કોશાં બું અહિં મારેલા વિદ્દાનમાંને તેવું છું. હું ફક્ત ટૂંમાં એહન એ હૃદ્ધાં કે એમના એક કું માને કેવી કે એમની કોશાં અલે એક સુદ્રી પાસ્મા પ્રયાગ આપની અને અને લાગવાન શ્રી હરિસાદર્સર અને કહિકાદ સર્વાં શ્રી હેમાર્ચાં આવ્યા છે. સારતીય કર્યાં મારેલ હતા હિંકાલ કર્યાં મારેલ અને સર્વાં કર્યાં કર્યા કર્યાં કર્યા કર્યાં કર્યાં કર્યાં કર્યાં કર્યાં કર્યાં કર્યાં કર

ગ્રાનની એંગની અલીડિક ઉપાસના એવાં ઉપાધ્યાયથીને હું તો એક "મહાવપરની" કહીને સંબોધીલા સહ્યાનો ! આવે આપણે સદ્યાનની સુધાધનાને અભવે ફસ્ત બાણવપના ઉપાસકને જ વપરની કહી સંબોધન કરીએ છીએ. આપણે નાણીએ છીએ કે બાણવપ એ તો અદ્યંતર વપની જીટીને અર્થે જ છે, અને તેમી જ અદ્યંતર વપને બાણવપ કરતાં ઊંચી કક્ષામાં મૂક્યું છે. કર્તા ગહ્યાંતર તપના એક પ્રકાર 'ત્યાંગાય' છે, તેને આપણે તેઈએ એકએ એકો અન્ય અપનાવતા નથી. વિચારા, કે ઉપાંચાયાઓએ પોતાના જીવન દરમિયાન ને વિપુત્ર સહિત સહ્યું છે તે માટે તેમણે કેટકેટલી ત્યાંગાય કર્યો હશે, જાને તેમ કરી કેટકેટલી તપસ્યાના સાગી સ્થા હશે ! એમણે એ પ્રહાન તપસ્યાના સાગી સ્થા હશે ! એમણે એ પ્રહાન તપસ્યાના સાગી સ્થા હશે ! એમણે અપનાવી. એથી જ હં એમને આને પંત્રાહત પસ્યાં ! એકી સંગીલું છું અને વેન સમાનને સાગ્યું જ અરજ કર્યું છે કે વેળ આદાવત્યનાં ચોલ ન સાથી, જેવા આપણ વધી, આવતાં સમારેલ લેવા સાથી ના ચોલી ન સાથી, જેવા આપણ વધી, આવતાં આપણે કરે.

જૈન સમાજ ઉપર ઉપાચ્ચાયત્રીના અનહંદ ઉપકાર દેશા છતાં જૈન સમાજનો અક્ષમ અપરાંપ એ છે કે અહીંનો વર્ષના તૃંહા સમય દરિયાળ પણ એ એમના અમૃત્ય શ્રીને સંપુત્રું પહે સાચવી શક્યો નહી, અને એમના અનેક લેવા હેછ અહત્ય રહ્યા છે. આ માટે આપણે બેરે તે હહેતા કાર્યોએ પણ ભૂગમાં કેઈ એ તો પાયાની સોનાપાસનાની— સ્લામાયરૂપ તપસ્થાની— જ જાારી છે. હતાં હેછ પણ ગ્રાહ્મા રહે છે કે આપણે અત્યંત ખાતપૂર્વક દોાય કરતા રહીશું તો આપણે ગુલાવ્યું છે તે પૈકીનું હશું પુત્ર પ્રમા કરી શક્યો

સ્મા ઉપરાંત એક વાતોના ખાસ ઉલ્લેખ કરવો હવૂરી ધારું હું અને એ, એ છે કે કૈયાં ધાયાલી એક સાવા કિવેક્શાર અને શુક્રાચાર પ્રદ્યુપક પણ હતા. તાતકાલીન મૈતાંબર જેન સમાનમાં એ ખામદે આમાં થઈ ગયા હતો તેને કૂર કરવા એમણે પ્રપાર પુરુષાર્થ કેચ્યો હતો. એમના પ્રમાગ પ્રતાપી આત્માએ અને એમના સમકાલીન શ્રીક્ષતાવિત્યવછ અને કોંગાના સ્વાપ્ત કહ્યું ન હોત તો એન સમાન પ્રશાસના અહાં એક કાર્ય એ કાર્ય અપ્ત કહ્યું ન હોત તો એન સમાન પ્રશાસના તાત્માં કેટલા ખૂંચી હત તે કરવા સુરકેશ નથી.

ઉપાયાયણ જૈન શૈતાંગર સંપ્રકાયના શેવા છતાં ભેગની વિદ્યાવિષયક દિઈ છોટલી વિશાળ હેતી કે પંડિત ક્રીક્ષુખકાલદાએ કહ્યું છે તેમ લંગો પોતાના સંપ્રકાય માત્રમાં સપાઈન શહી." અને તેવી જ એમશે પાતંજલ્લોમસ્ટ્રા અને દીમંખર સંપ્રકાયના અદ્યહેલી તામના ગંગ ઉપાય પણ બ્લાગ્યા લખી છે.

એમના સમકાલીન શ્રીમાનવિજવાછ ઉપાધ્યાછાં એમને 'શુતકેવલી' કહી સંશેષ્ધા 9 ચાવી મહોન વિભૂતિ ગામણને કહિકાહ સર્વજ્ઞ શિહેમવ્યંત્રાચાર પછી લગલમ પાંચસો વર્ષે સોંપડે છે. 'હૈમ સાસ્વવત શત્ર ' માત્રલમાં કલ્વાલા પછી લહે વર્ષે ' માત્ર આપણને કરી મંદ્રીપતિજવાછ સારસ્વત શત્ર સમાર્યજ્ઞોને પ્રસં આપણ સંશે છે. એનો ઉદ્ધાનન વિપે આપની આસાને વાયન્તી વર્ષ કરતાં પ્રારંભિક 'પૈયાંકમાં વસ્તુષ્ઠાના પ્રસાણે હું ઇંપ્યું લે કે ઉપાધ્યાયક્રમાં આસાને પ્રમાન માત્રીને નહીં પ્રચારત વર્ષ વ્યક્તિ સમાત્રા સમુદ્રમાં ત્રસ બને, તેઓના અનની પ્રસાલતા પૂજા વિરાહ, તેમ જ તેમના પણ તે તે શ્રીકૃષ્ણ વિરાધ બને.

માં તમાં આપની સારા તરફની સંફ્રેશનાનાની શાળણી માટે ફ્રેરીથી હોર્લ્ડિક ઉપકાર માની, મારા પદાબાની સમારિક કરતો આ તત્ર સસાર લાને ખુલ્લો ઘળોલો બહેર કરે છું. આપ તેને સંક્ષ્મ વધાવી હોશો. એમ ઇચ્છી, હિલાસ્ત્રે હન્દુ વચ્ચાવન, એ ગ્રાથેના સાથે વિરાધું છું.

શ્રીયરોાવિજય સારસ્વતસવના પ્રસુષ્ય, તર્કે, ન્યાય, મીમાંસારત દાર્શીનક પંડિત શ્રીકિશ્વરચંદ્રજનું પ્રવચન

[બિક્ટ્સર્જ, અનેક લાયારિવ શોકમિરગ્લકાએ પ્રશુપ્તરમાનેથી વિદ્વાલાનું અને પ્રાણવાન પ્રવાન કર્યું હતું તે પ્રસ્તાન લખારે શે.તાઓએ ગવામુધ્ય ખાનીને સ્ત્રીક્ષાનું હતું. અને તે લારે પ્રશ્ન થા પામ્યું હતું. તે લાયારુની પ્રોપ્ય તેષે અને રુખ્યું કરવામાં અવી છે સંપૂર્ણ વાલવ્ય રુખૂ ન કરી શક્તા ખાલ લિગીર કોંગ્રે સેપાઇ]

म्यूरतबर्धमें बहुत चिरुकाल्से नाना लोक बीक्से कान्यायके लिये नियार करते रहे हैं। इससे लिये कोगोंने चीक्का ससारके लाय नया संबंध है, इस विकादी गंधीर परीक्षा की ! इस परीक्षाके परिणानस्वरूप विचारकोंके प्रधानस्वरूप हो बीनाय हो नयी ! एक और वे लोग थे, जो वेवको प्रमाण मानते थे, इससी कोर वे दो, जिनके लिये केर प्रमाणमूत वहीं था | वहीं नशाल में मंनीर विचार वाहते प्रमाण मानते थे, इससी कोर के दो जिनके लिये केर प्रमाणमूत वहीं था | वहीं नशाल में में में में मानते थी | उनकी हिलें पहाड़ी हिंसा पारकर नहीं थी | वहां में पहाड़ी जात हो लिया स्थापको प्रमाण मानते थी | उनकी हिलें पहाड़ी हिंसा पारकर नहीं थी | वहां में पहाड़ी हिंसा पारकर नहीं थी | वहां में पहाड़ी हैं साथ मानते के स्थापन के स्थापन के स्थापन के स्थापन के स्थापन के साथ मिन्न बहों में मिन्न मिन्न पहाड़ी मान हों में सिक्स मिन्न पहाड़ी मानते के मानते के साथ हों कोई मानता जात के साथ मानते के साथ नमें मानता विचार केर साथ मानता थी | वहां कोई मानता का साथ मानता थी | वहां साथ मानता था | वहां साथ मानता थी | वहां साथ मानता थी | वहां साथ मानता थी | वहां साथ मानता था मानता थी | वहां साथ मानता था मानता था मानता था | वहां साथ मानता था | वहां सा

इस फ्रालंक वैदिक लोगोंमें बाह्यण लोगोंकी प्रधानता थी।

दुस्ती जोर कुछ स्वर्तन विचारके छोग थे। धिनका नैविक छोगोंके इन दो तिहान्तों पर प्राप्तरपति विरोध था। ययपि प्राप्तन काछमें इस प्रकारके बैदिक छोग थी थे, जो यज्ञमें पश्चावकों केत्र विवक्त छोग थी थे, जो यज्ञमें पश्चावकों केत्र विवक्त छोग थी थे, जो यज्ञमें पश्चावकों के पे। इस प्रकारके छोग उस सम्बग्धें काम संवक्तामें हो योगे थे। इस छिये वैदिकप्रमेंक नामसे "यज्ञमें पश्चावकों प्रोप्त क्षावकों हो प्रवेश थे। इस छिये वैदिकप्रमेंक नामसे "यज्ञमें पश्चावकों प्रवेश थे। इस छिये वैदिकप्रमेंक नामसे "यज्ञमें पश्चावकों इस प्रकारके छोग औ हुने विक्ति केत्र केत्र केत्र केत्र केत्र काम प्रवेश केत्र काम केत्र काम केत्र केत्

होते रंगे बरमें जब संमारके मन कर्मों का विचार होते छवा तब वेदवादी छोग आत्माको और हुछ अन्य पदार्थीको नित्य इडने हुँगे । पर जो वेदको वहीं मानते थे, *उन्हों*ने मूछ कारणको सर्वथा नित्य नहीं माना। भगवान वदः जिन्होंने सत्र पदार्थोको स्थिक और जनासक कहा । भगवान महानीरने वस्तमानको उत्पाद-ज्यय और ग्रीज्यसे युक्त बतलाया । इन बचनो पर बादमें होने वाले **बी**ड और जैन तार्थिकोने क्षणमंगवाड और अनेकान्तवाद—स्वादवादको दार्श्वावक रूपमें प्रतिष्ठ की इन शहोको समझने के लिये एक साम ध्यान्त हेना उन्तित समझता हूँ । एक वस्तुको हेस्रने पर सायरण होतांको और विकारकोको बुद्धिम वहन वहा बंतर होता है । (जेवमैंसे इनाल निफालकर) मेरे पास यह इसाछ है । यदि यह पुत्रा जाब कि इस रुमाछ के कारण कीन हैं। और उसका इस हमाल के साथ क्या संबंध है है तो साधारण खोगोजी बपेशा विचारकीने उच्चर बहत भिन्न होंगे । सांगारग होग स्थूल दृष्टिसे देखते हैं और स्थूल बस्तु प्रायः सक्की समान दिलाई देती है। रुमास भेत है या पीठा है या साज है ! इस विषयमें तो विसीवा मतमेर नहीं हो सकता । यदि म्बेत होगा तो भ्वेत कहेगे. पीछा होगा तो पीछा कहेंगे । परत वर्षि पूत्रा वाय कि यह रुगछ स्टबर है या नहीं ! तो सबका उत्तर एक समान नहीं होगा | कुछ बहेंगे, 'सुन्दर है," कुछ कहेंगे, 'सुन्दर नहीं है! और 55 कहेंगे ' सन्दरका है सही परंत कुछ करन परिमाणमें !' श्वेत कीर पीत रूपके समान सुन्दरता सर्वधा भांक्षोसे नहीं दिखाई देतो । उसका संबंध मनके साथ भी है । नन सबका समान नहीं होता । इसिलिये एक ही करतुमें सीन्दर्ककी बुद्धि मिल हो जाती है । जो वस्तु नास इन्द्रियोसे अनुभवमें न आने, स्वस पर अनके द्वारा विचार करना पढ़े, उसके विवयमें ससमेद हो जाना स्वाभाविक है।

रामाध्येत आर्थ आएण मायका विचार इस प्रकारका है, संशोधण क्षेप इसको उध्या समझ रैठ हैं, वे तो वह बहुने हमते हैं कि समावये वच्छा वहने हैं, परंतु बह विचार वाहोंगिन-मोर्करें ग्रंगत मही हैं। वच्छा इसमाय हम एक कार्य है। आएण निया कार्य नहीं रह सकता। कार्यक निया स्वता है। वच्छा इसमाय पर वहे वहने हैं उस समय म क्याय होता है, व चेता होता है, व चेता होता है, व चेता होता है, व चेता होता है। व्याय स्वता होता होता है। व्याय स्वता होता होता होता होता है। व्याय स्वता होते हैं। इस व्यायम, वैद्याणक, सांच्या, पूर्वपर्यास, प्रीय और निर्माण कार्यक्र गर्जी।

परंतु प्रश्न हुव्या कि तन्तु और यट परस्पर मिन है या व्यभित्र वो तला क्रोगोके विचार भित्र हो गर्छ ।

मीतमीय न्यायको माननेवालेने कहा — 'तन्तु बौर पट खेंचम शिव हैं' पट तत्तुलोर्ने पहने नहीं होता । तन्तु पटको तत्त्वन करते हैं । पट जवववी है । तन्तु ववबव है । जवववी अवयवोरे सर्वेगा भिन्न हैं। जन हमको पट दिखाईँ देता है तन केनल पटही नहीं दिखाई देता किन्दु तन्तु और पट दोनों ही दिखाई देते हैं कैनेपिकोंका भी यही बन्तक्य हैं।

सांव्योंका मत है 'पट वन्द्रजांके सर्ववा किय नहीं परत वन्द्रजांगें विवयान है। केवठ करवा हरावे है। वन सहकारी कारण विवयों है। वो पट वन्द्रजांगें अन्यत हरावे सहता है वहीं प्रार हो जाता है। संसारों अनेक पदारों है। वो पहिले प्रार नहीं होते। पर वाहमें सहकारी कारणके पोगते प्रार हो जाते हैं। वैचे दूवमें वहीं, वहांगें मनकार, विवयं तैठ । इसी प्रकार दूचमें वहीं मते हैं। विवयं प्रार हो वो हैं। वेचे दूवमें वहीं, वहांगें मनकार, विवयं तैठ । इसी प्रकार दूचमें वहीं मते वहांगें मते वहांगें मते हैं। वाद पूर्णें वहीं सर्वा वाद्यों वहांगें कारणके वाद्यों वहांगें पाहेंगें अपने वहांगें प्रतियों वाद्यों वहांगें प्रकार हो वाद्यों हो वो विवयं सरकारी कारणके वोग्यें व्यव्या हो उठता है। सर्व्योंका यह मत 'सनकार्यवाद' वामचे प्रसिद्ध है।

बींद तार्किकोंने कहा—कन्तु जीत पट है तो भिन्न, पर नैवाविक्कोंक सनके समान सर्वेचा भिन्न नहीं हैं। क्लुक्कोंक समूक्को पट कहते हैं। तन्तु मिक्कर वस विविध्वः आकार वारण करते हैं तो उनका नाम पट हो जाता है। एक एक तन्तु पटके कुतमें विव्याई देवा है, पर उनका समूह पटके कुतमें विवाह देने जगता है। वोदोंका एक 'संवाववाद' नामके प्रविद्ध हैं।

कैन त्यावरणायोंने कहा - करता और घट न सबैबा भिव है या न सबैबा अभिन है। किर्मु भिन्न और व्याप्त स्वेष्ण ट्रिक्ट के स्वाप्त स्वेष्ण ट्रिक्ट के स्वाप्त स्वय्त है। यदि प्रद्र भिन्न में स्वयंत्र क्रिक्ट के स्वयंत्र क्रिक्ट के स्वयंत्र क्रिक्ट क्रिक्ट के स्वयंत्र होता है स्वयंत्र क्रिक्ट क्रिक्ट के स्वयंत्र होता । यदि प्रक्षा क्रिक्ट क्र क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्

वीन रिलामाने बनुसार लखु और यह इन्यानी होस्से अधिमन्यन और पर्यावानी दिस्से मिल-मानेन हैं। समस्य लैन्टरीन अनेकानकाह पर बाकित है। अनेकानकाहचा प्रतिपद्दन चैन आगतमन्यों सें सिल स्त्रमं है। उसका निस्तार नेवानम्य और दिगम्बर होनो देवरायों से व्यावारी अपने वाले मेरे के स्त्रमंत्र होनो देवरायों किया है। न्येताम्बर सेवरावें ते साम्यादित स्त्रस्वेत दिशाकर, जिननम्पत्राची, सहस्वदी, हरिक्टर्सि, तारीवेंवर्स्सि, हेमचन्त्राची, उपायाम यहोनिवयसी, गादिने दस्सा विस्तृत निद्धाल क्रिया है। दिशासर संप्रदासके समन्त्रमाद, मूज्यपाद, महज्यकर्तक, विधानेंदर स्वानी, ग्रावप्त, व्यावार्क, व्याव्यारक, व्यावार्क, व्यावार्क, व्यावार्क, व्यावार्क, व्यावार्क, व्यावार्क, व्यावार्क, व्यावार्क, व्याव्यारक, व्यावार्क, व्याव्यक्त, व्यावार्क, व्यावार्क, व्यावार्क, व्यावार्क, व्यावार्क, व्याव्यारक, व्याव्यारक, व्याव्यारक, व्याव्यारक, व्याव्यारक, व्याव्यारक, व्याव्यारक, व्याव्यारक, व्याव्यारक, व्याव्यक्र, व्याव्यक्त, व्याव्यक्र, व्याव्यक्त, व्याव्यक्त, व्याव्यक्र, व्याव्यक्त, व्याव्यक्त, व्याव्यक्त, व्याव्यक्त, व्याव्यक्य, व्याव्यक्त, व्याव्यक्य, व्याव्यक्त, व्याव्यक्त, व्याव्यक्त, व्याव्यक्त, व्याव्यक्त, व

में समस्ता हूँ — प्राचीन कारुके वैदिक बोर जवैदिक बोक सार्किक अनेकारवादका स्रीकार करते थे। गौतर्भव न्यावदरीनके चहुचे बच्चावर्में कुछ एकान्ववादोका मत देकर उनका सरका किया है। न्यावदरीनके बजुकार कुछ एकान्ववादो सब वस्तुवोको व्यावस्वरूप मानते थे। हुउ केरे ये, जो सन वस्तुर्जोंको सनवहरा बहते थे। हुन बहते ये बिना निर्मण परावेंको ठपात होती हैं। कुछ कहते ये केनस्र एक तत्त्र सत् हैं। इन सन् मर्जोका निर्मण करनेके कारण यह सिस्त है कि न्यायर्राज़िक कर्ता एकान्यवारको त्रक नहीं मानते थे।

निःसन्देह नैयायिकोक्ते अनेकान्तवादमें और बैनोक्ते अनेकान्तवादमें मेद है। यर उसमें कायत क्रिये नहीं |

तैयायिकोले अनुसार कुछ पदार्थ सर्वेवा जिय हैं और कुछ पदार्थ सर्वेवा जानल हैं। पद्ध तैना सिदानक्रके सनुसार प्रायेक पदार्थ निव्य और जनिव्य है। अनेकान्यवादके कुछ कंडोंमें वैदिक दर्गेनोका मस सर्वेथा मिछना है। श्रीमांकक स्त्रेग कारण और कार्यका सब्बा मिन और अभिन मानते हैं। वास्तवर्ध श्रीमांकक ही नहीं सांह्य और पाठवाल बेग सिहानके अनुसार भी कार्य कारण निवा और अभिन हैं। वुण और गुणी, सामान्य और निशेषका भी मेहामेद है।

अहैतसिदिको टोका – छन्नमिकार्मे श्रीमकानन्वयो जैन, सांस्य जौर सातक्षण मठको गुण और गुणी भाविमें नेदानिक्वादी मानते हैं। प्राचीन बीहर मी इस प्रकारके थे, जिनके कनुसार इस्ता और कार्यमें नेदानिक् बाद था। अध्यक्षकीकाकी बाचार्य स्थितमिन व्याख्या छिली है, उसके कनुसार सर्वास्तकवादी अक्षरिवादको मानते थे। और स्वकार्यवाद नेदानिक प्रतिक्रितहै।

प्रशासवाद कोम अनेकाग्ववादमें जाहे किया नी विरोध हो, सस्य इस विषयमें केंद्रें मेरोबंद नहीं होना जाहियों कि 'अनेकाग्ववाद एक जारितकवाद है।' कुछ प्राचीन छोगोंने गास्तिक कृद्दक्त कैन सिद्धान्यको उच्छा की है। परन्तु यह उच्छित नहीं। जिन छोगोंने जैन सदको नास्तिक कृद्द है उसके हो काला सहज दर्जमें थे।

पहला कारण यह था कि जैनामार्च बावत्के कवी स्वरूप परमारगाकी सचा नहीं मानते। हुत कारण चैन २० उनकी रहिमें नास्तिक सत है। दस्तु बयकर्ताकी बस्बीवसिके कारण गास्तिक कहना कनसित है।

पूर्वभीनांसा के आचार्य प्रयाचन, क्रुमहिल यह, ग्रुबक्तिमध्ये वैदिक चौर शांतिक है। इसमें किसीका मतनेद नहीं हो खकता । इन तीनों वाचार्योंने कास्से खुदती क्ष्ठोंकशांतिक चौर निर्पायेक्क कमें बगत् कर्ता ईक्सका निषेष किना है। इनके अनुसार बेहमें बगत् कर्ताका प्रयापदन नहीं है। वापत् कर्ताकों न सानने पर भी पूर्वभीमांता के वे आचार्य वैदिक चौर वासिक साने वाले है तो वैत्यस मी उनके समान जातिक सान वाचा चाहिये।

दुसरी बात-जिसके कारण बैनोको नास्तिक कहा, जाता है-वह है "वैदिक बहाँका निरोध।" परन्त वैदिक बहोंका निरोध कई सार्व्याचार्य भी करते हैं। फिर सी वे नास्तिक नहीं माने जाते । उन सांस्थाचार्योके समान जैनमत को भी वैदिक यहाँ के विरोध के कारण नास्त्रिक नहीं कहा जाना चाहिये ।

ब्रह्मसूत्र के माध्यों मानक्षाद गुंकराचार्य 'पाबराव' मतन्नी बालोचवामें एक वचन उद्गृत करते हैं। विसक्ते अनुसार बाण्यिक्त महाचित्र चारों बेदोंमें परम निश्चेयसको व प्राप्त कर 'पाबराव' शासका प्रचवन किया था। इतना चेद विकट स्कूटो पर थी 'पाबराव' मत के माननेवाले नास्तिक सरी माने वाते इस कमरवार्ष वैनमल वर्षेविक होनेके सारण नास्तिक वहाँ हो सकता।

आग्माको समेबा निष्य मानने के कारण नैदबादी दार्शनिक व्यवेकरन्यदादि निष्प हो बाते हैं। नैयाबिक-मैशेषिक हो या खांच्य पात्त्रक, नेदान्ती, गोगांतक या कोई मी क्यों न हो। यदि बैरिक है तो वह बारणको सर्वश निष्य मानवा है। बीद और जैन इस विषयर्ग मिन मत रहते हैं।

सुंख्य कहते हैं "क्षणपरिणानिनो हि सर्वे भाषाः, ऋते चिति ऋततेः" अर्धात् सन पर्वार्थ क्षणकार्मे परिणासी हैं] केनल जैतन्य व्यक्त बाला व्यक्तिणायी है |

बौद करते है सभी मौतिक और अमैतिक पदार्थ खांगक हैं। आभा भी क्षणिक हैं।

ज़ैन ठाड़िकोड़ा इहना है—सब पदार्थ समिक भी हैं. बखनिक भी हैं। निष्य भी हैं भनित्य भी है। जिस अड़ार सुकी कटक, इंक्स, अंगूटी ब्यादिये बनुवार है परंच कटक, इंक्स बादि अद्भाव नहीं हैं. इसी अड़ार सह्युमार्ज्य दम्य बनुवार खुवा है और पर्याय परिवर्तनशील मिन रहना है। चैतनताचर्में हैं-विवार, सुल-दु-स्ट ब्यादि प्रयोग परिवर्तनशील—मिन विकार हैं और ज्ञात—चैतन्य अंग्र जनुवार है। ज्ञानड़ा हर्न-विवादादिक साथ मेदानेंद हैं।

अनेकान्तवादका आयंत विस्तृत निरूपण हुन्यद्रसूरि आदि आचार्योने किया है।

जैनवरीनके साथ अन्यदर्शनोक्त अनेक निषयमें मत्येद भी है। इन सब भरानेदोक्ते रहाँ हुए भी आस्तराषको लोकार करनेके कारण जन्म आध्यादियोक्ते बनुसार जैन आध्याद भी प्राणमानका क्रमणकारों है।

जैनदरीन के प्रधानतया दारीनिक व्याचारीमें प्राचीन कालके चार व्याचारी प्रधान है (१) बाचार्य सिदरीन दिवाहर (२) सुर्वग्रह्मारी (३) जिन्मदरायिवायायया और (१) आचार्य इरि-प्रदृष्टि । क्यने कालमें इन तीनी व्याचारीने कन्य-दर्जनीके मठोका निराकरण करके जैनतत्वकी प्रामाणिकता को प्रकट किया है ।

न्यास्त्री शतान्त्रीम प्रिणिकाक ग्रीयोभाज्यायने बन नक्यनायका प्रथमकराचे प्रकाशन करके युगान्तर वर्गात्रव किया और उसका ध्यान मारतके पत्वतिं समस्त दर्शनी पर पड़ा तबने हैत, बहैत, विशिवाहैत व्यदिके मानने वाले सभी विद्वानीने स्वयन्यायको सैलीका व्याध्य जेकर अपने अपने पतका निरूपण करना व्यांस किया। स्वाह्मों सही के व्यंतर होनेवाले जैन और बौहसतके विदानोर्पे कोई इस प्रकारका नहीं हुया कि जिसने नम्यतर्कती शैलीका भागव लेकर भएने मठका निरूपण किया हो ।

परन्तु सठारहवी सदीमें 'न्यायविशास्त' 'न्यायाचार्य' वपाव्याय स्वीविवयती इस प्रकारके विद्यान् हुए: जिन्हीने नव्यतर्वेका व्याव्य केकर वैनतत्वो–सिदान्तीकी प्रामाणिकता प्रतिष्ठित कर दी।

आचार्स हरिमहत्त्वित्वी बाबि अकान्य विद्यानीने जिस वर्कका-देवार्थका स्थापन छिना या, तसके साथ नने हेतुव्योका आवित्कार करके उन्होंने वलेकान्तवादकी पुष्टि की थी। उसके हो चार उत्ताहरण छोजिये, ।

अनेकान्तपादकं अनुसार प्रत्येक वस्तु अपने हत्य-वेश-काठ मार्ककी वर्णकारे सद है। और सर दर्ग-कोठ-मार्गको अपेखारे असत् है। इस दो प्रकारको प्रतिविक्ते आरण आचार्य हिरीमर-धृरियो व्यक्ति न स्तुक्ते सत् वर्ती स्वरत् बताया। यक्तोंक्वरच्यी उपाच्याय बहते हैं कि माय पदार्थ स्मावकं अमाव रक्त्रक है, हसकिये सत् वर्तीय असत् करा है। सावारण स्वरते यर वर्तिका मान-कर्त्र (विना) करेखा से प्रतिक्त नहीं होता। पर यदि वस मायको व्यक्ति क्यामिक अमावक्त्रपति निक्त्रण करें तो उसका ज्ञान मी किना वर्षणाने नहीं हो सक्ता। व्यवस्था ज्ञान यदि सदा वर्षणाने होती है, पर जब प्रमेय बादि क्रमें किया बाय दो उसमें प्रतियोगी आदिकी अपेका नहीं होती।

इसी अफार वायोशिकावाची महाराक्ष्णे चित्रकरफो स्थानको या पदार्वीको एकाकार और कान-काकार सिंद किया है। जब किसी बस्तुर्वे नामाक्य अतीव होते हैं। तब विव्रकरकी चीडचे वह क्स एक प्रतीव होता है। पर कुनक, बीज व्यदिको दक्षित्रे वही बनेक अतीव होता है। चित्रकर के समान प्रतिकृत प्रत्य एक भी है जनेक भी है।

" श्री ग्रहांनीस्तव "को ज्यान्या-त्यान्सकासमें श्री बसोबिक्यची कहते हैं कि दीभिते-कार दुकाव शिरोमिण महाचाकी जड़्यारी ठाईके एक ट्रब्म में स्वीपी से भेदको कावाज्यहर्णि मानते हैं | जब अन्य स्थानीन नेद ज्याज्यकृषि होते हुने श्री संबोगी द्रव्यमें अन्याज्यहर्षि हो जाता है। तब साव और असल भी एक क्सूने व्योध्याने नेदसे विचा शिरोमते रह सहते हैं।

इस प्रकारके लनेक हेतु है। विवका श्री बशोविववयी ग्रहाशवने अपने प्रश्नोमें पहला ही मानिष्कार किया है।

महाला श्री वांशीलवावका पांच्यल बड़ा ज्याकड था। उन्होंने वलेक प्रत्य विखे; जो भनेक विषयों पर है। बलेक विषयों पर विच्हात संगीर प्रत्योंकी रचना करने वांगे विदान व्यवसरों में भी हते जिने ही हुने हैं। बहैतव्यवर्से माधवार्चार्य १५० से व्यविक प्रत्योंके केसक हैं। व्याकरण, गीमांस, वेदान्ता आहिके विकासी हलके सन्य बादों बाते हैं। बहैत मसके विदान अंश्रयपदांत्रित भी १०० से बाबिक प्रन्योंके रचयिता है। विशिष्टाहेलके श्रीकवि, तार्षिक केसरी वेंकटाचार्य भी अनेक वार्शनिक प्रक्रयों जीर जनेक सहाकाज्योंके रचयिता हैं।

इस प्रकारसे औधशानिवयवीने थी ३०० से व्यक्ति प्रत्य लिखे है । सिर्फ संस्कृत में ही नहीं, प्रास्त, हिन्दों, गारवादों, और गुक्सती भाषामें भी अनेक प्रत्योंकी रचवा की ।

ऐसी पुष्य नियुक्ति बहि यूरोण देखमें बन्म किया होता तो उस महस्माजा पर घर पर पूचन होता, और उन्होंके सार्डिकके प्रकाशन और प्रचारक किय पूरा पूरा प्रवान करते तो नारत, गुकारत और भारतके जैन समाज ऐसी महान विग्तिके किय, उसके साहित्यके किय, कदन उठानेमें नया जाकरण करेगा ²

यह दु.ल की बात है कि अक्षतहवीं सदीमें होने पर भी उनके अनेक प्रन्य मिछते नहीं । हम होगोंकी असावधानी आदिके कारण उनके अनेक प्रन्य दुर्कम हो गये ।

यदि साप लोग उनके प्रन्थों के प्रकाशन और पठन पाठनके लिये सुध्यवस्थित प्रयन करेंगे तो उससे जैन समाजका हो नहीं, सनस्त मास्तीयोंका सहान उपकार होगा। $X \times [^{\mathrm{supt}}]$

1

ગુરુ આશાતના વિષે

नुनमस्य श्वस्थापि गुरोराचारशास्त्रिः। द्वीस्त्रा मस्मसात् इर्गनुगुर्णं बहिरवेश्यनम् ॥१॥ श्वन्यत्र ज्वस्त्रव्यास्त्रिकोशावित। धनन्यद्वास्त्रकतनस्य कीर्तिता गुरुक्षस्त्रा ॥२॥

प्रकृत्या मद्रकः शान्तो विनीतो सृदुरुत्तमः । स्त्रे मिथ्याह्यप्युक्तः परमानन्द्रभावतः ॥

ઉપા. શ્રી યક્ષાવિજયછ]

[क्षत्रि रिका

प्रवन्धाः प्राचीनाः परिचयमिताः खेळितितराम् , नवीना तर्काले इदि चिवितमेतत् कविकुले । क्सौ कैनः काशीवितुचवित्तयप्रास्विक्ते, सुदो क्लाल्क्लच्छः समयन्त्यसीमांसिततुषाम् ॥

8पा. श्री वश्चीविक्य छ]

[न्यायभाष्ठभाध प्रशस्ति

્રું આચાર્ય શ્રીવિજયધર્મસૃત્જિ મહારાજનું પ્રવચન વિલ દિવસની સ્વારની સ્વતી સેક્ર પૂર્વ લવા, સ્ક્રમ પ્રગીધ પાસ વિલસ્થી, સરક રેક્સ પ્રોનેપાના સ્રક્રમ

િર્માળ દિવસની સવારની સવની વેઠક પૂર્ણ થતા, રાગના ગામીની ખાસ વિન લિવી, સરક વેઠન કુનિયાન સુક્રક્ષ પ્રભાવકતા વિદ્વાન અધ્યયુર્વ પ્રોથફ વિજયવાર્ય સંદેવેસ્ટ ચહારાએ આવેલા દ્વારા પ્રવાનને કાર સાથ]

મેં પ્રવાચવણ કર્યો ળાદ-તેમારીએ બ્લાન્સું કે મહિપિંગાનો છત્કત સુધ પેથી મામમાતા અને મારિતમીહર બરીયા તેમાં હેલ્લ છે અનેક આત્માંઓને તે સુધ મી બગીએ સુંદર મુલાય આપે કે એટલું જ તહીં પરંતું એ બગીઆની સુધપામાં એટલી શહિત હોય છે કે હેર્ધપેયુ પ્રમારની ફર્મેય તેને ત્રવાર નથી કરવી, પણ તેના વીત સુધાસથી ફર્મ પત્ની બાદમાતું નિવાસમુ કરવામાં તેને બ્રિન્સની પ્રાપ્તિ શાય છે.

પૂ. મહેપાયાય શ્રીમન્ ચંદ્રેમિનન્યન મહત્વતાં છતા પશુ સુવધ્યી મહત્મતા હવીલા છેતું છે. અનંતકાલથી કાય, ક્ષેમ, માન, પાચા, મસતા તચેર મહત્વે: નુકાઈફ્રાં સાધ્યુ મંત્રાની આત્માલાનાં હૈયાંએ કરસ્ક નેવાં વર્ની વાં છે એ બહારાં નિયાસ્ત્ર કર્યો એ જ હૈયામાં પ્રસ્તુષ્ઠોની મુખય ઉપન્ત કરવા માટે વીર્ષ કર સમય લાગાન મહ્યા શ્રીપી પ્રગીમાની સ્થાપના કરી છે. તેન શાસનાં છેલા વીર્ષ કર સમય લાગાન મહ્યા વીર ચયા. નિયતના હતાર માટે એ મહત્વુઓ ધર્મપીયિંગ્યી નામીએ શામ્યો, એને આત્રે સ્થાસિત છે. તેમાં કારણ એ દાઈપણ છેલા વેં. યુ. શ્રીમાર્ ચર્ચાપિલન્ય સહાયુ મો વેંપ પહેલાના કારણ એ દાઈપણ છેલા વેં. યુ. શ્રીમાર્થ ચર્ચાપિલન્ય મહત્વાસ્ત્રી હજે છે.

જેમ કોઈ શીમાં તેની શરાફી પૈકી સાત સાત પૈકીઓથી એક જ નામનાળી અને સામમાં સાથે શાહુકારી સાથે સાલી આવતી હોય તો તેમાં, એ પૈકીની સ્થાપના કરનાર સ્પિકિતના વાસ્કારોની વાક્કારી, કુકાલતા અને લાગાળા ગુભ્ય હોય છે તેજ પ્રમાણે મંધ્રિકાયનની પૈકી, આદી અહી હતાર વસ્તો પસાર રજા કરતાં ભાગે પશુ જે વિશ્વમાન અને વિશ્વમાને તો છે, તેમાં કારણ એ પૈકીના સુચિકિત આગાર્યદ્વાગાની વચેરની ઘફાશરી, અને તેઓની સમ્પ્રદ્ભાત અને પ્રધાની અનુવાર આગાલકાલ જ ક્ષે

એ મહાપુરુવની આવ્યવવાનાં હીયા, હીયા ચાદ ગળાંડ જીરુપુંચવાસ, ગુરુપુંચવાસમાં જૈન દર્શાનેના સુકતરામ જાણાસ, કારીરી ગળે સ્થાગા જેવા સ્થાગમાં હવી તે ન્યાય, ખોદ વગેરે કન્સે દર્શાના ગ્રહ્યાસ માટે વ્યવિસ્ત પશ્ચિમ, ધેનાઇ સુરા નામના કાલકે તેઓશીના એ અલ્યાસમાં કરેલ સંપૂર્ણ સહાય, દરેક રહેળે સંચયની જારાધનામાં સદાય બગૃત પ્ રાજ્રેલ શ્રી નયવિજય મહારાજની છવાલયા અને તે કારણે યુન્ય શ્રીમદ્ યહોવિજય મહારાજની પણ શહેદ અને સંચમમાં ખૂબ ખૂબ અલિજીયિ તથા જારાધના, આ બધાય કારણે પ્. શ્રી યહોવિજયણ જૈન શાસનમાં એક મહાન સમય કુરધર પુરુષ તરીઠે પંકાય છે.

યુ. ઉપાધ્યાયછ મહારાજનું આજે સંસ્કૃત, પ્રાકૃત અને ગુજરાતી લાયામાં જે વિયુદ્ધ સાહિત્ય ઉપરાય છે, તે ઉપરથી તેઓએ પોતાના છવનમાં સમગ્ર સાનની ખૂબ જ ઉપાસના કરી હેતાનું સિદ્ધ થય છે, તે ઉપરથી તેઓએ પોતાના છવનમાં સમગ્ર સાનની ખૂબ જ ઉપાસના કરી હેતાનું સિદ્ધ થય છે. કેઠાંપણ ક કે પ્રપાસના વિચન તેઓકોની અફુલા શક્તિ, એ ગંગાકિનારે સરસ્વતી દેવીએ પ્રસન્ત થઈ આપેલા વસ્તાનની પદ્ધ પ્રતિ કરાવે છે. એમ છતાં કરલ-સમય્દ્ર દર્શન અને સમ્યક્સારિનની આપાસના ઉપાસના પણ એ મહંત્વરૂગની જનાય એક્કિ સમસ્વતાની શ્રી એ સહિયાંએ કરેલ અલુત્તામ તીર્યો કર શ્રીસ્વરૂપ કે જેનલાસન ઉપર શરૂ વર્ષેલા સ્વપસ અમે પરપક્ષના સાર્થમાં સામે તેઓકોએ ઉપાઢેલી કુંગેશ, તેમ જ તે અને તેઓકોની સમ્યક્ષ્યાનની વક્ષાનો સામે તેએકોની સ્પાસનની વક્ષાનો સામે તેએકોની સમ્યક્ષ્યાની સામે આપીલો એક આપાસિઓ વગેરે આખતી નીરશાસનની વક્ષાની સામેની અનુપય આપોલાના માટે સામે દર્શી કે તેના તે એ પ્રત્યાની અનુપય આપોલાના માટેની સચીર પ્રત્યીતિ કરતે છે પૂન્ય ઉપાધ્યાયણ એક્ટી કહ્યાં, તાન અને સંયંત્ર એ તિવેલી ક્રાં અંત્ર કે પ્રત્યાનિ અનુપય આપોલાના માટેની સચીર પ્રત્યીતિ કરતે છે પૂન્ય ઉપાધ્યાયણ એક્ટી કહ્યાં, તાન અને સંયંત્ર એ તિવેલી ક્રાંપાના અને સંયંત્ર એ તિવેલી કર્યાના અને સંયંત્ર એ વિવેલી કરતા સ્માર્ય સામે કર્યાલી કરતા સામે સ્માર્ય સ્માર્ય સ્માર્ય સ્માર્ય સ્માર્ય સ્માર્ય સ્માર અને સંયંત્ર એ વિવેલી કર્યા સ્માર્ય સ્માર્ય સ્માર્ય સ્માર્ય સ્માર્ય સ્માર્ય સ્માર્ય સામે કર્યાલ સ્માર્ય સ્માર સ્માર્ય સ્માર સ્મ

4

પંચનવીય કે દશવધીય યોજના તળે

ઉપાધ્યાયજના અક્ષરદેહને પ્રકાશિત કરા !

િપન્ય સનિસન માં પશોપિકન્વાઝ મહારાએ સત્રનો પૂર્વાફિત પ્રશ્નો એ ત્રેસ વસ્તવ્ય કરેલ તેના લપવાળો ભાગ 'ક્રેન ' પત્રમાંથી મહી કર્યું કરવાયા ગાકવો છે]

મારણમાં મંગલ ⁹લાક ગોલી, અન્ય પ્રસ્તાવ કર્યાં લાદ મહારાજશ્રીએ જણાવ્યુ હતું કે--

પૂ. ઉપાધ્યાયભનું રમરણ એટલે એક ક્રિપ્ય વિલ્લુતિનાં કશેન.

પૂ. ઉપાધ્યાયછ એટલે ભૂતકાલીન કૃત્રિકાપણ સરળી સન્ત્રસીની **લક્ષે** કૃત્રિકાપણ. પૂ. ઉપાધ્યાયછ એટલે જિનશાસનો વિલ્લ ધ્વજ કરકાવનાર મહાન એ**.**દી.

મું. ઉપાધ્યાયભ એટલે ભ્રમગદિવાના તેમજન કુ. ઉપાધ્યાયભ એટલે ભ્રમગદિવાના તેમજન

ે પૂ. ઉપાધ્યાયભા વાદ અગલા એટલે વિવિધ સાનરાતના અપૂર લાંદાર.

પૂ. ઉપાધ્યાયભની યાદ એટલે સાચા મહાન ક્રાન્વિકારીનું વેબેમય દર્શન.

્રે. ઉપાધ્યાયભના પુરુષાર્થ એક્સે મહાન્ કર્મયાંગીની મહાસાધના.

પ્. ઉપાધ્યાયજની વાણી એટલે મહાન આવેદછના દિવ્ય પરચાસ.

પૂ. ઉપાધ્યાયભાતું કર્યુંત એટલે અવતરેલી સાક્ષાત્ સસ્સ્વવી.

પૂ. ઉપાયાવછ એટલે શ્રી સિલ્સેન દિવાકલ્છ શ્રીલનનલસ્ત્રિલ સમાપ્રમણ્છ, શ્રીલમિલસ્ત્રિણ, શ્રીક્રેમવંદ્રસાર્થેછ, અને શ્રીમદલવાદિષ્ટના સાનાવવાર

પૂ. ઉપાધ્યાયછ એટલે પરસ્પત્રવિરાધી, અવિરોધી મહાન શક્તિઓનું એકીકરણ. આવી આવી તો અનેક ઉપયોગો આપી શકાય.

પૂ, ઉપાધ્યાયશીહને દું એટલા બિરહાનું એટલું ચોલું જ છે. એરમના ગામુટ ઉપકારા તથક એક લું સ્થારે રતાલ્ય થઇ નાઈ લું વધુ કહું તો ચોમના ગામણ્ય ઉપકારાનું અધિ-વાદન કરવા માટે શાબ્દકોળમાંથી શાબ્દો પણ મળી શકે તેય નથી.

4

ખરી વાત તો એ જ છે કે મહાન વિશ્વવિચાની મહાનતા, મારા જેવાં વામણે કંદે માપી ન શકે તે તો गणतं वणनाकारंની ઉક્તિ અનુસાર તેમના જ જેવા કાઈ મહાન પુરુષ જ માપી શકે.

પ. ઉપાધ્યાયછની સાચી વિક્તા અને તેથી ફક્તિ સ્વ્યારિકની પ્રસાથી ઓપતી મહાનતા—એ બન્નેના વિસ્તૃત દર્શન-પરિચયમાં તેમનું સમગ્ર છવન સમાઈ લય છે. આજે તેમનું એ છવન કહેવાના સમય નથી; છતાં એઓઝીના ચેઠ્ય પરિચય નિગધા દારા તમને માર્યો છે ને મળશે.

હું તો અલારે પૃ. કપાંચાયજ લગવાનના વર્તમાન પ્રસંગ એ ઉજવાઈ રહ્યો છે તેતું બીજક શું, તે? તથા મારૂં જે કંઈ ક્થયિતજ છે તે જ કહેવા માર્ગુ છું.

ભગવાન ઉપાંચાવછ માટે 'કંપ્રક 'કરવાનો મનોવર તો ગૃહસ્વાપ્રમાંથી જ મરપષ્ટ પહે જન્મેલો. વારિલ લીધા આદ તે પુષ્ટ રહ્યો થયે. તેઓશીના અજન્ અપર કાર્યની અદમ સંખી રહ્યાં તે તેઓ શીના અજન્ અપર કાર્યની અદમ સંખી રહ્યાં તે તેઓ શીના અંગ અને તે તેમના સમાવિસ્થાનો પુત્રેસ્લાર કરવાની ભાવનાનું ખીત્રને સુધાનું લાહ ઉત્સવ ઉજનવાની ભાવનાના અર્ફ્સ જન્મ્યા વિ. સં. ૨૦૦૦ માં માશ પરમ ઉપકારી શાસપાયાલક પૂ આવાર્ય સંપ્રકૃત વિજયોત્તન હતી, તેને સ્વાપ્ય પદ્માપા હતી, તેનેઓશી સાથે આ જ બારી જન્માનું છે કે છે. આ પરને અમાપ પદ્માપા હતી, તેઓશી સાથે આ જ બારી જન્માનું છે કે તેઓશી સાથે આ જ બારી જન્માનું છે. કે લોધમાં સાલુખાં તેને સ્વાપ્ય પ્રદેશ જન્મે દર્શ લાવનાને મૃત્યન્વપુષ્ય ભાવનાને મૃત્યન્વપુષ્ય ભાવનાને પ્રદેશના અપ્યાપાયા પ્રથમો પ્રથમો પ્રાપ્ય અને મારા પ્રસ્તુપ્ય ભાવના સ્વાપ્ય તે સાથ

નુંદન શુરુમંદિરની પ્રતિક્ષતો નિહુંવ માત્રસ સુદયાં લેવાયા. ને કે તે અગાઉ પ્રતિક્ષ પ્રશ્ને વિહાનોનું નાનું સરણું સંપેલન પોલ્પનું એવો વિચાર ઉપસ્થિત થયેલા. પરંતુ અનુકૂળ સાધન અને સંનેઓનો અલાલ વિચારના અધ્યવમાં રૂકાવડ કરતો હતો. છેવટે કંઈક સંગોગ અનુકૂળ ઘણા અને પૂન્ય ઉપાધાયાલ્ય અંકારાનની મકતા, તેઓલીનું પતિત્ર છતાન, આધ્યાતિક વિતાન, વિશાદ પાંતિલ, તેળત્વી શકિવાનો, તેમનું અપાય અને સવેરશીય પાંત્રિક્ષ્ય અને તેમના સાકિત્યના વિપુલસત્તારિકી, માત્ર જેવા જ નહીં, તેમને એક સતિ, ભારે યુક્ત, મુન્યત અને પાંત્ર હાલનાને પરમ્યુપણ જીઠવેલા તાલાથી આદીનાંદ અને મિત્ર સંચીમ ઉસેને ઘયો. મારી એ લાનનાને પરમ્યુપણ જીઠવેલા તાલાથી આદીનાંદ અને મિત્ર સંચીમ ઉસેન વિકાને તાલ્યુથી પ્રોતાકાન મન્યુ અને ખૂબ ઉપાધ્યાયલનો સાનવારિકાતાન જનવાનોન મંત્રલ નિર્ફાય લીધા. તે માટે એક સમિતિ નિયસવામાં ભારી હિલાસફાને અંતે પ્રસ્તુત ઉત્સવને 'બેલિસ્ટોપિયલ્ય સાસ્ટ્યત સત્ર ' એલું નામ આપવામાં આવ્યું. હતાસફાને મોત્ર પ્રસ્તુત ક્રિયાર્થ પણ પ્રધ્યું અને તે લાદાત અને લાદન લાકાના પ્રેયલ વિકાનોને મોત્ર એક પરિપત્ર પણ પ્રધ્ય કર્યું અને તે લાદત અને બેલી સ્ત્રી જ અપાયે પાત્રને જ આપાય માર્ગ ક્રિકેકીલાણ દેખાતે જ હતા. હવાં બે અને બેલી રીતે બની શકે, તે અને તેવી રીતે પણ, ઉત્પવણી તો કરવાં જ હતા કર્યા કર્યા કર્યાં કર્યા કર્યાં કર્યા કર્યાં કર્યા કર્

અનેક વિશ્લોનોએ અને જનતાએ અમારી યેહવ્યા અને તેવા ક્ષર્યને હાર્દિક અનિ-મંદન પાઠ્યાં, આ રીતે અંકુજ્ઞસાંથી પત્રો-પુરુપે પીલ્યાં.

ત્યારળાદ તેએકટીએ સાંસ્કાર અને સંસ્કૃતિની વર્ગ્ફરવાત, તે માટે આજની સામા-જિક ને સબ્દ્રીય પરિસ્થિતિ વર્ક્કપીને સંપત્તિથી નહીં પણ સંસ્કાર અને સંસ્કૃતિથી લીપારી ન બનવા એસ્કાર શબ્દોમાં અપીલ કરી હતી. આગળ ચેલાલાં કહ્યું કૈ—

મ્માન્ટે આપણે ત્યાં છે પ્રસાંગા ઉત્પનાઇ જાતા છે. લેક છે તેલેલાંશીના વંકનીય સ્પૃક્ષ સ્મારકના અને બોહ્ને છે શ્રીચકુ થશે!વિષ્ય સાસ્યવ સત્રનો એટલે કે તેમનાં ફ્રાંત અને સાસ્ત્રિતસ્ત્રનો.

ડુનમું કહ્યુ કે, મુલ: વંપાલન કરાવીને કેને કેને પાંકોલની કરીએ અને તેમના અન્ય અધ્યયનનો નાદ માજતો સાથ ધ્યેવો કેમ્ઇ સક્ષિય-સંગીન પ્રયત્ન કરીએ તો જ આપશ્ચે તેમનું ચફેલ સ્ત્રશ્ચ અંદ્રો પશ્ચ અહા કરી શકીશું લાધી એમનું પૂર્વ ત્રશ્ચ અદા કરવા સાટે તો ધ્યનેક જન્મોની સેવા એમલે પડે. આજ સુધી વધે તે શન્મ, પશ્ચ હવે આજથી જૈન સંઘની અંધો પુત્રી જની તેઈએ.

भीले प्रसंब है सबनी उक्तवादीता. या उक्तवादी पाछण इपाध्यायलना अवादं શુગીઓએ સક્ષી મેટી મોટી ગાશા અને યોજના પાર પડવાના અનમાના કર્યાં છે. અને કરે તે સ્વાભાવિક 🎚 પરંતુ આ તાંદે મારે સ્પષ્ટ કરતાં જોઈ છે કે અલ્વ સમય અને ખીજા કેટલાંક કારશે પ્રથમથી જ વ્યમાએ અમાર્ડ એય અને તેતે કળ મર્યાદિત રાખીને જ કાર્ય કર્યું હતું અને તે છો– કે સગની ઉજવાણીનું અહું ગાટું કળ મળે કેન મળે; પણ અમારા માં પ્રયત્નથી જે જૈન સંઘ જાને સારતના વિદાતાને લક્ષ પેંચી શકવા છેટલી અમિકા પથ ઊભી કરી શકીશું, તો ઉજવણીની સફળતાના સતીય માનીશું, અને એ ભૂમિકા ઉપર અમા મમારા ભાવિ કાર્યની ઇમારત સાલી શકીશું. પણ મારે એ પણ સ્પષ્ટ કરતું જોઈ એ કે અમારે મર્ચાકિત ધ્યેય પાછળથી વિસ્તૃત ભની ગુરૂ અને પરિક્ષામે એક માટી પરિધકના ૩૫માં ફેરવાઇ ગર જે આજે સહ કેઇ પ્રત્યક્ષ એઈ શકે છે અત્યારે લગવાન ઉપાધ્યાયભ અને તેના કાર્ય ઉપર, શકાહવાદ ને પ્રશંસાની જે પ્રત્યવૃષ્ટિ અર્ટ સ્ત્રી છે, તે સેતા મને કાર્ય છે કે અમારી મ્માશામિશિત શ્રત્ના જરૂર ફળી છે. ફળી છે એક્ટલ જ નહિં બહેરે ધારણાંથી ઘણી વધુ ફળી છે. ખમારા એક ખણામાં થયેલા પ્રયત્નથી હવે ભારતના વિકાના તેઓશ્રીની મહાનતા અને વિકત્તા તરફ જરૂર આકર્મારી, તેમના શ્રાન્થોનું પ્રકાશન થશે. શ્રાહ્મત-અધ્યાપન વધશે, જનતાને સત્ય માર્ગની પીછાણ વધતી જશે અને એક વીશીને અન્તે આજના વાવેલાં બીજોનાં સમ્ચળ કૃષે။ વિપક્ષ પ્રમાણમાં જેવા મળશે.

આ એર જે રીતે પાર પડ્યું છે, તે સાટે અરેખર સતસ્વિતિને, પ્રત્યક કે પરેશ્ દીતિએ સહાયક જોતા જેન-જેનેતર વિદાનો, પ્રેફેશ્વરો અને અત્ય ક્રય'ટરોને હોર્કિક અભિતંકત આપવાનાં વેચાને કે રીકી શકતો નથી.

ખીજી વાત એક ખાસ ધ્યાન રાખી ઘટે કે-સ્તાકાળના ઇતિહાસ તરફ માકે દાંકપાત કરીશું તો સામાન્યત: કોઈ કુલ કહાંગ્રાંબનો, કેઈ કુલ ગ્રાનગ્રાંતનો ને કોઈ કુમ ચારિકની પ્રધાનવાનો કેખાશે. માળવેના કુમ ગ્રાનગ્રાદ કે શુહિલાકનો ચાલે છે. શુહિન વાહે વેજો કોઈ પણ વસ્તુ કહાંગ્રાં માની લેવા તૈયાર નથી, તેઓ તો લર્ક-વ્હસિલાં હામ વસ્તુ માનવાને તૈયાર હોય છે. આ કાર્યો લર્કપ્રધાન ઉપદેશ કે પ્રગ્નપણની ખાસ જરૂર પડે છે અને એ જરૂરીશાતને સ્પૂર્ણ હોતાર્થ શકે તેમ હોય તો ઉપાધ્યાયજનું પંહિય-સરપર સાહિત અને વેજોશીની વિસ્તૃત્યાદ્વાએ છે.

દદ્દીકાર એમ પણ વિવાસસ્કુરણા શર્ટ હત્ય છે કે લાવિશ્રમનાં એ ધાછ ક્રદ્યીને જ

તદ્વિષયક સાહિત્ય સર્જન કરવાના લગીરથ પ્રયાસ તેા નહીં કર્યો હોય! અસ્તુ.

આથી વંદનીય જૈન પ્રમણા અને પ્રમણીઓને આ સ્ટાગંડપમાંથી વિનંતિ કર્યું છું. કે તે જેન પ્રતાને પ્રત્યામાં ટકાળી જાળવી હોય તો લક્ષ્મપાણ ને ન્યાચથી લસ્પૃર એવાં ઉપાધ્યાયભ્યાં અદ્વેસ્ટ્ય ગ્રાહ્મીનું અધ્યયન કરવાના અગ્રહ નિર્ણય કરે.

રાહાવાદનો જમાનો ખાસ થતો આવે છે. સાવો શહાવાદ કે ગાતમવાદ ટકાવવા યુહિશમ્ય ઉપદેશ અને સમત્રાવટની અનિવાર્ય જરૂર ઊલી થઈ છે, આ ઉલાડું તમ્ન સસ્ છે. તો આપણે સહું તેમના કર્માણું અધ્યાસ અને પાસ્ત્રાસ્કુ કરવામાં લાગી જઈએ અને, તેથી આપણાં પાતાનાં ત્રાન, દર્શન ને ચારિત્રની યુષ જ યુષ્ટિ કરી શર્કેશું. શાકપ્યમુ સુહને વધુ વક્ષ્મ દ્વિતાય ત્રયું અન્સ્કુલાય સ્ટ્રને નહીં પણ લગવાન અહ્યાં વેદેવનાં "લય્લેસ્તરિદ્વાર— પર્લેસનાદુલાય" આ નિકાલાભાષિત પૂર્વ સ્ટ્રને અન્યમાં લેતારી સર્વેદંજની સાધનાનો અર્થપર સાથા મંત્રાન બાદરાં ખાંદ કરી શક્ષેશું, અને એમાં જ ભાષાનું અને પસ્કુ કલ્યાણ સામાંગ્રેફ છે.

મને અશાલ અને અલાધ શહે છે કે જ્યાંઆવા લાળવાની નિર્મલ રચનાને એક એક અક્ષર અપૂર્વિન્દુ હેવો શીતા અને મધુર લાગદો. એક એક શાળ લગમગતા અધ્યાપના તેજન્યી દીવાલમાં લાગ કરવશો. તેમની એક એક પક્તિ આપ્તિક દીવાળી માટે હૈપમાળાઓની થાડ આપણે, ને તેઓબીના એક એક લગ્ફ, અયુધેત રનમંત્ર્યાદ્

સાદ રાખો કે જાળાદના અંગોએ ધૃરેષ્ટું માશું ઊંચાલું છે. લાસ્તની આપ' સંસ્કૃતિના પાચામાં સુરંગ સાંપનારા બુલાં ભુલાં અનેક અતિલ્યાદોનાં લિવિલ કરેય પ્રબાના વિચારહેદમાં પ્રસરવા લાવ્યો છે. અક્ષક્તા, અન્નાન, અનીતિ, અન્યાય અને અસફ આચારના સુર્ય સોળે-કલાએ પ્રીક્ષી ભ્રામો છે. સર્વજ દુઃખ, અદ્યાંતિ અને ગ્રાસ્તુ લવેકર સામાન્ય બન્સુ છે.

જડવાદનાં છે અંગાને ડેર કરવા, અનિસ્વાદોતું હાન કરવા અને પ્રભાદેકમાં આપેકા ડેરને નીચાનાં તોપવા, આવલી સહાન પ્રથાય કરવાનાં નિરધાર કરીએ ને અજ્ઞાનનાં શાર વિમિષ્ટીને મિડાવના સલ્ય અને ગ્રાનના સહાદીય પેડાવીએ.

અમારતું કહીને, હવે હું જૈન સંઘને ઉદેશીને કેટલાંક દૂંકા રણના કફ છું. તે એ કે-પ્રથમ તા

- (૧) ઉપાધ્યાયભનું ભવત અને કવન પ્રયત કરેલું.
- (૨) તેઓશીના ઊપલબ્ધ લમામ ઋત્યાનું સમાન ધોરણે, સમાન પહેલિએ બ્યનસ્થિત રીતે સંપૂર્વું શુંદ્ધ પ્રકાશન કરતું. એ પ્રકાશનોને મૂળ ઋત્યકારના આશયને વધુ સ્પષ્ટ કરતા ત્રીકા, ટ્રિપણો, ઋતિ નિજયોલી સુવાલ્ય અને સરળ બનાવવા, જેવી જાજ્યસીઓ સુલશતાથી સ્પૂર્વક અધ્યયન કરવા પ્રેસલ.
- (3) તેઓશ્રીના સમગ્ર ગ્રત્થોની વિશંહ સ્વીક્ષા કરતું એક પુસ્તક પ્રખટ કરતું, જેથી અનેક વિદ્યાના ત્રેમના ગ્રત્થાનું અધ્યથન કરવા પ્રેસચ.

(૪) તેઓશીના અચાતુ અધ્યયન અને પ્રચાર કવારે ઘઈ શકે કે હવારે તેમનાં તામ સાથે સંકળાએલ એક સ્વતંત્ર સંસ્થા સ્થાપવામાં આવે તો જ. વળી એ સંસ્થામાં જેનદર્શન અને નબ્યન્યાયના પ્રથમ વિદ્યાનો પશ્વ તૈયાર કરી શકાય.

એ માટે શ્રી જૈનવાંથને સાગ્રહ અનુસાધ કરે છું કે આ કાર્ય રોડ્યા રચળે અવધ્ય કરે અને એનું અધ્યયન વિશ્વક સંચાલન વર્દ્ધવિધક અનુસાથી શત્રાણો અને મૃહસ્ય વિદાનો સંપ્રોલિવ રહતને કરે.

(૫) ઉરાવી પ્રવાના સલ્લેના પાચા મજબૂત વર્તન, વર્તમાન અને લાવિ પ્રત્ય ચારિક-વાન બની રહે, તે માટે તેઓસીનાં શરંકુત, પ્રાકૃત કે ગુજરાવી કૃતિનાં આબાલગા-પાસેપયોળી સુંદર લાયા-તરો, નાની નાની પુત્તિકા રૂપે પ્રયુટ શાય તે ખૂબ જ આવકારકાયક અને જરૂરી છે.

(६) સરીપિત અને શુક્રતાપૂર્વક પ્રકાશિત પ્રકાશના બહાર પ્રકથા પછી તે ઉપસ્થી દરેકની કરત કિપિત પ્રતિ દરેક લંડામાં સૂકાવી લોઈ એ, જેવી તેઓશ્રીની કૃતિએ! ચિરેજીની અને.

(૭) પીજા પણ કેટલાંક ઉપયોગી સૂચના સ્ત્રુ કરી શકાય.

પૂર્વ ઉપાધ્યાયજીના વિદ્યમાન શ્રત્યાનાં મુખ્યું જાલું કાર્ય પણ શાલું જ ખર્ચાળ છે. શરે! ધોના એક સમી ત્ર તે પૂર્વ જીવન તેમાર કરતું એ કાર્ય પણ શાલું કપણ અને ખર્ચાળ છે કરતું એક સમી ત્ર તે પૂર્વ જીવન તેમાં આપ્યાનાની શાબિક અલંક તે કરી તેમાં આપ્યાનાની શાબિક અલંક તે કરી તેમાં આપ્યાના આપી શકે તેમ નથી. તેમ ખર્ચાળ એડલા માટે છે કે તેઓશીનું છું અધ્યાન, મનન અને અત્ય તિયારશામી અને ત્રી કરતામાં તેઓશીના અને ત્રી તેમ છે.

શું યાય કે જેન સંવર્ગ તેઈએ તેવી ચોકતા નથી, પરીવાંચ કોઈ પણ ધાલતા કે કાયલેંધ સ્થાન રીતે પર વર્ધ શાતી નથી. આબે મંત્ર પાસે પંચવરીય રોની કે કાયલેંધ જેવી કોઇ વિભાગ જ નથી જૈનલતેં તેના સિકાંતી અને તેવી સંસ્કૃતિનો લકાંતર્વી દુનિયાનો પ્રાપ્ત કરવાની વિભાગ સ્વાપ્ત કરવાની વિભાગ સ્વાપ્ત કરવાની વિભાગ સાથે તેવાના સર્વા પાસ્ત કરવાની વિભાગ કર્યું હતા કે કરવાની વાતો કરે. આજે જેન સંસ્વાં ગાંત, ક્લિય, સંસ્કૃતિ અને કલાના કેરમાં લહે હત્યા જૈનેને તેવાર કરવા નોકે માં, મા પ્રસ્ત્ર બે બે કારનો તેવું કહું તે શ્રી સંસ્કૃતિ વર્તામાન સ્વિતાનો તોના મામણ લાધિની કેવી કરવાત કરવી તે જ ત્યાં કરવી શક્યું કે સામ સ્વાપ્ત તો નથી કર, તે મોકસ વાત છે, પણ ફેવી દશામાં જન્યું કેને ભાગન વર્તા કહ્યાં કરવાત તો નથી કરતા તે મામ કરવાત તો નથી કર્ય કરવા તે છે.

શું ચર્લા વેલસાં થતું થાલા અને આલ્યાંતર રનાસ્થા વિદ્યા ક્ષેપાનવે તેવુ તથી શામતું કે ક્રેપ્ટ સુપડુલ્ય પાકે અને આપણી ચિંદા શીધ નષ્ટ કરે તેની શાસનક્ષેત્રને પ્રાથમ કરવી જ સ્ત્રી ! અસ્તુ આ તો પ્રાથમિક વાત કહી. હવે આપણે મૂહ વાત પર આવીએ, ઉપાધાયલમાં અંચીનાં પુનશું હતું કાર્ય પ્રથી ક્ષેત્રા કર્તા 'પંચકી લફી એક્ક મેજ'ની જેચ લાસ્તાના હતા હતા શહેરોના સમૃદ્ધ સંધો આ કાર્ય ઉપાધી શે તો તે કાર્ય મુક્કતાથી પૂર્ણકૃતિને પાંધે.

દા ત. સુંબઈ, અમદાવાદ કે અન્ય સંથા નાક્ષે કરે કે 111 વર્ષે ધાતાની ફાન-માતાની આવકમાંથી સેંકેટ સાક ટકા પૂત્રન્ય ઉપાધ્યાયભના અન્યાલેખન કે સુકલ માટે ઉપયોગમાં આપવી, તો કરોક વર્ષમાં તેમના તમારા ગ્રામા પ્રકાશિત થઈ નાય. અર્થ ! આ કાર્ય ધારે તો એક સુંબઈ કે અમદાવાદ કરીને વ્યવસ્થાને સ્ત્રન્ય બની બચ તેમ છે.

પશુ મને લાગે છે કે જાા માટેની પહેલ તો ક્લોઇ જે જ કરવી વડે. મને વ્યાશા છે કે ક્લોઈ તેનો સુંકર જવાબ વાળશે જ.

'ચહોત હેલોઇ' તો તાદ હિંદના પણ પણ પણ પહોંચતો વચે છે.તા જ તહીં, પરવેશી વિદાનામાં પણ તે બાલીનું લણું છોતું કારણ હલોઈ નહિં પણ વાગવાન ઉપાધ્યાયભ મહારાજ જ છે તે બેમના વાશની પુત્રવચનાતાથી હતોઈ સહતે માટે ઉપણ અન્યું છે જેમનામણ માટે તો પરેખર મોક તોમરેખ છે, માટે જ હતોઈ પ્રતિજ તેઓ કીની સાહિત્યના માટે પ્રેપ્ય ફાશે પરંપરાતે નિર્ણય બન્નુર ફરી શકે તેમ છે. ત્લોઈ પ્રતિજ તેઓ કીની સાહિત્યના માટે પ્રાપ્ય ફાશે પરંપરાતે નિર્ણય બન્નુર ફરી શકે તેમ છે. ત્લોઈ પ્રત્યાન વાગને ત્યારે ક્યાર કરીને નવારા પર હાંઠી પીડે છે. અને અદેશભા મીલાવી, અલ્વાર લેખવા અની, પાતાનાં શાન બાળવે છે. એવો મારો એ કેઈ બાહાલ છે છે એ આવાલને સાલેય પ્રાપ્તે જ

રેલોડિંગે આશ સંપતિથી તાંધું 'પ્રતાના પ્રવાગ લક્ષે ઉલા ગાય, તે સંતેચોમાં પણ શંકારસ'પત્તિથી તે કહી તાંધું તહીં પડે, તે માટે તો સલાય વર્ષાત્ર રહેશે જ 'અને અધ' 'પ્લાસને બિરાજપાન શ્રીક્રિતાલુપાર્શનાથ પ્રસ્તુની કૃષાથી મુખ સુખને તપતો સ્ફર' જરૂર તેનેશ

ત્યારભાદ કહેમાંના બિનાર કિરો, ગ્રાનમાં કિરો, કિલ્લ-સ્થાપણ, કહાતી વિદાશતાઓ વધુંયો, કહેમાંની શ્રી પ્રમાણ કે ગુમનાવાઓ શાધુ-શામીભાદું પે વિવશે તથા છે તે અદ્યાવી કહેમાં મેં રેવાનું આ કે તે અદ્યાવી કહેમાં મેં રેવાનું આ કે સુરુબાર્ટ્સ તમારે કે વાંચરે પે જવાવી, કહેમાં ઉપાયલય માટે ખતતું વધું જ કરે એવી ગાળા બાદત કરી હતી.

હું પણ ભત્મે હત્યાર્કીના જ છે, જાહું જેલાલા કરતાં કાર્યમાં વધુ માનનારા હું જેઠલે વધુ ન ગાલતાં જોડલ અહેર કરું હું કે પૂ જયાંચ્યાયળની ગામિતભરેલાને ગ્રામર કરવામાં મારી અનતી તમામ જ્ઞાહિતાનોને કારે લગાહીલ. તેઓકારીની લેવા માત્ર લાવિ જીવનમાં પ્રેપાત કાર્યપૂર્વ રહેશે. શાસ્ત્રનેલ, પૂ જયાંચાયળ તથા પૂ સુરુવેલાના ગર્હાન આરીલાંદથી મારો અનેવાર ફળીલાનું શાય તેની લેનલાસન, સાંધ ગ્રાને તેની પર પરાની સેવા કરવામાં મારો અનેવાર ફળીલાનું શાય તેની લેનલાસન, સાંધ ગ્રાને તેની પર પરાની સેવા કરવામાં મારો આદિક ફળીલા નોંધાની શકું! પણ અહીં બેઠેલા અન્ય સંદાતા પ્રતિનિધિયા અને બાણીતા જેન આગેવાનાને એટલ સાથે જ કહું છું કે અમારી સફળતાના આધાર વધારા સહકાર ઉપર જ છે.

એથી અમારા આ કાર્યને સફલ કરવા દું અપીલ કર્યું છું કે અડી ઠોકેલા તેનમાંપતા આવેલાનો અને જેન શીમ તેને ચિતા વિભાગ અલ્યાવ જ કરી લે, અને મને નજુાવે કે તેઓશીના અન્યાધ્યાસના માટે અપેલ બનતું બહું ય કરીશું. દેશનેતાઓના સમારદે પાછળ લાખે કરીશે. સ્વાપ્ત પાછળ હતારે લાખે પરાચાય છે. બાખતા નામ પાછળ હતારે લાખે પરાચાય છે. તેને તિરાધાર્ય કે આવેલા કરી માત્ર પાછળ હતારે લાખો પરાચાય છે. તેને તરાધાર્ય કોર્ય અના કરે કર્યાલ કરતારા મહાન વારસા માટે સમાજે શે ન કરવું હોઈએ? જાહું જ કરવું હોઈએ બના દે શોના એક એક શાબ માટે સુરાય એક એક શીક એક ફેપિએન પોલ જન્મ સ્વાપ્ત છેલન પ્રતિ કે સમાજ એમના માટે શે કરવા ત્રિયા છે? મને તો એમ પણ કહેવાનું મન લાગ છે કે આવેલા પુરુષ પુરેપમાં જન્મથા હોલ તો એન કમાજ એમના માટે શે કરવા હિલા છેલા તો માના પુરુષ પુરેપમાં જન્મથા હોલ તો એન સમાળ હોલ માના લેવા સામ શેષ્ય કે એમના માના હોલ પ્રાપ્ત થો લાખ અને ઘરે ઘરે એમનાં સાનનાં પૂરુન ચાલ ! અને હૈરે હૈરે સાનના શિલા પ્રાપ્ત થાં હો

અર્ધા છેડેલા ભાગ્યવાન આત્માંએ! ! આપણા નિકટના મહા ઉપકારી પુરુષ માટે કંઈ ને કંઈ સેવા કરવાના હઠ નિક્ષય કરીને જન્મે.

મ્મન્તમાં મારા પરભ ઉપકારી શુરુદેવો, સ્વર્ગમાં શાસનામભાવક આવાય કેવ વિજય મેહનાદ્વિયા મહારાજ ને વિદ્યાન અને બિરાનેલા પરમ્યુન્ત્ય આવાર્ય શ્રીમદ્ વિજય પ્રતાપદ્વિયા મહારાજ ને વિદ્યાન અને બિરાનેલા પરમ્યુન્ત્ર આવાર્ય શ્રીમદ્ વિજયદાન મહારાજ એકો સાર્ર હૈરેક સદ્ધ્યુનિત સહેલ ને આસીર્લા આપતા આવ્યા છે તેઓશીતાં હું પરમ આસાર માહ છે બે દિવસનો કેઠલા ને આસીર્લા આપતા આવ્યા છે તેઓશીતાં હું પરમ આસાર માહ છે બે દિવસનો કેઠલા નહાતોઓએ આ કાર્ય માટે મને ધનવાદ આપ્યા છે. પણ સાચા ધનવાદને પાત્ર હું તર્હિ પણ અહીં વિરાત્યા શ્રુષ્ટેવી જ છે. આ સાલાપીએ સદ્યાનાનો શ્રુપ્ય તેઓ જ કરે છે હતા હતે હતે તો એક નિધિત્તાત્રા હું. તેઓશીની દ્રુપા-સંદોષ સિવાધ આ કાર્ય માર્ય પાત્રી ન જ શકાત !

અંતમાં એત્ર પ્રતિકૃતિકૃષે બિરાએલા ઉષ્પાધ્યાયછ લગવાનને વે હાથ તેહી-વંકત કરી, ગાજવી ઉષ્પાધ્યાયછ લગવાનની વાણી સભગ જેન સંઘમાં ગ્રાન, દર્શન અને આરિશની જ્યાતને સચ્ચિષ પ્રકાશિત કરનારી નીવદ ! એવી પ્રાર્થના કરી, શુધેચ્છા રાખીને માર્ફે વક્તવ્ય સમાપ્ત કર્ફ હું. કેંગ્ શાંતિઃ

٤



મુખ્ય વસતા મેં છબ્લાલ પ્રનાપમાં પેતાનું વતાબ રખૂ કરી સ્થા છે



પ્રદર્શનનું ગારીક અવેતાકન કરીને 'સંતુ કે'લું સ્કેનન ગ



ડબોઇ-દર્ભાવતી શકેરમાં નાદોદી દરવાજ ન્હાર આવેલી યગાવાદિહાનું આપ્વાસ્થિક મધેદના જગાડા પ્રશાસ્ત્ર રહ્ય

: પશ્ચિય :

- પ્રાવાષ્ટ્રરી જલમાદિરના અનુક્રસ્યુ-પે તૈયાર ચએલ અપનીય જલમાદિર
 મા લગના આજનીર્થકર તો આવાસે અપનાતની ચરેચુપાદ્કાનું મંદિર
- (૩) ત્યાતિર્ધર, ભારતીય અવ્યત્વિભૃતિ વાયત્વર-અક્ષેત્રપાષ્ટ્રમાં સૌક્ષિત વર્ષાવિ ભ્યાર અક્ષાપ્રભુ સ્વેમસ્પ્રસ્તુ ત્વન વલ્લ સમાધિર્યાર, હેની ચાર જિપ્પાય ભગવાનની પરિત્ર પાકુકા અને આરસની તૃત્તન તચ્િત સર્મિ પ્રસ્તારકો કો.
- (૪) પરમપૂત્રન આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય ગેઠકનસ્વીચર સમાધિ મક્ટિ

નોંધ:—સ્વયસ વે અહેર ધએલા નિવધાની જૈનમાં પ્રયત ધએલી રાહી

શ્રીયશાવિજય સારસ્વતસત્ર પ્રસંગે આવેલા ક્ષેખ-નિળધાની યાદી

	લીસગામ
	લીસગામ
અને તેમની શાસન સેવા	
રે. અમર યેરીાવિજયુજી, શ્રીક્રક્સુખ ત્રાધ્યક્ષિય	ખનાસ્સ
3. વાચક પરોાવિજવાછા. યે મી ભારે કરવિજવાછ	सुरत
૪' પૃ ઉ. શ્રીધરોાવિશ્વાછ મહારાજના સૃતિ ગીલાતુવિશ્વછ વયાના સહસ્યા અને વિશેષતાએષ.	મુ'ભઈ
ર્ષ ત્રિપશિશાકાપુરુષ ચરિત મહાકાવ્યમાંનું ગોજવત ત્રે દાકર ત્રેય છે સમાજ કર્યાન,	વઢાદરા
મહારાજની જ્ઞાન કીપિકા (ગ્રાનસાર અપક)	ાવનગર
 લાકિંક હરિયાળી સ્વાપણ વિવસ્થ સહિત. ગ્રે. શ્રી હીરાલલ ર. કપડીના ત્યાયાયાઈન વ'કત. 	सुरत
 ઉ. કીપરોાવિજયુછ ત્યારાચાર્યાં શા. નવાત્તપક્ષસ લગવાનક્ષસ. લન્ય છવત, 	મું ભર્ય
 જાણાયાર્થની વિશિષ્ટતાએક ચાર શ્રીવિસ્વલિધસિક મહાસન : 	ખ'ભાત
૧૦. પાચીન અને તનીન ત્યાય. સાંધાછ શ્રીસુત્રાવદાંશછ	ક્લકતા
 (स) तत्थार्थगीत (व) वशोविजय उपाण्डत श्रीश 'न्याय्य नाटा. तत्त्वार्थ गीत, विवेचक श्रीमद् शावसारजी 	મીકાનેર
ઉપર અમૂલ્ય ઉપકાર.	મ'સાત
	ખરેચી
૧૪. પ્રાચીન અને નવ્ય ત્યાયની વિશિષ્ટતા શિલ્પિન્ડ જેટરી, એમ એ અમ	માધવાદ
 શ્રીયરે વિજયભ મહારાજની જન્મ- ભૂમિ કરોડા. 	પાટણ
 જૈન સિદ્ધાન્ત અને સંસ્કૃતિના સાચા પ્રચાર મૃતિ શ્રીસત્રવિજય છે. 	ાં ભાત
 (૨) ત્યાયાયાર્થ શ્રીવરેમાં લગ્લાલ, ત્રેમની સાલ ગારેન લાઇ વાર્ય લાઇ વાર્ય લાઇ વાર્ય લાઇ વાર્ય લાઇ કરવાઇ વાર્ય લાઇ કરવાઇ કરાઇ કરવાઇ કરાઇ કરાઇ કરાઇ કરાઇ કરાઇ કરાઇ કરાઇ કર	મુખર્ક

	fet	
	શ્રીમાન યરાવિજયછ. યથ્યાત્મતત્ત્વવેત્તા શ્રીમદ્ દેવવંદ્ ત્રી	ડો. શ્રીક્ષમનાનદાસ મનસુખલાઈ મહેતા. સું'થઇ શ્રીઅમસ્યંદ નાહડા. બીકાનેર
₹0.	ગયાતનસવત્તા આગવુ ૧૧૫૬ના અહિસા ધર્મ અને તેતા સંસ્કૃતિના વિકાસક્રમમાં ઉપયોગ	શીપ્રફ્લાદ ચલ્લેખર લ્વિનજી, ગ્રેમ એ એલ. એલ. એમ, સુંખઇ
	જૈન દર્શનનું ચિતન કાવ્ય. મહાપાધ્યાય શ્રીયશાવિજયજી.	ત્રી પી. કે. શાહ. અમદાવાદ ડો∘ ત્રીત્રિશુવનદાસ લહેરવંદ શાહ 'વડેદરા
₹3,	શ્રીયરોાવિજ્યછ મહારાજના જૈન સ'ઘ ઉપર ઉપકાર	કું. ચંદ્રિક્ષ સામગંદ માધી. ખંભાત
	ગૂર્જ`રભૂપણ ન્યાયવિશાસ ન્યાયાચાર્યં ઉ. શ્રીયસાવિજયજીનું જીવન અને પ્રાપ્તપ્રતિષ્ધા યાને આપણું કર્તાવ્ય ઉપાધ્યાયજીનું ગીત.	થી છત્રીહારસ કેસરીગ ૬ સંવર્ધ પ્યંભાત
₹4. ₹\$.	પ્રખર સ્યાદ્વારી ઉ. ક્રીયરાવિજ વછ મ. શ્રી મહા. મહેા. યરાવિજવછ.	મુનિ શ્રીવિક્રમવિજયછ. ખ'ભાત શેરુ વહસલસ તેલુસીલાઈ. ગ્રાફર્મી
₹.0.	મ્મહારમી સહીના પ્રખર વધાતિકરિ 🤃 શ્રીમદ્ યરોાવિજયજી.	થી વાલ લાવર્લ કો પ્લંક ચોક્સી. સું ખઠ
₹८. ₹७. ३०. ३१.	મહાન્ ત્યાનિકેર ઉ. શ્રીબદ્ થશાવિજયછ. શરુપગઢીની સેખ-શંડાણા શિકાલેખ ગુજરાતની તાર્ક કે વિભૂતિ ઉ. શ્રીવશા- વિજયદાના સરબરેશ.	શા. કૃતેકવાંદ અનેરવાંદ પ્રેપ્ય: શીવાસુદેવદરમું અગ્રવાલ, કોરી શીક્ષાસન્ત ગ્રેમાર્નદ શાહ એસ, એ વડેક્સ પાં. શીક્ષાસ્ત્રવાંદ ભગવાનદાસ ગોધી. વડેક્સ
34. 33.	મ્ય'તરકાપિકા (કવિતા) મહેા૦ શ્રીયરો(વિજયજી મહારાજ	માસ્તર શ્રીસુખલાલછ, ઝીંડ્રુવાડ શ્રીભગતવાથ મેતિયદ શાહ, સુરેન્દ્રનગ
3%.	જૈત શાસનના સમર્થ પ્રભાવક મહાન ત્યાતિર્વેર ત્યા. વિ. વરોાવિજવજ મહારાજ	ય. થીકનકવિઝ્યછ યુધિ. _મ
3/L	દૈ. શ્રીયરોાનિઝપછ તથા અવધૂત શ્રી આનંદવનઇએ બે લ્યોતિવૈદ્દેની પ્રિલન લ્યાત.	શીમહિતાલ ગે. પાસ્તકર. મું'બધ
35.	શ્રીવરોાવિજય સ્તુતિપંચક. શ્રીવરોાવિજય સ્તુતિ.	મદારાજ ચીજવાન દવિજવછ. યુનિ ચીકનક્રવિજયછ મદારાજ
34.		યુનિ ચારનક્ષ્મજન્છ મહારાજ. ॥ યુનિ ચીયુરવર્ષિજન્થજી અમહારા ધીનારાયબારાર્ષ (નિ.સ. પ્રેસ) મુ'બર
83. 82.	મીવરાવિજયછ મુટ અને જ્ઞાનસાર કીની	ન ગાયાર્થ લીવિજયપ્રતાપયસ્થિ મહાગજ. , - ગાયાર્થ લીવિજયધર્મયુગ્લિ મતુરાજ. ,

ન્યાયવિશાસ — ન્યાયાચાર્ય મહાપાધ્યાય ૧૦૦૮ શ્રીસદ્ રશોવિજયછ દર્ભાવતી સારસ્વતસત્ર 'ગીત ગુંજન'

*

સ. ૨૦૦૯ ફાસ્યુન કૃષ્ણ છ~૮ જ્ઞનિ-રવિ

 \star

પ્રેરક : મુનિશ્રા યશાવિજવાઇ સ્થયિતા—શ્રી મહિલાલ ગાહનલાલ પાદશકર

> --: કી સુપરા મંગલસ્તવત :--(શવ દુર્વો) જવ સરસત સરસ ચરૈયા ! નથ^ર અજવ સુપશ સ્તરૈયા ² !

અભવ્ય તું ન્યાયનિકારત લાકિક, યુનધર વન સ્થરીયા;
ખાલુકા તાની કરમીયા લાકિસ્યાં લાકિસ્યાં કર્યાયા કર્યાયા કર્યાયા કરમાં લાકિસ્યાં કરમાં લાકિસ્યાં કર્યાયા કરમાં લાકિસ્યાં કરમાં સ્થાય સ્થાય સ્થાય સ્થાય સ્થાય સ્થાય કરમાં કર

१. श्री तथनिक्य = परोपिन्त्यक्रना ग्रेके वध = क्षप्तनयः वच क्रन्यानः २. इतनस्थाभूत पीतार अने पानारः

— : આદ મંગલ : — (યક્સ—ગય)

--: शुबरा मेद:--(भागाम-गण)

, સુષા રસ મેલન 3 હમ ગાર ! દારામ' મેલન હાનકલાકા, ખાલત સાસ હિકાર સ્થેત. મેલલા ગાર પ્રત્યા કૃતિકાર! સુષ્ય હમાની સુષ્યુસ અનિસ્થ દિરાખત, કાંદ્રત કર્ય કરે સ્થેત. ગારાન-સ્થત ક્ષ્યુપય નાગે! તૈને યાદ-સ્થેત સુષ્ય શ્રી ભારત તાને વિશાસ તાંક કે-મ્લામ 'સ્થિક' કર એર સુપ્ય.

—: સ્વાયત : —

(원포 - 제상)

સત સુષ્ય નરતારા પંચાયા ! કવિ પાતિ ગયા દાર! સભ્વહસ સુષ્યાનસ-સરના, ગ્રાન સોતિ વિરનાર! પ્રેમભૂર્તિ ખેડુ લવિની હ્યો, દક્કાવતી. સહકર!પંચાસ!

દ છ માંગ

રસાંભવ રસારાયાં ઉત્તરો, હ્યાંનીરિ વસનાર ! યહીંપવિભવ્ય સારસ્વત સર્વે, ત્ર્ય અધ્યાભ પીનાર ! પધારા ! ધર્માન્યું સ્થાને પરંત્ર પીનાર-કંબ્લેશ્વ રસારસ્વા સર્વે,, ત્ર્ય અધ્યાભ પીનાર ! પધારા ! ધર્માન્યું સ્થાને કંપારાયાં ! પધારા ! ધર્મારા કંપારાયાં જરાવિભવ્ય સ્થાને સ્થાન ના અનવાર ! ધર્મારા ! ધર્મારા ! ધર્મારા સ્થાને અભ્યાભવ્યત સ્થાને સ્થાના સ્થાને સ્થાને સ્થાના સ્થાને સ્થાના સ્થાને સ્થાના સ્થાને સ્થાના સ્થાને સ્થાના સ્થાના સ્થાને સ્થાના સ્થાના સ્થાના સ્થાના સ્થાને સ્થાના સ્થાન સ્થાના સ્થાન સ્થાના સ્થાન સ્થાના સ્થાના સ્થાના સ્થાના સ્થાના સ્થાના સ્થાના સ્થાન સ્થાન સ્થાના સ્થાન સ્થાના સ્થાન સ્થાના સ્થાના સ્થાન સ્થાના સ્થાના સ્થાના સ્થાના સ્થાન સ્થાના સ્થાન સ્થાના સ્થાના સ્થાના સ્થાન સ્થાના સ્થાન સ્થાના સ્થાન સ્થાન સ્થાન સ્થાન સ્થાન સ્થાના સ્થાન સ્થાના સ્થાન સ્થાના સ્થાન સ્થાન સ્થાન સ્થાન સ્થાન સ્થાન સ્થાન સ્થાના સ્થાન સ્થ

--: કેવબાંગ કર્યાવતીને કરાવ: --(क्रिक्त विद्य રમ રામ રને રમી રાધ રમે. આજે કભાવતી બલહાર બંતે. શર્શી-સરજ દિવ્યાપ્રકાશ સ્થે, થશ-સ્વર્મ ભારા મને. अत्वैकाव देव विवास हता ! आहा आवाह ओर अपार हता ર્રેલી સિતાર જતા—આજે દર્શાવતી સર સગીત વર જ-મશીંગ મુનિસંદ્રસૃષ્ટિ ઉપાધ્યાય જવ'ત ને જ'બસારિ. યશે કેંગે આસર્ક જયવિજયતથી—માજે. ક્ષ્યારાસ હવિ અહીં જન્મધરી, સત્રમ સાંઠ સાધ ને સાધ્યી પ્રકી. शितकार्ध सरोपरे दक्षि प्ररी-माले. **યશક્યાંલીશાસ**ે મુગસણ, એતો ત્રિદરાયુરથીજક્રસ્પતિ શા [‡] યગપ્રધાન હેલા---વ્યાજે. પાદકા **વિજયપ્રશ**—માહનસરિ, યશ શાસસંદ્રાહ તાનમદિસ્તી. યરાાવાહિકા તે જલગલ્લિછ. ગાજે. દિવ્ય દેવ વિમાન છ મ દિરીયાં. વસ્તપાલ પેયડશાનાં સર્જનશા ? અહીં પાધડી—હાટ કસારા તર્ણા—આજે.

ભાગ કાર તે કિશો પાયાણતાણા, શસ્ત્ર દરવાળ રથાપાયના રમસ્યા. ક્રીરાસકોશા—હીત્રા કહીયાતાણા—માજે. ૧ મામલીકારકા, ૨ શીરસોલિયલાઇ, ૩ શીર વિલિયલાઇ, ૪ શીરપારિતયાઇ

સાસ્યતાસન હે આટીનો-પર-ચાન-પૂત્રન સરણ લરીયો! ગોએ સબ્લક દોધી સસ્સીયા-ચાએ. સસ્કાર આજ કરુલ સમે-ક્લાવતી હેલ હેલાવ સખે ફેબ્દુએ ક્ષળત્વો ખોલાવ સખે-આએ. મત ગોલ લાવ ફરી હુ ફરી, હોય સ્વાપીયુ સોસ્ટ્રેનિ દીવલદી! મહિયુષ્ય જની અ ફરી દક્ષીવતી!—આએ.

—: શ્રી સુવશ-છવન સંછવની : — (હોલ—ગલા)

भरवे। जे इत्तर गुजरात! आश्रमंथरी क्षेत्रश ढेईहे, त्राती राज मध्यार ! र्थं न नीववस्थ् तहराश, धारे बार व्यक्षर ! अश्वेL સરીતા કેતર વોનાં સવસ, અર્થ સ્થા સહસર ! ક્લકાનના ત્રામ કનાડા, પ્રનિત તપાવન દાર! પત્ર કરક જરા-પદ પિત-મા-નારાયણ સૌભાસ્ય ! સોળ ઈકવાસી નય સક પાટલા દીસા ઉલય વિસર્ગ! ગરવા. શોળ નવ્વાદાં સજનગર, દે ધનછ કરા રહાય! ગુરુ-મહિત કારી પરવરીયા. કહ્યા શાસ્ત્ર અભ્યાસ! મરવા. મંગા-તટ આરાધન સારદ, પ્રસથ-પરંચટ થાય ! ન્યાયવિશાબ્દ પદ પહિત સૌ તાર્કિક યુરા બિસ્કાય l મરવા. थारूव जागरा दोसप्रभेरै—विद्ययदेव सरिभए ! ઉપાધ્યાય પદ દેશ થરા—વાચક—પાટક ત્કેવાય! ત્રંખાવડી **છાશી વ**ડેપર થઈ—તંત્રર પાદરા જ્ય**ા** ભાગ્ય મસ્ત રહિ આછ-ચરાંજન નક્ષ હવેરાય! સરવા. અવધત આતમદાની યોગી. આનંદવાન ગળી અપ 1 મુમલ જ્યોતિર્ધાર અલ્લત સેડી, શાન મંત્રમાં ન્દ્રાય ! મરવા. भीर्चा-नर्भी समये. हान सरीत ध्वतवा જ્ઞાનકિયા નિલય વ્યવદાર, પ્રનાપ્તુ ગ્રંથ ત્રશાય! મરશેર.. વિચરંતા દ્વર્શાવતી દારે, પત્રાસ્તા જરાસય ! અનગ્રન પછે સનાધિ—સતર તેનારીસ ચરા પાય! મરવે. યુનિન પાદુકા સ્થાપન, પ્રતિના, સમાધિ મહિર ઘાવ ! યુરવર્તમ થશ-થશ પોતારે શાસ્ત્રસત્ર સ્થાય ! ત્રસ્તો લ્લું હૃગ્નિક તો દ્વેમપ્રતિનિ—મામેક તર્કિકનાલ! 'मिनिसर्ग नन मत्तः यश यस्त्रे, अक्ति प्रथ्य अर्थात ! अरेबः,

-- : an alle :--

(राष--विश पटडीप-केंद्रणार अस्तर है।)

એક લ્યોત જશ જ્યાદે !

गानीश और बहरसे. वे ज्येति अभ्यमहो । और 영영역(A) 21 e/ 최종네~~

> કેબોજ લાલ સભક્રે

ભાગમ માનાવકે દમ કુકરાતે, પણ દીખાદો ! એક

आत्मस्य ज्ञानन्योति--

रहे ब्यवती इमणहम हैं। છભ જ્યાતકા કિરનસે. વીરધર્ય કા શિ**ખા**દા ! એક

ये भवती भवती क्रतीर्या

अतज्ञान ओर स्थिती વન બાધીબીજ મહસે, સુક્રિતપથે 'ફેરિયાદા !

કંક્સ શકારે 'મશ્રિકા ¹—અસ્થાન મે પુગઢા ! એક

-: Geor :-

શાહીમાં વીઝર્નકતીમાં શૌ આવેલી.

मध्य भानसार राजवार्धस स्थामको

પધારીયા શ્રીયશાવિજય ગુલઉત્સવે. સહાવવા ચરા-ધર્મ-સચરા દરભારને લા

क्षांच्याः व्यक्तिस्याः स्थलकरीः निकारमानवस्थामत अर्था पानको

પીધાં પામાં દિવ્ય સ્સાયદા શાધતાં.

देश्य इदेता विधारते। अहेगानले बा०

सामाधिक विद्यास रक्षरी न्याप दी, ચાતક સરુવર તયનાગત અભિરામએ.

ધર્મ પિપાસ માધ્યા રતેદ નિલાવજે, શાકભા દિશના બ્હાલા એં વિશ્વાસને લાહ

ધર્મ પ્રતાપે સચશ જય'વર લ્હેરતો, આવ્યા ! સત્કારી ન શક્યા મહેમાનલે

ક્ષત્રાભર્યો હશ્યામત પાન કરાવાને,

'असियय' दक्ता दिसनी ज्यावर विद्ययाने साव

ત્રોધ-સગોત્સવની ઉજવણી અંગે જેન પત્રમાં પ્રગટ વધેલી તંત્રી નોંધના ઉતારા

<u>ત'ત્રીસ્ધાનેથી</u>

ध्न्यवाह

ગત ફાગલુ વિક સાતમ-આદમના દિવસા કરવાાન, રહેશાં મુકાયે મહેડપાયાય શ્રી યરોપવિજયજી મહાસજના ગ્રુગમંદિરની યવિકાના શ્રુપ્ત અપસંદે, એ પ્રેરીકા-મહાસવરની સાચોસાય, મહેડપાયાયજીના સર્પત્રિસુખી વિદાશ પાહિરુપને લાવલારી અંબદે આપળાના કૈકેશથી શ્રીપ્રાપ્તિજયસાસ્તરસભાઈ કેટવાણું કરવામાં આવી તે ળીતા પ્રત્યે અને સપાયો હતું આત્ર કરીએ કોંગે.

ગુરુમંદિલ્લી પ્રતિક્ષની સાંચાસાથ આવાં ત્રાનેલાય ચેલ્લવાના જે મહેલાયોને વિચાર સ્કુર્યો અને જે મહેલાયોઓ એ વિચારને વધાવી હાર્ટને એને મૂર્ય કરી અલાએક તે બધા ય મહાતુસાયો-સુન્વિરો, વિદ્વાને, બિક્સટોક અને ધાત્રા ધાવલા આપણ કાર્યક્રેયોને આવું આદિ સમ્પ્રીયુપોથી કાર્ય કરવા માટે અને હાર્વિક ધન્યવાદ આપીએ છીએ. તેઓએ આ કાર્ય કરીને સમાન ઉપર ઉપકાર કરી છે, તેથી તેઓ પ્રત્યે અર્થ સમાનની વદી આશાસ્ત્રી શાળાદી બહાર કરીએ છીએ.

આ સાત્વત ઉલાવ કેવા મેદા પાયા ઉપર આપણે ઉજવી શક્યા, ગર્ધવા એમાં ખાપણે કેદશ અંગે સફળ થઈ શક્યા, કે એમાં આપણી ધારણા સુવળ કેદલું કાર્ય પાર પાક્રી શક્યા વગેરે બીના અમારે અન હાડી મહત્વની તથી વસ્તારે મન તો ભાવા દ્વારોતાસવની એક પોજના તૈયાર કરવામાં આવી અને તેને સમય સ્થળ અને ર ચોળોને અહસાર પાર પાસામાં આવી એ બીના જ લારે મહત્વની છે, અને આ મહત્વની દરિએ જ અમે બા સારસ્વત ઉજ્ઞાવનું મૂલાંકન કરીએ કોએ, એની પ્રશંસા કરીએ કોએ, એને

આપણે ત્યાં કહાંનના એટલે કે અહાના પોષક અનેક નાનાપોટા ઉત્સવો દેર કેર વારંવાર યોજવામાં આવે છે, પણ જ્ઞાનના ઉત્સવેતની અને તેમાં ચ રે ઉત્સવેશી સમાજમાં દ્વાન પ્રતેનો આદન વધે એટલું જ નહીં પણ કરેક અબ્રિતને ક્લિમાં એમ શાય કે દાનને પ્રાપ્ત કર્યા વગર ન તો આપણે પોષાતોને ઉત્સવે ત્રહાવાનો છે, કે ત તો સમાજના ઉદ્યત્વે કર્યાવાનો છે. એવા ઉત્સવેતી અને એવી પ્રસ્તિ તેઓની આપણે ત્યાં લાં પ્રમાં છે. અલ્લા કેમ્બ્રેને જેમ સમાથી સમાજ આપક બનવા લીધું છે, તેમ ત્યાનના ફેમ્બ્રને આપણે ત્યાપક બનાવી દીધું નથી, એમાં તો ત્યારે કૃષ્ણક અબ્રિતાઓને બ્રાયારીને જ સત્તીય માની લીધે છે. પત્સિણમે એન સંસ્તિતાની પ્રમૃતિ કેશ્યાર્થ પરિદેશ અને એવું કાર્યફેસ વધુ ને વધું સંપૂત્વિન અનું વધું છે. જ્ઞામાજના યોગ્લોમની દરિશ્લે આ સ્થિત કરાવાનો અને પદલે રાસવાના લીધે અ કેવળ શ્રહ્માનું સ્ટન કર્યાં કરીએ તો પરિસ્તુપે સાન પ્રત્યે વ્યાલિફિય લાગાના થાકલે અધ્યક્ષ્યા તરફ જ આકર્યાય વધી લાચ, અને છેવટે ગ્રાનનું ક્ષેત્ર વધુ તે વધુ ઉપેલિત અની પ્રયા વધર ન રહે આપશું જ તત્તરાત, આપશે જ ઇતિક્ષય કે આપશું જ સાહિત્ય આપશે ચકાર્યક્રમમાં ન પિછળથું શક્ત્રોએ એ પીના આ વાતને જ સાફ્ષી પૂરે છે સાહિત્ય આપશે સાર આવી પસિંસ્કિય પ્રવર્ધી રહી છે, અને આપશું આગેવાનામાંના ધર્માપ્યા હતું પશું પોતાની શક્તિએ આપે પાર્ચે જ વાપરતા કેળાય છે સારે આવી એકાં ક અધ્યાન અધ્યાપમાં હતું પશું પોતાની શક્તિએ આપે પાર્ચે અપાર્ચે છે, અને ઓધાનું બહું પશું પોતાની શક્તિએ આપે પાર્ચે અપાર્ચે છે, અને ઓધાનું બહું પશું પોતાની શક્તિએ આપે આ સાર્ચે હતું અપાર્ચ અપાર્ચ કે સારે આપણા આપણા આપણા આપણા ક્રાં છે છે, અને આપણા પ્રશાસ માત્રી લે છે આ સારવતા હતાલનું આ લિપ્સે આપાર્ચ મન બહુંસ્ટ્ર છે.

એક દિલ્હે કહેતું હેલ્ય તો એમ અરૂર કહ્યું શક્ય કે, ગ્યા સારસ્વત ઉત્સવના યોજકાએ એક નવેદ વર્લિક પાઠવાતુ શુસ કર્યું કહ્યું છે. આ કાર્ય શકું કેઇ એ ગતુકરજી કરવા એતું ઉત્તમ કાર્ય છે ગયે કર્યું કહે. આ કાર્ય કર્યું હતું ઉત્તમ કાર્ય છે ગયે કર્યું કહ્યું કરાયાં માર્ચ આ માંગીને કરે જે ગયું કર્યું કર્યા માર્ચ માંગી માંગીને કરે જે ગયું કર્યું કર્યા માર્ચ માંગી માંગીને કરે જે ગયું કર્યું કર્યા માર્ચ માંગી માર્ચ માંગીને કર્યા માર્ચ માર્ચ માર્ચ તેની આપણા પ્રત્યેક દર્યાન-ઉત્સવની સાથેસામાં આવે સામે તેની સાનના મહિમાને કાર્ય એ તેને ત્રાપ્યું હતા લાગ સેવવાની જરૂર વધી. આવે માર્ચના પરિસાર્બિય લાગીને કર્યું હતા વધુ આવાન જ અનવાની અને એમ કરતાં પ્રત્યો સ્થામ વળાની મેરિક્રાં સ્થામ પરિસાર્બિય અનીને કર્યા વધુ આવાન જ અનવાની અને એમ કરતાં પ્રત્યો સ્થામ વળાની મેરિક્રાં સ્થામ પર્યું એ આપશું એક બર્યું હોય તો, તે તો સર્વામ ઉજ પશુંખ.

અતુમાદના માગી લે છે.

સાને મહિપાંચાયછ સરખી વિલ્લુનિયો વિદ્યાનાં મનેક શેરોડ્ર મીલિક અને તલસ્પરી!' રીતે ખેતાલુ કરવાની વિરુદ્ધ શોકા પ્રત્યે આપણે વનતાલું થાન દોરી શક્યા અને એમના સર્વ'આપી સાહિતનું પુબરનગરલું કરી શક્યાં એ આ ત્રાંનોત્સવર્ભી એક વધુ સફળા છે ઉત્સવસાં નર્જી કરવામાં માવ્યું છે તેમ, આપણે દિવાનો એ મહેપાંચાયલના અત્યાર સુધીના અગુદિત રહેલા અ વરતો સુખ યાદિત અને સંશીધિત રૂપમાં વર્લેલામાં વહેલી મું વરતો સુખ યાદિત અને સંશીધિત રૂપમાં વર્લેલામાં વહેલી મું પરંતા અને એ ગ્રંથો યુદિત વર્ષ પૃત્યું કરે તેમાં પણ એ ફરી સંપાલિત કરવા એવાં હેલા તેને કરીથી યુદિત કરવામાં માર્ચન આ ઉત્સવની ઉત્પવારીઓ જ આપી મહેલાની વિસ્તૃત્રિયે ત્રાનાબાતનો વનતા તમાર સુધીવ્ય ગ્રંથો રૂપમાં રસ્ય લગાની આગા લક્ષ્યો થઈ છે આ આશા વૈલાસર ફર્યાલાના સાથે મોમ પ્રાર્થીએ છીએ. આ લક્ષ્યના માર્ચના એમ પ્રાર્થીએ છીએ. આ લક્ષ્યના ના—સાહ્ય લગા પ્રયોભ કેલ અને કાર્યક્રેએને ફરી ધન્યલાદ આપીએ છીએ.

સત્ર ઉપર સફળતા ઇંચ્છતા અને અબિનંદન આપતા આવેલા સંદેશાઓ

િરોપ-સંત્ર ઉપર પગ અને તાર હાલ પુત્રવ-તૈનાવારી, ગુનિવર્શ-સાલીઝમાં, તથા રાખ કર્યાચારીમાં કુનિવર્શન હોને અને તે કે ફેકિફિક પરિવાત કુકપિત-ઉપફલ પતિ, પ્રાંથાપોર્ક ભાદિ વિકાન, પતિને, પ્રાંથીમાં, તથા તેને વસાવત સંપર્થામાં વેખ સ્વાત્રાના કાર્યક્રમ, ભને ગોંગ અનેક પત્રેમાંના વર્ષક્રમ તાર રામકાલ્યા છે ન ઉપકાર્થી પ્રાપ્યાન હતા તેને અની વર્ષકૃત કર્યો છે. પ્રષ્ય પત્રકાર ભાવેલા તે પછી તાર હામ આવેલા સંપર્ધામાં વર્ષક્રમ આવેલા સંપર્ધામાં પત્રેમાં તે પત્રક્ષ કર્યા તે તે પ્રાપ્યાન વાતા-તેના વૈદ્યાંથી પાર્વક્ર પ્રાપ્ય પત્રક કર્યા કર્યા અને તે તેના સંપર્ધ પત્રક સંપર્ધ કર્યા છે તે સ્વર્ધ પ્રાપ્ય કર્યા છે. પત્રક સંપર્ધ કર્યા કર્યા સંપર્ધ કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા સંપર્ધ કર્યા કરા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કરા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કરા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા ક

૮પાલ દ્વારા મળેલા સંદેશાઓ

મહાયહોપાંપાયલ્છ શ્રીમોર્શિક્તપણ સાફેગ્લી વરસવાદુક્ષ — દેરીના પ્રતિવ્રમહોદાવ પ્રદર્ગ સંગોશીના રમસ્યાર્થે શ્રીસારવતભાની એ મેજના શતાસા આવી છે તે લક્ષ્યું ચાનદિત થયા ઇમેરે અને તે સંપૂર્ણ હાફળ શ્રેમ અંતાદાસુથી ઈચ્છોએ ઇક્રો

થ્યા શુધ્ધ પ્રસ્ત્રે ગલાવી પંચારતા વાર્ણ સ્ત્રિકોનો સભાવન થશે, સંસ્થેની વિદ્વાની લાધા મળશે દો થ્યા શુધ્ધ પ્રસ્ત્રે તેમેલોલાઓ હમેકાને માટે પારાવીદી કહે અને હેમ્તરમાત્ર તેમેલોલાનું નામ સ્વરક્ષ કરતી રહે કેમતા સાદ અપાવાર્યું કે લાધાવ્યું કરીને કોંગે કે સ્થેતાઓની રીતી, સનાપાંચે કે સ્થાતે કેમેસીલાન લાધ નામથી શીમંત્રના પાંત્રભાવ સ્થાપન કરવામાં આવે અને કેમનાં ભારતનું, ત્યાંપ મ્યારિકા અત્યાસ કાંગલવામાં આવે સંભાવી લીકોલા સ્ટિકોનો સ્ટેન્સપાર્ટના અને સ્થેમણાટના શુધ્ધ તામના સ્થિત સ્થાત્રે સ્થાતે સ્થા મામે શુધ્ધ ઓક્સાસના સ્થિતો

—માચાર્યંત્રી વિજયવક્ષભસૂરિછ, કાર, મુંબર્ધ.

ગીપરેક્રિજિયસારસ્તારાની ઉભ્યાસી દલા ન્યાવિશાંદદ, ન્યાયાવાર્થ એક પ્રાંથાય શ્રીપરેક્રિજ્ય કરિયાના ગીપરેક્રિજિયલ કરવાના અને કેંગ્રેલીના વિશ્વ અને વિશિષ્ટ સ્થક્તિઓ વિદ્યાનીને પરિયા કરવાની તારીર આ પ્રત્ય પણ ત્રાંગ નેને ત્રેમ કપ્યું છું નેન્યાર કિન્મ પૂર્ણ તેમનો પ્રણુના કરી સેન્સલ ન ગાનના, તેમના જીવન એ લ્લાને લેક્સલી નવારી લીક્સલાર્થના એ પહિન દૃશ્યો તેમણે સાહિત સર્જન કર્યું કે તેને પૂર્ણ તેમણે સાહિત સર્જન કર્યું કે તેને પૂર્ણ કરવાના ગામ કરવાના ગામ કર્યું કે તેને ક્રિક્રે

ડમોર્ટમાં તેમની જીવનની વ્યતિષ મથા બહીત થાંગેલી હોઇ ડમોઇના સિરે આ બવાગદારી વિરોધ રૂપે રહે છે.

—આચાર્યજી વિભવકામ્યિસરિષ્ટ, મલાત.

—આચાર્યંથી વિજયદિમાચલસરિજી જામનગર.

લાક્ષતના સહ્યત ઉપકારી પૂંગ ઉપાંખાયા મહતાલ ગૌધાન વેકોવિલ્લા અને તે મેરિયાસામાં પહેલાલ કરવાનું તિરાહા કે તે અથી અત્યંત ચાનદ શાય છે. આપમીમાના હસ્તે પૈત્યે ઉપાંખાયા આક્ષામાના પ્રકાન—કુમ્મેરિની પ્રતિકા કરવાનું થાય છે તે મોટો, પુચારે છેલા છે. અને માટ કાર્યને માટે બોલિલ્લોલાફિ સથવી કાર્યવાહક કરિકીને માટ કાર્ય વધુ વહારી ખનાવદા માટે પેન્યાદ તેમ જ સુધા આક્ષીલી લાધીએ લીચે.

---માચાર્યજી ચંકસાગસ્મસ્છિ, સાળરસતી, ખમદાવાદ

परे।विकय सारञ्जलक अकेत्सननी स्थ्यता र्रम्यु छ

—ષ**ં. સુનિશ્રી ભદ્ર'કરવિજવછ, સુ**રત.

મરાવિજય સારવતસાનના મહાત્સવના શરૂમાટન પ્રસાવે અભિનદન.

—મૃતિશ્રી યુવ્યવિજયછ, અનદાવાદ

यरो।विकय सहस्वतसकती अभे। सहस्रता उ²कीने क्षेत्रे.

પૂર્વ પરાયિત્વન મહારાજનું સર્વીથી ચરિત તથા અધ્યવ સાહિત જનાઉ પ્રકાશિત માત્ર એ પહેલી તકે જરૂરી છે.

-મૃનિશ્રી દર્શનવિજયછ ત્રિપૃદી, ગણભાગ, રાજસ્યાન

પૂન્ન ઉપાધ્યાયલ મહારાજ પ્રતે હાલિલાન બાકત કરવાનો અને તેવા પૂન્યવીલ્ટના દર્શનશીદે કરનાર સ્થર્ય સાહિત્યનો વધામ્યાદ્વામાં પ્રકારામાં શાલવાનો ગા પ્રત્યંત્ર અનુગોહત્મન અને તેવાલો, પ્રતે ભતિસાન ધરાવતા ગામમાને ગાના દેશ છે. એ પ્રત્યંત્રને દીધાવવા તેવા વચારાકળ તખારી પ્રવૃત્તિમા સફળ ભતે

—૫. ગ્રુનિશ્રી કુર વર્સવજયછ ગણિ, મુંત્રમી

તેઓશીના ઉપકારા આપણા પર દેવ, સમાજ તથા સસાર પર અનેકવિષ છે. તેઓથીની અદ્દર્શત ત્રેષા, અસાધારમુ પ્રતિભા તેવ જ પ્રચંડ વિદ્વાર્થ હૈંગ શાસનમાં શક્તાં ઇતિહાસ સત્યોં છે.

૧૪૪૪ ત્રાંધ રતીના સ્વવિતા સાર્ચ્ય વિદાન સરિયુદ્ધ ચીદિક્લાસ્ટિવિસ્, તથા કરિકાલ સર્વાંડ ભાગમાં વેલાવાન મીકેમ્ચસ્ટિવિસ્, મ્યા મન્ત્રે મહાન પુરુતીના પગરી પગરી જેન્દ્રસાયનમાં તેમન સાદિત્ય સસાસમાં ભગતિમ પુરુતામાં દારા પોતાની સક્તિમાનો પરિસાદ્ધ લિકાસ સાધી એ લખ્ય વાસીર ભાષણી સમારે તેમાંથી મુદ્દી માત્ર છે, તે માટે હેમાંથીની આપણા પરના વલાત ઉપકાર આપણે કરી સુધી સર્ચાએ તેમ નથી.

क्रेकेनशिक के निकटकारणं ज्ञानीयन, कर्नवीण तथा क्राक्तियोगर्गा विश्वह भाग् प्रस्यायी, असायी तैम क तेनी रहाने व्यापना व्याक्रक्तेनो निकयक्तियी (व्यव्याप्त्रे) के अतीक्षर नरी, क्रेनशासननी व्यस्थ प्रसादना तेमछे करी ते परेणक व्यक्तिय छे.

વ્યાના મહામહનીય, મરત્વોથી મહાન પુરુષના ગુણાનુનાતુ જે વ્યતુષમ કાર્ય તમે શકુ ગ્રેણાનુરાગી સન્દ્રત્વોએ આરભ્ય છે. તે સાથે જ પ્રશસ્ત્રીય છે.

યુ ઉષાધ્યાર્થીના સાફિતનો પ્રયાર વર્તમાન્યુરમાં નિક્ષ રીતે શાય તે ઇચ્છનીય છે અને તમે જે સત્ર જ્વની રહ્યા છે. અને તે દ્વાર યુ ઉષાધ્યાર્થીના આપણા પરના ઉપકારને લભ્ય અંજરિ અર્પેશ કરી રહ્યા છે! તે અભિન લ્લીગ છે.

પૂત્ય ઉપાંચાયજી ગ્રહારાજગીનાં જીવન તથા કવનના ગલીર અન્વેપભૂપૂર્ણ અભ્યાસપૂર્વક એક વિશાળ ગય આ પ્રસભે પ્રસિદ્ધ થાય તે ઇચ્છનીય છે.

ત્યુપાંત વેગામાનાં જીવન તથા સાક્ષિત પર નિવિધ વશિષ્ટાભૂથી સ્તા સાત નિન ધો; દ્વાનાત્મક અત્યાસકા લેખો, દેવાદિ સામક્રા તૈયાર કરવા શક્ય પ્રકૃતો ઘાર તો તે પશુ વ્યાસપક છે. તો પૂ જેપાયાલ્ય પ્રસાગન્યીના વ્યક્તિતન્યો સાક્ષરના સુલક્ષ્મભ્લેને, અભ્યાસોને, સ.સેપસેને તેમ જ પિકાન અંત્રે પરિસ્ત પ્રસ્ન થાય

તમે સફ પૂ ઉપાંખાયછ ચહારાબચીના છવત-કવતને જે ચંત્રથી ચર્મવા આજે ઉત્સાહ પૂર્વક સત્ત્વ બન્યા છે, તે માટે ચારા તરફવી પુત્ર અધિવાંદન આપવા પૂર્વક ફૂ એને અગે ગારી તમ્ર સ્થના તમને આ રીતે સ્થકું છુ, જે સાટે તમે પશુ આ ફિશામા પ્રયત્નીથ હશે! જ.

भा सत्रना प्रेतिसाइङ तथा जावप्रेसङ विद्वान श्रुनिपुण्य श्रीक्शानिकवळने सारा तस्क्ष्यी साहर-अतुर्वदना सुभग्राता.

—પં. મુનિયો કનકવિજ્યજગણિના પત્રમાંથી

પ્લોલિંગલ સારસ્તતાન પ્રત્યો વ્યવત આનંદવી તમારી સાથે અંતક્ષ્મણપૂર્વક સહાતમૂર્તિ કર્યોલું સં —સુનિચી સ્થાહિકેવિજયછ, અપ્રદાવદ

પૂત્વ ઉપાધ્યાય ગીમકોલિયા સારત્યતાના મહેતવાનું જાણી ચાનદ તથા ગૃથ-ગુરુનીમંદ્રિર પ્રતિધા કરતાનું થાય છે. તે માટે પુણ્યનો દાવય છે આ મહાન કાર્યની સફળતા ઇચ્છીએ છીએ

—સુનિઝી ચંદ્રોક્ચસાગર**્**, સાગરમતો-અમદાવાદ *

પૂર મહેપાંચાય ત્રીઓનિવ્યટલાહારાન્યો માંચવા ઉત્તર તેવી ઉપાર તથી, તેવતી સ્પર્ધિ નિવિત તેવોલીના શ્રોનુ સંસ્થાન તથા પ્રકારત વર્ષેને બેઠક કાલ વર્ષે તેઠાક કેટી સ્પર્ધ ગાત તે તે દેવી છે તેના ઉત્તર જ સામનોને દાત છે તેની ન્યેડ નેટલી વિજ્ઞા ત્રવારા દેઠીને શાસતે સ્પં શાસ છે

—મુનિશ્રી રાહિતવિજયછ, વાપી

ભગે ખરાશ રાખ્યોએ છોએ કે, હઇ તમે વધાું કોર્ડો કાર્યો કરીને એવ વાને તેવ તેંત્ર તાલનનો જિલ્લેમ્બર ફેક વે! ખાતે. સાથેલાલા એ અસ્તિકારલ રાખો કે, એની રંતિ માં જાતન સુરી કરો રચ્છેને માં કે કિંકાફ કેમેં છે, તેના રંતિ આપણે વધુ તે તમ માર્ચે જાહુલરી આપણાં ભાગો: ખાતે માર્ચવર્ષિયાઈએ કાર કે લાગકારાકારીયાં વર્ષો

—સાધ્વી કેવળશ્રીછ, ખલત

તમે જે મોમહામહોરપાયાય યોકાનિમાં સારબતાલા મહેતાલા સનાવવાનો નિલ્લ કરીને ટ્રાંગ્રહિનો પંચિત્ર ભાગો, છે તે પ્રકારતીય છે. મહેતાલાં લઈ પ્રકારે સફળતાને પ્રાપ્ત કરતી. કોઈ રચનાત્મક કાર્ય સ્થાપની ક્રમ્પણ સુપક્ષિત કરે, એ જ મહિતાલા

—સાધ્વી શીલવતી મીછ, કરાતા.

આ મહિનાની તા છ-૮ મો ગે જીવનાતા ચીરસીકિયન સારસ્વલાલ પહોલાલ પારેની ભાગ તમુ પૈચિક ભાર શો વ શા. સ તી સહાર દક્ષિતિ ભાને તેના ગ્રદ્ધખાનો તેની ચાલાસ સાને છે. પણ આ મચ્ચે પહોંચો ન તમાન બાદ હિલ્લીર શાય છે. તેનો આ પ્રથમે ને સીતાલ માટે લાલાસની સાનો ભાગામિ બાદા કો તે

—સેકેટરી, ભીમસેન સાચર, ચીકસિનિસ્ટર(વડાપ્રધાન), ૫ તાન.

શ્રીમરોપિજના મહારાજમીના અંતિક સમાધિ રહ્યો જે ઉત્સવ યોજવામાં આવ્યો છે તે માતલની વાત છે

माम त्रष्टु आहे पून माधार जातिकाः जातकानुषी जानवातं जनी श्रष्ट तथी. तथारे संपर्टन पेदी समार छ तमारा अल्लोनी सभूषी स्थलता हेंग्यु खं

—છ. વી. ગાવલ'કર, લેક્સલા સ્પીકર, દિક્કી

આપની અમ્મ ત્રણુ પતિલ જાલ્લ આલાર પણ અહીંના હત્ય ભારના કારણે તેઓ આવી શકે એમ તથી એ માટે દિલ્હીર છે. તેઓ આ પ્રદાગે ઉત્લવ માટે લવી આશાઓ બ્યક્ત કરે છે.

—મહિલાલ સી. શાહ, ઠેપ્યુરી મિનિસ્ટર ફીનાન્સ ઇન્ડિયા, ન્યૂ દિલી

ચીપરોલિબ્પથ્ટ ચારત્વાલાઓ મહેલાવ વિ. સં ૨૦૦૯ ના ફાસ્ટ્રન ચારતી દુષ્યુ પણની સંત્રયાં-મહ્યોની તિચિસોએ બોાઈ નવરીયાં ઉત્ત્વાનાર પ્રસ્ત્રે ચાપે ચીગતો હસાનકોન મહેલાને હાંનેન ત્યવસ્ત્રમાં હાત્યર રહેલા આપગલ, આપ્યું તે ચારે તેઓ આપનો આલાદ ચાને છે પણ તે તિચિરોએ તેઓ કોર્મા આવી શકે તેન નથી પાટે લિસ્ટ્રીય છે. આ ઉત્સ્તારના ચન બધી રીટે સફળ થાય એપ મેંચે —‱ સ્થાળકોન મોદીતા. લાઇશ સ્વાન્ટેસ, સ્થાઇશ્વાર પ્રતિનિધી.

વાઈસ માન્સેસરે અને ૧૯૧૭ ના માર્ચની ૭–૮ મો તકરીએ હવોઈમાં હરાતા ચીવરોપિયમ સારસ્વતરસ પ્રસને શ્રી હી. એંગ પહેલ (દર્શન–સાઅના વ્યાપ્યાતા અને હવાવિસામના તિયોગ્યક) અને શ્રો એ. પી. કાકર (ઓસિએન્ટલ ઇન્સ્ટીડ્યુડના છપાયોલા શ્ર શ્રવિભાગના સુપરિ-દેન્ટન)ને પ્રતિનિધિ તર્મિક કોલામાં પ્રધાન લતાનો છે.

—રજસાર મહારાજા સવાછરાવ યુનિવસિંદી, વોાસ

યોપશોડિઅન શાસ્ત્રાસભ મહેદાસભાં હાજરી આપવાના તમારા માધાનુ આમગણ માટે પ્લેપર, કુ વધુ આપારારી છુ પરાકુ પતિસાર્ધ હાજરી આપ્યાને મારા સાનુ ગહારની પરિસ્થિતિઓ હાજરીને મહારાય જનાવી રહી છે એ માટે મને લક્ષ્ટે ખેદ શાય છે. હુ વધી રીતે પરિસ્થતી અપન્ય સમર્જ છું અને સમ્પ્રપણે હાંગતા કેમ્પ્યું છુ

—એમં. એન શ્રીનિવાસ,

માં. મહારાજ સવાજરાવ યુનિવર્સિંદી ઑફ જોદા, સેલ્યોલોજ અને ફેક્ક્દી ઑફ આર્ટસ વિભાગ

પૂજ્યમાં વગેલિજન્યાછ મહારાજ સમસ્ત ગ્રંજરાતનું મીરવ છે, જેટકું જ નહીં પણ સારતનું જાણ છે. માત્રી પતિ અને પંચિત્ર વિજિતિના ગ્રાનમાં મહેલ્લવની એ મોજના પ્રસ્થાર્થ આવી છે તેં સર્વેચા શિંધિ છે. પ્રેટાલ વર્ષો પહેલા પાડ્યુમાં જીતવાયેલ દેશ આરત્વાસન તેમાં આ અલિતન હેમ્પ્યડાયાપેના સારત્યાસન સર્વને ડેરબુલ આપનાંગો અનમેં એ વિશે હતા નથી. ગ્રંજરાતની અસ્તિતાને વેગ આપનાંશ આ મહેલ્લવની વેચનના માટે સંપિતિ ધનવારને પાત્ર છે.

આ સમારબ સર્વથા સફળ થાય એવી પ્રતુ પ્રતિ પ્રાર્થના છે.

—ગાર્વિદલાલ હરગાવિદદાસ, ગારિએન્ટલ ઇન્સીટલ્ડ ગ્રિસ્ટર, વડેક્સ

પીકેરમંત્રમાં જ પત્ને ગુજરાતમાં સર્જુ તેમ જ પ્રાપ્ત હતામાં સખ્યાત પ અપ્તિમ મંત્રેયન દામ ડાબ્લોની પ્રદાસ મામી 'ટૂપોની સવવ'નું નિકદ માત્ર સરકાર સાહિતરવાપી ઉપપ્રાપાછ પૈત્રોનિજયુદના સ્થાતના સ્કળા પ્રાપ્ત દિવ્યો કૃ હાળની આપી વારો નથી તે બદ્ય દિવ્યો, પુ 'પ્યુ તે અમેતો વિપત્રમાના આવેલેનાબની હું અન્ય હાળની આપીય. સારવતસત્ર મહોત્સવની સફળતા તેમના પ્રેયરથ લાદ્દમાના અધ્યવન, અધ્યાપન, સંશોધન અને પ્રયારની વ્યવસ્થાને જીવત વ્યવસ્થામાં રહેશી છે

ફ મકેલ્સવની સફળતા કમ્યુ છ

—હરિયસાદ છ. મહેતા, વડેારા. — અમ્માર્થ મહિતા, વડેારા.

પ્રિન્સિયાલ, જેરાડા સંસ્કૃત મહાવિદ્યાલય, એમ એક સુનિવર્સિટી ऑફ બરાેડા. * *

भापना तर्श्वमी महोत्त्वस्था बाग वेदा गानेना नियमकु जाद हू जापनी जाजारी छु न्यायायाँ भीमहोत्तिक्य केपांच्यानु प्रकार परित्र जाने सरियुक्त जाह्युनी सावित्रकारी विशेवसारी का हेम्पराः मार्चेद रमस्कु आये तेरा ढला तेरानी जायांकि जाणांच्या राजनांचीनी केदा राम, तेरानी दिस्तानुं मैच्य स्वर्थकन बाय कही तेरानी जुकुतका प्रेस्कुताली जोने जीवा आवश के वादी सावार्यक्री मीम्य स्वर्थकन बाय कही तेरानी चुकुतका प्रेस्कुताली जोने जीवा आवश केदा वादी सावार्यक्री मीमोरिकन्य सारस्कातल महोत्वानी चुकुते प्रकार चेन्यु हु जावी न कावा बारे हाथा यातु हु

> —હરિવર્ક્સભ ભાષાણી, મુંબર્ધ, પ્રાપ્યા ભારતીય વિદ્યાલયત

. જેમોટ્રી વિલિધ પ્રકારની સાક્ષિતિક રોવાળી એ લગ્યના શેરામાં વ્યાવસાર્થ પાક ચિન્કો પાત્રપા છે, તે કોળ્યાતના પ્રમુખ સમ્બારની વાત મહાસાયમાં વિદાન જીનિ શ્રીન્કોલિયનના ચાનમાં મોળના યાદ્રપાટ સારત્સ પ્રમુખ આવવાને તતાક સામાણ આપણ માત્ર અને તે માટે ગામારા થાતું છું. આ પ્રસાર-સાર્યા અહિતને સ્થારી શાધાસની અંતર્ધની સાર્યા કેમ્યુ સાથ્ય સ્થિત કર્યો છે તેમારો સાથી અને તમારા સાથી-વાર્ષ માથે તમારે ક્રામાં લખ્ય તેમ સામની લખ્ય સાથ્યા કેમ્યુ હ

મલી આશાઓ અને માયાળુ વિન તિએ સાથે કું છું આપના

—स्थारः स्थितः होडेस्, व्यास्त्रः स्थापिकः स्थापस्यः स्थापस्यः स्थापस्यः स्थापस्यः

. જીવનાતના મહાવિદ્વાન ગોપશોનિયનમાં ગાનમાં હમે જે સારભાગાળની નિયોખના કરી રહ્યા છે. તે પ્રેશને ભાગવાને તેને ગામાણુ ભાગ તેમું ભાગે કું ગામ હું ભાગોની ખૂખ ભાગદારી છું આ સારતી શ્રેસ સ્થવના પ્રભુ છું આ તમા પ્રદાને કોઈ લેખ તામારમાં લાગ લેવાની વિન્દર્ભ વિદેશ મારે પ્રભુ હનું ભોગે કે, તેમાંત સ્થોનિયનના કોળી અને છળન નિરા ભાગતા તેમાં મળે કોઇ લિયમ પરતે સર્વો મેલો કોઇ લેખ હાલ તાને પારી પાતી તેમાન નથી.

_થી કે ગાઉ, બાંધરકર ઐાસ્મિન્ટલ સ્સિર્જ ઇન્સ્ટીડપુડ, યુના

ક્ષ્માઈમાં સને ૧૯૫૩ ના માર્ચ ત્રહિનાની ૭-૮ મેં લારોખે ઉજવાતા ચીપસોનિજય સાસ્વતઘત્ર મહાત્યવર્તા હાજરી આપવાના તથારા માળાસુ આપાંગસુ માટે હુ આપને ગાલારો છું. એ મહાન જેન સાધુને ગારી નામ અંજનિ અર્પવાના આ યાદમાર પ્રસામે હુ હાજર રહી શક્યો. હોત તો મને ખુબ આનંદ યાત, પણ ગારી સામે પહેર્લા હાંચી મને એમ કરતા રોકી રહ્યાં છે

શ્રીમણેલિવ્યના છવાન અને કાર્યો ચાટે સૌવિક લેખો, જેવા વાંચવામાં આવશે, એ સલા-સ્ટરની પોલ્બા કરવાના ત્યારા વિચારને અધિત બ ચાવું શું અતે ગતે શક્ષા નથી રહ્યું, ક્ષી કરિસ્ટાક્ક ભેચાના સ્થાપતિત ફેશન એ ગ્લાંચો અરે તો એન્દર્સન અને સર્યુલના અધ્યવનાયા સફળતા પૂરવાર કરશે વિદ્વાસ્થાની લાધણો અને કાર્યાયાકી સર્યુકાયાં ચલાનાં છે, એની ત્રીય લેતાં અને કાર્ય થાય છે.

મહાતમવની વધી રોતે હ સફળતા ઇચ્છું છુ.

--એસ. એમ. કત્રે, ડેક્કન **કાવે**જ દિરેક્ટર, પૂના.

યા સારસ્વત સત્ર મહેતરાને ગારી ગુભેચ્છાંગા પાદનું છુ સમ્પણ તાનગોડિ વખતે હું હોજર રહી શક્તા નથી એનું મને ૬ પા છે.

— **લક્ષિતચ'ફ ક્લાલ**, જિલ્લા કલેક્ટર, વડેકરા

મ્યાપ હોંગે મહેરાયાયા શીધકોલિબ્લાઇ અસ્પતાસન રૂપે માં ચહેતલબારી વેલબા કરી તૈન-તૈનેતર સમાજ ઉપર ઉપકાર કર્યો છે શાસ્ત્રોઓ વેલ માને તૈયાંથી વળી ગઢાન પુરુષના છબન અને શાહિતપી ત્રામી મ્યાપતા પ્રસ્તુ કોક્કિયાર જ બને છે માં કાર્યામાં માનલાદથી મહિત શઈ પરસાયમાં મ્યાપણે પૂર્વ કોતરીત પૂર્વ ગયા છોએ. માત્રા પ્રસ્ત્રો માનાસને નિજયારાયા બાકલ રાખનારા ગતે તો પ્રસંત્રી પહાન સિંહ લેમાલ અને સમાજ છેટા ઉપકાર કર્યો ગણાવ

—દાશાભાઇ અ મહેતા, વડાણ

ગ્રીમક્ જ્યાંપ્યાય મંત્રોપિલન્યાઝ સત્યાય તાનનો અખૂદ અને વિદ્યુત હતો. વારસાવ્ય પિપાસમાં માટે મુક્ત ત્રવા છે, તેનીથી સત્યવસાનની પરોધા તે. તેર મહાવ, તે દારા તે હારતું નવાવાન કરાય અને કરાવાય તેવી કાઈ સચીન પેલન્યા વિચારય એ બસી છે.

વેંગાળીનું રમરશુ ક્રેન, ક્રેગેતર વર્ગમાં વિસ્ત્યાયો ખતે તે માટે ચીનશાહિતન્યછ અધ્યાપન મંદિર ધ્યાર વિલ્વિશાધ્ય માટે ક્રાંક્ષ યોકબ્લાનો વિચાર લખ્યે તો તે સુધ્યેમ છે, આ યોકબના સમાજ પાસે તન, યન, હતનો બોગ તેમજ કેટલાક પ્રખર વિદ્યાત અને પાતિનામાં માટે આ છવન સત્યર્પણ તૈયારીય / ભ્યોપણ કરાપાયા ભ્યોપો પાસેનાનો ક્યાર લાગે તે ત્યાલાનિક શે. દરમિયાન તેમણે (શ્રીપણ દર્શપાયા પ્રેમોલિંગલ્ટલ) પિસ્ત્રેશી વાન્ટી—વ્યવસ્થાનું ચાલવાત સ્થાનાનો દેશ પેર થાય તે માટે સ્માર પાસિક અત્ર રંગાસિક પ્રદિશ્રિની યોકબના વિચારય તો પણ કાઈ ગારે સાથુ ચાલ થયાને સાનેલ અનુક્ષત્રારી.

શાસનદેવ સંજની વિજયી પૂર્ણકૃતિમાં અને ઉદ્દેશવેલ શાવનાઓની પરિપૂર્ણનામાં સહાયક ખેતે એજ અત્પર્ધતા

-લાલચંદ નંદલાલ, વડેહરા કાંડીયાળ.



૧ ઉષાધ્યાયછ ભનવાનના પુષ્પાપ્રસાગ નિમિત્તે ૩૦ વરસથી ક્રમોર્ડ જૈનસવમા પહેલા કરીશના અન્ત આવ્યા પછી શ્રીવિજયદેવપુર જૈનસવાના જીપામ્યલ્કીલમા અને પદ્મોની કાળરી વચ્ચે ત્રેદાવાએક પ્રવચન અને આન્દ્ર મિક્ષન

દર્ભાવતીમાં નવા તૈયાર ધએલો આરમનો



ન્યાર્યવશાન્દ ન્યાયાસાર્ય મહાપાધ્યાય ત્રીમદ ૧૦૮ વશાવિજવજી મહારાજના —: સમાધિસ્તૃપ:—

દિવ્યર હ કે, ઋત શેકાવાને કરવી વહેરવનમાં ફ હામર રહી સ્ટાંગ નહિ

ઉપય પ્રેશિક દર્શાવતી નવરીનું એવું હાલ્યાગ છે કે, લાગાએ શાકાયલાઈ ઉપરાંત એક મડાત ત્વેશ મને શાતની વિવેશ શામા-પ્રશામાઓને રાર્જાત શેમ્યામાય અમ્બાદ પ્રયોગ સ્પેરિયા સ્થાપાલ ઉદાસ્પત્તિ શાહેરુઓ પૈતાના ક્રિકેલ્સર્યનું મુખ્યત્વે ગ્લાવળ જ્લાવતાનું તેને શરૂપાન મધ્યું!

માંજનો પ્રતાગ કોમોર્કના સાંસક્તરજીવનમાં એક ચહાપ્રસાગ કે ધન્ય પ્રસાચ છે; અને આટે જ મે 14ને કેમરિયર્ડિયાં કોરણાવા તો ધર્માનુરાથી લાઈ-જાહેનો તાર્યની મહિનદલનાં અધિકારી કે

મ માં ત્રા મા માના કારવી રહ્યું મળવાઈ સે મે માર્થ પૂનવાદ ન્યાયામાં છે હોય મારામાં મારામાં માર્ચ મેહાં સંગ્રેમ પહિલાન ચાર મે માટે તેમેલ્ટીના માર્ચિક પ્રયોની કાર્ય મેલાવામાં માંદીતે તેમા પ્રાાયન વર્ષેન્યો માં નાબાલ થઈ છે છે જેથી, માં 'કુલ દિ'ના મેલે મેલેલિયામાં મારામાં મારામાં મારામાં મારામાં મારામાં મારામાં મારામાં મારામાં ત્રે મેલેલિયામાં મારામાં ત્રે મોલિયામાં મારામાં મારામામાં મારામાં મારામામા મારામા મારામામાં મારામા મારામા મારામા મારામા મારામા મારામા મારામા

જેઓ અનન પ્રતિસાશિત અને અર્થાતિ છાનાસાશી સુખ્યાનની તેન અને તૈયેન નાનારીને ૧ જ્યો છે અને એપની વિશ્વતિસ્થાની તેખ ત્રિણોએ હેલાંના છંગ્લ આપ્યાનની છે, તેના દ્વારાનના * એપના 'કહિતલ હર્યોત' ફેર્મ્યાદાસાઈછ કરવા પુત્રલાલા ગ્રા પ્રસ્તે ગાળણને હરેને ધર્મારિન્યુન ત્રે પોલિયાલિક્ષામ થયાની પ્રેરણા ગ્રાપેક ત્રેલ પ્રદર્શના !

અલું માં માટે કર્યા કે કર્યા છે.

-લાઈશક પ્રકાતી ચેલા

માં વેશેલિયલા ગાહારાજાનું આવ્યું કારણ કહે તે માટે હૈંગ તહે તે કારણી કરી હે તે માટે (કેર બન્યાએ પાત જ છે. કારણ, લીકોરોલિયલા એવા ચાલત હાથને સાત્ર જે ત્યાર પણ કોર્ટ (તે એકીંદ્ર મંદિત સ્થાપન કરી આવ તે સહારાત્તું શૈદ્યા અને આત્ર આ કરી કહો છે કેપ પણ કાર્યની સાંચ્યા અને સાર આપે

--ગ્રા. માહિકસાય, નોકના

વૈધીનિજન્ મારત્વાલાની ઉભવાનું સમીન રીતે ઉજલ્લા ને પરિભૃતે તેન જ જ જે મહિલ વિશ્વાર ને જેન જેનેજ સમાનનાં ઉપરેખી તેનું પ્રયતન કરે તેન કર્યા ; દરતા ત્રમાં મહતા પાસે હો.

-- મુલાબચાલાઇ, તમે જેવા માન મ

कारिशाह क्षोर्स खोले जानजे क्रेप समावर्त केंद्र कारत देश्रत रहार रहे हैं है. रशाहन संग्र सामे तीवर क्षेप समावर्त प्रमार्थी करेंद्र है है है है करार

—सक्षात्र क्षानद्यात केल कार्यक

પૂત્ર્ય ઉપાધ્યાવછ ચહારાજથીના સુરુમદિરની પ્રતિષા માટે ગા સભા વ્યતે હું સંપૂર્ણ વ્યાન'દ વ્યક્ત કરીએ હીએ.

સારસ્વતસત્ર મહેત્સવની સપૂર્ણ સફળતા આ સલા અને અમે ઇચ્છીએ છીએ.

—વલ્લભદાસ ત્રિશુવનદાસ, યંત્રી આત્માનંદ સક્ષા, લાવનગર.

ગા પરેશાના સરમાપા પૂનપાદ શાહાદિશાસ જૈનાભાર્ય શ્રીનિજયદર્મસરીયરછ જ્યાંપાર પ્રીમણેલિજાદારોના સ્કારાય પોહિલ અને સુધાના અનુરાયી હતા. તેઓલીએ તર્મા તના સરયાગો સ્થાપી છે તમે તમે પીસેશેલિજાદાના તારતે શ્રી સાથા અવનાવેલ છે. અને તેન સ્થાનની સદય સારે યાદ સાપી ચીલુપાંચાલજીની સાદી સીધી છે.

આપ આ શાનના સર્વવાહકેર આ પરલ જ્વોતિવ⁸રનું શાહિલ જનતાને ઉપયોગી ચાય એમ પૂરતા પ્રમાશુમાં પ્રસિદ્ધ કરવા પ્રયત્નશીલ બનશે તેવી આશા રા^ખીએ છીએ.

> —**ભાઇય દભાઇ અમરચંદ શાહ** મંત્રી—ચરોવિલવ જૈવ પ્રન્યમાળા ભાવનગર

આપે શીયરોાજિજયછ મહારાજનાં સમાજને ગ્રા<u>થસ</u>-તાવ્યં દર્શન કરાવ્યાં છે.

—્યુલાભ્ય'દ લલ્કુભાઈ, (મહેદય પ્રેષ્ઠ) બાવનગર

પૂન્મ પરસ્કિપારી કે યા ચીચકોનિજન્યા ચાહારાત્વીના સમાપિરચાને દ્વાર્યાલનો સ્વાપ્ત માર્ગ કે તેને પ્રદીભ સાથે સારબાદાત્વીના મહાના પ્રવાર્થ સાથી કે તે પદ્મું જ પ્રસાનીન કે, આ માર્ગ કે સામ એ કે ટ્રોલિની પરના સ્વાપ્ત સામાર્થ સાથી એ કે ટ્રોલિની પરના સ્વાપ્ત સામ સામાર્થ સામાર્થ એ કેટ્રોલિની પરના સાથી પ્રાપ્ત સામાર્થ સામાર્થ સામાર્થ કે તેને તે સાથા પ્રદેશની તે તે તે સામાર્થ સામાર્

—अभस्यहे भावछ शाह, शावनगर

પૂ. ઉપાધ્યાયછ શ્રીયસીવિજવજ મહારાજ્ગ્રીની સાહિત જ્યારના મજબની હતી એ સાહિત સર્જનથી જનતાતે ઘણા ઉપકાર થયા છે.

સત્ર ઉજવવાના પ્રયત્ન પ્રશ્નંત્રનીય છે. અને અનુગોહનીય છે. એથી સમિતિને મારા હાર્દિકે અસિનંદન પાઠવું છું

—સામચંદ હી. શાહ, પાલીતાણા

જયત આપ્યું જ્યારે હિસાના પાવે આંધલા દોટ સર્જી રહ્યું છે ત્યારે જેન ધર્મે પ્રબોધેલો અહિંસાના માર્ગ જ જગતમાં સાંતિ સ્થાપી આપણાને ગાનન કરવાણના પૃથે લઈ જશે એમ મને લાગે છે. શ્રીપક્ષા-વિજયછ મહારાજગીના ગ્રેશોનું અધ્યયન કરી શેહ આવલના કરવામાં આપણે ક્રેપીબન શર્મશે તેર મતે ખારી છે કે આપણા ભાવિ ઉજળ હતો. જેનલો લગીરય કાર્ય કર્યું છે અને તે શદા અગર રહેતે.

ગાવા ગ્રાનસત્રેર સમાજમાં રોસ્કારિતા કેવાવવામાં તથા સાદિત્ય પ્રત્યે **લે**ક્ષેત્રી અધિરુચિ કેળવવામાં પૂર્વલ મદદગાર **શર્ક શકે છે.** તમારો આ પ્રવાસ રહત અને અધિનાંકનને પાત્ર છે. આ સત્ર સફળ ઘાય વેવી મારી રાબેચ્છા છે.

—**સાગીવાલ મમનવાલ.** (મદાવરમોમીલ વાળા) લાવનગર.

શ્રીપક્ષાવિજય સાસ્વતંત્રવતી સંપૂર્ણ રફળતા કૃષ્ટિલું છું આ પ્રસંગે ભાગ લેતાર આપ સર્વેતે ધૈનાવાત ઘરે છે

_શિવલાલ તેમચંદ્ર. માત્રી—મકતાલાઈ જૈન હાનમદિર, પાટશ.

શ્રીયો!વિજ્યજી સારસ્વલસ્ત્ર મહોતરાવ ખૂબ સારી રીતે ઉજ્બવાય તેવી સારી મહિલાયા. -કરવરભાઇ લાલભાઈ, અમદાવાદ,

માપ બધા ગ**ા**ત્રે ત્યાં પ્ર_ાગપાદ ગીરકોલિંગ્યાછ ચહારાજન સારત્વત સત્ર ઉજવે છે. ભારી દર્મ ચાય છે મારી કોલેજ ગાલ છે એટલે હું ત્યા પ્રત્યક્ષ હાજર તથી રહી શકતો તે જરૂર ઘમા કરશો.

પૂરુપપાદ ઉપાધ્યાયભના નાખને શેલે એલ જ તમે સત્ર ઉજવીય લેલ સાનુ છુ, તથને ખળર ફરી જ કે તેએ એક મહાન આધ્યાત્મિક પ્રસ્થ હતા તેમના કેક્સ્સે માથાવામાં સ્તરનમાં તેમના અંતરના વિમારો માં થયા છે. 'પુરુષાંત્રે ધુસાધુસ સચી' એ તેમને વાકળ ચાદ સખી વ્યર્થ માડબર ન કરતા આત્મભાવને भेषक अंग के रीते तकारी मेळला तमे करी क्षे आप क्लोर वर्षमा क्लेश के पर परामां विश्वत्यासमानी મણી ખાંચી ચાલતી આવે છે. તે આવા નાંચી ચહાવુરમાના જીતલવતે બહાતે કર્ક આઇ! ચાય અને विद्यानी विकासक्रिकेट व्यक्तिर असति क्रिकी बच्ची प्रस्तु हेसाम तो ज्ञा सत्सन करून व्यक्ति हेपारी. તે મહાપુરુષ્ટું સલગ રાહિત પણ આપણે બળી શક્યા નથી એ આપણી ચેટી શરમ છે. છતાં જેટલુ ભળવાયું છે તે સુંદર રીતિ સપાહિત માર્કતે લેક્ક્સોર્ગ ભાળાવાં તૈયાર કરીએ તે તે પાસુ છે. આપતા સમાર ભ પરંગ થાય અને ઉપાંચાયછની લહિત આપણને પ્રેસ્યા ગામે એ જ ^{હિ}છા.

—६', वेबस्तास छवसक, भगशवाह,

भिश्वादीने बांधि तेकां खाग बेचा जापी ग्रहुं तेम नथी आहे दिवलीर धुं ज्ञानवादिधि भी १००८ भौगिकपण अक्षताल केवा व्यापस्ता अक्शतना विद्यासस्या संदान क्योतिर्वरने भारे ज्याना प्रशरनो धाररवासत्र महोत्सव जाग किल्वा 🖩 ते लड़ वर मेरण हे. महोत्सरमा व्यापने संस्थात भगे जेरी ક્રે પ્રાર્થના કરે છે.

—સત્તર્માણરાવ ભીષરાવ, અમદાવાદ.

સત્ર 8પર પ્લોર્ક ગાનવાના ખેતાલાન હતા પરંતુ હેલ્લા ચાડા દિવસથી પરે સહેર ઇન્ન થઈ છે. તેથી રેવેની પ્રવાસ સુરોલ ભાવાનો લગ્ન લાગવાની આવવાનો વિચાર ગય રાખવો પડયો છે. રસરક સ્થા માટે એસર લેખ લગ્નાનો મનોલાન તો છે જ.

સરતો ગહેલન સફત રીતે હસ્તારો એવી આસા રાષ્ટ્રાં હું. ગુખ્યત્વે ગ્રીયગીવિસ્તયન્ટની સાદિત્ય કૃતિઓ સંદેષીંતે પ્રેમિક સ્વામા આવે એ બહુ જરૂરી કાર્ય છે. આ મહેલનસ્થા એ કાર્યના આવે સ્વ ધવા પાયે એવી આસા તામ છે.

ત્યા આવવાથી ઘણા સાહિત્યસિંહ મિત્રાના સભાગમનો લાલ થાય, તે પણ ગુગાવના પડે છે તેથી ખિતતા અતુષતું શું પણ નિરયાળ

—ચુનિસાસ વધ⁰માત શાહ, અમદાવાદ

આપની નિયંત્રણ પનિકા સળી. બીલ્લ વેકાણોને લઇને કુ હાલર સી શક્તો નધી તે માટે દિલારિ શું.

મહેાપાધ્ધમ ગ્રીઓનિંગયળ, એ જૈન સમક્ષ્યત જ નહિ પણ સમસ્ત ભક્ષતના સરફત દિદાનોની હારમાળામાં એક ઉજ્જવળ રતન છે. તેમનું રમસ્યુ તાલુ કરવા માટે આપ જે મહેલ્સવ ઉજવે છે. તે પાસ્ત્રી અને કળાંક નીવાને એમી ગાર્થના કરે છું.

માતું છું કે તમે ઉત્સવ ઉઝવીને જ અઢકી જણા નહિ પણ સારત્વત રમારક કરતા.

—રસિકલાહ પરીખ, ગુજરાત વિદ્યસ્થા નિયામત, અમદાવાદ

ગીપરેતિરિજય સારત્વલાભાગો લાગ લેવા માટેલુ જાપનું નિયત્રક્ષુ જાતું કેઠ તાનવાદર્પિની સારત્વેનાની વિવિધ અનેશનું અના રસ્તાનું વાળાનું છે એવા તાનવરાની લાગ રહેવાની લોધા દો ઘણે છે પણ માંભી આડે આવી છે. જે તામારંગનાની રસાને આપોર્વી વિદ્યાનો લાગ લેવા આવવાના હોય દો સ્તાને પણ નિયા રહે જ નહીં. હતાં લાગા હાર્યુંથી અપાર્થનો સ્થાનાલ વર્ષ્યું હું.

—થરાવંદ ધા. શકલ, મા કુજરાત વિદાસભા

ગ્રીમરોદિલન્ય સારવતસાત્ર ગ્રેષ્ટર્ન હૈન સમાગની એક સહાત વિલ્કૃતિ વધુ પ્રકારિત કરી રહ્યા ' કેમ એ માટે અસિનંદનને પાત્ર હો. સતના સર્વાંકાંત્રિની નાગાવીદ લોકોને એની સફળતામાં શ્રોક રહેતી નથી. આપૈરાયણ હૈન સ્થાત્રભી જાવા હાત્મસ્ત્રો હૈયોમાં ગયેલી ગયેલ વ્યવાદને ઉદ્યારો

> —માલાભાઇ વીરચંદ દેસાઈ (ઝવિમખ્યુ) —વૈતલાલ દીપચંદ દેસાઈ —મેળાલાલ મેમચંદ શાહ

લીપોરોપિઝળ સારત્વતારા ચહેતાલ ત્રારૂએ હાબર રહેવાઇ નિયાંત્રણ અન્તું વ્યાગાર, રાજરાતના ત્રવસાચીડપા તમેતિલેવામાંના એક ત્યોતિલેવેને અંતર્જાલ આપવાને તાર સળી હોત તેર ખૂબ જ આતંક વાત. પરંતુ કેટલાક અનિવાર્ય કારણોને લઈને હાબર નવી સ્ત્રી રકતો તો ગ્રાફ કરશે. 'કુર્યોહી સરસ્વતી' એ શીર્ષક શ્રીયશેનિયનજી ચઢારાજ પર એક લેખ તૈયાર કર્યો છે. શોનોરસન સત્રની સપૂર્વ સકળતા ઇચ્છ છ

—ધીરુપલાલ ધનજભાઈ શાહ, અમદાવાદ

સારસ્તરકરની સફળતા કરવું. શું. ચીંગફ સોક્લિન્યકાએ ગામણા માટે સાહિત ને તાનેનો અન્દ્રન વાસો સફનો છે. આપણે ભૂધોએ એ લાસાને અન્દ્રણ સ્વાતે અને એ દીપાવવાનો પ્રયાસ કરવાને છે. મોક્રીની જનતાએ અને ત્રી સહે સીન્દ્રોલિન્યનું સ્વારક રચી પોતાની રોલા વધારી છે

—પી. કે. શાહ, અમદાવાદ

પ્રાચીન કાળના વાસમો આ વતા તમે કહ્યોઇ સુકામે વોક્સો છે. વહની કાર્યક્રિકિ તે થાય કે ન મામ પક્ષ સાનવાની સિંહિ તે કલાર સાથ

ઉ• શૈયનોલિજપજી મહારાજ જૈન શાસનના પૂ ગ્રા. શૌ હરિલાસરિ, પૂ. સિલસેન ક્રિવાકસ્કરિ, ક્રિકાસ સર્વેદ શે ક્રેમવડસરિની સાફક ગેલા સ્વલ હળ

કાળની શાસનસોલા અને ત્રલકમાં દેવના વપૂર્વ કર્યા છે

—૫'૦ મફતલાલ ઝવેરચ'દ, તત્રી 'શિષ્મપ્રકાશ', અમદાવાદ

ખોરાપાયલ્ક કોમ્ફેકિંગલ્કને ટેલની દૃત્તિન ચારાત વેશના મમાધાનનો લાગ તેને તેમન જૈતાને આપી કે તે કપાકાનો લાલો વાળ કામ તેમ તેથી, ખ્યા તેમની રહી તાક રહે તે માટે ખાતા મહેતાનો ક્રમ્પના કેમ્પ્લીય કે અને તે કાર્ય કપાકી લેવા માટે સીરિકીર્કાન્ય સારતાસન સીરીત ધનવાકને પાત્ર કે, આ ખોતાનાની કપ્તાથી કપાને માટે સામાની નીરતે સે ભવા સાથે વિદ્યા સીરીતા પ્રમાશાના

પરમુખ્ય છે. વોદ્યોનિયન્થ પ્રદાશન સાથેતાના ભાગને ફાત તેઓ વર્દન પાંતું સમસ્ત કેમ્પાલી લાધો મેહનાર જનતા ગાણી છે ડેવણે તે કુલ્યતી લાધાના સાધ્ય વ્યારપ્ત દેહના. એટલી સંધ, તોના માહનાર વ્યાર હો, હતી વિસ્તેષ લાધાની વ્યાપણને પીર્ફ્ય છે કે તેની એટલી પ્રદેશ સંધિ તેની ઓછી છે અને સે રિંદી આપણે વ્યાપણ વ્યાપ્ત વિદ્યા વ્યાપ્ત સ્થાપ અને સ્થાપને

તેઓથી હો અમગણીતિ લાયરી આપવા ઉત્તર જે ઉપકાર કર્યો છે, હતી લાગાય તેવો નથી જ.

તેવની પૂર્વાસા, સ્તરાનો તથા થશે કાઇ પણ એન્સિસને વાંચવાતુ વન થાય અને સાલસ રીતે જેન 18 નાતું મહત્ત્વ સ્થાબલ તેવા ⊞

"મીમરોકિન્દ્રય સારસ્તારાવ 'બી સ મુર્ક પણે કરેલે. ઈંગ્રે છે —મન્દ્રિતાલાલ લાગ્રભાઇ પરીખ, અમદાવાદ ધીમરો(વિજયુછ મુન્ન તા રમારકની સ્થાપનાનો ઉપક્રય અને તે પ્રત્ય મે વિદ્વાન સમેલન પ્રેગનવાના જે પ્રસાય આપે મુખ્યો છે તે અણી આનાદ

—પ્રા૦ કેશવલાલ એચ. કામકાર, ચાલુંદ

પુત્ત આવાર થી વિત્વધાતાસદીયરછ તથા યુ આ ચીકિજવાર્વાદીયરછ તેમજ યુ શિવર ક્ષેત્રશીવિજયછ, આપ સૌના પૂળ ઉત્સહ અને વ્યવસ્થ સહેતરી! આ પ્રસાર ઉપરિયત થયા ક્ષેત્ર તે માટે આપ શીને કુળકારબાદી આધું શું અને આ ચહેતરાહની સફળતા ઈમ્બ્રુ શું.

મણિલાલ ન. દાસી, ગાણંદ

ટાનમહેલ્સન નિર્વિધ પાર પાલા સાથે ટાતોશીત માટે કઈકે જ્યૂર્યતા હરયન ઘાય કે જેવી આપણીએ લીધેલ કાર્ય ખૂન ખૂન સફળતામાં પરિસાળ પાયે તેવા સાથ^{્ય} ચિંતન સાટે ટાસનીને પ્રતે પ્રાર્થના સર્ક પ્ર

—૫૦ છળીલદાસ કેસરીચંદ સંઘવી, ખંલાત

મા કાર્યમાં મારી શહેતુવર્તિ છે અને સફળતા ઇંગ્લું શું આપ આવા ધર્યના કામકાં હમેશાં બહુત રહી આવા મકોલ્સમાં કમનો અંત્રી સારી હાર્તિક શાવતા છે. આપ સર્વને પશ ચરા અને ધર્મમાં આદ્મા વધા એવા ગુરુપ્યાર્થી વિસ્તુ શું.

—નટવરલાલ સી. કલાલા ભરય.

યીમણેવિજય્જ સાસ્વતાલન રૂપે આપે પેલ્ટેલો મહત્ત્વન સાવ્ય લાગો. એવી પ્રકૃતે પ્રાર્થના કર્યું કું. એ નિષ્કિતે ગુજરાતનું પાડિત્ય એક પેડા પ્રવાદમાં વહેતુ સાપ, ગળીર સાર, વેગવંત શાપ અને સારોદર નવજ્યન પોલે એક કલ્યું કું.

—પ્રા. વિષ્યુપસાદ ત્રિવેદી, સુરત

વિદ્ભાગના દર્શનનો લાલ ખોલો અને તૈમધારી પરાશેષકાર સાહિતનારણ ઉપાપાય પ્રોમણેનિયના છત્રન મિંગે તથા ગ્રેમના પ્રાપ્તીશ અહિંગ, પ્રાપ્તાદ એરે મહાસ્તિદીસ પત્ની વિચેનો ત્રોસભાવાની તક કામાર્થી ગે હાલને અનુસિકર છે, છતા નિરૂપાયે દ્વાર્થી જ લકેશ પાક્ષીને સદીય માનવા પરે છે.

આપની સાન્યવસાત -મહેલવા સફળ થયે ગોમી રાકા નથી. જવાવને એ આપણા વધતું કંગે, સાની વિચંહાનિ એ પ્રકારણી કંગે તો વ્યક્તિ વ્યક્તિના તેમજ પ્રત્ય પ્રત્યના જીવન વ્યવસાર સાચા હિલેધી અદિસાને ગ્રનુસરનારા કરવા જ પડશે, ગ્રહમાતીહાને શમાવનારી સ્વાદાહની દષ્ટિ પણ ગ્રપનાવવી જ પડશે. આપના સમારંબની સાચી સહળતા ગે પરંચ ધ્યેવની સિદિયાં છે.

—માહનલાલ પાર્વાદીશંકર દવે, સુરત

ધાનસભા (મોગ્મે લેટરલેડીય અંદોત્મની) ગાલું છે એક્ક્રો ચાર્લા રહ્યા તથે તે માટે દિલ્હીન ધું જિલાના તેમ અને હેમેદાર સુક્ષરોય જેંગાં હેમ ધર્મના અભાવાર્યા વધ્યા સ્થા લઈ રહ્યા છે અને જેંગેલી વિદ્ધા અન્યાનોટ છે તેંગાં એક સાથે મહેલાવ માટે તેમાં લગ્ન છે તે ભણી ભાગદ ધ્યા છે ભાગ પ્રસ્તરે પહેલાયોના થો શહેલાના કર્યાના અન્યાના માટે કર્કક રાગતલાક કાર્યો હાઇ શ્રેપર લેવલ અને તે ગાલું રહે તે ગાંટે કર્કક લેક્સના કરવામાં ભાગે તો ફળલવી ગાંધે અને ભાગી કર્કક વેક્યન પછે એને આહ્યા સાથે-

—ક્ષેપ્રાદ્માલ ૭૦ સુતસ્થિ, (વડેક્સનાળા) સુ ૧૯

મરાવિજમ સારસ્વતસન મહોતરાવતી જારે સફળતા ઈચ્છીએ છીએ

શેમસો(પિઝન્ડઝ) જેન સાહિતના સમ⁷નમાં ત્રોડો ફાયા ચા^{ર્યો} છે તેથી **ચાપણે લા**રે કરણે જન્મા છોએ, તેમણે કરેલી જેને સાહિતની અદિતામ તેલા ચાપણે તે કેલળ ચાલા ઉત્તરો પોઝવાની રેજ પાડે છે પણ આપણા ફુળાપી ઇફેકને પહોંચલ માટે એક સ્થાયી ગેલન્લા પાટે ગાંધ કરે છે

—ચહાવીર જેન વિશાસય, મુનર્ધ

आपने। सतत परिश्रम ज्ञानिनन्तिक क्षे यहानिकपक्ष अक्षरावन्ती स्रवित्यस्थायी परिणित छे. — न्यासराय ग्रेसी अभी

અનિવાર કાલ્યું છે એક્સે આપના લાવલીના નિયત્રવર્ણને શાન આપી વહતો નધી મને જફર માક કરશે.

હારાત પોલિયનજી એક બહુન રિલીત છે. હું તો એમનો પાલ જગ્યારી છું. તામક ઉપારવાદિ, ચિતિસ્તારિ, હિલ્લામાર્ય અને બેલ્લાકારિ પછી નાજ દાવી હોય તો તેમાન જિલ્લા કરે છે. આદ તો ચિતિસ્તારિ, હિલ્લામાર્ય અને બેલ્લાકારે છે કારણ કે હી દિલ્લા કૃત્તિએ કોન્મને અંદિ નિયત્તે આદિ . ખેતાને એના લાઈ પણ છે એટલી કોર્કિટી પણ કારણાં કરેવા લાઈ જ્યાને અન્યત્વ ન વર્ષ બળ એ પાસ લીકારી રૂપ્યાની પહીં છે એ તો ચાલા લોકોલ્યામાર્થી એમ્લું લાખ એક એક એક્સ્ટે સ્વાર્ય કરી તેમ તેમાં કર્યા કરે તે જેમાં હાર્ડિક અનિતી લાગું છે, આપણી બોલિટ સેલા લાગે છે કે, હવે એમ્લું ત્યાન લે એનો કોર્કિટ બીનો પાસ કે 3 નહિ આદ્ધા હાત તેશા છતાં એમ્લું ચાર્યન, અલ્લવ્ય અને એમનો લેગ્લમ પણ માફાદ તર્યા કે અને એન્સ સ્વાર્ય છે અને તે તે કાર્ય લાગે કરે કર્યા કે અને તે તેમાં પણ સ્વાર્ય છે અને તર્ય કું છે, સારે તે આ લા લાગે લાગ્ય લાગે કે એટલી આદ્ધા લાગ્યાં લગ્ની સફળ પ્રધાર છે અને તર્ય કું કે, સારે તે આ લા લાગે લાગ્ય લાગે કે એટલી આદ્ધા લાગ્યાં લગ્ની સફળ પ્રધાનો …

—વ્યમુલલાલ સવય'ક માંધાણી, સુનર્ધ

મુધુપ્ત સમાવને હેઠાવા માટે ત્રેમણે સારેલા સબ્દલાકાના સખ્ય ત્રાળવા પરંચી કોઈક ધેઠા લઈ, સાપણો સમાવ એધ્યલની ઘેદ નિકાચાળી જણત બની તેમણે અર્વેલી નિધ્ધાલી વિશાળ તત્ત્વદિષ્ટ અપનાવશે તો તે જ પીપણોવિજયા જેવી મહાવિશ્વતિનું છળકોમળતું રસારક ભની રહેશે.

—ડા૦ લગવાનદાસ મનસુખભાઈ મહેતા, મુંબઈ

દું તમાગ સર્વને અભિનંદું છુ અને તમારા પ્રયત્નની ફતેલ ઇચ્છિ છું.

—ગાસ્થનભાઇ વીરચ'ક શાહ, મુંબઇ,

શ્રીયશારિજપછ સારસ્વાતાનની વેજનાને અંતાકરતારી આવાડાટ્ર છું. એક્ઝ થયેલા મહાનુકાથે શ્રીયશ્ પહેલિજપના છવનગરિતને સાચા રુલ્યું જાહાર લાલ્વા સાટે કહિનહ શકે અને તેમનું સાફિત્ય કુંદર તીતે પ્રકારત પામે તથા તેવો વ્યવસ્થિત પ્રયાર યાય તેવી ક્રાઈ સંગીન યોજના અગ્રહમાં હાવશે, ક્રારણ કે તે એપનું સાચું રુપારક છે.

મ્યા સક્ષાના પ્રેરક ૫૦ ૫૦ માગાર્ય મહારાષ્ટ્ર ચીરિજયધર્મસ્ટ ચરછ તથા કૃતિગજ શ્રીપરી વિજયભ્તે સારી યુના યુના વંદના.

આપના આ પવિત્ર પ્રયાસને સર્વારો સકળતા ઈચ્છ છે.

—ધીરવલાલ ટાકરશી શાહ, મુંબઇ.

ગાપના પ્રયાસો માટે ત્રણી ધું.

શાસનદેવ દર્શાવદીને આ સવધાર્યમાં પૂર્ણ સુવદ આપે.

—મહિલાલ ચાહનલાલ પાદરાકર, મુખ^છ

ફુ વહેતારે ક્રેસ્ત તેત જરૂર આવતા. પરંતુ ક્રોહી શાતિની ઈન્છા ફ્રોલથી કુ અહીં એ-ઝહ્યુ માસ રહેવા માટે આવ્યો છુ અને તરિભાતના કારણે આવી શકતો તથી તથી ચારો ચાદુ છું.

આપના સત્રને ફ પૂર્ણ સફળતા કેમ્યું હું. આપની સત્રિતિનાં પ્રતિક્રિત નામા વાંચી આપના સત્રની સાર્શકતા સાટે રહે ખાતરી છે.

—રમણસાલ વસંતલાલ કેસાઈ, ગોરાવિ

મીપરોહિન્યન્ડના જનન અને જીનકાર્ય વિશે એ શોહીનથી ચાહિતી પ્રાપ્ટ થઈ છે તે ઉપયો લાગે 8 કે, તેઓ સંકુર્વિત ધર્માય અનેકારિયાળા નહીં પરતું વ્યાપક તત્ત્વરહી અનેકારિયાળા હતા. આદા 8 કે, ચેમ્બુ ગીરત વધારા માટે એક્ટ વસ્ત્રેલા વિદ્યાને તેજ દક્ષિકાનું નગરમાં રાખીને પ્રથમો અનેકાર્યનો દરીને રાષ્ટ્રવર્તોના સંગતના ૧૦૦-૭૦૦ વર્ષે શક્ય જનેલા સુંભ કાર્યમાં પેતાનો કાલા માપ્યો

—પ્રસ્કૃદિયાંદ્ર દિવાનછ, મુંત્રઈ

ચાવા પદ્ધક શાળી અને સત વહારવાના ચાર્ગે આપણે સફ રિવર શહિયા હતીંગ તો જ તેમનું મહાતમ આપણે સમાછ હાત્વા છોગે તેમ વસ્તુણ શીચ્યું રશીજિયજીના શાન ચાટે અને ગાતમરિયતા માટે નિધા દેખણે ગેંચા લાગે છે કે, તે એક અભોડ અને ગહિલીય પ્રસ્ત હતા

માલા મદદ પુરુષના ગુણમાનાર્થે આવા સત્રો વારવાર યોજાય એ એક લહાવો છે. અને તેમાં ભાગ લેનારા કરેક જીવ પુરુષવાન ત્રણાય —ન્યમીનકાસ ચિરુલસ્લાસ, જેન સિલંતરાશ સુગઈ

આવા સાસ્થત સંગ્રેપ્સલ નિમિત્તે સુજસ્તના વિદાતોનું એક સગદન સંધ્યય છે એ સાટ સંગ્રાક્ષીને ધન્યવાદ

શ્રીપરોલિજગ્રાએ જેનાસાર્ય છતા વેદા-તનિર્યુવ, વેદા-તાવિવેક સર્વસ્ત વચેરે વૈદિકધર્યના પ્રત્યો લખીતે અમેરસાલ પ્રાસ્ત્રીત કર્યો છે.

ખાસ કરીને જાહુદ સુખરાનના નિદાનોએ એકત કરવા અને સત્રમહેલ્લન ઉચવાની ક્રેરેલી યોજના આદરણીય છે. સમિતિમાં વૈદિકેલને પડિતોને સ્થાન આપી સત્રને વધુ દીષાઓ છે.

--શાસી રેવારા'કર ચેવછ કેલવાડાકર, ગળઇ

નિમંત્રણ માટે તમારા ઉપકાર માનું છું. દિલ્લીર છું કે ભા ગલને હાળર રહી નહિ શકું. તરોરમે પૈજેલા સારવતલાઓ હું શેપૂર્ણ લફાના કબ્લું છું. —ખરચાર્નક કુંવરજી કાપદીચના, યુનક

મ્માપના કાર્યાની જ્યુગેહના કરુ છું જાને ઇન્જું છું કે શાયનદેવ ધર્યની પ્રભાવના સાથે સત્ર પૂર્ણ કરે ——નગીનદાસ કરમચાંદ, ગ્રમાં

લે કેમાં માર્યાના સ્થાવિતા, ગુજરાતના સહાન બ્લેકિલેટ, નાયચિવાદર વહેલાયંથાય ગોમણ રહ્યુનિ ભાગ્ર મહાલાના પુરવલભાનું કરે પૂતન માત્રામાં પુત્રાની શાનિયાદ હિન્નવાદ હાનવાદા હાનવાના કરિસ્તાની ભાગ્યમુપ્તર હાન્યાના માનું હું અને લાસતીએ પ્રાથવેના કરે હું કે પુરવલાના મહેલાં એ અના મીમ-ને જ નહિંપણ હૈંપ હાલતના માનુસાના માટે અનેક મેડીયિલ્લો પ્રથમીય

—માવછ દામછ શાહ વાસુથી પદાશાં હાઈફેલ અધ્યયદ મુંબક

એમાઈ રાતના સભાવારા બાલ્યા અલ્લત ગ્લાનદ થયા છે. જૈન સહિત્ય ગર્ને સસ્ટ્રીના વિકાસ ભને પ્રયાર માટે એના પ્લાસ જરૂર હતી. તેની પૂર્તિ ગાયથીએ કરી તે ળદલ ગાલિનંદન ઘટે.

--માયકલાલ હી. મેદદી, મુબઇ.

શ્રીસાથે ક્ષત્રિત હતાં ઉપાદેવ છે અને તે રોગમ હતું છે. ત્યાં હાત્રવી આપી તાલો તથી માટે દુ:ખ યામ છે, પણ તમારા કાર્યની શહ્યાના હત્યું છું કોઈ રવાળી ચાય અને ઉપાધ્યાયજીના પવલે ચાલનાર હૈનિયોં તસું ચાય તેવા કારણ તો તહું દુર્શિયત સર્શે. નિગધા આવે, આપ્યાનો શવ, ચર્ચાઓ શાવ. તેની તેલ બગજર રખાવ અને ઉપાધ્યાયકનું પ્રકાસમાન કરત તેવાંથી સપૂર્ણ લેખાવ તેની વ્યવસ્થા કરવાની કરફ છે.

—લલ્લુભાઇ કરમય'દ દલાલ, સંબર્ધ

પરમુક્ત શસન ક્રિકેમણિ કરતનીકાંકલણ ગીધાન ગઠામણેવાંપાય ચીમર્ટ યોનિજયછ ધઠારાજ સારેપના ગાસના નવીન લખ થૂમ સંદુષસિની કરવામાં આવેલી રચના નિમિત્ત જાપે જે સમારેલ ચીતના કે તે સમારેલની દીક પ્રકાર સકળતા અને સનાકરળાદી ઇન્જો છે.

તેમના એવા પરમ પ્રસાવક પરમ જુત—સકળ સિદ્ધાંત પારમાંથી, સાહિતના ઉપાસકની સાથે નવ, સ્પાદાદ, સપ્તસંગી એવા તત્વામનના વિષ્ણોને ભારીકાર્કથી પ્રજાનાર, તેમના જેવા ગઢાધરથો બંદ વ્યોઠા થયા હશે.

ગાવા પરંચ રાદુરેલનું સ્ત્ર કેમની ગાંપે પહાન પુરવ સંપાદન રહ્યું કે દ્રવ્યાનુધોમના નિચ્ચાત માગાપા શ્રીસ્ટ્ નિસ્પલસ્ટ સ્ટ્રેનિસ્ટાઝ અને સાહિનપ્રેયી નિદ્યાન શ્રીવદીનિસ્પલ્ય સહક્ષાજ સાહેન આદિની હાલ્વીમાં ગાં સહ કિન્લાય કે તે કરવાલના અહ્યાનક શાય છે.

મીમફ પશાવિત્વજી મહારાજ સાહેપને વિનહિ સાથે લખરતું કે જૈવ હાસનાના હારીર મીમાન મહામહોપાંપાય મીમશેલિત્વજી અહારાજનું સત્ર હિન્દી તેમના જેવા ચાપ લગીરથ પ્રયત્ન કરોક એ જ વ્યતિષ ક્રેમ્પણ છે. છેવડે સત્રની દરેક પ્રકારે સ્કલ્યા ક્રત્યની વિદય છે.

—શંકરલાલ હાલાભાઈ કાપહિયા સંવર્ધ.

પસ્ત્રપુત્રને મહેપાયાથા શ્રીવાદીવિલ્વા મહાસત્ત્રની મૃતિની પ્રતિત, શાસ્ત્રતાકરતું ઉદ્દેશાંદન હ કાર્યમને તેમ જ કે, બાકાબેનના દક્ષિક મહેતલ્વ પ્રકામની આપંત્રસ પરિકાર્યો ગયી છે એ વીચી પરેક્ષ સ્ત્રમ દ થયો છે. ~

ગ્યા પ્રક્ષ પ્રથમે કું હાબર રહી શક્યો હોત તે અને અનહદ આનદ શાત પશુ ધારાધભાની મેક્ક ચાલુ હોવાથી અને ગીળ કાળ પ્રસંગ હોવાથી આવી હકતો નથી આવ્યો હોત તો યૂ આચાર્ય વિશ્વીના દર્શનને શાળ પ્રજા અગત

સાર મહેતસવ આનંદમી ઉજવાય અને સફળતા પાત્રે એવી ચારી અંત.કરણ પૂર્વકની શુક્ષેમ્બ છે. —માણેકલાલ વખારીયા, યુંગઈ એમ એટ એ.

પ્રયાસ ઉત્તમ અને અભિનંદનીય છે.

—ભારતીય સ્વયંસેવક પરિષદ, મુંતક મંત્રી-મોહનવાલ દાષ્ટ્રાંટ ચેહસી

ર્યાંગીના કારણે હું ભાં જાણી રાહ્યો નથી દો હમા કરશે. ઉત્તવને સર્જ પ્રકારનો સ્કૃતાના ઈચ્યું 'કે. 'કુંતને આપાર્ય' ગીનિનવાપ્રાયાસાહિક હેમરું 'કૂ. ગાં. શ્રીનિન્યવર્યપૂરિક્ક જેવા અનાત કાર્યદ્રસ તે હાતી પુરસ્તી સહતરી હોળ ઉત્તવન હાર્યું કહુંત્રમાં પારસુંદ, આજે ત્યારે બ્રોનિકવારને અધ્યાનસાદ વચે સામસામાં યુક છાવવુંટેએ જેની રિચાર્ટ ગરનો કે ત્યારે કરાયાંવાળકની રિચારિયુન દાર જ અધ્યાત્ય તત્ત્વની યુવરત્વતના કરી સ્ટાંગ્રો તેમ છીએ ગ્રેલી વિચારિયુન્હારા જ આપણે સત્યરદાશ તે સત્ય-ચારાયેનાના તેજ પત્રે સફળ પ્રવાસ ખેતી સ્ટાંગ્રે. —વસે તાલાલ સન્તિલાલ કચિર**લા**લ, મુખર્ટ

પરમપુરના મહેલા ધ્યાર ચીમણોનિયાલા મહારાજની વ્યારસની પ્રતિમાની પ્રતિસાના શુક્ષ પ્રસાન ઉપર પ્રમાઈ આવવાની ઇમ્પન હતી પણ સાંભેગા અનુકૂળ નહી કેલાથી વ્યારા શુક્ષ પ્રસામનો લાસ લઈ ક્ષકાય તેમ લાગું નથી,

मा शुक्ष अर्थ शांतिपूर्वं तिविंध्यको पूर्व कार क्रेन धंन्धको छीके

સમાર લખો હાજર રહી લકતો તથી હેવી અને શહું ખિલ ચાવ છે. કેવી જ્યાના કૃતિકહારાનની પતિ સ્થાપના કરવાનું આપ્યકાળીને જ શાંપકે અને ગાવો ગપૂર્વ ગયસર ક્રેક્કિંગર જ ગાવે છે હતી સ્થાપનની સફળતા ઈચ્છું છું ——મુશ્લગંદ વાહીલાલા દેશલતણામ એન્પ્ક્રમન્સ, મુખઈ

પૃત્યપા પ્રદેશપાં મામ ત્રામકોનિલ્ના અલાવના યુનિત નાવળી જૈનસાવાલની કોઈપણ વ્યક્તિ સાગે જ ગામણું હેરે વિદ્યાનો ગાટે તો તેઓની વાકવી અને સાહિત ભાવખોતા સચીડ પુરવારો ત્રના & સાસ્ત્રીના વારપતા અર્વાર્યા હતા હત્યાં કરીવાલ નિરાયલાસ લેલો ચાર ત્યારે પૂછત જયાપાયાલ્ય સંવાલન જે ફરમાને કે તે સર્પમાન્ય રહે કે એના પક્ષાન ઉપાર્થની ગુદેવના સમાપિસ્થાને લખ્ય સંદ્રપત્તિ બ્લાપ તે માણે જ આવાદાવાયક કે અને તેઓ પ્રવિદ્યા સ્થાપે સાંસ્ત્રતા લખ્ય સ્થાપ્ત સ્થાપ્ત સ્થાપ્ત સ્થાપ તે મારે સ્થાપ્ત સ્થાપ્ત સ્થાપ તે મારે સ્થાપ્ત સ્થાપ તે મારે સ્થાપ્ત સ્થાપ તે મારે સ્થાપ્ત સ્થાપ તે મારે સ્થાપ્ત સ્થાપ્ત સ્થાપ તે મારે સ્થાપ્ત સ્થાપ સ્થાપ્ત સ્થાપ સ્ય

—પાતાચંદ રૂપચંદ હવેરી, મુખઈ

પૂ ઉપાધ્યાયભના પ્રગટ તથા જણવટ પુરતકાનો ખૂબ ફેલાવા થાય અને હેંગોલીનું જે સર્ટ્યાંદર પધાર્ચ્યું છે તેમાં હેંગોલીનો કર્યુંન કરી પ્રેસ્સા ગેલવાય, જૈન-જૈનેતર તે લાસ ચેળવે જેંગ ભાવના.

કે ઉપાધાયલનું કરવાદિ તથા તેઓલીની ગા તમરામાં ઓલખ કારલામાં અને જેને તેમજ જૈતનીને પૂ જાપધાયલનો ખ્યાલ ઓક્સ હતા તેને ખ્યાલ કરવામાં ખરે પરિસય હપામી હોય તેને તેના પદ્મ શ્રીપ્રીયુનિજન્જી અહાજ સહિજને કેસી બાય છે

માં પ્રધાન તિર્વિત પાટે પાટે અને શ્વાપતની હાપાની શેવા વર્ધ શકે તે માટે અપાન, પ્રપ્ત ડેલ્પોર્ડ બહાર પડે તથા પૂત્ર ઉપાંચાયાલનું હનાત્વરિત (બધી હાયાનો એવની) બધી બાયાનો પ્રયત માત્ર એજ લાવના

ક્રમાધ્યાયજ શીરગોનિજય અહારાજની સર્તિના પ્રતિકા સક્રોત્સવ કરવા ગાટે લંભા વખતપી આપશ્રીની अदिपर्यं की येक्टना केन कैतेन सर्वंनी क्येन सम्भवन, साहित्यनी दक्षित्र कितान साक्षर काँ मी क्षात सन्भात तेम क धर्मते आधान्य दक्षिणे आणी व्याची व्याची व्यवसर ब्रलीर्ध ते। शीविकयदेवसर सर्व Sand) रही है ने जीन्त्रती विषय के ते आहे त्यांना क्षय कर्तांकी अहेणना धन्यवाहते पात्र हे.

વધમાં આ સમયે જેવા મહાત્સવ ઉજવાય છે તેવા જ ઉતસાઠથી જગતમાં ઉષાધ્યાયછ મહારાજે आपन्ने आपेत वास्ताओं साहित्यने विध्यावींने केंग्र शावना अने परसात्मा अये प्रार्थना.

—ગથચંદ પ્રગતલાલ શાહ, મળઈ

ચાલ જમાના તથા વાતાવરકાર્યો જનસમુદાયમાં આવા ચઢાન પુરુષોના છવતની રૂપરેખા ધર્મભાવના कपूर्व विदेता तथा तेमनी अतिभाना दिन्दर्यन अरावना कावा सत्रानी ઉજवशी थाय ते बहा क करते છે. જૈન ધર્મના મળ બ્રિન્સિયલ અહિસા અને સત્યને સમજાવવા તથા જૈનધર્મ માટે ઇતર સપ્રદાયમાં કેલાપેડી ખાટી માન્યતાઓ દર કરવા અને જનતાના નિકટમાં આવવા માટે અન્ય ભાગતાની સાથે આવી હિલ્વશીઓની ખાસ લગ્ન છે. ત્રાન તથા ધર્મ ગન્નેનો સાથી સંદર પ્રચાર શર્મ શકે છે. સત્રની ઉજવણીની સકળતા કચ્ચિ છ

—ક્શિનલાલ ચુનિલાલ. મતીય-થી કાવી જેન દેશસરની પેડી.

માત્રા પ્રસત્રી ઉજવાથી શ્રીયદ્યાવિક-૫છ મદારાજધીના જૈનસથ પરના ઉપડાર સુદેશી જૈન જનતા જરૂર જારી શકશે કે શાસનના કેલિવર સમા શ્રીયાન મહોપાંધાયજ સત્તરની સદીમાં એક વિસ્ત મહાન प्रक्ष धर्म गवा है. —માસ્તર ઉપ્રગાલ છે શાહ, શિતારવાળા,

શ્રી ગ્રાહ્મમ વીશાનીસા છેન પંચ કાર્યકા

'My presence would have sewed the purpose' (बारी इंकरी केल साथे। જવાન ક્રેપ) પરંત હાલના સંયોગોમાં સત્ર માટે હાજરી આપી રાત્તો નથી તેવી નંદોજ દિલગીર છુ 'Hero worship' ગુસાનરાગ એ મહિતપરી માટે અનન્ય અને સહેલ સાધન છે. તેને આવા પ્રસંગા પાતાની લાગકો દાગ વ્યક્ત કરવાની સવહાતક આપે છે.

યુ ઉપાધ્યાયછ જૈનાના જ નહિ, મુજરાતના જ નહિ, હિન્દ્ર અખિલ માનવજાતના છે. ગર્જરી મિગના મહારમાં તેઓએ સુચારૂ વધારા અવસ્ય કર્યો છે. એક્ક્ષું વાહ્યામય જ નહિ પરંતુ ગુજરી મારફતે જીવત વિકાસના મહાતલા મત્રા આપ્યા કે પૂર્વ સુરુતોના વચના લોકસાયામાં આવેખી ઘરઆંગણે અમૃત આપી આપ્યુ છે યુજરાતી જ ભાષુનાઓને તે 'Cultural development and spiritual uplift' સંરકૃતિક વિકાસ અને આધ્યાત્મક ક્રિમતિ માટે અનન્ય સાધન છે. પ. દ્રપાંધ્યાયછ મહારાજન કરનકવન અને માહિલ વગેરે કરવના ગ્રેસ્સા આપે છે તેમના જેટલું 'Tolerance' ઔદાર્ય, સર્જ રમાં તેના હૈંદા અલ્વાસ, તેમજ સમન્યમ ક્રોઇક વિચ્ક વિસ્તૃતિને જ સાપડે છે 'સિદિ 'ની ક્સાએ પદેરચેલા વધા મ્ડાલ્માએ જડ્ડે પરંતુ યોગ 'ત્રિનિયોગ' ધનાજ દોદાને ભાગે ઢોલ છે ૧૭નો સરીતું ચિત્ર આજે અન્ય પ્રત્યકારાના મન્યામાંથી પણ સાયડે છે તેયા Onthodov કહિન કાળમાં 'તારી' વર્ઇ જેનેતર વિદાનો પાતે તેમના પ્રેમ સંપાદન કરી લતાવા. એ કેટલું કમકે કામ ! પૂ. ઉ. મૂ. ના સાહિતમાં વેદ-

भीता वरेरेना Traces प्रभाद्धा कवी कत्याने केवा वस छे. ते तेमना अन्य हर्शनना ઉंधा व्यवसातने દોતક છે. તે સહીતા તેઓ 'Martin Luther' હતા, ગુજરાતના સાતેયર હતા જેઓ ગઢારાષ્ટ્રીય ક્ષણ સંપત્ર કરવા ગાટે ગર્વ ધરાવતા અને 'મ્હારી ચરાદીમાં આવેલોએ વેહોત ઉતારીટ' એવી ભાષા વાપરતા એ હત સ્વભાષા માટે અહિમાન ! એ હતી જનતાના અધ્યુદ્ધની, કામના ! તેવી રીતે પ ઉ જ્યો દુખાતુંમાંગ જેવા ગઢન વિષય 'દુખા ગુદ્ધા પર્યાવસાસ ' વગેરે ગૂજ'રીમાં કતારી ગુજ'રમિયાને શિખો યહારી અને બીજાની હરેાલમાં 'મહારી સર્જરી' જેવી તેવી તેવી એ બતાવી આપ્ય તેઓ સર્જરીના સાચા લગ્નન હતા. અહિત-ત્રાન વગેરે જિલ્લા સહેલીમા સહેલી ભાષામાં ઉતારી ગુજરાત ઉપર મહાન ઉપકાર કર્મો છે. આજે ખુધા વિદાનો હેણે!ઇના આંગણે હોયા વર્ક જાલ–સંપ્રાય અને ધર્મના બેદ સરી મહાન વિધતિના શુધામાન કરસો. અને એ વિજાતિની શક્તિથી સંપાતિ થવાનું સૌભાગ ગાંધ કરસા, તેમણે વારસામાં ભાષેલ સાહિત્યને કરી સંદર રીતે સમાદિલ-સરોપિલ કરી યુ કર્યાના 'Complete works' સમર્થ अली हेल्ली होने जहार पडे, ते। आपने आईंड असे तेमना नक्ष्यांथी मुझ्न यहीं अने महायुक्तरातना સોર્યુતિક-માર્મિક વિકાસમાં કોઇક કર્યું, જોય મહાય, વહેર્દ મુખરાત પોલે 'ભારતના ચરણે' ગુજરાતના मा रस्थाग भीरसी, चेत्वानी हदारता अर्व स्वहाबताने परीयथ अरावते के के व्यक्तिओं से आ अरपना સત્ય પ્રષ્ટિમાં લાવી વ્યાપો સત્ર ઉજવામાં નિગિત થયા છે, તેઓ સર્વે ધન્યવાદને પાત્ર છે જેના માટે વા તે એક ભાત કતો, વિલય છે. તેઓએ તન-સન-ધતથી સેવા આપી પોતાના જૈનત્વના પરિચય કરાવવા ભરી કે 'Nothing mes unamarded' ક્રાકેલ્લ વસ્તુ નિયુલ લતી નથી ' એ અધ્યાસિક િયમ છે, પછી હતી 'Sooner or later' વહેલા યા માત્રા હોય. યુ ઉપા મહારાજના જેવા જન-8પકારી કાર્યો વધુને વધુ કરવાનું ગળ સત્ર હસ્ત્વનાર સૌ ફ્રાઈને પ્રાપ્ત થાંગો અને આ છવનમાં એ —ચીમનલાલ લક્ષ્મીચ'ક શાહ પ્રના સીડી લય ભેવા મુશ્કા, એ પ્ર<u>ભળ સાવના છે.</u>

ગીપણેલિંગન સાનસને ઉત્તરવાની એ વેલાના કરી છે તે ગાટે હું થ્યાર સાવેલોને હાર્દિક ધનાવાદ ભાંડું શું ગીપણેલિંગનાછ એના આફ્લત શાનેવાસક માટે આપણે એક્સ કરીએ હેલું એક્ષ જ કરેવાર ભાંપણ ઉત્તર એ ક્લિક્સિએ એ અનંત ઉપાસ્ત્રો કરી કાલ્યા છે તેને બાલે હે આપણે વાળવો આક્ષાસ મ 8 હૈવારનું ઉત્તરનું અધ્યાનન કરવાની પ્રેસ્ટ્રો એ કહારતાના કરી આપણે સાવેલો એ આપણે વાર્યા કરતા અને એમના સાસ્તરનું અધ્યાનન કરવાની પ્રેસ્ટ્રો આપીએ આપણે ફ્લાઇ આપણે ગયા પીનાનોને પૂર્વ પત્ત પ્રેમ એ એ અલ્લવર્યના

સોહિત્યાસલમાં શ્રીગા રન નકોનિલ્નજી ગારાબનું પેલાનું મેંદ વિદેશ સ્થાન છે. તે સ્થાન ત્યાં છે! આપણે તેમના મહુવાયો — તેનાશો હજ સુધી વ્યવસ્થિત છોવે —એ કેટલું વિપાસ્થીય છે તે માપણે સમ્રજીએ — ગા શોહાલાની પૂર્લ સંસ્થાદ છજા લું કર્મની શ્રાદ્ધાની શીધાંથી તેમના આ — સાંતરિત્યાસલા કરો સાંદર્ભાની વ્યાલ લ લાક્ષ્મિત્યા માર્ચાલન્ય સાર્ટ સાંદર્ભાની વ્યાલ લ

ચીપરોહિત્વન્થ મહારાજના વિદ્યાભ અહિંત અને હારવામના સગધર્યા વિવેચન કરવા, દેવો મ્યાર કરવા અને આજની પહિલ્લહિયાં હેતાથી જોલ્લી વધુ તાલ શેંદાની સગય એ દરિને આ મોપીમન અધ્યનપુર્ણ હે આ સપારેદની રહ્યતા ઇંગ્યું છું અને આસા કર્યું છું કે આ આપીલબના પરિણાંત રહ્યું પ સુબરાત અને સબરમાન વને પાંદેશી તથા રહિયુંલિક દહિયી દર સ્ત્રામાં આવલ પ્રદેશીને પ્રેરણા અને સૃતિ પ્રાપ્ત પશે.

'લાકવાણી પત્ર કાર્યાલય', જયપુર

શ્રીનકોવિબચ્છ મહારાજની સ્વર્ગયુધિમાં એ યોગનિષ્ટ મહાપુરુષની સ્મારક તાળ કરવા અને ફેશાવવા આપે જે સત્યુરુપાર્ય આરોપે છે એની સફળતા ઇચ્છોએ છેએ.

– ધીરજસાલ કે. તુરખીઆ, જેન ગ્રદ્દળ દિશ્વલ સંઘ, ખ્યાવર

આપનું નિમત્રણ પ્રત્યું એ વાંચીને જરાવ ચાતર લેવો કે, આપ એડ એવા દિગાજ વિદોત તથા વાસ્તિકિક અર્પમાં ક્ષેયાંખાત્મનાઓ પુરવસ્તુંતિઓ મહેતાલક અંબિજન કરી રક્ષા કેર લેવતી પ્રતિસામ કૈન સાહિજાની, એવા ગ્રુપ્રેક્ષ સમસ્યાં, અનુપર તેવા કરી છે, ત્યારે અનેત ગાંધાઓ ઉપાંચતા વર્ષ ચૂર્ય હતી વિદેષ રિવાફુલા તેમની લેખિનીથી સાલવ સાહિજની ક્રેક્ષ સહત્વપૂર્વ સામાં અરપ્રદ નથી રહી અને તેન્ય નાય જેવા મળે કરી છે. પણ પૂર્વ અધિકાર પ્રેવરીને તેમણે પોતાની અપ્રતિમ વિદેશોનો પ્રતિસ આપેલો કે

—પ્રિત્સિયાલ પૃથ્વીરાજ જૈન, આસાનદ જૈન કોલેજ પળય.

—ટે ૧૫રાંત નાંચેનાં સ્થળેથી પણ સમતી સફળતા ઇમ્હતા પત્રો આવ્યા હતા

માંનિથી મુખેલિકભાજી જ શા. ફેપ્લાવદ અંગરલાઈ યુવાઈ > પાંતી લાવક સ્કાલ્યન સર્ચ * ધોરસા તૈન સર (સારવાલ) > થી સીમનાલા કેશવાલ કહીયા અગલવાલ * શા. મરનવાલ સ્ટજનતાસ લાનગરી ફેટામાર અલાતલાલ કશા સોરવાલ મનાલાસ—અલાતાલ * શી વીસ્વર નાયજમાં યુવાઈ એક વશ્વતતાય દાસુલાઈ વૈલ * ગીરસવર્ય યુવાલવ્યે જ્યાનવ્યે ક્યાન્યરે અન્યતારી તેને હોતિસાલ > પ. શી જગલકાલ્ય આપણ—અમ-સાદિત્યાનાર્થ તથા પ. શો દીતાનાલજ આ નામાનાર્થ જાયતાલ * માસ્ત્ર સિલ્લાલ તેમ્પર માસ્ત્ર

તાર દ્વારા મળેલા સંદેશા અને અબિનંદના

ોંધા—તાર કારા થાવેલા પ્રદેશાઓપાંથી એ તારે પૂર ઉપાધાયણ અલગાં તથા ઉત્પન અપીતનાદિ અપે કપેક વિશિષ્ટ સૂચ્છો સ્ટલા હતો હતે ગર્ણે જાતવાદિત કરી પૂરધા છે આપેના સ્ટ્રેલતા ઇમ્પ્લતા અને અધિન કર બાપતા તારેલો ઉલ્લેખ, કરનારના નામ—કાંડ કાર્ય મી છે.

મારસ્તરભાગ મા પ્રકાગે વ્યવસ હાર્ડિક વ્યક્તિકાર તેને શાહિર વાર્ગ શાધોમાં સહારાજ ગીતી મેવાઓને મ્વાયલ હિરસો આપણા સહૃતિ વારસાયો એક ઉત્તવવાર પ્રકાશનો ઉપેટ કરે છે. તાનની તાને પ્રસ્તુ અને ભાગા મહાન વાંકસાનીના પ્રવાસીને કારણે વે પ્રકાશિત રહે, ભાગશામાં છતાંક અને પ્રેણા માથે અને ભા સહત રોક્ક પ્રત્યેની માળવી ફાંબે ગાદ કરવાળ સહારાય નીસ્ટ્રો સેમ મ્લ્યાએ કોર્મ ઓક્સલ નિર્ધને એક્સિંગ વર્ષેલા શકાન વિદ્યાનીની મર્ચા-નિયારણા, આ દિશામાં મેલ્યાન કરે સેમી માશા શાળકો કોઇસ

—શ્રીજૈનવ્યેલામ્થર કોંન્ફરન્સ, મુખર્દ

—ચંદુલાલ વર્ષમાન સાહ, મુબઈ

ઉપાંચાયછ ત્રીમકોકિંતના સહારાત્રથીના સ્થારક મહેલાવ સાંવર્ષી ગમના બાના દે થોદ ભાગતામું માટે આક્ષારી કરોએ પુત્રન સહાત્રત્યીના હાંધેના દેશપારેલમાં ગ્રેચાર યાદ અને રતનાનું મંત્રામું ચાર તેમ કંપ્રકૃતિ કરોએ આગાર પહાસ્ત્રત્યી અને સમ્ય સુનિયકદારખરીને વદન.

—ચિત્રવસ્તાલ કેમ્પ્રાલાલ, અમૃતલાલ જેસિંગભાઈ —ચાહનલાલ કેમ્પ્રાલાલ, શાનિકુચાર જગાલાઈ, ગનાગા ન્મોતિર્ધર ઉપાંચાયજી રહ્યોવિસ્વજીના લગ્ય સમારોહપૂર્વક ઉજવાલા સારરનતસત્ર મહેતસવની સંપૂર્વ સ્થળતા ઇચ્છુ છુ.

— કેતોહ્રચંદ અવેરભાર્ધ, મુખર્ધ

આ મોગલિક પ્રસારે આનંદ અનું અનું શું આચાર્ય શીધર્મ સરીધરછ તથા સુનિધી પશેષિબ્રપછ મહારાજને, તેમના આવા પ્રશાસનેય પ્રમાસોને સફળતા ઇચ્યુ છું અને તેમને સુભારક મોદી આપું છું.

—વશ્વભદાસ ત્રિભાવનદાસ, સેક્ટરી

અલ્લાનંદ સલા, લાવનગર

શીયરોાગિત્રપછ સારસ્ત્રસભાના ઉલ્લાણી પર્વની સંપૂર્ણ સફળતા ગતે. આ સરથા દ્વારા સાચા દાનના પ્રકાશ ફેલાય અને તત્ત્વાનોનો પ્રચાર શાધ તેમ ઇન્સ્ક લ".

—ગુલાળવ'દ લસ્ક્રભાઈ, ભાવનગર.

પહોલાલ પ્રાથમે હાંગર નહિ સ્તેના ખદલ શાળા માર્ગોએ છોએ શિયાંભાયલ્લ પરોનિજન્યલ્લ સહારાજ શીતે માદ કરવા માટે તેને સભાજ આલારી છે તેમની કાંગો. અમે હમેલાં ઓ કરણમાં માર્ગ છે છોએ અને તે અમારાં હ્લ્યનનું શકુત છે.

—હીરાલાલ અને ઝજાનન, અમદાવાદ

શ્રીયશેષિજયજી ગહારાજથીના આ જીવનના ઉચલ કર્યાંની ઉજવણીની હૈન સંધ કદર કરે છે અને તે ત્રારે જ્ઞાહિયુંને દાખવે છે.

--શ્રીજૈન સંઘ, જમનગર

શ્રીમરોવિજયજીએ માનવવ્યતને એ ક્રીમરી સતો આપ્યાં છે તેથી તેઓશીના સારસ્વતસનાની સફળતા ઇચ્છુ છું.

—૫૦ જરાશાંકર કા તથા ૫૦ દીનાનાથ છા, અમદવાદ

નિયામક,-શીવરોાવિજયુછ સુરકુળ, પાલીતાણા.

લાદિત અભિનંદન, હૈન સમાજ માટે સારસ્વતસત્ર એ એક અન્દર્ય પ્રસાય છે, અને તેની સધ્યતા છત્યું છું

--वोरा प्रकक्षात पानाय'ह, पात्रीतावा.

મેરકામની હોવા છતાં માર્નાસક હાજરી ગાપી રહ્યે છુ. અને પ્રધાનની સફળતા ઇંગ્યું છુ —સીઝનવાલ કડીઆદ અપનવાદ

ઉપાપ્પાય મેમોરીઅલ સાધુ સધને તેમના પગલે ગાલવાની પ્રેસ્ફાર્ય ગતે!

—હૉંગ વધુસદાસ, મેરાળી.

—विश्वाद्य छनवृद्धादा, व्ययङक्षार्थः वदवाद्य

મહેતાવની સ્કૃષ્યના અને ગ્રીવરોલિન્પથ પહારાજની તેન સુવાનોને પ્રેરફાફય બને એમ ઇપ્લ છું. —શ્રીતિલાલ વીશ્વર્ધક, માથેમામ,

भार केलार अन्य ज्यक्तिकानी यादी-

• માન ગી વ્યવસારિક તથા માન થી સાસ્તારિક, મુલા ક વિન્યોદેવારિ થય, મીતીક કેવિયા, મુખી, • મહિલાલ નાસ્તુવની, સુવર્ધ ક સ્વયસ્તાલ સર્વીદાય સાંદ તથા ચીરત્વાલ માન્યત્વી, સુવર્ધ ક સ્વયસ્ત મુખાર્ચ કર્યું તથા ચીરત્વાલ મુખાર્ચ કર્યું તથા કર્યું કર્યા કર્ય કર્યા ક

પૂ. મુનિવર શ્રીપરોર્દાવજવેજી ઉપર સંગત **આવેલા પદ્મમાંથી** ઉપયોગી બાબતા અહીં આપી છે.

સારસ્વતસ્ત્રના શ્રમ બલ્લ આપને હળરાવાર હાર્દિક અક્ષિનંદન છે.

—મુનિવર શ્રીપુષ્ટ્યવિજયછ, અમદાવાદ

ગા સખરભખ કોઇક ગેની એનવાઈ કરો એવી ડીક ડીક નાવારું એકર્ડા વાપ પછી ગેનેન ઉપયોગ માત્ર દેવો લખરાબો ન્ય વાય. તેને તેનેનાર એ અલાધારણ વિદાનો હતે તેમની પારેથી કામ હાઈ શકતે દેવતે હોડે કોઈ કામ ગામે તો તે ગયીર ન ફોલ ગાને પૂરતા વખત ગામી લગે તો પૂરતા ખદશે પહ ભાગવા જ પડે

ક્ષપંચાયછના અગોગાંથી દેહાપ્ર વિશેષ ચૂરી, તે તે વિશ કેપર સમગ લખવાનુ, જેમાં કેન્દ્રસ્થાતે ક્ષપંચાયછનું લખાણ સ્ક્રેષ્ઠ પણ એનો સ્થિક્ષિયે એ વિશ્વતા સમગ્ર જૈન પર પસંતે રપાર્થતા ઇતિકાસ અતે તેએતર પર પસ્તાના એ વિશ્વ કરતા વિચાશ સાથે સરખાંચણી એ વધું આવે.

લા ત 'નવવાર' લાઈએ તો પહેલેથી ભાગ સુધી તૈય પરંપરાર્થો એ 'નવતો' વિચાર ક્રમિક વિસ્તરો છે તે રહીવતા કારી તેનું સાહિત પણ નિર્દેશના અને એક્ટે શ્રેષ્ટ્રેપાલાક સરફાત, ગ્રાફન, ત્રફનાંતી કે ચારવાની લાગામાં તે બિંધે એ એ કહેતા હેવા તે બધુ બ સાફેરામાં પણ વ્યવસ્થિત નિયાય અને સેવા વિચારો ક્રોકર્યું ક્રોનેસર પ્રયુપાલા મળી ભાગતા હેમા તે હુલનાદારા કર્યાલા

મ્યાયા ખીજ પણ વિષ્ણો લણા છે, રાત્તને લગતા અને આચારને લગતા એસના એક એક ગ્રથમે આધીને પશ નિગધેક લખાવી લકાય

વ્યતારે આંત્રો રાખશે આપ્યો હેલ તો મેં આપયો દીક શકે કે હપણ જ મી સાલવણીવ્યત્ર મહુપરાલાંતું લગ્નીતર પ્રેકિલ શ્યુ છે તેની પ્રતાસના તમે એકે બચ્ચે મેં સપૂર્વ છે મેમ ફૂ નથી કહેતો પણ મેં ઉપયો તમને ખ્યાલ વાલશે મેરી લીક્ક ફિલ્મો પણ કરવાને શકે કચ્યું જ અંગ્રેક્સ મેં એના પુસ્તાનો પ્રશિવ કથા છે મેટલે અને તે સાધારણ લપ્યાણોથી સતેલ પતો જ નથી. ઉપાયાયક્તની 'સ્તાન' જાન્યાલ માદિ ગુપરાલી કૃતિયા ઉપય પણ વિચારની લિટ્સિ લપવાની મુખ્ય ક્ષાપ્રયાલકની સ્તાન 'જાન્યાલ માદિ ગુપરાલી કૃતિયા ઉપય પણ વિચારની લિટ્સિ લપવાની મુખ્ય

્રું એઈ રક્ષી ધુ કે નમાં ત્યાં બ્લાનિ અને સ્પારકના પ્રયત્નો થાય છે, તે સાર્ક પણ છે. પરંદુ ઉપાપ્પાયક્રતા રસારક માટે તૈયાર વનાર પુસ્તાની કરોહી મારી દર્દિએ લૂદી ફોલી તોઈએ અને તે એ કે રેલુ પુસ્તક જૈમેશર બળાર્યા પાલા કરી હચ્ચાર બહુંલામાં વચારા અને પ્રદીકારા રહ્યું ખેતે.

જૈન સમાજના તાલાબ્દિ સ્વારક જેવા વતો રાષ્ટ્ર જ તથા છે. ઉદ્યાંથાયછ થાટે આવું ન ખને તે માટે જરૂરી છે કે તે લે ગ્રન્ય ઉપર ચૈતિકાસિક તુલનાત્વક અને તારિકા નિરૂપણ કરતા ભારે ચાહા, પણ લેખાં લખાવવા એ કઈ પાય પાંદ સ્થિતમાં ન ખતે, નવાં એ ચાઢે લખાવર સરબતાથી ન પસ પણે को वे गरे पुष्तम पर्या पञ्च असे। पर्दे, छवा अर्छ पञ्च छव्याओं तस्य वो जे रीते ४ संपाहे करना अध्यक्ष से बारका मनते, निरस्तामी साकिन्त्री अम्म नेतामी नहीं सरे.

—૫. શ્રીસુષ્યલાહ્નછ, અમદાવાદ.

ચીમરોલિંગ્યક સારસ્તાલની મેળના સરસ્તીય છે. તેમને વિદારસ્થિત સેમન પ્રેમમ સ્થાપક કાર્ય માટે જ્યાર આવશક છે વ્યક્ષા છે જેન્લાક્રિયતા વિકાર વર્ષન ચાટે કોઈ રયનાત્મક રોળના ધર્મ કાર્યાર્થ આવે હો સમાળ માટે લારે જયોગ્યો કર્ય પછે

—ક્ષેત્રશુ

વાં માન્યમાના કે પુરુષનો, સમાજ ઉપર કરેલ ઉપકારના વર્ષી માત્ર એ આવી કરી રહ્યા છે. તે જો પ્રસાબી છે અને ત્યાં મળતે તેઓની પીજ્યા વ્યક્ષ તકે તે માત્રિ લક્ષ્મી છે માત્ર સ્થીમો એમોની સ્થાપ કરે કરી સહેત ત્યી તે દુખની પાત છે. સાથે માત્રેલ કર્યાં તે સાથતોના દેશ રીતે સ્થાપ કરી માત્રના કાલના હતા કરે

મેધામ તેઓના ગાટે જેટલ કરે વેટલું એવું છે. ગાળ માતિયલનના પ્રથમ શાટે વધે સમય મગાલવાં લીધો ક્રેતા તો એવર વધે સારી દીટે કેમ્પ્યાત! અર્લ ગાંધે ઉપકારીના સ્વરણાંથી લાગ્ન કર્યો ત્રિતો સાર્ય કરેલ છે.

—હેઃ જવતશાસ પ્રતાપસી ગુળક

પું ઉપાધ્યાસભ્યોના કાર્યને અને તેઓકોએ તેનાવર્ષ ઉપર કરેલા ઉપકારોને વધા ચેંદા વ્યવસ દલ ભારો આ કાર્ય ઉપાધ્યું અને તેઓકોને હીન-નીનેલ સોવાયલા થયા અને તેમના કરેલા કાર્યને અને આપ્તર આહિતાને બાદર લાભા પ્રત્યો કોઇ છે તેમાર્થા જ છે આ યૂન પ્રાપ્યાની પારે અને ત્રિજ્ઞામ આ તે જ બાબના ઉત્ત્યાનાલાના પ્રવૃત્તાન ચાલા અને અલાવલાના કાર્યન્ય તેમના નારેરીનો વેલા છે મેં કાંસનો કર્યા હીત છે.

–થોસાંતિશાલ મગનલાલ સાહ, યુળાનું

પુંતવ આચાર્પશ્રીને પત્ર લખતાં—

રેલિ 'સુ'ક પોલે પહેલા કાર્યને પણ પાકલી અનુકારણીય ખત, ક્યા વાલ્યુઓ સ્ટ્રા કાર ટીપનું તેને નિર્ભુ , પેનિકા પાસેથી પન અન કરતાની, વેચોકની કરવાની ઉપરેલ કરતવાની, કાર્યક્રોનો ડીલ્સલિક કરી પિતાને અનેકાર કાર હેકારી કરતવાની, પ્રાહિત અને કાર વિદેશને અંભવાની એ વર્ધિત સાપનો સામાર્થ આવે છે તે તે બાલ કેશી છે

—સેવાભાવી કાર્યકર, દીપવદ સમતદાદ શ્રદ્ધ મુખઈ શ્રીમરોલિંગ્ય સારસ્ત્રાસ્ત્રની મોહતાની હશેકત નથી ગાયે ગા કર્યું ગયું વર્ષ પહેલી સંગઈનો રૃતિમત કરવાનો વિચાર જણાવેલો તે કંગે કંગે કુળોલ્લ થતો ન્યા છે તે જણી પ્રકાસ ગાનદ થય છે. —શ્રી કેપોક્ષચંદ ઇવેરબાઇ લાયનગરી, સંગઈ

આયાર્પશ્રી. ધર્મજ્વરિષ્ટ મ. તથા શ્રીવરોલિબવજી મહારાજ સૌની પ્રેરણાના પરિયાદ અપ્રતમય જ નીવડશે.

—મણિલાલ ગાહનલાલ પાછાકર, રાખા

લણું વર્ષોની ઇચ્છ અને આશા ઓક્સમાં ળઠુ દૂધી રીતે પરિપૂર્ણ વર્ષ તેથી આપ સૌને સંતેષ, પ્રસ્તાના અને શાંતિ ઘઇ હોદ આપનારાઓને પશુ આવવાથી પ્રક્ષત્રની અંતવા, અંદાપુરુપની અપશુંત શક્તિ, કુશામ સુર્ધિ, શાસ્ત્રોનો અભ્યાસ, અને બળતને આપેલ અદ્યામાં સાર્કલનો વારોદો આ ભર્ષો વૈલીક્રિસ્મિટ્ટ, કોક પર નિર્ફાલનો એસા એપ્યાસ્ત્રનુ—માં માત્ર ૧૫૦ વર્ષ પહેલાની જ એપ્રિલર્પિક, અને પ્રમાણુવન હરિક્ત હોવાથી તે માદ્યુસ્ત્રન પ્રત્યે પ્રેમ, લાકિત અને સફલાવ સૌના દિવાનાં સ્પાયસ્થ્રન એપ્ર સીની વારો શપથી સમાન્ય છે.

ખાતે અગે ગેલ તથા હતા કરવાનું શેલ્ય હાવે છે. કે તેવાના પુરવાલી શેલખોળ, સમક મારેનું સ્થાન, પ્રાપ્તાલ અને પ્રમાદ ભરૂરના છે અને તે પ્રાથમિક પર્લાલું મેં છે. પરંતુ તેનું સાર્ધું ખેત કો હાં બોર્કિંગે કે હલોઈમાં તે મારેના હાત્મારિક્સાં મેં ચાર વિદાર્તા પત્તિનો કે અપ્યાસીઓ હાય સ્થ્ય સ્થાઈ અને રિસ્તાલ પૂર્વેક તેવેલા ભીઈએ, પોલે અખ્યાલ કરે અને ભાજનો કરાને અને સાથે સાથ કાત્મતીઓ પ્રત્યોના પ્રાથમાં કરે, પ્રત્યોલી શાનોના સાથો પ્રમાર નહિ શાય

એટલે કારણે ચેલાનાફ વિદ્યાસ દિર બન્લું એઈએ. કારણી પદિત ત્યાં રહેવો લોઈએ. પહોલપૂરી કંમસર વધા પુસ્તકોનો અભ્યાસ કરનારા માટેનો કારણી ગળધ એ આપી ગ્રવસિંદ હાર્દ બન્લું તોઈએ. —-શ્રીપ્રાહાભ્યન હ. બાંધી.

सबोत्सव पूजी आवेशा पत्रसायी

રસવ પ્રતિપક્ષીને પણ નિગ ખતાવે છે, ક્રાઈ કાવગ માટે પ્રતીપક્ષમાં હોવો તથી, તેની પ્રતીતી કર્માંથી વાર્ય પહેલાં હોય વિદ્યાર્થ્યા કર્માંથી હાલ પહેલાં હોય વિદ્યાર્થ્યા તે હવે રુપરંચ પૂત્રન શ્રી કર્યાપ્યાર હતાં વિદ્યાર્થ્યા તે હવે રુપરંચ પૂત્રન શ્રી કર્યાપ્યાર હતાં વર્ષ કર્માં કર્માં કર્માં તે હતાં પ્રતીવિદ્યાર્થ છે તે તે તાથી શ્રી હતે દર્શનની વિદ્યાત વર્ષમાં પ્રચાલના ઘયે હતાં અને દર્શનની વિદ્યાત વર્ષમાં પ્રચાલના ઘયે હતાં અને હતાં તેનાં હતાં પ્રત્યાર્થ હતાં હતાં કર્યાં કર્યાં કર્માં હતાં, ત્યા પ્રદાન વિષ્કૃતિથી પરિપ્તિત થયા પ્રાપ્યું છે. તેનો વર્ષે ક્ષ્માં પ્રમું શ્રી કર્યાં કર્યા કર્યાં કર્યા કર્યાં કર્યા કર્યાં કર્યા કરા કર્યા કર્યા કર્યા કર્યા કરા કર્યા કર

—શ્રીવાડીલાલ સગનલાલ વૈદ્યના સંગ્રાત્સવ પછી આવેલા પત્રમાંથી

શ્રીયશાવિજયસારસ્વતસત્રનાં સ્મરણા

દેખા-દે. ચીવુત સાગાલાલ જ સાંડેસસ. વડાદસ.

(1)

સંત્રના કિલ્સીમાં સખ્યાળ ધ બિદાન સાથે સાંભીઓની રહેલાઈમાં ઉપરિવૃતિ હતી, એટલું જ નિદ્ જેનેક આંભેવાન જેને ગુફરથો તથા સુપ્રેસિક વિદ્દાંનો ભર સંગ્યો હાલ્વી ગાંપણ સાટે જ કરીકે પ્રાંયો હતા કોંગ્યો હોડો હાર્દિ ક સ્વવધીના ક્લાઈના કેલ્લાન કોર્યુંના હિલાએ જે કોંગ્યોના સ્વાપ્ય સ્થાપ

એમ્પેને નિષેત્રી સાહિત્ય સાગકીના પ્રકર્શનનું શક્યાહન પ્રતિષા નિવાસી રેઠ પરસેતસદાસ સુરય દને દરતે થયું હતું

સરતી, પ્રરક્ષ તા ૭ મોગે વધેરે દેઢ વગે વધે હતો એ માટે વિશાય અને સ્ટ્રોપિત મંડપ ભાવવામાં આવ્યો હતે, ઉપાધ્યાનશબા વિતાર્તુ તામ 'નાસભા ' હેવાપી આ મડપમે ' તાપ્રાયણ મડપ ' એવુ તામ આપવામાં આવ્યું હતે એકતી માતાતું તામ ' સીભાગરે' ફેલવાથી એ નામના પણ ફરવાને ભેનો સ્વાયાં આવ્યો હતો એ પ્રદેશમાં જાવ્યાં કર્યું કર વધુંત, પ્રકૃત અને સબવારી મીહિક સુમાનિશે અને ઉપદેશ હામની દાખવામાં આવ્યો હતી

સ્તુતના સ્વાપ્ત પ્રસુખ અને ક્લોકિંત હેન આવેલાન થી ભાવગદ એકાવાવ રાતનું સ્વાપત પ્રત્યન થયા પછી મુખાર્ટની સ્ત્રેશન કેક્ક કેઠીના લખ થી ક્લાચન્દ્રામાં ફ્લાચ ભાષાઓ સ્વર્નનું ઉદ્દર્શના કરતી જેપ્પાયક્ટને અહીકિક કાર્યાના કારણા લોક સાથે તારાવી તરીકે વર્ષોયાં, હેને સમાવને કરળ પ્લાવ તપને મીટ્રો નહિ સાહ્યાનો ભાર આવાલ વધી સ્વાપ્યાય કૃષ તારમાંથી ખાંખીને દ્વા કરવા પણ ઉદ્દેશના કર્યું હતા.

મેં પછી, સત્ર નિષ્કિતં આવેલા સફલા કર્માલતા સેક્કો કેટેલાઓનું વાચન તથા નાગેટરોપ મી શાનિતાલ મોર્તિતાલ સાહે કર્મો હતો. ત્યાર ભાદ અત્રસચિનિના ચરી મી. નાન્દુમાર મટાન્ટેસે સત્તરી ક્ષત્રમિત્રિ રૂમ લઈ તેનો ટ્રેક અફેતાલ આપ્યો હતો તથા સત્તરને ચોલદ્રમ્યી મળી રડેલા આવકારને પ', બી શાલપંત્ર મીધીએ સમતા વરતેલા પ્રભુખોા પરિષ્ય આપ્તા તાદ પ કપિરપાટછ પંત્રમીએ પ્રભુખવાતનો સ્પીક્ષ કર્યો હતો અને ઉપખ્યાપ્રકાર કરતી રિત્તે પ્રખુલાવામાં એકા વિત્તવાપૂર્ય દેશફું જ ત્રેક પ્રત્યન સતતે દેશ કહ્યા કરીયો આપેલું હતું એક દાર્દિનાક કિંદીને ઉપાયાયાના એયા ગ્રહ્માં તે ક્યાં સમ્મોના અને સ્પેત્રની પ્રતિકારી આ દીરે સ્માણીય પરિષ્યા આપ્યો હતો

પ્રકુષ્યમીના વ્યાપ્યાન બાદ પં લાલયદ ગાંધીએ સત્ર પ્રસાચે આવેલા નિર્ભારોના નોરાલેખ કરીને પ્રયોક નિષ્ણાને દ્રેષ્ટ પરિષ્ણ આપો હતો એ પછી વધારા લુનિવર્સીયાના તત્ત્વાન વિશાગના દ્રી પ્રા. પ્રીક્રીનુલામાં પેડ્યા, તેમારા પ્રત્યાન વિશાવ દિવા થી જપત કાંકા, ન્યાર્થીના હિંદાન પ્રો. હિંદાયાલ કપ્પિમા, સત્યાં હાન્યી આપ્યાં ખાટે પાસ પત્યાંથી આવેલા વેલાક સામી હંપારાંગ્ટ આદિનો પ્રસ્થા થયા. પછી સાંગે પ્રોણા છ વાત્રમાં પહેલા દિવસની લેકાનું વિદાર્શન વસુ હતું, તેને જ્યાંપ્યાસ્ટના પ્રાથ મિક ગ્રહ્માંથી અને તેમના પહેલી સલકાલ્યા સ્વત્રીકારોસ્ટા કરી હતી

ખેપીરે સ્ત્રતી એક સ્ટ્ર થતાં પહેલા ઉપાધાયલ્યા સાહિત પ્રકાશનની રેક્યના કર્ય રીતે આપળ ધ્યાવતી એએ સ્ત્રતી અમિસિસ્તરીની વિચારણા ગ્રુટિંગી મોલીલેન્સ્ટરની અધ્યક્ષાયા ઘઈ હતી, અને સમત્રી વિસ્તરની ખેપીરતી હતાક સત્રતના નિજમેતુ નામના પંતાના કર્યા હતી, અને સમત્રી વિસ્તરની ખેપીરતી એક કર્યા હતો એક સ્ત્રી હતી એક સ્ત્રી કર્યા કર્યા હતા કર્યા હતા પ્રક્રમાની પ્રસ્ત કર્યા હતો એક સ્ત્રી કર્યા કર્યા હતા કર્યા પ્રકાશ કર્યા હતા સાંધીને અપ્રકાશ કર્યા હતા કર્યા પ્રમાણ સ્ત્રી કર્યા સ્ત્રી કર્યા સાંધીને સ્ત્રી કર્યા માર્ચન કર્યા હતા કર્યા પ્રકાશન સ્ત્રી કર્યા સાંધીને સ્ત્રી કર્યા માર્ચન સ્ત્રા હતા હતા કર્યા પ્રકાશન સ્ત્રી સાંધીને સ્ત્રી કર્યા માર્ચન સ્ત્રા કર્યા પ્રકાશન સ્ત્રી કર્યા સાંધીને સાંધીને સાંધીને સાંધીને સ્ત્રી કર્યા પ્રકાશન સ્ત્રી સાંધીને સ્ત્રી સાંધીને સાંધીને સાંધીને સ્ત્રી કર્યા સ્ત્રી કર્યા સ્ત્રી સ્ત્રી સાંધીને સ્ત્રી સાંધીને સ્ત્રી સાંધી સાંધી સ્ત્રી સાંધી સાંધી સાંધી સાંધી સ્ત્રી સાંધી સાંધી સ્ત્રી સાંધી સાંધી સાંધી સ્ત્રી સાંધી સ

શ્રીયશાવિજયસારસ્વતસત્રનાં સંસ્મરણા

[લેખા—સીકુત નાગકુમાર મકાતી વગેલ, વડેદરા.]

(?)

મીપશાંતિમ્પ સારવાતકાનો બીક સુંભઈના દેવાયોનાં કેમાંડમાં કપાયાવાલાએ વિ.સ. ૧૯૪૩માં પોતાનું અતિમ સાલુયોના હ્રેશ અને ત્યાં જ તેમણે પોતાના ત્યંય દેક હેમાંડોલા સામની ચોઢ જ્ઞા સીત તલાઈના કાર્ડ માર્ગલા નાતકા શકાનમાં તેમના તરાર ગામે પણ વિશ્વાન કે મીકદાપાયાલાનાં સ્થાન સ્થાના પારગત હતા કે તેમના તરાયાંથી તેમના રસ્પંતાલના વિશે ગામે પણ 'નાપની, ખતિ નીક્રો કે સ્થાન કિ.સે કે ક

सीत-तक्षार्ध पाणती तिही थूल वर्ण सहरहोरे,

તે ત્રાહિથી ધ્વનિ ત્યાયની, પ્રચટે નિલ્ડ દિલી પડેરા (સજસવેલીભામ) ન્યાયતા અનિ ખરેખર જ નીક્ષ્યે છે કે તેમના સ્વર્ગવાસ કિને તૈયાવિકા તેમના સ્વપ પાસે એકા યર્ક ન્યાયમર્થા કરતા હશે એને માટે પ્રમાણભાર માહિતી એક્ટર કરવી રહે છે છતા આ ઉપરથી એટલ તેર ચાલના થાય છે કે તેઓ અદિતામ તૈયાવિક હતા. તેઓથીને લગતો ક્રાઈ પણ સભાવેલ તૈયના અતિમ શ્વાસોન श्वासधी पाचन सपेशी क्षत्रिमा डिक्चाम जे सर्व रीते मे.ज હत् त्यति धर्मांप्रेमी सम्राक्ष पद्य पेताना आंगरी મ્મા પ્રસાગ ઉજવામ તેમાટે ઉત્પાદ હતા ઉપાધ્યાયછની ગાતિમ રાખ ત્યાં પહેલી તે નદના ઉપરાંત પણ હણાઈની મ્યાં મહોત્સવની જીવવાદીની, અનેક રીતે યોગવા હતી. ખોલી ગાંચીન ગ્રયરાતન એક ઐતિહાસિક શકેર હોર્લ લાંદ દેશના સખ્ય નગરે:માં તેની ગયાના થતી હતી દક્ષિણ સુજરાતમાંથી ઉત્તર તરફ જવાતો ધારી માર્ગ ત્યાંથી પસાર થતા હતા હોઈ વેપાર વહાજ સાહેતી હેતી ખ્યાંતિ અને આવાદી સારી હતી. સજરાતના ભર્યાતા ઘટવીર મળીશ્વર તેજવાલે આ નગરતો પ્રખ્યાત કોલ્લા અધાવેલા જે હજુ પશુ તેમતી ક્યાંતિકથા યાંતા બીરમાર કાલતમાં લોગો છે. કોલ્લાની કેલરણી અને સ્થાપણ ખેતમન છે તેની દીરાસાસાળતો रोतिंग इसास्य झवाको, कर्ने तेनी कालागालनी श्रीस्वेणधी इवाक्षर हीराक्षीयानी रामांयक प्रथय કયાની હવા યાદ આપે છે જનતકારમાં પ્રશ્વ ખાતર બનોસાની કરી મસસત પામેલા વસાખરા ઉપલા ચરમાંથી વ્યાવેલા છે હવિઓ વ્યતે લોકકશકાર પણ વ્યાવાને જ પોતાના કાવ્યોમાં રધાન આપે છે परेंद्र इंदीया केंद्रा श्रम्थली वर्गमांगी व्यविद्यानी अध्यमकाले व्यवस रूपना गुजरातनुं उसे। ही को अने मतीपु छे ले आभवर्गना जेड अक्ष्मेत स्थारः विरंथन असातुं यात भारी नाम छे

શીલોહનુ પાર્ધ-તાનું મહિત, શીલેલનામનું ચકિન, તેનું ગ્રાંસ સ્કેતર મેતું વિતાય તથાવ વગેર મ્લોકિની વ્યતિ પ્રાનાનતાનો ખ્યાય ગાયે છે વ્યતિ કારપાલના શાહીશ વધતા કરિક દ્વારામ અન્યમાં હતાં, એપની પ્રેમલણસુધાન પ્રયાચિ વર્ષા કરવાં કારપાલનો ગામ વે પોરા ત્યાર છે આ પવિત્ર ધૃતિનાંથી 'સાક' એટલા તમારાંગિઓએ ત્યાન, વૈરાગ અને ત્યાયનો ચાર્ચ વર્ષોઓનો છે. આમ શાકૃષ્ટિક રીતે અ અમાર્ક જોપાલન્ક આપેના સ્વાયાન પાટે સાં રીતે યોળ હદ પણ વ્યારા જેવાને તો ક્યોર્કનું કેટ બીલ્યું પણ વ્યાર્ક્ષણ હતું પહિલના દેશામાં એક કેરી માન્યતા કર્યતે છે કે ફીનીશ નાખતા પછીની રાખવાથી નવા ફીનીશ પછીની લબ્બ શાય છે. ક્યોર્કમાં દેવાપાય કપિશોનિલ્યલ્ટની રાખવાથી અહીં કોટ લીંક્ય 'લાંગો વ્યવસાર પંચાન કરતા કરે કર્યો કરે કાહિલકેરીય એક કાલના અનન્ય દેવાસક છે. ઉપયંપાયલ માટે તેઓ 'લાંગો વ્યવસાર કં' કેમ કહિંતે તો પોર્ટુ નથી. તેમની 'વર્શોલકિક્તિ 'તે નગર્લક કે મીટોની કૃષ્યબુક્તિ' સાથે સરખાવી શકાય આ સુકલકી, કોટના લાંધાના, નાસુક કરિયાલા સાધુ લારે મનેલળ ધરાતે છે. આ સમારોદાત લાબ રીતે ઉજવવાની તેમની તબ્લાએ સીને સુધ્ધ કર્યો તેમણે મન ઉપર લીંકુ ન હોત તો આ સમારોદાત સમય ભન્યાન તેત. કેમણે પોતાની જન્મણી કંચોઇનું કરણ લાક શર્યું 'કેઠશ જ નહિ પણ ઉપાધાયલ્ટ કહે આખા તે ત્યારા છે મહાર રાક્ષ્યું છે તે ફેલ્યા પણ કર્યક અને કરવત કર્યો. સારો મે જૈન સમાજ આ માટે તેમનો કોર્દિસ વધુ છે.

વર્તમાત શ્રીપરેલિયમ્પછ હેન્નનથ પર પરાના વાસ્ત છે તેવના સુવવર્ષ શ્રાપ્યાર્થની વિભયનંત્રિકિછ આજે સુવિહત જેન સાધ્યેભવાં આગળ પહાતું સ્થાન ધરાવે છે. તેવની આપ્યાનકેશી અંતોપ્યો અને મોહારા છે તેવા તથી તમા વિત્ર છે ત્યા ત્યા પ્રણાવિકાળલ ધર્માંત્રીથી 'ચાનંદ સગલ' પ્રવાવી છે જેન સમાજ લગ્દ તેવની ક્રિક કિક પક છે. તેઓ રાહિતાશાણી છે અને ધારે તો ત્યા તુનાને સુવેગ સાધી ધર્મ અને સમાજની શ્રેષ્કાનિતની દર્જિએ ત્યલુનને કેરતાણાં આપી ક્રોક છે. તેવના સુવેગ આયાપંત્રી વિભયમાં વાર્તન ફ્રેશ્ય છે અને લ્યાં શ્રુપ તેવા સાથી લગ્દ છે. તેમના સુવર્શ આયાપંત્રી વિભયમાં હતારાજિ એ સ્વર્ધ છે અને વ્યાં સુવેગ સાથે ત્યાં લગ્દ છે. તેમના સુવર્શ આયાપ્ત્રી પ્રવાદ માયાપીર્થીને તે તમને ભેવા તથી પરદ્ર આપ્તા પર પાત્ર હતી લગ્દ છે એક ઇતિહાસ શર્દ કહે છે શ્રીપર્શિયલ્ય છે મેંત્રે અપ્તાનકાર છે અને 'વીજાના દવિભાઇ' કાલતવાની હિખાના રૂપ છે.

સું મર્કમાં રેતપીલું ભીજ પ્રોક્તરામાં ઉત્યુ અને તેની કહ્ય હંગોકીમાં શર્દ વીકારામાં ઉત્સવની યોજના વિચારના વીકારા, હમોર્ડ અને ખ્લારના લાકી આ રવા હશ પ્રસારે એમિંગ માત છે કે "મામાં નિયા તેમ સમાલી કે" તેમ પ્રેક્ષ પણ આદૃષ્ઠિક સરક્ષા કે અમોર્કાર્યા સર્વીઓ નિયા ચાલદું તેની. "મીરા સાર્વે સાર્વે અને બીજનોની સાર્વે મને પણ મની. "મીરા સાર્વે સાર્વા હતી કે પ્રારં તે વાયત પતે ત્યાર—આઈ પણ પૂરી ચકા છે અને લે પર અને નિર્ફાત કર્યો કેટલે હતે સાર્વ સાર્વક સંતર્ધ સ્ત્ર મારે માની લેલું પડ, મારે માટે અપ્યાયતનું કેટ બીજ કરાયું હતું ભોખ માત્રીઓમાં ક્લ્યું સ્ત્ર તેમ પ્રમાપ પડ પડ, મારે માટે અપ્યાયતનું કેટ બીજ કરાયું હતું બીખ માત્રીઓમાં ક્લ્યું સાર્વક સ્ત્ર માં માત્ર્યા તે પડ, મારે માટે અપ્યાયત સ્ત્રાયા માત્ર સ્ત્રાય કરાય કરાયું હતા સાર્વક સ્ત્રાય પ્રમાપ કે માત્ર સ્ત્રાનો હતાયે પણ કેટ પર બેલા પ્રદી કર્યું કે લા ઉપાયાયલની પ્રસાદ કેટ કેર્યન્સન્ય અપ્યાય કરાય કરાયો હતા ભારી પણ અને છે જ વન્યત સ્ત્રાય સ્ત્રાય આપ્યાલીકની 'આપમ લખનાવર્ધિ 'મોર્થ તેના હતા. આ સ્ત્રીની તેમના લખભોની હોં સ્ત્રો માત્ર અને છે જ વન્યત સ્ત્રાય સ્ત્રાય કન્યા કરાય કરાયો હતા. સ્ત્રાયા સ્ત્રાય સ્ત્રાય સ્ત્રાય સ્ત્રાય સ્ત્રાય સ્ત્રાય સ્ત્રાય કન્યા કરાયા સ્ત્રાય કરાયા કરાયા સ્ત્રાય સ્ત્રાય કન્યા કરી હતા. આ સ્ત્રીની તેમના લખભોની હીં સ્ત્રી માત્ર અને છે જ વન્યત સ્ત્રાય સ્ત્રાય કન્યા કરી હતી.

[&]quot; ચેવન! અળ મોહિ દર્શન દીજે,

[—]તુમ કર્યાને' શિવસુખ ધાર્મી છે, તુમ કર્યાને' ભવ છીજે. ચેતના ! "

તેમના જીવન, સાહિત્ય અને રાહિવી પ્રભાવિત શર્ક મેં તેમના નિર્ણ જેક નાની પુસ્તિકા મારા લેં કેવિનના અભ્યાસકાળ દરખાન લખેશી, જે ભાલસંથાળથી અને વિદ્યાર્થી વાગનમાળાના સંપાદક મારા પ્રમાનિત્ર તાતાવધાની શીધીનિત્યાદા ટોક્સી શાકે મહિલ કેવી, શીક્ષિત્ર લગભે પછી એક પ્રતિભાશાળી પુત્રમ તરીક ઉપાપ્યાચ્છનું રાતાન આવે છે હેલાા આદીસ વર્ષોના તેમના જેવો કોઈ પ્રહાસ્ત્રમ અને પ્રખ્ય પૈતિ જેન સાધ્યાસી આપના પાકની નથી એવી શારી અંગત ચાનના છે આવા સુપ્યુસ્ત્રને અંત્યત્રિ આપવાનો અનાવાસી સુન્યામાં પહેલી શેગ કું ક્રમ બહેલ કરી શકું ક

જૈન અને કેન્દ્રેન વિદ્યોનો એક શર્ષિત નીમ્લાપ વ્યાવ રંગ્યું ક્લેકિની કરારામ સાફિત્ય સ્થાના કહ્યું સાફિત્યસ્થ્ય કોશિત્યસ્થ્ય કોશ્યાનાલ વિસ્તાર્ધ કરાવી, વહેદરાની સંસ્તાર્ધ કર્યુંન પહોંચિયાના નિત્ત મિન્દ્રિયાલ પ્રખર વિદ્યાન લેકિસ્તારોનાથ લહેવાથી સાથે તેમારા કોલેબના વ્યાવેશ અને કે નિદાશના વર્ષ્યું મેસ્સિર સીફ્રેમ્યુલાલ હિસ્તારમાં કાલદર નેનેર સ્થાપ કહે લક્ષ્ય શામિતિએ એક પરિણ તેમાં કરી પૂ ઉપાધ્યાયજીના છકાન, કાન, ત્યામ, સાહિત, હેન્દર્સન અને તેની શ્યાનિન કિસ્ત કિસ્ત ક્ષ્યો અને નિત્ય સિંદા કરી ક્ષાસ્ત્રી આપ્તા લેકેકો વિદાનો ઉપર મેકાલ્યો તેના વનાવમાં ઘણા સારા નિખ્યો

ડેમાઈના શ્રીયાળા વગા એક નાનકહી જેનપુરી એવા લાગે છે ત્યા નદ્ધા જેના જ વસે છે. જેન

ય દિરા, ઉપાયર્યો, ગ્રાન્યદિવ, અને અન્ય હૈન સરયાઓ ગ્રા કતાચી જ આવેલી છે. સનના વિસો દરમાન આપ્યા સીમાર્યભાગએ ઉત્તરનો રાગ ધારણ કરી લીધો હતો પંજા, પ્રતાસ, સુક્રાવિતાના બોર્ડો, તોરણે, કમાનો વધેરે શક્યારાથિશ રાત્રવાર્થોં અને ઉત્તરાવીના એપ્રિઓ, સુપત્નો વગેરેની અવસ્તરનર દેશોદા, નાના જુદાઓની ધૃત્રવાગઢઠી, વિદ્યવિદ્યા, વાછ તો, ગ્રેલાકીયાના ચંદ્રન સ્ટોદો વગેરેથી તમે ગણે તમે ફેરી, આપ્રું લામારણ ઉત્સરકાર જ લાગતુ હતું લાદરાના મેટેનાનોના નરીન મોટેંગ અને પચારેક સાધુ સાંખેતિઓની હાતની પશું ઉત્સર રંગના વધાપણ દેશી હતી.

પંચાસ સાધું સાધ્યોભોની હાલ્પી, એ મોત જ એક પ્રેસક પ્રસાય હતો. હિસ્તુળના એક સરખા પેપાક વાળા, મૂર્તિયત ત્યારના જાવતાર સભા, હાધમાં દર ધારણ કરેલા, ક્ષેક્ષ્ટ ખુલ અંતના પરિગઢ નિનાના સ્લાકિના બાર્લાં પણ, હંગેલા જર્બાલાબીના જ આપાલીનાં ભાવતા, પરવાહાતલાવી સાધુંઓ તૈન્ય થઇ, ત્યોર દેક. સ્થાવન પ્રકારીઓ જ પંચાય વાયરના જેલાના તેલાં, પ્રોપ્ત સ્થેત્ર હે, તેમને મેતાં પ્રસાક તથી પહે કે. સામસ્તાલાવની જર્વાલાભાં તેમની હાબરી હોક અલ્લાક્ષન એક લવ વસ પધું પૈરી તો હોઈ.

જૈનસમાજના ગૌરવરૂષ સાધુરાયાજે અને ખાસ કરીને સાચાસાલેકાએ વર્તમાન પરિસ્થિતિતું પ્રયક્ષવ્ય અને જરૂર લાગે તો દ્વાચિકાન કરવાની વરસ એવું ખરૂ કે લાધું સરચાની લખ્યતા ને વધું લખ્ય બનાવવામાં ટર્કક ખટકતું હોય એવું નથી લાગતું કું ક

સમના ગણખ તરીકે તાર્ચીનેક પ. પંચાળી ચીકર્યકારાજીની વર્ણી શકે હતી. કહેતું તેમંડેએ કે તેમણે સ્પત્તું દેશન સારી રીકે ચંચામાર્ચે હતું દેશની પ્રમલ્લિક્સિયા અને ન્યાપન્ટર્ય ત્યારાજ ક્ષેપની અન્ત્ય પ્રત્યુત્તે સ્પત્રે મોગ્ય પ્રણાય સ્વાતાની ખાત્રી કર્યાંની આપી. સર્સ્યુતિકામાં તેયત્ર હિંદીમાં તેમના અરુપારિલ્લામાગલ આપ્યાના પ્રવાશે સૌને ચંત્ર રૂચ તર્ય હતા

સત્રતું ઉદ્દ્યાદન જૈન સમાજના વ્યાયા વિદાન અને મુંગદની રમેલડોડ કોર્ટના જજ શ્રીમત

પ્રેશ્કાર્યું સુરચંદ જહાવી ભી ગેળી ગ્રેશનો માત્ર ગેઠકોઠના હતતે વધુ તો પણ વેદગ હતું સ્થામત્મેના અને વિંતા તેમને તેમના પિતારી તારૂથી વાસાયા પક્ષેત્ર છે આ વાસાનું બંબત કરવા તેમણે કુંપ્લારીય વર્ષાસાનો પ્રવાસ પ્રાક્ષારણે પેક્ષો હતો ત્યાન્યામના આદાન દ્વારમ પૃત્તિના શત્ર સમાર અનું ઉદ્ધાદન એક ત્યાપાધીતાના હતતે વાલ ગોર્ચા પણ કોઈ દોક્ષ હરે!

માં સંબંધી મહેલાં નિર્દેષ માંચામાં જો તમેથી હતી શિવર સાશિતનું પ્રસંત, જે પાંચાયછતાં મુક્ત મહિલાં પ્રસંત, જે પાંચાયછતાં મૂર્તિ પ્રતિકા, જમ સમાચેત, સરફ નિર્દાયિક, જે જોના માર્ચિક, જે પાંચાય કર્યા માર્ચિક, જે જે કર્યા માર્ચિક, જે પાંચાય કર્યા માર્ચક, જે પાંચાય કર્યા માર્ચિક, જે પાંચાય કર્યા માર્ચિક, જે પાંચાય કર્યા માર્ચક, જે પાંચાય કર્યા માર્યક, જે પાંચાય કરાય કર્યા માર્યક, જે પાંચાય કર્યા માર્યક, જે પાંચાય કર્યા માર્યક, જે પાંચાય કર્યા માર્યા કર્યા માર્યક, જે પાંચાય કર્યા માર્યક, જે પાંચાય કર્યા માર્યક, જે પાર્યક, જે પાંચ

જબતમાં સમસ્રાન્તું વાતાવત્ત્વું ફેંગાવે છે અને સમગ્રાવવાથી ગુલ અને ગુલ લાવોની હવા ભગે છે. જે વિદાંતો આ પરિવર્ણ આવ્યા હતા તૈયોના ઘણા પ્રકારક વિદાનો હતા તેમણે આ ગ્રમમાં હફાર સ્થોપી જનતમાંમાન્ત્રે સાથી ભનાવ્યો છે અને અન્ય વિદાયોની સર્વસંત્રુદિત્યોના સન્યાન અને સમન્યપના રાહ સોપી છે. આવી સરસાહિક સ્થોપીના પાંચાય માન્યવાની હોકાશિક મોટી ચેરલાબને, તાત્વનો અને સાત્ર્રાશિક વ્હાયથી દૂર સાર્ધ ભય

સંસ્તૃતપરિસ્તુ અભ્યક્ષભાન ક્રમોઇ નિવાસી વેદા-તહાકની, સાહિત-સુભ્ય શ્રીમળનવાલ મિરાનદાકને શાસ્ત્રીએ સ્વીમનું શા તેઓ ક્રમોકો વિદ્રા સ્વાલ્યાં થયું એવું આત્ર કર્યા ન કરાને છે અને સર્વયન્વેદિધ્યુ દિલ્લાનો ક્ષેત્ર આ સ્વાન માટે પૂર્વી યોનાનાવાલા હતા આ સંસ્તૃત વિદ્રામાં વ્યાપ્યતો મોટે લાગે ગરવી સંસ્તૃત વિદ્રામાં થયાં હતાં. વરોદરસંધી આવેલી આભાગોના સંસ્તૃતકારોદ ચોતાન્ય હતા. સ્વાયત્મીના આ સ્તૃત્રિત્યાર્થ પૈ. સીક્રોમાંદા પ્રદેશ, સાદિત્યાર્થ પૈ. સીક્રોમાંદા પ્રદેશ, સાદિત્યાર્થ પૈ. સીક્રોમાંદા પ્રદેશ, સાદિત્યાર્થ પૈ. સીક્રોમાંદા પ્રદેશ સાદિત્યાર્થ પૈ. સાદ્રામાં સીક્રોમાંદા પ્રદેશ સાધ્યાર્થ પ્રદેશ સાધ્યાર્થ સાદ્રામાં સીક્રોમાંદ્રામાં સાદ્રામાં સીક્રોમાંદ્રામાં સાદ્રામાં પ્રદેશ સાધ્યાર્થ સિદ્રામાં પ્રત્યાર પ્રદેશ અને સાધ્યાર્થ સાદ્રામાં સાદ્રામાં સાદ્રામાં સાદ્રામાં સાદ્રામાં સાદ્રામાં સાદ્રામાં પ્રત્યાર પ્રદેશ અને સાધ્યાર્થ સાદ્રામાં સાદ્રામાં સાદ્રામાં સાદ્રામાં સાદ્રામાં પ્રત્યાર પ્રતાર પ્રદેશ અને સાધ્યાર્થ સિદ્રામાં સાદ્રામાં સ્ત્રામાં સાદ્રામાં સાદ્રમાં સાદ્રામાં સાદ્

મ્મારા તૈનનેનેતરમિલ, સવાર નેગા, ભાગ્યાતેમાં અતે પરિક્ષિયા હનારે પૂ તૈનામારી કેપસંકાર અને મોરાકિક સંસળાયે છે ત્યારે શેકુ લોચિયા ત્રળવતાની બરૂર તરફ 'થાન ચેનવું કરિત શાંધે છે. સાનાન્ય રીત કેપક્રમનાં વ્યાપ્યતિમાં અને બોલવાનું "વર્ષ' મગત ચારલ 'વાલુ ધર્મદ્રોદ્ર, આવા પ્રસ્તા પેતા ને બોલતાં બીલુ સાંગીદિક બેમાનું વધુ સાર્ટ પાર્ધ પો. આપણા ફર ચોર્ગાદેકમાં "પ્રસાને સર્વ- પર્માણા તૈન જવતિ સામાન્ય" પદ આવે છે. તે વિશ્વ સ્પાધાના ન બોલાન્ય તો વધુ એપ્લિન અવનાય તેમ ત્રાપ્યા પ્રમાને વધુ વર્ષાયો હાલ્યા કરે છે.

સારસ્તાસભા જેપાંચાવદભા સાહિત અંગે પણ હોક દોક પ્રતાવત વધા તેને અપાયો પ્રોલક કરવા, તેનો અન્યાસ કરવા અને ગોગ્ય પ્રવારણા કરવા વિચારણા અને પોત્યનાઓ શર્મ પત્રમે મોટે બી ધરેશિકબલ્ક 'બહારો' નાચેલી તકેવતો પણ દીક દીક બનાન સન્યો. સરક્ષા બીત્ય પણ હેઠશાંક અરાતવા દાવનો સ્થાન હાવો પત્રમ તાલી માત્ર તેને સરક્ષા બીત્ય પણ હેઠશાંક વિસ્તાર્થીના સર્વારાના પ્રીવર્ધીના સરક્ષાતા મહિતા પ્રતારાના બીતા સરક્ષાતા મહિતા પ્રતારાના અર્થ કરતો હતી સરક્ષાતા મહિતા પ્રતારમાં અર્થ કરતો, અને મહાવારાના અર્થ સરક્ષાતા મહિતા પ્રતાર કરતો કરતો કરતો અર્થ કરતો કરતો કરતો અને મહાવારાના અર્થ સરક્ષાતા સરક્ષાતા અર્થાના અર્થ કરતો અરક્ષાતા અર્થ કરતો અરક્ષાતા અરક્ષા અર્થ કરતો અરક્ષાતા અરક્ષા સરક્ષાતા અરક્ષા સરક્ષાતા અરક્ષા સરક્ષાતા સરક્ષાતા સરક્ષાતા આવ્યા.

સરના દિવસાર્વા એક લીએ પણ સુંદર પ્રસંગ ઓઇને આંગફે છત્વાઇ ત્રેશે. આચાર્યથી વિત્રવાર્ય પ્રેસ્ટિંગ્સ્ટ સહારાવના ઉપદેશથી આવેલી જેવ્યુવારિ તેના આપ્યાનિક્તું હત્ય સંકત તૈયાર થયેક, તેતું ઉદ્વાદન શેર્યો છત્વાલાય પ્રતાપચીના ગુજરાતે કરવાર્યા વ્યારેકું ત્રાનકપારી, હન્યનિક્તિ અને આગમમસ્તિ તૈયારાવાની-વિશિષ્ટ સંસ્તાઓ કે. અને તેમણે તેવ સાહિતાની સ્ટ્રાયા આદેલીય ફોલા ભાષો છે. આવી શરેલાઓ કુલેફોલે અને તેના લાલ લેનાગ ભાવણ ક્રમારુપાર્થી લોકા પ્રેમાલુમાં નીકલે એ વર્ત્સી છે. આની ઉપયોગી સરવાની પ્રેસ્યુ ભાષન જડ્ડ ભાગામાંથી બિબવર્જબાદરિસ્ટાઈને અલિનંદન પડે છે. તેઓપીની જનાવૃત્તિ કહ્યોઈને લોઈ પોતાની જન્મણી જનતી પ્રત્યેનું સરણ જાદા કરી, ત્યાંના ચીસપને આત્રી અહ્દય સંરેશા આપી ત્રાણી જનાવ્યો છે

આ ગે ઉત્સવો પ્રગોગ ઓકિંગ બનાં ત્રેક ભીને પણ જીવ ગરી ગયો સત્તમાં લીગા વખત્યી બે તર પક્ષી ત્રમાં હતા તે ગૌજીવાલાઈ આપશી, ચીગકીશાલ ચત્રફાબ, વેડાદરાવણા ધીચાકીશાલ માનલાત વેલ, ગીજુરોનાયા સત્ત્યાં, શીગુલાન્યલ ગફલલાઈ વરેરેના પશ્ચિમથી અને સી આયાર્યી અને મુન્દિરેસના આસીર્યાંદથી બધાઈ ગયા અને સી બેગા ચેક્ષી નવકાસ્ત્રી જન્યા.

ચ્યા ઉત્સવે મહેરાયાયાઓ વગોવિલ્પજી મહારાલના સર્વદારૂખી પ્રકાર પાતિનો પરિવય જૈન મળાજો આપણા સમાજો પૂરી ખરત તથી કે તેણે કેટડેલી મહાવ વિત્રૃતિઓ, લગતના મહાવ ડુપ્પા અને તમેતિવારના હણાવ્યાં તેની શકે ચેલા પરંપ ચ્લતિ તેણે પેલ કર્યાં છે. પ્રકાશની ચા મેરિલલી શાં આ લાનને સીતે તાળ કારાં

ગ્યા કેવળ વ્યક્તિપૃત્રઓ ઉત્તવન ન હતો. મેં ગ્રાનેતા — નિર્મેળ ગ્રાનેતા પરંચ મહેત્વન હતો. પિંદોનોતો, ત્યાગીઓના અને ગ્રાનિપ્યસ્ત્રઓનો સ્થાતિક મેચા હતે. સ્થવેપાર્થ પ્રત્યે સહિપ્યુના પ્રતવાનો ત્યું સ્વેશ આપ્યાં, શ્રાન્યપાર્થણી પ્રાપ્તા પ્રત્ય આતંતા ભરતસ્ત્રોત સ્વાદ કેવો હોઈ શકે ' તેનો અહીં ખ્યાલ આવતો હતો. આપી રસ ચામ્યા પ્રત્યે તે સ્ત્ર ગ્રાપ્યનાણને ભીત્ય સ્થાર્થ સ્વાદ આવે તેમ નથી. ઉપાયાણક્સ પર ' જ પ્રક્ર છે કે કે: —

' જે માલતી કુલે માહીયા, તે ખાવળ જઈ કેમ બેસે રે.'

卐

आत्या शुक्षिया श्यारे क्री शहे है

પાડ ગીત ન ત્યની કલા રે, જિંગ ક્રોય પ્રથમ શ્રમ્ય દે, પનન પણ શ્રમચારો તે ખરી રે, તિમ કિરિયા શ્રાવિર્દ્ધ રે. ગુજી રે મિલ્લિયોક્સ શત ખારના રે, જિંગ પ્રેક સકલ પ્રમાણ સના સર્વક્રિયા તિમ શ્રેમને રે, પૈચવસ્ત શ્રાહિનાણ રે. ગુજા 3

દપા. શ્રીયરોાવિજયજ]

[સીમધર સ્તવન, ક્ષળ ર

નોંધ—સત્રાત્સવના ઉત્રવાણી બાદ યૂ. ઉપાધ્યાયછ મહારાજના ગત્ય પ્રકાશન માટે એક સમિતિ ના પવામાં આવેલી તેના નોંધ; કાર્યપાદી અને તે પ્રસ વે યુકેલી પ્રશાવલી અહીં સ્વતુ કરી છે.

ા શ્રીવીસય તમ: ૫

સમય :

સવાય : સવાયે રહ્યા હ્યા હે--૦ २थण :

ક્રાેકીયાળ, શ્રીમુક્તિકથલ જૈન મેક્કન શાનમ દિર મ વરાજ્ય

નિવેદન ન'. ૧

વ્યાર્થી જણાવવાનું કે, ત્રત મુરવાનું વદ ૮ તારીપાં ૮-૭-૧૯૫૩ના રોજ પ્રવેશાંઈ ગ્રામે ઉત્તરાવેશન શ્રીપરેશાંવિજય સામસ્વતાસ્ત્રવર્ધાં રખું વળેલા, ત્યાં ત્યાં કૃષ્ણ પ્રાપ્યાય છે લીધશોનિજય કરારાજ સ્થારક વ્યવેતાં પ્રથમ દાવ ઉત્તર બેલાવી સેઠકી જીવતાલા પ્રાપ્તાસીલાઈએ જણાવેલું કે, વ્યતિકાર મેદી વાત લાક સ્થારિત કૃષ્ણ સરીપાની ત્રાંચાઓ સત્યોની સ્થારક સ્થિતિયાથી એક પ્રદાંચકાસ્ત્રિતિ છે કે દ સ્પર્યોની માનાવલી તેઈન્દ્ર, જેવી સ્વાર્થ કર્યાલ લાક તતાં ત્રાંચાન અને સંદર્શ જો. સદર સ્થનને સરતા સ્વારોગોએ માનાવલી તેઈ અને પોળ સરવા જવાલા હતા.

તેની કાર્યગ્રહક સંગ્રિતિ અમે અને યૂ ઉપખંચાયજના ગ્રંથ પ્રકારન વગેરે ભાગતોનો નિર્ણય કરવા સ્મારક સંક્રિતિના સભ્યોની એક સક્ષા તા ૨–૬–૫૭ તે યંગળવારે ઉપરતા રવલે અને સભ્યે રાખવામાં આવી છે, તો આપ અભ્યય પંચારતા

સદર સભામાં યૂ સુનિવર શ્રીપુષ્યવિજયછ મહારાજ તથા સાહિત્ય ગ્રેમી પૂ સુનિવર શ્રીપશાવિજયછ મહારાજ હાજર રહેનાર છે

तेसक ५ ५ कामार्थमी विकयभतापास्तीयरक अक्षारकचे क्षावरी व्यापवा विनति और छे

431591

લી ગ્યાપતા, લાલચંદ્ર ભ્ર. ગાંધી નાગકુમાર ના. મકારી યત્રીઓ, શ્રી ય. સા. સ. ઠેસાઈ

તારીખ ૩૦-૧-૫૩ ના ઉપરાક્ષ નિવેલ પ્રભાવ થયાંથી સમામાં તીચે પ્રમાણે કર્યવાકી પ્રકે છે. નામ: -- મા સંસ્થાનુ નામ " કી પશેશસાવતી પ્રેસ્ટરન સમિતિ ¹⁷ રહેરો સવાઝે, સંગતિના સમ્મેતને તીચે પ્રમાણે ત્રણ વિભાગમાં, રાકોનુમને વહેવણી કરી હતી ક્લપ્રૈદ્ધ સુનિ સ્પિતિ—૧. પૂ. સુનિવર મી પુષ્ટાવિચ્વાઝ મહારાજ

- ર પૃ મુનિવર ૫. શ્રી લહકરવિજયછ મંદ્રાગજ
- યુ મુનિવર શ્રી વેશોવિજવા મહારાજ
- પૂ. મુનિવર શ્રી જચ્ઝુવિજ્યજી મહારાજ

કારિયાકુંક સમિતિ: — ૧ રા. ખ. રોક છલાવાલ પ્રતાપસીયાઈ ર વર્શવ નાગકુગર ના. મકાની (મંત્રી) ૩ સા લાલ્યદ નાવાલ (ગત્રી) ૪ રોક વાઠીવાલ ચળતુત્ર ગાંધી જે. પી. ૫ પદિત ઈવેરવડછ પંજારી ૬ પદિત લાલ્યદ III ગીધી છ. કો જોગીલાલ જે.સડિસર્ગ ૮ થી જણાસાઇ મે. જેનાકોનાંગા. સંહાયક સત્યો:—મહિત ગીક્ષખલાલ સંવતી, તેક પુરુષોતામ સરવાદ, તેક રમણવાલ દલસખલાઇ જે. પી., તેક હીરાવાલ ૨. કાપલિમા, પહિત શીક્લક્ષમ માલવણીમાં, તેક કેલાવાલ હિ કામદાર, ગી સિલાલ વર્ષમાન સાદ, ગીરિક્રિકલાલ કોઠાલાલ પ્રતિ, ગીપીરેક્તલાલ ડેક્ટરી, શાક, ગીર્ફ્સલાલ કોઠાલાલ પ્રતિ ગીપીરેક્તલાલ ડેક્ટરી, શ્રીક્રિક્સલ કેટલી, ગીપિરેક્ત એટલી, ગીપારેક્સલ ક્લામી (રમેલ કોક કોર્ટ જજ), મોગોહત્તલાલ દી સેક્કી, ગીપિરેક્સલ કેટલી, ગીપારેક્સલ કોઠાલ કોકોડી, ગીપારેક્સલ દિવસ, ગીપારેક લક્ષ્યામાં, મીપારીક્ષાલ માનવાલ વેલ

જરૂર પડે કાર્યવાહક સમિતિને વધુ સમ્યા કમેરવાની સત્તા ગ્યાપવામાં ભાવે 🎚

ઉદ્દેશ:—ડબોઇખાતે 'શીયશોવિજય સારસ્વતસરુ'ના પ્રથમ કરાવ મુજબ, જે અગ્રાઉ જાહેર થયેલ છે

કરાવ.... ૧ શીષરોાવિજય સાસ્રેસ્તરજીતું અધૂર્ટ રહેલું કાર્ય હવે "શીષરોાભારતી પ્રકાશન સમિતિ"એ કરવું એએ કાયવામાં આવે છે

કરાવ: — ર શીવગાલારતી પ્રકારત સમિતિના સરસ'ચાલકે તરીકે યુ યુનિવર **શીધશાયિજયછ** મહારાજ તથા યુ યુનિવર **શીપુર્યવિજયા**છ મહારાજને નિસ્કૃત કરવાર્થા આવે **છે.**

કરાય: — ક બીપગોલાવારી પ્રકાશનવર્ષામહિના વધારહતો કાચો ખરહે ચત્રીઓએ હૈયાર કરી કાર્યવાદક સમિતિમા ગળદ્વી માટે રજૂ કરવાતુ કરાવવામાં આવે છે.

ઉપર મુજબની કાર્યવાકી સર્વાકાન થયા ગાદ હાજર રહેલા વધે યું ગ્રુપ્યોએ માંગલિક સલગાબ્યુ 63 તત્પશ્ચાત્ સભાની કાર્યવાકી આનકના વાતાયરહ્યા પૂર્ણ વર્ષ હતી

વિશેષ વિગ્નસિ

સસ્તિતર કૃષ્યા સથવી કાર્યવાદી આપની સમક્ષ રન્યું કર્યો જાદ વ્યાવવીને વિશેષ વિદારિ કરવાની કે ગયાના કાર્ય અને આપણને કોઈ પણ જાતની વધુ સમક્ષ-સ્થળા અને ચાર્યદર્શન કરાવાલું કંઈ શાધે તો તે સમિતિને તરફ આપસાસ્કારાત્ર કર્યા પડશે હોંગીતે આપના ક્રીયતી લહાસની વ્યવેક્ષા રાખે છે એ ઉત્સવાની ભાગે જ જારે છે

પત્રવ્યવહારતું સામત સ્થળ શ્રીનાગકુમાર ના. મકાલી દે દાયોપાળ, વડાદરા થી. રેવોક, નાચકુમાર ના. મહાલી લાલગંદ ન**ં. સાહ** ક્રાનીએ, શૈવસાબારલી પ્રહાન સમિતિ વડેક્સ.

11 35 11

થીપરોલાસ્તી પ્રકાશન સમિતિ C/o નાવકુમાર ના મકાતી હાથીપાળ, ળાળાજપરા, વદાદર

સતથી.

શ્રીમણેલારતી પ્રકારન સચિતિ તરફથી અમે આપને નીમની પ્રચાવદિ મેકલવાની રંબ લઇ એ છીએ. કાર્યના પ્રયોગ પ્રારંભ માટે આપના ઉત્તરે જ્યારે ઉપયોગી સંઈ પારી અપૂપ બનતી ઉતાવધ તેના બગામ મેમલી આસારી કરો!

: प्रशावसी :

- ૧. પૂ ઉપાંધાય શીર્સ વદાવિજવળ મહારાજના કરા ક્યા ગ્રાંચાતું પુતર્જીત્યું કણવતું જોઈએ દ
- મુન્યુર્કેલ કરાવવા યોગ્ય ગ્રંથોને પનાકાર, પુરતકાકારે કે ઊલવ પ્રકારે જ્યાવવા અને તેની સાઇક કઈ રાખવા દ
- ગુજરાતી કૃતિ—સાયા હોય છતાં તેની લિપિ દેવનાષરી સમ્મળી કે કેમ !
- ૪, પ્રત્યેક પુસ્તકની કેટલી ગતિએ છપાવની ક
- ૫ જમાધ્યાયજની કઈ કઈ કૃતિના અનુવાદે કરાવવાનું જરૂરી ચાના છે. !
- કૃષ્માપતે પોતાને ઉપાધ્યાયજીની કાઈ પણ કૃતિક જાભ્યાસ હોય અને સપાદન તરીક જાપ કાર્ય કરી શક્તે તેમ હોય તો તે પણ સ્થાવના નિનૃતિ.
- છ જે જે મધા—કૃતિઓતુ ગંપાદન કરવા ચાટે વ્યાપની જાલુર્યા, જે ક્રાઈ ચ્રેડમ વ્યક્તિઓ ઢ્રેામ તેના નાંગો સસવશી
- हपरेक्ष्त भागत सिवाय के ऑर्ड येक्न सवाद-स्थना करनी घटे वे करवा निवर्ति

અમે ઇચ્ચે, આપના જ્વાયના પ્રતીઘક્ષે, નાચકુમાર ના. મકાવી લાલચંદ નો. શાહ મહોસો

[×]

આ પરિકા ચેવ્ય અથે ગેમકાવેલી, હતું સ્પયેથી પ્રસાયલિયા લ્યાએ સહ્યા હતા. અને સાંમાંતની કાર્યવાદી પ્રત્યે સતીય અદ્યા કર્યો હતો. સુંપાન

न्यायविशारद न्यायाचार्य महोपाच्याय श्रीमद् यशोविजयजीकृत अन्योनी यादी [वि. सं. २०१३]

संस्कृत-पाकृत भाषाना चपलव्य ग्रन्थो

१ अभ्यात्ममत्त्रपरीक्ष	ग ' १७ ज्ञानस		वादमाला
स्वोपश्रटीकासङ्	' १८ मानाप	iqx ३७	वादमाला बीली#×
२ अध्यात्मसार	स्बोपहर्ट	ोमास्ह ३८	बादमाछा श्रीजी#
३ अध्यात्मोपनियद्	१९ सिङम	स्योक्ति#x ३९	विजयप्रभक्तिस्थाध्याय
· ४ अनेकान्त [मत्]		परीक्षा ४०	विजयममसूरि उपर पत्र
[अपरनाम-जैनतर्क]		ग्रद्द्वाचिशिका ४१	विषयतावाद्#
· · ५ अनेकान्तवाद्माः		बिसंह ४२	वैराग्यकण्यस्ता
ৰিখিদা	२२ धर्मपर	त्रेष्ट भार	वैराग्यरति#X
६ अस्पृशक्गतिवाद	स्रोस्तर्र		[अपरनाम शुक्ताशुक्ति]
[बादमाधस्तु एक अ	भग े ''२३ नयप्रर्द	ोप ४४	सामाचारी प्रकरण
^भ 🛮 भाष्यात्मिकसत्त्वप	रीक्षा <table-cell-rows> २४ नयरङ्</table-cell-rows>	. स्य	स्वीपहटीकासह
	ग्रासम्बन्धे । , २५ नयोपरे		स्तोचावळी
स्वोपश्चटीकासङ्	स्योपहरी		१ भादिजिनस्तोत्र
८ सात्मक्यातिः	२६ व्यायस	वण्डनमाच रीका	[बाश्चव्यवस्थान]
९ आराधकविराषः		'महाबीरस्तव'मूळ उपर]	२ बीबीपार्श्वनाथ स्त्रीत
चतुर्भेगी लोकारीक	।बह २७ स्याया		[कास १०८]
१० आपेभीय सहस्क	ब्याक्ष र ३८ परम न		३ वाराजसी पार्श्वनाथ स्तोत्र
११ उपवेश रहस्य	पश्चि	शतिका 🐥	(का स २९) ४ शकेश्वरपार्श्वनाथ स्तोन्त
स्वीपझटीकासङ्	२९ परमार	मपञ्चर्विशतिका "	व शक्यरभद्रवाय स्तान [का सं ११३]
१२ पन्त्रस्तुतिचतुर्विः	श् तिका ३० प्रसिमा	হাবৰ	्यः च ११६] ५ शबेस्रपार्श्वतम् स्तोत
स्बोपइयीकासङ	स्बोपहरी	ELECTION	्वा. सं ९४]
१३ कूपरसान्तविशदी	करण ३१ प्रतिमा	स्वापनंग्याय	६ शक्षेत्र(पार्श्वनाथ स्तोत्र
स्रोपश्चीकासङ्	३२ प्रसेयम	II@I‡X	[का स इ३]
१४ गुरुतत्त्वविनिश्चय			 क्षमीनपार्श्वताय स्तोत्र
स्वीपङ्गरीकासङ्	स्रोध्वरी	ब्र सह	[कास ६]
• १५ जैनतर्कभाषा	- ३४ मार्थप		८ महाबीरस्तव स्तोत्र
- १६ ज्ञानविज्य	३५ यतिस	अर्थान्यसम्बद्धाः १२६ :	स्वत्वसार पच

^{*} सार्ड विद्ध हमें पक्षी मुदित कराना अन्योत्त के × बात किह सम्बद कृतियों माटेतु हो,

पूर्वाचार्यकृत सं. मा. ब्रन्यो उपरना उपलब्ध टीका ग्रन्थो

भ्येताम्बरप्रन्थ उपरती दीवाबी		
र उत्पादादिविद्यिश्रकरण रीका २ कम्मपयदि (कमेंग्रकृति) युहद् रीका ३ कम्मपयदि लघुरीका	[उपक्रम प्रधानका मात्र] ५ योगाँविधिका-दीका ६ वीतरायस्तोच-संध्यप्रका- धनी चणटीकावीश्र× [व कपूर्व, 'स्ववृतस्वदृत्यपूर्व]	 स्याद्वादमञ्जित टीका (?) दिगम्बर प्रम्य उपर टीका अप्टसहस्त्री टीका
[प्रारम नाम] ध सस्यार्थस्त्रदीका	७ शास्त्रवार्तासमुख्य शैका ८ पोडशक शैका	२ पातक्षलयोगवृशेन दीका ३ सिद्धान्तमक्षी दीका

अन्यकर्तक—छभ्य संशोधित ग्रन्थो

१ धर्मसंग्रह

२ उपदेशमाला वालावबोध+ [प्रकृत-गूर्वर]

* संपादित ग्रन्थो

हाद्गारनयचकोदार-आलेखनादिक

स्वकृत सं.-मा. अळभ्य ग्रन्यो अने टीकाओ

		*	
8	अध्यातमविन्दु	हिंग छन्दोतुशासननी स्तो-	१३ प्रसारहस्य
3	अध्यातमोपदेश	पद्म छन्दभन्द्वानिय श्रीका	१४ महळवाद
ş	अनेकान्तवादप्रवेश	उपर विद्या	१५ बादार्णव
8	भळड्डारच्डामणी टीका (हैम जन्मानुशासनमी सो- १६ 'सलकारच्डामणि' टीका उत्तर टीका]	८ झावसार अवस्की ९ तत्त्वाळोक विवरण १० त्रिसुज्याळोक (विचि) विवरण	१६ वादरहस्य १७ विधिवाद १८ वेदास्तनिर्धय १९ वेदास्तविवेकसर्वस्य २० शहअकरण
	आत्मप्याति	११ द्रव्यालोक स्वोपञ्च	२१ श्रीपूज्यलेख
q	आलोकदेवतावाद	टीकासह	२२ सप्तमंगीतरिहणी
U	छन्द्रम्युडामणी टीका	१२ न्यायविन्दु	२३ खिदान्तर्कपरिष्कार
	२५ थी ५२-१६ जिल्लिका	को (शिवरीय) स्वयंत्र ६६ रीजा	

प्रदर्भ क्या वर्षात्र शामकाश्रक्ता (हार्यदाव) वर्षात् १९ टाकामन्या, त उपरात भन्तरा पद्भी क्याह्य क्षेत्रमच्यो, अने दे सिवामनी बन्ध कृतिको क्षत्राच्य सदी गहुँ हो

ગુજ⁸ર, મિશ્રક્ષાયાની ઉપલબ્ધ કૃતિએા

નવપદપન

व्यक्तिकात्र काम अन्त्याय અગિઆરગહાંધર નગરકાર Pilcont Shidsvilleskin અધ્યાત્મમતપરીક્ષા-ષાક્ષાવત્રે ધ અમૃતવેલીની સન્ત્રાયેર આતન્દ્વન અષ્ટ્રપદી आदिष्टि सक्ताम એક્સા માટ બાલસગ્રદક शयश्चित स्तवतन याचा पाचानी सन्ताय ચાવાશીએ ત્રશ વિશ્વ સ ३३૬] જરાવિલાસ=આધ્યાત્મિક પદે [q. 8 3.47] જ ખરવાસિરાસ જિનપ્રતિમારથાયન સનઝાયા क्रिस्समेश्पन्ने।-६३२१क शावस्वाणा ગાનભાર--ગાલાવધોધ તત્ત્વાર્થાધિઃઅઝર-ભાકાવગ્રાધ∗ તેરકાઢીયા નિબધક દશયત સ્તવન દિકપટ ચારાસી ભાવ દ્રવ્યાગ્રહ્મપર્યાયસ-સ્વાપત્ત ટખાર્થ સહ

નવિનિધાન સ્તવન વિષયમી નયગ્રદસ્યમાં જિલ્લા સીમધરસ્યામિ विन तिद्यप स्तवन भावावश्रीध સહ વિસ. ૧૨૫ો निश्चत-व्यवस्थ्याचीत अभिभाग જિનસ્તવન વિ સ ૪૧] निश्चय-व्यवदारभक्तित आनि-विश्नरतंत्रन पि स ४८] તેમ-રાજ્ય ગીત પચપરગેષ્ટિ ગીતા વિ સ ૧૩૧] પ્રચાલાંધર લાસ प्रतिक्षमञ्जदेतगर्वा सन्त्राय Please Steply યાંચમહાદાત ભાવનો પિરતાલીશ સ્થાપ્રમા સહત્વથ લાદ્વગીતા જિલ્લાચિની) भौतक्षेत्रध्या स्तवत विकारी विश्वीभी विधारिकन्द्र धिभाषरीक्षातं वार्ति हो=

विद्यासामिक्य विक्रितिम वि स १२३1 विश्तुतिरूप हडीन स्तवन स्वेपन બાલાવગેલે સહ [**વ 8 ૧**૫٠) [किन्मितिभास्थापनस्वइप] श्रीपाश्चरास-हित्तरार्धं काम म्याधि शतक स्अर-वदास संवाह सग्यश्रेष्टी सल्याय स्वेत्पन तथाश्रीयदक સમ્પદત્વના સાચ્છણાલનો ₹lensi# [4, 8 €4] सम्पक्षत श्रेत्राह-स्वेष्ट्रत व्यासदस સાધવ દના સામ્યક્ષતક સ્થાપનાચાર્ય સજઝાય સીમ ધરજિન સ્તવન મિહીત વિચારગર્ભિત (વર્ષ ૩૫٠)

स्वेत्पन स्मासदश

सुराद्र सम्प्रद्वार

—अन्यकर्तृक प्रन्यउपर अनुवादित गूर्वरमावानी अप्राप्य कृति—

૧ - આતન્દ્રધનખાવીશી — ખાદાવળાધ

×

૧. ઉપરની ગૂર્જર કૃતિઓનો મોટા ભાગ 'ગૂર્જ**ર સાહિત્ય સંગ્રહ**ં' ભા. ૧-૨માં છપાઇ ત્રયા છ

र सक्ताम मेहले स्वांधाम समक्षु



हुम्हाब्यं जीवनं यस्य छिखितं यत्र लेखकैः । समाप्तोऽयं स्सृतिग्रन्थः खर्वकल्याणकारकः ॥



